श्रीराजेन्द्रप्रवचनकार्यालय-सिरिज ३



णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स

'श्रीअभिधान-राजेन्द्र' महाकोशादि संस्कृत-प्राकृतमयानेकग्रन्थ-कर्तृक, सूरिशक्रचक्रचूडामणि-सकलजैनागमपारदृश्व, जङ्गमयुगप्रधान परमयोगिराज, जगत्पूज्य-

गुरुदेव-श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज-संकलित-

श्रीकल्पसूत्रबालावबोध.



संशोधक—

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय-

मुनि श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज ।



प्रकाशक—

श्रीराजेन्द्रप्रवचन-कार्यालय

मु० खुडाला, पो० फालना—(मारवाड़)

वीरनिर्वाण सं० २४५८	संशोधित दूसरी आवृत्ति	विक्रम सं० १९८८
राजेन्द्रसूरि सं० २६	(मूल्य ५ रुपया)	सन् १९३२ इस्वी

मुद्रकः—शा गुलाबचंद लल्लुभाइ-श्री आनंद प्रिन्टींग प्रेस—भावनगर

मिलनेका पत्ता—श्रीराजेन्द्रप्रवचनकार्यालय, मु खुडाला, पो. फालना (मारवाड़)

हाल ही में प्रकाशित, शुद्ध, सचित्र और ऊंचे कागदों पर छपे हुए कार्यालय में किफायत से मिलने वाले हिन्दी ग्रंथ।



१ श्रीदेवचन्दनमाला—पक्की जिल्द, पृष्ठसंख्या १३३, मूल्य रु. १) इसमें ज्ञानपंचमी १, चोमासी २, सिद्धाचल ३, नवपदओली ४, मौन-एकादशी ५, दीवाली ६, और दीवाली-पूजनविधि ७ एवं सात देववन्दन और उसकी विधि इतनी सरल रीति से दर्ज की गई है कि जो सभी की समझ में आ सकती है।

२ श्रीयतीन्द्रविहारदिग्दर्शन—प्रथम भाग, रेशमी पक्की जिल्द, पृष्ठसंख्या ३०५, मूल्य १।।) यह पैदलविहार करनेवाले साधु-साध्वियों के लिये मार्गदर्शक और इतिहासज्ञों के लिये बडे कामकी चीज है। इसमें छोटे बड़े २०२ गाँवों का प्राचीन अर्वाचीन इतिहास बडी खोज पूर्वक लिखा गया है। इसकी एक एक कोपी सभी को अपने पास रखना आवश्यक है।

३ श्रीकोरटाजी तीर्थ का इतिहास—रेशमी जिल्द, सचित्र, पृष्ठसंख्या ११२, मूल्य ८ आना। मारवाड़देश के बाली परगने में एरनपुर स्टेशन से १२ माइल पश्चिम कोरटागाँव में चोवीससो (२४००) वर्ष का पुराना श्रीमहावीर-प्रभु का तीर्थ है। बस, इसमें उसी तीर्थ का गवेषणा पूर्वक प्राचीन अर्वाचीन इतिहास दर्ज है, जो जैन-जैनेतर मात्र को जान लेना जरूरी है।

४ श्रीयतीन्द्रविहारदिग्दर्शन—द्वितीय भाग सचित्र, पृष्ठसंख्या ३१५, मूल्य १।।) इसमें बनासकांठा एजेन्सी के थराद कसबे से लेकर आबू और गोड़वाड़ पंचतीर्थी तक के सभी गाँवों, मालानी परगने, जैसलमेर परगने, फलोधी परगने, पाली परगने और जोधपुर रियासत के पादरली तक के गाँवों, और तीर्थों का प्राचीन-अर्वाचीन ऐतिहासिक और भोगोलिक वर्णन आलेखित है। साधु, साध्वी और इतिहास लेखकों के लिये यह पुस्तक बड़ी महत्त्व की चीज है।

पोष्ट व वी. पी. खर्च अलग लगेगा। } श्रीराजेन्द्रप्रवचन-कार्यालय, मंत्री निहालचंद जैन.
मु० खुडाला, पोष्ट-फालना (मारवाड़)

संस्कृत-प्राकृतमयाभिधानराजेन्द्रकोशसाधनकर्यकतृभ्या

जगत्पूज्य-परमयोगिराज-भट्टारक श्री श्री १००८



जन्म १८८३,	दीक्षा १९०२,	आचार्यपद १९२३,	निर्वाण १९६३
भरतपुर (यू. पी.)	उदयपुर मेवाड	आहोर (मारवाड)	राजगढ (मालवा)

સૂર્યા આર્ટ પ્રિ. અમદાવા

विषय-प्रदर्शन ।

(पीठिका सहित प्रथम व्याख्यान)

विषय पृष्ठाङ्क

विषय पृष्ठाङ्क

(पचम-व्याख्यान)

विषय पृष्टाङ्क

(छट्ठो–व्याख्यान)

(सप्तम–व्याख्यान)

विषय पृष्ठाङ्क

(अष्टम—व्याख्यान)

(नवमो व्याख्यान)



साहित्यविशारद-विद्याभूषण-आचार्य-



श्रीमद्विजयभूपेन्द्रसूरिजी महाराज ।

जन्म सं० १९४५,	दीक्षा सं० १९५२,	आचार्यपद सं० १९८०
मु० भोपाल	मु० आलीराजपुर	मु० जावरा
(मालवा)	(मीमार)	(मालवा)

आनन्द प्रिं प्रेस-भावनगर

प्राथमिक–वक्तव्य.

—»卐«—

आ असार संसारमां प्राणिमात्रनु जीवितव्य जलतरंगवत्, नाना प्रकारनी संपत्तियो दुःखागारवत्, इन्द्रियोना विविध विषयो संध्यारागवत् अने स्वजनादिकनो समागम स्वप्नोपम के इन्द्रजालवत् छे तो पण मोहनीयकर्मना उदयथी प्राणि समजे छे के आ म्हारा पुत्र छे, आ म्हारी स्त्री छे, आ म्हारं ऐश्वर्य छे, हुं महा सत्ताधारी छु, संसारमां म्हारा आगल बोलनार कोण छे. इत्यादि मानसिक विनाशी संकल्पोमां संपडाइ प्राणिमात्र तेथी च्रणमात्र पण अलग थइ शकता नथी अने दुराग्रह, दंभ, लोभादिकमां पडी, मलेल मनुष्य जन्मने सफल करी शकता नथी पूर्वे कुटुंब, विभव अने स्वजनादिकना संयोगजन्य सुखो यद्यपि अनन्तीवार जीव पामी चुक्या छे; तथापि फरी मले छे त्यारे जाणे ए सुखो हमणाज मल्या छे एम मानशामां तल्लीन थइ जाय छे, परन्तु परमार्थ दृष्टिये जोतां तो सांसारिक दरेक सुखो दुःखरूपज छे समारवर्द्धक छे, कुगतिना कारण अने निजगुणोच्छेदक छे. आ कल्पित विषयसुखोमां गोता खातां अनन्ता कालचक्र व्यतीत थइ गया पण अत्यार सुधी तृप्ति मलेल नथी अने आगल मलवानी आशा पण नथी माटे मिथ्या आशा छोडी धर्मध्यानमां तत्पर रहेवु एज उभयलोकमा हितकर मार्ग छे.

मोहनीयकर्मनी अट्ठावीश प्रकृतियोमाथी ज्यारे अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार प्रकृतियोनो समूल च्रय थाय त्यारे चायक सम्यक्त्व, चयोपशम थाय त्यारे चायोपशमिक सम्यक्त्व अने उपशम थाय त्यारे उपशम सम्यक्त्व थाय छे आ त्रणमांथी कोइएक सम्यक्त्व जीवने मले त्यारे जिनेन्द्रभाषित शुद्ध धर्म मल्यो एम कही शकाय अने तेना मलवाथी जीवोने स्वयमेव विचारो उत्पन्न थई जाय छे के सांसारिक विषय सुख अनित्य छे, आ पार्थिव शरीर क्षणभंगुर छे भोग रोगना घर छे, स्वजनादिकनो समागम पखियोनो मेलो छे संसारमां सकर्मीजीवो अजर अमर रहेवाना नथी एक दिवसे मोतनो डंको तो वागवानोज छे माटे काल ऊपर भरोसो न करतां जे कांइ शुभकृत्य करवानु छे ते त्वराथी करी लऊ तो सारु एवा सद्विचारो तेना मनोमंदिरमा उद्‌भव्याथी ते जीवो तप, जप, प्रतिक्रमण, पौषध, व्रत, नियम, पूजा, प्रभावना अने तीर्थयात्रा वगेरे शुभ कार्यो करी पोतानी आत्माने सफल बनाववा समर्थ थाय छे अने तेवाज प्राणियो द्विविध (अन्तर्बाह्य) परिग्रहनो त्याग करी, संयम आदरी, सर्वमुखे मंगल गवरावी तथा पोतानी कीर्तिने अजर–अमर बनावी कृतकृत्य थाय छे

आवा सत्यधर्म (सम्यक्त्व)नी प्राप्ति माटे ज्ञान-क्रिया युक्त निर्ग्रन्थ गुरुनो योग मले त्यारे तेमना मुखथी जिनेश्वरोना प्ररूपेलां के बहुश्रुताचार्योना बनावेलां शास्त्रो श्रवण करवा जोइये अथवा पोते वांचतां आवडतां होय तो पोते वांचवा जोइये. कदाच सांसारिक धंधा (रोजगार)ना प्रपंचथी वधारे वांचवानो अवकाश न मलतो होय तो पण रात दिवसमां बे के चार घडी मुकरर करी, तेमां शास्त्र वाचन अवश्य करवुं जोइये. घरनी स्थिति सारी न होवाथी के कुटुंब परिपालनना प्रपंचथी प्रतिदिवस वांचन श्रवण न थइ शके तो पर्वतिथियोमां तेवो अभ्यास राखवो, तेम पण न बनी शके तो पूर्वकृत अशुभकर्मोना उदयने धिक्कारी अने आत्मगर्हा करीने पर्युषणपर्वना दिवसोमां तो आ कल्पसूत्रनो श्रवण वाचन अवश्य करवुंज जोइये. केमके आ सूत्रने पण भक्ति बहुमान पूर्वक सांभलवा के वांचवाथी ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय थाय छे. जेम जेम ते क्षय थतो जाय तेम तेम क्षयोपशमनी तारतम्यता थाय छे तेना श्रवण वाचनादि साधनो पण सुलभ थाय छे अने तेथी कालांतरे ज्ञानी थवानो संभव थाय ए निर्विवाद सिद्ध छे.

आ विषमकाल (पंचमारक)मां तो धर्मदेशक अने सत्यप्ररूपक निर्लोभी निर्ग्रन्थ मुनिवरोनी जोगवाइ मलवी बहु मुश्किल छे. अने केटलाक गामो के शहेरोमां तेवा मुनिवरोनो योग मले छे तो श्रद्धालु अने योग्य श्रोताओनी खामी दीठामां आवे छे. हालना समयमां घणा खरा जैनोनी वसतिवाला गामो एवा पण जोवामां आवे छे के ज्यां योग्य साधुओनी जोगवाइ अलग रही, परन्तु शिथिलाचारी नामधारी योग्य सरोल यतियोनो योग पण मलतो नथी. तेवा गामोमां जैनो पर्युषण जेवा पवित्र पर्वदिवसोमां कल्पसूत्र श्रवण के धार्मिक क्रियाओथी पण वंचित रहे छे. कोइ कोइ गामना श्रावको-जैनो नकरो ठरावी पर्युषणपर्वना दिवसोमां यतियोने बोलावी कल्पसूत्र श्रवण अने धर्मक्रिया आचरण करे छे परन्तु गाडी घाटी अने लाडीना प्रेमी ते भाडेतु यति अनेक नखरा करी श्रावकोने तंग करे छे तेथी श्रावको यतियोनी फरीवार बोलाववानी इच्छा पण राखता नथी. केटलाक यतियो सरल अने शांत स्वभाववाला होय छे ते पोतानी पासे कल्पसूत्रनी टब्बावाली केबालावबोधवाली जेवी प्रति होय तेज वांचीने संभलावे छे अने तेवा संभलावनार यति पण दरेक गाममां नियमित आवता होता नथी. दरवर्षे बदलाता रहे छे. तेमज कल्पसूत्रनी प्रतियो पण सर्वे सरखी होती नथी. कोइ प्रतिमां वर्णन के कथाभाग विस्तारथी अने कोइमां संक्षेपथी लखेलुं होय छे. हवे एक वर्षे एक यति पासे संक्षिप्तवर्णन के कथावाली प्रति सांभलेली अने बीजा वर्षे बीजा यति पासे विस्तृत वर्णन के कथावाली कल्पसूत्रनी प्रति सांभलवामां आवी होय त्यारे श्रोताओने संशय उत्पन्न थाय छे के आमां तो अमुक अधिकार आव्यो

नहीं तेथी आ प्रति तो ठीक नथी. आवा अल्प बुद्धिवाला श्रोताओने माटे एकत्रे प्रकारनो लखेल कल्पसूत्र वचातो होय तो तेओने कोइ जातनो संशय उत्पन्न थइ शके नहीं कोइ वृद्ध श्रावक के श्राविका उपाश्रयमां सांभलवा माटे आववा अशक्त होय अने तेओनी इच्छा कल्पसूत्र सांभलवानी थइ होय तो ते पोताना घरे वांची के वचावी सांभली लाभ लइ शके तेमज कोइ माणस बहेरो होय ते बीजाओनो सांभली न शके अने पोते वांचवा आवडतु होय तो ते पण कल्पसूत्र वाची पर्वनी आराधना करीने लाभ लइ शके छोटा छोटा गामडावाला जैनो के ज्या साधु के यतिनो पण योग न मली शके, ते वांची लाभ लइ शके. मालवा, मारवाड अने मेवाड देशना केटलाक गामोमां स्त्रियोने परदामां राखवानो रिवाज छे, परदानशीन स्त्रियो व्याख्यान सांभलवा पण न जइ शके एवो सजड प्रतिबंध छे तेओ जो भणेली होय तो पर्युषण जेवा पर्व दिवसोमां कल्पसूत्र पोताना घेर वांची शके, तेमज नवदीक्षित साध्वी बालावबोधमय कल्पसूत्र होय तो वांची समजावी के पोते वाची शके इत्यादि अनेक कारणोने लक्ष्यमां राखी मालवा, मेवाड, मारवाड अने गुजरातना जैन-संघोए प्रार्थना करी के यद्यपि कल्पसूत्रना टब्बा अने ज्ञानविमलसूरि आदिना करेलां बालावबोध छे तथापि तेओमां केटलीक वायतो न होवाथी के अधुरी रहेवाथी ते सौ कोइने सरखी रीते लाभ कारक थाय तेम नथी केमके ' अधूरु ज्ञान ते ज्ञान नहीं, अधूरो भण्यो ते भणेल नहीं, अधूरी रसवती ते रसोइ नहीं, अधूरो वृक्ष ते वृक्ष नहीं, अर्द्धपक्व फल ते स्वादिष्ट नहीं, तेथी संपूर्ण जोइये. ' माटे आप एवो कल्पसूत्रनो बालावबोध तैयार करवा कृपा करो के जेथी सौ कोई सरखी रीते लाभ प्राप्त करी शके

श्रीसंघनी प्रार्थना ध्यानमां लइ प्राचीन भंडारोमांथी पुरातन लखेली कल्पसूत्रनी टीका, चूर्णी, निर्युक्ति, तेमज टब्बा अने भाषानी दस बार प्रति भेगी करीने आ बालावबोधनो आरंभ कर्यो अने ते गुरुदेवनी असीम कृपाथी विक्रम संवत् १९४० वैशाख वदि २ मंगलवारना दिवसे निर्विघ्न पूर्ण थयो पूर्ण थतांज आहोर जालोर, गुडाबालोतरा, हरजी, शिवगंज, सियाणा, बागरा, भीनमाल, थराद, धानेरा, राजगढ, राजपुर, कूकसी, रतलाम, जावरा, मन्दसोर आदि गामोना संघे पोत पोताना माटे खास लहियाओने रोकी एक, या अधिक प्रतियो लखावी लीधी अने ते वांची सौ संघ सन्तुष्ट थयो परन्तु प्रतियो लखाववामां अधिक खर्च बेसवाथी छोटा छोटा गामोना जैनो तेवी प्रतियो लखाववा अशक्त थया त्यारे श्रीसंघे विचार कर्यो के ' आ बालावबोध पुस्तकाकारे छपावी देवामां आवे तो तेनाथी तेवा जैनो पण लाभ लेवा समर्थ थइ शकशे. ' एम धारी मारवाड वगेरे देशोना श्रीसंघे खर्चानो प्रबन्ध करी निर्णयसागरप्रेस मुम्बईमां आ कल्पसूत्र-बालावबोधनी बे हजार कोपी

छपावी प्रसिद्ध करी अने पुनः छपाववा संबंधी सर्वप्रकारनो हक्क सरकारना कायदा प्रमाणे संवत् १९४४, सन् १८८८, शालिवाहनशाके १८०९ मिति फाल्गुनशुदि ८ सोमवारे रजिस्टर करावी स्वाधीन राखवामां आव्यो.

छपाइ प्रसिद्ध थतां वारज आ ग्रंथनी बे हजार कोपी हाथोहाथ खपी गई एज एनी उत्तमता अने उपयोगितानो प्रत्यक्ष प्रमाण जाणवुं. आ प्रस्तावनामां आमां आवेला विषयोनो स्पष्टीकरण न करतां आना आरंभमां आपेल 'विषयप्रदर्शन' अने कल्प-सूत्र-पीठिका' वांचवा वाचकोने भलामण छे.

आ बालावबोधमां अनेक विषयो उपर कथाओ आपेली छे ते जुदी जुदी प्रतियो उपरथी उतारी लेवामां आवी छे. तेमां जो फार फेर जोवामां आवे तो तेथी संदिग्ध थवुं नहीं. कारण के ग्रन्थ कर्त्ताओए पोत पोतानी कृतियोमां कोई ठेकाणे संक्षेपथी तो कोइ ठेकाणे विस्तारथी कथाओ आलेखेल छे ए परिपाटी परंपरागत छे तेथी वाचनान्तरमां कोइ प्रकारनो फेरफार जणाय तो तेमां संदेह राखवो नहीं केमके शास्त्रवचनमां संदेह राखवाथी सम्यक्त्वनो नाश थाय छे. सूत्र वचन पण छे के 'संकाए सम्मत्तनासं.'

पर्युषणपर्व सर्व पर्वोमां श्रेष्ठ, महा मांगल्यकारी अने परमपवित्र छे. तेमां आरंभ समारंभना व्यापारोने छोडी अने प्रमादकथाओने देशवटो आपी धर्माराधन तथा कल्पसूत्र श्रवण के वांचनमां तल्लीन रहेवुं जोइये. एम कर्याथी ज आ पर्वनी आराधनानो वास्तविक फल हांसिल थाय छे. भला ! जे पर्वदिवसोमां परस्पर मैत्री भाव राखवुं, प्रतिक्षण धर्मध्यानमां प्रवृत्ति करवी, दरेक काम करतां जयणा राखवी अने शांतमनथी महान् आदर्श आत्माओना चरित्र सांभलवा जोइये त्यां तेम न करतां जो परस्पर वैर विरोध वधारवामां आवे, प्रतिक्षण व्यर्थ वाक्युद्ध करवामां आवे, दरेक कार्यमां जयणाने देशवटो अपाय अने कलहकारी वातो संभलाय त्यारे पर्वाराधननो फल केवी रीते मली शके ?, एम करवाथी फलनी आशा तो दूर रही. परन्तु बमणा कर्म बंधाय छे. कहेलुं छे के 'पर्वदिवसोमां कलह-कंकाशथी जे कर्म बंधाय छे ते अनेक जन्मो सुधी रोतां रोतां पण छूटी शकतां नथी.' कल्पसूत्रना अन्तभागमां स्पष्ट कहेवामां आव्युं छे के 'जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा'—जे उपशम पामे छे तेने आराधना थाय छे. जे उपशम नथी पामतो तेने आराधना थती नथी. माटे जैनधर्मनो परम ध्येय जे उप-शम छे तेनो ज्यां सुधी आश्रय न लेवामां आवे त्यां सुधी तप, जप, आदि धर्मकृत्यो सफल थइ शकता नथी. चित्तमां विवेक अने श्रद्धा बन्नेने सरखुं स्थान आपी तथा

वैर विरोध जनक हिंसाथी छेटे रही पर्वाराधनमां मशगुल रहेवु एज श्रेयस्कर मार्ग छे अस्तु हवे अन्तमा केटलीएक प्रासंगिक सूचनाओ सूचवी विरमिये छिये—

(१) वीतरागना वचन ऊपर दृढ श्रद्धा राखनार होय, शास्त्र वाचननी रुचिवालो होय, शास्त्रना मर्मने सारी रीते समजाववामा दक्ष होय, प्रतिक्रमणादि क्रिया करवा—कराववामा आलसु न होय अने शांत प्रकृतिवालो सहनशील होय तेज गृहस्थ वाचनविधि प्रमाणे आ वालावबोधने सभलाववानो अधिकारी छे

(२) सभलावनार गृहस्थे सामायिक के पोसह लइ, ऊंचा आसने पुस्तक राखी, मुख आगल मुखवस्त्रिका राखी अने ' पुरिम-चरिमाणकप्पो ' आ मागलिक गाथा नवकार पूर्वक बोलीने श्रोता-ओने वाची संभलाववु. उघाडे मुखे के नीचे आसने पुस्तक राखी वाचवुं के संभलाववुं नहीं

(३) साभलनार श्रोताओए पण पुस्तक आगल दीवो, धूप अने गुंहलि करी, विनय वहुमान पूर्वक कोलाहल कर्या विना स्थिर चित्त राखीने कल्पसूत्र श्रवण करवु अने साभली रह्या पछी सूत्रपूजा अने जयारवथी सूत्रनो वहुमान करवो

(४) श्रोताओनी सभामा जेटला दिवस कल्पसूत्र वालाववोध वाची सभलाववु होय तेटला दिवस सुधी सभलावनारे सचित्तनु त्याग करवु, गरम जल पीवु, भूमि ऊपर शयन करवु, ब्रह्मचर्य पालवुं, कलह ककासथी अलग रहेवु, कोइने माठु लागे तेवु वचन वोलवु नहीं, चलम के वीडी पान न करवु, आत्माने संवर भावमा वर्त्ताववो अने ओछामा ओछुं बीयासण तप करवु

(५) अनिवार्य कारणोना लीधे प्रथम सभलावनार एक बे दिवस वाची वाचवु छोडी दे अने तेना ठेकाणे बीजो सभलावनार

वांचवा बेसे तो तेने पण ऊपरनी (४ कलमना) नियम प्रमाणेज वर्त्ती वांची संभलाववुं जोइये, तेथी विपरीतपणे नहीं.

(६) सवारना सात वाग्याथी अग्यार वाग्या सुधी अने एक वाग्याथी साडा चार वाग्या सुधीनो टाइम कालवेला कहेवाय छे. वाकीनो टाइम अकाल वेला छे. माटे कल्पसूत्रबालावबोध काल वेलामां ज वांची संभलाववो, पण अकाल वेलामां वांचवु के संभलाववुं नहीं.

(७) पर्युषणपर्वना दिवसोमां कल्पसूत्रने वांचवानी एवी परिपाटी प्रचलित छे के अमावसना दिवसे पीठिका सहित पहेलुं अने वीजुं, एकमना दिवसे त्रीजुं अने चोथुं, वीजना दिवसे पांचमुं अने छट्ठुं, त्रीजना दिवसे सातमुं अने आठमुं तथा चोथना दिवसे नवमुं व्याख्यान वांची पूर्ण करवुं. परन्तु उक्त नियम प्रमाणे पांच दिवसमां पूर्ण न थइ शके तो आठ व्याख्यान तो अवश्य पूर्ण करवाज जोइये. अने नवमुं व्याख्यान पांचम के छठ्ठना दिवसे पूर्ण करी देवामां आवे तो पण कांइ हरकत नथी.

(८) वीजाओने संभलाववुं न होय अने पोताने एकलानेज आ ग्रंथ वांचवुं होय तो पण भक्ति बहुमानथी पवित्र थई, मुख आगल मुखवस्त्रिका के आडो पल्लो राखी अने अकाल वेला टाली वांचवुं जोइये.

(९) आ ग्रन्थनी वाचना शुरु कर्या पछी अधुरी छोडवी नहीं. कारण के अधूरी वाचना छोडी देवाथी तेना साराऽसारनो पत्तो लागतो नथी अने ते असंगलकर पण थाय छे. कोइ पण ग्रन्थ आदिथी अन्त-सुधी वांचवा के सांभलवाथीज हितकर थाय छे अने तेमांथी अनेक बावतो सीखवा योग्य मले छे. ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

ग्रन्थकर्त्ता ।

संस्कृत-प्राकृतभाषामय अनेक जैन-ग्रन्थ रत्नोना संशोधक अने प्रकाशक,
तथा हिन्दी साहित्यना चालीस ग्रन्थोना सारा सुलेखक
व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय-



मुनिराज-श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज।

जन्म-१९४०,	लघुदीक्षा-१९५४,	बृहद्दीक्षा-१९५५,	उपाध्याय पद १९८०
मु० धवलपुर	मु खाचरोद	मु० आहोर	मु० जावरा
(बुंदेलखंड)	(मालवा)	(मारवाड)	(मालवा)

मधुराऽतिप्रिया चैव, भारती यस्य शोभते ।
स श्रीयतीन्द्रविजयो, जयतान्मुनिसत्तम ॥ १ ॥

आनंद प्री. प्रेस—भावनगर.

श्री सद्गुरुभ्यो नमः।

ॐ णमो अरहो समणस्स भगवओ महावीरस्स।

जैनाचार्य श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज सङ्कलित—

श्री कल्पसूत्र—बालावबोध।

ग्रन्थरचनानो हेतु कहे छे—

श्रीजिनशासनने विषे सर्व पर्व मांहे शिरोमणि श्रीपर्युषण पर्व छे. ते पर्वना दिवसोमां नगर नगरने विषे कल्पसूत्र वंचाय छे, पण योग वहन करनारा साधु मुनिराजनेज सूत्र वाचवानो अधिकार श्रीतीर्थंकर भगवाने दीधो छे बीजा कोइथी सूत्रनी व्याख्या थाय नहिं माटे तेवा मुनिराजोनु आगमन सर्वस्थले होतु नथी तेथी जे गाममां साधुमहा राज विराजमान न होय ते गाम निवासी श्रावकोने कल्पसूत्र श्रवण करवानो अतराय पडे छे ते अतराय दूर करवाने वास्ते जेम पूर्वाचार्योंए लोकोपकारने अर्थे पूर्वे अनेक प्रकरणोनी रचना करेली छे तथा वर्त्तमान कालमा पण करे छे ते प्रकरण पण सूत्रोना अर्थ रूपज छे अने तेनु पठन पाठन चतुर्विध श्रीसघ करे छे तेम हु पण श्रीकल्पसूत्रना वालाववोधने प्रकरण रूपे वनावु छु के जे ग्रथ साधु, साध्वी श्रावक अने श्राविका मली चारे प्रकारना श्री सघने वाचवाना उपयोगमा आवे केमके ए वालाववोध पण सूत्रनो अर्थ रूप होवाथी प्रकरण सदृश समजवो

श्री पर्युषण पर्वमा ग्रन्थ वाचवानी विधिः—

जे शहरमा श्रीमुनिमहाराज चोमासु रह्या होय अने ते गामना

श्रावको एकठा थइ साधुजी पासेथी सूत्रनी पोथी मांगी लइ आवीने एक श्रावकना घरमां राखे, अने रात्रि जागरण करे. पछी बीजे दिवसे श्रावक श्राविका एकठां थइने एक कुंआरा छोकराने अबोट वस्त्र पहेरावी हाथी ऊपर बेसाडीने अथवा अश्वप्रमुख कोइ उत्तम वाहन ऊपर बेसाडी ते पोथी एक थालमां राखी ते थाल ते पेला छोकराना हाथमां आपी सर्वने बदाम, शाकर पतासा आदिकनी प्रभावना करी वाजते गाजते महोटा महोत्सव पूर्वक उपासरे आवीने ते पुस्तक गुरुना हाथमां आपे. गुरु वाचना करे ते सर्व श्रीसंघ सांभले अने गुरु आगल श्रीफलादिक मूके, अथवा आ पुस्तक जे श्रावकादिकनी पासे होय तेनी पासेथी मांगी लावीने पंचे ठरावेला बीजा कोइ श्रावकने घेर लइ जइ त्यां रात्रि जागरण करी पछी बीजे दिवसे सर्व संघ मली पूर्वोक्त रीते महोटा महोत्सव पूर्वक पौषधशालामां, किंवा उपाश्रयमां, अथवा कोइ श्रावकने घेर ज्यां सामायिकादिक करवानी कोइ स्वच्छ निर्मल जगा होय ते स्थानके, अथवा बीजी कोइ जीवादि उपद्रव रहित जगा होय, अथवा ज्यां सर्व संघे मली वांचवानो विचार कर्यो होय तेवी जगाए आवीने ज्ञानभक्ति पूर्वक घणाज यत्नथी सर्व प्रकारनी आशातना टाली पोथी कोइ विवेकी सुज्ञ श्रावकना हाथमां आपीने वंचाववी अने बीजा सर्वजनोए प्रमाद, निद्रा, विकथादिकनो त्याग करी विनयपूर्वक त्यां बेसीने एकाग्र चित्ते सांभलवी.

श्री पर्युषण पर्व, कल्पसूत्र अने श्रमणसंघनुं महत्त्व कहे छेः—

नैतत्पर्वसमं पर्व, न च कल्पसमं श्रुतम् ।
न धार्मिकसमः संघ–स्त्रिरत्नानि जगत्त्रये ॥ १ ॥

"आ जगतने विषे दीपमालिकादिक अनेक प्रकारना लौकिक पर्व छे तथा चोमासी, श्रीतीर्थंकर देवना पांच कल्याणक, अष्टमी, पाक्षिक अने तीर्थ यात्रादिक अनेक पुण्य पर्व छे, ते सर्व लोकोत्तर उत्तम पर्व

छे. ए सहु पर्वने विषे शिरोमणि चिंतामणि रत्न सदृश ज्येष्ट एवुं सांवत्सरिक पर्व छे जेम सांवत्सरिक पर्व समान बीजु कोई पर्व नथी, तेम कल्पसूत्र समान बीजु कोइ सूत्र पण नथी तथा चतुर्विध श्रीसंघ मांहे श्रीसाधु मुनिराजना संघ समुदाय समान बीजो संघ पण कोइ नथी, एटले सर्व पर्वमांहे सर्वोत्तम पर्युषण पर्व छे तेने विषे कल्पसूत्र वचाय ते पण एकादशांगादि सर्व सूत्रमां उत्तम छे तेम कल्पसूत्रना वाचनार साधु मुनिराज ते पण चारे प्रकारना संघमाहे उत्तम छे एम ए जगतमां त्रणे साक्षात् रत्न समान जाणवा

व्याख्या करनार पोतानी लघुता देखाडे छे:—

व्याख्या करनार कहे छे के हुं मदमति, मूर्ख, अज्ञानी, महा जड छता पण श्रीसंघनी समक्ष दक्ष थइने आ कल्पसूत्रनी व्याख्या करवानु साहस करु छु—व्याख्या करवाने उजमाल थयो छु ते सर्व श्रीसद्गुरुनो प्रसाद अने चतुर्विध श्रीसंघनुं सांनिध्यपणु जाणवु जेम अन्य शासनमां कहेलु छे के श्रीरामचद्रनी सेनाना वादराओए महोटा महोटा पाषाण लइने समुद्रमां नाख्या ते पथरा पोते पण तर्या अने लोकोने पण तार्या ते कांइ पाषाणनो, समुद्रनो अने वादराओनो प्रताप जाणवो नहीं परतु ते प्रताप श्रीरामचद्रजीनो जाणवो, केमके पत्थरनो तो एवो स्वभाव छे के पोते पण बूडे अने आश्रय लेनारने पण बूडाडे, तेम हु पण पत्थर सदृश छता श्रीकल्पसूत्रनी व्याख्या करु छु तेमा म्हारो काइ पण गुण जाणवो नहीं, तेमज पौषधशाला अथवा पुस्तकना पानानो पण काइ गुण जाणवो नहीं ए गुण मात्र श्री सद्गुरु अने श्रीसंघनो ज जाणवो तथा जेम कोइ भरहभावनी जाणवावाली गीतकला अने नृत्यकलामा विशारद, छपन्न कोडी ताल—भरह शास्त्रनी पारग एवी नर्त्तकी होय ते गीत—गान करते, मृदंगध्वनि वाजते, नृत्य करे, अनेक चक्र—गोला फेरवे अने हाव भावथी लोकोना मन रजन करे,

तेमज कोई गामडीयानी गामडियात एक घेली स्त्री होय ते पण तालो-टाना छंद पडते थके नृत्य करे तथा जेम कोइ महा गंभीर समुद्र होय ते पण लहेरो आपे अने कोइक गामनुं न्हानुं तलाव होय ते पण वर्षाऋतुमां पाणीथी पूरण भरायुं थकुं लहेरो आपे तेने पण कोई निवारे नहीं तथा जेम शुद्ध दूध मांहे अखंड चोखा नाखीने खीर रांधीये ते पण उभराय छे अने कूशकानी रावडी रांधीये ते पण उभराय छे; तेमां पण कांइ आश्चर्य नथी. तेम जे एकज स्थानके एकज क्षेत्रे अनेक गण-धर, संपूर्ण श्रुतधर, महाशास्त्रना वेत्ता, नवरसावतार, महा व्याख्या-नना करनारा व्याख्या करे अने हुं पण व्याख्या करूं तेमां अरस-परस एटलो फेर जाणवो एटले भरहभेदने जाणनारी नर्त्तकी तथा समुद्र अने शुद्ध खीरना सदृश ते गणधरादिक जाणवा अने गामडियात तथा गामनुं तलाव अने कूशकानी रावडी समान मन्हें जाणवो. ते हुं श्रीस-द्गुरु अने श्रीसंघना प्रसादथी माननीय थयो छुं. जेम कोई पाषाण जड छतां तथा ज्ञान विवर्जित छतां पण तेनी ज्यारे प्रतिमाजी नीपजावीये; त्यारे ते सर्व जनोने माननीय पूजनीय थाय तेनी पेरे श्रीगुरु तथा श्रीसंघना प्रसादथी हुं पण माननीय थयो छुं.

श्रीदेवगुरु नमस्कार-लक्षण-मंगलाचरणम् :—

नत्वा श्रीमन्महावीरं, गौतमादिगणाधिपान् ।
कुर्वेऽहं कल्पसूत्रस्य, व्याख्यां बालोपकारिणीम् ॥१॥

प्रथम श्रीगुरु महाराजनो आदेश लइने जे क्षेत्रमां साधु चोमासुं रहे त्यां चोमासामां भाद्रपद मासने विषे पर्युषण पर्व आवे थके मांग-लिक निमित्ते पांच दिवस पर्यंत श्रीकल्पसूत्र वांचे ते कल्प एवुं नाम आचारनुं छे ते साधुनो आचार दश प्रकारनो छे. यदुक्तम्—

आचेलुक्कुद्देसिय, सज्जायर-रायपिंड-किइकम्मे ।
वय-जिट्ठ-पडिक्कमणे, मासं पज्जोसवणा कप्पे ॥१॥

प्रथम अचेलक, बीजो उद्देशिक, त्रीजो सय्यातर, चोथो राजपिंड, पाचमो कृतिकर्म, छठ्ठो व्रत, सातमो ज्येष्ट, आठमो प्रतिक्रमण, नवमो मासकल्प अने दशमो पर्युपणकल्प, ए दश प्रकारना कल्प एटले आचारना नाम जाणवा

१ प्रथम अचेलक कल्प कहे छे—जे वस्त्र नहीं राखवा तेने अचलक कहीये. त्यां श्रीऋषभदेव भगवान तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधु तो श्वेत मानोपेत जीर्णप्राय वस्त्रने धारण करे तेमा डुटीथी चार आगुल नीचो अने गुदाथी चार आगुल ऊचो एवो साडा त्रण हाथनो चोलपट्टो राखे तथा साडाचार हाथनी चादर राखे तथा पोताना हाथ थी एक वेंत ने चार आगुलनी मुहपत्ति राखे एम अर्द्ध शरीर उघाडु अने अर्ध शरीर ढाक्यु राखे एवी रीते पहेरेला वस्त्र ते अणपहेर्यां जेवा समजवां माटे तेने अचेलक कहीये ते ऊपर दृष्टांत कहे छे— जेम कोई एक पुरुषे धोतीया वनावनारने कह्यु के म्हारा धोतीया ताकीदथी आप, केमके हुं नागो फरु छु, एवु वचन व्यवहारथी कह्यु हवे ते पुरुषे जूना वस्त्रनु धोतीयु पहेर्युं छे तो पण नागो फरु छुं एम कह्यु वली बीजु दृष्टात कहे छे—जेम कोइएक पुरुष धोतीयु पहेरीने नदी ऊतर्यो तेने कोई एके पूछ्युं के भाई ! तु नदी शी रीते ऊतर्यो ? तेवारे तेणे जवाव आप्यो के हु नागो थइने नदी ऊतर्यो वली त्रीजु दृष्टात कहे छे—जेम कोईएक डोसी जूना वस्त्र पहेरी वणकरना पासे जइ कहेवा लागी के अरे भाई ! म्हारा वस्त्र तेयार थया होय तो मने आप, हु नागी फरु छु. एवी रीते साधुने पण जीर्णप्राय जूना श्वेत मानोपेत वस्त्र धारण करते छते पण वस्त्र रहित अचेलकज कहीये, तेम आ चोवीसीमा श्रीऋषभ देव अने श्रीमहावीरने जाजेरा एक वर्ष पछी इन्द्रदत्त वस्त्रने अपगमे जावज्जीव पर्यंत अचेलकपणु हतु अने चोवीसे तीर्थंकर आश्रयी तो दीक्षा लेती वखते इन्द्र महाराज तेमना खभा

ऊपर देवदुष्य वस्त्र मूके ते ज्यां सुधी खंभा ऊपर रहे त्यां सुधी सचेलक कहीये अने पडी गया पछी अचेलक कहीये तथा आ चोवीसीमां बीजा श्रीअजितनाथ भगवानथी मांडीने श्री पार्श्वनाथ भगवान पर्यंतना बावीश तीर्थंकर मध्यना कहेवाय. तेने देवदुष्य वस्त्र शेष बे घडी आयुष्य थाकतां सुधी रहे छे. माटे तेने सचेलक (वस्त्रसहित) कहीये तथा ए बावीश तीर्थंकरना साधु पण ऋजु एटले शुभ मनवाळा सरल अने दक्ष एटले पंडित (घणा डाह्या चतुर) होय माटे महोटा मूलनां पांच रंगवालां मानोपेत रहित एवां वस्त्र राखे तेथी एने सचेलक कहीये; केमके एने ए अचेलक कल्पनी कांइ मर्यादा नथी माटे एमने ए कल्प अनियत छे अने पहेला तथा छेल्ला तीर्थंकरना साधु साध्वीने ए कल्प नियत छे एटले निश्चय छे.

२ बीजो उद्देशिक कल्प कहे छे—जे साधु अथवा साधवीने उद्देशीने कर्यो एवो जे आहारादिक तेने उद्देशिक कहीये. त्यां मध्यना बावीश तीर्थंकरना वखतमां जे साधु अथवा साध्वीने निमित्ते कोइ गृहस्थे भात पाणी, औषध, भैषज्य, वस्त्र, पात्र निपजाव्यां होय ते तेहज साधुने लेवा न कल्पे पण शेष बीजा साधुने ते आहारादिक लेवा कल्पे, केमके तेने आधाकर्मादिक दोष न लागे अने पहेला तथा छहेला तीर्थंकरना शासनने विषे तो एक साधु अथवा एक साध्वीने अर्थे जे आधाकर्मिक आहारादि निपजाव्यां होय ते सर्वथा प्रकारे कोइ पण साधुने अथवा साध्वीने लेवा कल्पे नहीं.

३ त्रीजो सय्यातरपिंड कल्प कहे छे—जे उपाश्रयनो धणी होय तेने सय्यातर कहीये अथवा जे साधुने रहेवानी (उतरवानी) जगा आपे एटले जेनी आज्ञा लइने साधु जे जग्यामां रह्या होय ते घरना स्वामीने सय्यातर कहीये. तेना घरनो पिंड जे आहारादिक बार वस्तु ते सर्व तीर्थंकरना साधुओने वहोरवी कल्पे नहीं. ते बार वस्तुना नाम कहे छेः—१ आहार, २ पाणी, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ कपडा, ६ पात्रा, ७ कंबल, ८

ओघो, ९ सूई, १० पिप्पलक, ११ नख ऊतारवानी नेरणी, १२ कानमाथी मेल कहाडवानी चाटुइ, ए बार चीज तथा बीजा पण छरी, कातरणी अने सरपला प्रमुख ते कोइ पण साधुने लेवां कल्पे नही ए सय्यातर पिंड लेवामा अनेषणीय अशुद्ध दोषनो संभव थाय. प्रसगादि महोटा दोष ऊपजे; केमके साधुना राग करी पारणा, अने उत्तरपारणाने अर्थे वारवार जाता आवता अशुद्ध आहारादिके करीने ते गृहस्थ दहिं दूध प्रमुख स्निग्ध वस्तु पण आपे तथा रसगृद्धि थाय अने मिष्टान्नना लोभे तेनु घर न मूके कदापि वेगलो बीजे गामे गयो होय तो पण त्याथी मिष्टान्नना लोभे फरी आवे वली वस्त्रादिक माग्यां थका ते गृहस्थ तरत ज आपे, तेणे करी उपधिनी वृद्धि थाय वली ते सय्यातरनो पिंड लेता थका गाममां फरवाथी छूटे तेथी ते साधुनु शरीर जाडु थाय वली ते सय्यातरनो पिंड लेवाथी कदाच गृहस्थने एवो पण भय उपजे के जे उपाश्रय करावे के आपे तेने आहारादिक पण आपवा पडे तेने लीधे कोइ उपाश्रय पण न करावे अने रहेवाने कोई जगा पण आपे नहीं तेथी आहार शिष्यादिकनो मलवो दुर्लभ थइ पडे. इत्यादिक दोषना प्रसंग-थी सय्यातरना घरनो आहार लेवो सर्व तीर्थंकरे निषेध्यो छे. कदाचित् कोई कारणे सय्यातरनो पिंड लेवो पडे तो रात्रिना चार पहोर क्रिया सज्झाय करतो जागरण करे पण निद्रा न करे अने प्रभातनु पडिक्कमणु बीजे स्थानके जइ करे तो उपाश्रयनो धणी सय्यातर न थाय अने जो रात्रे निद्रा करे अने प्रभातनु पडिक्कमणु बीजे स्थानके करे तो बेहु सय्या-तर थाय एटले बेहु स्थानक आहारादि लेवा न कल्पे तथा १ तृण २ माटीनु ढेफु, ३ भस्म, (राख) ४ मात्रानुं ठाम, ५ बाजोट, ६ पाट–पाटला, ७ सय्या, ८ सथारो, ९ लेप प्रमुख वस्तु, १० उपधि सहित चेलो एटले वस्त्रादिक सहित चेलो ए दश वस्तु सय्यातरना घरनी लेवी कल्पे. ए कल्प सर्व तीर्थंकरोना साधुने निश्चय होय माटे एने नियत कल्प कहीये।

४ चोथो राजपिंड कल्प कहे छे–जे म्होटो छत्रपति चक्रवर्त्यादिक राजा होय अने जेने सेनापति, पुरोहित, श्रेष्टि, प्रधान अने सार्थवाह ए पांच वानां होय, ए पांचनी साथे राज्य करे तेने राजा कहीये. तेना घरनो आहारादिक पिंड पहेला तीर्थंकरना साधु साध्वीने अने छहेला श्रीवीर भगवानना साधु साध्वीने लेवो कल्पे नहीं. केमके राजद्वारमां घणा लोक मले, त्यां घणो वखत लागे तथा कोइक अमंगालिक समजे अने त्यां हाथी, घोडा, रथ अने स्त्री प्रमुखने वारंवार जोतां थकां राग उपजे, वली कोइक चोर कहे, कोइक हेरू पण कहे इत्यादिक अनेक दोष उपजे. वली लोक निंदा करे के जुओ ! आ साधु थईने राज्यपिंड लीये छे, अन्य दर्शनीयोना शास्त्रमां पण राज्यपिंड निवार्यो छे माटे पहेला अने छहेला तीर्थंकरना साधुओए राज्यपिंड न लेवो अने बावीश तीर्थंकरना साधु तो ऋजु अने पंडित छे माटे राजाना घरनो निर्दोष आहार जाणे तेवारे आहार लीये अने सदोष जाणे तो न लीये माटे तेमने ए कल्पनी मर्यादा नथी.

५ पांचमो कृतिकर्म कल्प कहे छे–जे वांदवुं तेने कृतिकर्म कहिये. ते बे प्रकारे छे. एक तो ऊभुं थावुं, बीजुं द्वादशावर्त्त वांदणे वांदवुं. तेमां श्रीजिनशासनने विषे सर्व तीर्थंकरोना साधुओनी एवी मर्यादा छे के जेणे पहेली दीक्षा लीधी होय ते साधुने पाछलथी दीक्षा लेनारो साधु वांदे पण बाप दीकरो अथवा राजा अने प्रधान इत्यादिक न्हानो म्होटो जुवे नहीं; परंतु दीक्षा जो दीकरे प्रथम लीधी होय अने पिताये पाछलथी लीधी होय तो पिता पुत्रने वंदन करे एमज राजा पोताना प्रधानने पण वंदन करे तथा सर्व साध्वीयो तो पुरुषोत्तम धर्म जाणीने सर्वे साधुने वांदे परंतु न्हानो म्होटो जुवे नहीं. जो सो (१००) वर्षनी दीक्षित साध्वी होय अने एक दिवसनो दीक्षित साधु होय तो पण ते साध्वी साधुने सामी जइने हे पूज्य ! पधारो, एवी रीते विनयपूर्वक खमासमणा दइने वांदे, केमके धर्ममांहे मुख्य प्रधानपणुं ते पुरुषनेज कह्युं छे; माटे पुरुष अधिक छे तेथी

पुरुषे स्त्रीने वंदन करवु नहीं, जो साधु थईने साध्वीने वांदे तो घणा दोष प्राप्त थाय, केम के स्त्रीजाति तुच्छ छे माटे अहंकार करे तो तेथी ते नीच गोत्रने बांधे, वळी लोक निंदा करे माटे पुरुषे स्त्रीने वंदन करवु नहीं ए कल्प सर्व चोवीशे तीर्थंकरोना साधु आश्रयी नियत जाणवो

६ छट्ठो व्रतकल्प कहे छे —प्राणातिपातादिक पाच महाव्रत छे एटले प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह ए पाचथी विरमवु ते पाच महाव्रत कहीये तेमा श्री ऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधु तथा साध्वीने तो तादृश जाणपणाना अभावथी पाचे महाव्रत व्यवहारथी छे अने मध्य बावीश जिनना वाराना साधु तो परिग्रह व्रतमाहे परिगृहित स्त्रीभोगनु पच्चरकाण जाणे छे तथा त्रीजा अदत्तादान व्रत माहे अपरिग्रहित स्त्रीभोगनु पच्चरकाण जाणे छे एटले स्त्रीने परिग्रह रूप गणीने पाचमा परिग्रह व्रत साथे ज लीये छे, केमके ज्या स्त्री त्या परिग्रह अने ज्या परिग्रह त्या स्त्री होय छे माटे बावीश तीर्थंकरना साधुने चोथु मैथुन विरमण व्रत वर्जीने शेष चार महाव्रत जाणवा अथवा श्रीऋषभदेव अने महावीरना तीर्थे रात्रि भोजन व्रत मूल गुण मांहे गणे छे तेथी रात्रिभोजन विरमण व्रत साथे गणीये तो साधुने छ व्रत थाय अने बावीशजिनना तीर्थे तो रात्रिभोजन व्रत उत्तर गुणमा गणे छे माटे चारज व्रत जाणवा

७ सातमो ज्येष्ट कल्प कहे छे —ज्येष्ट एवु म्होटानु नाम छे त्या श्रीऋषभदेव अने महावीरना साधुओने तो म्होटी दीक्षा दीधा पछी लोड-वडाइ गणाय छे माटे जेणे म्होटी दीक्षा पहेली लीधी होय ते म्होटो गणाय अने जेणे न्हानी दीक्षा पहेली लीधी होय पण म्होटी दीक्षा पछी लीये तो ते आगलानी अपेक्षाये लघु गणाय जेम पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने चाकर तथा माता अने दीकरी एम अनुक्रमे दीक्षा लीये. पछी उठामणा आवे म्होटी

दीक्षा लीये तेवारे मुख्य प्रकारे तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार म्होटां छे ते भणवामां जो अधिक थाय तो तेहज म्होटां कहेवाय. नहीं तो पुत्र, प्रधान, चाकर अने दीकरी ए चार न्हानां छे परंतु ते भणवामां अधिक थइ जाय तो गुरु तेमने म्होटी दीक्षा आपी म्होटां करे अने बावीश तीर्थंकरना साधुने तो ए मर्यादा नथी; केमके ते तो वधाए प्रवीण डाह्या होय छे तेथी तरत ज भणी लीये छे माटे ते दीक्षाना दीवसथीज वृद्ध अने लघु गणाय छे तेथी तेमनामां प्रथम जे दीक्षा लीये तेहज म्होटो गणाय. जो पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने वाणोत्तर तथा माता अने दीकरी ए सहु साथे दीक्षा लीये तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार लोक रीतीथी म्होटा गणाय तथा पुत्र, प्रधान, वाणोतर अने दीकरी ए चारे लघु गणाय तेथी म्होटी दीक्षाने योग्य प्रधान अने पुत्र होय तो राजाने तथा पिताने पूछीने म्होटी दीक्षा आपे तेथी अप्रीति न उपजे ए रीते ए अनियत कल्प छे.

८ आठमो प्रतिक्रमण कल्प कहे छे—प्रतिक्रमण जे आवश्यकनुं करवुं ते जाणवुं. त्यां प्रथम अने चरम जिनना वारामां तो साधुने अतिचार दोष लागे किंवा न लागे तो पण निश्चयथी दैवसिकादिक पांचे प्रकारनां पडिक्कमणां करे अने बावीश तीर्थंकरना साधु तो जो पाप लाग्युं छे एवुं जाणे तोज दैवसिक अथवा राइ पडिक्कमणुं सांजे अथवा सवारे करे अने पाप लाग्युं न जाणे तो ते पण न करे. बाकी पाक्षिक चोमासी अने सांवत्सरिक ए त्रणे पडिक्कमणां तो बावीश जिनना वारामां होयज नहीं एम ए पण अनियत कल्प छे.

९ नवमो मासकल्प कहे छे—पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना साधु एक गाममां एक मास पर्यंत रहे उपरांत रहे नहीं. मात्र चोमासाना चार महीना पर्यंत एक गाममां रहे; परंतु अन्य दिवसोमां एक महीनाथी

उपरांत रहे तो घणा दोषोनो संभव थाय एक तो गृहस्थ साथे प्रतिबंध थाय, हलवापणुं पामे, लोकनो उपकार करी शके नहीं, देश विदेशनु ज्ञान न थाय, ज्ञाननु आराधन न थाय माटे एक मास उपरांत रहेवानी साधुने आज्ञा नथी कदाचित् दुर्भिक्षादिक कारणे रहेवुं पडे अथवा विहार करवाने असमर्थ होय तो पण वस्ति पालटण करे–पाडो पलटावे, घर पलटावे अने छेवट संथारानी भूमि पालटण करीने भावथी पण मास कल्प करे जे माटे लोकमां पण कहेवत छे के ' स्त्री पीयर नर सासरे, संजमिया थिरवास। एतां होय अलखामणा, जो माडे घरवास ॥ १ ॥ ' अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुओ तो विहार करवाने जो सामर्थ्यवान होय तो पण ते ऋजु अने पंडित छे माटे तेमने मासकल्पनो काइ नियम नथी जो दोष नहीं लागतो होय अने लाभ जाणे तो देसूणा पूर्वकोडी वर्ष पर्यंत पण एकज क्षेत्रमां एकज स्थानके रही जाय माटे ए अनियत कल्प छे

१० दशमो पर्युपणा कल्प कहे छे—जे एक जगाये रहेवु तेने पर्युपणा कहे छे ते पर्युपण बे प्रकारनां छे एक तो गृहस्थ जाणे अने बीजो गृहस्थ न जाणे ज्या पर्युपण पर्वने पडिक्कमता थका साधुने लोक पूछे तेवारे रहेवाने विषे वर्त्तमान योग्य कहे पण पर्युपणा पर्व पडिकम्या पछी तो कार्त्तिकी पूनम पर्यंत रहेवानुं निश्चयथी ज कहे त्या गृहस्थनी आज्ञा थकी पाच दिवस यावत् रहेवुं एम पाच पाच दिवस रहेतां पचास दिवसे पर्युपण पर्व करे तेमा कल्पसूत्र गृहस्थ आगल वाचे पछी सीतेर दिवस निश्चयथी रहे एटले जे गृहस्थ जाणे ते तो भाद्रवा शुदि पांचमथी माडीने कार्त्तिक शुदि पूर्णिमा सुधी रहे अने बीजो जे गृहस्थ न जाणे ते तो आषाढ शुदि पूर्णिमाथी माडीने भादरवा शुदि पंचमी सुधी जाणवु, केमके कदापि कोइ गृहस्थ साधुने पूछे के आप चोमासु रह्या ? तेवारे साधु कहे के जेवी खेत्र फरसना अथवा पांच दिन छीए

एवो जवाब आपे तेथी आगलना दिवस गृहस्थ न जाणे अने पर्युषण कर्या पछी तो अवश्य त्यां ज रहे माटे ते गृहस्थ जाणी शके ते जघन्यथी सीतेर दिवस अने उत्कृष्ट छ महीनानां पर्युषण जाणवां. ए कल्प श्रीऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधुओने निश्चयथी जाणवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुओने निश्चय नहीं.

ए रीते दश कल्प कह्या. ते दशे कल्प श्रीऋषभदेव तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधुओने निश्चयथी जाणवा अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुओने तो ए दशमांथी एक सय्यातर, बीजो चार महाव्रत, त्रीजो ज्येष्ट अने चोथो कृतिकर्म एटले वांदणां. ए चार कल्प निश्चयथी होय छे अने एक अचेलक, बीजो उद्देशिक, त्रीजो प्रतिक्रमण, चोथो राज्यपिंड, पांचमो मासकल्प अने छट्ठो पर्युषण कल्प ए छ कल्पनो निश्चय नहीं. जेवी मर्यादा बावीश तीर्थंकरोना साधुओनी कही तेवीज मर्यादा महाविदेह खेत्रना तीर्थंकरोना साधु साध्विओनी पण जाणवी. इहां कोई कहे के साधु तो सर्वे सरखाज छे तो तेना आचारमां भेद केम पड्यो ? तेनो उत्तर कहीये छिये—श्रीऋषभदेवजीना वारे माणस ऋजु अने जड होय छे, तेमने धर्म समजाववो घणो कठण थाय छे तथा श्रीमहावीर भगवाननी वारे माणस वक्र अने जड होय छे, तेमने धर्म पालवो घणो दुर्लभ थइ पडे छे अने मध्यना बावीश तीर्थंकरना वारे माणस बधां ऋजु अने प्राज्ञ होय छे. माटे तेमने धर्म समजाववो पण सुलभ होय छे अने पालवुं पण सोहेलुं होय छे. एवी रीते मनुष्योना परिणाममां भेद होवाथी कल्पमां पण भेद थया छे एम जाणवुं, परंतु परमार्थथी भेद कांइ पण नथी मात्र पुरुषोना परिणामना भेद छे.

प्रथम तीर्थंकरना साधु जे ऋजु अने जड होय ते दृष्टांतथी समजावीये छीए–श्रीऋषभदेवना तीर्थमां कोइएक आचार्यनो शिष्य स्थंडिल

भूमिकाए गयो ते घणो वखत लगाडीने पाछो आव्यो तेने गुरुये पूछ्युं अरे ! शिष्य ! तने आटलो वखत केम लाग्यो ? त्यारे ते ऋजुपणाथी बोल्यो के स्वामिन् ! नाटकिया-लोक रमत करता हता ते जोवाने ऊभो रह्यो हतो तेथी वधारे वखत लाग्यो ते साभली गुरु बोल्या -हे वत्स ! आपणे साधु थइने नाटक जोवा ऊभा रहेवु नहीं, एथी पाप लागे छे माटे आपणने ए अकल्पनीय छे तेवारे शिष्ये 'तहत्ति' कही एटले जेम तमे कहो छो ते प्रमाण छे, आज पछी जोइश नहीं एम कह्यु फरी कोइक दिवसे तेहज शिष्य बाहिर भूमि गयो हतो ते घणो वखत लगाडीने पाछो आव्यो जेथी गुरुये पूछ्यु के आटलो वखत केम लाग्यो ? तेवारे ते शिष्य बोल्यो के हे स्वामिन् ! रस्तामा नाटकणी नाचती हती ते जोवाने ऊभो रह्यो हतो तेने लीधे वखत थइ गयो तेवारे गुरु बोल्या के तमने पूर्वे मनाई करी हती तेम छता केम जोवाने ऊभा रह्या ? तेवारे ते शिष्य जड पणाथी एटले मूर्खपणाथी बोल्यो के महाराज ! तमे तो नाटकिया जोवाने मनाइ करी हती पण नाटकणी जोवाने तो मनाइ करी हती नहीं तेवारे गुरु बोल्या-हे महाभाग्य ! नाटकणी तो वली नाटकिया करता पण अधिक रागनु कारण छे माटे ते तो सर्वथा नहींज जोवी ते साभली शिष्य बोल्यो-के स्वामिन् ! मन्हें प्रथम एवी समज पडी हती नहीं हवे हु क्यारे पण जोइश नहीं इहा ऋजुपणाथी सत्य बोल्यो अने जडपणाथी जो नाटकिया वर्ज्या तो नाटकणी अवश्य वर्जवी जोइए एटलु समज्यो नहीं १

वली बीजु दृष्टात कहे छे-जेम कोइएक कोकणदेशना वाणीयाए वृद्धपणामा कुटुंब परिवार छोडी धर्म पामी वैराग्यवान थइने स्थविर पासे दीक्षा लीधी तेने कोंकण साधु कहीने सर्व बोलावे एक दिवस ते थडिल थकी आवी इरियापथिका क्रिया पडिक्कमवा लाग्यो, तेमा काउसग्ग पारता घणो वखत लाग्यो, तेवारे गुरुए पूछ्यु के भो कोंकणिक साधु ! तमोने आटलो वखत काउस्सग्गमा केम लाग्यो ? ते साभळी ऋजुपणे बोल्यो के स्वामीन् ! म्हें आज जीवदया चितवी, गुरुए पूछ्यु तमे केवा प्रकारनी जीवदया चितवी ? तेवारे साधु बोल्यो

जेवारे हुं घेर गृहस्थ अवस्थामां रहेतो हतो तेवारे वर्षाकाले खेत्रमां वृक्षोने कापी नाखी सूड करीने जमीनने अग्निथी वाली शुद्ध करी तेमां धान्य वावतो हतो तेणे करी मारा घरमां घणुंज धान्य नीपजतुं हतुं. तेथी मारुं सर्व कुटुंब सुखी रहेतुं हतुं अने हवे म्हें तो दीक्षा लीधी छे अने म्हारा छोकरा आलसु छे ते खेतीमां कांइ समजता नथी माटे जो निरुद्यमी थका निश्चितपणे घरमां वेठा हशे अने सूड नहीं करशे तो धान्य नीपजशे नहीं तेथी ते वापडा भूखे मरशे. एवा प्रकारनी म्हें जीवदया चिंतवी, एम ऋजुपणाथी साचुं वोल्यो ते सांभळी गुरु वोल्या—भद्र! तमे माठुं विचार कर्युं छे, केमके ए खेतीनो धंधो पाप विना थाय नहीं माटे सावद्यनी अनुमोदना साधुने करवी युक्त नथी तेथी मिच्छामि दुक्कडं देइने शुद्ध थाओ, ते सांभळी साधुए मिच्छामि दुक्कडं दीधो.

वळी त्रीजुं दृष्टांत कहे छे—सोरठ देशने विषे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेनो पुत्र सासरे जवा लाग्यो तेवारे पिताए शिखामण आपी के बेटा! एक वार हां कहेवी अने एकवार ना कहेवी, एवी पितानी शिखामण धारण करीने सासरे पोहोतो. त्यां सासु ससराए पूछ्युं के भट्टजी! तमे आव्या? तेवारे ब्राह्मण वोल्यो हांजी, फरी सासु ससरे पूछ्युं के घेर कुशल खेम छे? तेवारे ब्राह्मण वोल्यो नाजी, फरी पूछ्युं के तमारा पिता देवलोक पहोता? तेवारे कह्युं हांजी. फरी पूछ्युं, तेमनी पछवाडे कांइ खरच कर्यो? तेवारे कह्युं नाजी, ते सांभळी सासु ससरे कह्युं के तमे तो म्होटा मूर्ख छो, तेवारे तेणे कह्युं हांजी, एटली वात थया पछी ते सर्व ब्राह्मण मलीने मोकाणे गया. त्यां जइने जुए छे तो जमाइनो पिता जीवतो वेठेल छे, तेने राम राम जुहार जुहार करीने सर्व मल्या. पछी जमाइना पिताए पूछ्युं के तमो सर्वेनुं शा माटे अहीं आववुं थयुं छे? ते सांभळी सर्वे वोल्या के तमारे छोकरे तमे परलोक सिधाव्या एवी वात हमारी पासे कही तेथी अहीं आव्या छीये. तेवारे ते छोकराना पिताए कह्युं के ए छोकरो मूर्ख छे. एवा जीवने पण ऋजु एटले भोला अने जड एटले मूर्ख कहीए. एवा साधु प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेवना तीर्थे समजवा.

छेल्ला तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामीना साधु वक्र अने जड होय तेना ऊपर दृष्टांत कहे छे—जेम कोइएक महावीरस्वामीना तीर्थनो साधु स्थंडिल गयो. ते घणो मोडो आव्यो. तेने गुरुए घणो वखत लागवानुं कारण पूछ्युं तेवारे वक्रपणाथी कहेवा लाग्यो के वाहिर जाय तेने वखत तो लागेज एमां तमे मने शुं पूछो छो? पछी जेवारे गुरुए घणुं पूछ्युं तेवारे कह्युं के नाटकिया नाटक करता हता ते जोवा ऊभो रह्यो हतो. गुरुए कह्युं के साधुए नाटक जोवुं नहीं ते तमे जोयुं तेथी पाप लाग्युं

माटे 'मिच्छामि दुक्कड' दीयो, त्यारे मिच्छामि दुक्कडं दीधु, फरी कालांतरे एक दिवस नटीनु नाटक देखवा ऊभो रह्यो तेथी घणो वखत लाग्यो. माटे गुरुए तेनु कारण पूछवाथी वक्रपणाना योगथी वांका वांका उत्तर आपवा मांड्या पण साचु कहे नहीं तो पण गुरुए ज्यारे घणु पूछ्युं त्यारे बोल्यो के नाटकणी नाच करती हती ते जोवा ऊभो रह्यो हतो, ते सांभळी गुरु बोल्या के–म्हें ना कही हती तो पण तुं नाटक जोवा केम ऊभो रह्यो ? तेवारे शिष्य वक्रपणाथी बोल्यो के तमे तो नाटकी- आनु नाटक जोवाने वार्यो हतो, परतु ते वखत नटीनु नाटक जोवाने शा वास्ते वार्यो नहीं ? तो एमा म्हारो शो वाक छे ? ए तो तमारो ज वांक छे एम वक्रपणाथी उलटो गुरुने ओलंभो दीधो ए वक्रपणा आश्रयी प्रथम दृष्टांत कह्यु १

बीजु लोकोक्त दृष्टात वक्र जडनु कहे छे–कोइएक शेठनो छोकरो घणो दुर्विनीत हतो ते पोताना मा–बाप साये वढवाड कर्या करे तेने मा–बाप घणा समजावे तो पण कोइनु कह्यु माने नहीं पछी कुटुबना माणसोए तेने शीखामण आपी कह्यु के मा–बापनी सामु तारे बोलउ नहीं तेवारे तेणे कह्यु हवे हु बोलीश नहीं एम करतां कोइएक दिवसे मा–बाप प्रमुख सर्व कुटुब मली पुत्रने घर भलावी काइक कामसर बाहेर गया तेवारे ते छोकरो पितानी शीखामण याद करतो घरना कमाड जडीने खाटला ऊपर जइ सुतो, थोडीक वार पछी ते पितादिक आव्या, तेणे छोकराने घणा साद कर्या तो पण ते छोकरो खाट ऊपर बेठो बेठो सामले, परतु बोले नहीं अने कमाड पण उघाडे नहीं एम घणो वखत थयो त्यारे तेनो बाप भींत ऊपरथी चडी घरमा आव्यो अने जुए छे तो पुत्र खाटला ऊपर बेठो बेठो हसे छे तेने बापे मार मारीने पूछ्यु के तने आटला साद कर्या तो पण केम जवाब आप्यो नहीं ? वली कमाड शावास्ते उघाड्या नहीं ? तेवारे पुत्रे कह्यु तमेज मने शीखव्यु हतु के म्होटानी सामु न बोलवु तो महारो एमा शो वाक छे ? तेवारे पिताए कह्यु के अरे मूर्ख ! काम होय त्यारे तो बोलवु जोइये ते साभळी छोकरो बोल्यो के हवे हु काम हशे तेवारे बोलीश, फरी एक दिवसे शेठ घणा लोकोमा बेठा हता एटलामा घेर शेठाणीए रावडी बनावीने छोकराने कह्यु के तारा बापने बोलावी लाव तो रावडी शीरावीने पछी सुखेथी काम ऊपर जाय, त्यारे ते छोकरो ज्या तेनो बाप घणा माणसोनी बचमा बेठो छे त्या जइ म्होटे सादे हेला पाडीने कहेवा लाग्यो के—पिताजी ! आज आपणे घेर रावडी थइ छे ते म्हारी माताए कह्यु छे के एकवार शीरावी जाओ पछी सुखेथी काम काज करो. ते सामली शेठ लज्जा पामीने त्यांथी

उठ्यो आगल जइ पुत्रने एकांतमां कह्युं के हे कुपुत्र ! आपणी लोकोमां लाज जाय तेवी रीते तुं शा वास्ते वोल्यो तेवारे पुत्र बोल्यो—तमेज मने शीखाव्युं हतुं तो हुं शुं करुं ? तेवारे पिता वोल्यो के आज पछी जो एवुं काम होय तो धीरे धीरे वोलवुं, छोकराए कह्युं के हवे धीरे धीरे वोलीश. एटलामां वली एक दिवस ते शेठने घेर आग लागी तेवारे शेठाणीए शेठने तेडवा सारु छोकराने मोकल्यो. ते छोकरो त्यां आवीने जूए छे तो शेठ घणा लोकोनी वचमां वेठो छे तेवारे पोते दूर ऊभो रहीने धीरे धीरे वोल्यो. घणीवार थया पछी शेठे तेने जोयो तेवारे शेठे पूछ्युं के अरे ! तुं शा वास्ते अहींआं आव्यो छे ? तेवारे ते छोकरो शेठनी पासे जइने हलवे हलवे शेठना कानमां कहेवा लाग्यो के आपणे घेर लाय (आग) लागी छे. ते सांभळी शेठ वोल्यो के अरे मूर्खा ! घर तो वली गयुं हशे, तुं इहां आवतां वार ज केम वोल्यो नहीं ? तेवारे छोकरो वोल्यो के तमे शीखव्युं हतुं के धीरे धीरे वोलजे तो एमां म्हारो वांक कांइ नथी ए तमारी पोतानी ज भूल छे, पिताए कह्युं अरे ! एटलो म्होटो थयो तो पण हजी अक्कल आवी नहीं. ज्यारे धूआडा नीकल्या त्यारे तरतज धूल नाखवी हती तो अग्नि शांत थइ जात, एवुं शेठनुं कहेवुं ते छोकराए धारी राख्युं. एम करतां शीत ऋतु आवी तेवारे प्रभात समये एनो पिता दांतण करवा वेठो छे तेना मुखमांथी धूमाडा नीकल्या ते देखी धूलनो घोवो भरीने छोकराए पिताना मुखमां नाख्यो. तेवारे पिताए जाण्युं के ए छोकरो खरेखर मूर्ख छे. वली एक दिवस पिताए छोकराने कह्युं के आ घोडो तरस्यो छे तेने पाणी पीवरावजे अने नवरावी आवजे. छोकराए कह्युं वे काम तो नहीं करुं, पिताए कह्युं नवरावी आवजे. पछी ते छोकरो घोडा ऊपर चढी तलाव पासे जइ घोडानुं मुख वांधी नवरावीने पाछो घेर लाव्यो पण घोडो तरस्यो हतो माटे आकुल व्याकुल थतो देखी शेठे पुत्रने मूर्ख जाणी घरमांथी काढी मूक्यो अने कह्युं के वाटे जातां कोइ मले तो तेने म्होटे सादे जुहार करजे. पछी वाटे जतां कोइएक पारधी पाशो मांडी मृगलां एकठा करी ऊभो छे तेने छोकराए म्होटे सादे जुहार कर्यो. तेनो साद सांभळीने सर्व मृग नासी गया. पारधीए घणो मार मार्यो अने मूर्ख जाणीने कह्युं के—भूंडा ? मार्गे जतां छपतो चाल्यो जाजे. वली आगल जातां कोइक कोटवाल चोरनी शोध करवा नीकल्यो छे तेणे छोकराने छपतो देखी चोर जाणी पकड्यो ने मार मार्यो; पछी मूर्ख जाणी कह्युं के घणा माणस दीठामां आवे तेवारे एम कहेजे के तमारे एवुं कोइ वखते थाशो मां. वली आगल जातां कोइएक गाममां विवाह छे ते देखी पेला मूर्खाए कह्युं के तमारे घेर एवुं कार्य कोइ वारे म थाजो. एवुं वचन सांभलीने विवाह वालाए मार मार्यो. पछी छोकराए कोटवालना शीखाववा संबंधि वात कहे छते ते लोकोए मूर्ख जाणी शीखामण आपी कह्युं के—भोला ! जेवारे घणा माणस मले तेवारे एवुं कहेवुं के तमारे सदा एमज थाजो. ते वात याद राखीने छोकरो आगल चाल्यो. मार्गमां कोइ एक देशनो राजा मरण पाम्यो छे तेनी मैयत (वैकुंठी) ने लोको लइ जाय छे ते देखी छोकराए कह्युं के—

तमारे सदा सर्वदा एवु ज होजो त्यां पण लोकोए मार मार्यो अने मूर्ख जाणीने मूकी दीधो एम रखडतो रझलतो केटलाएक दिवसे पाछो घेर आव्यो. ए श्रीवीरना साधु ऊपर वक्र-जडनु बीजु दृष्टांत कह्यु

हवे मध्य बावीश तीर्थंकरना साधु ते सर्व ऋजु अने प्राज्ञ छे तेना ऊपर दृष्टांत कहे छे-जेम कोइएक अजितनाथ भगवानना साधु ते स्थंडिलथी घणो असुरो (मोडो) आव्यो माटे गुरुए तेनुं कारण पूछ्युं ते वारे ऋजुपणाथी कह्यु के नाटकीआनु नाटक जोवा ऊभो रह्यो हतो, गुरु बोल्या के साधुए नाटक जोवु नहीं तेवारे तेणे मिच्छामिदुक्कड देइने कह्यु के हवे कोईवारे जोवा ऊभो रहीश नहीं वली कोईएक दिवसे फरी बाहर गयो, त्यां रस्तामा नटवी नाचती हती ते जोई पंडितपणाथी विचार कर्यो के गुरुए मुजने नाटकीआनु नाटक जोवा वर्ज्यो छे तो नाटकणी तो तेथी पण विशेष रागनु कारण छे माटे ए मुजने सर्वथा जोवीज नहीं कल्पे एवुं विचारीने पाछो आव्यो ए ऋजु अने प्राज्ञनुं दृष्टांत कह्युं ॥१॥ एम ए दृष्टांत जे कह्या ते काइ सर्वे साधुओ आश्रयी समजवा नहीं, परतु कोई एक साधुना आश्रयी जाणवा

हवे आजना समयना माणस वक्र अने जड छे ते प्रमाणे आज पाचमा आरामा चारित्रिया साधु नथी एम पण न कहेवु, कदापि अ नाभोगपणे अतिचार दोष घणा लागे तेवा पण साधु आजना समयमा छे, केमके साधु विना धर्म न होय माटे व्यवहार भाष्यमा कह्यु छे के-श्रीभगवतना भापेला शास्त्रनी जे खरेखरी प्ररूपणा करे तेने पण साधु कहीये, तथा'—

"जो भणई नत्थि धम्मो, नय सामाईय न चेव य वयाइ ।
सो समणसघवज्झो, कायव्वो समणसघेण॥ १ ॥"

माटे जो पूर्व साधुनी अपेक्षाए हीन कहो तो भले कहो, पण दुष्पम कालमा साधु नथी ज एम न कहीए जे माटे साधु तो आजे पण छे.

हवे ए दश प्रकारनो कल्प जे साधुनो आचार रूप धर्म छे ते त्रीजा वैद्यना औषध सरखो छे. एटले जेम त्रीजो वैद्य उपकारी थयो तेम आ कल्प पण उपकारी जाणवो. ते त्रीजा वैद्यनी कथा कही देखाडे छेः—

कोईएक राजाने एकज पुत्र अत्यंत वल्लभ हतो. माटे राजाए विचार कर्यो के आ पुत्रने रोग आव्या पहेलां ज एनुं हुं औषध करावुं तो पछी कोई वारे एने रोग ज थाय नहीं, एम चिंतवी वैद्यने बोलावी कह्युं के आ छोकरानुं एवुं औषध करो के जेणे करी एने कोई वखत रोग न थाय. तेवारे वैद्य बोल्यो के राजन्! म्हारी पासे जे औषध छे ते एवुं छे के जे खाधा थकी रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो वली नवो रोग प्रगट थाय, ते सांभळी राजाए कह्युं के सूता सिंहने जगाडवा सरखुं त्हारुं औषध अमारे करवुं नथी, एम कही तेने शीख आपी. पछी बीजा वैद्यने पूछ्युं तेवारे ते बोल्यो के हे राजन्! म्हारुं औषध खवराव्याथी जो रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो गुण–दोष कांई न थाय. ते सांभली राजा बोल्यो के राखमां घृत ढोळवा जेवुं त्हारुं औषध अमारा कामनुं नथी, एम कही तेने पण विदाय कर्यो. पछी त्रीजा वैद्यने बोलावी पूछ्युं. तेवारे ते बोल्यो के हे राजन्! म्हारुं औषध एवुं छे के जे खवराव्याथी रोग होय तो जतो रहे अने रोग न होय तो वली बीजा कोई रोग आवे नहीं तथा बल, बुद्धि, रूप अने तेजनी वृद्धि करे ए वात सांभली राजाए प्रसन्न थइने ते वैद्यनुं औषध छोकराने अपाव्युं अने वैद्यने शिरपाव आपी विदाय कर्यो.

एवी रीते ए कल्पसूत्र पण त्रीजा वैद्य समान गुणकारी छे केमके एना श्रवण थकी जे पूर्वे कर्म बांध्यां होय तद्रूप व्याधि दूर थइ जाय अने नवा कर्मनो बंध पडे नहीं, सर्व आपदा निवारे, सुख संपत्ति करे, चारित्रना गुणनी पुष्टि करे अने वली मोक्षना सुख तरत आपे. ए कल्पसूत्रने विषे प्रथम श्रीवीर–चरित्र छे ते बीज समान छे, श्रीपार्श्वनाथ चरित्र छे ते अंकुरो छे, श्रीनेमीश्वर भगवाननुं

चरित्र छे ते थड छे, श्रीआदिनाथ चरित्र छे ते शाखा छे, थविरावली छे ते फूल छे, कथा छे ते सुगध छे, फल छे ते मोक्ष छे, जे ए सूत्रना सर्व अक्षर साभले ते जीव आठ भवर्मां मोक्ष जाय

कारणे चातुर्मासमा विहार अने चातुर्मास योग्य क्षेत्रगुण—

हवे साधु जे गाममां चोमासु रहे ते गाममा ए कल्पसूत्रनी वाचना करे अने चोमासुं पूर्ण थया पछी एटले कार्तिकशुदि पूर्णिमा थया पछी पण कदापि वर्षाद वरसवाथी मार्गमा कादव प्रमुख थया होय तो वधारे दिवस पण रहे तथा वली कदाच जे गाममा साधु चोमासु रह्या होय अने हजी चोमासु पूरु न थयु होय तेनी वचमा ते गाममा १ मरकी आदिक रोगोनो उपद्रव थाय, २ भिक्षा दुर्लभ मलनी होय, ३ राजा दुष्ट होय तेणे कोप कर्यो होय, ४ कुथु आदिक घणा जीवोनी उत्पत्ति थइ होय, ५ सर्प, अग्नि आदिकनो भय उत्पन्न थयो होय, ६ रोग अने वर्षाद विरमता न होय, दुर्भिक्ष पडे इत्यादिक कारणे चोमासामा पण विहार करवानी आज्ञा प्रभुए दीधी छे माटे विहार करवामां दोष नथी हवे सयम निर्वाह करवाने अर्थे साधुने ज्या चोमासु रहेवु पडे त्या प्रथम ते क्षेत्रमां उत्कृष्टपणे तो तेर गुण जोवा जोइए ते कहे छे–१ जे गाममां कादव घणो न होय, २ जे गाममा बेइन्द्रियादिक जीव घणा न होय, ३ स्थडिल जवानी भूमि निरवद्य होय, ४ स्त्री, पशु पडकादिक दोष रहित उपासरो रहेवानो होय, ५ जे क्षेत्रमा दहिं, दूध घणा मलता होय, ६ जे गाममा भद्रक अने श्रद्धावान श्रावकना घणा घर होय, ७ जे गाममा वैद्य घणा निपुण रहेता होय, ८ ज्या औषध घणा सुलभ मलता होय, ९ ज्या श्रावकोना घरमा धन धान्य प्रमुखनो घणो संग्रह होय पण कोई वातनी चिंता न होय, १० जे गामनो राजा अति भद्रक होय, साधुओनी भक्ति घणी करतो होय, ११ ज्या ब्राह्मण, तापस, भुआ, भरडा, प्रमुख पाखडी लोक जे छे ते साधुनो अपमान करी शकता न

होय, १२ ज्यां भिक्षा सुलभ मलती होय, १३ ज्यां सज्झाय (पठन पाठनादिक) सुखे थतां होय; ए तेर गुणवाला गाममां साधुए चोमासुं करवुं, कदाचित् एटला गुण न मले तो पण जघन्यथी चार गुण तो अवश्य जोवा. ते कहे छे. १ थंडिल भूमि घणीज सारी शुद्ध फासु होय, २ जेमां सज्झाय ध्यान सुखे थाय एवी रहेवाने जगा होय, ३ ज्यां श्रीजिनमंदिर होय, ४ ज्यां गोचरी रूडी रीते मलती होय. ए चार गुण खेत्रना जोइने चोमासुं करवुं एम ए तेर गुण उत्कृष्टथी अने चार गुण जघन्यथी कह्या तथा पांचथी मांडीने बार गुण सुधी सर्व मध्यम गुण जाणवा, एवुं खेत्र जोइने त्यां साधुए चोमासुं करवुं. कारण के साधुजन पृथ्वी पीठने विषे नवकल्पि विहार करे छे, तेमां अनेक तीर्थ-यात्राओ करतां, गामे गामे विचरतां, मिथ्यात्वे पडेला अनेक भव्य-जीवोना उद्धार करता थका विचरे, ते जेवारे चोमासुं आवे तेवारे धरा-मंडले सजलधाराए वर्षाद पडे तेथी पगले पगले पाणीनो प्रवाह चाले, कोमल किसलय फूटे, थानके थानके अनेक प्रकारना जंतुओ उत्पन्न थाय ते माटे जीवयत्न करनारा चारित्रियाए वर्षाकालमां विहार न करवो, एकत्र स्थानके रहेवुं, अनेक प्रकारना घोर अभिग्रह करवा, कारण के साधुने तो वीशविश्वा दया होय छे, परंतु श्रीकृष्ण महाराज जेवा सवा-वशानी दयाना पालनारा श्रावकोए पण चोमासामां सोल हजार राजा-ओने सभामां पधारवानी ना कही हती अने पोते पण सभा मांहे न आव्या, केमके वर्षाद मांहे घणा कीडी, कुंथु, आदिक जीव हणाय एवुं जाणी ठाकोर पोढ्या छे एवो जवाब श्रीकृष्णे आप्यो त्यांथी 'देव पोढणी अगीआरस' लोकमां प्रसिद्ध थइ, ए रीते शुद्ध श्रावक पण वर्षाकाले पाप जाणीने देशांतरनो व्यापार न करे. माटे साधुने पण चोमासामां एक ठेकाणे रहेवुं. ते चोमासाने विषे पर्युषण पर्व आवे त्यारे मांगलिकने अर्थे कल्पसूत्र अवश्य वांचवुं.

पर्युषण पर्वनी सर्व पर्वोमा उत्कृष्टता देखाडे छे—

१ जेम मत्र माहे पंच परमेष्ठि–मंत्र, २ तीर्थ माहे शत्रुंजय–तीर्थ, ३ दान मांहे अभय–दान, ४ गुण माहे विनय गुण, ५ व्रत मांहे ब्रह्मचर्य व्रत, ६ सतोष माहे नियम, ७ तपस्या माहे इन्द्रिय दमन, ८ दर्शन माहे जैन दर्शन, ९ क्षीर मांहे गोक्षीर, १० जल माहे गगानीर, ११ पट माहे हीर, १२ वस्त्र मांहे चीर, १३ अलकार माहे चूडामणि, १४ ज्योत्स्ना मांहे निशामणि, १५ तुरग मांहे पचवल्लकिशोर, १६ नृत्यकलावत मांहे मोर, १७ गज मांहे ऐरावत, १८ दैत्य माहे ऐरावण, १९ वन माहे नदनवन, २० काष्ट माहे चदन, २१ तेजवत माहे आदित्य, २२ साहासिक माहे विक्रमादित्य, २३ न्यायवत माहे श्रीराम, २४ रूपवत माहे काम, २५ सती मांहे सीता, २६ शास्त्र मांहे गीता २७ वाजित्र माहे भंभा, २८ स्त्री माहे रभा, २९ सुगध मांहे कस्तुरी, ३० वस्तु माहे तेज, ३१ पुण्यश्लोक मांहे राजा नल, ३२ फूल माहे सहस्रदल कमल, ३३ धनुर्धर माहे अर्जुन, ३४ इन्द्रिय माहे नयन, ३५ धातु माहे सुवर्ण, ३६ दातार माहे कर्ण, ३७ गाय माहे कामधेनु गाय, ३८ स्नेह माहे घृत, ३९ जल माहे अमृत, ४० ज्ञान माहे केवलज्ञान, ४१ सुख मांहे मोक्षनु सुख, तेम सर्व पर्व मांहे पर्युषण पर्व महोटु जाणवु ए भाद्रवा शुदि पचमी जेम श्रीजिनशासनने विषे माननीय छे तेमज परशासनने विषे पण ए ऋषीपचमीनो दिवस माननीय छे

ऋषीपंचमीनो सबध कहे छे—

पुष्पवती नगरीने विषे नीलकठ नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी सोमा नामे भार्या हती तथा इन्द्रदेव नामे पुत्र हतो ते जन्मथी दारिद्री हतो केटलेक काले तेना माता पिता मरण पामीने एनाज घरमा पिता बलदीयो थयो अने माता कूतरी थई एवामा श्राद्धपक्ष आव्यो तेवारे घरमा द्रव्य नहीं तेथी विचार करवा लाग्यो के माता पिताना श्राद्धनो दिवस म्हारे केवी रीते साचववो ? पछी बलदीयो तेलीने घेर खेडवा

आप्यो. तेनुं भाडुं लइ दूध, चोखा, खांड, घृत अने गोदूम लइ आवीने खीर रांधी घणा ब्राह्मणोने नोतरुं दीधुं एवामां पूर्वला भवनुं पोतानुं घर देखीने कूतरीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेणे ते दूधमांहे ऊपरथी सर्पे गरल नाखी ते दीठी तेवारे कूतरीये विचार्यु के अज्ञाने करी आ खीरने ब्राह्मणो जमशे तो मरण पामशे तेथी महा अनर्थ थइ पडशे, ब्रह्महत्यानुं पाप लागशे ने म्हारो पुत्र तथा वहु बन्ने मरण पामशे एम विचारे छे एटलामां वहु आवी तेवारे तेने देखतां ते कूतरीए दूध मांहे पोतानुं मोहोडुं घाली दूध एठुं कर्यु. ते जोइ वहुने रीश चढी तेथी तेने मूसलना प्रहारे मार मारी केड भांगीने ज्यां गायनी शाला छे त्यां जइ हेठी पाडी दीधी तेथी ते तड फडवा लागी अने ब्राह्मणे बीजुं दूध लावी खीर रांधी सर्व ब्राह्मणोने जमाडी श्राद्धनो दिवस सांचव्यो. पछी ब्राह्मण थाको थको बाहेर गौशालामां खाटली पाथरी सूतो एवामां संध्या समय थयो तेवारे आखा दिवसनो भूख्यो, तरस्यो, थाकी गयेलो बलद ते पण पेला घांचीए लावीने तेनां स्थानके बांध्यो. एटलामां कुलदेवी आवीने बलदीया तथा कूतरीना शरीरमां संक्रमी. त्यारे कूतरी बलदीयाने कहेवा लागी के आज श्राद्ध तो आपणुं हतुं अने खावानुं ब्राह्मणोने मल्युं एटलुं ज नहीं पण आ पापिष्ट वहुए मारी केड भांगी नांखी तेथी महा दुःख पामुं छुं. त्यारे बलदीयो बोल्यो के आ पापिष्ट आप णो छोकरो पण कांई समजतो नथी, मने पण आजे घांचीने घेर मोकल्यो हतो तेणे आखो दिवस घाणीमां फेरव्यो अने चारो पाणी आप्या विना एमज भूखें मरतो अहीं आवी बांधी गयो छे. ए सर्व वात खाटलापर बेठेला ब्राह्मणे सांभली तेथी तेना मनमां दिलगीरी पेदा थई अने विचार्युं के आ तो म्हारा माता पिता देखाय छे. एवो निरधार करी त्यांथी उठीने कूतरीने खीरनुं भोजन कराव्युं अने बलदने सारी रीते चारो प्रमुख आप्युं. पछी पोते पोताना माता पितानी सद्गति करवाने अर्थे

परदेश जइ, अनेक तीर्थ करी, कोई महोटा ऋषीश्वरने पूछवा लाग्यो के महाराज! मारो वाप वलदीओ थयो छे अने माता कूतरी थइ छे तेनी रूडी गति केवी रीते थाय? ते प्रकार कहो. त्यारे ऋषि बोल्या के ए वेहु जीवें ऋषिपंचमीना दिवसे अप्रस्तावे काम क्रीडा करेली छे मैथुन सेवन कर्युं छे तेनु पाप लाग्यु तेना योगे ए अवतार पाम्या छे माटे हवे तु ज्यारे ऋषिपचमी एटले भादरवाशुदि पचमीनो दिवस आवे ते दिवसे वलदनु खेडयु धान्य खाइश नहीं, चउविहार उपवास करजे कदापि खाधा विना रहेवाय नहीं तो दस मुट्ठी अडदना बाकला खाजे एटले एमनी सद्गति थशे पछी ते ब्राह्मणे तेमज कीधु ते दिवसथी लोकोने विषे ऋषिपचमीनु नाम प्रसिद्ध थयु छे ए ऋषिपचमीना पर्व आश्रयी कथा कही।

श्रीपर्यूषण पर्व आवे त्यारे महोटो महोत्सव करी जे पुरुष तेलानी तपस्यामा एटले अट्ठम तप करी श्रीकल्पसूत्रने साभले ते पुरुष नागकेतुनी पेरे केवलज्ञान पामीने मोक्ष सुखने पामे छे.

नागकेतुनी कथा कहे छे—

चद्रकाता नगरीने विषे विजयसेन नामे राजा राज्य करतो हतो ते नगरीमा श्रीकात नामा शेठ रहेतो हतो तेनी श्रीसखि नामे भार्या हती तेने घणा उपाय करता देव देवीओनी मानताओ करतां एक पुत्र थयो. अनुक्रमे ते पुत्रनु पालण पोषण करता केटलो एक काल वीत्यो एटलामा पर्यूषण पर्वना दिवसो आव्या ते समयमा ते बालकनी आसपास वेठेला माणसो माहोमाहे वातो करवा लाग्या के आपणे सवत्सरीनो तेलो करीशु एटले अट्ठम तप करीशु ए वात साभलीने पेला बालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्यु तेना योगे पोतानो पाछलो भव दीठो तेथी बाल्यावस्थामा पण तेणे पोताना मनमा अट्ठमनु तप करवु एवो निश्चय करीने स्तनपान करवु मूकी दीधु तेथी तेनु शरीर क्रमलाइ

गयुं. मरणतुल्य अवस्था दीठामां आवी. एवी पुत्रनी अवस्था जोइ तेनां माता पिता घणुंज दुःख धरवा लाग्या. तेणे अनेक प्रकारना औषधोपचार कर्या तो पण ते बालके स्तनपान कर्युं नहीं, एम करतां भूखना योगे ते बालकने मूर्छा आवी गइ, छोकराने मरेला जेवो देखीने तेना बापनुं हैयुं फाटी गयुं. तेथी मरण पाम्यो, तेमज माता पण मरण पामी अने बालकने मृतक देखी तेना जातिवालाए धरतीमां भंडार्यो, पछी आपणा गाममां अपुत्रीयो श्रीकांतशेठ मरण पाम्यो छे एवी खबर पडतां राजाए ते शेठनुं धन लेवा सारु माणस मोकल्यां. एवा समयमां अट्ठम तपना प्रभावे करी धरणेंद्रनुं आसन चलायमान थयुं. त्यारे अवधिज्ञाने करी सर्व वृत्तांत जाणी त्यां आवी बालकने अमृत संचारे सज्ज कर्यो अने पोते ब्राह्मणनुं रूप धारण करी ते शेठना घरना बारणा आगल ऊभो रहीने राजाना माणसोने धन लेतां अटकाव्यां, राजपुरुषोए जइ राजाने कह्युं के ब्राह्मण धन लेवा देतो नथी त्यारे राजा पोते उतावलो आवीने ब्राह्मणने कहेवा लाग्यो के अमारा राज्यमां जे अपुत्रीयो मरण पामे तेनुं धन राजा लइ जाय एवी परंपरा (रीत) छे माटे तमे शा वास्ते अटकाव करो छो ? त्यारे ब्राह्मण बोल्यो के राजन् ! ए शेठनो पुत्र जीवतो छे. राजाए कह्युं क्यां छे ? त्यारे धरणेंद्रे ते बालक जमीनमांथी जीवतो काढीने राजाने देखाड्यो. ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या. राजाए ब्राह्मणने पूछयुं के आप कोण छो, अने आ बालक कोण छे तथा ए वात तमे केम जाणी ? ब्राह्मण बोल्यो हुं धरणेंद्र नागराजा छुं, तेलाना प्रभावथी एनी सहाय करवाने आव्यो छुं. राजा बोल्यो ए बालके जनमतांज अट्ठम तप केम कर्युं, धरणेंद्रजी बोल्या के राजन् ! ए बालक पूर्व भवमां एक वाणीयानो छोकरो हतो त्यां बाल्यावस्थामांज एनी माता मरण पामी तेवारे एनो पिता बीजी स्त्री परण्यो. पछी ते ओरमान माता जो छोकरानो थोडो वांक होय

तो पण अवगणना करे, घणु घणु खींजे तथा मारवा कूटवा वगेरे घणुंज दु ख देवा लागी, एम ते छोकरो नित्य प्रत्ये दु ख पामतो थको तेनो एक श्रावक मित्र हतो तेनी पासे जइ तेणे पोताना दु खनी वात कही त्यारे मित्र बोल्यो के हे भाई ! तें पूर्व भवमा धर्म कर्यो नथी तेना योगथी दु खी थयो छे. एवो उपदेश साभली तेणे यथाशक्ति तप करवानो प्रारभ कर्यो पछी आठम, चौदश उपवास करता अने बीजा दिवसोमा नवकारसी पोरसी प्रमुख तप करता अनुक्रमे पर्युपण पर्व आव्यु त्यारे तेणे अट्ठम तप करवानो निश्चय विचार करीने रात्रे तृणनी झूपडीमा जइ सूतो, एटलामां तेनी नजीक आग लागी त्यारे अवसर जोइने ओरमान माताए घासनी झूपडी ऊपर अग्नि नांख्यो तेथी झूपडी बली गइ अने छोकरो पण शुभध्याने मरण पाम्यो तेणे अष्टम तप ध्यानना प्रभावथी इहा अपुत्रीया श्रीकात शेठने घेर जन्म लीधो अने जातिस्मरण ज्ञान पामीने एणे अट्ठम तप कर्युं, तेथी भूखने योगे मूर्च्छागत थयो हतो परतु जीवतो हतो तथापि लोके अजाणपणे तेने मरेलो जाणी जमीनमा भडार्यो ते में आवी अमृत सचार करी मूर्च्छा उतारी सज्ज कर्यो हे राजन् ! ए महापुरुप छे, एहज भवमा मोक्ष जाशे माटे एने घणाज यत्नथी राखजो तमोने पण महोटो ऊपकारनो करवावालो थाशे एम कही पोताना गलानो हार बालकना गलामा नाखी धरणेंद्र पोताने स्थानके गयो, राजाए ते बालकने हाथी ऊपर चढावी महोटा आडबर सहित घेर आण्यो पछी कुटुबना लोकोए शेठनु मृतकार्य करी छोकरानु नाम 'नागकेतु' पाड्यु ते बालपणाथीज जितेंद्रिय परम श्रावक थयो, अष्टमी, चतुर्दशीनो उपवास करे, चोमासिए छट्ट करे अने पर्युपणनो अट्ठम करे जिनपूजा, साधु सेवा नित्य करे, एक दिवसे नगरना विजयसेन राजाए कोइ पुरुपनी ऊपर चोरीनु झूठु कलंक आपी निरपराधी छता तेने मार्यो ते मरीने व्यंतर देवता थयो, तेणे आवी

आखा नगरनो विनाश करवा सारु नगर प्रमाण एक शिला आकाशे विकुर्वी लोकोने बीवरावचा लाग्यो अने राजाने पाटुवडे मारी मुखथी लोही वमतो करी जमीन ऊपर नाख्यो, ते कृत्य जोइने नागकेतुए जाण्युं के हुं जीवता छतां श्रीसंघनो अने श्रीजिनचैत्यनो विनाश केम जोइ शकुं ? एवुं विचारी मनमां जीवदया आणी भगवानना प्रासाद ऊपर चढीने शिलाने हाथ आडो आपी पडती शिला हाथे धरी राखी. व्यंतर पण नागकेतुना तपनी शक्ति सहन न करतो थको ते पोतानी विकुर्वेली शिलाने संहरण करीने नागकेतुने पगे लाग्यो अने नागकेतुना कहेवाथी राजाने पण शाता करीने व्यंतर पोताने स्थानके गयो. पछी नागकेतुनी घणी मानता थई राजाए तेने सन्मान आप्युं. नागकेतु पण पूर्वनी पेठे घणा तप जप करतो थको विचरे छे. एकदा नागकेतुने भगवंतनी पूजा करतां फूल मांहे रहेला 'तंबोली नागे' डश्यो तेथी शरीरमां झेर व्यापी गयुं पण शुभ ध्यान धरवा लाग्यो तेना योगथी केवलज्ञान ऊपज्युं, त्यां दीक्षा लीधी, शासन देवीए ओघो, मुहपत्ति प्रमुख साधुनो वेश आप्यो, घणा काल पर्यंत विहार करी घणा भव्यजीवोने प्रतिबोध आपी मोक्षे पोहोतो. एवो नागकेतुनो अधिकार सांभलीने जे भव्य प्राणी छठ्ठ-अठ्ठम तप करीने एटले बेला तेलानी तपस्या करीने श्री पर्युषणपर्वमां कल्पसूत्र सांभळशे ते जीव शाश्वत सुखने पामशे.

आ कल्पसूत्र पापनुं निवारक छे, मनोवांछित पूरनार छे, निकाचित जे चार घातिकर्म छे तेनुं जीपनार छे माटे भव्यजीवोए प्रमाद, निद्रा, विकथा छांडी बेला अथवा तेलानुं तप करीने कल्पसूत्र सांभलवुं तथा श्रीजीवाभिगम सूत्र मध्ये कह्युं छे के पर्युषण पर्व आवे त्यारे देवताना इंद्र पण भेला थइने श्रीनंदीश्वर द्वीपने विषे जइ अट्ठाइ महोत्सव करे छे तेम इहां रूडा श्रावक, श्राविकाओए पण कल्पसूत्रनो अट्ठाइ महोत्सव करवो एवा विधिए करी जो कल्पसूत्र सांभले तो बहु लाभ-

कारी थाय ए कल्पसूत्र श्रीमहावीर स्वामीने छट्ठे पाटे चौद पूर्वधारी श्रीभद्रबाहुस्वामी युगप्रधान थया तेमने चौद पूर्व माहेला नवमा प्रत्याख्यान प्रवाद नामा पूर्वनी माहेथी दशाश्रुतस्कंध सूत्र तेना आठमा अध्ययन रूपे रच्यु छे ते जेम दधिनो सार घृत छे तेम सर्व शास्त्रनो सारभूत ए सूत्र समजवु

प्रसगप्राप्त चौद पूर्वनु मान कहे छे—

प्रथम उत्पाद पूर्व छे ते अवाडी सहित एक हाथी ऊभो करीए तेनो जेटलो ढगलो देखाय तेटली श्याहीनो एक ढगलो करी लखीए तेवारे पहेलो पूर्व लखाय, बीजो अग्रायणीपूर्व बे हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, त्रीजो वीर्यप्रवादपूर्व चार हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, चोथो अस्तिप्रवादपूर्व आठ हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, पाचमो ज्ञान प्रवादपूर्व सोल हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, छट्ठो सत्यप्रवादपूर्व बत्रीश हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, सातमो आत्मप्रवादपूर्व चोसठ हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, आठमो कर्मप्रवादपूर्व एकसो ने अट्ठावीश हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, नवमो प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व बसो छप्पन्न हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, दशमो विद्याप्रवादपूर्व पाचसो चार हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, अगीआरमो कल्याणप्रवादपूर्व एक हजार ने चोवीश हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, बारमो प्राणावायप्रवादपूर्व बे हजार ने अडतालीश हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, तेरमो क्रियाविशाल पूर्व चार हजार ने छन्नु हाथी जेटली श्याहीथी लखाय अने चौदमो लोक बिंदुसारपूर्व आठ हजार एकसो ने बाणु हाथीओना प्रमाण जेटली श्याहीथी लखाय एम चौदे पूर्वने लखवा माडीए तो सरवाले १६३८३ हाथीओना ढगला जेटली श्याही जोइये परतु अद्यापि पर्यंत कोईए लख्या नथी अने हवे कोइ लखशे पण नहीं मात्र प्रमाण आपीने श्री केवली भगवाने उपमा बतावी छे ए सूत्रथी मान कह्युं हवे ए चौद-

पूर्वनुं अर्थ थकी मान कहे छे—सर्व नदीओनी वेलुना कणीया जेटला थाय तथा असंख्याता समुद्रनां पाणीना बिंदुओ जेटला थाय तेथी पण अनंतगुणो एकेका सूत्रना पदनो अर्थ जाणवो.

व्याख्यानमां कल्पसूत्र वाचन समय—

कल्पसूत्र प्रथम तो भाद्रवा शुदि पंचमीना दिवसे रात्रिनुं सांवत्सरिक पडिक्कमणुं कर्या पछी अर्द्ध रात्रिमां कालग्रहण करी श्रीगुरुमहाराज ऊभा थका मुखथी सूत्रनो पाठ उच्चार करता अने बीजा साधुओ सर्व काउस्सग्ग करी सांभलता हता, तेमज दिवसना साध्वी-ओने पण संभलावता हता परन्तु श्रीमहावीर भगवाननां निर्वाणथी नवशे एंशीमां वर्षे पुस्तकारूढ थयो अने श्रीवीरनिर्वाणथी नवशें त्रशाणुमां वर्षे आनंदपुर नगर जेने हमणा वडनगर कहे छे तेने विषे ध्रुवसेन राजा राज्य करतो हतो. तेने अत्यंत वल्लभ सेनांगज नामे एक पुत्र हतो ते दैवयोगे मरण पाम्यो एटलामां पर्युषण पर्व पण आव्यां तेवारे राजा घणो शोकाक्रांत थयो तेथी धर्मशालाने विषे पण आवे नहीं. वली जेम राजा चाले तेम प्रजा चाले ए हेतुथी बीजा जे शेठ व्यवहारी प्रमुख लोक हता ते पण धर्मशालाने विषे आवे नहीं एवो राजाने शोकातुर थयो जाणी, धर्मनी हाणी थती देखीने गुरु ध्रुव-सेन राजानी पासे वंदाववा गया. त्यां राजाने कहेवा लाग्या के हे राजन्! तमो शोकाक्रांत थया जाणीने नगरना लोक पण सर्व शोका-क्रांत थया छे माटे शरीर धनादिक सर्व अनित्य छे, आयुष्य चंचल छे, संसार असार छे ए प्रकारना संसार स्वरूपने तमे जाणोज छो. माटे जैनधर्म मांहे घणो शोक करवो अयुक्त कह्यो छे. तेथी तमे शोक निवारीने पंचमीना दिवसे पर्युषण छे माटे धर्मशाला मांहे पधारो तो श्री भद्रबाहु स्वामीए नवमा पूर्व मांहेथी उद्धरेलुं श्रीकल्पनामे सूत्र महामंगलिक प्राचीन कर्मना क्षयनुं करनार छे ते वांचीये; तेवारे राजाने पांचमने

दिवसे पुत्र मरणनो शोक निवर्त्ताववो हतो अने इंद्रमहोत्सव पण हतो तेथी राजाए कह्युं के छठ्ठनो दिवस अथवा चोथनो दिवस ठेरावो तो म्हाराथी आवी शकाय पण पचमीने दिवसे म्हाराथी आवी शकाशे नहीं तेवारे "अतरावासे कप्पत्ति" एवो सूत्र पाठ-देखीने कारण विशेषे गुरुए चोथनी थापना करी चोथनु कलपसूत्र वाचवा कबूल कर्यु कालिकाचार्यथी ओहरु बलमित्र अने भानुमित्र ए बे भाणेज साथे वडनगरनो ध्रुवसेन राजा सभा सहित धर्मशाला मध्ये आव्यो तेवारे नव वाचनाए करी प्रभावना सहित महोत्सव पूर्वक सर्वलोकनी समक्ष श्रीकल्पसूत्र गुरुए वाच्यु ते दिवसथी चोथने दिवसे पर्युषण थवानी परपरा चाली छे अने केटलाएक गच्छमां अद्यापि सुधी पाचमना पण पर्युषण करे छे, तेमज ते दिवसथी महोत्सव पूर्वक प्रभावना सहित सर्वलोकनी समक्ष कल्पसूत्र वाचवानी प्रवृत्ति चाली ते श्रीगुरु परपराए आज पर्यंत चाली आवे छे अने ते प्रमाणे सर्वस्थले कल्पसूत्र वचाय छे एना वाचवाना अधिकारी योग वहन करनारा साधुओ छे अने साभलवानो अधिकार चतुर्विध श्रीसघने छे

---

१ एक प्रतिमा आम कहेलु छे के वडनगरमां गुरुजी चोमासु रह्या हता एवामा पर्युषण नजीक आववाज ध्रुवसेन राजानो एकज पुत्र हतो ते दाहज्वरें पीडा पामवा लाग्यो तेना योगे राजा चिंतातुर थयो थको गुरुने वांदवा आवी शक्यो नहीं अने पर्युषण पर्वमां धर्मध्यानमां प्रवृत्ति करनारा घणा जनो दीठामां न आव्या तेथी गुरुए तेनु कारण पूछ्युं तेवारे राजाने शोकमां पड्यो जाणी गुरु पोते राजसभामा पधार्या त्यां राजाने धर्मोपदेश आपी समजावीने महोटा लाभनु कारण जाणी मांगलिक निमित्ते कल्पसूत्रनी प्रथम वाचना करी ते सांभलतां राजाना पुत्रने शाता थई एम करतां नव वाचनाए तो सर्व दाहज्वर उपशमी गयो तेथी राजाए हर्षवत थईने महोटो महोत्सव कर्या, धर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो, राजाए गुरुने विनति करी के श्रीसघना मांगलिक निमित्ते ए कल्पसूत्र वर्षोवर्ष श्रीसघने वांची समझावशु ते दिवसथी कल्पसूत्र चतुर्विध श्रीसघनी आगल वांची समजाववानी प्रवृत्ति चाली छे ते रीते हमणा पण श्रावकोना आग्रहथी कल्पसूत्रनी वाचना साधु मुनिराज करे छे

कल्पसूत्रना वाचन–श्रवणथी लाभ—

आ सूत्रना वांचवा थकी एना अक्षरना महात्म्यने योगे साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकानां कल्याण थाय ए वात निःसंदेह छे. तेना ऊपर कथा कहे छेः–कोइएक डोशीनो पुत्र वन मांहे गायो चारवा गयो, त्यां तेने सर्प्पे डश्यो तेथी मूर्च्छांगत थयो. ते वात लोकोना मुख थकी सांभळीने डोसी वनमां गइ. त्यां पुत्रने मूर्च्छित थयो देखी मोहना वश थकी पुत्रनुं नाम वारंवार स्मरण करवा मांडयुं के रे हंस! रे परमहंस!! एवी रीते चार पहोर सुधी पोकार कर्यो, तेथी डोशीना छोकराने झेर उतर्युं, साजो थयो, प्रभाते माता अने छोकरो वेहु जण गाममां आव्यां, नगरनां लोक सर्व विस्मय थया, त्यां डोशीने गारुडीओए पूछ्युं–तमोए श्यो उपाय कर्यो, के जे थकी तमारो पुत्र निर्विष थयो? त्यारे डोशी बोली–हुं कांइ मंत्र जाणती नथी, औषध जाणती नथी, पण आखी रात्रि, रे हंस! हंस!! अने रे परमहंस! परमहंस!! एवुं रुदन कर्युं तेथी निर्विष थयो. म्हें पोकार कर्यो ते देवताए सांभल्यो. देवना प्रयोगथी छोकरो निर्विष थयो ते सांभली गारुडी बोल्या के ए मंत्र सत्य छे. अक्षरना प्रयोगथी मंत्र निपजे छे, तेम आ कल्प सिद्धांत वांचतां थकां, सांभळतां थकां, जन्म जन्मनां पातक जाय छे एवुं महोटुं महात्म्य कल्पसूत्रना अक्षरनुं जाणवुं. ए कल्पसूत्रने सांभळवा थकी घणा गुण थाय छे, घणा मांगलिकनी वृद्धि थाय छे.

पर्युषणमां साधु–श्रावकोने करवा योग्य धर्मकार्य—

परि=सामस्त्येन, उषणा=सेवना ते पर्यूषणा कहीये. ते पर्युषण पर्व आव्यां थकां साधुओए केटलां धर्मकार्य करवां ते कहे छे. १ चैत्य परिवाटी करवी एटले सर्व चैत्यने विषे श्रीअरिहंतनी प्रतिमानां दर्शन भक्तिभावे करवां, २ लोच करवो, ३ सांवत्सरिक पडिक्कमणुं करवुं, ४ सर्व श्रीसंघना मांहोमांहे खमत खामणां करवां, ५ तेलो करवो एटले अट्ठमनुं तप करवुं

तथा पाच दिवस सुधी कल्पसूत्र वाचवु ए पाच वाना करवा एम श्रीतीर्थंकर गणधरें कह्यु छे वली पर्यूपण आव्या थका श्रावकोए आटला धर्मकार्य करवा–१ आठ दिवस सुधी अमारि पलाववी, २ यथाशक्ति वेला–तेलानु एटले छट्ठ–अट्ठमादिकनुं तप जपादिक करवुं, ३ आठ दिवस पर्यंत सुपात्रने अविच्छिन्न दान देवु, ४ सोपारी नालीयेर प्रमुखनी प्रभावना करवी, ५ श्रीवीतराग देवनी प्रतिमानी पूजा करवी, चैत्य परिवाटी करवी, ६ सर्व साधुओने वदन करवु, ७ श्रीसघनी भक्ति करवी, ८ सचित्त वस्तुनो परिहार करवो, ९ ब्रह्मचर्य पालवु, १० सर्व प्रकारना आरभ सवधि कार्योनो त्याग करवो, ११ पोतानी शक्ति प्रमाणे सन्मार्गे द्रव्य खरचवु, १२ श्रुतज्ञाननी भक्ति करवी, १३ अभयदान देवु, १४ कर्मक्षय निमित्त काउस्सग्ग करवा, १५ प्रतिदिवस उभय टक पडिक्कमणा करवा, १६ मोटो महोत्सव करवो, १७ कल्पसूत्रना वाचनारने शुद्ध भक्त पानादिकनी सहाय आपवी, तेनी सुख समाधिनी खवर लेवी, १८ श्रीसघे माहोमाहे खमाववु, १९ भावना भाववी, २० कल्पसूत्र सर्व अक्षरे अक्षर साभलवु जे भव्य जीव होय ते कल्पसूत्र साभले अने ते विधिपूर्वक साभलनारो पुरुष वारमे देवलोके जइ देवताना सुख भोगवे परपराए आठमा भवे मोक्षना सुख पामे हवे व्याख्यान करती वेलाए प्रथम मगल रूप गाथा कहेवी–

पुरिम–चरिमाण कप्पो, मगल वद्धमाण जिण तित्थ ॥
इह परिगहिया जिणहरा, थेरावली चरित्तम्मि ॥ १ ॥

—पहेला श्रीऋषभदेव तीर्थंकर अने छेल्ला श्रीमहावीर स्वामी तीर्थंकर थया तेमा श्रीवर्द्धमान जिनेश्वरना तीर्थने विषे मागलिक निमित्ते ए कल्पसूत्र छे तेमा त्रण अधिकार कह्या छे त्या प्रथम तो जिनावली एटले श्रीमहावीर भगवानथी माडीने पश्चानुपूर्वीए श्रीजिनेश्वरोना चरित्र कहेवाशे, बीजो स्थविरावली एटले स्थविरोना चरित्र कहेवाशे,

त्रीजो चोशठ आलावे करी अट्ठावीश प्रकारनी साधु समाचारी कहेवाशे तेमां प्रथम श्रीजिनेश्वरोनां चरित्रो मांहे छेल्ला श्रीमहावीर स्वामी शासनना अधिकारी छे माटे तेमनुं चरित्र पहेलुं कहेवाशे. इति कल्पसूत्र–पीठिका.

हवे ए कल्पसूत्रनो अर्थ अत्यंत गंभीर छे. एकेका अक्षरनो अनंतो अर्थ छे ते सर्व अर्थ कहेवाने हुं समर्थ नथी; तथापि जेम पूर्वाचार्योए कर्युं छे तेम हुं पण ते महापुरुषोना ग्रंथोने अनुसरी गुरुकृपाथी स्वल्प अर्थ करुं छुं. यद्यपि ए कल्पसूत्र पोतेज सर्व विघ्नोपशांतिने माटे महामांगलिक रूप छे तो पण शिष्यने मंगलबुद्धि होवाने लीधे जेम लौकिक कार्यना प्रारंभमां पण प्रथम श्रीदेवगुरुनुं स्मरण करीने पछी ते कार्यनो आरंभ करीये छीए तेम आ कल्पसूत्र रचवा रूप कार्यनी आद्यमां पण सर्व मंगल मांहे महा मांगल्यकारी, चौदपूर्वनो सारभूत एवो पंच परमेष्टि मंत्रनो उच्चार कराय छे ते लखीये छीए.

(नमो अरिहंताणं) नमस्कार हो विहरमान श्रीअरिहंत प्रत्ये, (नमो सिद्धाणं) नमस्कार हो जे आठकर्म क्षय करी मोक्ष गया एवा सर्व सिद्ध प्रत्ये, (नमो आयरियाणं) नमस्कार हो श्रीआचार्य भगवान प्रत्ये, (नमो उवज्झायाणं) नमस्कार हो श्रीउपाध्याय प्रत्ये, (नमो लोए सव्वसाहूणं) नमस्कार हो अढीद्वीप रूप मनुष्य लोकने विषे रह्या एवा सर्व साधु प्रत्ये, (एसो पंच नमुक्कारो) ए जे अरिहंतादिक पांच नमस्कार छे एटले ए नमस्कार पंचक जे छे ते कहेवो छे तो के (सव्वपावप्पणासणो) सर्व पापनो प्रकर्षे करी नाश करनार छे. (मंगलाणं च सव्वेसिं) अने सर्व मंगलमांहे (पढमं हवई मंगलं) प्रथम एटले मुख्य मंगल छे.

श्रीमहावीरप्रभुनो विस्तारथी चरित्र कहे छे—

ते कालने विषे एटले चोथा आरानां अंतने विषे, ते समय ने विषे एटले ते अवसरने विषे श्रमणभगवंत श्रीमहावीर स्वामीना पांच स्थान

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमां थया, ते कहे छे–एक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमा देवलोकथी चवीने देवानंदाजीनी कूखे गर्भमां आवी उपन्या, बीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमा देवानदाजीनी कूंखथी लईने श्रीत्रिशला देवीनी कूखमां संक्रमाव्या, त्रीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमा जनम्या, चोथो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमा गृहस्थ पणुं त्यागीने साधुपणुं अगीकार कर्युं, पाचमो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां अनंत अनुपम जेने बीजी कोई उपमा लागे नहीं तथा जेनो क्याय पण व्याघात न थाय एवु, आवरण रहित समस्त वस्तु प्रकाशक सपूर्णपूर्णिमाना चद्र समान एवु श्रेष्ट केवलज्ञान तथा केवलदर्शन भगवानने उत्पन्न थयु ए पांच स्थान उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां थयां, तथा स्वाति नक्षत्रमा भगवत निर्वाण एटले मोक्ष पद पाम्या ए पांच कल्याणक सामान्यपणे भगवतना कह्या.

हवे विस्तारथी वर्णन करिए छीए—ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमण भगवान् श्रीमहावीर स्वामी उष्णकालनो चोथो मास आठमु पखवाडियु अर्थात् आषाढ शुदि छठनी रात्रे महाविजय पुष्पोत्तर प्रधान पुडरीक नामे दशमा देवलोकनु विमान छे ते विमानमा वीश सागरोपमना आउखानो क्षय करीने, देवभव त्यागीने, देव सबधि शरीर छाडीने, अतर रहित चवे, चवन करीने एहज जबूद्वीपना भरतक्षेत्रमाहेला दक्षिणभरतमा ए अवसर्पिणी कालना "इहां अवसर्पिणी कोने कहे छे ते देखाडे छे–जे कालमां समय समय वस्तुनी हानि थती होय ते अवसर्पिणी काल कहेवाय अने जे कालमा समय समय वस्तुनी वृद्धि थती होय ते उत्सर्पिणी काल कहेवाय ते प्रत्येक (एकेका) कालना छ छ आरा होय छे तेनु स्वरूप सक्षेपथी आ प्रमाणे–पहेलो सुखमसुखमा नामे आरो चार कोडाकोडी सागरोपमनो, तेमा मनुष्य तिर्यंचनो त्रण पल्योपमनो आउखो होय, त्रण कोशनु देहमान होय,

वर्षेने उपन्न पांसली होय, कल्पवृक्षना फल तथा माटीनो तूवरनी दाल जेटलो आहार त्रण दिवसे करे, ओगणपचाश दिवस सुधी जोडलो जनम्यो पाले पछी देवलोके जाय ए अवसर्प्पिणीनो पहेलो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो छट्ठो आरो तेनी स्थिति मर्यादा सरखी जाणवी. बीजो सुखमा नामे आरो, त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो, तेमां मनुष्य तिर्यंचनुं बे पल्योपमनुं आयु, बे कोशनुं शरीर, बोर प्रमाणे बे दिवसे आहार करे, एकसो अट्ठावीश पांसली होय अने चोसठ दिवस पर्यंत अपत्य पालना करी देवलोकमां जाय. ए अवसर्प्पिणीनो बीजो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पांचमो आरो तेनी स्थिति मर्यादा जाणवी. त्रीजो सुखम-दुखमा नामे आरो, बे कोडाकोडी सागरोपमनो, तेमां युगलीया मनुष्य तिर्यंचनुं एक पल्योपमनुं आयु, एक कोशनुं शरीर, एकांतरे आमला प्रमाणे आहार करे, चोसठ पांसली होय अने ओगण्याएंशी दिवस सुधी संतान पालना करी मरण पामी देवलोके जाय ए अवसर्प्पिणीनो त्रीजो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो चोथो आरो तेनी स्थिति मर्यादा जाणवी. चोथो दुखम-सुखमा नामे आरो बेतालीश हजार वर्षे न्यून एक कोडाकोडी सागरोपमनो तेमां मनुष्यनुं आयुष्य एक पूर्वकोडी वर्षनुं अने पांचसो धनुष प्रमाण शरीर होय, इहां युगलीया न होय माटे जे वखत जेटलुं जोइये ते वखत तेटलुं भोजन करे, मरण पामीने चारे गति मांहेली गमे ते गतिमां जाय, कोइक जीव कर्मक्षय करी मोक्ष पण जाय ए अवसर्प्पिणीनो चोथो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो त्रीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा समजवी. पांचमो दुखमा नामा आरो एकवीश हजार वर्षनो, तेमां मनुष्यनुं सात हाथ देह मान, एकसो वीश वर्षनुं आयु होय, मरण पामीने चारगति मांहेली गमे ते गतिमां जाय परंतु ए आरामां सर्व कर्म क्षय करीने कोइ मोक्षने विषे जाय नहीं, ए अवसर्प्पिणीनो पांचमो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो बीजो आरो तेनी

स्थिति मर्यादा जाणवी. छट्ठो दुखम-दुखमा नामे आरो एकवीश हजार वर्षनो छे, एमां मनुष्यनुं शोलवर्षनुं आयु होय अने एक हाथनुं शरीर होय, बिलमां निवास होय, सर्व मनुष्य क्रूरकर्मी, न्यायमार्ग रहित, दुर्गतिमां जावा वाला जीव होय एवो अवसर्प्पिणीनो छट्ठो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पहेलो आरो तेनी स्थिति मर्यादा जाणवी ए रीते ए छ अवसर्प्पिणीना अने छ उत्सर्प्पिणीना मली छ दु बार आरा थाय तेनो सर्व मली वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण काल थाय छे

एमा अवसर्प्पिणीनो सुषम-सुषमा नामा पहेलो आरो पण संपूर्ण थयो वली सुषमा नामा बीजो आरो पण सपूर्ण थयो तथा सुषम-दुषमा नामा त्रीजो आरो पण व्यतिक्रम थइ गयो अने दुषम-सुषमा नामे चोथो आरो पण घणो वीती गयो एटले तेमाथी पण बेतालीश हजार ने पचोतेर वर्ष अने साडा आठ महिना ऊपर एटला वरसे न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम वीती गया तेमां एकवीश तीर्थंकर श्रीइक्ष्वाकु कुलमा थया जेमनु काश्यप गोत्र हतु तथा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अने श्रीनेमिनाथ भगवान ए बे तीर्थंकर श्रीहरिवश कुलमां थया तेमनुं गोतम गोत्र हतु ए रीते सर्व मली त्रेवीश तीर्थंकर तो थइ चूका अने जेवारे ए अवसर्प्पिणी सबंधी चोथा आराना पंचोत्तेर वर्ष ऊवर साडा आठ महीना शेष काल रह्यो। त्यारे श्रमण भगवान् श्रीमहावीर छेल्ला तीर्थंकर ते ब्राह्मण कुडगाम नगरमां ऋषभदत्त नामा ब्राह्मण जेनु कोडाल गोत्र छे तेनी देवानदा नामे ब्राह्मणी भार्या छे तेनु जालधर गोत्र छे तेनी कूंखनेविषे मध्य रात्रिना समयमां उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमां चद्रमानो योग आवे छते देव सनधि आहार, देवनो भव अने देवनु शरीर त्यागीने देवानदानी कूखमां अवतर्या हवे भरत चक्रवर्त्तीना पूछवाथी श्रीऋषभदेव भगवाने कह्युं हतुं के

चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामी थशे ते वात कया भवनी छे ते जाणवाने अर्थे प्रथम श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश भव कहिए छैये.

आ श्रीजंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे प्रतिष्ठान पत्तनना राजाना गामनी चिंता करवावालो 'नयसार' नामे चाकर कणवार्यो हतो ते एक दिवसे राजाना हुकुमथी घणां गाडां अने चाकर साथे लइने काष्ठ लेवाने अर्थे वनमां गयो, त्यां पोते एक वृक्षनी नीचे जइ बेठो छे अने बीजा चाकर (माणस) लाकडां कापवानो उद्यम करवा लाग्या छे एटलामां साथ थकी भूला पडेला केटलाएक साधु त्यां आव्या ते तेणे दीठा तेवारे हर्षवंत थको तेमनी सन्मुख जइ वांदीने पोताने स्थानके तेडी लावीने आहार वोहोराव्यो, पछी साधुए तेने धर्मोपदेश आप्यो. ते सांभलीने त्यां समकेत पाम्यो, तेवार पछी ते साधु मुनिराजोने पाधरो रस्तो देखाड्यो ए नयसारनो पहेलो भव जाणवो १, ज्यांथी समकेत पाम्या त्यांथी भवनी गणतरी थाय समकेत पाम्याथी आगल तो संसारमां जीवे अनंत भव कर्या ते कांइ लेखामां गणाय नहीं पछी नयसार त्यांथी आयुक्षय करी अंतसमये नमस्कार सहित मरण पामीने पहेले देवलोके देवपणे उपन्यो ए बीजो भव जाणवो २, पछी देवभवमां एक पल्योपमनुं आयुष्य भोगवी त्यांथी चवी त्रीजे भवे श्रीऋषभदेव स्वामीनो पुत्र भरत चक्रवर्त्ती तेनो मरीचि नामे पुत्र थयो तेणे एक दिवस श्रीऋषभदेव भगवाननी देशना सांभलीने दीक्षा लीधी ते वखते बीजा पण भरत राजाना पांचसे पुत्र अने सातसें पोतरा मली बारशो पुरुषोए दीक्षा लीधी, एक दिवस उष्णकाले शरीरमां ताप घणो लागवाथी मरीचिने मनमां न्हावानी इच्छा थई तेवारे संयमनो निर्वाह दोहेलो तेथी दीक्षा पालवाने असमर्थ अने घरे पण जवाय नहीं एवुं विचारी साधुनो वेष छांडीने मनःकल्पनाथी नवो त्रिदंडीनो वेश धारण

कर्यो, लोक पूछे तेवारे एवुं कहे के साधु त्रणदंडथी रहित छे अने हुं त्रणदंड सहित छु माटे महारे त्रणदडनुं चिन्ह हो तथा साधु महाराज द्रव्य अने भावथी लोच करे छे हु लोच करवाने असमर्थ होवाथी महारे मस्तके शिखा अने मुडन एटले क्षुर मुड हो तथा साधु सर्व प्राणातिपातादिकथी विरम्या छे महाराथी तेम पाली शकातु नथी माटे महारे स्थूल प्राणातिपातनी विरति हो तथा साधु शीलेकरी सुगंधित छे अने हु तेम नथी माटे माहारे बावना चंदननु विलेपन हो तथा साधु मोह रहित छे अने हुं मोहें करी ढांक्यो छुं माटे माहारे एक छत्र ढांकवा सारु हो तथा साधु पादुकाए करी रहित छे हु तेम नथी माटे पगे पावडी हो तथा साधु कषायथी रहित छे अने हु कषाय सहित छु माटे महारे काषाईयां एटले गेरूना रग्यां वस्त्र हो तथा साधु स्नानें करी रहित छे अने हु तेम नथी माटे महारे स्वल्प पाणीये स्नान हो ए रीते वेश लई हाथमां जलकमडलु धारण करी प्रभुना समोसरणनी बाहेर बेसे परंतु एवो विरूप वेश छतां पण जे कोइ पूछे तेनी आगल खरेखरी हकीगत कहे अने एनी पासे आवनारने शुद्ध साधुमार्गनो उपदेश आपी श्रीऋषभदेव भगवान पासे दीक्षा देवरावे एवो थको भगवान साथे विचरे एक दिवस श्रीऋषभदेव स्वामी अयोध्यायें पधार्या तेवारे भरतचक्रवर्तिए परमेश्वरने वदना करी पूछ्युं के भगवत ! आ समोसरणमां कोई तीर्थंकरनो जीव छे ? तेवारे भगवान बोल्या के समोसरणमां तो नथी परतु समोसरणनी बाहेर त्हारो मरीचि नामे पुत्र जेणें त्रिदडीनो वेष धारण करेल छे ते चोवीशमो ' श्रीमहावीर ' नामा तीर्थंकर थाशे तथा एज मरीचिनो जीव आ भरत क्षेत्रमा पोतनपुर नगरें 'त्रिपृष्ठ' नामे पहेलो वासुदेव थाशे अने श्रीमहाविदेह क्षेत्रमां मूका नगरीमा 'प्रियमित्र' नामा चक्रवर्त्ती थाशे एवी वात सांभलीने भरत महाराज हर्षवत थइ श्रीभगवान पासेथी मरीचिने वांदवानी आज्ञा लेइ समोसरणमांथी

उठीने समोसरणनी बाहेर ज्यां मरीचि बेठो छे त्यां आव्या अने त्रण प्रदक्षिणा आपी वांदीने कह्युं के हे मरीचि ! हुं तने तथा ताहरा त्रिदंडीना वेशने तथा तुं वासुदेव थाइश ते ताहरा वासुदेवपणाने तथा चक्रवर्त्तीपणाने नमतो नथी परंतु चोवीशमो श्रीमहावीर नामे तीर्थंकर थाशे माटे तेने वांदुं छुं एम कही भरत महाराज स्वस्थानके गया; पछी ए वात सांभलीने मरीचि घणा आनंदथी बोल्यो के एकतो महारो दादो तीर्थंकर तथा महारो पिता चक्रवर्त्ती अने हुं पोते पण पहेलो वासुदेव थइश तथा चक्रवर्त्ती थइश वली छेल्लो चोवीशमो तीर्थंकर पण थइश माटे मने वासुदेवादिक अधिक पदवीओ मलशे तेथी अहो महारुं उत्तम कुल एम कहीने पोतानी भुजाए ताली ठोकी महा हर्षवंत थयो थको हाथें तालोटा देतो नाचवा लाग्यो, एवी रीते पोताना कुलनो मद कर्यो तेथी नीचगोत्र कर्म बांध्युं. कारण के १ जातिमद, २ कुलमद, ३ लाभमद, ४ ऐश्वर्यमद, ५ बलमद, ६ रूप-मद, ७ तपमद, अने ८ श्रुतमद ए आठ मदने करतो थको जीव हीन जात्यादिकने पामे. हवे कोइएक दिवस मरीचिना शरीरमां रोग उपन्यो तेवारे तेनो भिन्नवेष देखीने असंयतिपणाने लीधे कोइ पण साधु तेनो वैयावच्च करे नहीं ते जोइ मरीचिए मनमां चिंतव्युं के मने रोग मटी जाय अने सारो थाउं तो एक शिष्य करुं के जे मने रोगादिक उपने वैयावच्च करवा काम आवे एम निर्धारी राख्युं पछी केटलाएक दिवसे तेने रोग मट्यो अने शरीरे शाता थइ, एक दिवसे कोइ कपिल नामा राजपुत्र मरीचि पासे आवी धर्मोपदेश सांभली प्रतिबोध पाम्यो पछी मरीचिने कहेवा लाग्यो के मने दीक्षा आपो ते सांभली मरीचि बोल्यो के श्रीऋषभदेव स्वामी पासे जई दीक्षा ल्यो तेवारे कपिल राजपुत्र श्री ऋषभदेवजीना समोवसरणमां गयो त्यां प्रभुने समोसरणमां बेठा जोइ फरी मरीचि पासे आवीने बोल्यो के श्रीऋषभदेवजी तो राज्य

लीला भोगवे छे माटे तेमनी पासे तो धर्म काइ पण नथी परन्तु तमारा पासे काइ धर्म छे के नथी ? एवु वचन साभली मरीचिए तेने यथार्थ कह्यु तो पण बहुलकर्मीपणा माटे तेणे मान्यु नहीं तेवारे मरीचिये कषाय सहित मतिभ्रशथी, मिथ्यात्वोदयना योगे, शिष्यना लोभथी, स्वधर्म थापवा विचार्यु के ए महारे योग्य छे एम चिंतवीने वोल्यो के हे कपिल ! कांइक जैनधर्म महारा पासे पण छे माटे तु सुखे दीक्षा ले, हु तुजने दीक्षा आपीश एवा प्रकारे पोताना स्वार्थ सारु कपिलने दीक्षा दीधी ए उत्सूत्र भाषण कर्युं पछी ते कर्मने आलोयुं पडिकम्यु नहीं तेना योगथी एक कोडाकोडी सागरोपम ससारमा परिभ्रमण करवा सबधि कर्म उपार्जन कर्युं पछी ते मरीचि अनुक्रमे पोतानुं चोराशी लाख पूर्वनु आयुष्य भोगवी समाधि मरण करीने (३) चोथे भवे पाचमे ब्रह्म देवलोके दश सागरोपमने आउखे देवतापणे उपन्यो ४, त्यांनु आयुष्य पूरण करी चवीने पाचमे भवे कोल्लागसन्निवेशने विषे एशी लाख पूर्वना आउखे कौशिक नामा विप्र थयो त्या पण छेल्ली तापसी दीक्षा ग्रहण करी आयुष्य पूरु करी मरण पामीने घणाकाल पर्यंत संसार परिभ्रमण करी (५) छठे भवे थूणापुरीमा पुष्पमित्र नामा ब्राह्मण थयो त्या त्रिदंडी तापस थई बहोतेर लाखपूर्व आयु भोगवी (६) सातमे भवे पहेले सौधर्म देवलोके मध्यम आउखे देवतापणे ऊपन्यो (७) त्याथी चवीने आठमे भवे चैत्य सन्निवेशें साठ लाख पूर्वना आउखे अग्निद्योति नामा ब्राह्मण थयो त्या पण त्रिदंडी तापस थई काल करीने (८) नवमे भवे बीजे ईशान देवलोके मध्यम आउखे देवता थयो (९) त्याथी चवी दशमे भवे मदिराख्य सन्निवेशे छप्पन्न लाख पूर्वना आउखे आग्निभूति नामा ब्राह्मण थयो त्या पण त्रिदडीपणु ग्रहण करी मरण पामीने (१०) अगीआरमे भवे त्रीजे सनत्कुमार नामा देवलोके मध्यम आउखे देवतापणे ऊपन्यो ११, त्याथी

चवी बारमां भवमां श्वेतांबिका नगरीने विषे चुम्मालीश लाख पूर्वना आउखे भारद्वाज नामा ब्राह्मण थयो अंते त्रिदंडीपणुं ग्रहण करी त्यांथी मरण पामीने (१२) तेरमे भवे चोथा माहेंद्र नामा देवलोकने विषे मध्यम आउखे देवतापणे उपन्यो १३, त्यांथी चवी घणुं संसार भ्रमण करी वली चौदमा भवे राजगृही नगरीने विषे चोत्रीश लाख पूर्वना आउखे थावर नामा ब्राह्मण थयो त्यां त्रिदंडी तापसपणुं अंगीकार करी मरण पामीने (१४) पन्नरमे भवे पांचमें ब्रह्म देवलोके मध्यम आउखे देवता पणे उपन्यो १५, त्यांथी चवीने वली पण घणुं संसार भ्रमण करी शोलमा भवने विषे राजगृही नगरीनो चित्रनंदी नामे राजा तेनी प्रियंगु नामा राणी तेनो पुत्र विशाखानंदी हतो अने ते राजानो बीजो न्हानो भाई विशाखभूति नामे युवराज हतो तेनी धारणी नामे राणीनी कूंखने विषे ते मरीचिनो जीव आवी पुत्रपणे उपन्यो, तेनुं विश्वभूति नाम मावित्रे दीधुं, ते अनुक्रमे यौवन वय पाम्यो त्यारे तेना पिताए पर-णाव्यो पछी ते प्रतिदिन पोतानी स्त्रीने साथे लई वाडीमां रमवा जाय. एक दिवसे चित्रनंदी राजाना कुंवर विशाखानंदीए, विश्वभूतिने क्रीडा करतो देखीने मनमां विचार कर्यो के जुओ तो खरा के हुं तो राजानो पुत्र छुं अने आ तो युवराजनो पुत्र छे तो हुं आ माहारा बापनी वाडीमां कोइ दिवस पण क्रीडा करतो नथी अने आ युवराजनो पुत्र वाडी रोकीने बेठो छे ए अयुक्त छे माटे हवे हुं पण माहारी स्त्रीयो सहित इहां आवीने वाडीमां रमण करुं तोज महारो जन्म सफल थाय नही कां महारो जन्म व्यर्थ छे एवो निश्चय करी ते कुमारें पोताना पिताने कह्युं के विश्वभूतिने वाडीमांथी काहाडी मूको तो हुं जइ ते वाडीमां क्रीडा करुं तेवारे पिताए कह्युं के पुत्र ! हुं कोइ प्रपंच करीने विश्वभूतिने काहाडी तने वाडी आपीश ए प्रमाणे पोताना पुत्रने संतोष पमाडी पछी विश्वभूतीने वाडीमांथी कहाडवा निमित्ते राजाए कपट

करी एक पडहो वजडाव्यो के सिंहनामा राजाने पकडवा सारु राजा चढे छे, आवो ढढेरो सांभलीने विश्वभूति आवी राजाने कहेवा लाग्यो के स्वामिन्! तमे पोतेज ते विचारा गरीवडा सिंहराजानी ऊपर शु प्रयाण करो छो ? तेने तो हुज बांधी लावीश एम कही लश्कर लइने विश्व-भूति, सिंहराजा ऊपर चढाइ करी गयो, पाछलथी राजाए विश्वभूतिना अत पुरने राजवाडीमाथी काहाडीने विशाखनदीने वाडी सोंपी दीधी एम करता केटलाएक दिवसे विश्वभूति पण सिंहराजाने पकडी लावीने राजाने आवी सोंप्यो, तेवारे तेनो लोको घणो यशवाद बोलवा लाग्या, हवे फरी विश्वभूति पूर्वनी पेठे पोतानी स्त्रीयोने साथे लइ रमवा सारुं राजवाडीए गयो त्या दरवाजा ऊपर विशाखनदीना सुभट बेठा हता ते बोल्या के इहा विशाखनदी पोतानी स्त्रीयो साथे रमण करे छे माटे बीजा कोइने आववानो हुकम नथी, राजाए वाडी एने दीधी छे ते सांभली विश्वभूतिए जाण्यु के राजाए म्हारी साथे कपट कीधु छे माटे धिक्कार पडो आ ससारने एम विचारी विरक्त थयो, पछी मात्र पोतानु बल देखाडवा सारु ते वाडीना दरवाजा पासे एक कोंठनु झाड हतु तेने एक मूठी मारी तेथी ते वृक्षना बधा कोंठ जमीन ऊपर पडी गया पछी विश्वभूति बोल्यो के जेटलो वखत आ कोंठने जमीन ऊपर पाडता लाग्यो तेटलोज वखत शत्रुने मारता लागे परतु लोको अपवाद बोले तेनी बीकथी ए काम हु करतो नथी, एवु कहीने सभूतिविजय मुनिनी पासे दीक्षा लइ मासक्षपणादि घणुज तप कर्युं, एक दिवस ते विश्व-भूति मुनि विहार करतो करतो मथुरा नगरीमा आव्यो, त्या मास-खमणनु पारणु करवा सारु गोचरीने अर्थे गलीए फरता थका कोइएक नवी प्रसूता गाय हती तेणे ढींक मारी तेथी साधु भूमिका ऊपर पडी गयो ए अवसरमां एना काकानो दीकरो विशाखनदी ते पण पोताने सासरे एज गाममा आवेलो छे तेणे गोखमा बेठा थका विश्वभूतिने जमीन

ऊपर पडतो जोयो तेवारे हास्यपूर्वक बोल्यो के–विश्वभूति ! जे बल पराक्रमथी तें एक मुष्टीए करी सर्व कोंठ पाडी नाख्यां हतां ते तारुं बल सर्वे क्यां जतुं रह्युं ? एवुं वचन सांभलीने मुनिए ऊंची दृष्टि करी तेने जोयो त्यारे मनमां अहंकार आणीने बोल्यो के अरे ! हजी पण हास्य करे छे, तो जो हमणां पण म्हारुं बल केटलुं छे ? एम कही पहेली गायने सींगडाथी पकडी आकाशे भमाडीने भूमि ऊपर मूकी दीधी ने विशाखनंदीने कहेवा लाग्यो के अरे ! तुं तो जाणे छे के–एनुं बल जतुं रह्युं हशे पण म्हारुं बल क्यांये गयुं नथी वली कहेवा लाग्यो के जो म्हारी तपस्यानुं फल होय तो हुं परभवमां घणो बलवंत थयो थको तुजने मारवावालो थाउं एवो नीयाणो करी कोडी वर्ष पर्यंत चारित्र पाली अंते अनशन करी त्यांथी मरण पामीने (१६) सत्तरमां भवे महाशुक्र नामा सातमा देवलोकने विषे सतरे सागरोपमना पूरण आउखे देवतापणे उपन्यो १७, त्यांथी चवीने अढारमां भवे पोतनपुर नगरमां प्रजापति नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूंखमां चार स्वप्ने सूचित गौतमस्वामीनो जीव पुत्र थयो, तेनुं नाम अचल दीधुं तथा वली एज प्रजापति नामा राजानी मृगावतीनामे एक पुत्री थइ ते एक दिवसे विवाहनी चिंताने लीधे ते कुमारीनी माताए तेने शणगारी सुशोभित वस्त्राभूषण पहेरावीने राजा पासे मोकली अने विचार्युं के ए म्होटी कन्या यौवन वय पामेली देखीने राजा कोइ कुलवान् राजकुमारने परणावी देशे, परंतु राजा तो ते पोतानी सुरूपवाली पुत्रीने आवेली देखीने कामे करी पीडित थयो अने पोतेज पोतानी दीकरीने परणवानी इच्छा करतो थको लोको अपमान न करे एटला माटे सभामां बेठेला लोकोनी आगल कहेवा लाग्यो के हे भाइओ ! जे लोकने विषे सारामां सारी चीज होय ते कोनी कहेवाय ? तेवारे सभाजनो बोल्या के जे उत्तम चीज होय ते तमारी कहेवाय, राजा बोल्यो के तमारा मुखथी जे वचन नीकल्युं ते

निश्चयथी सत्य छे माटे आ सर्वोत्कृष्ट जे कन्यारत्न छे ते हु बीजाने आपीश नहीं. एने हु पोतेज परणीश एम कही ते पोतानी पुत्रीने पोतेज परण्यो अने तेनी साथे ससार सबधी सुख भोगववा लाग्यो. एम करता एक दिवस ते विश्वभूतिनो जीव देवलोकथी चवीने मृगावतीनी कूखे आवी उपन्यो, तेवारे मृगावतीए सात स्वप्न दीठां, पछी पूरण नव महीने पुत्र जन्म्यो, तेवारे राजाए म्होटो महोत्सव करीने ते बालकनु नाम 'त्रिपृष्ठ' दीधु अनुक्रमे ते बालक म्होटो थयो एवा अवसरमां शखपुर नगरनी पासे तुगी नामा पर्वत छे ते पर्वतनी गुफामा विशाखनदीनो जीव सिंहपणे आवी उपन्यो छे ते वखतमां अश्वग्रीव नामे प्रतिवासुदेव हतो तेनु शालिनु खेत्र ते पर्वतनी नजीक हतु ते शालिना खेत्रनो जे रखवालो रहेतो तेने ते सिंह मारी नाखतो हतो, तेवारे ते अश्वग्रीव पोताना सेवक राजाओनी ऊपर वर्षोवर्ष वारा प्रमाणे हुकुम लखी खेत्रनी चोकी करवा मोकलतो हतो एम करता एक वर्षे वारा प्रमाणे ते प्रजापतिराजाने चोकी करवानो हुकम आव्यो तेवारे ते खेत्रनी रखवाल करवा सारु राजाए पोते जावा मांड्यु, तेने त्रिपृष्टे वारी राख्यो अने पोते पोतानो अचल नामे भाइ जे गौतमस्वामीनो जीव छे अने आ भवमा बलदेव थाशे ते सहित खेत्रनी रखवाल करवा गयो, त्यां बख्तर टोप पहेरी, रथमा बेसी, अचलने सारथी करी शस्त्र लईने जे गुफामा सिंह रहे छे त्या गयो, एटलामा तो रथनो अवाज साभलीने सिंह पण गुफाथी बाहेर आव्यो तेने देखीने-त्रिपृष्टे विचार्युं के ए सिंहने बेसवा रथ नथी तो म्हारे पण रथमा बेसी लडवु नहीं, वली एनी पासे शस्त्र तथा कवच नथी तो म्हारे पण शस्त्र तथा कवच नहीं राखवां, पछी शस्त्र तथा कवचने रथमा मूकी पोते रथथी हेठो उतरी सिंहने कहेवा लाग्यो के अरे ! ढाढीना खानार उठ, ऊभो थइने म्हारी सामो आव ? एटलु कह्युं के तरत ते

सिंह पण उठ्यो अने मुख फाडी स्हामो लडवा आव्यो के तरतज त्रिपृष्टे ते सिंहना होठ पकडी बे कटका करी चीरी नाख्यो, तो पण ते सिंहनो जीव जाय नहीं, तेवारे त्रिपृष्ठनो सारथी सिंहने कहेवा लाग्यो के हे सिंह! जेम तुं मृगराज छे तेम आ त्हारो मारनार पण नरराज छे माटे तने कोइ साधारण माणसे मार्यो नथी, एवी वात सांभली सिंह मरण पामीने नरके गयो, पछी ते सिंहनुं कलेवर लइ गाममां आवी लोकोनी वचमां कलेवर नाखीने त्रिपृष्ठ बोलवा लाग्यो के आ उपद्रव करनार सिंहने हुं मारी आव्यो छुं माटे हवे म्हारा प्रतापथी अश्वग्रीव प्रतिवासुदेव सुख समाधिथी चावल खाओ. ए वात लोकोना मुखथी सांभलीने अश्वग्रीवने महा क्रोध उपन्यो तेथी पोतानी सेना लइने लडवा आव्यो, ते त्रिपृष्ट साथे युद्ध करतां कोई पण रीते पोहोची शक्यो नहीं; तेवारे चक्र फेरवीने तेना ऊपर नाख्युं ते चक्र पण त्रिपृष्टना हाथमां आवी बेठुं पछी तेज चक्र त्रिपृष्टे अश्वग्रीव ऊपर चलाव्युं तेणे जइ अश्वग्रीवनुं मस्तक छेदी लावीने त्रिपृष्ट आगल हाजर कर्युं, ते जोइ देवो आकाशमां रही जय जय शब्द कही बोल्या के आ भरतक्षेत्रमां ए त्रिपृष्ठ नामनो पहेला वासुदेव थयो, पछी ते त्रिपृष्ठ अनुक्रमे त्रण खंड साधीने वासुदेवनी राजलीलाना सुख भोगवतां थकां एक दिवस नाटक थातुं हतुं तेवामां राजाने निद्रा आववा लागी तेवारे शय्यापालकने कह्युं के मने निद्रा आवी जाय तेवारे ए नाटक करनाराओने शीख आपी देजो तो पण ते शय्यापालके श्रोत्रेन्द्रियना रसे करी तेमने गीत गान करतां वारी राख्या नहीं, एटलामां त्रिपृष्ठ जागृत थइने बोल्यो के अरे ! आ नाटकीआने शा वास्ते रजा आपी नहीं ? तेवारे शय्यापालके कह्युं के प्रभो! श्रोत्रेन्द्रियना रसे करी हुं रजा आपतां चूकी गयो. ते सांभली त्रिपृष्टने क्रोध चड्यो पछी सीशुं गरम करी तेनो ऊनो ऊनो रस शय्यापालकना कानमां रेडाव्यो तेथी ते मरण

पामीने नरके गयो ए रीते ते वासुदेवना भवमां घणा म्होटां पापोपार्जन करी चोराशी लाख वर्षनु आयुष्य भोगवीने एशी धनुष प्रमाणना शरीरनो त्याग करी मरण पामीने ओगणीशमा भवे सातमा नरकने विषे नारकीपणे जइ उपन्यो १९, त्याथी मरण पामीने वीशमा भवे सिंह थयो २०, त्याथी मरण पामीने एकवीशमा भवे चोथा नरकने विषे नारकीपणे जइ उपन्यो २१, त्याथी मरण पामी घणु ससार भ्रमण करी बावीशमा भवे रथपुर नगरे प्रियमित्र नामे राजानी विमला नामे राणी, तेनी कूखने विषे पुत्रपणे उपन्यो, मावित्रे विमल एवु नाम दीधु अनुक्रमे सर्व कलानो पारगामी थयो, पिताये तेने राज्य सोंप्यु एक दिवस वनमा क्रीडा करवा गयो त्यां पाशमाहेथी हरण छोडाव्या, ते दयाना प्रभावे भद्रक परिणामे करी मनुष्यायु बाध्यु, छेवटे दीक्षा लइ उग्र तपश्चर्या करी, चक्रवर्तीनी पदवी उपार्जी, अते एक मासनु अनशन करी त्याथी चवीने त्रेवीशमा भवे पश्चिम महाविदेहमा मूका नगरीनो धनजय नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखे आवी उपन्यो, माताए चौद स्वप्ना दीठां, पछी पूरण मासे पुत्र जन्म्यो तेवारे मातपिताए म्होटा महोत्सवपूर्वक तेनुं 'प्रियमित्र' एवु नाम दीधुं, ते अनुक्रमे छ खड साधी चक्रवर्तीनी पदवी भोगवी अते श्रीपोटिलाचार्य पासे दीक्षा लइ क्रोड वर्ष पर्यंत चारित्र पाली, चोराशी लाख पूर्वनु आयु पूरण करी, त्यांथी मरण पामी चोवीशमा भवे शुक्र नामा सातमे देवलोके सतरे सागरोपमने आयुषे देवतापणे ऊपन्यो २४, त्याथी चवी पचीशमा भवे एहज भरतक्षेत्रमा छत्रिका नामे नगरीनो जितशत्रु नामे राजा तेनी भद्रा नामे राणीनी कूखने विषे पचीश लाख वर्षने आयुखे 'नदन' नामे राजपुत्र थयो, त्या चोवीश लाख वर्ष सुधी गृहस्थावासे रहीने पछी पोटिलाचार्य पासे दीक्षा लइ एक लाख वर्ष पर्यंत दीक्षा पाली जावज्जीव सुधी मासखमण करी वीशस्थानकनुं तप

आराध्युं तेथी तीर्थंकर नामकर्म निकाचित उपार्ज्यो अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी काल करीने छवीशमां भवे दशमा प्राणत देवलोकने विषे 'पुष्योत्तरावतंसक' नामना विमानमां त्रीश सागरोपमने आउखे देवतापणे उपन्यो २६, पछी त्यांथी चवीने मरीचिना भवमां जे कुलनो मद कर्यो हतो ते नीचगोत्रकर्मना उदयथी सत्तावीशमां भवने विषे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी देवानंदा नामे स्त्रीनी कूंखे आवी उपन्यो. ए रीते प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव भगवाने भरत चक्रवर्त्तीनी आगल कह्युं हतुं के मरीचिनो जीव तीर्थंकर थाशे ते निश्चयथी थयो २७, हवे भगवान् श्रीमहावीर देवानंदानी कूंखे अवतर्या ते समयने विषे त्रण ज्ञान सहित गर्भपणे आव्या, त्यां हुं देवलोकथी चवीश एवुं जाणे पण चववाना वखतनो जे वर्त्तमान एक समय सूक्ष्म काल छे ते न जाणे अने त्यांथी चव्या पछी हुं देवलोकथी चवीने देवानंदानी कूंखे उपन्यो छुं एवुं जाणे. हवे जे रात्रिमां श्रमण भगवान् श्रीमहावीर स्वामी देवानंदा ब्राह्मणीनी कूंखे ऊपन्या, ते रात्रिमां देवानंदा ब्राह्मणी सुखशय्यामां कांइक सूती कांइक जागती अर्थात् थोडी निद्रामां रही थकी, उदार कल्याणकारी, उपद्रव रहित, धनकारी, मंगलकारी शोभाकारी एवां चौद म्होटां स्वप्न देखीने जागी; ते चौद स्वप्नानां नाम कहे छेः—पहेले स्वप्ने हाथी दीठो, बीजे वृषभ, त्रीजे सिंह, चोथे लक्ष्मी, पांचमे फूलनी माला, छट्ठे चंद्र, सातमे सूर्य, आठमे ध्वजा, नवमे कुंभ (कलश) दशमे पद्मसरोवर, अगीआरमे क्षीरसमुद्र, बारमे देव विमान, तेरमे रत्नोनो ढगलो (राशी), चौदमे निर्धूम अग्नि ए चौद स्वप्न कल्याणकारी, महामंगलनां करनारां देखीने जागी थकी हर्ष संतोष पामी, चित्तमां आनंद पामी, म्होटा प्रेम सहित मन थयुं, परम हर्ष ऊपन्यो, हर्षने विषे पसरतुं छे मन जेनुं, उत्कृष्ट सौम्य मन छे जेनुं, जेनां मनमां हर्ष उल्लास थयो छे, मेघनी धाराए करी हणायुं

एवुं कदंब-पुष्प जेम विकस्वर थाय तेम जेनां रोमे रोम विकस्वर थया छे एवी थइ थकी, पूर्वे दीठेला स्वप्नोने याद करे, याद करीने सूवाना पलग ऊपरथी उठे, उठीने पादपीठ थकी पण उतरे, उतरीने नही उतावली, नहीं धीरी एवी वे गतिनी वचमा ठहेरती थकी राजहसीनी गति सरखी चालती थकी ज्या ऋषभदत्त ब्राह्मण छे त्या आवी, आवीने ऋषभदत्त ब्राह्मण प्रत्ये जय विजय शब्द करीने वधावे, वधावीने भद्रासन एटले वाजोठ ऊपर वेठी, त्या मार्गमा आववानो खेद मटावीने, परसेवो उपशमावीने, वे हाथ जोडी दश नख एकठा करी मस्तके अजली चढाने कहेवा लागी के हे स्वामिन् ! में आज रात्रे शय्यामा काइक सूता थका हस्ति आदिक चौद स्वप्ना दीठा, तेनु शु फल थशे अने ते कया प्रकारना कल्याणने करनारा थशे ? तेवारे ऋषभदत्त ब्राह्मण देवानदाना मुखथी एवु साभलीने पोताना हैयामा घणो खुशी थयो, जेवा पाणीनी धाराथी कदंब-पुष्प खिले तेवी तेनी रोमराजि प्रफुल्लित थई, ते स्वप्नोना अर्थ विचारवा लाग्यो, विचारीने देवानदा ब्राह्मणीने कहे-उदारकारी हे देवाणुप्रिया ! तमे स्वप्ना दीठां ते मगलकारी छे, तमे जे स्वप्ना दीठा तेनु फल एवु छे के धननो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे निश्चे तमारे नव महीना ने साडा सात दिवस गया थका सुकुमार छे हाथ पग जेना, हीन अग रहित, सपूर्ण पाच इद्रिय सहित शरीर जेनु छे, लक्षण व्यजन, अने गुणेकरी सहित तथा मानोन्माने करी सहित सपूर्ण भलु शरीर जेनु छे एवो पुत्र थाशे

हवे लक्षण कोने कहीये ते कहे छे—

जे पुरुषनो ज्यारे जन्म थाय त्यारे तेना अगमा पुण्यनी रेखा प्रमुख पडे तेने लक्षण कहीए —'सहज लक्षण इति वचनात्' त्या चक्रवर्त्ती तथा तीर्थंकरोने तो एक हजार ने आठ लक्षण होय अने वलदेव

तथा वासुदेवने एकसो ने आठ लक्षण होय, तथा बीजा सामान्य भाग्य-वंत पुरुषोने बत्रीश लक्षण होय, तेनां नाम कहे छे—१ छत्र, २ वींजणो, ३ धनुष, ४ रथ, ५ वज्र, ६ काचवो, ७ अंकुश, ८ वावडी, ९ स्वास्तिक, १० तोरण, ११ तलाव, १२ सिंह, १३ वृक्ष, १४ चक्र, १५ शंख, १६ हाथी, १७ समुद्र, १८ कलश, १९ प्रासाद, २० मत्स्य, २१ यव, २२ यूप 'यज्ञनुं अंग', २३ थांभलो, २४ कमंडलु, २५ पर्वत, २६ चामर २७ काच, २८ बलद, २९ पताका, ३० लक्ष्मी, ३१ माला, ३२ मयूर; ए बत्रीश लक्षण पूर्वकृत पुण्यनां योगवाला पुरुषना हाथ पगना तलीयाने विषे होय ए आदि देइने एक हजार ने आठ लक्षण पण एवाज उत्तम प्रकारनां जाणी लेवां तथा वली प्रकारांतरे बत्रिश लक्षण कहे छेः—जेना नख, पग, हाथ, जीभ, होठ, तालु अने आंखोना खूणा; ए सात वानां रक्त होय 'सारां होय' ते पुरुष भाग्यवान जाणवो, ते सप्तांग लक्ष्मी भोगवे, तथा जेनी कांख, छाती, कोट एटले गलानी हडवटी तथा गलानो मण्यो, नाक, नख अने मुख ए छ वानां ऊंचां होय तो ते पुरुष सर्व प्रकारे उन्नति पामे. तथा दांत, चामडी, केश, आंगुलीना पर्व एटले आंगलीनी रेखा अने नख ए पांच जेनां पातलां होय 'सूक्ष्म होय' तो ते पुरुष घणो धनवान थाय तथा नेत्र, स्तननां अंतर, नाक, गलानो मण्यो अने भुजाओ ए पांच जेना लांबा होय ते पुरुषनुं आयुष्य म्होटुं होय, घणुं धन पामे अने पराक्रमी; होय, तथा ललाट, पेट अने मुख ए त्रण जेनां म्होटां होय ते पुरुष राजा थाय. वली ग्रीवा, जंघा अने पुरुष चिन्ह, ए त्रण जेनां लघु होय, 'टुंका' होय ते पुरुष राजा थाय, तथा बोलवानो स्वर, डुंटी एटले नाभी अने सत्व ए त्रण जेना गंभीर होय ते पुरुष पृथ्वीनो धणी थाय, अथवा प्रधान थाय एम जे पुरुषमां जेवां लक्षण होय ते पुरुषमां तेवो आचार पण होय, जेवुं रूप होय तेवुं धन पण होय, जेवो स्वभाव होय तेवो गुण पण होय ए प्रकारांतरे बत्रीश लक्षण कही देखाड्यां.

बीजां पण केटलाएक लक्षण कहे छे —पद्म, वज्र, अकुश, छत्र, शख अने मत्स्य ए जेना हाथ पगमा देखाय ते पुरुप लक्ष्मीपति थाय, तथा जेना चीकणा त्रावाना वर्ण जेवा नख होय ते पुरुप सुखी होय, तथा जेना चलकता उज्ज्वल अनारवत् स्नेह निबिड एवा बत्रीश दात पूरेपूरा होय ते राजा थाय अने जेना एकत्रीश दात होय ते भोगी थाय, तथा त्रीश दातवालो मध्यम कहेवाय अने त्रीशथी पण ओछा दात जेना होय ते सामान्य पुरुप गणाय जे पुरुप अत्यत ठींगणो तथा अत्यत लाबो तथा अत्यत जाडो होय तेमज जे अत्यत दुर्बल, अत्यत कालो अथवा अत्यत गौर वर्णवालो होय ए छ ने विपे सत्वपणु होय सर्वं सत्त्वे प्रतिष्ठितमिति वचनात् जेना मस्तकने जमणे भागे सवलो भमरो होय तो शुभ जाणवो अने अवलो भमरो होय तो अशुभ जाणवो, तथा जेना हाथने विपे एक पण रेखा न होय अथवा घणी रेखाओ होय ते पुरुपनु आयुष्य अल्प होय, तथा जेने देवपूजानी आगुलीनां छहेला वेढाथी अधिक काइक ऊची टचली आगुली होय ते पुरुप धनवान् होय, तेनी मातानो पक्ष घणो होय, तथा जेना मणीबधथी बापनी रेखा तथा करतलथी वित्तनी रेखा अने आयुष्यनी रेखा जेनी सपूर्ण होय ते पुरुपनु गोत्र, धन तथा आउखु सपूर्ण होय, अथवा आयुपनी रेखा जेटली आगुली अतिक्रमे तेटली पचवीशी आउखाना वरसनी जाणवी, तथा जेना अगुठाने मध्यभागे यव होय ते पुरुप विद्यावत यशस्वी होय अने अजवाला पक्षमा तेनो जन्म जाणवो तथा जेना नेत्र रक्त होय तेनु पासु स्त्री मूके नहीं, तथा जेना नेत्र पीला होय तेने धन मूके नहीं, तथा जेनी भुजा दीर्घ होय तेने ईश्वरपणु होय, तथा जेनु दृढ शरीर होय तेने सुख घणु होय, जेना हाथ पगने विपे कमल, छत्र, अकुश, शख, मत्स्य प्रमुख होय ते पुरुप म्होटा लक्षणवालो होय, तथा जेना नख राता होय तेने धननु

सुख घणुं होय, तथा जेना नख ऊजला होय ते भिक्षुक होय, तथा जेनां नख लुखा होय ते अनाचारी होय. वली शरीरमांहे मुख प्रधान छे, ते मुखमां वली नासिका छे ते प्रधान छे, वली नासिकामां नेत्र छे ते प्रधान छे माटे जेनां जेवां नेत्र होय तेनो तेवो शील एटले आचार पण होय तथा जेवी नासिका तेहवुं आर्यपणुं होय, जेवुं रूप होय तेवुं वित्त होय, जेवुं शीयल होय तेवा गुण होय, उक्तंच—

यथा नेत्रं तथा शीलं, यथा नासा तथाऽऽर्जवं ।
यथारूपं तथा वित्तं, यथा शीलं तथा गुणाः ॥ १ ॥

हवे व्यंजननुं स्वरूप कहे छे—जे जन्म्या पछी अंगमां प्रगट थाय तेने व्यंजन कहीए. जेमके मसो, तिल अने लसण इत्यादिक सर्व व्यंजन जाणवां, ते पुरुषने जमणी बाजुए होय तो सारां जाणवां अने स्त्रीने डाबी बाजुए होय तो सारां जाणवां, हवे गुणनुं स्वरूप कहे छे— जेमां सोभाग्यपणुं, उदारपणुं, शान्तपणुं, गंभीरपणुं अने धैर्यपणुं इत्यादिक होय ते सर्व गुण जाणवा.

हवे मानोन्माननुं स्वरूप कहे छे—पुरुष प्रमाणे पाणीथी भरेली कुंडीमां पच्चीश वर्षनां पुरुषने बेसाडवो पछी ते पुरुषना बेसवा थकी जो एक द्रोण भार पाणी कुंडीमांथी बाहेर नीकले तो ते पुरुष मानोपेत एटले प्रमाण सहित जाणवो अने जो त्राजवामां तोलतां ते पुरुषनो अर्द्ध भार प्रमाण तोल थाय तो ते उन्मानोपेत पुरुष जाणवो. इहां तोलनी वार्तांना प्रसंगमां भारनुं प्रमाण कही देखाडे छे—प्रथम छ सरसवे करी एक यव थाय, त्रण यवे एक चिणोठी थाय, त्रण चिणोठीये एक वाल थाय, सोल वाले एक गदीयाणुं थाय, दश गदीयाणे एक पल थाय, दोढसो पलनो एक मण थाय, दशमणनी एक घडी थाय, दश घडीए एक भार प्रमाण थाय, एवा अर्द्धभारे तोलाय ते पुरुष उन्मानोपेत (मान-रहित) जाणवो. ए रीते पोणा चार मण उन्मानना थाय छे.

वली जे पुरुषनुं पोताने आगले भरता पोतानु शरीर एकसो ने आठ आगलनु होय ते उत्तम पुरुष जाणवो, तेमा बार आगलनु मुख होय तेने नवे गुणीये तेवारे १०८ थाय ते मानोपेत पुरुष जाणवो तथा जेनुं छन्नु अगुलनु शरीर होय ते मध्यम (सम) पुरुष जाणवो, जेनु चोराशी आगुलनु शरीर होय ते हीन पुरुष जाणवो अने श्रीतीर्थंकरनु तो एकसो वीश आगुलनु शरीर होय केमके तीर्थंकरने माथे बार आ-गुलनी उष्णीष राखडीने ठामे होय ते माटे एवो सर्व अगे सुदर, चद्रमा समान सौम्य आकार वालो, जेनु मनोहर प्रीतिकारी दर्शन छे एवा सुरूपवत देवकुमार समान पुत्रने तु जणीश

ते बालक केवो थाशे ते कहे छे-ते पुत्र युवान अवस्था पामे थके ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ए चार वेद तथा पाचमो इतिहास पुराण शास्त्र, छट्टो नाम कोश निघटु नाम माला ए सर्व छ ए शास्त्रने अग उपाग सहित तेना तात्पर्यनो जाणवा वालो थशे, चार वेदनो भणाववा वालो थशे, जे भूलशे तेने वतावना वालो भूल देखा-डवा वालो थशे, जूठु बोलशे तेने वर्जवा वालो थशे, शुद्धनो धारण करनारो थशे, पारगामी थशे, छ अगनो जाण थशे, साठ अर्थ छे जिहा एवा सृष्टि तत्र शास्त्र तथा कपिलशास्त्रनो जाणनार थशे, गणित शास्त्रनो जाणनार थशे, अक्षर शिक्षमा निपुण थशे, क्रिया शास्त्रमां निपुण, व्याकरणनो जाणनार, छद जोडवामा दक्ष, टीकानो जाण नार, ज्योतिष शास्त्रमा प्रवीण एम बीजा पण ब्राह्मणोना शास्त्रोमा अने परिव्राजकोना शास्त्रोमा अत्यत निपुण (डाह्यो) त्हारो पुत्र थाशे माटे तमे रूडा स्वप्नां दीठा, जावत् आरोग्यकारी स्वप्ना तमने आव्या एवु वारवार केहेतो हवो अने पोते पण अनुमोदना करतो हवो

हवे देवानंदा ब्राह्मणी ऋषभदत्त ब्राह्मणना मुखथी एवा अर्थ साभलीने, तेने मनमा धारी राखीने, हर्ष सतोषयुक्त हृदय वाली थइ थकी

हाथ जोडी, दश नख भेला करी मस्तके चडावी कहेती हवी के देवाणुप्रिय ! जे ए वात जेम तमे कही ते तेमज छे, ए सत्यज छे खोटी नथी, जे तमे कहो छो ते सर्व संदेह रहित छे एवुं कहीने ते स्वप्नां रूडा प्रकारे अंगीकार करीने, ऋषभदत्त ब्राह्मणनी साथे मनोहर मनुष्य संबंधि सुख भोगवती थकी विचरे छे. ते कालने विषे शक्रेन्द्र देवताओनो राजा जेना हाथमां दैत्योने विदारण करनारुं वज्र छे जेणे पूर्वना भवमां श्रावकनी पांचमी प्रतिमा सो (१००) वार वहन करी तेणे करी शतक्रतु एवुं वीजुं नाम ते पूर्वना कार्त्तिकशेठना भवनी अपेक्षाथी छे. ते कार्त्तिक शेठनी कथा कहीये छैयें–पृथ्वीभूषण नामे नगरने विषे प्रजापाल नामे राजा हतो, ते नगरमां राजानो घणो मानीतो अने घणो धनाढ्य जैनधर्मी, परम श्रावक एवो कार्त्तिक नामा शेठ रहेतो हतो, तेणे श्रावकनी अगीआर प्रतिमा माहेली पांचमी प्रतिमा सो वार वही तेथी तेनुं शतक्रतु नाम लोकोमां प्रसिद्ध थयुं, एम करतां एक समये गैरिक नामा तापस महिने महिने पारणुं करे छे ते परिव्राजके नगरनी वाहेर आवी उतारो कर्यो राजा आदिक सर्व लोक तेने वांदवा गया पण एक कार्त्तिकशेठ शुद्ध समकिति छे माटे वांदवा गयो नहीं तेथी तेना ऊपर तापस क्रोध करवा लागो, एवामां ते तापसने राजाये पोताने घेर जमवाने नोतरुं दीधुं, तेवारे तापसे मनमां विचार्युं के वीजा तो सर्व लोक मने वांदवा आव्या पण एक कार्त्तिक शेठ जैनधर्मी छे ते मने पगे लाग्यो नथी माटे हवे तेने नमावुं एम चिंतवी राजाने कहेवा लाग्यो के राजन् ! कार्त्तिक शेठ पोतानी पीठ ऊपर खीरनी थाली राखीने भोजन करावे तो हुं तमारे घेर जमवा आवुं. ए वात राजाए कबूल करी तापसने पारणुं करवानुं कहीने, पछी राजा कार्त्तिकशेठ पासे आवीने कहेवा लाग्यो के म्हारो गुरु गैरिक नामे तापस म्हारे घेर जमवा आवशे तेने तमे पीरसवा आवजो ते सांभळी

शेठ बोल्यो के हु सम्यक्त्व धारी छु माटे म्हारे ए वात योग्य नथी पण तमारी वस्तीमा रहु छु माटे शास्त्रमा "रायाभिओगेण" ए आगार छे ते आगारे करी तमारी आज्ञाथी जमाडीश परतु म्हारा भक्तिभावे करी जमाडीश नहीं, पछी तापस जमवा आव्यो तेवारे शेठे खीर पीरसी, पण तापस जम्यो नहीं अने कहेवा लाग्यो के शेठ वांसो माडे तो पात्र मूकी भोजन करु पछी राजाना कहेवाथी शेठे आडो थइ वासो मांड्यो शेठना हाथनी अगुलीमा वींटी पहेरी हती तेमां जिन-प्रतिमा हती तेने नमस्कार कर्यो हवे तापस शेठनी पीठ ऊपर ऊनु ऊनु खीरनु पात्र मूकी भोजन करतो जाय छे अने आगुलीए करी शेठनु नाक पण घसतो जाय छे ने शेठने चेष्टामा कहेतो जाय छे के जो मुजने पगे लागवा न आव्यो तो हु आ त्हारु नाक कापु छु अने हमणा वारवार तुजने म्हारा आगल नमावु छु एम चेष्टा करतो तापस पारणु करीने पोताने स्थानके गयो अने पाछलथी गरम थाल शेठनी चामडीमा चोंटी गयो ते घणे कष्टे राजाए छोडाव्यो हवे शेठे विचार्युं के जो म्हें पहेलाज दीक्षा लीधी होत तो आज एवी हेलना थात नहीं एवु चिंतवी वैराग्य पामीने शेठ एक हजार ने आठ वणिक्‌पुत्रोनी साथे श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनी पासे दीक्षा लइ द्वादशागी भणी, वार वर्ष चारित्र पाली सौधर्मेन्द्र थयो अने गैरिक तापस पण अज्ञान तप करी मरण पामीने इद्रनु वाहन ऐरावत नामा हाथी थयो पछी ते देव हाथीनु रूप करी इद्रनी पासे आव्यो, जेवारे इद्र तेना ऊपर चढवा लाग्यो तेवारे ऐरावते देखीने अवधिज्ञाने करी जाण्यु के अरे! आ तो कार्त्तिक शेठ छे एवु जाणी नासवा माड्यो पण इद्र तेने पकडीने ऊपर चढ्यो तेवारे शक्रेन्द्रने वीवरावत्रा सारुं हाथीए बे रूप कर्या ते देखी इद्रे पण बे रूप कर्यां, वली हाथीए चार रूप कर्यां त्यारे इद्रे पण चार रूप कर्यां, पछी इद्रे अवधिज्ञानथी पूर्वनो भव जोइ, हाथीने तर्जना करी चलाव्यो

अने कह्युं के अरे गैरिक ! हवे तुं क्यां छूटी जाइश तुं पूर्वनो भव जाणतो नथी ? जे म्हारी पीठ ऊपर थाल राखी जम्यो हतो ? तो हमणा तुं म्हारुं वाहन थयो छे माटे जे बांध्या कर्म ते भोगव्या विना छूटको नथी एवुं सांभली, अपराध खमावी मूलथुं रूप धारण करीने हाथी शांत थयो ए इंद्रमहाराजना पूर्वला भव संबंधि कार्त्तिक शेठनी कथा कही.

शक्रेंद्रनी स्वाभाविक तो बे आंख्यो छे परंतु पांचशे देव ते इंद्रना काम करवा वाला छे ते पांचसो देवोनी हजार आंख्यो एना काममां आवे माटे सहस्राक्ष एवुं नाम छे, तथा महामेघ जेने वशमां छे माटे मघवा एवुं नाम छे, तथा पाक नामा दैत्यने शिक्षा दीधी माटे पाकशासन एवुं नाम छे एवो शक्रेन्द्र दक्षिणार्द्ध लोकनो ठाकुर, स्वामी, ऐरावत जेनुं वाहन छे, सुरनो इंद्र, बत्रीश लाख विमाननो मालेक, रजरहित स्वच्छ निर्मल एवो वस्त्रनो धारण करनारो, लंबायमान माला मुकुट नवा सुवर्णना कुंडल तेणे करी घसाता एवा गाल छे जेना वली म्होटी ऋद्धि, म्होटो यश, म्होटी कांति, म्होटुं महात्म्य, म्होटुं सुख, म्होटो बल लांबी पुष्पोनी माला धारण कर्याथी देदीप्यमान छे शरीर जेनुं एवो इंद्र ते सौधर्म देवलोकमां, सौधर्मावतंसक विमानमां सौधर्म नामे सभाने विषे, शक्र नामा सिंहासन ऊपर बेठो थको, बत्रीश लाख विमानोमां वसनारा देवो, चोराशी लाख समानिक देवो, तेत्रीश त्रायत्रिंसक गुरुस्थानीया देवो तथा सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए चार लोकपाल देवो, आठ अग्रमहीषी ते शोल हजार देवीना परिवार सहित, त्रण परषदा, सात कटक, सात कटकना स्वामी, प्रत्येक एकेकी दिशामां चोराशी चोराशी हजार गिणतां चार दिशामां मली त्रण लाख ने छत्रीश हजार आत्मरक्षाकारी देवो तथा बीजा पण घणा सौधर्म देवलोकना वसवा वाला देव तथा देवीओ तेमनी ऊपर

रक्षाकारी पणु, अग्रेसर पणु, नायक पणु, पोषक पणु, सर्वमा म्होटाइपणु, सर्वने पोतानी आज्ञा मनावतो थको, सेनापति पणु करतो थको, पोते पालतो थको तथा बीजाने पलावतो थको, तथा म्होटा स्वरसहित नाटक गीत, वाजित्र वीणा, करताल अने वीजा पण घणा वाजित्र जेवा के मृदग पडह प्रमुख वाजाओना शब्द तेणे करी सहित दिव्य देव सबधि भोग भोगवतो थको विचरे छे एवा समयने विषे आ प्रत्यक्ष जबूद्वीप नामा द्वीपने विस्तीर्ण एवो म्होटो अवधिज्ञान तेणे करी देखतो थको विचरे छे ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामीने ऋषभदत्तनामा ब्राह्मण कोडालगोत्रनो धणी, तेनी देवानदानामे भार्या जालधर गोत्रनी तेनी कूखने विषे गर्भ पणे उपन्या देखीने मनमा घणो आनद पाम्यो, हृदयमा घणो हर्ष पसर्यो, मेघ धाराए हणायु एवु कदब–वृक्षनु फूल तेनी पेरे रोमाञ्च विकस्वर थया, प्रधान कमलनी पेरे नयन अने वदन प्रफुल्लित थया, भगवतनु अवतरवु देखीने तेना दर्शनथी उत्पन्न थयो जे हर्ष तेना वश थकी प्रकर्षे करी चलायमान थया छे प्रधान कडा, ककण, बेरखा वाजुवध, मुकुट, कुडल, हार अने म्होटा घरेणा झुमखा प्रमुख जेना एवो इन्द्र, ते तत्काल सिंहासनथी उठी ऊभो थइने चलकतो मणिरत्ननो बाजोट ते ऊपरथी उतरीने भला वैडुर्यरत्न, मरकतरत्न, अरिष्टरत्न, अजनरत्न, तेणे करीने निपुण कारीगरे घडेली देदीप्यमान मणिरत्ने जडेली एवी पावडी (चाखडी) पगथकी उतारी, पछी अखड वस्त्रनो एगसाडी उत्तरासग करीने, वे हाथ जोडीने तीर्थंकर श्री महावीर देवने साहामो सात आठ पगला जइ पोताना विमानमाहे रह्यो थको डावो ढींचण भूमिकाने विषे थापे, थापीने लगारेक नमीने त्रण वार मस्तक धरतीये लगाडे, लगाडीने वली चोथीवार लगारेक नमीने थोडो उचो थइने कडा, ककण, बेरखा, वाजुवध, झूमणा तेणे करी सहित थभायली एवी भुजाओने सहरीने (वालीने)

दशनख भेला करी, बे हाथ जोडी मस्तके अंजली करीने शक्रस्तवनो पाठ बोल्यो—

नमस्कार होजो श्री अरिहंत भगवंत प्रत्यें, आदिनां करवा वाला. चतुर्विध श्रीसंघ रूप तीर्थना करवा वाला, श्री संघने तारवा वाला, बीजाना उपदेश विना पोतानी मेले बोध पाम्या, पुरुषोमांहे उत्तम, पुरुषोमां सिंह समान, पुरुषोमां प्रधान पुंडरीक कमल समान, पुरुषोमां गंधहस्ति समान जेम गंधहस्तीने देखी बीजा हस्ति नाशी जाय तेम श्रीतीर्थंकर भगवानने देखी परवादी रूप हाथीओ नाशी जाय एवा भगवान, लोक मांहे उत्तम, लोकनां नाथ, लोकना हित करनार, लोकमां दीपक समान, लोकने विषे उद्योत करनार; अभयदानना दातार, ज्ञान चक्षुना देवा वाला, मोक्षमार्गना दातार, कर्मथी बीक पामनारा—जीवोने शरणना दातार, संयम रूप जीवितव्यना दातार, बोधबीज जे सम्य-क्त्व तेना दातार, सर्व मरणना मटाववा वाला, धर्मना दातार, धर्म उपदेश देवावाला, धर्मना नायक, धर्ममां सारथी समान जेम सारथी रथने शुद्धमार्गमां लइ जाय तेम भगवान धर्ममार्गथी भ्रष्ट थयेला लोकोने धर्म मार्गमां लइ जाय. एना ऊपर मेघकुमारनुं दृष्टांत कहे छे—

पुत्रः श्रेणिकधारिण्योः, श्रुत्वा वीरविभोर्गिरः ।
प्रबुद्धोष्टौ प्रिया स्त्यक्त्वा, मेघो दीक्षामुपाददे ॥ १ ॥

राजगृही नगरीने विषे श्रेणिकराजानी धारिणी नामे राणीनी कूंखे मेघकुमार, पुत्रपणे ऊपन्यो, ते वखत गर्भना प्रभावे करी राणीने एवो दोहोलो उपन्यो के वर्षाकालमां आपणे राजा, तथा राणी, बेहु जण हाथी ऊपर बेशीने वनमां जइ क्रीडा करीये? ते अभय-कुमारे पूर्व भव संगति देवतानुं आराधन करीने दोहोलो संपूर्ण कर्यो, पछी नव मासे पुत्रजन्म थयो, तेनो जन्ममहोत्सव करी, स्वजन कुटुंबने जमाडी 'मेघकुमार' नाम पाड्युं, अनुक्रमे यौवन अवस्था पाम्यो,

तेवारे पिताए आठ कन्या परणावी, तेमनी साथे विषयसुख भोगवतो विचरे छे, एहवा समयमां राजगृही नगरीने विषे श्रीमहावीर समोसर्या, श्रेणिकादिक सर्वलोक वांदवा गया, तेमनी साथे मेघकुमार पण गया, त्या भगवतनी देशना सांभली, प्रतिबोध पामी, आठ कन्या त्यागी, माता पितानी आज्ञा लेइ दीक्षा लीधी पछी भगवाने पण ग्रहण, आसेवना, साधुनो आचार शीखववा निमित्ते स्थविरोने भलाव्यो रात्रीमा सथरवानी वेलाये अनुक्रमे सर्व साधुने छेडे मेघकुमार ऋषिनो संथारो आव्यो, त्यां साधु, मात्रु करवाने उठ्या, तेवारे मेघकुमारने वारवार पगनी ठोकर लागवा लागी, तेथी एक क्षण वार पण निद्रा न आवी, धूलथी भराइ गयो, आखी रात जाग्यो अने विचार कर्यो के क्या म्हारी सुखशय्या, अने क्या आ भूमिने विषे लोटवु, अने वली एक रात्रिमां केटलो उपसर्ग थयो, तो ए कदर्थना हु केटलाक काल सुधी सहन करुं, माटे ए दीक्षा म्हाराथी तो पले नही, तो हवे प्रभात समये भगवंतने पूछी हु म्हारे घेर जइश? हजी काइ वगडयु नथी एम विचारी प्रभाते ओघो, मुहपत्ती लइ, भगवत पासे आव्यो, तेवारे भगवत पण मीठा वचने बोल्या के हे मेघर्षि! आज रात्रिमा तमाराथी साधुना पग न खमाया, निद्रा न आवी, तेथी मनमा माठु ध्यान ध्यायु के हु प्रभातमा घेर जाइश ए वात सत्य छे? मेघकुमार बोल्यो हा महाराज! सत्य छे प्रभु बोल्या के मेघकुमार! ए तमने योग्य नथी जे भणी नरक तिर्यंचनां दु:खो तो जीवे अनतिवार दीठा छे तेनी आगल आ दु:ख, कोण लेखामा गणे? एवो कोण मूर्ख छे जे चक्रवर्त्तीनी ऋद्धि मूकीने दासपणुं वांछे? माटे मरवु सारुं छे पण चारित्र भग करवो सारो नथी ए चारित्रनु ज्ञान सहित कष्ट छे, ते आगळ घणा फल देनारु थाशे तथा जोके तें पूर्व भवे पण धर्मने अर्थ घणा अकाम कष्ट भोगव्या छे, ते पण महाफलादायक थया ते पूर्व भव तु साभल आ भवथी त्रीजा

भवने विषे वैताढ्य पर्वतनी पासे छ दंतोशल सहित श्वेत वर्णे एक हजार हाथणीनो नायक 'सुमेरुप्रभ' नामे तुं हस्ती हतो, त्यां एकदा दावानल लाग्यो देखी, भय पामीने त्यांथी नाठो तृषाए पीड्यो थको एक सरोवरमां कादव घणो हतो अने पाणी स्वल्प हतुं तेमां मार्गने अजाणतो पाणी पीवाने पेठो, त्यां कर्दममांहे खूतो, पाछो निकली शक्यो नहीं, एटलामां एक पूर्व भवनो वैरी बीजो हाथी त्यां आव्यो तेणे दंतोशलने प्रहारे करीने तुजने हण्यो, तेथी सात दिवस पर्यंत महा वेदना भोगवी, एकशो वीश वर्षनुं आयु पूर्ण करी, मरण पामी, विंध्याचल पर्वतनी भूमिकाए तुं चार दंतोशलवालो, रातेवर्णे सातशे हाथणीनो नायक, 'मेरुप्रभ' नामे हस्ती थयो, त्यां पण एक समये दावानल लाग्यो देखी तेने जातिस्मरण उपज्युं, तेथी पूर्वभव दीठो, पछी दावानलनो भय टालवासारुं चार गाउ लगे भूमिकानुं मांडलुं बनावी शुद्ध कीधुं; तेमां तृणवेलि मात्र राखतो हतो नहीं उगतां पहेलांज उखेडी नाखतो हतो, एम घणां वर्ष वील्या पछी, एकदा वली म्होटो जंगी दावानल लागो, तेवारे सर्व वनचर जीव, आवी मांडलामां रह्यां, तुं पण तत्काल आवी मांडलामां रह्यो, मांडलामां तिल जेटलो पण मार्ग रह्यो नहीं, एवुं संकीर्ण थयुं, एटलामां तें खरज खणवाने पग उंचो लीधो, ते पगने स्थानके निराली भूमिका देखी एक शशलो त्हारा पग नीचेनी भूमिये आवी बेठो पछी पग नीचो मूकतां नीचे शशलो दीठो एटले तुजने दया आवी तेथी पग अधर राख्यो, अढी दिवसे दावानल उपशम्यो, तेवारे शशला प्रमुख सर्व जीव, पोत पोताने स्थानके गयां, त्हारो पग लोहीये भराणो तेने नीचो मूकतो थको पर्वतना कूटनी पेरे तुं हेठो पड्यो. त्रण दिवस सुधी भुखतृषाए पीडातो सो वर्षनुं आयु भोगवी दया सहित मरण पामी, हे मेघकुमार! तमे राजकुले उपन्या छो. अकाले मेघवृष्टिनो दोहोलो त्हारी माताने

थयो माटे त्हारुं नाम मेघकुमार स्थाप्युं, जे वखते तुजने हाथियोए मार्यो, ते वखते तो तिर्यंचनु करेलुं दुःख हतु, तो ते दुःख आगल आ साधुना संघट्टथी तु शुं दुःख धरे छे ? ते साधु तो जगद्वंद्य छे, एमना चरणनी रज तो पुण्यवान् जीवने लागे माटे साधुना पग लागवाथी दुःख न आणवु एवा भगवानना वचन सांभली जातिस्मरण उपन्यु, तेणे करी पूर्वला भव दीठा, पछी प्रभुने पगे लागी चारित्रने विषे स्थिर थइने एवो अभिग्रह लीधो के आज पछी म्हारे बे नेत्रनो जापतो राखवो माटे ते टालीने बीजा शरीरनी शुश्रूषा, गमे तेवु संकट पडे तो पण न करवी एवो जावज्जीव सुधीनो अभिग्रह करी, निरतिचार पणे शुद्ध चारित्र पाली, अंते एक मासनी संलेषणा करी विजयनामा अनुत्तर विमानमा देवपणे उपन्यो, त्याथी चवी महाविदेह क्षेत्रमा उपजी मोक्ष पामशे, माटे भगवंतने धर्मसारथि सरखा कहिये ।

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते—
श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे प्रथम व्याख्यान समाप्तम् ।



अथ द्वितीय व्याख्यान प्रारंभ ।

इन्द्र नमस्कार करे छे—

धर्ममा चार अंत कर्या एवा चक्रवर्त्ति समान भगवान छे जेम चक्रवर्त्ति त्रण बाजु समुद्र अने एक बाजु चुल्लहेमवंत पर्वत पर्यंत राज्य करे तेम भगवान दानादि चार प्रकारनो धर्म प्ररूपे माटे धर्म चक्रवर्त्ति कहीये, संसार समुद्रमा डूबता प्राणीओने द्वीप समान शरणागत वत्सल, क्याय हणाय नहीं एवा ज्ञान अने दर्शनना धरवावाला, जेमने छद्मस्थ पणु रह्यु नथी, पोते राग द्वेषने जीत्या, बीजाने जीतावे, पोते संसार समुद्रथकी तर्या, बीजाने संसार समुद्रथी तारे, पोते तत्त्वने जाण्या छे,

वीजाने तत्त्वनो बोध करे, पोते कर्म रहित थया, बीजाने कर्मथी मूकावे, सर्वज्ञ सर्वदर्शी, शिव एटले निरूपद्रव, अचल, रोग रहित, जेनो अंत नहीं अने क्षय पण नहीं, बाधा रहित, ज्यांथी फरी पाछुं संसारमां आववुं नथी एवुं जे सिद्धिगति नामक स्थानक तेने पाम्या एवा जिनेश्वरने म्हारो नमस्कार होजो, जीत्या छे भय जेमणे एवा भगवंतने नमस्कार हो, श्रमण भगवंत श्री महावीर छेला तीर्थंकर, आदिना करनार पहेला तीर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामीए देखाड्या यावत् मोक्षमां जावावाला तेमने हुं वांदुं छुं; भगवान तो त्यां गर्भमां छे अने हुं देवलोकमां छुं माटे त्यां रह्यां थकां आपे मने देखवो एवुं कहीने भगवानने नमस्कार[1] करे, करीने सिंहासन ऊपर पूर्वदिशानी स्हामुं मुख करीने बेठो तेवारे शक्रेंद्रनां मनमां एवो विचार उत्पन्न थयो—

श्रीअरिहंत भगवंत, अथवा चक्रवर्ति, अथवा वासुदेव, अथवा बलदेव आदि उत्तम पुरुष छे, ते अंतकुल जे क्षुद्रजाति तेने विषे, तथा प्रांतकुल ते अधमाचारीना कुलने विषे, तथा अल्प परिवारवाला तुच्छ कुलने विषे, तथा निर्धन ते दरिद्रीना कुलने विषे, तथा अदातार ते कृपणनां कुलने विषे, तथा चारण प्रमुख भीखारीना कुलने विषे, तथा ब्राह्मणना कुलने विषे आव्या, आवे अने आवशे. निश्चयथी ए वात पूर्वे थइ नथी, वर्तमान काले थाती नथी अने आगामिक काले थाशे पण नहीं एटले ए शिलाका पुरुष तो निश्चे थकी पूर्वोक्त अंत कुलादिकने विषे आव्या पण नथी, आवता पण नथी अने आवशे पण नहीं ए पूर्वो-

---

१ एम सर्वे तीर्थंकरोना एक चवन कल्याणक, बीजुं जन्मकल्याणक त्रीजुं दीक्षा कल्याणक, चोथुं ज्ञानकल्याणक, अने पांचमुं निर्वाणकल्याणक, ए पांच कल्याणकें सदा कालें शक्रस्तव कहे एटले शक्र ते इंद्र ते स्तव एटले थुणे माटे तेने शक्रस्तव कहीये । ते इंद्र महाराज शक्रस्तव कहीने रोमांचित थाय, आनंद पामे, वली ए पांच कल्याणके चोशठे इंद्र भेला थइने अठाइ महोत्सव प्रमुख करीने प्रत्येक कल्याणकनो महिमां करे एवी सदा शाश्वत मर्यादा छे.

क अरिहंतादिक शिलाका पुरुष तो, निश्चय थकी श्रीऋषभदेव- जीये आरक्षक पणे जेने राख्या तेने उग्रकुल कहीये ते कुलने विषे, तथा जेने गुरुस्थानीया पणे राख्या तेने भोगकुल कहीये तेने विषे, तथा जेने मित्रस्थाने राख्या तेने राजन्य कुल कहीये तेने विषे, तथा प्रजा लोक- पणे थाप्या तेने क्षत्रियकुल कहीये तेने विषे, तथा इक्ष्वाकु कुलने विषे, तथा हरिवर्ष क्षेत्रना युगलीयानो जे परिवार तेने हरिवंश कुल कहीये एवा बीजा पण तथा प्रकारना विशुद्ध जातिना उत्तम कुलने विषे आ- व्या छे, आवे छे अने आवशे, ए मर्यादा छे तथापि ए श्रीमहावीर स्वामी ब्राह्मणना कुलमा आवी उपन्या ए लोकने विषे अच्छेराभूत वात थइ एटले अनती उत्सर्प्पिणी अने अवसर्प्पिणी जेवारे व्यतिक्रमे तेवारे कोइक काले एवा अच्छेरा थाय छे तेम आ अवसर्प्पिणीमा पण एवा दश अच्छेरा एटले आश्चर्यकारी वातो थयेली छे एम इन्द्र महा- राज विचारे छे

हवे अवसर्प्पिणीने विषे जे दश अच्छेरा थया ते वखाणे छे—त्या प्रथम कोइ तीर्थंकरने केवलज्ञान उपन्या पछी उपसर्ग थाय नहीं अने श्रीमहावीर देवने केवलज्ञान उपन्या पछी गोशालाए उपसर्ग कर्यो, ते आवी रीते एकदा भगवत श्रीमहावीर स्वामी विहार करतां सावत्थी नगरीये समोसर्या, तेवारे गोशालो पण, हु तीर्थंकर छु एम लोकोमां कहेतो थको सावत्थीमा आव्यो, ते समये गौतमस्वामी गोचरीये गया त्या लोकोना मुखथकी एवु साभल्यु के आज नगरीमा एक महावीर- स्वामी अने बीजो गोशालो, ए बे तीर्थंकर आव्या छे पछी सशयवंत थइने श्रीगौतम स्वामीये भगवत पासे आवीने गोशालानी उत्पत्ति पूछी तेवारे प्रभुये कह्युं के शरवण ग्रामनो रेवासी मखली भरडानी जाति शनिश्चरनो दान लेनारो तेनी सुभद्रा स्त्रीनो ए पुत्र छे, ब्राह्मणनी गाय- नी शालामा जन्म्यो तेथी मातापिताये 'गोशालो' नाम पाड्यु छे. ए

भिक्षा मागतो हतो ते आवीने म्हारो शिष्य थयो, छद्मस्थावस्थामां म्हारी साथे छद्मस्थ पणे छ वरस रह्यो हतो, म्हारी पासेथी भणीने कांइएक बहुश्रुत थयो छे, तेजोलेश्या पण शीख्यो छे, बीजुं वली दिशाचरो पासेथी निमित्तविद्या शीखीने ए मिथ्या जिननाम धरावे छे, परंतु ए तीर्थंकर नथी, एवी वात प्रभु पासेथी सांभलीने श्रीगौतमस्वामीए बीजा घणा लोको पासे वात करी, के गोशालो मंखली पुत्र छे, ते वात गोशालाने काने गइ, तेवारे गोशालो क्रोधायमान थयो. एवा समये भगवंतनो आनंदनामा शिष्य गोचरीये गयो तेने गोशाले बोलावीने कह्युं के हे आनंद ! तने एक दृष्टांत कहुं ते सांभलो, "कोइएक चार वाणीया व्यापार करवाने अर्थे विविध प्रकारनां करियाणानां गाडां भरी परदेशे चाल्या मार्गमां कोइएक म्होटी अटवीमां पेठा, त्यां तृषा लागी तेथी उज्जाडमां पाणीनी गवेषणा करतां पाणी तो क्यांय दीठुं नहीं पण चार वाल्मिक एटले उदेहीनां शिखर (ढीम) दीठां अने तेना ऊपर नीलां वृक्ष उगेलां दीठां, तेथी जाण्युं के अहीआं अवश्य पाणी हशे ? एवुं जाणी शिखर फोडयुं तेमांथी घणुं निर्मल शीतल जल नीकल्युं, ते सर्वजनोये पीने तृषा भांजी, वली बीजा वासणोमां पण पाणी भरी लीधुं, पछी बीजुं शिखर भांगवा मांडयुं, तेवारे तेमांथी एक वृद्ध वाणीयो बोल्यो के आपणुं काम थयुं, माटे हवे बीजुं शिखर फोडशो मा; एम वार्या थका पण तेओए बीजुं शिखर फोडयुं, तेमांथी सोनुं नीकल्युं, तेवारे लोभ लागो तेथी जो पण वृद्धें वर्ज्या तो पण त्रीजुं शिखर फोडयुं, तेमांथी रत्न नीकल्या वली वृद्धे घणो वार्या तो पण चोथुं शिखर फोडयुं, ते मांहेथी महा विकराल भयंकर दृष्टिविष सर्प नीकल्यो, ते सर्पें दृष्टिविषे करी सूर्य स्हामुं जोइने सर्वने बाली भस्म कीधा, एक सुशिक्षाना आपनार वृद्धने दया आणी जीवतो मूक्यो, ए दृष्टांते त्हारा धर्माचार्यने एटली संपदा प्राप्त थइ तो पण

असतुष्ट थको म्हारो अपवाद लोको आगल बोलीने मने रोषवत करे छे तेथी हु त्या आवी म्हारा तेजथी सर्वने बाली भस्म करीश, माटे तु उतावलो जईने त्हारा धर्मचार्यने कहेजे, हु वृद्धवाणीयानी पेरे मात्र एक तनेज जीवतो मूकीश, ए वात साभली आनदमुनि भयभ्रात थयो थको भगवत पासे आवीने गोशालाना सर्व समाचार कह्या, तेवारे भगवते कह्यु के आनद ! तमे गौतम प्रमुख सर्व साधुओने कहजो के अहींआ म्हारो कुशिष्य गोशालो आवशे, ते उपसर्ग करशे माटे तमे कोइ पण तेनी साथे भाषण करशो मा, जो बोलशो तो बाली भस्म करशे तेथी अरहा परहा टली रहेजो ते साभली सर्व साधुओ एकाते बेशी रह्या, तथापि सर्वानुभूति अने सुनक्षत्र ए बे साधु, भगवत पासेज रह्या, एटलामा गोशालो आवीने भगवानने कहेवा लाग्यो के हे काश्यप ! तु कहे छे जे म्हारो शिष्य गोशालो छे ते खरी वात छे पण त्हारो शिष्य जे गोशालो हतो ते तो मरण पाम्यो अने हु तो बीजो छु मात्र ते गोशालानु शरीर परीषह सहन करवा सरखु हतु माटे में तेना शरीरमा प्रवेश करेल छे ते साभली भगवान बोल्या के अरे गोशाला ! कोइ चोर चोरी करी नाठो होय तेनी पछवाडे वार चढी होय ते जोइने पहेलो चोर नाशी जवाने असमर्थ छतो एक तरणु लइने पोताने ढाकवा सारुं आडु आपे अने मनमा जाणे के हवे मने कोइ देखी शकशे नहीं तेथी शु ते छानो रही जाशे ! तेम तु पण म्हारी आगल केवी रीते छिप्यो रहीश तु तेहज म्हारो शिष्य गोशालो छे ! एवु साभली गोशालो रोष आणीने भगवानने कहेवा लागो के अरे ! तु जीवतो रहीश त्यासुधी मने सुख थाशे नहीं एवा तेना तुच्छ बोल साभलीने सुनक्षत्र मुनि बोल्या के अरे गोशाला ! तु पोताना गुरुने सामुं बोले छे एतो तु ससारमा अनता भव भ्रमण करवानु काम करे छे एटलु बोल्यो तेटलामा गोशालाये तेना उपर तेजोलेश्या न्हाखी तेथी

ते मुनि वली भस्म थइ गयो. फरी पण भगवानने गोशालो कडवां वचन कहेवा लाग्यो तेवारे सर्वानुभूति मुनि बोल्या तो तेने पण तेजोलेश्याये करी वाली भस्म कीधो ते बन्ने साधु मरण पामीने देवलोकमां गया. हवे भगवाने गोशालाने कह्युं के तुं चोरनी पेठे कां छिपतो रहेशे तेवारे भगवान उपर पण तेजोलेश्या मूकी ते तेजोलेश्या भगवानने त्रण प्रदक्षिणा आपीने पाछी गोशालाना शरीरमां पेठी तेथी गोशालो दाझ्यो, तेना ताप थकी सात रात्रि सुधी विविध वेदना भोगवीने गोशालो मरण पाम्यो अने तेजोलेश्याना तापथी भगवाननां शरीरे वेदना थवा लागी, छ महीना सुधी लोहीठाण थयो, रेवती श्राविकानां घेरथी बीजोरापाक सिंह अणगार पासे मगावी भगवंते खाधो, तेथी शरीरे शाता थइ. एवी रीते जेनो नाम मात्र लीधाथी पण सर्व उपद्रव मटी जाय तेमने पण महा पीडा थइ एम तीर्थंकरने जिनपद लह्या पछी एटले केवलज्ञान उपन्या पछी उपसर्ग न थाय, ते थयो ए प्रथम आश्चर्य जाणवुं.

हवे बीजुं अच्छरुं जे आ वर्त्तमान चोवीशीमां श्रीमल्लीनाथ ओगणीशमा तीर्थंकर स्त्रीदेवपणे उपन्या, तेनो संबंध कहे छे—आ जंबूद्वीपना श्री महाविदेह क्षेत्रने विषे सलिलावती विजयमां वीतशोका नामे नगरीनो बल नामे राजा तेने धारिणी नामे स्त्री छे, तेनो महाबल नामे पुत्र छे, ते यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारे राजाये तेने पांचसो स्त्री परणावी, पछी वृद्धावस्थाये पुत्रने राज्य आपी, पोते दीक्षा लइ, चारित्र पाली मोक्षे पोहोतो, हवे महाबल राजा राज्य करे छे, तेने एक अचल, बीजो धरण, त्रीजो अभिचंद्र, चोथो पूर्ण, पांचमो वसु, छठो वैश्रमण, ए छ मित्र हता. एकदा ते साते जणे गुरु पासे धर्म सांभली दीक्षा लीधी, अगीआर अंग भण्यां अने ते साते जणे मांहोमांहे एवो संकेत कर्यो के आपण सर्व जणाए छठ्ठ अठ्ठमादिक जे तप करवुं ते सरखुं

बराबर करवु पण एक बीजाथी अधिकन्यून तप कोइए करवु नहीं ते प्रमाणे ते साते जण सरखु तप करे, तेमा एक दिवस महाबल ऋषिना मनमां एवो विचार थयो के हु एनाथी काइ अधिक तप करु के जे थकी हु ए सर्वथी अधिक थाउ एवो निश्चय करी, कपट थकी ते छ जणथी छानो " जेवारे पारणुं करवानो दिवस आवे तेवारे छ जणने एम कहे के म्हारु तो माथुं दु खे छे, हु आज पारणु करीश नहीं तमे सुखे पारणु करो बीजे दिवसे वली तेमना सरखु तप करे " ए प्रमाणे कपट थकी वीशस्थानकतप कर्युं तेथी तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्युं, परतु कपटने लीधे स्त्रीपणानु कर्म बाध्यु छेवट साते जणा बे मासनी सलेषणा करी चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पाळी मरण पामीने बत्रीश सागरोपमने आउखे विजयंतनामा अनुत्तर विमाने जइ उपन्या, पछी त्याथी चवी एक अचलनो जीव तो अयोध्यानो 'सुप्रतिबद्ध' नामे राजा थयो, बीजो धरणनो जीव, चंपानगरीए 'चद्रयशा' नामे राजा थयो, त्रीजो अभिचद्रनो जीव, काशी नगरीए 'शंख' नामे राजा थयो, चोथो पूरणनो जीव, सावत्थी नगरीए 'रुक्मि' नामे राजा थयो, पांचमो वसुनो जीव कुरुदेशे 'अदीनशत्रु' नामे राजा थयो, छट्ठो वैश्रमणनो जीव कांपिला नगरीए 'जितशत्रु' नामे राजा थयो, अने सातमो महाबलनो जीव मिथिला नगरीए 'कुभ' राजा तेनी प्रभावती राणीनी कूखे आवी 'मल्ली कुमरी' पणे उपन्यो, तेवारे माताए चौदसुपना दीठां, आशु शुदि अगीआरशे पुत्रीपणे जन्म्या अनुक्रमे यौवन अवस्था प्राप्त थइ, पछी अवधिज्ञाने करी पोताना छ मित्र, जूदे जूदे ठेकाणे उपन्या देखी, तेओने प्रतिबोध करवाने अर्थे अशोकवाडीमा रत्नजटित घर कराव्यु, तेना छ बारणा कराव्यां, तेमा पोताना रूप सरखी रत्नजटित सोनानी एक पूतली करावी, हवे मल्लीकुमरी जेवारे भोजन करे, तेवारे ते रत्ननी पूतळीने माथे बारणु कराव्यु छे ते बारणानी उपरथी एकेको कवल न्हा-

खती जाय अने फरी पाछुं ढांकणुं लगावी दीये, एम नित्य करती जाय.

एकदा अयोध्या नगरीना सुप्रतिबद्ध राजाए यक्षने देरे पूजा रचावी छे, त्यां फूलनी माला देखीने दूतने पूछ्युं के तमे एवो फूलनो श्रीदाम क्यांहिं पण दीठो छे ? तेवारे दूत बोल्यो के राजन् ! मल्लीकुमरी घणी चतुर छे घणी रूपवती छे, ते जेवो फूलनो श्रीदाम बनावे छे तेहना लाखमां अंशे पण ए श्रीदाम नथी. हवे पूर्वभवना प्रेमथकी सुप्रतिबद्ध राजाए मल्लीकुमरीनी याचना करवाने कुंभराजा ऊपर दूत मोकल्यो अने कहेवराव्युं के तमारी बेटी मुजने परणावो इति प्रथम दूत. (१) तेवार पछी चंपानगरीना अरहन्नक प्रमुख व्यवहारिया प्रवहण भरी गंभीरपत्तने (द्वीपांतरे) चाल्या, एवा समयमां इंद्र महाराज अरहन्नक श्रावकनी प्रशंसा पोतानी सभाने विषे करवा लाग्या के 'धन्य छे अरहन्नकने, आज भरतक्षेत्रमां एना समान बीजो कोइ दृढ श्रावक नथी ?' ते इंद्रना वचनने कोइएक मिथ्यात्वी देवता अण सद्दहतो थको त्यां अरहन्नक पासे आवीने, ते देवताए समुद्रमां म्होटो उत्पात कर्यो ते जोई अरहन्नक तो सागारी अणशण करीने निश्चल मने श्रीवीतराग देवनुं स्मरण करवा लाग्यो, तेने देवताए घणोए चलाव्यो अने एवुं कह्युं के तुं श्रीवीतराग देवनुं स्मरण मूकीने हरि हरादिक देवोनुं स्मरण कर, तो उपसर्ग निवारण करूं, नहींतर त्हारां जहाज समुद्र मध्ये बूडावी दइश, एम कही जहाज समुद्रमां बूडाववा लाग्यो, ते जोइ सर्व लोक एकठा मली अरहन्नकने कहेवा लाग्या के देवताए कह्युं तेम करो, तो पण अरहन्नक श्रावकनुं समकित दृढ छे, तेथी चलायमान न थयो, ते जोइने देवता तुष्टमान थइ कुंडलाभरणनो जोडो आपी, अर्हन्नकने पगे लागीने कह्युं के अहो अर्हन्नक ! तमोने धन्य छे, हे कृत पुण्य ! तमारुं जीवितव्य सफल छे, तमोने इंद्र महाराजे सभा समक्ष वखाण्या ते अणमानता में तमारो अपराध कर्यो, ते म्हारो अपराध

तमे समजो, ते सांभली अर्हन्नक बोल्यो के आ लोक अने परलोकनु साधन एवो श्रीजिनधर्म पामीने बीजो धर्म हु अगीकार न करू, तेवारे देवताए फरी बे कुंडल आप्यां, अने पोताने स्थानके गयो, पछी ते व्यावहारीयो कुशलक्षेमे गभीरपत्तने गयो त्या व्यापार करी, फरी मिथिला नगरीए आव्यो तेवारे देवताए आपेला चार कुडलमांथी राजाने बे कुडल आप्यां, ते राजाए मल्लीकुमरीने दीधा, पछी व्यापारीए पोतानी चपानगरीये आवी, त्यां चपानगरीना राजाने बाकी रहेला बे कुडल आप्या. राजाए पूछ्यु के हे व्यवहारीया ! तमे परदेशमा कोई तमासो दीठो ? ते सांभली व्यवहारीयो बोल्यो के अमे मल्लीकुमरीनु रूप अद्भुत दीठुं, एवुं रूप बीजे क्याहि पण दीठु नथी, पछी चद्रयशा राजाए पण कुभ राजा पासे दूत मोकलीने कहेवराव्यु के तमारी पुत्री मल्लीकुमरी मुजने परणावजो इति द्वितीयदूत (२)

एक दिवसे मल्लीकुमरीना बे कुडल त्रूटी गयां. तेवारे कुभराजाए सोनीओने बोलावीने कह्यु के आ कुडलनो जोडो साधी आपो, तेवारे सोनी कुडल जोइने बोल्या के महाराज ! ए संधाय नहीं एतो देवताना कुडल छे, ते अमे केवीरीते सांधिए ? तेथी राजाए सर्व सोनीओने देशनिकालो दीधो, ते सोनी वाणारसी नगरीए गया, तेवारे त्यांना शखराजाए पूछ्यु के तमे देश केम छोड्यो ? सोनी बोल्या के महाराज ! मल्लीकुमरीना कुडल देवता सबधी छे, ते अमारा थकी सधाणा नहीं, तेथी देश छोडवो पड्यो छे अने मल्लीकुमरीना रूपनु वर्णन कर्युं, तवारे वाणारसीना राजाए पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थे कुभराजाना पासे दूत मोकल्यो इति तृतीयदूत (३)

हवे रुक्मी राजाए पोतानी पुत्रीने चार महीना सुधी पीठी करावीने अने अलकार पहेरावीने दूतने पूछ्यु के हे दूत ! तें आवु रूप क्याही पण दीठु छे ? तेवारे दूत बोल्यो के मल्लीकुमरीना लाखमा अशे पण ए रूप नथी, ते

सांभली रुक्मी राजाए पण कुंभराजा ऊपर दूत मोकली, मल्लीकुमरीनी याचना करावी इति चतुर्थदूत. (४)

कुंभराजानो पुत्र छे, तेणे पोतानी चित्रशाला चित्रावी, त्यां चितारे मल्लीकुमरीनो अंगुठो दीठो, तेथी मल्लीकुमरीना सर्व अंगनुं स्वरूप चित्री काढयुं, हवे एकदा मल्लीकुमरीना भाईए क्रीडा करतां मल्लीकुमरीनुं रूप चित्रशालामां जोयुं, तेने रीश चढी तेथी चिताराना हाथनो अंगुठो कापीने काहाढी मूक्यो, चितारो हस्तिनापुरे अदीनशत्रु राजाने मल्यो, त्यां मल्लीकुमरीनुं रूप वर्णन कर्युं, ते सांभली तेणे पण मल्लीकुमरीनी याचना करवा कुंभराजाने पासे दूत मोकल्यो, इति पंचम दूत. (५) एक दिवस धर्मचर्चा करतां एक परिव्राजिकाने मल्लीकुमरीए जीती, मानभ्रष्ट करी, तेथी ते रीषाणीथकी कपिलानगरीए जइ जितशत्रुराजाना मुख आगल मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कर्युं, तेणे पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थे कुंभराजा ऊपर दूत मोकल्यो इति षष्ठदूत. (६)

ए रीते छ दूत कुंभराजा पासे समकाले आव्या, कुंभराजाए सर्व दूतोने कह्युं के हुं म्हारी कन्या कोईने आपवानो नथी, एवी रीते अपमान करी काढी मूक्या, पछी ते छए राजाओ पोतपोतानुं लश्कर लइने समकाले आवी मिथिला नगरीने वींटी लीधी, कुंभराजाए पण बाहिर आवी युद्ध करवा मांडयुं, युद्ध करतां हार्यो अने पाछो नगरीमां पेठो, तेवारे मल्लीकुमरीए छए राजाओने कहेवराव्युं के तमे म्हारा रत्नघरमां आवजो, पछी ते छए राजा छ बारणामांथी जूदा जूदा आव्या, मल्लीकुमरीनी मूर्त्ति देखी व्यामोह पाम्या, एटलामां मल्लीकुमरीए आवीने ते पूतलीना माथा ऊपरथी ढांकणुं उघाडयुं तेवारे ते सडी गयेला अनाजमां कीडा पड्या हता ते मांहेथी दुर्गंध नीकल्यो एटले सर्व जणे मोढा पासे लूगडुं आपी थुथुकार कीधो अने दुःखी थवा लाग्या. तेवारे मल्लीकुमरी बोल्यां के भद्रो ! आ रत्नमय पूतली छतां नित्यप्रत्ये एक

कवल आहारना सयोगथी एवी दुर्गंध (वास) आपे छे, तो म्हारा शरी रमा तो नित्यप्रत्ये शेर धान्य पडे छे तेथी मलमूत्रनो भंडारज छे. तेमां तमे शु रागाध थया छो ? एवो प्रतिबोध करीने पछी पूर्वला भव सभलाव्या, तेथी ते छए राजाने जातिस्मरण ज्ञान उपन्यु, पूर्वभव दीठा पछी ते छए कहेवा लाग्या के हवे अमने तारो, तेवारे मल्लीकुम रीए कह्यु के हमणां तो तमे घेर जाओ, जेवारे मने केवलज्ञान उपजे, तेवारे तमे आवजो, हु तमोने दीक्षा आपीश, पछी ते छए राजा पोत-पोताने स्थानके गया, मल्लीकुमरीए पण सवत्सरी दान आपीने त्रणसो राजपुत्र साथे मार्गशिरशुदि अगीआरशने दिने दीक्षा लीधी, तेज दिवसे केवलज्ञान उपन्यु, पछी ते छए मित्रे आवी श्रीमल्लिनाथ पासे दीक्षा लीधी, ते छएने गणधर कर्या ते तेहज भवे मोक्ष गया, ए श्री मल्लीनाथ स्त्रीवेदे ओगणीशमा तीर्थंकर थया, तेमना समोसरणमा स्त्रीनी परपदा आगल बेसती हती अने पुरुपनी परपदा पाछल बेसती हती. स्त्रीवेदे कोई तीर्थंकर थाय नहीं ते थयु ए बीजु अच्छेरूं जाणवु.

त्रीजु कोइ तीर्थंकरने गर्भपालटो थयो नथी, ते अहीं श्री महा वीर स्वामीने व्याशी रात्रि पछी देवानदानी कूखथी हरणिगमेषी देव-ताए अपहरीने त्रिशला क्षत्रियाणीनी कूख मांहे मूक्या अने त्रिशलानी कूखे पुत्री हती, ते महाणकुडनगरे देवानदानी कूखे मूकी. तेवु कोइवारे थाय नहीं, माटे ए त्रीजु गर्भपालटन आश्चर्य जाणवु चोथु श्रीवीर भगवानने जेवारे केवलज्ञान उपन्यु, तेवारे देवताए मली समोसरणनी रचना कीधी, त्या घणी म्होटी परपदा भेली थइ, तेवारे भगवाने धर्म देशना दीधी, परतु प्रभुनी देशना सांभलीने कोई समकेत पाम्यो नहीं, तेमज व्रत पच्चक्खाण पण कोइये लीधा नहीं ए रीते देशना निष्फल गई, एम तीर्थंकरनी देशना कोइ वखते खाली न जाय ते खाली गइ, माटे ए चोथु आश्चर्य जाणवु

पांचमुं जे एक द्वीपनो वासुदेव होय ते बीजे द्वीपे जाय नहीं, श्रीकृष्णजी द्रौपदी लाववाने अर्थे धातकीखंडे गया तेमज कपिल वासुदेवनो शंख अने श्रीकृष्ण वासुदेवनो शंख ए बे शंखेशंख मल्या ते पण कोइवारे मले नहीं माटे आश्चर्य जाणवुं. तेनी कथा कहे छेः— कांपिल्यपुर नगरमां द्रुपदराजानी चुलणी पटराणीनी कूंखे द्रौपदी नामे पुत्री थइ तेना विवाह सारुं स्वयंवर मंडप मांड्यो, सर्व देशोना राजा तेडाव्या, हस्तिनागपुरथी पोताना युधिष्ठिरादिक पांच पुत्रने तेडी पांडुराजा पण आव्यो, अर्जुने राधावेध साध्यो तेवारे द्रौपदीए अर्जुनना गलामां वरमाला न्हांखी, ते वरमाला पूर्वभवमां द्रौपदीए पांच भरतारनो नियाणो कर्यो हतो तेना प्रभावथी पांचे पांडवोना गलामां जइ पडी; पूर्वला भवमां द्रौपदीनो जीव नागिला नामे ब्राह्मणी हती, तेणे एक दिवस धर्मरुचि मुनिने कडवी तुंबडीनुं शाक वोहोराव्युं ते मुनिए अनशन करी खाधुं, तेनां योगथी मुनि मरण पाम्या. पछी 'नागिला साधुनी घात करनारी छे' एवुं आचार्यें साधुओने गाममां मोकली कहेवराव्युं, तेवारे ब्राह्मणे नागिलाने घरमांथी काहाडी मूकी, ते भमती भमती मरण पामीने नरके गइ, त्यांथी चवी अनेक तिर्यंचादिकना भव करी एक शेठने घेर घणी स्वरूपवाली सुकुमालिका नामे पुत्रीपणे उपनी. तेने तेज गाममां एक बीजा शेठना दीकराने परणावी ते रात्रे सुवा गयो त्यां सुकुमालिकानो स्पर्श थतांज तत्काल तेने दाहज्वर चढ्यो तेथी ते पडती मूकी चाल्यो गयो, पाछलथी सुकुमालिकाने शोक करती जोइने तेना बापे एक भिक्षुकने परणावी ते पण तेमज मूकी भागी गयो; पछी सुकुमालिका दुःखगर्भित वैराग्य पामीने साध्वी थइ, तेने गुरुणीए नाकारो कर्यो तो पण ते वनमां तप करवा गइ, त्यां एक वेश्याने पांच पुरुष हाजरीमां रह्या छे तेने जोइने सुकुमालिकाए "म्हारा तपनो प्रभाव होय तो आगला भवमां मुजने पण पांच भरतार होजो" एवुं नियाणुं कर्युं. अंते अनशन करी ईशान देवलोके

गइ, त्याथी चवीने अहीं द्रौपदी थयेली छे ते पूर्वकृत नियाणाना योगे वरमाला पाच जणाना कंठमा पडी, देवोए आकाशथी एवी वाणी करी के द्रौपदी पाच भरतारी छता पण सती छे, पांच पांडव द्रौपदीने परणी हस्तिनागपुरमां आव्या त्या सुखे रहे छे, एक दिवस जेनी मुखाकृति सौम्य छे, परतु मनमा कपट घणु राखे छे, वल्कल चीर पहेरे छे, काला मृगना चामडानो उत्तरासग करेलो छे, जेनो जटाजूट महाकाति वालो छे, जे कलह कोलाहलनो लगाडनार छे, एवो नारद ऋषि आकाशमार्गथी ते पाडुराजानी सभामा आव्यो, तेवारे पाडवो सहित सर्व सभाजनोए ऊभा थइने आदर सन्मान आप्यु, परंतु ते नारद जेवारे द्रौपदीने जोवा गयो तेवारे द्रौपदीए तेने असयती जाणी वाद्यो पूज्यो नहीं, तेम उठीने ऊभी पण थइ नहीं, अने बोलाव्यो पण नहीं, तेथी नारदने रीष चढी अने विचार करवा लाग्यो के आ द्रौपदी पाच भरतार पामीने मस्त थइ गइ छे, तेथी गर्वित थकी बेठी छे तो हवे हु एने सकटमा न्हांखु एम चिंतवी, धातकीखडना पूर्व भरतक्षेत्रमां अमरकका नामे नगरी छे त्यां कपिलवासुदेवनो सेवक पद्मनाभ नामे राजा राज्य करे छे, ते राजा पोतानी सातसे (७००) राणीओ साथे वाडीमा रमतो हतो तेवा समयमां नारद पण त्या गयो, तेने पद्मनाभ राजाए वांदीने पूछ्यु के कहो नारदजी ! म्हारो जेवो अतेउर छे तेवो अतेउर बीजे क्यां तमे जोयो छे ? तेवारे नारदजीए जाण्यु के आ स्त्रियोनो लोलुपी छे एम जाणी अवसर जोइने नारदजी कहेवा लाग्या, के—

राजन् ! तु कूवानां देडका सरखो देखाय छे, जेम कोइएक समुद्रनो देडको कूवाना देडकानी पासे आव्यो, तेवारे तेने कूवाना देडकाए पूछ्यु के तुं क्या रहे छे अने क्याथी आव्यो छे ? तेणे कह्यु के हु समुद्रमा रहु छु अने त्याथीज आव्यो छु तेवारे कूवाना देडकाए पूछ्यु के त्हारो समुद्र केटलो म्होटो छे ? तेणे कह्यु घणो म्होटो छे,

तेवारे कूवानो देडको हाथ पग पसारीने बोल्यो के आटलो म्होटो छे? समुद्रना देडकाए कह्युं एथी तो घणोज म्होटो छे, तेवारे कूवानो देडको पोताना कूवानी चारे बाजुए कूदका मारीने बोल्यो के आटलो म्होटो छे? तो पण तेणे कह्युं के एनाथी तो घणो घणो म्होटो छे, तेवारे कूवानो देडको रोष आणीने बोल्यो के अरे असत्यवादिन्! तुं इहांथी दूर जा, म्हारी फालथी पण वली कोइ म्होटो हशे? माटे तुं जुठुं बोले छे, तेम हे राजन्! तें पण कूवाना देडकानी पेरे आटलीज स्त्रीयो दीठी छे तेथी एनाज वखाण करे छे, परंतु पांच पांडवनी स्त्री द्रौपदी एवी छे के तेना एक अंगुठाना नखाग्रना रूप सरखुं पण त्हारी कोइ राणीनुं रूप नथी, त्रण लोकमां ए द्रौपदी समान कोइ स्त्रीनुं रूप नथी एम कहीने नारद चालतो थयो, पाछलथी पद्मोत्तर राजा कामे पीडित थको चिंतववा लाग्यो के एवी स्त्री विना जन्म निष्फल छे पण द्रौपदीने पामवानो कोइ उपाय सूज्यो नहीं तेवारे अट्ठम तप करी, पूर्वभव संगाति. देवतानुं आराधन कर्युं. देवता प्रत्यक्ष आवी ऊभो रह्यो अने कहेवा लाग्यो के राजन्! मने केम संभार्यो माटे जे काम होय ते फरमावो, पद्मोत्तर राजाए द्रौपदी लेइ आववानी याचना करी, तेवारे देवताए कह्युं ते महासती छे माटे शील भंग करशे नहीं तो तुं फोकट शा वास्ते तेने तेडावे छे? तो पण पद्मोत्तरे घणो हठ कर्यो त्यारे देवताए द्रौपदीने अवस्वापिनी निद्रा आपी, ज्यां सूती हती त्यांथी पलंग सहित उपाडीने पद्मोत्तर राजानी अशोकवाडीमां लावी मूकी अने राजाने कह्युं के तें म्हारा हाथे माठुं काम कराव्युं छे, माटे हवे कोइ पण दिवसे तुं मने याद करीश नहीं, कदापि बोलावीश तो पण हवे हुं आवीश नहीं एम कही देवता स्वस्थानके गयो, केटलिकवार पछी द्रौपदी निद्रामांथी जाग्रत थइने विचारमां पडी के हुं इहां क्यां आवी छुं? तेवारे पद्मनाभ बोल्यो के में तुजने

म्हारी साथे भोग करवा सारु देवतानी मारफते इहां मगावी छे, तो हवे तु म्हारी साथे विषयसुख भोगव, हु त्हारो दास छु, तेवारे द्रौपदी बोली के तु छ महीना सुधी म्हारु नाम लइश नहीं, म्हारी व्हार करवा वाला पांच पाडव तथा श्रीकृष्ण छे ते जो छ महीनामा आही आवशे नहीं तो तु कहीश तेम थाशे, पद्मनाभे पण हा कही अने विचार्यु के इहा एनी खबर लेवा कोण आवनार छे ? वली जोरावरीथी प्रीति पण न थाय एम जाणी, द्रौपदीने पोताना महेलमां तेडी गयो द्रौपदीए छट्ठ छट्ठनुं तप अने पारणे आयबील करवा माड्यु, हवे प्रभाते हस्तिनापुरमा द्रौपदीने महेलमा दीठी नहीं, तेवारे पाडवोए घणो शोध कराव्यो पण क्यांये पतो लाग्यो नहीं, तेवारे पांडवोनी माता कुंताजीए द्वारिकामा जइने श्रीकृष्ण—वासुदेवने कह्यु के पुत्र ! द्रौपदीने रात्रिए सुतां थका कोइ देव, दानव, राक्षस, अथवा विद्याधर अपहरी गयो छे, अमे सर्व जग्याए जोइ पण मली नहीं तेवारे श्रीकृष्णजी कांइक हास्य पूर्वक बोल्या के पाच पाडव एक द्रौपदीने पण राखवाने समर्थ न थया, हु तो म्हारी बत्रीश हजार स्त्रीयोनी रक्षा करू छु, ते साभली कुंताजी बोल्या के वत्स ! आ अवसरमा हास्य करवानु काम नथी, तु तरत द्रौपदीनी खबर कराव पछी श्रीकृष्णजीए पण घणो शोध कराव्यो, परतु क्याय पतो लाग्यो नहीं, अते चिंतातुर थइ बेठा एटलामा नारदऋषि त्या आव्या तेणे आवी कृष्णजीने चिंतामा बेसवानु कारण पूछ्यु, त्यारे कृष्णजीए कह्युं के तमे कोइ स्थानके द्रौपदीने दीठी ? नारदजी बोल्या ते पापणी कोइ साधुने पण बोलावती न हती माटे दु खमां पडी हशे, तथापि हु तो काइ ओलखतो नथी, परतु धातकीखडमा अमरकका नगरीए द्रौपदी सरखी एक स्त्री दीठी छे पछी कोण जाणे तेहज होय तो होय एम कही, नारदजी चाल्या गया पछी श्रीकृष्णे विचार्यु के आ अकृत्य अवश्य नारदनुज करेल छे माटे अमरकका माहेज द्रौपदी हशे

एवुं जाणी पांडवोने लइ, सेना सहित श्री कृष्णजी समुद्र तटे आव्या, समुद्र ओलंघवाने अर्थे अट्ठम तप करी लवणाधिप देवताने बोलाव्यो ते पण प्रगट थइ बोल्यो के कहो! शुं काम छे हुं करवाने तैयार छुं, तेवारे कृष्णजीए सर्व वृत्तांत निवेदन करी कह्युं के अमारे धातकीखंडमां जावुं छे, माटे अमने अने अमारी सेनाने समुद्रमांथी जावानो मार्ग आपो, त्यारे देवता बोल्यो के तमे शा वास्ते त्यां जवानो श्रम करो छो हुं पोते जइ द्रौपदी लावीने तमोने आपीश, वली तमारो हुकम होय तो अमरकंका नगरी सहित पद्मनाभ राजाने समुद्रमां नाखी दउं, तेवारे श्रीकृष्ण बोल्या के देव! तमे एवाज शक्तिवान छो एमां कांइ संशय नथी तथापि अमोने पांच पांडव सहित छ जणने जवानो मारग आपो तो अमारे त्यां जवानी इच्छा छे; ते सांभली सुस्थित देवे ते छ जणाना छ रथ चालवानो मार्ग आप्यो. पछी पांडवो सहित श्रीकृष्ण समुद्र ओलंघीने अमरकंका नगरीना उद्यानमां जइ दारुक नामा सारथीने दूत बनावीने श्रीकृष्णे पद्मनाभ पासे मोकल्यो, तेणे जइ पग ऊपर पग आपी त्रिवडी ललाट चडावी, कह्युं के हे पद्मनाभ! श्रीकृष्णवासुदेवे तमोने कहेवराव्युं छे के पांडवोनी स्त्री द्रौपदीने तमे लाव्या छो ते घणुं अयोग्य काम करेल छे तथापि हजी कांइ बगड्युं नथी माटे तमे आवी द्रौपदी अमोने आपी जाओ, तेवारे पद्मनाभ बोल्यो के हुं तमोने पाछी आपवा सारुं द्रौपदीने लइ आव्यो नथी, हुं तो म्हारा बलथी लाव्यो छुं माटे तुं त्हारा स्वामीने जइ कहेजे के तमारे युद्ध करवुं होय तो सुखें करो, हुं पण क्षत्रिय छुं एम कही दूतने निर्भंछीने काहाडी मूक्यो, दूतें आवी श्रीकृष्ण आगल सर्व वात निवेदन करी, श्रीकृष्णे जाण्युं के असाध्य रोग कांइ औषध विना जाय नहीं माटे युद्ध करवा तैयार थया, पद्मनाभ पण सेना लइ लडवाने स्हामो आव्यो, पांडवो बोल्या के अमे एनी साथे युद्ध करीशुं कदापि जो हारी जइये तो आपे स्हाय

करवी त्यारे श्रीकृष्णे कह्युं के तमे म्होटा योद्धा छो पण तमारी आवी वाणी सांभलता लागे छे के तमारे जीतवु कठण थइ पडशे, तो पण पाडवो श्रीकृष्णनी आज्ञा लइ युद्ध करवाने गया, पद्मनाभे पण म्होटु लश्कर लइने पांडवो साथे युद्ध कर्युं, त्या भवितव्यताना वशथी पांडवो हारी गया अने भागता थका सिंहनाद कर्यो ते साभली पाडवो हार्या जाणी, एकलाज श्रीकृष्ण रथ ऊपर बेशीने पद्मनाभनी सेनाने मथन करवा लाग्या, त्या धनुपना टकारवथीज पद्मनाभनी सर्व सेना नाशी गइ अने पद्मनाभ पोते पण नाशीने नगरमा पेसी गयो, नगरना दरवाजा बध करी मूक्या, तेवारे श्रीकृष्णे नरसिंह रूप धारण करीने हाथल मारी अमरकका नगरीनो सर्व कोट भांजी न्हारयो, सर्व नगर धुजवा लाग्यु, घणा महेल पडी गया, पद्मनाभ राजा श्री कृष्णजीनु एवु पराक्रम देखीने भयभीत थयो थको द्रौपदीने शरणे गयो अने कहेवा लाग्यो के हे सति ! तु म्हारी रक्षा कर, द्रौपदी बोली हे कगाल ! में तुजने प्रथमथीज कहेलु हतु के म्हारी पछवाडे श्रीकृष्णादिक घणा बलवत राजाओ वार करनारा छे तो पण तें मान्यु नही हवे पण जो तुं जीववानी चाहना राखतो होय तो स्त्रीनो वेश पहेरी मुखमा तृण लइ म्हारी पछवाडे बेसी रहे, एटलु जो म्हारुं कह्यु करीश तो हु तुजने पगे लगाडी दइश, केमके श्रीकृष्ण सत्पुरुप छे तेनी आगल जे नमी जाय तेने मारे नहीं माटे त्हारे जीवतो रहेवानो एज उपाय छे, पद्मनाभे पण तेमज कर्युं, एटलामा श्रीकृष्ण पण आव्या, त्यां जूवे तो पद्मनाभ स्त्रीनु रूप करी द्रौपदीनी पछवाडे बेठेल छे, श्रीकृष्णे द्रौपदीने पूछयु के आ कोण बेठो छे, द्रौपदीये कह्यु पद्मनाभ राजा तमारा भयथी नाशीने म्हारे शरणे आव्यो छे एम कही द्रौपदिए पद्मनाभने श्रीकृष्णने पगे लगाड्यो तेवारे श्रीकृष्णे तेना ऊपर दया आणी जीवतो राख्यो अने पद्मनाभने कह्यु

के अरे ! तुं जाणतो न्होतो के आ द्रौपदीनी पछवाडे म्होटा म्होटा वार करवा वाला छे ? पण मूर्खोना माथामां जेवारे पडे छे तेवारे अक्कल आवे छे, तो हवे त्हारुं कर्युं कर्म तें भोगव्युं, द्रौपदीना प्रतापथी तुं जीवतो रह्यो एवुं कही अखंड शीलवंती द्रौपदीने लइने पांच पांडव सहित श्रीकृष्णजी पाछा वल्या अने जयनो शंखपूर्यो, एवा वखतमां ते खेत्रमां श्रीमुनिसुव्रत तीर्थंकर पासे त्यांनो कपिल—वासुदेव वखाण सांभले छे, तेणें शंखनाद सांभल्यो, मनमां शंका ऊपनी के कोइ बीजो वासुदेव उत्पन्न थयो छे ? तेथी भगवंतने पूछ्युं के महाराज ! ए बीजो वासुदेव कोण थयो छे केणे म्हारो शंख वजाव्यो ? भगवंत बोल्या के हे कपिल ! एक खेत्रमां बे तीर्थंकर अने बे वासुदेव, न थाय पण एतो जंबुद्वीपना भरत क्षेत्रनो श्रीकृष्ण नामे वासुदेव त्हारा सरखी ऋद्धिनो धणी छे, पद्मनाभ राजा द्रौपदी हरण करी लाव्यो हतो, तेने लेवाने आव्यो हतो, ते पद्मनाभने जीतीने पाछो जाय छे, तेणे शंखनाद कर्यो, ते सांभली तीर्थंकरनी आज्ञा लइने कपिल वासुदेव तरत त्यांथी उठीने पोताना सरखो वासुदेव जोवा सारुं समुद्रने कांठे आव्यो, पण श्रीकृष्ण तो दूर नीकली गया, मात्र समुद्रमां नीली, पीली रथनी ध्वजाओ देखीने, शंखनो शब्द कर्यो, तेमां एवुं जणाव्युं के हे मित्र ! आप ऊभा रहो हुं तमोने मलवा सारुं आव्यो छुं माटे एकवार पाछा अहीं आवो, तमारा दर्शननी मने अभिलाषा छे, एवो शंखनो शब्द सांभलीने श्रीकृष्णे पण पाछो शंखनो शब्द कर्यो तेमां आवी रीते बोल्या के हे मित्र ! अमो घणा समुद्रनुं उल्लंघन करी गया माटे पाछा अवाशे नहीं तमे अमारा ऊपर कृपादृष्टि राखजो एवुं कहीने चालता थया, पाछलथी कपिल—वासुदेवे जइ, पद्मनाभने कह्युं के आ त्हारी नगरीना गढ मढ कोट केम पडी गया ? पद्मनाभे कह्युं के अत्रे जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रनो वासुदेव म्हारी राजधानी लेवा आव्यो हतो

तेनी साथे म्होटु युद्ध थयु तेणे ए गढादिक त्रोडी नाख्या छे, कपिल-वासुदेवे कह्यु के अरे अन्यायी ! म्हारी पासे तु जुठु बोले छे एम कही घणो निभ्रछीने देशमाथी काढी मूक्यो अने तेना पुत्रने राज्यपाटे थापी कपिल पोताने स्थानके गयो, पछी श्रीकृष्ण पांडवो सहित समुद्र उल्लघन करी पाडवोने कहेवा लाग्या के हु लवणाधिप सुस्थित-देवने मलवा जाउ छु एटलामां तमे नावो लइ गगानदी उतरीने पछी एक जण साथे तरत नाव मोकली देजो, पछी पांडव द्रौपदी सहित नाव लइ गगानदी उतर्या अने विचार्युं के जोइये तो खरा के श्री कृष्णजी पोते एकला गगानदी उतरी आवे छे के नहीं, एम निरधार करीने नाव मोकली नहीं, त्या श्रीकृष्ण घणो वखत थोभ्या, पण नाव आव्युं नहीं तेवारे मनमा जाण्यु के पाडवो डूबी गया देखाय छे एवु विचारी चार भुजाओ करीने एक हाथमां सारथी सहित रथ उपाड्यो, एक हाथमां शस्त्र राख्या, एक हाथमां घोडाने पकड्यो अने एक हाथथी गगा नदी तरवा लाग्या, गगानदी साडी बासठ योजन पोहोली छे तेनी मध्य भागमां जेवारे आव्या तेवारे श्रीकृष्ण घणा थाकी गया ते वखत गगादेवीये सहाय आपीने मध्यमा स्थल कर्युं त्यां केटलोएक वखत विश्राम लइने वली पोतानी भुजाओथी गगानदी तरीने तट ऊपर आव्या त्या आवीने जुवे छे तो पांडवो नाव सहित बेठा बेठा हसे छे, तेवारे श्रीकृष्ण रीष चढावीने पाडवोने पूछवा लाग्या के अरे दुष्टो ! तमे नाव पाछी केम न मोकली ? पांडवो बोल्या, तमारी बल-परीक्षा करवाने न मोकली, तेवारे श्रीकृष्ण बोल्या के अरे में बे लाख योजन समुद्र ओलंघन करी पद्मनाभथी तमे भाग्या तेने जीती द्रौपदी आणी आपी, ते वखते मारी शक्ति न दीठी ? जे हमणा म्हारुं बळ जोवा बेठा ? एम कही क्रोध चढावीने पांचे पांडवोने मारवा सारु लोहदड ऊपाड्यो वली दया आवीने जाण्यु के म्होटो अनर्थ थाशे ? एम विचारी पांचे

पांडवना रथ भांगी चूर्ण कर्या अने कह्युं के जाओ रे पापीओ ! हवे म्हारी नजरे आवशो नहीं अने म्हारा देशमां पण रहेशो नहीं एम कही पांचे पांडवने देशनिकाल दीधो अने ज्यां रथ भांग्यो, त्यां रथमर्द्दन कोट थयो, श्रीकृष्ण पोतानी सेना लइ द्वारकामां गया अने पांडव पण द्रौपदीने लइ सेना सहित हस्तिनापुरे आवी कुंताजीने देशनिकालनी वात कही, तेवारे कुंताजी द्वारकामां आवी श्रीकृष्णने मीठे वचने संतोषी, पांडवोने बोलावी श्रीकृष्णने पगे लगाड्या पछी श्रीकृष्णे आज्ञा आपी के ज्यां में तमारा रथ भांग्या त्यां तमे पांडवरथनुपुर नगर वसावीने रहो पछी पांडवो त्यां श्रीकृष्णजीनी सेवा करता थका रह्या छेवटे पांडुसेन नामे पोताना पुत्रने राज्य पाटे थापी पांच पांडव अने छट्ठी द्रौपदीये दीक्षा लीधी, छट्ठ अट्ठमादिक तप करी, चौद पूर्व भणी ते पांचे पांडव श्रीशत्रुंजय तीर्थे ऊपर मोक्षे गया, अने द्रौपदी पण अगीआर अंग भणी मासनी संलेषणा करी पांचमा ब्रह्मदेवलोके गइ. त्यांथी चवी महाविदेहक्षेत्रे मोक्ष पामशे. ए रीते जंबूद्वीपनो वासुदेव, धातकीखंडमां न जाय, ते गयो. ए पांचमुं अच्छेरूं जाणवुं. वली केटलाएक आचार्य एम कहे छे के बे वासुदेवना शंखेशंख पण भेगा न थाय अने इहां शंखेशंख मल्या, माटे ए पण अच्छेरूं जाणवुं.

हवे छट्ठो आश्चर्य कहे छेः–युगलिया मरण पामीने नरकें न जाय, अने अहीं हरि तथा हरिणी, ए बे युगलिया मरण पामीने नरके गयां. माटे ए अच्छेरूं थयुं. यथा–जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे कौशंबी नगरीनो सुमुख नामे राजा हतो. एकदा प्रस्तावे वसंत ऋतुये ते राजा हाथी ऊपर आरूढ थइ नगरीनी नजीकना वनमां रमवाने अर्थे जतो हतो. मार्गमां वीरक नामे कोलीनी वनमाला नामे भार्या अत्यंत स्वरूपवती छे ते पोताना धणीने घणी वल्लभ छे तेने देखीने मांहोमांहे सराग दृष्टिथी जोतां प्रीतिभाव उत्पन्न थयो तेथी राजा त्यां थकी आगल

जाय नहीं तेवारे सुमतिनामा प्रधान कहेवा लाग्यो के स्वामिन्! सम
स्त सौजन आव्यां छतां तमो आगल केम चालता नथी ? ते सांभली
राजा पोताना प्रधाननी लाज आणी आगल वनमां गयो पण शून्य-
चित्तथको मनमाहे केवल ते स्त्रीनु चिंतवन करतो क्याये पण चेन
पामतो नथी. ते जोइने प्रधाने पूछ्यु के महाराज ! तमे आज आवा
शून्यचित्त केम देखाओ छो ? एम फरी फरी घणो आग्रह करी पुछ-
वाथी पोताना मननी सर्व वात राजाये प्रधानने कही ते साभली प्रधान
बोल्यो के तमे काइ चिंता करशो नहीं, हुं तमने ए स्त्री मेलवी आ-
पीश. पछी घेर आवी प्रधाने आत्रेयिका नामे परिव्राजिकाने बोलावी
सर्व वात समजावी वनमालानी पासे मोकली, ते पण त्या जइ जुए छे
तो वनमाला पण विरहविव्हलथकी मुखें नि श्वास न्हाखती क्षणेक बेसे,
क्षणेक उठे, क्षणेक पडे, ए रीते महाविरहिणी देखी तेने ते परिव्राजिका-
केहेवा लागी के वत्से ! तुं आज एम दु खित केम देखाय छे ? त्हारु दु ख
मने कहे तो हु ते दु खथी तने पार उतारु ते सांभली वनमालाए पोताना
मननी गुप्त वात कही. तेवारे परिव्राजिका बोली के हुं तने राजानी साथे
काले मेलवीश, तु काइ चिंता करीश नहीं, पछी ते परिव्राजिका हर्षवत-
थकी त्याथी जइ सर्व वात प्रधानने कही प्रधानें जई राजाने सर्व वृत्तात
समलाव्यु. त्यार पछी प्रभाते परिव्राजिका वनमालाने राजा पासे
तेडी आवी राजाए हर्षवत थइ अत.पुरमा तेने राखी अने तेनी साथे
पचविध विषयसुख भोगववा लाग्यो. हवे वीरक कोली घेर आव्यो,
त्यारे तेणे स्त्रीने दीठी नहीं पछी पाडोशी प्रमुखने पूछतो थको भार्याना
विरहथी घेलो थयो थको आखा गाममां हे वनमाला ! हे वनमाला !
करतो फरतो फरतो एक दिवसे चोमासामा राजाना प्रासाद नीचे
आवी ऊभो रह्यो, तेवामां राजा पण वनमालाने साथे लइ गोंखमा
आवी बेठो. राजाए वीरककोलीने देखीने मनमा विचार्युं के में पापिष्टें

पारकी स्त्री लइ लीधी ए अत्यंत लोक विरुद्ध अनार्य कार्य कीधुं. माटे मने धिःकार छे एम मनमां घणीज पोतानी निंदा करवा लाग्यो. अने वनमालाए पण विचार्युं के में पापणीए स्नेहवंत भरतारने त्याग्यो ए म्हारा विरहथी ग्रंथिल थयो माटे म्हारी शीगति थाशे ? एम बन्ने जण पश्चात्ताप करे छे. तेवामां अकस्मात् ऊपरथी विजली पडी तथी बेउ जणां शुभध्यानें मरण पामी हरिवर्ष क्षेत्रे युगलिया पणे उपन्यां. त्यां समस्त मनोवांछित कल्पवृक्ष पूर्ण करे छे अने सुखें रहे छे. पछी वीरक कोली पण ते बेहुनुं मरण जाणी, ग्रंथिलभाव त्यागी, अज्ञान तपस्या करी, सौधर्म देवलोके किल्विषिया देवमां जइ उपन्यो, त्यां अवधिज्ञानथी जोयुं त्यारे जाण्युं के अरे ! म्हारा पूर्वभवना वैरी तो युगलीया थया छे, ते त्यांथी मरण पामीने वली देवता थशे माटे ए देवता न थाय एवो उपाय करुं एम विचारी ते युगलने त्यांथी उपाडीने चंपानगरीमां इक्ष्वाकुवंशनो चंडकीर्ति राजा अपुत्रीयो मरण पाम्यो छे त्यां नगरनां लोक सर्व आपणो कोण राजा थशे एवी चिंतामां पड्या छे एटलामां ते देवताए ते युगलीयाने लावीने नगरीना लोकोने सोंप्या अने कह्युं के हुं तमारे माटे ए राजा लाव्यो छुं, एने जेवारे भूख लागे तेवारे ए कल्पवृक्षनां फल खाय छे, तेनी साथे मांस मेलवीने खवरावजो तथा आहेडो करवा शीखावजो, देवताए मनमां विचार्युं के ए मांस भक्षण करशे अने मांसना लोलुपी थाशे तेथी मरण पामीने नरके जाशे तो म्हारुं वैर वलशे एम चिंतवी हरि अने हरिणी एवुं तेनुं नाम आपी देवता पोताने स्थानके गयो, लोकोए पण देवताना कह्या प्रमाणे तेने मांस मदिरा खावता शीखव्युं तेथी ते मांसना लोलुपी थयां, पछी ते हरिराजाना पुत्रादिक जे थया तेनो हरिवंश (कुल) कहेवाणो, ते हरि ने हरिणी मरण पामी नरके गया. ए रीते युगलीया नरकमां जाय नही ते गया माटे ए आश्चर्य जाणवुं.

हवे सातमु अच्छेरु कहे छे —आ भरतक्षेत्रने विषे विभेलनामा सन्निवेशे एक पूरण नामा शेठ रहेतो हतो ते एक दिवसे पाछली रात्रे जाग्यो थको कुटुंब जागरण करतां मनमा विचारवा लाग्यो के, म्हारा घरमा घणु धन परिवार छे ते में पूर्वेला भवमा कोइ सारी धर्मकरणी कीधी छे तेना योगथी पाम्यो छु माटे फरी हमणा पण कांइक धर्म करु तो वली आगल पामीश एम चिंतवी, प्रभाते स्वजनादिकने पूछी, पुत्रने कुटुंबनो भार सोंपी, पोते तापसी दीक्षा लइने एवो अभिग्रह कर्यो के जावज्जीव सुधी म्हारे छट्ठ छट्ठ एटले बे बे उपवासना अन्तरे पारणो करवो अने पारणाने दिवसे चारखूणानुं पात्रु लइने भिक्षा मांगवी तेमां पहेला खूणामा जे भिक्षा मले ते जलचर जीवोने खवरावी देवी पण म्हारे खावी नही, तथा बीजा खूणामां जे भिक्षा पडे ते पंखीने खवरावी देवी, तथा त्रीजा खूणामां जे भिक्षा पडे ते अभ्यागतने खवरावी देवी, अने चोथा खूणामा जे भिक्षा पडे ते जलमा धोइने म्हारे पोते खाइ लेवी, ए रीते बार वरस पर्यंत तपस्या करी मरण पामीने चमरचचा राज्यधानीमां चमरेन्द्रपणे भुवनपति देवोमा जइ उपन्यो त्या उपजताज अवधिज्ञाने करी जोयु तो सौधर्मेंद्रना पग पोताना मस्तक ऊपर दीठा तेथी महाक्रोध उपन्यो तेवारे सर्व सामानिक देवोने बोलावीने कह्यु के हे देवो! आ कोण दुष्ट माठा पुण्यनो धणी छे? जे महारा मस्तके पग देइने बेठो छे, तेवारे देवो बोल्या स्वामिन्! पूर्व जन्मने विषे सपादन करेला पुण्ये करी सर्वना करतां अतिशय समृद्धि अने पराक्रम छे जेनुं एवो आ सौधर्माधिप छे ए अनादिकालनी मर्याद छे माटे इहा तमारे कोप न करवो, तमारा सरखा इंद्र पूर्वे थइ गया तेना ऊपर पण एमज पग रहता आव्या छे माटे इर्ष्या म करो इत्यादिक देवोए कह्यु तो पण चमरेन्द्र क्रोधे भर्यो थको बोल्यो के जेनी ऊपर सोधर्मेंद्र पग राखे एवा पूर्वे थयेला चमरेन्द्र ते जूदा अने हु जूदो माटे हु त्या जइ सौधर्मेन्द्रने

पग पकडी हेठो न्हांखीश, एवुं कही आयुधशालामां आवी, परशु—शस्त्र हाथमां लइने सौधर्मदेवलोके जावा लाग्यो. तेवारे सर्व देवोए वर्ज्यो तो पण कोइनुं मान्युं नहीं, ते वखत सुसुमारनगरने विषे श्रीमहावीर प्रभु प्रतिमा स्थित रह्या हता तेनुं शरण लइने लाख योजननुं रूप विकूर्वी ब्रह्मांड फूटी पडे एवो शब्द करतो, पगथी धरती कंपावतो, हाथे तालोटा देतो, मेघनी परे गर्जारव करतो, वीजलीनी पेरे झबकार करतो, ज्योतिष्चक्रने त्रास पमाडतो, देवताओने भयभ्रांत करतो, देवीओने बीक पमाडतो, कोलाहल करतो, अने परिघायुध फेरवतो, गर्वे करी अंध थयो थको सौधर्मेन्द्र स्हामो धायो त्यां पोतानो एक पग सौधर्मावतंसक विमाननी पद्मवर वेदिकाने विषे अने बीजो पग सौधर्मसभामां राख्यो. तेवारे सर्व सौधर्मदेवलोकना देवता भयभ्रांत थइने ज्यां त्यां नाशी गया. चमरेन्द्र बोल्यो अरे देवो ! तमारो इंद्र क्यां छे ? काली अमावासना जन्म्या तेने मने बतावो तो हमणा फरसुथी मारी नाखुं एवुं देवताओने कहीने मुखमांथी अग्निज्वाला काहाडतो थको, लांबाहोठ, कूवा सरखा गाल, खाड सरखा नाकना फोरणां, अग्नि सरखां नेत्र, सूपडा सरखा कान, कुसी सरखा दांत, गलामां सर्प, हाथमां वींछीना घरेणा, क्यांक तो उंदरो बांधेला, क्यांक तो नोलीया घोह बांधेली, कालुं रूप धारण करेलुं एवो देखी, देवदेवीए कोलाहल कर्यो, ते कोलाहल सांभलीने इंद्रे अवधिज्ञाने जोयुं तेवारे जाण्युं के एतो चमरीयो अर्धा भरेला घडानी जेम उछले छे माटे हवे एने हुं शिक्षा आपुं एम विचारी, हजार देवताओथी उपडी शके नहीं एवुं अग्निज्वाला करतां पण देदीप्यमान वज्र चमरेन्द्र ऊपर मूक्युं ते पोतानी ऊपर आवतुं देखीने चमरेंद्र बीक पामतो थको माथो नीचुं अने पग ऊंचा करेला एवो थको, त्यांथी न्हाठो तेना क्यांएक घरेणा पड्या, क्यांएक पोते पडतो थको नासवा मांड्यो पण स्वभावे चमरेन्द्रनी नीचे आववामां शक्ति घणी होय अने वज्रनी ऊंचे चडवामां

शक्ति घणी होय तेथी छेटु रही गयु त्यारे चमरेन्द्र पोताना लाख योजन वाला विकूर्वेला शरीरनो सहार करी, "शरण शरणं" एवु बोली कुंथुआ जेवो सूक्ष्म थइने श्रीमहावीरस्वामीना चरणनी वचमां प्रवेश करतो हवो. एवीरीते वज्रथी डरतो थको श्रीमहावीरस्वामीने शरणे बेठो एटलामां शक्रेन्द्रे जाण्यु के चमरीयानी एटली शक्ति नथी जे विना शरणे इहां चाल्यो आवे माटे निश्चेथी ए श्रीअरिहतनु, अथवा अरिहतनी प्रतिमानु, अथवा भावित अणगारनु शरण लेइने इहां आव्यो हशे? तो रखे आशातना थाय नहीं ? एवु विचारी अवधिज्ञाननो उपयोग आपी जोयु तो श्रीमहावीरस्वामीनु शरण लेइ आव्यो हतो एवु जाणी तत्काल वज्रनी पाछल शक्रेंद्र पण आव्यो ते श्रीमहावीरस्वामीथी चार अगुल छेटे रहेला वज्रने पाछु खेंची लीधु, कारण के महावीरस्वामीथी चार आंगुल छेटे वज्र परिभ्रमण करतु हतु पण तीर्थंकरनी आशातना टालवा माटे तीर्थंकरनी पासे वज्र जाय नहीं ए रीते चमरेन्द्रने श्रीमहावीरना शरणे आव्यो जाणी छोडी दीधो अने भगवानने कह्युं के हे प्रभु! म्हारो अपराध खमजो एवुं कहीं लगारेक दूर जइने पगथी जमीकूटीने बोल्यो अरे चमर! हवे श्रीवीरभगवाननी कृपाए तु म्हारो भय म राखजे एवु कही, भगवानने वादी, तेमनी आज्ञा लइ शक्रेन्द्र पोताने स्थानके गयो, चमरेंद्र पण नाना प्रकारे भगवाननी स्तुति करी, वांदीने पोतानी चमरचचा राजधानीए गयो, त्या पोताना सिंहासन ऊपर उदास थइ बेठो त्यारे सामानिक देवोए आवी वधाव्यो अने कह्यु के शोच कां करो छो? तेवारे चमरेन्द्रे पोतानी वीतक वात सर्व कही अने कह्यु के हे देवानुप्रियो! हु जीवतो आव्यो ए सर्व श्रीवीरभगवाननो उपकार छे माटे वादवाने चालो एम कही, सर्व देव देवीयोने लइ, म्होटी ऋद्धि सहित आवीने श्रीमहावीरने वादी, नाटक करी, पोताने स्थानके गयो ए रीते पातालवासी चमरेन्द्र ऊचो सौधर्मदेवलोके जाय नहीं ते आ अवसर्पिणी काले गयो माटे ए सातमु चमरोत्पात नामे आश्चर्य जाणवु

आठमुं अच्छेरुं कहे छे-अष्टापद पर्वत ऊपर उत्कृष्ट पांचसो धनुष अवगाहना वाला एक श्रीऋषभदेव पोते, अने भरत विना नवाणुं भगवंतना पुत्र, तथा आठ भरतना पुत्र मली एकसो ने आठ पुरुष एक समयमां सिद्धि पाम्या, मध्यम अवगाहना वाला सीझे पण उत्कृष्ट अवगाहना वाला एक समये एकसो ने आठ न सीझे, मात्र बेज सीझे अने इहां एकसो आठ सिद्ध थया माटे ए आठमुं अच्छेरुं जाणवुं.

नवमुं अच्छेरुं कहे छे-श्रीमहावीर देव कोशंबी नगरीए समोसर्यां, त्यां चंद्रमा अने सूर्य जेनां शाश्वतां विमान, ज्योतिषचक्रमां छे. ते तेज विमानमां बेसीने पश्चिम पोरसिमां श्रीमहावीरने वांदवा माटे आव्या, अहिंआं कोइएक एवुं कहे छे के उत्तर वैक्रिय विमानमां बेसीने आव्या परंतु तेम न जाणवुं. ए मूलगा विमानमां बेसीनेज वांदवा आव्या छे, ते मूलगा विमाने कोइवारे न आवे, पण आव्या माटे ए अच्छेरुं जांणवुं.

हवे दशमुं असंयती, आरंभी, परिग्रहवंत, अब्रह्मचारी गृहस्थना वेषें रहेला, तेनी पूजा, सत्कार ते असंयतिपूजा नामे दशमुं अच्छेरुं छे, ते आवी रीते के श्रीसुविधिनाथना निर्वाण पछी केटलोक काल व्यतिक्रम्यानन्तर हुंडावसर्प्पिणीना दोषने लीधे साधुओनो विच्छेद थयो, सर्व साधु काल करी गया कोई साधु रह्यो नहीं, तेवारे लोक बोल्या हवे कोने पूजीए, त्यारे ऋषभदेवजीनी वारमां श्रावक ब्राह्मण कहेवाता तेनो दाखलो लइ जे स्थविर श्रावक हता तेनी पासे जइ लोको धर्म पूछवा लाग्या ते पण जेवुं जाणता हता, तेवुं तेओने कहेवा लाग्या. लोक पण तेमने धन वसनादिक दान देवा लाग्या, तेथी तेओ गर्वित थया थका पोतानां मनःकल्पित नवीन शास्त्र बनावी कहेवा लाग्या के-जे कोई पृथ्वी, शय्या, मंदिर, सुवर्ण, रूपुं, लोह, कपास, गाय, कन्या, अश्व अने गज, अमने आपे, ते आ लोके तथा परलोके महा फल पामे अने अमे ज सुपात्र छिये, एवो उपदेश सांभली

लोके तेमने गुरु करी मान्या एवी असयतीनी पूजा चाली एम केटलाएक काले तो वली साधुनो धर्मज विच्छेद गयो अने जैन विना पाखडी, सन्यासी प्रमुख विपरीत दर्शनीज पूजाववा लाग्या, प्रथम सदा सर्वदा संयतीनी पूजा थती हती पण ते विच्छेद थवाथी असंयतिओनी पूजा श्रीशीतलनाथ जिननां तिर्थ वेसता सुधि चाली ते आश्चर्य थयु इहां जे साधु न होय अने साधुपणे पूजाय ते आश्चर्य जाणवु तेमज श्रीतीर्थंकरोनु तीर्थविच्छेद न थाय ते विच्छेद थयो ते पण आश्चर्य जाणवु ए दशमु अच्छेरु छे ए रीतें ए दश आश्चर्य आ चोवीशीमां थयां वली अनते काले थशे हवे दश अच्छेरां कया कया तीर्थंकरनी वारे थया? ते कहे छे-श्री ऋषभदेवना वारामा एकसो ने आठ सिद्ध थया, श्री शीतलनाथना वारामां हरिवश कुलनी उत्पत्ति थइ, श्री मल्लीनाथना वखतमां स्त्री तीर्थंकर थइ श्री नेमिनाथना वखतमां अमरकका नगरीए श्रीकृष्णनु गमन थयु, अने श्री सुविधिनाथना शासनान्तराले असयती ब्राह्मणोनी पूजा थइ ए असयतीनी पूजा तो श्री आदिनाथना वखतमा पण मरीचि कपिलादिकनी साभलिये छिये एम घणु करीने बीजा तीर्थंकरोना वारामां पण प्रवाहे थाय छे अने पांच अच्छेरां श्री महावीरस्वामीने वारे थयां

हवे इद्र महाराज विचारे छे के-भगवान श्रीमहावीर स्वामी माहणकुड नगरे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानदानी कूखमां उपन्या ए आश्चर्य थयु, जे माटे तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, अने वासुदेव एमनो जो नीचगोत्रकर्मक्षय न थयो होय, वेद्यो न होय, निर्जर्यो न होय, ते कर्म उदय आवे, तेना उदये करीने श्रीअरिहत, चक्रवर्त्ती, बलदेव अने वासुदेव पण अतप्रांत, तुच्छ, दरिद्री, प्रमुख कुलमां आव्या, आवे अने आवशे कूखने विषे गर्भपणे उपन्या छे, ऊपजे छे अने उपजशे पण योनी मार्गे जन्म पणे निकलवुं ते कोइ निकल्या पण नथी,

निकलता पण नथी अने नीकलशे पण नहीं एटले जन्म्या पण नथी, जन्मता पण नथी अने जन्मशे पण नहीं एवी रीत छे परन्तु भगवान श्रीमहावीरस्वामी, माहणकुंडनगरमां ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदानी कूखमां आव्या. ते आश्चर्य रूप छे माटे ए आचार छे के–जे वखते जे इंद्र होय ते इंद्र ते वखते अरिहंत, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव जो अंतप्रांत, तुच्छ, दरिद्री प्रमुख यावत् ब्राह्मणना कुलोमां आवी उपन्या होय तो तेने अंतप्रांतादिक नीच कुलोमांथी लइने उग्र, भोग, राजन्य, क्षत्री, हरिवंश प्रमुख उत्तम कुलोमां संहरावे, ए कुलोमां लावी मूके, नीच कुलमां जन्म थवा दे नहीं, ए सर्व त्रणे कालनां जे इंद्र होय तेमनी मर्यादा छे तो निश्चे हुं पण भगवान श्री महावीरस्वामीने देवानंदा ब्राह्मणीनी कूंखमांथी लइने ज्ञातक्षत्रिय सिद्धार्थराजा, तेमनो काश्यप गोत्र, तेनी भार्या त्रिशला क्षत्रीयाणीनी कूंखमां गर्भपणे मूकुं, एवुं तेमना भाग्य प्रमाणे विचारीने इंद्रमहाराजे, हरणीगमेषी नामा देव जे पायदल कटकनो मालेक छे तेने बोलावीने एवी रीते कह्युं के निश्चे हे देवानुप्रिया ! आ वात थइ नथी, थाती नथी अने थाशे पण नहीं के श्रीअरिहंतादिक शिलाका पुरुषो छे ते अंतप्रांतादिक नीच कुलोमां आव्या, आवे अने आवशे अने जो कोइ नीच कुलमां आवे तो ते, लोकोमां अच्छेरो कहेवाय, अनंता उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी कालथी जो कोइ अरिहंतादिकनो नीचगोत्रकर्मनो क्षय न थयो होय, वेद्युं भोगव्युं न होय ते उदय आवे तो श्रीअरिहंतादिक नीचकुलमां आवे खरा पण तेनो ते नीचकुलमां योनि मार्गे जन्म न थाय अने ए भगवान् श्रीमहावीरस्वामी, जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां ब्राह्मणकुंडगामे ऋषभदत्तब्राह्मणनी भार्या देवानंदा ब्राह्मणीनी कूंखमां उपन्या छे, माटे अतीत, अनागत अने वर्त्तमान ए त्रणेकाले जेवारे जे इंद्र होय तेनो ए आचार छे के श्री अरिहंतादिक जो नीचकुलमां आवी

उपजे तो तेने उग्रादिक ऊंच कुलोमा जइ मूकवा ते माटे हे देवानु प्रिया ! तमे जाओ भगवान श्रीमहावीर स्वामीने ब्राह्मणकुडगाम नगरने विषे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानदानी कूखमांथी लइने, क्षत्रीयकुड नगरने विषे सिद्धार्थक्षत्रिय राजा तेनी भार्या त्रिशला क्षत्रियाणी छे तेनी कूखमा गर्भ पणे जइ मूको अने त्रिशला क्षत्रियाणीनो जे पुत्रीरूप गर्भ छे ते देवानदा ब्राह्मणीनी कूखमां मूको आ म्हारी आज्ञा तत्काल करीने पाछी सोंपो अर्थात् ए काम करीने पाछुं मने आवी कहो के जे आपे आज्ञा करी ते काम हु करी आव्यो छु

इहा कोइ प्रश्न करे के इन्द्रमहाराजने एज विचार केम उपन्यो के देवानदानी कूखमांथी अपहरीने त्रिशला राणीनी कूखमा सक्रमण करो केमके ते वखतमां बीजा पण श्रेणिक प्रमुख म्होटा म्होटा राजा हता तेमने तो सभार्या नहीं अने ए सिद्धार्थ तो सामान्य राजा हतो तेने याद कर्यो तेनुं शु कारण हशे ? एनो उत्तर एम छे के सहु जीवोना पोत पोताना भाग्य (कर्म) प्रमाणे देवोने पण कार्य करवानी बुद्धि उपजे छे, कर्मथी उपरात करवानी शक्ति देवोमा पण नथी इहा पण पूर्वला भवमा त्रिशलाराणीनो जीव देराणी हतो अने देवानदानो जीव जेठाणी हती बन्ने एक घरमा रहेती हती, परतु कषाय महा बलवान छे जो जीव रुद्ध करवानी चाहना करे तो कषाय माठु करी न्हाखे हवे लोभना वशथी जेठाणीए देराणीनो रत्नकरडीयो चोरी लीधो, देराणीए सभाल्यो पण लाधो नहीं तेवारे बे जणीयोने घरनी अदर मांहोमाहे घणाघणी बोलाचाली थइ तो पण जेठाणीए करडीयो आप्यो नहीं तेना प्रभावथी कर्म बधाणु ते कर्म देवानंदाने उदय आव्यो, त्रिशलानी देवादार हती तेथी इद्रने पण एवोज विचार स्वाभाविक पणे आवी गयो के त्रिशलाराणीनेज पुत्र रत्न देवरावु ते माटे भव्यो ! तमे जुओ के जे जीव जेवु शुभाशुभ करशे ते जीवने तेवु शुभाऽशुभ मलशे इहा

कदापि कोइ अन्यदर्शनी पूछे के ए भगवानने गर्भमां जे आघा पाछा कर्या ते तमे दीठा तो नथी तेवारे अमे केम मान्य करीये? त्यारे उत्तर आपवुं के तमारा मतमां पण भागवतना दसमस्कंधना बीजा अध्यने बलदेवना गर्भनो परावर्त्तन लखेल छे वली पुराणने विषे पण पुरुषोने गर्भ उत्पन्न थयो छे ते देवताए काढ्या छे ए ऊपर मांधाता राजानी कथा कहे छेः—विशाला नगरीए वनराजा महाबलवान छे परंतु ते अपुत्रीयो छे माटे पुत्र थवा सारुं शोलसौ स्त्री परण्यो तो पण तेने पुत्र थयो नहीं तेथी ते राजा घणो चिंतातुर थयो पुराणोमां कह्युं छे के—

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गो नैव च नैव च।
तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, स्वर्गं गच्छन्ति मानवाः ॥ १ ॥

अपुत्रियाने गति न होय ते अवगतियो थाय तेवारे ते राजाये कोइकना उपदेशथी अठ्यासी हजार तापस ऋषियोने नोतरीने भोजन कराव्युं, तेत्रीशक्रोड देवता आराध्या, तथापि कोइमां पुत्र आपवानी शक्ति न दीठी. तेवारे ते रुषियोने कह्युं के अरे! तमें बधा पेटज भरी जाणो छो पण म्हारुं काम करता नथी एवुं राजानुं बोलवुं सांभली एक तापस बोल्यो के हे राजन्! त्हारे पुत्र थाय एवो उपाय हुं जाणुं छुं, हुं तुजने सोनाना कचोलामां पाणी मंत्रीने आपुं ते पाणी त्हारी स्त्रीने पीवरावजे तेथी त्हारे पुत्र थाशे. पछी राजा पाणी मंत्रावीने कचोलो भरी घेर लइ आव्यो एटलामां तो सर्व राणीयोए पुत्र संबंधी वात सांभलीने प्रत्येक (जुदी जुदी) राणी राजाने कहेवा लागी के पाणी अमने आपो एम मांहोमांहे क्लेश थवा लाग्यो, राजाए विचार्युं के हवे हुं कोने पाणी आपुं अने कोने न आपुं! एम चिंतवी कोइने पाणी आप्युं नहीं पछी ते कचोलुं लइ वस्त्रथी ढांकी पाणीयारा ऊपर राखीने राजा पोताने आवासे आवी सूइ रह्यो एटलामां रात्रीमां राजाने तृषा लागी त्यारे पाणी मंगाववा सारुं पासे कोइ माणस हतो नहीं पण एक

दासी तेनी शय्या पासे सूती हती तेने कह्यु के-अरे दासी ! तृषा लागी छे माटे पाणी लइ आव ते दासीए जइ मत्रेलु कचोलु पाणीनु भरेलु हतु ते आणी आप्यु, राजाए पण अजाणतां पीधु ते पाणीना प्रभावथी राजाए गर्भ धारण कर्यो दिवसे दिवसे पेट वधतु गयुं तेथी राजा लज्जायमान थयो थको सभामा पण आवे नहीं, प्रधाने विचार्युं के-ए घणु खोटु काम थयु पछी राजाने कही पाछा अठ्याशी हजार ऋषीओने नोतर्या अने ओलभो दीधो के तमे आ शु कर्यु ? हवे सारो उपाय करो पछी ऋषीओए तेत्रीश कोटी देवतानु आराधन कर्युं तेवारे इद्रे आवी पोताना सेवकोने हाथे राजानु उदर विदारीने मांहेथी बालकने काढ्यो सर्वे बोल्या के ए धावी शकशे नहीं पछी इद्रे स्त्रीनु रूप करी धवराव्यो क्रमे क्रमे वधवा लाग्यो तेनु 'मांधाता' एवु नाम दीधु इत्यादि अनेक वार्ता छे माटे गर्भ पण परावर्त्तन थाय छे ए वात निःसदेह छे

इद्रे हुकुम कर्या पछी हरणेगमेषी देवता पायदल(कटक)नो मालेक ते खुशी थइने हाथ जोडीने मस्तके अजली करीने आज्ञा ने-विनय सहित प्रणाम करीने इद्रमहाराजनी पासेथी निकलीने, उत्तरपूर्वनी वचमानी ईशानकोणमां आवीने, वैक्रियसमुद्घात करे ते केवी रीते तो के पोताना आत्म प्रदेश शरीरमांथी बाहेर काहाडीने सख्याता योजननो उचो दड करे, आत्म प्रदेश कर्मपुद्गलनो समूह दडरूप करीने प्रगट करे ते दड रत्नमय करे ते रत्न केवी जातिओना होय ते कहे छे-१ कर्केतकरत्न, २ वैडूर्यनीलरत्न, ३ वज्ररत्न, ४ लोहिताक्षरत्न, ५ मसारगल्लरत्न, ६ हसगर्भरत्न, ७ पुलकरत्न, ८ सौगन्धिकरत्न, ९ ज्योतिसाररत्न, १० अजनरत्न, ११ अजनपुलकरत्न, १२ जातरूपरत्न, १३ सुभगरत्न, १४ अकरत्न, १५ स्फाटिकरत्न, १६ अरिष्ठरत्न, ए शोल जातिनां रत्न तेना असार पुद्गलने छांडीने सार पुद्गल ग्रहण करे, करीने

उत्तर वैक्रिय धारण करे, मूलरूप त्यांज राखे, नवुं रूप करीने, मनुष्यलोकमां आवे, केवी गतिथी मनुष्यलोकमां आवे? ते कहे छे-एक चंडा, बीजी चपला, त्रीजी जयणा अने चोथी वेगा ए चार गतिए करीने चालतां तो केटलोएक काल वीती जाय तो पण मनुष्यलोकमां आवी शके नहीं ? ते चारगतिनुं प्रमाण आवीरीते के-२८३५८० एटले बे लाख त्रियाशीहजार पांचशेने एंशीयोजन अने एक योजनना साठ भाग करीये तेवा छ भाग उपर, एटला क्षेत्रनुं एक डगलुं भरतो चाले ते प्रथम चंडा गतिनुं प्रमाण जाणवुं. तथा ४७२६३३ एटले चारलाख बहोंतेर हजार छशेने तेत्रीश योजन अने त्रीश कला ऊपर, एटला क्षेत्रनुं एक डगलुं भरतो चाले ते बीजी चपलागतिनुं मान जाणवुं. तथा ६६१६८६ एटले छ लाख एकसठ हजार छशो छयाशी योजन अने चोपन कला ऊपर, एटला क्षेत्रनुं एक डगलुं भरतो चाले ते त्रीजी जयणागतिनुं मान जाणवुं. तथा ८५०७४० एटले आठ लाख पचाश हजार सातसे चालीश योजन अने अढार कला ऊपर, एटला क्षेत्रनुं एक डगलुं भरतो चाले ते चोथी वेगागतिनुं मान जाणवुं. हवे ए गतियोना प्रमाणथी जो देवता चाले तो छ महीना सुधीमां पण आ मनुष्य क्षेत्रमां आवी शके नहीं माटे दिव्य देवगतिए करी असंख्याता द्वीप, समुद्र उल्लंघन करतो थको ज्यां जंबूद्वीपनुं भरतक्षेत्र, ज्यां ब्राह्मणकुंड गाम नगर तेमां ऋषभदत्त ब्राह्मणनो घर तेमां ज्यां देवानंदा ब्राह्मणी सुती छे त्यां आव्यो, आवीने भगवानने देखी प्रणाम करीने, देवानंदा ब्राह्मणीना सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा देइने, अशुभ पुद्गल दूर करीने, शुभ पुद्गल प्रक्षेप (घालीने) करीने के 'भगवन् ! आज्ञा आपो' एवुं कहीने, भगवानने पीडा रहित देवप्रभावे करीने हाथमां ग्रहण करी करसंपुटमां लइने, क्षत्रियकुंडनामानगरे ज्ञातकुल सिद्धार्थक्षत्रिय राजाना घरमां

ज्यां त्रिशला क्षत्रियाणी छे त्यां आवीने, तेना सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा आपीने, अशुभ पुद्गल बाहेर काहाडीने, शुभपुद्गल प्रक्षेपीने, भगवानने पीडा रहित त्रिशलाराणीनी कूखमा मूक्या. दशमाद्वारथी देवे प्रवेश कर्यो अने नाभिथी पाछो निकल्यो एवुं वृद्ध वाक्य छे. पछी त्रिशलाना गर्भमा पुत्री हती तेने त्यांथी लइने देवानदानी कूखमां गर्भपणे मूकीने, जे दिशाथी देवता आव्यो हतो ते दिशाए पाछो चाल्यो गयो. त्या चंडा चपलादिक चार गतिथी अधिक दिव्य देवगतिए करीने तीर्च्छो असंख्याता द्वीप समुद्रमांथी थइने लाखयोजनना प्रमाणवाला शरीर सरखा पग मूकतो थको ऊचो ज्यां सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतसक नामे विमान छे तथा शक्रसिंहासन छे अने शक्रेंद्रनामे देवताओनो राजा छे त्यां आव्यो, आवीने शक्रेंद्रने पाछी आज्ञा सोंपी अर्थात् एम कह्युके तमे कह्यु ते सर्व काम करी आव्यो छुं

ते कालने ते समयने विषे, श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामीने वर्षाकालनो त्रीजो महीनो पांचमु पखवाडियु आशोज वदि तेरशने दिवसे ब्याशीमी रात वीतीगइ अने त्र्याशीमी रातना वर्त्तमानमां पोताना हितने लीधे अथवा भगवाननी अनुकपाने लीधे इन्द्रे मोकलेला हरिणेगमेषी देवता तेणे ब्राह्मणकुडगाम नगरमां ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानदा ब्राह्मणी छे तेनी कूंखमांथी लइने ज्यां क्षत्रियकुड गामनगरे सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी त्रिशला क्षत्रियाणी राणी छे तेनी कूखे मध्यरात्रिने विषे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चद्रमानो योग आव्यां थका पीडा रहित मूक्या. ते कालने समयने विषे भगवान त्रणज्ञान सहित आवी ऊपन्या, मुजने इहांथी सहरण करशे एवुं जाणे पण सहरणनी वेला सूक्ष्म छे माटे ते जाणे नहीं अने सहरण कर्या पछी जाणे के मने सहरण कर्युं जे रात्रिमां श्रमणभगवंत श्रीमहावीर

स्वामीने देवानंदानी कूंखथी लइने त्रिशला क्षत्रियाणीनी कूंखमां गर्भ-पणे मूक्या ते रात्रिमां देवानंदा ब्राह्मणी पोतानी सुकोमल शय्यामां सूति कांइक जागतीने सुपनुं आव्युं के म्हारा जे महामंगलकारी चौद स्वप्नां हतां ते त्रिशलाक्षत्रियाणीए खेंची लीधां एटले हरण कर्यां एवुं सुपनुं देखीने जागी. जे रात्रिमां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने देवानंदानी कूंखमांथी लइने त्रिशलाक्षत्रियाणी वासिष्ट गोत्रवाली तेनी कूंखमां मूक्या ते रात्रिमां त्रिशला क्षत्रियाणी शय्यामां सूती हती.

ते शय्यानुं स्वरूप कहे छे-प्रथम तो जेनुं स्वरूप कहेवामां आवे नहीं एवुं तो वसवानुं घर छे ते घर कहेवुं छे तो के ते घरनी मध्य एटले भींतनी मांहेनी बाजु चित्रें चित्रित छे अने भींतनी बाहेरनी बाजुने घसीने धोली चलकादार करी छे एवुं ते घर छे जेमां ऊपरनो भाग चित्राम सहित छे अने जमीननो भाग तो जेवो मणिरत्नोनो उद्योत होय तेवो छे तेथी ते घरमां सर्व अंधकारनो नाश थइ गयो छे, अने नित्य उद्योत रहे छे वली जेने विषे जमीन ऊपर अनेक मांडणा मांड्या छे एवुं आंगणुं छे वली आंगणे सरस सुगंधि पांच वर्णना फूलनां पुंज मूकेला छे ते फूलोनी रचना सहित छे तथा कृष्णागर भलो कुंदरु शिलारस तेनो धूप तेणे मघमघायमान छे तेणे करी मनोहर छे सुगंध प्रधान चूर्णनो गंध छे ज्यां, गंधवट्टी समान छे. अने पुण्यवंतने योग्य जेनुं वर्णन करवामां न आवे एवी शय्या छे तेने विषे शरीर प्रमाणे बे पासे ओशीसा (तकीया) राख्या छे, बे पासे गालमसूरीयां मूकेलां छे, बे पासे ऊंची छे, मध्यमां ऊंडी छे, जेम गंगानदीनी रेतिमां पग मूकीये ते नीची जाय तेम जेमां पग मूकतां नीचो जाय ते समान नीसार्यो अतलसना पटकूल वस्त्रें ते पलंग ढांकी छे, भली मच्छरदानीथी रचित, रजरक्षाना वस्त्र लाल रमणीक सुकोमल वस्त्रे ढांकी छे; आकडानां फल मांहेलो कपास तथा माखण ते सरखो ते शय्यानो स्पर्श छे, भलुं

सुगंधित चूर्ण तथा फूलो जेने विषे बिछाव्यां छे, एवी शय्या ते शय्याने विषे मध्यरात्रिना अवसरमा त्रिशलाक्षत्रियाणी अल्पनिद्रामा सुती छे ते वेलाए ते गजवृषभादिक चौद स्वप्ना देखीने जागी

त्रिशलाक्षत्रियाणी चौद स्वप्नामाथी पहेले स्वप्ने हाथी देखे ते हाथी कहेवो छे तो के ? चार दात वालो छे, घणो ऊचो छे, जेवा मेघना छाटा धोला थाय तेवो धोलो छे, तथा जेवो मोतीनो हार, क्षीरसमुद्रनु पाणी, चद्रमाना किरणो, पाणीना कणीयां, अने रूपानो पर्वत होय तेवो सरखो धोलो छे, वली ते हाथीना कुमस्थलमाथी मद झरे छे तेथी तेना कपोल पासे भमरा गुजारव करी रह्या छे, इद्रना ऐरावत सरखो म्होटो देखाय छे, ते हाथी मेघनी पेरे गंभीर शब्दोथी गाजतो थको छे, शुभ उत्तम सर्व लक्षणे करी सहित, म्होटा पेट वालो एवो हाथी पहेले स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणीए दीठो

बीजे स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणी वृषभ देखे ते वृषभ कहेवो छे तो के ? धोला कमलना समूह सरखो श्वेत छे, तथा पोताना शरीरनी कांतिए करी सर्वदिशाओमां उद्योत करतो थको छे, तथा घणी शोभाना समूहे करी शोभित एवी खाधानी थूभि छे जेनी एवो छे, वली तेना शरीरमा पातला केश छे ते केश जाणे तेलें चोपड्या होय नहिं ? एवा छे, घणो रूडो स्थिर शरीर छे, वली ज्या जेवु अंग जोइये त्यां तेवुं अग छे, जेनु पटले ज्यां पातलु अंग शोभे त्यां पातलुं छे अने ज्यां जाडु अग शोभे त्यां जाडु अग छे, तथा दृढ गोल शोभायमान मल-रहित तैलादिकें चोपड्या तीखां एवा बे शींगडा छे, तथा मोती सरखा ऊजला बरोबर सरखा शोभता दांत छे जेना, एवो वृषभ ते जाणे अनेक मगलनुज मुख होय नहिं ? तेने बीजा स्वप्नामां त्रिशलाए दीठो

त्रीजा स्वप्नामां त्रिशलाराणी सिंहने देखे ते सिंह कहेवो छे तो,

के ? मोतीनो हार, खीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरण, पाणीना कणीया, तथा रूपानो पर्वत तेना सरखो धोळुं शरीर छे जेनुं, वली ते सिंह रमणीक देखवा योग्य छे, तथा दृढ छे हाथ प्रमुखना अवयव जेना, वली उज्ज्वल गोल अने तीक्ष्ण एवी जेना मुखमां दाढा छे तेणे करी मुख शोभतुं छे जेनुं, वली कमल सरखा सुकोमल राता एवा जेना होठ छे, राता कमलना पत्रनी परें सुकोमल तालवुं छे, जीभ बाहेर काहाडतो थको लपलपायमान करतो थको शोभे छे, वली पीला अने वीजली सरखा चलकतां चंचल जेनां नेत्र छे, वली विस्तीर्ण पुष्ट अने माता एवा साथल छे जेना, स्कंध जेनुं दृढ परिपूर्ण निर्मल छे, वली सुकोमल छे भला विस्तीर्ण एवां जे सिंहकेसरा (मुखना केश) तेने आटोपे करी शोभित छे मुख जेनुं, वली जमीन ऊपर पछाडीने (फटकारीने) ऊंचुं कर्युं छे पूंछ जेणे एवा पूंछडानो अंत एटले छेडो काननी वचमां छे, वली सौम्याकारवालो लीला करतो थको आकाशमांथी उतरतो थको त्रिशलाना मुखमां पेसतो थको तीक्ष्ण नखवालो सिंह त्रिशलाए त्रीजा स्वप्नामां दीठो.

चोथा स्वप्नामां त्रिशलाक्षत्रीयाणी संपूर्ण पूर्णिमाना चंद्रमा सरखुं छे मुख जेनुं एवी लक्ष्मीदेवताने देखे ते लक्ष्मी किहां रहे छे ते कहे छे–ऊंचो हिमाचल पर्वत तेनी ऊपर एक पद्मद्रह छे ते द्रहमां एक कमल छे त्यां रहेवा वाली लक्ष्मी देवता तेनो पगथी लइने सर्व अंगनी शोभानुं वर्णन श्रीभद्रबाहुस्वामी करे छे केमके प्रायें देवताना रूप वर्णनमां पगोथी वर्णन कराय छे माटे अहीं पण पगोथी मांडीने वर्णन करे छे, ते लक्ष्मीदेवीना पग भले प्रकारे करी सोनाना काचबा सरखा जाणे लाखने रसे रंग्या मांस सहित एवा वचमां अति ऊंचा अने पछवाडे नम्या एवा छे, तथा त्रांबा सरखा नख छे, कमल सरखा कोमल आंगळां छे, पिंडिओ केळ सरखी गोल छे, नीचे नीचे पातली अने

ऊपर ऊपर जाडी एवी जघापिंडियो छे, गोडा मांसथी भरेला छे माटे गुप्त छे हाड देखाय नहीं, तथा ऐरावत हाथीना सरखो जंघानो वचलो प्रदेश शोभे छे, सोनानी कटिमेखला छे केडमां जेनी, वली लक्ष्मी-देवीनी नाभीथी लइने स्तन सुधी रोमराजी छे, प्राये स्त्रीयोना शरी-रमां रोमराजी होती नथी तेमां वली देवताने तो सर्वथा नहीज होय तो पण कवीश्वर श्रृंगाररस वर्णन करतो बोले छे. हवे ते रोमराजी कहेवी छे तो के कज्जलनी पेरे तथा भमरानी श्रेणीनी पेरे श्याम छे, मेघ घटा सरखी काली छे, सरल मलेला थका सुकोमल, मनोहर–विलास सहित सरस सूका फूल सरखा कोमल छे, वली नाभिमडल भलु छे जेनु, मुष्टीमां समाइ जाय एवी कटि छे, पेटमा त्रण सल पड्या तेथी शोभायमान छे, वली सर्वांगोपागमा घरेणा आभूषण पहेरेला छे ते घरेणा कहेवा छे तो के अनेक प्रकारना मणियोथी जडेला छे, रत्नोए करी सोनामां मढ्या छे, वली हृदयमा बे स्तन छे ते जाणे सोनाना कलश ज होयं नहि ? एवां छे, वली ते स्तन हारें करी तथा कुदमालाए करी व्याप्त छे तथा भला मोतीयोना जालीयां तेणे करी विराजमान सोनैयानी माला क्याएक मणिसूत्रनो दोरो छे तेणेकरी कठ शोभायमान छे, बे कानोमा कुडल बे शोभे छे, एवा घरेणाना समुदायथी लक्ष्मी देवतानु मुख शोभे छे, जेम राजा कुटुंबथी शोभे छे तेम लक्ष्मीदेवीनु मुख घरेणाथी शोभे छे, वली निर्मल कमलनी पांखडी सरखा दीर्घ तीखां अने अणीयालां एवां महोटां नेत्र छे जेनां बे हाथमां कमल छे तेमाथी पाणी छटकावती थकी छे, वली लीलाने वास्ते हाथमां कमलवींजणो धारण करेलो छे, ते जेवारे कमल लीलाने सारु हलावे तेवारे कमलमांथी सुगध निकले, वली लक्ष्मीदेवीने मस्तके वेणीदड घणो निर्मलता भर्यो कालो छे लाबो केड सुधी शोभे छे. ए नखथी मांडीने मायानी वेणीसुधी वर्णन कर्यु. एवी लक्ष्मीदेवता पद्म-

द्रहना कमलमां वसती हिमाचलनामा पर्वत ऊपर वेठी थकी दशदि-
शाथी शोभायमान छे, वली हाथी आवी सूंढमां पद्मद्रहथी जल भरीने
लक्ष्मीदेवीने स्नान करावे एवी लक्ष्मीदेवताने त्रिशलाक्षत्रियाणीए चोथा
स्वप्नमां दीठी. हवे हिमाचल पर्वत ऊपर लक्ष्मी देवतानो निवास छे
त्यां ए देवीनो परिवार केटलो छे तथा निवास केवा प्रकारनो छे ? ते
कहे छे—आ भरतक्षेत्रना छ खंड छे तेना अंतमां उत्तरदिशा तरफ एक
चुल्लहिमवंत पर्वत सोनानो छे ते एकसो योजन ऊंचो छे, तथा एक
हजार वावन योजन अने वार कला ऊपर, एटलो पोहोलो छे, ते मध्ये
पद्मद्रह छे, ते दश योजन ऊंडो, हजार योजन लांवो, पांचशे योजन
पोहोलो छे, संपूरण जलेकरी भर्यो शाश्वतो छे, तेनुं तलीयुं वज्ररत्नमय
छे, चोफेर पण वज्रमय छे, ते द्रहना मध्यभागे एक कमल छे, ते कम-
लनुं नाल दश योजननुं दीर्घ छे, जलथी ऊपर वे कोश ऊंचुं छे, एक
योजन पोहोलुं छे, एक योजन दीर्घ छे, कांइक जाजेरा त्रण योजननी
परिधी छे, दश योजन पाणीमां नाल छे, तेनुं वज्र रत्नमय मूल छे,
रिष्टरत्नमय मूलनो कांदो छे, इंद्रनील रत्नमय नाल छे, राता सुवर्ण-
मय वाहेरना पांदडां छे, कांइक जांवूनद (सुवर्ण) मय अभ्यंतरनां
पांदडां छे, तेमां सुर्वणमय कर्णिका छे, एटले वचली डोडी छे, ते वे
कोश पोहोली अने एक कोश ऊंची छे, तेमां रातां सोनानां केसरां छे
ते कर्णिकामां श्री लक्ष्मी देवीनुं भवन छे, ते एक कोश लांवुं, अर्द्ध
कोश पोहोलुं अने चउदशें चालीश धनुष ऊंचुं छे, ते घरना
वारणां पूर्व, दक्षिण अने उत्तर एवी त्रण दिशाए छे, ते वारणां पांचशें
धनुष ऊंचा अने अढीशे धनुष पोहोलां छे, वली ते घरमां अढीशें
धनुष प्रमाण एक मणिमय पीठिका छे, ते पीठिका ऊपर लक्ष्मी देवीनी
शय्या छे, हवे त्यां ए देवीनां मुख्य कमलनी पांखडिये लक्ष्मी देवीनां
आभरणादिक मूकवानां वलयाकारे एकशो ने आठ कमलो छे, ते कम-

लोनु सर्व ऊंच नीचपणु मुख्य कमलथी अर्धो जाणवु ए एकसो ने आठ कमले करी ते मूल कमल वींटायेलु छे, जेम गढें करी नगरी विंटायेली होय छे, तेम जाणवु. हवे ते मूलगा कमलना वीजा वलयनी पूर्व दिशाए महर्द्धिक चार देवीओने वसवानां चार कमल छे, तथा वायव्य कोण, उत्तर दिशा, अने ईशानकोण, ए त्रणे दिशाए देवीना सामानिक देवताने वसवाना चार हजार कमल छे, तथा श्रीदेवीनी अभ्यतर पर्षदाना जे आठ हजार गुरुस्थानीय देवता छे, तेने वसवाना आठ हजार कमल अग्निकोणे छे, तथा मध्य पर्षदाना दश हजार मित्र स्थानीय देवताने वसवाना दश हजार कमल दक्षिण दिशाए छे, तथा श्रीदेवीना बाह्य पर्षदाना किंकर स्थानीय बार हजार देवताने वसवाना बार हजार कमल नैऋतकोणे छे, अने श्रीदेवीना हाथी, घोडा, रथ, पायक, महिष, नाट्य, गंधर्व ए सात कटकना स्वामीने रहेवानां सात कमल पश्चिम दिशाए छे वली लक्ष्मीदेवीना अंगरक्षक शोल हजार देवताने वसवाना शोल हजार कमल, ते त्रीजा वलयनी चार दिशामाहेली प्रत्येक दिशाने विषे चार चार हजार कमल गणता शोल हजार कमल छे, तथा चोथा वलयने विषे श्रीदेवीना अभ्यतर आभियोगिक बत्रीश लाख देवताने वसवाना बत्रीश लाख कमल छे, तथा पांचमा वलयने विषे श्रीदेवीना मध्यम चालीश लाख आभि योगिक देवताना चालीश लाख कमल छे, तथा छट्ठा वलयने विषे श्री देवीना अडतालीश लाख बाह्य आभियोगिक देवतानां अडतालीश लाख कमल छे, एव मूल कमल सहित सर्व मली छ वलयना एक क्रोड, वीश लाख, पचास हजार, एकसो ने वीश कमल जाणवा ते कमलना मान मुख्य कमलथी मांडी अनुक्रमे अर्द्ध अर्द्ध प्रमाण लेवा ए सर्व कमलवासी देवता श्रीदेवीनो परिवार जाणवो ए देवी भवनपति माहेली जाणवी

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते—
श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे द्वितीय व्याख्यान समाप्तम् ।

अथ तृतीय व्याख्यान प्रारंभः ।

पांचमा स्वप्नमां फूलोनी माला देखे, ते मालामां रस सहित कल्पवृक्षना फूल, तेणे करी घणी मनोहर छे; वली चंपाना फूल, अशोकनां फूल, पुन्नागनां फूल ते नागप्रियंगु सरखा ए फूलनां झाड थाय छे; मोगरानां फूल, मालतीनां फूल, जायनां फूल, जूइना फूल, कोल्लज फूल ते कोइ वेलि विशेषना फूल, कोजनां फूल, कोरंटनां फूल, दमणाना फूल, नवमालिकानां फूल, वकुलवृक्षनां फूल, तिलवृक्षनां फूल, वासंतिकाना फूल, पद्मकमलनां फूल, उत्पल ते पुंडरीकनां फूल, कुंदमचकुंद वृक्षनां फूल, अगथियाना फूल, आम्रमांजर एवा प्रकारनां फूलोनी घणी सुगंध छे जेमां एवी वे फूलोनी माला तेनी मनोहर सुगंधथी खेंचाणा थका आव्यां एवां जे भमरा भमरीयो तेनो गुंजारव शब्द जेने विषे थइ रहेलो छे. वली ए वेउ मालामां सर्व ऋतुनां फूल सुगंधी पांच वर्णा छे, परंतु तेमां धोलो वर्ण विशेष छे, ते ज्यां ज्यां जे जे फूल शोभे त्यां त्यां ते ते फूल गुंथ्यां छे एवी वे माला पांचमा स्वप्ने त्रिशलादेवीए दीठी.

छट्ठा स्वप्नमां चंद्रमा देखे ते चंद्रमा केवो छे ? तो के गायना दूधना फीण सरखो ऊजलो छे, रूपानां कलश सरखो धोलो छे, वली हृदय अने नेत्रने वल्लभ, संपूर्ण पूर्णिमाना अंधकारने हरवावालो, वली शुक्लपक्षमां शोभायमान, कुमुदवननो बोध एटले उघाडवा वालो, रात्रिनी शोभाने करवा वालो, भली रीते उजला काचनी परे शोभायमान, आकाश रूप तलावनो हंस, वेउ पक्षें करी पूर्ण, सर्व ज्योतिषियोना मुखनुं मंडन, अंधकारनो वैरी, कंदर्पवाणनो पूरवा वालो, समुद्रनां जलनो वधारवा वालो केमके ज्यारे शुक्लपक्षमां चंद्रमा उगे त्यारे समुद्रनी वेल वधे छे. विरहिणी स्त्रीने चंद्रना उदयथी अधिक विरह जाग्रत

थाय ते माटे विरहिणीयोने किरणोए करी शोषण करवावालो, आकाशनु तिलक, रोहिणीना हृदयने वल्लभ केमके चद्रमा रोहिणीनो भरतार छे एवी लोकोमा केवत्त छे, परतु रोहिणी तो नक्षत्र छे ते बने नहीं एवो पूर्णिमानो चद्र त्रिशलादेवीए छट्टा स्वप्नामा दीठो

सातमे स्वप्ने सूर्य देखे ते सूर्य केवो छे ? तो के अधकारनां पडलने फोडवावालो, वली रातो वर्ण छे ते वर्ण केवो छे ? तो के राता अशोक सरखो, केशूडाना फूल सरखो लाल छे, जेवु पोपटनुं मुख लाल होय, जेवी अर्द्धि चिणोठी लाल होय तेवो सूर्य लाल छे, वली कम लना वननो उघाडवा वालो छे, ते माटेज कमलनी शोभा करवा वालो छे, ज्योतिषशास्त्रनो तथा ज्योतिषचक्रना चिह्न सरखो ओलखाणनो करवा वालो छे, आकाशमा दीवानी पेरे शोभे छे, ऊगतो थको हेमना समूहने हाथथी गरदन पकडीने कहाडवावालो, वली ग्रहोनो राजा छे, रात्रिनो नाश करवावालो छे, वली ऊगती वेलाए तथा आथमती वेलाए वे घडी पर्यंत सुखे दीठामां आवे पछी सुखे दीठामां आवे नहीं, वली रात्रिना विचरवावाला जे चोर आदिक तेमनु भ्रमण मटाडवा वालो, वली शीतने मथन करवावालो, मेरुपर्वतने पाखति निरतर म्होटा मडल सहित भमवावालो, वली सूर्यना हजार किरणोए करी सर्व ज्योतिषीओनी प्रभा मटाडवावालो इहा सूत्रकार सूर्यनी हजार किरणो कहे छे ते जघन्यआश्रित जाणवी अने लोकमां पण सहस्र किरण कहेवानी रूढी छे, परतु सूर्यना किरणोमां तो महीने महीने वधघट थाय छे ते आ प्रमाणे–चैत्रमा १२०० किरणो, वैशाखमा १३०० किरणो, ज्येष्ठमा १४०० किरणो आपाढमां १५०० किरणो, श्रावणमा १४०० किरणो, भादरवामा १४०० किरणो, आसोजमा १६०० किरणो, कार्त्तिकमा ११०० किरणो, मार्गशिरमा एक हजार ने पच्चास किरणो, पोषमा हजार किरणो, माघमा साडादशसो किरणो, फाल्गुनमा अगीआरसो किरणो छे एवो सूर्य लोकोना चक्षु समान त्रिशलादेवीए सातमे स्वप्ने दीठो

आठमे स्वप्ने ध्वजा देखे. ते ध्वजा केवी छे ? तो के सोनानो जेने दंड छे ते ऊपर रहेली छे, पांच वर्णना वस्त्रनी ध्वजा छे, वली ते ध्वजानी ऊपर सुकोमल अनेक रंगनां मोरपीछ धर्यां छे ते चोटी सरखा शोभायमान छे तथा घणो श्रीकार छे, तथा ते ध्वजामां सिंहनुं रूप लख्युं छे तेणेकरी वली बहुज शोभे छे, ते सिंह केवो छे के जेवो शंख ऊजलो, कुंदवृक्षनुं फूल ऊजलुं, जलनो कणीयो ऊजलो तथा रूपानो कलश ऊजलो होय तेवो श्वेतवर्णवालो छे; जे सिंहने देखीने लोक एवुं समजे छे के–आ सिंह आकाशमंडल भेदवाने उद्यम करे छे के शुं ? एवी ते सिंहनी मुखाकृति तथा शरीराकृति छे, जे ध्वजानुं वस्त्र वायरानी लहेरोथी थोडुं थोडुं चलायमान थइ रह्युं छे, वली घणो ऊंचो लोकोने देखवा योग्य एवो ध्वज आठमा स्वप्नामां त्रिशलादेवीए दीठो.

नवमा स्वप्नमां पूरण कलश देखे. ते कलश केवो छे ? तो के उत्तम देदीप्यमान छे रूप जेनुं, निर्मल जलथी भर्यो थको घणोज सुंदर छे, सूर्यमंडल सरखी जाज्वल्यमान शोभा छे जेनी, वली जे कलशनी पासे कमलनी वाडी छे एटले कमलोथी वींटायेलो छे, वली ते कलश सर्व मंगलोनो मलाववा वालो छे, वली ते पूरण कलश, प्रधान रत्नोनुं कमल तेना ऊपर धरेलुं छे, नेत्रोने आनंद आपवा वालो छे, सर्व दिशाओमां उद्योत करतो थको सर्व लक्ष्मीनो घर तेनी परे सर्व पाप रहित सर्व शोभा सहित लक्ष्मीनो निवास छे, वली जे कलशने गलामां छ ऋतुना सुगंधि फूलोनी माला छे, एवो पूर्णकुंभ (कलश) भलो रूपामय ते नवमे स्वप्ने त्रिशलाराणीए दीठो.

दशमा स्वप्नामां पद्मसरोवर देखे. ते पद्मसरोवर केवुं छे ? तो के जे सरोवरमां ऊगता सूर्यथी उघड्यां एवां हजार पांखडीनां कमलो छे, ते विकस्वरमान कमलनी वासनाओथी जेनुं पाणी सुगंधमय थयुं छे, वली ते कमलोनी प्रभाओथी पाणी लाल पीला रंग जेवुं देखाय छे,

वली जे पद्मसरोवर जलमत्स्य कच्छपादिक अनेक जलचर जीवोथी सेवायमान छे, वली जे पद्मसरोवरमा कमलपत्र ऊपर पड्यो जलनो छाटो तेणे करी जाणे नीला आगणामा मोती जड्या होय नहिं ? एवु देखाय छे, वली ते म्होटु सरोवर छे तेमां सूर्यविकासी कमल, चद्रविकासी कमल, नील कमल, महापद्म (श्वेत) कमल, राता कमल, इत्यादिक कमलनी शोभा बनी रही छे तेथी घणुज रमणीय थयु छे, वली ते कमलो ऊपर प्रसन्न थया एवा भमरा भमरीयो आवीने गुजारव करी रह्या छे वली तिहा कादवक हस, चकवा, राजहस, वगला, सारस, एवा पखीयोथी ते करी शोशायमान छे, अर्थात् ए जातियोना पखीयो त्या रहे छे, एवो पद्मसरोवर त्रिशलादेवीए दशमा स्वप्नामा दीठुं

अगीआरमा स्वप्नामा खीरसमुद्र देखे ते खीरसमुद्र केवो छे ? तो के चद्रमाना किरणोनी जेवी शोभा तेवी शोभा ते समुद्रमा छे, वली चारे बाजु समुद्रनु जल वृद्धि पामेलु छे, वली तेमाथी चचलथी पण घणा चचल एवा घणा ऊचा कल्लोल उठी रह्या छे, ते कल्लोले करीने पाणी घणुज चचल थयु छे, वली मदमद वायराथी चलायमान थया जे कल्लोल ते समुद्रना तट ऊपर आवीने भफाका खाइ रह्या छे, तेनो शब्द थइ रह्यो छे जेनेविषे, ते कल्लोलोथी समुद्र शोभी रह्यो छे, वली ते कल्लोल मल्या थका दोडता छे एटले एक कल्लोलनी पछवाडे बीजो कल्लोल दोडी रह्यो छे, पहेलो एक न्हानो कल्लोल चाले, वली म्होटो कल्लोल चाले, एवी कल्लोलोनी शोभा छे जेने विषे, वली जे समुद्रमा जलचर जीव कल्लोल करी रह्या छे, ते केवा जातिनां तो के महा मगरमच्छ, तिर्मिगलमच्छ, लघुमच्छ ते सर्वे परस्पर मल्या थका रमत करे त्यारे तेमनां पूछना उलालवाथी उछल्यु जे पाणी तेमाथी फीण प्रगट थइ ते फीण कल्लोलोथी तणाइने किनारा पर आवी पडे छे, तेनां ढगला थइ गया छे ते ढगला सर्वे कपूरना ढगला सरखा देखाय छे, वली जे समुद्रमा

ऊजलो निर्मल पीलो अने लाल वर्णवालो, वली मधु अने घृतथी सींच्यो थको, निर्धूम धगधगायमान जाज्वल्यमान शिखावालो, वली ते अग्निमां अनेक न्हानी शिखाओ छे, वली तेथी कोइक शिखा अधिकी वली ते अधिकथी पण वली कोइक शिखा ऊंची केटलीक शिखाओ, वली घणीज न्हानी एवी अनेक ज्वालाये करी अग्निनी शिखा मली रही छे, वली जे अग्निमां अनेक ज्वालाओ मांहोमांहे मली रही छे, एवा धूम्र-रहित अग्निनी ज्वालाओ ते कोइ आकाशप्रदेशमां चालती होय तेनी पेरे घणी चपल अग्निनी शिखा त्रिशलादेवीए चौदमां स्वप्नामां दीठी. आ स्वप्नामां बारमे स्वप्ने देवतानुं विमान कह्युं ते जे तीर्थंकरनो जीव देवलोकथी चवीने मातानी कुखमां आव्यो होय तेनी माता विमान देखे अने जे तीर्थंकरनो जीव नरकथी निकली मातानी कुखमां आव्यो होय तेनी माता बारमा स्वप्नामां भुवन देखे एवो रहस्य छे.

एवा चौद स्वप्नां देखीने त्रिशला राणी जागृत थइ. ए स्वप्नां केवां छे ? तो के शुभ छे, सौम्य भलां छे, घणुं रूडुं वल्लभ छे दर्शन जेमनुं, भलुं रूप छे जेमनुं, एवां स्वप्नां देखीने त्रिशलामाता जागी ते केवी छे ? तो के जेवां कमल उघडे तेवां नेत्र विकसित थयां छे जेनां, हर्षना वशथकी सर्वअंग हर्ष सहित थयुं, सर्व रोमराजी उल्लासित थइ. ए चौद स्वप्नां सर्व तीर्थंकरोनी माताओ ज्यारे तीर्थंकर गर्भमां आवे त्यारे देखे, तेम त्रिशलादेवी पण श्रीमहावीरस्वामी कूखमां आव्या तेना योगे चौद स्वप्नां देख्यां. तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी पूर्वे कह्या एवां चौद स्वप्न देखीने जागती थकी घणीज पोतानां हृदयमां खुशी थइ, संतोष पामी, जेवुं मेघनी धाराए करी हणायुं कंदब वृक्षनुं फूल तेनी पेरे उल्लास पाम्या छे रोमकूप जेनां, अर्थात् रोमरोम हर्ष पाम्या पछी ते स्वप्नाने याद करे के अनुक्रमे में अमुक अमुक स्वप्नां दीठां एवी रीते याद करीने उठे, उठीने बाजोट उपर पग आपीने हेठी

उतरे, उतरीने नहीं उतावली एटले मनमां उतावल नथी तथा कायाथी चपलपणु नथी, रस्तामा ठोकर रहित, विलब रहित, भींत प्रमुखना ओठींगणने न लेती थकी, राजहंसी सरखी गतिये करी चालती थकी ज्यां सिद्धार्थ क्षत्रिय राजानी शय्या छे, ज्यां सिद्धार्थक्षत्रिय राजा पोढ्या छे, त्यां आवी, आवीने, सिद्धार्थक्षत्रियराजाने एवी वाणीथी जगावती हवी ते केवी तो के–जे सिद्धार्थराजाने वल्लभ लागे, सिद्धार्थराजा एवी वाणीनी सर्वदा चाहना करे, एवी वाणी तथा द्वेष रहित, सर्वना मनने गमती, वल्लभपणानी चेतवणी करवा वाली, स्वर अक्षरे करी स्पष्ट, कल्याणनी करवा वाली, वृद्धिनी करवा वाली, निरुपद्रव अर्थात् उपद्रव रहित, धनना लाभनी करवावाली, मगलनी करवावाली, श्रीकार अलकारादि शोभा सहित, हृदयमां कोमल लागे, जे वाणी सांभलवाथी मनमां आनद थाय, अने कोमल, मीठी, रसयुक्त जेमां वचन थोडा अने अर्थ घणो एवी वाणीथी त्रिशलादेवी पोताना भरतारने जगावती हवी, सिद्धार्थराजा जाग्यो, त्यारे त्रिशला राणी सिद्धार्थराजानी आज्ञाथी नाना प्रकारना मणिरत्नोथी जड्यो एवो सोनानो बाजोट ते ऊपर पलोठी वालीने बेठी, रस्तानो खेद मटाडीने सुखे बेठी, बेसीने सिद्धार्थराजा प्रत्ये जेवी रीते पूर्वे वर्णन करी आव्या एवी वाणीये बोली–हे स्वामिन्! निश्चे आज पूर्वोक्त शयामा कांइक सुतां काइक जागतां में गज वृषभ आदि जे पूर्वे कही आव्या ते चौद स्वप्ना दीठां. देखीने जागी, ते म्होटा स्वप्नानु फल मन्हें शु थाशे? तेवारे सिद्धार्थराजा त्रिशलाना मुखथी एवा स्वप्न साभलीने, हर्ष सतोष पामीने, चित्तमां आनद पाम्यो थको, प्रीतिकारी परम सौम्य हर्ष हृदयमां फेल्यो, जेम मेघनी धाराए छटायेलु एवु कदबवृक्षनु फूल तेनी पेरे उल्लासित थयो थको, सांभलीने तेनो विचार कर्यो, पोताना स्वभाव प्रमाणे, पोतानी बुद्धि विज्ञाने करी ते स्वप्नोनो अर्थ ग्रहण

कर्यो, अर्थ ग्रहण करीने त्रिशलाराणीने मीठे वचने करी एवुं कहेवा लाग्यो के–देवानुंप्रिया ! तें मनोहर स्वप्नां दीठां, तें कल्याणकारी स्वप्नां दीठां, शिवकारी, धनकारी, आरोग्यकारी, घणा दीर्घायुना करवा वाला तें स्वप्नां दीठां तेनुं फल आवी रीते छे–तमोने अर्थनो लाभ थाशे, भोगनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, राज्यनो लाभ थाशे, ए निश्चय नवमहीना ऊपर साडा सात दिवस गये थके अमारा कुलमां ध्वजा समान, अमारा कुलमां द्वीप समान, अमारा कुलमां दीवा समान, अमारा कुलमां पर्वत समान स्थिर, अमारा कुलमां मुकुट समान, अमारा कुलमां तिलक समान, अमारा कुलमां सूर्यसमान, कुलनो आधार, कुलनी वृद्धिनो करवावालो, कुलनी कीर्त्तिनो करवा वालो, कुलना निर्वाहनो करवा वालो, कुलना यशनो वधारवा वालो, कुलमां वृक्षसमान, घणा लोकोने छत्रछायामां राखवाथी कुलनी विशेष वृद्धिनो करवा वालो राजाओनो राजा एवो पुत्र थाशे. वली सुकोमल छे हाथ पग जेना, संपूर्ण पांचेंद्रिय परवडी छे जेनी. लक्षण, व्यंजन अने गुणे करी सहित, मानोन्मान प्रमाण सर्व शरीर सुंदर, चंद्र- मानी पेरे सौम्याकार, मनोहर दर्शन करवा योग्य, एवो पुत्र तुजने थाशे ते पुत्र बालक अवस्था छांडीने जेवारे विज्ञान अव- स्थामां आवशे तेवारे सर्व कलाओने मात्र देखवाथीज जाणी लेशे पण तेने शीखाववुं पडशे नहीं. वली युवान अवस्थामां शूर वीर, महा- दानेश्वरी, स्वप्रतिज्ञा निर्वाहक एटले पोते अंगीकार करेली वातनो निर्वाह करवावालो, संग्राममां वीर एटले पाछो भागे नहीं, जमीन ऊपर राज्य करवावालो, घणा हाथी, घोडा, रथ, पायदल, प्रमुखनो मालक एवो राजाओनो राजा थाशे तेमाटे तमे उदारकारी स्वप्नां दीठां. एवी रीते सिद्धार्थराजा बेवार त्रणवार त्रिशलाराणीने कहे, प्रशंसा करे, तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी सिद्धार्थराजाना मुखथी आ वात सांभलीने

हर्ष सतोष पामी, यावत् हाथ जोडीने, मस्तकें अजली करीने, एवु बोली स्वामिन् ! ए अर्थ एमज छे. तमे कह्यु ते तहत्त छे, सदेह रहित छे जे प्रमाणे म्हे वांछ्यो हतो, तेज प्रमाणे म्हे आपना मुखथी ग्रहण कर्यो, एम जे तमे कहो छो ते अर्थ सत्य छे एवी रीते वारवार कहीने स्वप्नोनां अर्थने रूडीरीतथी अगीकार करीने, सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने नाना प्रकारना मणीए जटित एवा सोनाना बाजोट ऊपरथी उठीने, नहीं उतावली नहीं धीरी एवी पूर्वे कहेली रीत मुजब चालती थकी ज्या पोतानु शयन घर छे त्यां आवीने जे म्हारे उत्तम स्वप्ना दीठामां आव्यां तो हवे म्हारे सूवु नहीं, जो सुइ जाउ तो वली कदापि बीजा कोइ पाप रूप खोटा स्वप्ना आवी जाय तो ए रूडा स्वप्नानु फल जातु रहे तेमाटे देव गुरु सबधि रूडी मगलकारी, शुभकारी, धर्म कथा कहीने रात्रि पूरण करु एवु जाणीने स्वप्न जागरण करती थकी, पोते जागती बीजाने जगावती विचरे

तेवार पछी प्रभात समये सिद्धार्थराजा कौटुंबिक सेवक पुरुषने बोलावीने एम कहेतो हवो के उतावलथी जाओ हे देवानुप्रिय ! आज सारी रीते बाहिरनी उवट्ठाणशाला (कचेरी) छे तेने गधोदकथी सींचो, कचरो कांटो काहाडीने साफ करो, लींपो, लींपीने पछी प्रधान सुगंधि पांचवर्णना फूल तेना ढगला करावो, कृष्णागर, कुदरु, शिलारस तेना धूप उखेवो अने सुगधना चूर्णनी गोली, अगरवती उखेवो, सुगधे अभिराम करो, सुगधे वासित करो, गंधनी घाट मूको, आ काम तमे करो, बीजा कोइनी पासे करावो, आ म्हारी आज्ञा पाछी तत्काल सोंपो. तेवारे कौटुंबिक पुरुष एवुं सांभली घणोज खुसी थइने हाथजोडी तहत्ति करीने, सिद्धार्थ राजा पासेथी निकलीने ज्यां बाहेरनी सभा छे त्यां आवीने गधोदक छांटनादि सर्व काम राजाना हुकम प्रमाणे करीने यावत् त्यां सिंहासन माडीने ज्या सिद्धार्थ क्षत्रियराजा छे त्यां

आवीने, हाथ जोडी मस्तके अंजली करी बोल्यो के स्वामिन् ! जे आपे फरमाव्युं ते सर्व काम अमे करी आव्या एम कही आज्ञा पाछी सोंपी.

तेवार पछी कांइक रातुं धोलुं पीलो प्रभात थयुं. सूर्यविकासीकमल फूल्यां, चंद्रविकासी कमल कुमलाणा, उज्ज्वल प्रभात थयुं, सूर्य ऊग्यो ते सूर्य केवो छे ? तो के राता अशोक सरखो लाल छे, केसुना फूल सरखो लाल छे, सूडाना मुख सरखो लाल, अर्द्धि चिणोठी सरखो लाल ममोलीयो जीव थाय छे तेना जेवो रातो. बफोरीयाना फूल सरखो लाल, कबूतरना पग नेत्र सरखो लाल, जासूसना फूल सरखो लाल हिंगलुना ढगला सरखो लाल ए पूर्वे कही जे वस्तु तेवी कोइ पण लाल वस्तु होय तेथी पण अधिक लाल कमलाकर नामे तलावने विषे घणा कमलोने उघाडतो थको एवो सूर्य ऊग्यो, हजार किरणनो धरनार, दिवसनो करवावालो, तेजेकरी जाज्वल्यमान, जेना किरणोथी अंधकार नाश पाम्यो छे, चोरना प्रचारने टालनारो. कुंकुमनी प्याली ते सरखो. लाल ते सूर्यनो नवो तावडो (तडको) ते तावडे करी जाणे कुंकुम सरखो सर्व मनुष्यलोक लाल थयो छे, एवुं प्रभात थयुं, तेवारे राजा शय्याथी उठीने बाजोट ऊपर पग मूके, बाजोटथी हेठो उतरे, उतरीने, ज्यां मल्लयुद्ध करवानी शाला छे त्यां आवीने मल्लयुद्धशालामां प्रवेश करीने, अनेक प्रकारनी मल्लयुद्धनी कलाओ करीने थाका पछी, सो औषधीना पाकनुं तेल, हजार ओषधीना पाकनुं तेल, सुगंध प्रधान तेल प्रमुख बीजा पण तेल जे धातुनी वृद्धि करवा-वाला, जठराग्निने दीपाववावाला, कामदेवनी वृद्धि करवावाला, मांसने पुष्ट करवावाला, बलवृद्धि करवावाला, सर्व इंद्रिय शरीरने उल्लास कर-वावाला, जेना अभ्यंगन थकी चामडीमां तेजनी वृद्धि थाय एवां अनेक जातिनां तेल ते तेलना मसलवावाला कहेवा छे के घणा चतुर, जेमना हाथ पग घणा सुकोमल छे, ते तेलने मसलता थका हाथना तलांनो

जे मल ते शरीरमां समावी आपे, एवी क्रियामां दक्ष, परिपूर्ण छे हाथ पग जेना, अवसरना जाण, उतावलथी कार्यना करनार, सर्व मर्दन करवा-वालामां उत्कृष्ट, विवेकवंत, बुद्धिवंत, डाह्या, पंडित, मसलतां थकां हारे नहीं, एटले परिश्रमना जीतवावाला इत्यादिक गुणना जाण पुरुषो ते केवी रीते तेल मसले तो के जे थकी हाडने सुख थाय एटले हाडने सुखकारी, मांसने सुखकारी, चामडीने सुखकारी, रोमने सुखकारी ए चारेने सुखकारी एम ए पूर्वोक्त तेल ते ऊपर कह्या प्रमाणे मसलवाथी राजाने थाक मट्या पछी, सिद्धार्थराजा मल्लशालाथी निकलीने ज्यां स्नान करवानु घर छे त्यां आवीने स्नानघरमां पेठा, ते स्नानघर कहेवुं छे ? तो के मोतीयोनी जालीयोनां गोखला छे जेमां, विचित्र मणिरत्ने जटित धरती तल छे जेनु, त्यां रमणिक स्नान करवानो मंडप छे तेमां अनेक प्रकारना मणिरत्नोए करी जड्या चित्र्या एवा अनेक बाजोट छे तेना ऊपर राजा सुखें बेठो हवे स्नान करवानु जल, कहेवु छे के—फूलना गंधवालुं जल, चंदन कपूरादि वासित जल, ऊष्णजल, शुभ जल, गगा प्रमुखनुं निर्मलजल, एवा जलथी कल्याणकारी प्रधान मज्ज-नना विधिये स्नान करे, त्यां घणा प्रकारनां जल उछालवा प्रमुख कौतुक करीने कल्याणकारी स्नानना अंतमां कमल सरखा सुंवाला गध-वस्त्रथी अग लूह्युं पछी घणां मोघां वस्त्ररत्न पहेर्यां, भला रस सहित गोशीर्ष चदनथी शरीरने लेपन कर्युं, पवित्र माला पहेरी, वर्ण कुंकुमादि विलेपन कर्या, पछी मणि जटित सोनाना घरेणा पहेर्या, वली अढार सरो हार, नवसरो हार, त्रीशसरो हार, लांबा झूमखां प्रमुख घरेणां तथा कनदोरो पहेर्यो गलामां कठीओ प्रमुख पहेरी, आंगुलीओमां वींटी, वेढ प्रमुख पहेर्या, केशोमां फूल प्रमुखना घरेणां धारण कर्यां, रूडा जडाव कडा, जडाव बहेरखा पहेर्या, भुजा प्रमुखमां भुजबधादिक पहेर्या तेणे भुजा थभित थइ छे, तेथी घणु श्रीकार रूप छे तथा कानोमां

कुंडल पहेर्यां तेणे करी शोभायमान मुख थयुं, मस्तकें देदीप्यमान मुकुट धार्यो, हारप्रमुखे करी सुशोभित थइ छे छाती जेनी, वींटीयोथी पीली थयेली छे अंगुलीओ जेनी तथा लांबा वस्त्रे करी कर्यो छे उत्तरासंग जेनुं, अनेक प्रकारना मणिरत्न निर्मल घणा मूल्यना डाह्या कारिगरोनां घड्यां देदीप्यमान भली रचनाए करी एकमां बीजा घरेणां मलेला तेथी मनोहर देखाय छे तथा वीरवलयने धारण कर्यो ए घरेणो जे शूर वीर होय तेने राजा बक्षीश आपे छे एटले मान आपवानुं घरेणुं छे ते कोइक तो कहे छे के ए घरेणुं हाथमां पहेराय छे वली कोइ कहे छे के ए वीरवलय कानमां पहेराय छे. हवे घणुं शुं वर्णन करीए ते सिद्धार्थराजा साक्षात् कल्पवृक्ष सरखो थयो, जेम कल्पवृक्ष पत्र, पुष्प, फल सहित शोभे तेम सिद्धार्थराजा घरेणाथी शोभे छे तथा पुरुषोमां इंद्र समान, कोरंट वृक्षनां फुलोनी माला सहित एवुं छत्र मस्तकें धरावतो थको, श्वेत चामरोथी वींजातो थको, ज्यां लोकोए मंगलिकना जय जय शब्द कर्या छे; वली १ अनेक गणनो नायक एटले पोताना घरमां जे मनुष्य छे तेनो मालक, २ दंडनायक देशनी चिंतानो करवावालो, ३ हाथीयोनो ईश्वर, ४ राजानो पुत्र, ५ कोटवाल, ६ मांडवीया, ७ कुटुंबना स्वामी, ८ न्हाना प्रधान, म्होटा प्रधान, ९ मंडलिक, १० महामंडलिक, ११ ज्योतिषी, १२ दरवान, १३ जे राजा साथे जन्म्या ते अमात्य, १४ पीठी मर्द्दन करवावाला, १५ नगरना चोवटीया, १६ चोधरी, १७ वाणीया, १८ शेठ, १९ सेनापति, २० सार्थवाह, २१ दूत, २२ देशनी संधीना रखवाला एटले संधिपालक तथा व्यवहारीया, २३ अंगरक्षक,

---

१ अहीं संधिपालक कह्युं ते राजाना सीमाडीया राजा साथे सीमनां वांधा पडवाथी राजाने विरोध थाय तेवारे सीम काढी निवेडो करी आपे तेने संधिपालक कहीए. तेना ऊपर कथा कहे छे–कौशांबीनगरीमां जितशत्रुराजा राज्य करे छे. तेने प्रधान, पुरोहित, शेठ, सेनापति, भंडारी, संधिपाल इत्यादिक घणो परिवार छे सर्वे पोत पोताना अधिकारमां सावधान छे, हवे कोइक पुरुषे राजाने कह्युं के तमारा बधा सेवको काम

२४ पुरोहित, २५ वृत्तिनायक, २६ वहित्राहक, २७ थइआयत, २८ पडु-पडिआयत, २९ टाकटमाली, ३० इद्रजाली, ३१ फलमाली, ३२ मंत्रवादी, ३३ धनुर्वादी, ३४ दडधर, ३५ धनुर्धर, ३६ खड्गधर, ३७ छत्रधर, ३८ चामरधर, ३९ पताकाधर, ४० नेजाधर, ४१ दीवीधर, ४२ पुस्तकधर, ४३ झारीधर, ४४ ताबूलधर, ४५ प्रतिहार, ४६ शय्यापालक, ४७ गज-पालक, ४८ अश्वपालक, ४९ अगमर्द्दक, ५० आरक्षक, ५१ मिष्ठवचन बोलनारा, ५२ कथा कहेनारा, ५३ सत्य बोलनारा, ५४ गुणना बोल-नारा, ५५ समस्याना बोलनारा, ५६ पारसीभाषा बोलनारा, ५७ वैया-करण पाठी, ५८ तर्कपाठी, ५९ साहित्य बधक, ६० लक्षण बधक, ६१ छद बधक, ६२ अलकारना जाण, ६३ नाटक बधक

करे छे पण सधिपाल तो तमारु अनाज खाइने खोटु करे छे माटे एनी तपास करवी जोइए तेवारे राजाए सधिपालकने कह्यु के तमे मनचिंतित द्रव्य खाओ छो अने कार्य तो कांइ करवा नथी तेवारे सधिपालक बोल्यो, हु म्होटा काम करी आपु, परस्पर वैरभाव होय तेने मित्राइ करावी आपु अने मित्रता होय तेमां विरोध पाडी आपु, अनेक बुद्धिना काम करु, एवा म्हारामां गुण छे, पछी राजाए परिक्षा निमित्ते पोतानो दुशमन अरिमर्दन राजा छे तेनी साथे मेलाप करवा माटे भेटणा सारु एक डाबलो सीवी आप्यो ते राजाने आपजो अने वैर टाली आवजो एवु कही सधिपालकने मोकल्यो, ते पण त्यांथी चालतां केटलेक दिवसे अरिमर्दनराजा पासे जइ भेटणु मूकी, पगे लागीने कहेवा लाग्यो के हे राजन् ! जितशत्रुराजाए तमोने प्रणाम कहेल छे अने भेटणु आप्यु छे, राजाए ते भेटणु छोडयु तेमांथी डाबडो निकल्यो ते ऊघाड्यो तेमां वली घणे बधने बांधेली एक सोनानी डाबली निकली तेना बधन छोड्या तेवारे मांहेथी राख निकली; त्यारे प्रधाने कह्यु तमारा वैरीए राख मूकी छे, ते राख चोपडी तमे जोगी थाओ, ते सांभली राजा क्रोधातुर थयो तेवारे सधिपालके जाण्यु के राजाए वैर सांभ्यु एवु चिंतवी औत्पातकी बुद्धिए करी कहेवा लाग्यो के राजन् ! तमे उलटो विचार म करो, ए राख बहु गुणकारी छे, राजाए पुछयु एमां स्यो गुण छे ? सधिपालक बोल्यो—अमारा राजाए यज्ञ कीधो हतो तेना ऊपर असख्य द्रव्य खरच्यु ते यज्ञ पूर्ण थयाथी तेनी भस्म तिलक करवाने अर्थे सर्वे राजाओने मोकली छे एमां कांइ विरोध नथी एनु प्रभातकालें तिलक करतां जन्मांतरनां पातक टले अने सौभाग्य वधे, ते सांभली राजा प्रसन्न थयो अने जाण्युं के

एमना परिकर साथे परवर्यो थको सिद्धार्थराजा स्नानघरथी निकलीने सभामंडपमां आवे छे ते केवो शोभे छे तो के धवलमेघनी घटामां जेवो सूर्य निकले तेनी पेरे शोभे छे वली जेवा नक्षत्र ग्रह प्रमुख तारामां चंद्र शोभे तेवो लोकोमां राजा शोभे एवो मज्जनघरथी निकलतां शोभायमान थयो थको नरपति, नरोमां इंद्र, नरोमां वृषभ समान, नरोमां सिंहसमान, घणी अधिक राजतेजनी लक्ष्मीए करी दीपतो थको, स्नानघरथी निकलीने ज्यां सभानी शाला छे त्यां आवीने, सिंहासन ऊपर पूर्वदिशानी सन्मुख मुखडुं करीने बेठो. बेशीने पोताथी उत्तर अने पूर्वदिशानी वचमांनी ईशानकूणमां आठ बाजोठ श्वेत वस्त्रथी ढांकेला श्वेत सरसव अने श्वेत द्रोभ कुंकुमथी मंगल अर्थे पूजीने थापे

में वैरभावथी अवलुं विचार्युं पण एणे तो वैर टालवा ए उपकार कर्यो छे पछी राजाए ते संधिपालकने घणुं सन्मान आपी, एक महीना सुधी पोतापासे राखी घणा हाथी घोडा आभरण देइ पहेरामणी करीने शीख आपी, तथा हवे तमारा राजा साथे अमारे परम मित्राइ छे एवो पत्र लखी आप्यो; ए सर्व भेट लइ संधिपालक पोताना राजा पासे आव्यो, राजाने पत्र दीधो सर्ववस्तु पण आपी तेवारे राजा विस्मय पाम्यो, वली एकदा राजाए पटराणीने कह्युं के—तुं त्हारे पीयरे जा, ज्यारे हुं नामांकित मुद्रिका मोकलुं तेवारे तरत आवजे पण बीजा कोइना कहेवाथी आवीश नहीं, पछी ते राणी पीयर गइ, पाछलथी राजाए संधिपालकने कह्युंके म्हारी राणी रीसाणी थकी पीयरे गइ छे तेने तमे तेडी लावो तो तमारी अकल खरी जाणुं, पछी संधिपाल तीर्थवासीनो वेश करी राणीना पीयरनां गाममां गयो, राणीने खबर पडी त्यारे राणीए तेडाव्यो अने कह्युं के—तुं मुजने मलवा केम नाव्यो ? तेणे कह्युं हुं तीर्थवासी थयो छुं तेथी संसार संबंधि कोइ कार्यमां पडतो नथी, राणीए कह्युं धन्य त्हारा अवतारने तो पण मन्हे राजाना समाचार कहो तेवारे संधिपालक माथुं धूणावीने कहेवा लाग्यो के—राजाए हमणां कोइक राजानी पुत्री परणवानो विचार कर्यो छे ते कन्या घणी रूपवती छे तेने पटराणी करवा धार्युं छे एवी वात सांभली राणी उतावली पाछी पोताने घेर आवी, राजाए पुछ्युं तमे तेड्या विना उतावलां केम आव्यां ? तेवारे राणी रीश आणीने बोली के तमे नवी पटराणीने घेर आणो छो तो हवे मन्हे शा वास्ते तेडो ? एवो ओलंभो सांभली राजा विस्मय पाम्यो पछी राजाए संधिपालकने तेडावी भ्रांति भांगी, राणीने मनावी राजा हर्ष पाम्यो, संधिपालकने घणां वस्त्र आभूषण आपी सन्मान आप्युं.

अने एक पडछि एटले पडदो वाधे ते पडछि केंवी छे तो के ? नाना प्रकारना मणिरत्नोथी जडेली छे, सर्व लोकने देखवा योग्य, घणा मूल्यनी, भला पाटणमा नीपजेली, रेशमना वस्त्रनी, अनेक चित्रामवाली एटले मृग, वृषभ, घोडा, मनुष्य, मत्स्य, पखी, सर्प, किंन्नर, अष्टापद, चमरीगाय, हाथी, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक अनेक रूप जे पडछिमां माड्या छे एवी पडछी वाधी, ते पडछीनी माहेली बाजुए, अनेक जातिना मणिरत्ने करी जटित रूडा सुवाला गादला सहित मशरुनो वस्त्र ढाक्यु तेनी ऊपर श्वेत वस्त्र ढाक्यो, सुकोमल अगने सुखकारी स्पर्श छे जेनो एवो रूडो एक बाजोठ त्रिशलाक्षत्रियाणीने वास्ते रचावे, रचावीने पछी सिद्धार्थराजा कौटुंबिक पुरुषने बोलावीने एम कहे के–शीघ्रमेव एटले तत्काल हे देवानुप्रिया, अष्टांग महानिमित्तना जाण, सूत्रअर्थना धरवावाला, अनेक प्रकारना शास्त्रमां चतुर अने स्वप्न शास्त्रमा कुशल एवा स्वप्न लक्षण पाठकोने बोलावो, इहा आठ अगनां नाम कहे छे–प्रथम अगस्फुरण विचाराङ्ग–तेमा शरीर फरके तेनो विचार जेमके स्त्रीनुं डावुं अंग फरके तो सारु इत्यादिक वातो जाणवी, बीजुं स्वप्नविचाराङ्ग–तेमां उत्तम, मध्यम अने कनिष्ट एवा स्वप्नानो विचार, त्रीजो स्वरविचाराङ्ग–तेमां काली चिडी, रूपारेल, शीयाल प्रमुख बोले ते मुजब फल विचार जाणवु, भूमिकपवाथी शुभाशुभफल कहेनारां शास्त्र ते भौमविद्या नामे चोथु अग जाणवुं, मसा, तिल, लसण इत्यादिकोनो विचार जेमा छे ते व्यजनविद्या नामे पांचमु अंग जाणवु, हाथ पगनी रेखा जोवानो विचार जेमा छे ते लक्षणविद्या नामे छट्ठु अग जाणवु, उत्पातविद्या ते उलकापात तारा त्रूटे, मडल मडे इत्यादिकोनो विचार जेमां छे ते सातमु अग जाणवु, आठमुं अतरिक्षविद्यानु अग ते ग्रहोना अस्त, उदय, वक्र तेना फल जेमा छे ते आठमु अंग जाणवु, एना जाण स्वप्नपाठक पुरुषोने बोलावो. एवुं सिद्धार्थ-

राजाए कह्युं त्यारे ते कौटुंबिक पुरुष सांभलीने घणो खुशी थयो पछी हाथ जोडी यावत् सांभलीने तहत्ति करीने सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी पासेथी निकलीने खत्रिय कुंड गाम नगरनी वचमांथी थइने ज्यां स्वप्न पाठकोनां घर छे त्यां आवीने स्वप्नलक्षण पाठकोने कहेवा लाग्यो–हे स्वप्न पाठको ! तमोने सिद्धार्थक्षत्रिय राजा याद करे छे तेमाटे हुं तमोने बोलाववा आव्यो छुं तेवारे स्वप्नलक्षणपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाना कौटुंबिक पुरुषनी वाणी सांभलीने, घणाज हर्ष संतोष हृदयमां पामवा लाग्या पछी स्नान मज्जन करीने, पोताना घरना इष्टदेवने पूजीने, शरीर ऊपर कौतुकने अर्थे तिलक छापा प्रमुख करीने, दहीं, डाभ अने सरसवने मांगलिक माटे ग्रहीने, दुष्ट स्वप्न प्रमुखनो नाश करवारूप प्रायश्चित्त करीने, शुद्ध मांगलिक वस्त्र पहेरीने, घणा मूल्यनां घरेणां पहेरी, सर्व शरीर शोभायमान करीने, वली पण सरसव अने दर्भ मंगल निमित्ते मस्तके धारण करीने, उछालीने, पोतपोताना घरथी निकलीने, क्षत्रियकुंड गामनगरनी वचमांथी थइने, ज्यां सिद्धार्थराजानो मुख्य महेल छे तेने बारणे आवी सर्व एकठा थया, पछी सर्व भेगा थइने मांहोमांहे विचार करवा लाग्या के–आपणा वधायमां कोइने म्होटो थाप्यो नथी माटे एक जणने म्होटो थापो, केमके म्होटाविना तो अप्रतिबंध टोळुं वाजे माटे मांहोमांहे स्वप्ननो अर्थ विचारीने एक

१ इहां कोइ प्रश्न करे के सिद्धार्थराजाना स्नानना वर्णनमां तो देवपूजा करवी आवी नही अने आ निमित्तियाओना संक्षेप पाठमां देवपूजा आवी तो शुं सिद्धार्थराजा देवपूजा नही करता होय ? तेनो उत्तर कहे छे के–आ वखत तो सिद्धार्थराजा शणगार करीने सभामां आवता हता तेथी त्यां दही, डाभ अने सरसवनी पेरे पाठ नथी तेथी जाणवामां आवे छे के निमित्तियाओने पूछी विदाय करीने पछी पूजा करी हशे ! केमके सिद्धार्थराजा पण श्रीपार्श्वनाथ भगवानना श्रावक छे तेथी श्रीपार्श्वनाथजीनी मूर्त्ति तेमना घरमां अवश्य होवी जोइए, वली आगल “ ह्लायाकयबलिकम्मा ” ए पाठ त्रिशलाजीना अधिकारमां चाल्यो छे अथवा कर्त्ताए पण ए पाठ सहजनो जाणी नही लख्यो होय ? एम पण संभवे छे पछी केवली जाणे.

म्होटाना मुखथी राजा आगल कहेवरावबुं, पण जणे जणे जुदु जुदुं बोलवु नहीं जो जणेजण जुदु बोलवा जाशो तो आदर पामशो नहीं नीतिशास्त्रमां कह्यु छे के-

यत्र सर्वेपि नेतार, सर्वे मत्सरवादिन'।
सर्वे महत्वमिच्छंति, तेऽवसीदति वृदवत् ॥ १ ॥

ज्या सर्वजण अग्रेसर थावा जाय अने सर्व अहकार सहित बोलवावाला होय, परस्परे ईर्ष्या करवावाला होय, सर्वे म्होटाईपणाने वाछवावाला होय, तेमनो समुदाय जेम पाचशे सुभट अनादर पामी दु खी थया तेम दु खी थाय पाचसौ सुभटनी कथा कहे छे-कोई समये ज्या त्याथी आवीने पाचसो सुभट भेगा थइने रोजगार करवा सारु देशातरे गया त्यां कोइ कोइ राजानी पासे बे चार दिवस रही रही चाल्या जाय एम करता एक महर्द्धिक (म्होटा) राजाने जइ मल्या तेवारे ते राजाए घोडा, वस्त्र, घरेणा, शस्त्र इत्यादिक सामग्री तेमनी पासे दीठी तेमज ते सुभटो सर्वे सुरूपवान हता तेने देखी राजा तेमने सन्मान आपी बोल्यो के तमे कोण छो अने क्याथी आव्या छो? त्यारे ते पुरुषोए राजाने प्रणाम करीने कह्यु के हे राजन्! अमे नोकरी रहेवा सारु आव्या छैये यावत् तेमनी वातो सांभलीने राजा प्रमुख सर्व सभा खुशी थइ तेवारे राजाए प्रधानने बोलावीने कह्यु के आ सुभटो सारा देखाय छे, आबरुदार छे, काम पडता सग्राममा पाछा हटे तेवा नथी एवां राजानां वचन साभली प्रधान बोल्यो के स्वामी! ए सुभट देखवामा तो सारा छे पण असबध छे केमके एमनामा कोइ मालेक नथी तेथी काम पडशे त्यारे भागी जाशे तो तमे ओलभो कोने आपशो? एवु प्रधाने कह्यु तो पण राजा समज्यो नहीं, तेवारे प्रधाने जाण्यु के राजानु मन ए सुभटोने नोकरी राखवानु छे एवु समजीने प्रधाने कह्युं महाराज! एनी परीक्षा करीने आपणे नोकरीमा राखीशु राजाए पण कह्यु के सुखेथी परीक्षा करो, पछी प्रधाने तेमने कोइ सारी जगा जोइने तेमा उतारो आप्यो अने रातनी वखते एक ढोलीयो, एक गादलु अने

एक ओसीसुं ते सुभटोने उतारे मोकल्यो वली भोजनादिक सामग्री पण घणी मोकली ते सुभटोए भोजन कर्युं पछी ज्यारे सुवा लाग्या त्यारे एकज ढोलीयो देखीने मांहोमांहे बधा जण लडवा लाग्या. तेमांथी एक बोल्यो के 'मेरा दादा बडा था और मेंभी बडाहूं, इससे मैं इस पर सोऊंगा' बीजो बोल्यो के 'एकदिन वनमें सिंह बोला था, उसका साद घरमें बैठे बैठे सुनके मेरे बावाकूं सातदिन तक ताव आया था, इससे मैं ही बडा हूं,' वली त्रीजो बोल्यो के 'मेरे बडे भ्राताने सेके हूए सत्ताइस पापडोंको एक लातसे भांजि डारेथे, इससे मैंही बडाहूं.' वली चोथो लोल्यो के 'मेरे मामाने एक उंदरेको हरा दीया था सो मैं ही बडाहूं' वली पांचमो बोल्यो के 'मेरा मामाने सातसेर की खीचडी खाइथी' छट्ठो बोल्यो के 'मैं तो छ गोलीकी छाश पीताहूं,' सातमो बोल्यो के 'मैं तो घरमें ही जंगल जाता हूं,' आठमो बोल्यो 'मैं तो सात दिन तक सो रहता हूं जागता नहीं,' नवमो बोल्यो 'मैं तो बिल्लीसे भी डरता हूं' दसमो बोल्यो 'मैं कुत्ता भसे जब भाग जाता हूं,' एवी रीते एक कहे हूं सोऊं, बीजो कहे हूं सोऊं तुं कांइ मालेक नथी, एम अर्द्धि-रात्र सुधी लड्या तेवारे तेमां पांच सात जण समजु हता ते बोल्या अरे तमे लडाइ म करो, ए शय्यानी स्हामां पगराखीने सूइ जाओ, ए न्याय सर्वने बराबर जाणवामां आव्यो तेथी सर्वे जणा ढोलीया स्हामा पग राखीने सूइ गया अने बीजी पण सर्व चीजो पांती प्रमाणे व्हेंची लीधी पछी प्रभात थयुं त्यारे राजाना माणसो जे निगाह करवा रह्यां हतां तेणे जइ राजा आगल सर्वे वात कही, तेवारे राजाए निर्भ्रं-छीने सर्वने शीख आपी, क्यांइ आदर पाम्या नहीं. एवुं स्वप्न पाठके परस्पर विचारीने एक जणाने मालेक थाप्यो अने ज्यां सिद्धार्थक्षत्रिय राजा छे त्यां आव्या, आवीने सिद्धार्थराजाने जय विजय शब्दोथी वधाव्या.

जैनाचार्य श्रीमद्भट्टारक–विजयराजेन्द्रसूरीश्वर–सङ्कलिते—
श्रीकल्पसूत्र–बालावबोधे तृतीय–व्याख्यानं समाप्तम् ।

अथ चतुर्थ व्याख्यान प्रारभ ।



स्वप्न लक्षण पाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाने हाथ जोडीने जय विजय शब्दे करी वधावे अर्थात् बोल्या के—राजन् ! तमे दीर्घ आयुष्यवाला हो, घणी आजीविकाना धणी हो, लक्ष्मीवान् हो, जशवान् हो, बुद्धिमान् हो, कीर्त्तिमान् हो, वली सिद्धार्थराजाने पार्श्वनाथ स्वामीनो सेवक जाणीने श्रीपार्श्वनाथजीनी स्तुति गर्भित आशिर्वाद आप्यो के—

दशावतारो व पायात्, कमनीयाञ्जनद्युति ।
किं तु दीपो न हि श्रीप, किंतु वामाङ्गजो जिन. ॥ १ ॥

दश छे अवतार जेना तेने दशावतार कहीए एवा, वली मनोहर श्यामकातिवाला एवा कोण छे ? त्यारे बीजो कोइ बोल्यो के दीप एवुं नाम दीवानुं छे अने दशा एवु बत्तीनु नाम छे वली काजलनी श्यामकाति छे, तेवारे कहेछे के ए दीवो तो नही, परतु श्रीप एटले श्रीकृष्ण तेना पण दश अवतार थया तेथी कृष्ण हशे ? केम के कृष्ण काला पण छे अने तेना दश अवतार पण छे, तेवारे कवि कहे छे के—दीवो अने श्रीकृष्ण ए बेउ नथी त्यारे ए कोण छे के ? श्रीपार्श्वनाथ स्वामी वामादेवीना पुत्र छे केमके ए दशभव करीने तीर्थंकर थया इहां अमरभूतिना भवथी दश भव गणवा, वली एमनी श्यामकाति पण छे तेथी पार्श्वनाथ स्वामी छे ते तमारी रक्षा करो

आशिर्वाद सांभलीने सिद्धार्थ क्षत्रियराजाए ते स्वप्नलक्षण पाठकोने वांद्या, वस्त्रादिक देवाथी पूज्या, सद्गुणे करी स्तव्या, सन्मान आप्युं, अने पूर्वे तैयार करेला जे आठ भद्रासन छे तेनी ऊपर जुदा जुदा बेसाड्या इहां “ कोइ कहे के श्रीपार्श्वनाथजीनो श्रावक सिद्धार्थ-

राजा समकेती छे तेणे मिथ्यात्वी एवा स्वप्न पाठकोने केम वांद्या ? एनो उत्तर कहे छे के–ए तो लोकोपचार विनय छे ते तो सांसारिक पणानो छे पण पूज्यपणाने तथा धर्मना कामने माटे नथी. जेम लौकिकमां जुहार करे तेने पण वंदन कहे छे तेम ए पण जाणवुं." तेवार पछी सिद्धार्थराजा त्रिशलाक्षत्रियाणीने पडिच्छमां बेसाडे, ते पण पोताना हाथमां फूल फल लेइने बेशे पछी उत्कृष्ट विनयथी सिद्धार्थराजा स्वप्न लक्षण पाठकोने कहे के–देवानुप्रिया ! आज त्रिशलाक्षत्रियाणीए पूर्वे वर्णवी आव्या एवां म्होटा गजवृषभादि चौद स्वप्नां ते यावत् अल्पनिद्रामां सुतां थकां देख्या तेथी ए चौद स्वप्नानुं कल्याणकारी फल शुं थाशे ? तेवारे स्वप्नलक्षणपाठक, सिद्धार्थक्षत्रियराजाना मुखथी ए अर्थ सांभली घणाज खुशी थया. ते स्वप्नांने हृदयमां धारण कर्या, अने अर्थ विचारवा लाग्या, मांहोमांहे विचार कर्यो, ते स्वप्नांनो अर्थ ग्रहण कर्यो, मांहोमांहे एक बीजाने पूछीने निश्चय कर्यो, पछी सिद्धार्थराजानी आगल स्वप्नशास्त्रोनो विचार कहेवा लाग्या. ते शास्त्रांतरथी लखे छे–मनुष्योने नव प्रकारे स्वप्न आवे छे तेमां प्रथम तो जाणेली वात स्वप्नामां आवे, बीजी सांभलेली वात स्वप्नामां देखे, त्रीजो दिवसे दीठेली वस्तु स्वप्नामां देखे, चोथुं वात, पित्त, कफना विकारथी स्वप्न आवे, पांचमो सहज स्वभावथी स्वप्न देखे अथवा मलमूत्रादिकनी पीडाथी स्वप्न देखे, छट्ठो चिंतामां पड्यो थको स्वप्न देखे, ए छ कारणथी जे स्वप्न आवे ते निष्फल छे एनुं कांइ शुभाऽशुभ फल प्राप्त थाय नहीं. सातमो देवतानी सानिध्यथी स्वप्नुं देखे, आठमो धर्म कर्ममां रहेलो प्राणी घणो धर्म करे तेने धर्मना प्रभावथी उत्कृष्ट पुण्यना योगे स्वप्नुं आवे, नवमो घणा उत्कृष्ट पापनां उदयथी स्वप्न आवे ए पाछला त्रण स्वप्नां तो प्राणी देखे तो तेनुं शुभाऽशुभ फल अवश्य थाय, खाली न जाय. तथा धातुप्रकोपथी

वायुनुं जोर होय त्यारे वृक्ष, पर्वत, टूक ऊपर चढवु तथा आकाशमा उडवु एवा स्वप्ना आवे तथा पित्त प्रकोपथी सोनु, रत्न, सूर्य अने अग्नि प्रमुख स्वप्नामां देखे तथा श्लेष्म अधिक होय तेना योगथी अश्व, नक्षत्र, चंद्र, शुक्लपक्ष, नदी, सरोवर, समुद्र इत्यादिक उल्लघन करता देखे ते निष्फल जाणवां

गाय, वलद, हाथी, महेल, पर्वत, टूक एमना ऊपर चढ्यो एवु स्वप्न देखे तो म्होटाइ पामे, तथा विष्टाविलेपन शरीर देखे तो निरोगी थाय, स्वप्नमा रुदन करे तो हर्षनी प्राप्ति थाय, स्वप्नमा राजा, हाथी, घोडो, सोनुं, वलद, गाय, कुटुब देखे तो कुलनी वृद्धि थाय, तथा प्रासाद ऊपर चढीने जाणे जमु छु एवु स्वप्न देखे तथा समुद्र तरु छु एवुं स्वप्न देखे तो जो नीचकुलमा तेनो जन्म थयो होय तो पण ते राजा थाय वली दीपक, मांस फल, कन्या, पद्म, छत्र अने ध्वजा एटला वाना स्वप्नमा देखे तो जय पामे, तथा पोताना इष्टदेवनी प्रतिमाने जो स्वप्नमां देखे तो आयुर्वृद्धि थाय, तेमज कीर्त्ति, यश अने धननी पण वृद्धि थाय वली जे कपास, भस्म, हाड अने छास ए चार श्वेतवस्तु वर्जीने बीजी कोइ पण सपेत वस्तु स्वप्नामां देखे तो भली जाणवी तथा जे हाथी, देवता, घोडो अने राजा ए चार चीज विना बीजी कोइ काली वस्तु स्वप्नमा देखे तो ते सारी जाणवी नहीं तथा स्वप्नमां गायन करे तो रुदन करवु पडे, स्वप्नमा नाचे तो बदीखाने पडे, स्वप्नमा हसे तो शोचमा पडे, स्वप्नमा भणे तो कलह थाय, वली जो स्वप्नमा देवता, साधु, ब्राह्मण, राजा, पितृ, वृषभ एटला माहेलो कोइ आवीने कोइ प्रकारनी वात कहे ते वात अवश्य सत्य थाय तथा स्वप्नमा धोलो सर्प भुजाने डसे तो हजार सोनैयानो लाभ थाय, वली कोइ फल्यु फूल्यु वृक्ष तथा रायणनु वृक्ष तेना ऊपर पोते चढ्यो एवु स्वप्नमा देखे तेने घणु धन मले, वली

गधेडो, ऊंट, भेंस, भेंसो एमना ऊपर एकलो हुं चढ्यो छुं एवुं स्वप्न देखे तो ते तत्काल मरण पामे, वली जे पुरुष धोला कपडावाली. धोला चंदननुं विलेपन करेली एवी स्त्रीने हुं भोगवुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो तेने सर्व प्रकारनी लक्ष्मी मले, वली जे रातां वस्त्रवाली, रातो चंदन कृष्णगंध विलेपनवाली स्त्री भोगवुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो तेनुं लोही सुकाइ जाय, वली जे रत्ननां, सोनानां अने सीसानां ढगलाओ ऊपर हुं चढ्यो छुं एवुं देखे तो ते अवश्य समकेत पामीने मोक्षे जाय, तथा जे स्वप्नमां दारु प्रमुखनो घडो जाणे म्हें उपाड्यो छे एवो पोताना आत्माने माने तो ते समकेत पामीने बीजा भवमां मोक्ष जाय.

हवे त्रिशला माताए जे चौद स्वप्नां दीठां तेनुं फल तो आ प्रमाणे छे–प्रथम स्वप्नमां चार दंतोसलवालो हाथी दीठो ते देखवाथी ए पुत्र महा पराक्रमी थाशे, वली दान, शील, तप अने भावरूप चार प्रकारनां धर्मनी प्ररूपणा करशे, वली चोसठ इंद्र तथा गजपति जे राजाओ ते एनां चरणकमलने सेवशे१, बीजे स्वप्ने वृषभ दीठो तेथी तमोने धर्मधोरी पुत्र थशे एटले भरतक्षेत्रने विषे जेम कर्षणीओ वृषभ थकी धान्यनुं बीज वावे तेम ए पुत्र बोधरूप धान्यनुं बीज वावशे२, त्रीजे स्वप्ने सिंह दीठो तेथी निर्भय अने शूरवीर त्रण भुवनमां पोतानी आज्ञा मनावशे एवो ए पुत्र थाशे एटले जेम सिंह होय ते श्वापद जीवोथी विनाश पामतुं एवुं जे वन तेनुं रक्षण करे तेम ए पण सम्यक् प्ररूपणा रूप सिंहे करी कुदृष्टि जे मिथ्यात्वरूप श्वापद जीवो ते थकी नाश पामतुं एवुं जे भव्यजीवरूप वन तेनुं रक्षण करशे, अने मिथ्यात्वरूप आपदाथी भव्य जीवोनुं रक्षण करशे अथवा आठ कर्म अने आठमदरुप श्वापदोनो नाश करशे, वली त्रण भुवनने विषे पोतानी आज्ञा मनावशे ३, चोथा स्वप्नमां लक्ष्मी देवता दीठी तेथी त्रण जगतनी तीर्थंकर लक्ष्मीनो भोक्ता थशे एटले वरसीदान दइ दीक्षा पाली

केवलज्ञान रूप लक्ष्मी पामीने आठ प्रातिहार्यरूप तीर्थंकरनी लक्ष्मीने भोगवशे ४, पाचमां स्वप्नमा फूलनी बे मालाओ दीठी तेथी सत्पुरुषोने माथे पूज्यपणु भोगवशे एटले जेम फूलनो तोरो मस्तकें धराय छे तेम एनी आज्ञा पण सर्व भव्य जीवो मस्तके धारण करशे तथा बे माला दीठी माटे एक श्रावकनो अने बीजो साधुनो एवा बे प्रकारना धर्म कहेशे ५, छठ्ठा स्वप्नमा चद्रमा दीठो तेथी ए सौम्यदर्शन वालो थशे, शीतल परिणामवालो थशे, भव्यजीवरूप कुवलयनो बोध (प्रकाश) करवाने चद्रमा सदृश थशे ६, सातमा स्वप्नमां सूर्य दीठो तेथी मिथ्यात्वरूप अधकारनो हर्त्ता थशे तथा पोते प्रभामडलें करी अलकृत थशे ७, आठमा स्वप्नमा ध्वजा दीठी तेथी कुलमा ध्वजा समान उत्तम थाशे अने धर्मध्वजाए करी बिराजमान थाशे, जगतने चारे दिशामा धर्मध्वजाथी शोभावशे ८, नवमा स्वप्नमां पूरण कलश दीठो तेथी संपूर्ण गुणी थशे तथा धर्मरूप प्रासाद ऊपर कलश चढावशे ९, दशमा स्वप्नमा पद्मसरोवर दीठु तेथी जगतना तापने हरवावालो थाशे तथा चालता थका एना पगतले देवताओ सुवर्णकमल थापशे १०, अगीआरमा स्वप्नमा क्षीरसमुद्र दीठो तेथी गभीर हृदयवालो थाशे तथा केवलज्ञानरूप रत्न पामीने चौद राजलोकना भाव जाणशे ११, बारमा स्वप्नमां देवविमान दीठुं तेथी देवताओनो पूजनीक थाशे एटले वैमानिक पर्यंत चार निकायना देवताओ एनी सेवा करशे १२, तेरमा स्वप्नमा रत्ननो राशि दीठो तेथी देवता त्रण गढवालो समवसरण रचशे तेमा बेशी भव्यजीवोने धर्मदेशना आपशे १३, चौदमा स्वप्नमा निर्धूम अग्नि दीठो तेथी दीप्तिवत (तेजवत) थाशे तथा जेम अग्नि कंचनने शुद्ध करे छे तेम ए तमारो पुत्र आत्माना शुद्ध स्वभावनी शुद्धि करनारो थाशे, भव्यजनोना मन शुद्ध करशे, अने कर्ममलने बाली न्हाखशे तथा ए चौद स्वप्न दीठा तेथी चौद राजलोकनो स्वामी थाशे एवो उत्तम गुणवालो तमारो पुत्र थशे

स्वप्नपाठको कहे छे के–देवानुप्रिया ! अमारा स्वप्नशास्त्रमां बेतालीश स्वप्नां सामान्य (अशुभ) फल दायक कह्यां छे अने त्रीश स्वप्ना उत्तम (म्होटा) फलनां देवावालां कह्यां छे सर्वे मली वहोतेर स्वप्नां कह्यां छे; तेमांथी श्री अरिहंत अने चक्रवर्त्तिनी माता, अरिहंत अने चक्रवर्त्ति गर्भमां आव्यां थकां त्रीश म्होटा स्वप्नामांथी गज वृषभादिक चौद म्होटा स्वप्नां देखे अने वासुदेव गर्भमां आवे त्यारे वासुदेवनी माता चौद म्होटा स्वप्नां मांहेला कोइ पण सात स्वप्नां देखे, बलदेव गर्भमां आवे त्यारे बलदेवनी माता ए चौद म्होटा स्वप्नां मांहेला गमे ते चार स्वप्नां देखे, अने मांडलिक राजानी माता ए चौद स्वप्नां मांहेलुं गमे ते एक स्वप्न देखे.

हवे बेंतालीश मध्यम स्वप्ननां नाम कहे छे–गंधर्व, राक्षस, भूत, पिशाच, बुकस, महिष, अहि, वानर, कंटकद्रुम, नदी, खर्जूर, स्मशान, ऊंट, खर, मार्जार, श्वान, दौःस्थ, संगीत, धीज, भस्म, अस्थि, वमन, तम, कुस्त्री, चर्म, रक्त, अश्म, वामन, कलह, विविक्तदृष्टि, जलशोष, भूकंप, ग्रहयुद्ध, निर्घात, भंग, भूमज्जन, तारापतन, सूर्यचंद्र–स्फोट, महावायु, महाताप, विस्फोटक, दुर्वाक्य. ए बेंतालीश माठां स्वप्न अशुभफल दायक जाणवां. अर्हन्, बौद्ध, श्रीकृष्ण, शंभु, ब्रह्मा, स्कंद, गणेश, लक्ष्मी, गौरी, नृप, हस्ती, गौ, वृषभ, चंद्र, सूर्य, विमान, गेह, अग्नि, स्वर्ग, समुद्र, सरोवर, सिंह, रत्नराशि, गिरि, ध्वज, पूर्णकलश, पुरीष, मांस, मत्स्य, कल्पद्रुम, ए त्रीश उत्तम स्वप्न शुभफल दायक जाणवां. ए बधां मली वहोंतेर स्वप्ननां नाम श्री वर्द्धमानसूरिकृत 'स्वप्नप्रदीप' ग्रंथने अनुसारे लख्यां छे.

जे पुरुष स्थिरचित्तवालो होय, जितेंद्रिय होय, सदाचारी अने सत्त्वशाली होय, शांत मुद्रावालो होय, धर्मरुचि होय, धर्मानुरागी होय, धर्म ऊपर श्रद्धावंत होय, अने दयावंत होय, इत्यादिक उत्तम गुणनो

धणी होय, तेने जे स्वप्नु दीठामां आवे, ते सारु अथवा माठु फल तरत आपे वली रात्रिने प्रथम प्रहरे स्वप्न देखे, तो एक वर्ष मांहे फल आपे, रात्रिने बीजे प्रहरे स्वप्न देखे तो छमास माहे फल आपे, रात्रिने त्रीजे प्रहरे स्वप्न देखे तो त्रण मास माहे फल आपे, रात्रिने चोथे प्रहरे स्वप्न देखे, तो एक मास माहे फल आपे, रात्रिना अतनी छेहेली बेघडी रात्रि रहे तेवारे स्वप्न देखे, तो तेनु फल दश दिवस माहे पामे, सूर्य ऊगती वेलाए स्वप्न देखे तो तत्काल फल पामे तथा जो माठु स्वप्न दीठामां आवे तो पाछा सुइ रहेवु अने कोइनी आगल कहेवु पण नहीं तथा उत्तम स्वप्न देखी गुर्वादिक आगल कहेवु, जो सभलाववा योग्य कोइ जन न मले तो गायना कानमा पण सभलाववु, भल्लु स्वप्न देखी पछो सुवे तो निष्फल थाय, भल्लु स्वप्न देखी मूर्ख जन आगल तो सर्वथा न ज कहेवु केम के जेवु फल सांभले, तेवु फल पामे माटे उत्तम पुरुष आगलज कहेवु ते ऊपर मूलदेवनु दृष्टांत कहे छे–

कोइएक राजानो पुत्र अणमानीतो थको छे तेनु नाम मूलदेव छे पण तेने दान आपवानु घणुज व्यसन छे तेथी राजाए तेने काहाडी मूक्यो, ते फरतो फरतो कोइक गामे आव्यो पोते महा धर्मवत जैनमति छे परतु खावाने न हतु तेथी शहेरमा याचवाने गयो त्या फरता फरतां एक वाणीयाए भेंशने अर्थे अडद रांध्या हता ते मूलदेवने आप्या तेने लइ वाडीमां आव्यो अने मनमां चिंतववा लाग्यो के कोइ अतिथि आवे तो तेने भोजन आपीने पछी हु भोजन करु एटलामा एक तपस्वी साधु त्या आव्यो, तेवारे मूलदेवे ते ऋषिने देखी बाकला वोहोरावी दीधा अने पोते आनदपणे सुइ रह्यो निद्रामा निराबाध पणे थयो चद्रमा म्हें गल्यो एवु स्वप्नु दीठु, ते स्वप्न देखीने जाग्यो अने वली जे वाडीमां ए मूलदेव सूतो हतो तेज वाडीमा एक बावानो मठ छे, ते बावानां चेलाए पण तेहज स्वप्नुं दीठु, देखीने जाग्यो प्रभाते पोताना गुरुने कह्यु तेवारे

गुरुए कह्युं के तुं आज गाममां भिक्षा लेवा जइश त्यारे तुजने चंद्रमा जेटलो म्होटो घृते चोपडेलो रोटलो गोल सहित मलशे ते सांभली चेलो राजी थइने भिक्षा लेवा गयो त्यारे तेने गुरुना कह्या प्रमाणे रोटलो मल्यो.

हवे ते वात राजकुमार मूलदेवे सांभलीने विचार्युं के-हुं एनी आगल म्हारा स्वप्ननी वात जो कहीश तो मने पण एटलुंज फल कहेशे केम के जे स्वप्न एना चेलाए दीठुं छे तेज म्हें पण दीठुं छे माटे एनी आगल तो वात करवी नही एम विचारी हाथमां श्रीफल लइने शहेरमां निमित्तिया पासे गयो त्यां स्वप्ननी वात कही. निमित्तियो बोल्यो के प्रथम तुं म्हारी दीकरी परणीश तो हुं तुजने स्वप्ननुं फल कहीश; मूलदेवे कह्युं म्हारी नात जात तो तुं जाणतो नथी अने त्हारी पुत्री केम परणावे छे ? निमित्तिए कह्युं म्हें सर्व वात जाणी छे एम कही तेने पुत्री परणावीने पछी स्वप्ननुं फल कह्युं के-आ गामनो अपुत्रीओ राजा आजथी सातमे दिवसे मरण पामशे अने तमे आ गामनां राजा थाशो, ते वात साची मानीने मूलदेव फरी तेहज वाडीमां गयो; एम करतां सातमां दिवसे गामनो राजा पण मरण पाम्यो तेवारे राजा विना कोइने चाले नहीं तेथी पंच एकठा थइने एवो ठराव कर्यो के पाटवी घोडो, पाटवी हस्ती अने पाटवी प्रधान इत्यादिकने शणगारीने कह्युं के जेने ए राजा करी थापे तेने राजगादीए वेसाडीए केमके एम कर्याथी पित्राइ गोत्राइ जे होय ते आगल कोइ वांधो करी शकशे नहीं. हवे हाथी अने घोडो ए वे वाहेर नीकलीने जे वाडीमां मूलदेव सूतो छे ते वाडीमां आवी, हाथीए गललाट करी मूलदेवना मस्तके कलश ढोल्यो अने घोडे हणहणाट कर्यो पछी हाथी तेने शूंढथी उपाडी पोतानी पीठ ऊपर वेशाडीने शहेरमां लइ आव्यो, लोकोए तेने राजपाटे थाप्यो. माटे सारुं स्वप्न दीठुं होय तो उत्तम डाह्या पुरुष आगल कहेवुं पण मूर्ख आगल नज कहेवुं.

उत्तम स्वप्न मूर्ख आगल कहेवाथी जे दु ख थाय ते आश्रयी वणिक्स्त्रीनु बीजु दृष्टांत कहे छे—कोइएक वणिकस्त्रीए स्वप्नमाहे समुद्र पीधो, प्रभाते गुरु समीपे पूछवा जता मार्गमा एक सहियर मली तेणे पूछ्यु के—बेहेन ! गहुली लइ क्या जाओ छो ? एम घणा बलात्कारे पूछ्यु, तेवारे तेने कह्यु के म्हें स्वप्नमां समुद्र पीधो तेनु फल गहुली करी गुरुने पूछीश, एवु साभलताज सहसात्कारे सहियर बोली के—एवडो म्होटो समुद्र पीता त्हारु पेट केम फाट्यु नहीं ? एम मश्करीमां बोलीने चालती थइ, पछी गहुली करी गुरुने स्वप्ननु फल पूछ्यु, तेवारे गुरुए इगित आकार देखीने कह्यु के ए स्वप्न तमे प्रथम कोइ आगल प्रकाश्यु देखाय छे ? तेणीए सहियरनी वार्ता कही, ते सांभली गुरु बोल्या के तमे पूर्वे कोइ आगल जो न कह्यु होत, तो तमोने भाग्यवत पुत्र थात, हवे तो आजथी सातमा दिवसे त्हारे शरीरे कष्ट थशे, ते माटे तमे घेर जइ आत्मसाधन करो, पछी बाइ घेर आवी आत्मसाधन करी देवगत थइ, माटे रूडु स्वप्न ज्हेना त्हेना आगल कहेवु नहीं, तथा कोइ कहेवा योग्य न मले तो गायना कानमा कहिए, पण कह्या विना फल न होय

प्रथम शुभ स्वप्न देखी पछी माठु स्वप्न देखीए, तो माठा स्वप्ननुं फल पामीए, एम परावर्त्ते जाणवु तथा कोइ सिंहे अथवा घोडे अथवा वृषभे जोतर्यो रथ तेना उपर पोते बेठो छे एवु स्वप्न देखे तो राजा थाय घोडा, वाहन, वस्त्र, घर, कोइ लइ जाय छे एवु स्वप्न देखे तो राजभय, शोक, वध, विरोध, अर्थहानि थाय सूर्यचद्रनु बिंब गल्यु (पीधु) देखे, तो समुद्र पर्यंत पृथ्वीनो धणी थाय तथा ऊजले गजे बेठो, नदीतीरे शालनु करु छुं एवु स्वप्न देखे तो समस्त देशनो पति थाय पोतानी स्त्रीनु हरण देखे तो धननो नाश थाय, ऊजला सर्प्पे जमणी भुजाए डक दीधो एवु स्वप्न देखे तो रात्रिमा सहस्र सोनैया पामे मनुष्यना मस्तक, चरण, भुजा, खाउ छु एवु

स्वप्न देखे तो राज्य पामे. काली गाय, अश्व, गज, प्रतिमा देखे तो सारुं थाय अने बीजी काली वस्तु देखे, तो माठी जाणवी. तथा माठुं स्वप्न देखी देवनी पूजा देखे तो सारी वस्तु पामे, द्रोभ, अक्षत, चंदन देखे, तेने मांगलिक थाय. वली राजा, हाथी, घोडो, सुवर्ण, वृषभ, गाय, एटलां वानां स्वप्नमां देखे, तेनी कुटुंबवृद्धि थाय. रथे बेठो जाय ते राजा थाय, तांबूल, दधि, वस्त्र, चंदन, जाय, बकुल, कुंद, मचकुंद, फूल, वृक्ष, एटला वानां देखे, तो धनागम थाय. दीप, पन्ना, फल, पद्म, कन्या, छत्र, ध्वज अने हारादिक आभरण देखे, तो लक्ष्मीनो लाभ थाय. हरण, प्रहरण, भूषण, मणि, मोती, कनक, रूपुं तथा कांस्यपात्रनुं हरवुं देखे, तो तेने धननी हानि थाय. बारणां, भोगल, हींडोलो, पावडी, घर, भांग्यां देखे, तो तेने स्त्रीनो नाश थाय. पगरखां तथा छत्र लीधां देखे अथवा तीक्ष्ण तरवार देखे, तेने मार्गे चालवुं थाय, जे वाहाणमां चढ्यो, ते वाहाण भांग्युं ने पोते तरी नीकले एवुं स्वप्न देखे, ते परदेशे जाय अने त्यां धन पामी आवे. अंजने नेत्ररोग, रोमच्छेद देखे, तो धन क्षय थाय. भेंशो, ऊंट ऊपर चढी दक्षिण दिशाए जाय, तेनुं शीघ्र मरण थाय. कमलाकर, रत्नाकर, जलपूर्ण नदी, तथा मित्रनुं मरण देखे, तो घणुं द्रव्य पामे, क्वाथ पीयुं छुं एवुं देखे, ते अतिसार रोगे मरण पामे. वली जात्राए जाय, पूजा करे, तो तेनी कुलवृद्धि थाय. द्रह, सरोवरे कमल उग्यां देखे, ते कोढ रोगे मरण पामे. हाथी, घोडो, गादलुं, सिंहासन तथा घरनां वस्त्र; एटलां वानां गयां देखे, तो राजानो भय थाय. हथीयार, आभरण; मणि, मोती, सोनुं अने रूपुं एटलावानांनो नाश थतो देखे तो तेनुं धन अने मान दोनुं चाल्या जाय, जे पोतानी भार्याने कोइ लइ जाय छे एवुं देखे तो तेनी संपदानो नाश थाय, पोतानी स्त्रीने कोइ पराभव करे छे एवुं देखे तो क्लेश उपजे, गोत्र मांहेली स्त्री कोइ लई जतो देखे तो तेना भाइ प्रमुख बंदीखाने पडे.

पोतानो ढोलीयो अने धोलु वस्त्र स्वप्नमा देखे तो पोताने पीडा उपजे कोइ मनुष्यना पगनु हु मास भक्षण करु छु एवु स्वप्न देखे तो राजा थाय पद्मसरोवर, समुद्र अने नदी उतरतो देखे तो घणु द्रव्य पामे वली ऊन्हुं पाणी, गायनु छाण गोलमा भेलवेलु पीधु देखे तेने अतिसार रोग थाय तेथी मरण पामे, देवमूर्त्तिनी पूजा करु छु, यात्रा करुछुं एवु देखे तेने सर्व प्रकारे वृद्धि थाय, हृदय ऊपर कमल ऊगेल देखे तो तेनु शरीर कोढरोगथी विनाश पामे इत्यादि

माटे हे राजन् ! त्रिशलाक्षत्रियाणीए जे चौद म्होटा स्वप्ना दीठा ते उदारकारी, मगलकारी छे तेनु फल–अर्थनो लाभ थाशे, भोगनो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, माटे निश्चे ए त्रिशला क्षत्रियाणीने नव महीना अने साढा सात दिवस व्यतिक्रम्यानतर तमारा कुलमा ध्वजा समान, दीपकसमान, मुकुट समान, पर्वतसमान, तिलकसमान, कुलनी कीर्त्तिनो करवावालो, कुलना निर्वाहनो करवावालो, कुलमा सूर्यसमान तेजवत, कुलनो आधार, कुलना यशनो करवा वालो, कुलमा वृषभ समान, कुलपरपरानी वृद्धि करवा वालो, जेना हाथ पग घणा सुकोमल छे एवो वली कोइ इंद्रिए हीन नहीं, लक्षण व्यजन गुण सहित, मानोन्मान सहित, सपूर्ण सर्व अग भलो सौम्याकार, वल्लभकारी जेनु दर्शन छे एवो पुत्र थाशे, वली ते बालक बाल्यावस्था छोडीने ज्यारे विनय विज्ञान वाली युवान अव स्था पामशे त्यारे शूर वीर, पराक्रमवत, घणा हाथी घोडा रथ प्रमुख सेनानो मालक, चार अत पृथिवी सुधी राज करवावालो एवो चक्रवर्त्ती राजानो राजा थाशे अथवा त्रण लोकनो नाथ धर्मचक्रवर्त्ती एवो तीर्थ-कर थाशे माटे त्रिशलाक्षत्रियाणीए लाभ, सुख, महामगल अने कल्या-णकारी सर्वोत्तम स्वप्ना दीठा छे

सिद्धार्थराजा ते स्वप्न लक्षण पाठकोना मुखथी एवो अर्थ साभ

लीने हृदयमां हर्ष संतोष पाम्यो थको हाथ जोडी अंजली करीने स्वप्न लक्षण पाठकोने कहेतो हवो के—एमज थवानुं छे, हे देवाणुप्पिया! एवोज ए अर्थ छे, भूठो नथी, म्हें वांछयो तेज प्रमाणे तमारा मुखथी ग्रहण कर्यो, जे तमे कहो छो ते सत्य छे. आ वचन ऊपर कोइक टीकाकारे भोजराजानी वारमां एक गांगो तेली थइ गयो छे तेनुं दृष्टांत आपेलुं छे परंतु ते पाछलथी थएलो छे अने आ वात तो प्रथमनी छे तेथी ए दृष्टांत मलतुं नथी पण उपनयनमां मलती वात छे वली दृष्टांत होय ते एक देशीय होय छे. जो पण अंतर्वाच्यादिकोमां ए दृष्टान्त नथी तो पण लखीए छिए. सिद्धार्थराजा कहे छे के—सुसिद्धितुं कहेवुं ते सर्व स्थानके सिद्धज थाय छे जेम गांगा तेलीने थयुं. जेम के कोइएक विद्यार्थी दक्षिणदेशमां प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे कोइ एक भट्टनी पासेथी त्रीश वर्ष पर्यंत विद्या भणीने अहंकारमां आव्यो तेवारे माथा ऊपर अंकुश धारण कर्यो तथा रखेने विद्याए करीने म्हारो पेट फाटी जाय तेना गर्वथी पोताना पेटने पाटो बांध्यो, वली जो कोइ वादी म्हारा साथे वाद करतां नाशिने आकाशमां जाय तो तेने निसरणी ऊपर चढी नीचो पटकी न्हाखुं एवा गर्वे करी एक नीसरणी पण पोतानी पासे राखी, वली वादी जो नाशिने पातालमां प्रवेश करी जाय तो तेने खोदीने बाहेर काहाढीश एवा अभिमानथी एक कोदाल पण पोतानी पासे राखी अने निसरणी तथा कोदाल एक चाकरना माथा ऊपर आपी वली जो कोइ वादी म्हारा साथे वादमां हारी जाय तो तेना मुखमां तृण रखावी देवुं एवा विचारथी एक माणस घासनो पुलो लइने तेनी पछवाडे पछवाडे चाले एवा आडंबर सहित चालतो थको दक्षिण, गुजरात, मारवाड, मेवाड इत्यादिक देशोनां पंडितोनी साथे वाद करी, तेओने जीतीने सरस्वतीकंठाभरण आदि बिरुदावली बोलावतो थको सर्व गामोना पंडितोने

जीततो थको अनुक्रमे मालवदेशमा उज्जेनी नगरीना भोजराजानी सभामा पाचशे पडित छे एवी वात साभलीने ते पडितोनी साथे वाद करवा सारु उज्जेनीए आव्यो तेने राजाए म्होटा आडवरथी नगरमां प्रवेश कराव्यो, अने रूडा महेलमा उतारो आप्यो, पछी ते पडिते राजानी सभामा आवी पडितोनी साथे वाद करीने राजानी समक्ष कालिदास माघ आदिक पाचशे पडितोने जीती लीधा तेवारे राजाए विचार्यु के आ म्होटु आश्चर्य थयु के परदेशी भट्टे आवीने म्हारा सर्व पडितोने हरावी दीधा तेथी म्हारा पडितोना माननी हानि थइ एवो चिंतातुर थइने क्रीडा करवाने अर्थे जवा लाग्यो मार्गमा जता एक आखवालो गागो तेली घाणी उपर बेठो छे, ते घाणीमाथी तेल लइने बीजो एक जुदो घडो हतो तेमा न्हांखे पण तेलनु एक टीपु मात्र बाहेर पडवा दीए नही एवा काणा घाचीने देखीने राजाए विचार्यु के आ काणानी बुद्धि जुओ केवी छे ? तो ए काणानी अक्कलनो तो पारज नहीं होय एम कहेवु तेज सत्य छे पछी राजाए तेने बोलावीने पूछ्यु के अरे! तु विदेशी भट्टाचार्य साथे सवाद करीश? त्यारे ते बोल्यो हां महाराज ! हु वाद करीश एमा म्हारु शु जवानु छे ? भट्टाचार्यनी साथे वाद करवो कांइ म्होटी वात नथी जो जोरावर (जबर) देखीश तो पण अटपटा न्यायथी तेने जीती लइश, पछी राजाए आदित्यवारने दिवसे भट्टाचार्यने बोलावीने कह्यु के म्हारा जे साधारण भट्टो हता तेने तमे जीत्या पण हजी म्हारा सर्व पडितोनो जे आचार्य (गुरु) छे तेनी साथे जो वाद करो अने जीतो तो हु जाणु के तमे खरा पडित छो तेवारे दक्षिण भट्टाचार्ये कह्यु के–राजन् ! हु तेनी साथे पण वाद करीश माटे ते क्या छे तेने आही बोलावी ल्यो, त्यारे राजाए भट्टाचार्यने आसन आपी बेसाड्यो पछी कालीदास, क्रीडाचद्र माघ प्रमुख भट्टोने एकठा करीने कह्यु के जाओ ते पडितजीने लइ आवो तेओए जइ गागा तेलीने भट्टाचार्यनो

वेश कराव्यो, घरेणां पहेराव्यां अने शरीरमां तो ते, प्रथमथी ज मातेलो मदोन्मत्त हाथी सरखो हतो तेने पालखीमां बेसाडी पांचशे पंडितोना परिवार साथे राजसभामां लाव्या, राजाए उठी आदर दीधो, सर्व सभाए ऊभा थइने म्होटा सन्मानथी सिंहासन ऊपर बेसाड्यो त्यारे दक्षिण भट्टाचार्ये तेने जोइने विचार्युं के "आ तो मातेलो छे अने हुं तो शरीरे दूबलो छुं तेथी एनी साथे वाद करतां पार आवे नहीं माटे एनी साथे वचननो कलह करवो नहीं, मात्र तत्त्वज पूछवुं" एम चिंतवीने एक आंगुली ऊंची करी त्यारे भोजराजाना भट्टे क्रोध करी बे आंगुली ऊंची करी; ते जोइ दक्षिण भट्टाचार्ये चमत्कार पामीने पांच आंगुली ऊंची करी बतावी ते जोइ गांगातेलीए मुठी ऊंची करी बतावी त्यारे दक्षिण भट्टाचार्ये पोताना मस्तक ऊपरथी अंकुश उतारी न्हांख्यो, पेटे पाटो बांध्यो हतो ते छोडी न्हांख्यो अने निसरणी तथा कोदाली पण न्हांखी दीधी, तृणनो पूलो पण न्हांख्यो, समस्त मानो त्याग करी सर्व सभा समक्ष भोजराजाना भट्टना पगे लाग्यो अने कहेवा लाग्यो के म्होटी आश्चर्यनी वात छे के म्हने कोइए पण जीत्यो नहीं पण तुं म्होटो पंडित छे माटे त्हें मुजने जीत्यो; ते जोइ भोजराजाए विस्मय पामीने दक्षिण भट्टाचार्यने पूछ्युं के तमे केवा प्रकारनो वाद कर्यो ? त्यारे भट्ट बोल्यो के तमारो भट्ट महा ज्ञानवान् छे कारण के म्हें एनी साथे समस्याए वाद कर्यो के आ जगतमां एक शिव छे एवुं स्थापन करवा सारुं एक आंगुली तमारा भट्टने बतावी त्यारे तमारा भट्टे बे आंगुली देखाडी तेथी हुं समजी गयो के एक मात्र शिव ज नथी पण शिव अने शक्ति ए बेउ छे. वली म्हें कह्युं के इंद्रियो पांच छे तेथी पांच आंगुली बतावी त्यारे आपना भट्टाचार्ये मुट्ठी बतावी तेथी हुं समजी गयो के पांच इंद्रियो तो खरी पण तेने वश राखवी जोइए. त्यारे म्हें जाण्युं जे ए पंडित त्यागी, ज्ञानी अने जितेंद्रिय छे; एवी रीते वाद थयो तेमां

हु हारी गयो, एना समान बीजो पंडित म्हें क्यांय पण दीठो नहीं. एम कहीने दक्षिणभट्टाचार्य मानभ्रष्ट थयो थको पोताने देशे चाल्यो गयो, पाछलथी भोजराजाए गांगातेलीने पूछयु के रहें केवा प्रकारनो वाद कर्यो अने केवी रीते जीत्यो ? त्यारे तेली बोल्यो के महाराज ! दक्षिणभट्टाचार्य घणो खराब माणस छे म्हने कहेवा लाग्यो के रहारी एक आख छे ते हु फोडी न्हाखीश एवु मनमा लावीने एक आगुली ऊची करी त्यारे म्हें बे आगुली ऊची करीने समजाव्यो के तु तो एक आख फोडत्तो पण रही जइश परतु हु तो रहारी बे आखो फोडी नाखीश, त्यारे मने पंजो देखाडी बोल्यो के हु तने थाप मारीश तेथी रहारु म्होढु फरी जाशे, त्यारे म्हें मुट्ठी बताची के हु तुजने एक मुट्ठी मारीश तो तु पाताळमा पेसी जइश एवी वात तेलीना मुखथी साभलीने राजा प्रमुख सर्व सभाने हसवु आव्यु अने बोल्या के ए म्होटो भाग्यशाली सुसिद्धिवालो छे एवु कही वस्त्रादिक पहेरामणी आपी, सन्मान दइ, गांगातेलीने घेर पहोंचतो कर्यो.

एनी पेरे सिद्धार्थराजा कहे छे के हे स्वप्नपाठको ! तमे पण सुसिद्धिवाला छो तेथी म्हारे तो तमारु कहेवु सत्य थाओ एवु सिद्धार्थराजाए स्वप्न पाठकोने कह्यु, कहीने ते स्वप्नोने रूडी रीते धारण करीने स्वप्नलक्षण पाठकोने घणा अशन पान खादिम अने स्वादिमादिक चार आहार जमाडीने फूल, फल, गन्ध, माला, घरेणादिकोथी सत्कार सन्मान आप्यु, अने जीवे त्या सुधी खाया करे एवी घणी आजीविका दीधी अर्थात् गाम नगर प्रमुख आपीने रजा आपी त्यार पछी सिद्धार्थ क्षत्रियराजा सिंहासन थकी उठीने ज्या त्रिशलाक्षत्रियाणी पडिच्छमा बेठी छे त्या आवीने कहे छे के हे देवाणुप्पिया ! स्वप्नशास्त्रमा बेंतालीश सामान्य स्वप्ना अने त्रीश महा स्वप्नां, सर्व मली बहोतेर स्वप्ना कह्या छे ते त्रीशमांथी चौद म्होटां

स्वप्नां तीर्थंकर अने चक्रवर्त्तिनी माता देखे अने एज चौद स्वप्न मांहेला सात स्वप्नां वासुदेवनी माता देखे, अने चार बलदेवनी माता देखे, एक मंडलिकराजानी माता देखे, एवुं स्वप्नपाठके कह्युं छे. जे तमे चौद स्वप्नां दीठां माटे तमारे चक्रवर्त्ति तथा तीर्थंकर होवावालो पुत्र थशे. ते पछी त्रिशलादेवी ए अर्थ सांभलीने हृदयमां खुशी थइ यावत् स्वप्नांनो अर्थ धारण करीने सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने नाना प्रकारना मणिरत्नोना बाजोठथी उठीने ताकीद रहित यावत् राजहंस सरखी गतिए चालती थकी ज्यां पोतानुं भुवन छे त्यां आवीने पोताना मंदिरमां प्रवेश करती हवी.

गुणनिष्पन्ननाम थापवानो मनोरथ—

जे दिवसथी श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी ते राजाना कुलमां हरणिगमेषी देवे संहर्या ते दिवसथी वैश्रमणनामे इंद्रमहाराजनो जे भंडारी जेनुं लोकोमां धनद एवुं नाम छे ते भंडारीना हुकमना उठाववावाला एवा जे तिर्यक्लोक निवासी वैताढ्य पर्वतनी मेखलाए रहेनारा व्यंतरनिकायनां तिर्यग्जृंभक देवता ते शक्रेंद्रना हुकुमथी घणाज घणा एवा जे जूना धन, घड्या महानिधान ते केवा धन तो के—जे धनना स्वामी हीण थइ गया, जे धनना संचय करवावाला घडाववा वाला मरण पामी गया छे, तेमनो कोइ गोत्री पण रह्यो नथी, सर्वथा ते धनना स्वामी विच्छेद पाम्या, डाटवावाला विच्छेद गया, डाटवावालानां कुलगोत्र पण विच्छेद पाम्यां तेमनुं धन. ते हवे जे स्थानके घालीने मरी गया ते स्थानकोनां नाम कहे छे—बुद्धिनां गुण ज्यां जता रहे तेने 'गाम' कहीए त्यां घडावीने मरी गया ते धन त्यांज रही गयुं, ते धन तथा ज्यां कर नहीं लागे तेने 'नगर' कहीए, धूलनो कोट ज्यां होय तेने 'खेट' कहीए, खोटुं नगर ते 'कर्वट' कहीए, शहेरथी बे कोश ऊपर जे गाम होय ते 'मंडप' कहेवाय, जेने चारे बाजुए गाम वसे ते 'द्रोणमुख' कहेवाय, जलमां अने थलमां थइने मार्ग जाय ते 'पट्टण' कहीए,

ज्यां तापसोनु वसवु होय तेने 'आश्रम' कहीए, तीर्थस्थानके जे गाम होय तेने 'सवाह' कहीए, सार्थवाहने उतरवानु स्थानक होय तेने 'सन्नि-वेश' कहीए एवा प्रकारना गामोने विषे, सिंघोडाना आकारे रस्ता होय तेने विषे, तथा त्रिवाटाने विषे, चोवाटाने विषे तथा घणा मार्ग ज्यां भेला थता होय तेने 'चच्चर मार्ग' कहीए तथा चौमुखा देवोनां मंदिरमा, म्होटा पथवाला राजमार्गने विषे, देवकुलमां, सभामा, पाणीना स्थान-कमां, बागमा, उद्यानमा, वनमा, वनखडमां, एक जातिनां वृक्ष, होय तेने 'वनखड' कहीए, मसाणमां, सूनाघरमा, पर्वतनी गुफाओमां, होमना स्थानके, पर्वतनी शिला खोदेली होय तेमां, वेसवानी शालामां, लोकोने वसवाना स्थानकोमा एटला स्थानके घालेलां जे धन ते सर्व जगाओना धन लइ जइने सिद्धार्थ राजानां घरमां न्हाखो एवो इन्द्र-महाराजनो हुकुम थयो त्यारे तिर्च्छालोकना वसवावाला तिर्यग्जृंभक देवता ते सर्व धन लइ जइने सिद्धार्थराजाना घरमां न्हांखे जे रात्रिमां श्रमणभगवान श्रीमहावीरस्वामी ज्ञातकुल जे सिद्धार्थराजा तेना कुलमां आव्या ते रात्रिथी माडीने सिद्धार्थराजा, सोने करी, रूपे करी, धने करी, धान्ये करी, राज्ये करी, देशे करी, वाहने करी, कटके करी, पालखी प्रमुखे करी, भडारे करी, धान्यना कोठारे करी, पुरे करी, अतेउर जे राणीयोनो परिवार तेणे करी, देशवासी लोकोए करी, यशवादे करी, घणा घणा वध्या–वृद्धि पाम्या तथा गणवामा आवे एवा चोवीश प्रकारना धान्य तेना नाम कहे छे–जव, घउ, शालि, व्रीहि, साठी, कोद्रवा, सामो, काग, राल, तिल, मग, अडद, अलशी, चणा, तिउडा, वाल, सिलिंद, राजउडद, उच्छू, मसूर, तुअर, कुलथ, धाणा, कलायरो, इत्यादिक २४ प्रकारनां धान्यथी तथा बीजा पण सोनु, रूपुं, रत्न, मोती, मणि, दक्षिणावर्त्त शख, राजवर्त्त, शिला, मूगिया, लाल रत्न, पद्मराग आदिके करी वृद्धि पाम्या तथा प्रीति, सत्कार, बल, वाहन समुदाये करीने घणा घणा ज

वृद्धि पाम्या, तेथी श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामीनां माता पिता मनमां एवो विचार उपन्यो के जे दिवसथी अमारे आ पुत्र कूखमां आव्यो छे ते दिवसथी लइने अमे सर्व प्रकारे पूर्वे कह्यां एवां सोनां रूपां प्रमुख वस्तुए करी वध्या, प्रीति सत्कारे करी घणा घणाज वध्या, माटे ज्यारे अमारे घेर आ पुत्रनो जन्म थाशे त्यारे अमे ए पुत्रनुं नाम जेवा एमां गुण छे तेवुं आपीशुं, अर्थात् वृद्धिपणाना गुणे करी 'वर्द्धमान' एवुं नाम स्थापन करीशुं.

मातानां ऊपर अनुकंपा लावी प्रभु निश्चल रह्या—

श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामीए पोतानां मातानी ऊपर अनुकंपा एटले दया लावीने विचार्युं के हुं ज्यारे गर्भमां हालुं चालुं छुं त्यारे माताने दुःख उपजे छे एम चिंतवीने मातानी कूखमां निश्चल रह्या, हाल्या चाल्या, नहीं, कंप्या नहिं, पोतानां अंगोपांग गोपवी राख्यां एवा थया थका रह्या; इहां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के—जाणे भगवान् मोहराजाने जीतवा सारु एकांते विचार करता रह्या छे के शुं ?, अथवा कोइ परब्रह्मनुं अगोचर ध्यान करे छे के शुं ?, अथवा कल्याणरस प्रत्ये पोताना आत्मगुण साधवा रह्या छे के शुं ?, अथवा कामदेवनो निग्रह करवाने अर्थे रूपपरावर्त्तन विद्या साधता रह्या छे के शुं? एवी रीते श्रीभगवान् मातानी कूखने विषे रह्या ते तमोने कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थे थाओ.

प्रभुनी निश्चलताथी माताने शोक—

त्यारे त्रिशलामातानां मनमां एवुं थयुं के म्हारो गर्भ कोइ देवता लइ गयो, म्हारो गर्भ मरण पाम्यो, म्हारो गर्भ चवी गयो, म्हारो गर्भ गली गयो, म्हारो गर्भ प्रथम हालतो चालतो हतो ते हमणां हालतो चालतो नथी तेथी जाणुं छुं के गर्भने कुशल नथी एवुं विचारीने मनमां संकल्प थयो, चिंतारूप समुद्रमां बूड्यां, अने हाथ ऊपर म्होढुं धरी नीची दृष्टि राखीने आर्त्तध्यान ध्याववा लागी, ते आ प्रमाणे के म्हारो जे गर्भ जतो रह्यो ते हुं निश्चे अभागणी छुं, हीणपुण्यवाली

छुं, अभागीयाना घरमा चिंतामणीरत्न रहे नहीं अथवा दारिद्रीनां घरमां निधान केम रहे ? जेम मारवाडमा कल्पवृक्ष रहे नहीं तेम पुण्यहीणने तृषा लागे त्यारे अमृतपान करवानी इच्छा थाय तो ते इच्छा केवी रीते पूरण थाय ? हे दैव ! हे कर्म ! तु महा निर्दय छे, निर्लज्ज छे, तुजने करुणा नथी, अरे पापिष्ट दुष्ट ! निरपराधि लोकने मारवा वाला, तु म्हारो विना मतलब वैरी केम थयो ? त्हारो म्हें श्यो अपराध कर्यो के जे थकी त्हें म्हारो मनोरथरूप कल्पवृक्ष उखेडी न्हांख्यो, म्हें त्हारो कोइ अपराध कर्यो होय तो हे पापी ! तु प्रगट थइने शा वास्ते कहेतो नथी ? त्हें मुजने दु:खनी खाण प्राप्त करी दीधी, त्हें मुजने आखो आपीने पाछी खेंची लीधी, त्हें मुजने हाथमा निधान आपीने पाछो खेंची लीधो, त्हें मुजने मेरुपर्वत ऊपर चढावीने पाछी जमीन ऊपर नाखी दीधी, त्हें म्हारा मुखमा आवेलो कोलीयो खेंची लीधो, त्हें म्हारा निपजेला—पाकेला धान्यना क्षेत्रने बाली दीधु, त्हें म्हारी रसकुपिका भाजी दीधी, त्हें म्हारु जहाज भरसमुद्रमा डुबाडी दीधु, अथवा वली दैवने ओलभो देवाथी शु थाय ? अरे जीव ! त्हें आगला भवमां एवाज कर्म बांध्या हशे ते कर्म तुजने हमणा उदयमां आव्या छे पूर्वभवमा म्हें माताओनी पासेथी बालकोने दूर कर्या हशे तथा गाय प्रमुखना वाछरुने दूध पीवा दीधु नहीं होय, वृक्षनी डालीयो भांगी, सरोवरनी पाल फोडी, दव लगाव्या, अणगल पाणी पीधा, उदरोना बिल खोद्या, धूलथी भर्या, नोलीया अने गोहना दरोमा गर्भनु पाणी तथा तेल रेडयु, कीडी मकोडाना दरमा उष्ण पाणी रेड्या, पोपट मेना प्रमुखने पांजरामा घाल्या तेमनी माताना वियोग कर्या, चिडा प्रमुख पखीओनां माला पाड्या, ईंडा फोड्या, जू लीख मार्या, लोकोना गर्भ ऊपर द्वेष कर्यो, गर्भ पडाव्या, गर्भस्तभन कराव्या, वशीकरण, उच्चाटन कराव्या त्हारो पुत्र मरण पामजो एवा श्राप दीधा, पापना मत्र अने औषध कर्या,

कोइने विष दीधुं, कोइना रत्न चोरी लीधां, कोइनुं शील भंगाव्युं, अथवा व्रत लइने भांग्या, कोइनां गाम बाल्यां, म्होटा वृक्ष धरतीमांथी उखेडी नांख्यां, म्होटा तालावनां शोषण कर्यां अथवा देवद्रव्य भक्षण कर्यां, जैनमंदिर पाड्यां, गुरुना अवर्णवाद बोल्या, देवगुरु ऊपर द्वेष कर्यो, दान देताने वर्जना करी, वृक्षनां फल विदार्यां अथवा अनंतकाय भक्षण कर्यां, काचां फल तोड्यां, घणुं शुं कहुं ! एवा म्हारे जीवे पाप कर्यां हशे ते पाप हमणां मुजने उदय आव्यां छे के जे थकी म्हारो आवो गर्भ गली गयो, माटे हुं तो पारविनानी दुःखिनी थइ, म्हारो ए चौद स्वप्न सूचित गर्भ गयो तो हवे म्हारे संसारमां बीजुं शुं सुख छे, हुं राजपाटने शुं करुं वधारे शुं कहुं, ? त्रण लोकथी पूजित एवा पुत्र विना सर्व म्हारे सुनुं छे, हवे हुं क्यां जाउं, शुं करुं, कोनी आगल जइ पोकार करुं, एवा विलाप करती थकी त्रिशलादेवी यूथभ्रष्ट हरणी सरखी थइ, ज्यां त्यां भमे, निशासा न्हांखे, एवी अव्यवस्थित थयेली त्रिशलादेवीने देखीने सखीयो पूछवा लागी के स्वामिनि ! आज तुं एवी थइ केम रही छे ? अमे तने पूछीए छीए के आ दुःखनुं शुं कारण छे ? त्यारे त्रिशलादेवी आंखमांथी आंसु नाखीने निशासा मूकती बोली के हे सखीयो ! हुं तमोने शुं कहुं, हुं निर्भागणी छुं, म्हारुं जीवितव्य गयुं. त्यारे सखीयो बोली के सखि ! आवा अमंगलिक वचन म बोल, बीजुं सर्व रह्युं पण त्हारा गर्भने तो कुशल छे ? त्यारे त्रिशला बोली के सखियो ! जो म्हारा गर्भने कुशल होय तो बीजुं म्हारे शुं दुःख छे ? म्हारो गर्भ जतो रह्यो एज दुःख छे. एवुं कहेतां मूर्च्छा खाइने जमीन ऊपर पडी गइ, तेवारे सखीयोए चंदनजल छांटी छंटकावीने अने पव-नथी सचेतन करीने फरी पुछ्युं के त्हारा गर्भने शुं थयुं ? तेवारे राणी गदगद स्वरथी बोली के म्हारो गर्भ जतो रह्यो एवुं सांभली सखीयो पण सर्व दुःखी थइ थकी राजाने जइ ए हकीगत कही, तेथी राजा

पण दु खी थयो, नाटक वाजित्र सर्व निषेध कर्या, सर्व शोकाकुल थइ बेठा के हवे शु करीए एवा थया के तेने कांइ पण सूजे नहीं, त्यारे कोइक तो निमित्तियाने पूछवा गया, कोइ ज्योतिषीया जोगीने पूछवा लाग्या अने वृद्ध स्त्रीयो, शाति पुष्टि करवा लागी, कुलदेवीने ओलभा देती हवी के हे देवी ! आ वखत तुं किहा गइ, एवा एवा विलाप करे छे पण त्या कोइ शब्दथी बोले नहीं, स्तब्ध थया, सर्व शोकनी राजधानी सरखां थया आसुथी मुख धोता थका, निसासा मूकता थका, दु खे पीडाता थकां, कोइने खावु पीवु पण सूजे नही एवा स्वरूपे थया.

गर्भमा भगवान एक देशथी हाल्या—

थोडी वार पछी भगवाने जाण्यु के प्रथम वाजित्र प्रमुख वाजतां हतां ते हमणा केम नथी वाजता ? एवु जाणी अवधिज्ञाने जोयु त्यारे सर्व व्यतिकर जाणीने विचार्युं के–

किं कूर्म्म कस्य वा ब्रूम, मोहस्य गतिरीदृशी ।
दुपूधातोरिवास्माक, दोपनिष्पत्तये गुणा ॥ १ ॥

आ मोहराजानी गति केवी छे के म्हें तो गुण कर्युं तो आंही उलटु अवगुण थयु ते ऊपर कलिकालनु दृष्टात कहे छे–जेम कोइक पथी परदेशथी घणु द्रव्य उपार्जन करी पोताने घेर आवतो हतो तेवामां रस्ते चालता कोइक अटवी आवी तेमा दव लागो दीठो ते दवमा कोइ सर्प्प दाझे छे, ते सर्प्पे पहेला वटमार्गुने कह्यु के मुजने आ दवमाथी बाहेर काहाढ्य ? तेवारे तेणे बाहेर काहाड्यो त्यारे सर्प्पे कह्यु ऊभो रहे हु तुजने भक्षण करीश ते पुरुष बोल्यो म्हें तुजने बळतो राख्यो, उपकार कर्यो, अने मरणमाथी उगार्यो तो उलटो तु मुजने भक्षण करीश ? सर्प्पे कह्यु आजे कलिकाल वर्त्ते छे आजना समयमा गुणनो दोष थाय तेमाटे हु तुजने करडीश तेवारे पथी बोल्यो हुं घणा वर्षे घेर जाउ छु

वली म्हारी पासे द्रव्य छे माटे घेर जइ म्हारी स्त्रीने द्रव्य आपी तेनी शीख मांगी आवुं छुं एवो कोल आपी पोताने घेर आव्यो, स्त्रीने सर्व वात कही, शीख मांगीने ते पुरुष अटवीमां पाछो आव्यो, स्त्री पण पाछल पाछल आवी सर्प्पने स्तुति करी कहेवा लागी के अहो ! नागराज म्हारा भरतारनुं भक्षण करशो तो म्हारी शी गति थशे, म्हारे पाछल शत्रु घणा छे त्यारे सर्प्पे कह्युं ते शत्रुनिवारण उपाय तुजने बतावीश, तेनी तुं चिंता म करजे आ औषध म्हारा राफडा पासे छे तेनुं मूल लइ पाषाण ऊपरे घसीने तेना छांटा वैरी ऊपर न्हांखशे तो वली भस्म थाशे. स्त्री ते औषधीनुं मूल लइ अमृतमूलीने पाषाण ऊपर घशीने सर्प्प ऊपर छांटा न्हांखवा तैयार थइ त्यारे सर्प्प बोल्यो म्हें तुजने औषधी देखाडी तो वली म्हनेज वाले छे उलटो गुण ऊपर अवगुण करे छे तेवारे स्त्री बोली के गुणनो भाइ अवगुण (दोष) छे एवुं तमेज तमारा मुखथी कहो छो माटे हवे तमारे बोलवुं नहीं एम कही सर्प्प ऊपर छांटा न्हांख्या ते वली भस्म थयो (इति कलिकाल दृष्टांत) एम विचारी गर्भमांहे रह्यां थकां भगवान टची अंगुली हलावीने एक देशथी हाल्या.

गर्भना हालवाथी माताने प्रमोद—

त्रिशलाजीए जाण्युं अरे म्हारो तो गर्भ छतो छे, अने म्हें फोकट खोटो शोक कर्यो एवुं चिंतवन करीने कहेवा लागी के हे सखीयो ! म्हारा गर्भने कुशल छे, म्हें अज्ञानथी विलापात कर्यो, म्हारा भाग्य म्होटां, हुं धन्य, कृतपुण्य, हुं त्रण भुवनमां मान्य, म्हारुं जीववुं प्रशंसनीय, अने मन्हे जैनधर्म फल्यो, म्हें पूर्वे जे धर्म सेव्यो हतो ते प्रगट थयो, म्हारुं जीववुं सफल, सखीयो जय जय करवा लागी, अष्टमंगल मांड्या कुंकुम छांट्या, राजाने वधाइ दीधी, राजा पण खुशी थयो, वाजित्र वाज्यां, नाटक महोत्सव थयां, तोरण बांध्या, बंदीजन जय जय शब्द बोल्या, बंदीखानां छोड्यां, अनेक लोक मल्या, मंगलिकनी वातोथी

कोलाहल थयो, महा दान आप्या, ए प्रमाणे आनदथी राजानी राजधानी हर्ष रूप थइ, सूत्रकार कहे छे के-ते गर्भनु कुशल न जणायाथी सिद्धार्थराजाना घरमा मृदग, ताल, वीणा, हस्तताल, नाटक इत्यादि लोकवल्लभ सर्व कार्य आनद रहित थया हता तेथी महावीर स्वामी माताने शोकातुर जाणीने एक देशथी हाल्या त्यारे त्रिशला हृदयमां हर्ष पामीने बोली म्हारो गर्भ हरण थयो नथी, यावत् गल्यो नथी, आ म्हारो गर्भ प्रथम हालतो न हतो ते हमणा हाले छे, एवुं कहीने हर्ष पामीने आनद मनाववा लागी

गर्भमाज प्रभुए अभिग्रह लीधो—

हवे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीने विचार थयो के म्हारा मा बाप हमणाथीज एवा प्रकारनो मोह करे छे तो ज्यारे हुं दिक्षा लइश त्यारे तो ए घणु दुख पामशे माटे हवे म्हारे म्हारा माता पिता जीवे त्यां सुधी दीक्षा लेवी कल्पे नहीं एवु ज्यारे साडा छ महिना गर्भने थया त्यारे भगवाने अभिग्रह लीधो

गर्भप्रतिपालन—

त्यार पछी त्रिशलामाताए स्नान कर्युं, देवपूजा करीने मंगल कर्या, सर्व घरेणा आभूषण पहेयाँ, गर्भप्रतिपालन करवाने अर्थे घणो ठडो आहार लीए नहीं, घणो उन्हो आहार लीए नहीं, घणो तीखो सूठ मिरचादिकनो आहार लीए नहीं, घणो कडवो ते निंबादिक, घणो कशायलो ते हरडे प्रमुख, घणो खाटो ते आंबली प्रमुख, घणो मीठो ते गुडादिक, घणो चोपड्यो ते घी प्रमुख, घणो लूखो ते चणा प्रमुख, घणो सूको ते पूडला पापडी प्रमुख, घणो लीलो ते फल फूल कदमूलादिक भोजन खाय नहीं, जे भोजन करे ते पण विधि सहित करे, वस्त्र पण विधिथी पहेरे, गधादिक विधिए लीए, माला प्रमुख विधिथी पहेरे,

गर्भनी रक्षाने वास्ते पोताने रोग थवा दीए नहीं, शोक करे नहीं, मोह करे नहीं, भय राखे नही, घणा काम करे नही, जे जे काम गर्भने हितकारी होय ते ते काम करे, मानोपेत पथ्य आहार करती थकी गर्भने पोषे, जे कालमां जे चीज पाचन थती होय, अने गुणकारक होय ते चीज वापरे, कोमल शय्याए शयन करे, सुखासनने विषे बेसे, ऊंची नीची फरे नही, वली वाग्भट्टादिक ग्रंथोमां कहेलुं छे के-गर्भिणी स्त्री जो वायडुं खाय एटले वायुज चीजो खाय तो गर्भ कूबडो थाय, आंधलो थाय, वामन थाय, पित्तकरनारी चीज खाय तो गर्भ पडी जाय तथा तेनुं अंग पीलुं थाय, कफ करनारी चीज खाय तो पांडुं रोग (श्वेत वर्णवालो) थाय अथवा कावरचीतरो थाय, तथा जो गर्भवाली स्त्री लूण घणुं खाय अने आंखमां काजल घणुं आंजे तो छोकरो नेत्र रहित आंधलो थाय, घणो ठंडो आहार करे तो वायु घणो थाय, घणुं ऊन्हुं खाय तो छोकरो निर्बल थाय, मैथुन सेवन करे तो गर्भ मरण पामे, घोडा प्रमुख ऊपर चढे, घणी दोडे, घणी चाले, चालती पडे, पेट मसलावे, खाल प्रमुख उल्लंघे, उंची नीची सूवे, मेडी प्रमुख ऊपर चढे उतरे, ऊभडक बेसे, उपवास करे, वमन विरेचन जुलाब लीए एटलावानां करे तो गर्भ पडी जाय, घणुं रुदन करे तो छोकरो चीपडी आंख वालो थाय, घणा गीत गाय तो छोकरो बहेरो थाय, घणी वातो करे तो वाचाल थाय, घणुं हसे तो मश्करो थाय, घणी गालो बोले तो छोकरो लंपट थाय, तथा ऋतु ऋतुमां शुं शुं पथ्य करवुं शुं खावुं ? ते कहे छे-वर्षा ऋतुमां लूण गुणकारक छे, शरद् ऋतुमां जल गुणकारक छे, शिशिर ऋतुमां खाटो रस गुणकारी छे, वसंत ऋतुमां घृत गोल इत्यादिक गुणकारक छे. वली कोइ म्होटी वृद्धावस्थावाली सहियर कहे छे के-बाइ धीरजथी बोलो, धीरजथी चालो, क्रोध म करो, पथ्य खाओ, घणो आकरो घाघरो अने कांचली

बांधो नहीं, घणु हसवु म करो, चांदणीमां सुओ नहीं, केमके अगासिए सुवा थकी पुत्र वांडो (रावणखडो) थइ जाय वली घणु नीचु न चालवु, घणी ऊंची चडीशमा, दिवसे सुवाथकी छोकरो ऊंघण थाय, आलसिओ थाय, नख कापवा थकी पुत्र कुशीलियो थाय, घणु दोडवाथी पुत्र चचल थाय, घणु हसवाथी होठ, दांत, तालु अने जीभ काला थाय, घणा गीत गावाथी बहेरो थाय, वींजणे वायु कर्याथी उन्मत्त थाय, अति बोलवाथी वाचाल थाय, अतिशोक कर्याथी उच्चाटीयो थाय, मूर्च्छाथकी निर्बुद्धि थाय, अतिभय राखवाथी गर्भ वीकरण थाय, अति परिश्रम करवाथी मंदशक्ति वालो अने आलसु थाय इत्यादिक वातो सर्व वडेरी कहे ते प्रमाणे त्रिशलाराणी पोताना गर्भनी प्रतिपालना करे

त्रिशलामाताने उपजेला दोहला—

हवे त्रिशला माताने भला डोहोला उपजे छे के—पूजा करु, दान आपु, साहमी वात्सल्य करु इत्यादिक डोहोला सर्व सिद्धार्थराजा पूरण करे, हर्ष सहित सन्मान करीने पूरा करे पण एवु न कहे के तु तो वेठी वेठी फद करे छे एवी रीते डोहोलानु अपमान करे नही, एम त्रिशलादेवीने उपजता डोहोलानी इच्छा सर्वथा तेना मनमा रहे नही, रथवाडी प्रमुख वनक्रीडा प्रमुखना डोहोला तो सर्व सिद्धार्थराजाए पूरण कर्या परतु एक दिवसे त्रिशलादेवीने एवो डोहोलो उपन्यो के इद्राणीना कुडल खेंची लइने हु पहेरु ते डोहोलो राजाथी पूरण थयो नहीं तेथी मनमा दुमणी (खिन्न) थइ तेवारे सिद्धार्थराजा डोहोलानी हकीगत राणीना मुखथी साभलीने कहेवा लाग्यो के ए डोहोलो पूरण करीश पण ए वात म्हारा हाथमा नथी एटलामा इद्र महाराजनुं आसन चलायमान थयु त्यारे इद्रे अवधिज्ञानथी जोइने भगवाननी माताने डोहोलो पूरण करवा सारु इद्राणी प्रमुख देवागनाओना समूहने लइने

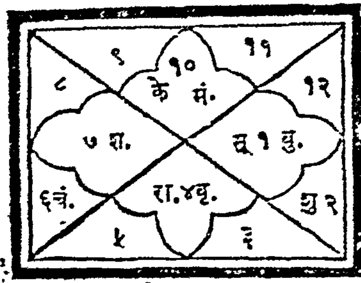
क्षत्रियकुंड नगरनी समीपे एक महादुर्गम–पर्वत छे त्यां इंद्रपुरनामे नगर वसावीने परिवार सहित आवी रह्यो, सिद्धार्थराजाए सांभल्युं के इंद्र महाराज आपणा पर्वतमां रहे छे त्यारे सिद्धार्थराजाए इंद्र महाराजने कहेवरावी मोकल्युं के अमारी राणीने कुंडल जोइए माटे तमारी इंद्राणीनां कुंडल आपो, ते सांभली इंद्रे कुंडल आप्यां नहीं त्यारे सिद्धार्थराजा सेना लइ इंद्र साथे युद्ध करवा गयो त्यां इंद्रमहाराज तो जीतवाने समर्थ छे तथापि जाणीबूजी हार खाइने भागी गया, पाछलथी सिद्धार्थराजाए पोकार (रुदन) करती अप्सरानां वृंदमां वेठेली इन्द्राणीना कुंडल लूटीने त्रिशलाराणीने आपीने डोहोलो पूरण कर्यो. वली बीजा पण सत्तरभेदी पूजा रचावुं, तीर्थयात्रा करुं, देवगुरुनी भक्ति करुं, सुपात्रे दान आपुं इत्यादिक अनेक डोहोला त्रिशलाने उपन्या ते राजाए पूर्ण कर्या एवी रीते पूरित दोहला–त्रिशलाराणी सूवे, वेशे, ऊभी रहे, सघली ऋतुने विषे सेववा योग्य, गर्भने सुखनां करनार, एवां भोजन, आच्छादन, वस्त्र, गंध, माला प्रमुख लीए, गर्भना हित कारक पथ्ये करी देशकाल योग्य आहार करती थकी. गर्भपोषण करती थकी पोताना परिजन जे दासी सहेलीओ प्रमुख तेमनी साथे विचरती थकी, फरती थकी, पोताना आवासमां सुखपूर्वक रहे छे.

भगवान श्रीमहावीरस्वामीनो जन्म—

ते काल ते समयने विषे श्रमणभगवंत श्रीमहावीर–स्वामी उन्हालानो पहेलो चैत्र महीनो तेनुं बीजुं पखवाडीयुं एटले चैत्रशुदि तेरशने दिवसे नव महीना ऊपर साडा सात दिवस गयां (इहां नवमहीना ने साडा सात दिवस गर्भावासनो अधिकार छे परंतु ओछो अधिको होय तो पण पाठ एवो बोले तो तेनी कांइ हरकत नथी गर्भमां रहेवानो काल तो चोवीश तीर्थंकरनो आ प्रमाणे छेः–श्रीऋषभदेवजी नव महीना ने चार दिवस रह्या, श्रीअजितनाथजी आठ महीना

ने पच्चीश दिवस रह्या, श्रीसभवनाथ नव महीना ने छ दिवस रह्या, अभिनदन आठ महीना ने अठ्यावीश दिवस, सुमतीनाथ नव महीना ने छ दिवस, पद्मप्रभ नव महीना ने छ दिवस, सुपार्श्वनाथ नव महीना ने छ दिवस, चद्रप्रभ नवमहिना ने आठ दिवस, सुविधिनाथ आठ महीना ने छव्वीश दिवस, शीतलनाथ नव महीना ने छ दिवस, श्रेयास नाथ नव महीना ने छ दिवस, वासुपूज्य आठ महीना ने वीश दिवस, विमलनाथ आठ महीना ने एकवीश दिवस, अनतनाथ नव महीना ने छ दिवस, धर्मनाथ आठ महीना ने छव्वीश दिवस, शातिनाथ नव महीना ने छ दिवस, कुथुनाथ नवमहीना ने पाच दिवस, अरनाथ नव महीना ने आठ दिवस, मल्लीनाथ नव महीना ने सात दिवस, मुनि-सुव्रत नव महीना ने आठ दिवस, नेमिनाथ तथा नेमनाथ नव महीना ने आठ दिवस, पार्श्वनाथ नव महीना ने छ दिवस, श्रीमहावीरस्वामी नव महीना ने साडा सात दिवस गर्भमा रह्या ए चोवीश तीर्थंकरनी गर्भ-स्थिति कही) उच्च राशिना सात ग्रहमा पहेलो चद्रयोग होते छते, निर्मल दशदिशाओ ते वादला अने धूल रजे करी रहित होते छते, जन्म वेलाए अधकार रहित, अग्नि दावानल प्रमुख उपद्रव रहित दिशाओ होते छते, एवा वसतमा पक्षीयो सर्व जयकारी शब्द बोली रह्या छे, प्रदक्षिणा-वर्त्त सानुकूल शीत मद मद सुगध सहित एवो पवन भूमिमा चाली रह्यो छे, पृथ्वीमा सर्व जातिना धान्य नीपज्या छे तेना योगे करी हर्ष वत थया थका सर्वदेशोना लोक क्रीडा करता थका विचरी रह्या छे, ते काले मध्य रात्रिना समयमा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रना त्रीजा पाया साथे चद्रमानो योग होते छते रोग रहित एवी त्रिशलाराणी रोग रहित अने त्रण ज्ञान सहित एवा पुत्रने प्रसवती हवी

जन्मकुडली स्थापना—स्वस्तिश्री ऋद्धिवृद्धिजयोमांगल्याभ्युदयश्च सवत् २६९१ वर्षे मासोत्तममासे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ



भौमवासरे घटी. ५५ पल. ११, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र घटी. ६०, ध्रुवयोग घटी. ४५ पल, ५५, तैतल कर्णं एवं पंचांग शुद्धौ श्री इष्टघटी. ४५ पल, १५, इक्ष्वाकुवंशे श्रीक्षत्रियकुंडपुरनयरे सिद्धार्थनृपगृहे भार्यां त्रिशलाक्षत्रियाणी कुक्षौ पुत्ररत्नमजीजनत्, त्रण भुवनना दीपक श्रमण भगवंत श्रीमहावीर जन्म्या तस्य जन्म कुंडली स्थापना.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते—
श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे चतुर्थ-व्याख्यानं समाप्तम् ।



अथ पञ्चम व्याख्यान-प्रारंभः ।

जे रात्रिमां श्रीमहावीर स्वामी जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता अने देवीयो ते स्वर्गमां जातां आवतां जाणे घणाज आकुल व्याकुल थइ रह्या होय तेनी पेरे जाणवामां नही आवे एवो अव्यक्त (कोलाहल) शब्द थयो एटले जेवारे घणा जनो बोले त्यारे शब्द थाय पण मालम पडे नहीं. जे समयमां श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो त्यारे त्रण जगतमां उद्योत थयो अने साते नरकमां पण उद्योत थयो. वली आकाशमां देवदुन्दुभी वाग्यां, वली नरकना जीवोने पण क्षणमात्र आनंद थयो, केमके भगवंतना अतिशय

१ पहली नरके सूर्यसमान, बीजीमां वादलोथी ढांकेल सूर्य सरखो, त्रीजीमां चन्द्रसमान, चोथीमां वादलाओथी ढांकेला चन्द्रमा सरखो, पांचमीमां ग्रह सरखो, छट्ठीमां नक्षत्र सरखो अने सातमीमां तारा सरखो उद्योत (तेज) थाय छे. एम भगवानना पांचे कल्याणके नरकादि सर्व चौद राजलोकमां उद्योत थाय छे.

थकी नारकी जीवोने पण मुहूर्त्त मात्र शाता उपजे वली स्थावरजीवोनु पण विशेष छेदन भेदन न थाय तेथी तेने पण सुख उपजे, जन्मती वेलाए सर्व जमीन उल्लासमाननी परे थइ.

छप्पन दिग्कुमारी अने सुरेन्द्रकृत जन्मोत्सव—

भगवाननो जन्म थवाथी छप्पन्न दिग्कुमारिकाओना आसन चलायमान थया त्यारे अवधिज्ञान प्रयुजी भगवाननो जन्म थयो जाणी, प्रथम भोगकरा, भोगवती, सुभोगा, भोगमालिनी, तोयधरा, विचित्रा, पुष्पमाला अने आनदिता, ए आठ दिग्कुमारिकाओ अधोलोके गज दताकार पर्वतनी हेठे वसनारी छे, ते आवीने भगवतने तथा भगवतनी माताने नमस्कार करीने, ईशानकोणे एक सूतिका घर बनावे, एक योजन प्रमाण भूमिने सवृतक वायुथी शुद्ध करीने काटा, काकरा, दूर करीने सुगधित करे त्यार पछी मेघकरा, सुमेघा, मेघवती, मेघमालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा, वारीषेणा अने बलाहिका, ए आठ दिग्कुमारिकाओ ऊर्ध्व लोके सुमेरु ऊपरना नदन वनना कूटोने विषे वसनारी छे, त्याथी आवीने प्रभुने तथा प्रभुनी माताने नमस्कार करीने ते सूतिका घरने विषे सुगधित जल सहित फूलनो वरसाद वरसावीने गीत गाती ऊभी रहे पछी नदोत्तरा, नदा, आनदा, नदीवर्द्धना, विजया, वैजयती, जयती अने अपराजिता, ए आठ दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी पूर्वदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे ते त्याथी आवीने भगवान् तथा भगवाननी माताने नमन करीने मुख देखवाने प्रभु आगल दर्पण हाथमा लइने गीत गाती ऊभी रहे. तथा समाहारा, सुप्रदत्ता, सुप्रबुद्धा, यशोधरा, लक्ष्मीवती, शेषवती, चित्रगुप्ता अने वसुधरा, ए आठ दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी दक्षिण दिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे ते त्याथी आवी जिनने तथा

जिननी माताने नमस्कार करीने सोनाना भृंगार कलश सुगंधित
पाणीथी भरी, हाथमां धारण करी भगवाननी माताने स्नान करावे
अने प्रभु आगल गीत गान नाटारंभ करे तथा इलादेवी[33], सुरादेवी[34],
पृथिवी[35], पद्मावती[36], एकनासा[37], नवमिका[38], भद्रा[39] अने सीता[40], ए आठ
रुचकद्वीपनी पश्चिम दिशाना पर्वतने विषे रहेनारी छे ते त्यांथी
आवीने प्रभु तथा प्रभुनी माताने नमस्कार करी भगवाननी माताने
आगल पवन करवाने अर्थे वींजणा हाथमां लइ ऊभी रहे, तथा अल
म्बुशा[41], मितकेशी[42], पुंडरीका[43], वारुणी[44], हासा[45], सर्वप्रभा[46], श्री[47] अने ह्री[48]
ए आठ दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी उत्तरदिशाना पर्वतने वि
वसनारी छे ते आवी भगवंत तथा भगवंतनी माताने नमन करीने भगवं
तनी बे बाजुए चार चार ऊभी रही, चामर हाथमां लइने प्रभुना ऊप
ढोले. तथा चित्रा[49], चित्रकनका[50], तारा[51] अने सौदामिनी[52] ए चार दिग्कुमा
रिकाओ रुचकद्वीपनी विदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे, ते आवीं
भगवंत तथा भगवंतनी माताने वांदीने हाथमां दीवा ग्रहण करीं
ऊभी रहे. तथा रूपा[53], रूपासिका[54], सुरूपा[55] अने रूपकावती[56], ए चा
दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी विदिशिमां वसे छे ते आवीने भगवं
तथा भगवंतनी माताने नमन करीने भगवंतनुं चार अंगुल प्रमाण वर्जी
नाल कापे, पछी भूमिमांहे खाडो खोदीने डाटे, तेना ऊपर वैडू
रत्ननो चोखंडो चोतरो करे, तेनी ऊपर दर्भ वावे पछी सूतिका गृ
थकी वेगलां एक पूर्वदिशे, एक दक्षिणदिशे अने एक उत्तर दिशे
एम त्रण ठेकाणे त्रण केलीनां घर बनावे, अने तेमां सिंहासन रचे, प
दक्षिण दिशाना केलीगृह मध्ये भगवंत तथा भगवंतनी माता
लावीने सिंहासन ऊपर बेसाडीने तेमने सुख उपजे एवुं सुगंधी तेलो
मर्दन करे. पछी पूर्वदिशिना केलीगृहमां लइ जइ सिंहासन ऊप
बेसाडी स्नान करावे, चंदन लेपन करे. पछी उत्तर दिशाना कद

गृहमां सिंहासन ऊपर वेसाडी अरणीकाष्टथी घसीने अग्नि जगाडी, चदनना काष्टथी शाति पुष्टिकारी होम करी, ते होमनी रक्षा पोटली भगवत तथा भगवतनी माताना हाथमा बांधे, बाधीने ' हे भगवान् ! पर्वतायुर्भव ' एवी आशीष आपीने बे मणिमय गोला उछाले पछी ते भगवानने रमवा सारु पल्यक ऊपर वांधीने गीत गान करी भगवत तथा भगवतनी माताने जन्मस्थानके मूकी पाछी पोत पोताने स्थानके गई ए एकेकी दिग्कुमारिकाने चार चार महत्तरादेवी छे, चार हजार सामानिक देवो छे, सोल हजार अगरक्षक देवो छे, सात अनीकाधिपति छे, तथा वीजा पण घणा देवदेवियोना परिवारथी एक योजनना विमानमां वेशीने प्रभुनो जन्ममहोत्सव करवाने जेम आवे, तेम महोत्सव करीने पोताने स्थानके पाछी जाय छे ए देवी भवन पति माहेली एक पल्योपमायुवाली जाणवी ए देवीयोनो एज आचार छे के तीर्थंकरनो जन्म थयाथी प्रथम एमनु आसन चलायमान थाय, त्यारे प्रभुनो पहेलो जन्ममहोत्सव ए देवीयो करे, पछी वीजा इन्द्रादिक देवो करे

इन्द्रकृत जन्मोत्सव कहे छे—

दिग्कुमारिकाओनो महोत्सव थया पछी, चोसठ इन्द्रोना आसन चलायमान थाय त्यारे श्रीमहावीर भगवाननो जन्म थयो एवु अवधि ज्ञानथी जाणीने प्रथम सौधर्मेन्द्र, हरणैगमेषी-देवताने वोलावी बार योजन पोहोली अने छ योजन ऊची तथा एक योजन (मतान्तरे चार योजन) नालवाली एवी ' सुघोषा ' नामे घटा वजाववानो हुकुम आपे, ते पाचसौ देवोनी साथे सुघोषा घटा वजावे ते घटाना शब्दथी सौधर्म देवलोकना बत्रीश लाख विमाननी सर्वे घटा आपोआप वाजवा लागे त्यारे सर्व देवता सावधान थइ जाय तेमज शखनो नाद साभलीने भवनपति-देवो, पटहनो नाद साभलीने व्यन्तरदेवो अने

सीयनादनो नाद सांभलीने ज्योतिष्कदेवो सावधान थइ जाय छे, कहेल छे के—

सुणिऊण संखसद्दं, मिलंति भवणा य विंतर पडहं ।
जोइसियं सीयनायं, घंटेण विमाणिया देवा ॥ १ ॥

त्यार पछी ईशानेन्द्र लघु पराक्रम नामा देवता पासे सुघोषा घंटा वजडावे, एम बाकीना इन्द्रो सहु पोतपोताना देवोनी पासे घंटा वजडावे त्यारे सर्व देवो इन्द्र महाराजनुं कांइ कार्य छे एवुं जाणीने इन्द्रमहाराजनी पासे आवी हाजर थाय, पछी सौधर्मेन्द्र पालकनामा देवताए बनावेल लाख योजननुं पालकनामा विमान, तेना मध्यभागमां पूर्वदिशानी स्हामो सिंहासन ऊपर बेसे, तेनी आगल इन्द्रनी आठ अग्रमहिषी, आठ भद्रासन ऊपर बेसे, अने इन्द्रने डावे पासे चोराशी हजार सामानिक देवो भद्रासनो ऊपर बेसे. जमणे पासे त्रण पर्षदा बेसे—तेमां बार हजार अभ्यंतर पर्षदाना, चौद हजार मध्यम पर्षदाना तथा सोल हजार बाह्य पर्षदाना मली बेंतालीश हजार देवो भद्रासन ऊपर बेसे, तथा इन्द्रनी पछवाडे सात कटकना देवो भद्रासन ऊपर बेसे, चारे दिशाए चोराशी चोराशी हजार आत्मरक्षक देवता भद्रासनो ऊपर बेसे, एवीज सजावटथी सर्व इन्द्रो पोत पोताना विमानमां बेसी नन्दीश्वर द्वीपे आव्या. तेमां केटलाएक देवो इन्द्रनो हुकुम राखवा मारुं, केटलाएक देवो मित्रना प्रेर्या थका, केटलाएक पोतानी देवीओना प्रेर्या थका, केटलाएक तीर्थंकरनी भक्ति करवा माटे, केटलाएक कौतुक जोवा मारुं, केटलाएक अपूर्व आश्चर्य जोवाने अर्थे आवे. ते देवो पोतपोताना जुदा जुदा वाहन ऊपर चढ्या, आपस आपसमां सिंहना वाहन ऊपर चढेला देवता हस्तिना वाहन ऊपर चढनारा देवोने कहे छे के म्हारो हाथी दूर राख, नहीं तो म्हारो सिंह जबरजस्त छे ते तारा हस्तिने

मारी न्हांखशे एमज पाडाना वाहन ऊपर न्हढेला देवता घोडाना वाहन वालाने, गरुड ऊपर असवारी करनार देव सर्प ऊपर असवारी करनाराने अने व्याघ्रना वाहन ऊपर बेठेला देवो छागना वाहन ऊपर बेसनाराने कहे छे एम वचन विवाद करता कोटान कोटी देवताओ सहु पोत पोताना वाहननी प्रशसा करता चाले छे, ते वखते देवसमुदायथी आकाश यद्यपि घणु म्होटु छे तो पण सांकडु थइ गयु, वली मार्गमा कोइ एक देवता मित्रने छोडी आगल चाल्या जाय त्यारे तेनो मित्र कहे के अरे ! थोडी वार ऊभा रहो ? हु पण आवु छु त्यारे ते देवता कहे प्रथम भगवानने वादवानो म्होटो लाभ कोण चूके ? एवु कहीने चाल्यो जाय एवी रीते जे जबरजस्त होय ते आगल निकली जाय अने कोइ एक नवला होय ते पडता थका बोले के भाई ! आ मार्ग घणो सांकडो छे त्यारे बीजो कहे के चूप रहो ' पर्वना दिवस साकडा ज होय छे ' कोइ कहे घणुं नहीं बोल खबर पडशे तो इन्द्र मारशे एवी रीते आकाशथी नीचे उतरतां थकां ज्यारे ज्योतिषीना तारा पासे आव्या त्यारे ताराओना किरणो लागवाथी कवि उत्प्रेक्षा करे छे के–जो पण देवता सर्व निर्ज्जर छे तो पण जरा सहित थया, मस्तकमा जाणे धोला केश उग्या के शुं ? एवा देवताना मस्तके ताराना विमान शोभे ते जाणे रूपानो घडोज होय नहिं ?, वली शरीरे तारा लाग्या तेना योगे परसेवाना बिंदु सरखा दीसवा लाग्या एवी रीते सर्व इन्द्र अने देवो नदीश्वरद्वीपमा पोत पोताना विमान सकोचीने आव्या

हवे सौधर्मेन्द्र भगवानना जन्मघरने विषे आवीने, भगवान तथा भगवाननी माताने नमस्कार करीने, त्रण प्रदक्षिणा आपी भगवाननी माताने कहे के–हे रत्नकुक्षिधारिणी ! हे रत्नगर्भे ! हे रत्नदीपक ! हे माता ! पहेला देवलोकनो हु इन्द्र छु त्हारो पुत्र चोवीशमो तीर्थंकर छे

तेनो जन्ममहोत्सव करवा सारुं आव्यो छुं माटे तमे लगार मात्र पण डरशो नहीं एम कही " नमोऽस्तु रत्नकुक्षिधारिके तुभ्यम् " बोलीने, भगवंतनी माताने अवस्वापिनी निद्रा आपीने, अने बीजुं भगवान जेवुंज स्वरूप करी मातानी पासे राखीने, इन्द्रे पोतानां पांच रूप बनाव्यां. तेमां एक रूपथी बे हाथे करसंपुटमां भगवानने उपाड्या अने एक रूपथी भगवंतना ऊपर छत्र धर्युं अने बे रूपथी बे पासवाडे चामर ढोलवा लाग्यो अने एक रूपथी वज्र उछालतो भगवाननी आगल चाल्यो, एम बधां मली पांच रूप इन्द्र महाराजे वैक्रिय कर्यां, तेमां आगलो पाछला रूपने वखाणे अने पाछलो आगला रूपने वखाणे, एम पांच रूपथी इन्द्रमहाराज मेरुपर्वत ऊपर ज्यां पांडुक वन छे, त्यां भगवंतने लइ आवीने. मेरुनी चूलिकाथी दक्षिण दिशाए अतिपांडु कमला शिलाने तले श श्वतुं सिंहासन छे, तेनी ऊपर भगवानने उत्संगमां लइने इन्द्रमहाराज पूर्व सन्मुख बेठा, त्यारे त्यां बार देवलोकना दस इन्द्र, भवनपतिना वीश इन्द्र, व्यंतरना बत्रीश इन्द्र, अने चन्द्रमा तथा सूर्य, ए बे ज्योतिषीना इन्द्र, एम सर्व मली चोसठ इन्द्र सपरिवार प्रभुने स्नात्र करावबा माटे भेगा थया. पछी सर्वे इन्द्रोए पोत पोताना सेवक देवताओ पासे तीर्थोदकपूर्ण आठ जातना कलश मंगाव्या, तेमां सोनामय १, रूपामय २, रत्नमय ३, सुवर्णरोप्यमय ४, सुवर्णरत्नमय ५, रत्नरौप्यमय ६, सुवर्णरौप्यरत्नमय ७, अने मृत्तिकामय ८, ए आठ जातिना प्रत्येके एक हजार ने आठ कलश जाणवा. सर्वे मलीने आठ हजार चोसठ कलश थया. इन्द्र चतुर्वृषभनो रूप करी, पोताना आठ सींगडाओथी अभिषेक करे छे अने दरेक शृंगमां आठ हजार चोसठ कलशानो जल होय छे माटे तेने आठथी गुणा करतां चोसठ हजार पांचसो बार (६४५१२) कलशा थाय.

भवनपतिना इन्द्रना २०, व्यन्तरेन्द्रना ३२, वैमानिकेन्द्रना १०, अढी द्वीपना सर्वे सूर्य—चंद्रना १३२; धरणेन्द्र—भूतानेन्द्रनी इन्द्राणि-

योना १२, चमरेन्द्रनी इन्द्राणियोना १०, ज्योतिष्केन्द्राणियोना ४, सौधर्मेन्द्रनी इन्द्राणियोना ८, ईशानेन्द्रनी इन्द्राणियोना ८ अने व्यन्तरेन्द्रनी इन्द्राणियोना ४ तथा सामानिक देवोनो एक, त्रायस्त्रिंशकदेवोनो एक, लोकपाल देवोना चार, अगरक्षक देवोनो एक, पारिषद्देवोनो एक, प्रजाना देवोनो एक अने सात कटकना देवोनो एक, एम सर्व मली बसौ ने पचास (२५०) अभिषेक थाय छे, तेमा एकेक अभिषेके चोसठ हजार पाचसो चार कलशा होय छे माटे तेने अढीसो गुणा करता, एक क्रोड, एकसठ लाख अने अठावीस हजार कलशा थया ए एकेका जातिना दरेक कलश, पचीस पचीस योजन ऊचा, बार योजन पोहोला अने एक योजनना नाल वाला जाणवा, तेमज भृगार, दर्प्पण, रत्नकरडीआ, थाल, पात्रिका, पुष्प–चगेरी, इत्यादिक पूजाना उपकरण प्रत्येके एक हजार ने आठ जाणवा तथा देवता मागधादिक तीर्थोना जल, गगा प्रमुख नदीओना जल, तथा पद्म द्रहना जलथी कलशा भरी लाव्या अने चुल्लहिमवत, वर्षधर, वैताढ्य, विजय वक्षस्कार, देवकुरु, उत्तरकुरु, भद्रशाल अने नदनवन प्रमुखना सर्व फल, प्रधान गध, सर्व औषधि, प्रमुख अभिषेक वस्तु पण लइ आव्या पछी सर्व देवताओ पोताना हाथमा कलश लई आगल ऊभा रह्या ते केवा शोभे छे के–जाणे ससार समुद्रने तरवाने अर्थे कुभ धर्यो होय नहीं ? तथा भाववृक्षने सींचे छे ? किं वा पोताना पापरूप मलने धुवे छे ?, अथवा धर्मरूप प्रासाद ऊपर कलश चढावे छे के शु ? हवे सर्व देवताओ विचार करे छे के इन्द्रमहाराज आज्ञा आपे तो कलशोथी अभिषेक करिए एज अवसरमा, इन्द्र महाराजना मनमा एवो सङ्कल्प (सशय) उत्पन्न थयो के ' आ न्हाना बालक श्रीवीर भग-

१ कल्पसुबोधिका वगेरे केटलाक ग्रथोमा दरेक जातना एक एक हजार कलश कहेला छे ते हिसाबे आठ जातना आठ हजार कलश थया तेने आठे गुणा करता ६४००० थाय, तेने २५० अभिषेक साथे गुणा करता एक क्रोड साठ लाख कलश थाय छे

वान्, एटला कलशोनी जलधाराथी म्हारा खोलामांथी क्यांय वही जशे ? एवडा जलाभिषेकने केम सहन करी शकशे ? ' एवुं जाणी इन्द्रे अभिषेकनो आदेश न आप्यो, त्यारे भगवंत अवधिज्ञानना बलथी इन्द्रनुं शंकित मन जाणीने अरिहंतपणानुं अतुल बल जणाववा निमित्ते खोलामां बेठा थकांज बालरूपे डाबा पगना अंगुष्ठथी सिंहासन फरश्यो, (दबाव्यो) त्यारे शिला कंपायमान थइ. तेना कंपवाथी मेरुचूलिका कंपायमान थइ, त्यारे लाख योजननो मेरु कंप्यो, तेना कंपवाथी सर्व पृथ्वी कंपी, सकल धरती थरहरवा लागी, पर्वतनां शिखर त्रूटवा लाग्यां, समुद्रजल क्षोभ पाम्यो (चलाऽचल थयो) ब्रह्मांड फाटवा सरखो शब्द थयो, सर्व देवो भय पाम्या, देवांगनाओ भयना लीधे देवोना गला साथे वलगी, त्यारे क्रोधथी धमधमायमान इन्द्र कहे छे के अरे ! आ हर्षना ठेकाणे आवो उत्पात विषाद कोणे कर्यो ? वली प्रभुना जन्म महोत्सवमां एवां विघ्न करवावालो आ कोण दुष्ट छे ? एम विचारी हाथमां वज्र लइने अवधिज्ञान प्रयुंजीने जोयुं तो प्रभुनी शक्ति जाणी के ए तो भगवाने पोतेज सर्व कर्युं छे. म्हें अज्ञानथी तीर्थंकरनुं बल नहीं जाण्युं, एवुं जाणीने इन्द्र पगे लाग्यो, अने खमावीने स्तुति करवा लाग्यो के—

भुजंगप्रयातछन्दांसि—

" सुणो वीर्य बोलुं विशालो विबुधो, नरें बार योधे मली एक गोधो ।
दशे गोधले लेखवो एक घोडो, तुरंगेण बारे मली एक पाडो ॥१॥
दशे पंच महिषो मदोन्मत्त नागो, गजे पांचसौ केसरी वीर्य तागो ।
हरि वीशसौ वीर्य अष्टापदेको, दश लक्ष अष्टापदे राम एको ॥२॥
भला रामयुग्मे समो वासुदेवो, द्वितीय वासुदेवे गणी चक्रि लेवो ।
भला लक्ष चक्री समो नाग शूरो, वली कोडि नागाधिपे इन्द्र पूरो ३
अनंते सुइन्द्रे मली वीर्य जेतुं, टची अंगुली वीरने वीर्य तेतुं ।
नमो वीर अर्हन् ! सदा भूत भव्य, भविष्यत्सुरेन्द्रातिवीर्यातिसव्य ४ "

मेरुपर्वते विचार्युं के अनंता तीर्थंकरना जन्माभिषेक म्हारा ऊपर

थया, परंतु मुजने कोणे पगे फरश्यो न हतो, ते हमणा श्रीवीरप्रभुये फरश्यो, तथा हु पण धन्य छुं. एम समजीने जाणे हर्षथी नाच्यो थको चिंतवे छे के हुं सर्व पर्वतनो राजा ते खरे खरो छु वली पांच मेरुमा पण हु म्होटो अग्रेसर ते पण खरे खरो छु. हवे शक्रेंद्रना आदेशथी प्रथम बारमा देवलोकनो अच्युतेंद्र अभिषेक करे, ते पछी अनुक्रमे उतरता उतरता इंद्रादिको अभिषेक करे छेल्ला चंद्र सूर्य अभिषेक करे एम सर्व अढीसौ अभिषेक थाय पछी ईशानेंद्र, भगवानने खोलामा लेइने बेसे अने सौधर्मेंद्र चार धवल वृषभना रूप विकुर्व्वीने तेना आठ सींगडाए करी खीर समुद्रना पाणीनी धाराथी अभिषेक करे एवा विधिथी सर्व देवो पोतपोतानी भक्ति करी स्नात्र करावे. पछी भगवतनु शरीर गंधकापाय्य वस्त्रथी पोंछीने फूल, बावना चंदननो विलेपन, अक्षत ढोकन, दीप, फल, धूप, पाणी, नैवेद्य ए आठ प्रकारनी पूजा करीने भगवाननी आगल श्रीवत्स, मत्स्ययुग्म, दर्प्पण, पूरण कलश, स्वस्तिक नंदावर्त्त, भद्रासन, सरावसपुट ए आठ मंगल रूपाना अक्षतोथी आलेखे, पछी आरति करे, गीत गावे, नृत्य करे, अने वाजित्र वजावे, पछी अपूर्व एकसो आठ काव्यनी रचना करी स्तुतिरूप भावपूजा करे, ते करीने पछी भगवानने भगवाननी माता पासे पाछा मूके, अवस्वपिनी निद्रा दूर करे, वली भगवाननो प्रतिबिंब प्रथम थापन करेलो हतो ते पण दूर करीने रत्नजटित कुंडल युगल तथा देवदुष्य युगल, त्रिशलामाताने आपीने सुवर्णजटित दडो भगवानने रमत करवाने अर्थे मूकीने तथा बार क्रोड सोनैयानी वृष्टि करीने, कोइ कोइ प्रतिना लरया प्रमाणे ऊपर रत्नजटित चंद्रुओ बांधी, रत्नजटित बे कुंडल तथा श्रीदाम (रत्नजटित सुवर्णनो दडो) ए सर्व ओशीसे मूकी बत्रीश क्रोड सोनैयानी वृष्टि करी पछी सौधर्मेंद्र सर्व देवोमा एवो हाको करीने कहे के भो भो देवो ! हु कहु छु ते तमे सांभली लेजो के जे कोइ देव

अथवा असुर-दानव, भगवान ऊपर तथा भगवाननी माता ऊपर माठी चिंतवणा करशे तेनो मस्तक अर्जुनवृक्षनी मांजरनी पेरे आ वज्रथी छेदी नाखीश. ए प्रमाणे कहीने भगवानना अंगूठामां अमृत संचार करी सर्व इंद्र नंदीश्वरद्वीपमां आवी अट्ठाइमहोत्सव करीने पछी पोत पोताने स्थानके जाय. त्यां पण अट्ठाइ महोत्सव करे.

सिद्धार्थराजाना भवनमां वसुधारादि वृष्टि—

जे रात्रिमां श्रमणभगवंत श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो ते रात्रिमां घणा वैश्रमण देवना आज्ञाधारक तिर्यक्‌जृंभक देवताओए, सिद्धार्थराजाना महेलने विषे रूपानी वृष्टि करी, सोनानी वृष्टि करी, वज्र-हीरानी वृष्टि करी, वस्त्रनी वृष्टि करी, आभूषणनी वृष्टि करी, नागरवेलना पत्र, फल, फूल तथा शालि प्रमुख बीजनी वृष्टि करी, माला, गंध, वास, सुगंधि-चूर्ण तथा हिंगलु प्रमुख रंग अने सोनाम्होरोनी वृष्टि करी, ते अगणित वृष्टि करी, कोइक ठेकाणे एवुं लखेलुं छे के-पन्नर मास पर्यंत त्रण क्रोड रत्न वरसाव्या अने मुकुट, कुंडल, हार, अर्द्धहार, बाजुबंध, बेरखा, त्रिसरा, चोसरा, छसरा, सातसरा, आठसरा, नवसरा, अढारसरा, एकावली, कनकावली, टकावली, रत्नावली, मुक्तावली, चंद्रावली, हीरावली, प्रवाली नक्षत्रावली, श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, रसना, खूंप, पट्टशिखर, चूडामणि, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रानंदक, दशमुद्रक, मुद्रिका, अंगुलीयक, कदंबक, पुष्पक, तिलभंगक, कर्णपीठिक, चत्रक, अजर, मेखला, मुंदक, पदक, पडकाडि, सांकलुं, सांकली, विशिष्ट-मौक्तिकभंग, उतरी, दोरा, हांसडी, कर्णपाल, संकपाल, गेययक, हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, रत्नजाली, गोपुच्छक, उरस्त्रका, मसंक, वर्ण, वरिका, हांस, झांझर, नेपुर, घूघरा, पागडां, वींछीआ, अंगूथली, बालाजाली, झूमणा, अंकोटा, रूपालहेरिआ, राखडी, गोफणो, फूली, सीयो, त्रसंटीओ,

श्रोटी, बोरडा, कडी, वेढला, मुरकी, मोती, नरगठोडा, नागफणां, तुगल, चपकली, पानडी, दुलरा, वाली, मोतोसर, ताति, गाठिआ, बरघली, पोंची, गलसिरि, टीली, चादला, आडी, नवग्रह, मुद्रडी, अगूठी, वेढ, बींटि, वांकडा, छाप, करजाल्लु, मादलिआ, कदोरो, खेल-मादलियां, पाटीआलो कदोरो, लटकण, मउड, नागफूली, नाग नागलां, मौर, वेसण, नथ, काटो, मयोदय, आजण, ओगनिया, हिंगलो, कुंकुम, पला, जवला, चूडी, चूडली, थर, ककण, कारेली, लालि, पच-मेखला, हाथसाकली, सोनाना लहेरिआ, तावीत, कडला, सलिआल्लु; कलाडी, अणवट्ट, लोलिआ, कुची, पाईल, सात ग्रैवेयक, नव ग्रैवेयक, छापलवींटी, मकोडाखली, जेदेह, इत्यादिक अनेक जातना आभरणोनी वृष्टि करी.

पुत्रनी वधाई अने बन्दीमोचनादि—

पुत्र जन्म थया पछी प्रियवदा नामनी दासीए सिद्धार्थराजाने पुत्रजन्मनी वधाई आपी, ते सांभली सिद्धार्थराजाए रोमेरोम हर्षवंत थइने, एक मुकुट विना पोताना अग ऊपर पहेरेला सर्व आभूपण दासीने आपी दीधा अने तेनु माथुं धोवरावीने दासीपणु दूर कर्युं सात पीढी सुधी खाता खरचता न खूटे तेटलु पुष्कल धन दासीने आप्युं पछी प्रभात समये सिद्धार्थराजाए नगरनां रखवालाने बोलावीने आज्ञा आपी के देवानुप्पिया ! तमे उतावला क्षत्रियकुडनगरमा बदि-वानोने छूटा करी मूको अने तोल-मापां वधारो तथा क्षत्रियकुडनग-रनी माहेली कोरे अने बाहेर कचरो काटो काहाडी साफ करावो, लींपावो, तेनी ऊपर सुगंधी जलनो छटकाव करावो, त्रिखूणामार्ग-त्रणमार्ग, त्रवाटा, चोवटा तथा ज्यां घणा मार्ग भेला होय ते चच्चर (चतुर्मु-खमार्ग) अने राजमार्ग ए सर्व रस्ताने पवित्र करावो, कचरा काटा काहा डीने साफ करावीने रस्ताने बरोबर करो, तथा जेनी ऊपर बेसीने

सुखथी सर्व लोको महोत्सव जोइ शके एवा म्होटा मांचा ऊपर मांचा बंधावो, अनेक प्रकारना रंगनी ध्वजा पताकाओ करावी स्थानके स्थानके बंधावीने नगर शोभायमान करो, शहेरना मार्गोने लींपावो, धोवरावो, वली गोशीर्षचन्दन, रक्तचन्दनना पांच आंगुलीआ छापा देवरावो, घरमां चंदनना कलश थापन करावो, चंदनकलशघटित तोरणोने घरोना बारणे बंधावो, लांबी म्होटी अने गोल तथा लटकती एवी पुष्पमालाओनो समूह लटकावो, पांचवर्णा फूलोना ढगला करावो, कृष्णागर, कुंदरु, शिलारस, धूप घमघमायमान उखेवो अने मनोहरगंध सुगंधगंधित अगरवती उखेवो, मनोहर गंध करो, वली नाटक करवा वाला जे पोते नाटक करे ते, रसी ऊपर नाचे ते, मल्लयुद्ध करनारा, मुठीयोथी युद्ध करनारा, भांड भवाइया, कथाना करवा वाला, रास बोलवा वाला, ऊंट अने हाथी ऊपरथी कूदी जाय तेने प्लवक कहे छे ते, राजानी वंशावलीनां बोलनारा, सवैया-कवित कहेनारा, कोटवाला, शुभाशुभ निमित्तना कहेवा वाला, वांसनी ऊपर नाचनारा, चित्रामणना पाटीया देखाडनारा, जेने मंख कहे छे ते, तथा चामडानी मसकने वायराथी भरीने वजावे तेने तूणयल्ला कहे छे ते, तुंबिनी वीण वजावनारा, हाथ ताल देइने नाचनारा, अने अनेक तालना वजावनारा ए सर्वेने बोलावीने ठेकाणे ठेकाणे वेसाडी आपो. ए सहु पोतपोतानी कलाओ लोकोने देखाडे ए काम तमे करो तथा बीजा पासे करावो वली हजारो गमे धूंसरा एटले विवाहना मंडपमां घाले छे ते, तथा हजारो गमे मूसल ऊंचा करावीने म्हारी आज्ञा मने पाछी सोंपो. त्यारे ते कौटुंबिक पुरुष घणा खुशी थइने राजाना हुकम प्रमाणे सर्व काम करीने राजानी आज्ञा राजाने पाछी सोंपी. त्यार पछी सिद्धार्थ राजा मल्लयुद्धनी शालामां आवी, युद्ध करी, तेल मसलावी, स्नान करीने सर्व वस्त्र घरेणां माला प्रमुख पहेरीने म्होटा तेज सहित, म्होटा बल सहित

सर्व वाजा वाजतां थका, म्होटी ऋद्धि म्होटी कांति, म्होटी सेना, घणा वाहन, घणो समुदाय, म्होटा म्होटा वाजित्र ते सर्व भेला सम काले साथे वजाड्या, तेथकी शख, पडह (ढोल), भेरी, जल्लर, खर-मुखी (कालही), रणसिंगो कोइ वाजानुं नाम छे, मांदलनी जात, मृदग, देववाजु (दुदुभी) ए नव जातना वाजाना शब्द प्रतिशब्द तेणे करी सिद्धार्थराजा हर्ष करतो रहे, वली क्षत्रियकुड गाम नगरमा दश दिवस सुधी दाण कोइनी पासेथी लेवु नहीं, गायो ढोर प्रमुखनुं जे कर लागे ते दश दिवस पर्यंत न लेवो, खेत्र प्रमुखनु जे कर लागे ते दश दिवस सुधी नहीं लेवो दश दिवस सुधी कोइ हाटमा मूल्यलइने वस्तु वेचे नहीं, जेने जे वस्तु जोइती होय ते दुकानदारो पासेथी मफत लइ जाय तेना पैसा राजाना भडारमाथी देवाय, दश दिवस सुधी कोइ चीज मापनी नहीं वगर मापे आपवी, दश दिवस लगे कोइ राजानो माणस जोर करीने जोरावरीथी कोइना घरमा प्रवेश करी कोइ चीज वस्तु लीए नहीं, कोइए अपराध कर्यो होय तेनी पासेथी गुनाह प्रमाणे दड लेवो जोइए ते दड दश दिवस सुधी लेवो नहीं कोइए अपराध अल्प कर्यो होय अने दड वधारे लेवो तेने कुदड कहीए ते कुदड दश दिवस पर्यंत लेवो नहीं, अने दश दिवस सुधी कोइ उधारे लइने ऋण करे नहीं, एटला वाना सिद्धार्थराजाए मूक्या (बक्षीस कर्या) वली अत्यत स्वरूपवान् एवी वेश्याओना नाटक थाते, तथा अनेक ताल वाजा सहित नाटक थाते, पछी उत्कृष्ट मृदग वजाववा सारु सज्ज कर्या छे मृदग ज्या, कुमलाणी नथी एवी विस्तार सहित फुल मालाओनो समूह छे ज्या, हर्षवान थया थका ते देशना सर्व लोक क्रीडा करे छे ए प्रमाणे दश दिवस पर्यंत स्थितिपतिका एटले पोताना कुल परपरानी मर्यादा पुत्रजन्मनी ते सिद्धार्थराजा क्षत्रियकुड नगरमां करे. पछी सिद्धार्थराजा दशदिवसनी कुल मर्यादामा जिनपू-

जामां सो सोनैया लागे तथा हजार सोनैया लागे तथा लक्ष सोनैया लागे एवुं जे पूजन तेना निमित्ते द्रव्य राखे एटले पछी पूजा करावीशुं एवो अभिप्राय करीने पूर्वोक्त द्रव्य कहाडे, वली आठम, चौदशना दिवसे पोसह करनारा श्रावकोनी भक्ति करवा निमित्ते द्रव्य राखे ते एवा अभिप्रायथी के जाणे पोसह करवावालाने पारणे स्वामिवात्सल्यना काममां आवशे, वली बीजुं पण देवायोग्य द्रव्य धर्मने अर्थे कल्प्युं एवुं द्रव्य पोते सिद्धार्थराजा देतो थको, बीजाओनी पासेथी देवरावतो थको विचरे. वली पूर्वोक्त रीते सो, हजार अने लाख सोनैया प्रमाणे वधामणाने अर्थे भेट लोको लइ आवे छे ते लेतो थको, बीजा पासे लेवरावतो थको दश दिवस सुधी कुलमर्यादा करे.

बालकने चन्द्र सूर्यना दर्शन कराववानी विधि—

श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामीना माता पिता भगवानना जन्मदिवसथी पहेला दिवसे तो कुलस्थिति करे अने त्रीजे दिवसे चंद्रमा तथा सूर्यना दर्शन करावे. हमणां आजना कालमां तो त्रीजे दिवसे कॉंच देखाडे छे. परंतु मूल विधि आवो छे के—गृहस्थगुरु आवीने श्री अरिहंतनी प्रतिमा आगल स्फाटिक अथवा रूपानी चंद्रमूर्त्ति करावे ते प्रतिष्ठावी, पूजीने मांडे. पछी बालक तथा बालकनी माताने स्नान करावी भला वस्त्र पहेरावी चंद्रोदयनी वेलाए पुत्रने हाथमां लइने माता सहित पुत्रने बेसाडी प्रत्यक्ष चंद्रमा स्हामे आणी, आवी रीते मंत्र भणे छे— "ॐ अर्हं चन्द्रोऽसि निशाकरोऽसि नक्षत्रपतिरसि सुधाकरोऽसि ओषधिगर्भोऽसि अस्य कुलस्य ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु" एवा मंत्रनो गुरु उच्चार करे, माता पुत्रने चंद्रमा देखाडी नमाडे वली पुत्रने लइ गुरुने पगे लगाडे, त्यारे गुरु आशिर्वाद आपे ते आवी रीतेः—

सर्वौषधिमिश्रमरीचिराजी, सर्वापदां संहरणे प्रवीणः ।
करोतु वृद्धिं सकलेऽपि वंशे, युष्माकमिन्दुः सततं प्रसन्नः ॥ १ ॥

त्यार पछी चद्रमानी स्थापेली मूर्त्तिने विसर्जन करे कदाचित् कालि चौदश, अमावास्या होय अथवा वादला होय तेथी चद्रमा न देखाय तो तेज रात्रिए तेज चद्रमानी मूर्त्ति आगल तो जरुर करे पछी ते दिवसे प्रभाते सूर्य उदयनी वेलाए सोनानी अथवा त्रावानी सूर्यमूर्त्ति करीने पूर्वनी पेरे स्थापन करी ते मूर्त्तिनी आगल पुत्र सहित माताने वेसाडी गृहस्थ गुरु आवी रीते मत्र वोले " ॐ अर्ह सूर्योऽसि, दिनकरोऽसि, तमोपहोऽसि, सहस्रकिरणोऽसि, जगच्चक्षुरसि, प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टिं पुष्टिं मोद कुरु कुरु " ए सूर्यमत्र उच्चारीने माता सहित पुत्रने सूर्यनु दर्शन करावे पछी माता पुत्रने लइ गुरुने पगे लगाडे त्यारे गुरु आशीर्वाद आपे के-

सर्वसुरासुरवद्य , कारयिता सर्वधर्मकार्याणाम् ।
भूयात्रिजगच्चक्षु , मङ्गलदस्ते सपुत्राय ॥ १ ॥

पछी थापन करेली सूर्यमूर्त्तिने विसर्जन करे वली छट्ठे दिवसे धर्म जागरण करे, अगीआरमा दिवसे अशुचिकर्म निवर्त्तन करे, माटीना जूना भाजन कहाडी न्हाखे, नवा वस्त्र पहेरे, वारमो दिवस आव्या थका अशन ते अन्न विगय प्रमुख, तथा पान ते मीठा पाणी प्रमुख, तथा खादिम ते खारेक टोपरा प्रमुख, तथा स्वादिम ते लविंग पान प्रमुख, ए चार प्रकारनो आहार रधावे, रधावीने सिद्धार्थराजा पोताना मित्रोने, न्यातिने एटले पोताना जातिवालाने, पोताना पुत्र-पौत्रादिकोने, काकाने, ससरा प्रमुखने, पोताना दास दासीओने, वली पोतानाज गोत्र-वालाओने, वली क्षत्रियोने तथा गामना क्षत्रियोने, एवा बीजा पण म्होटा लोकोने निमत्रण करे अर्थात् नोतरा आपे पछी भगवानने तथा त्रिशलाजीने स्नान करावे, घरे देवपूजा करावीने पछी विघ्न निवारवाने अर्थे कौतुकथी काजलना टीला टवका करे, मागलिकने अर्थे सरसव, दही, दर्भ, चावलनु तिलक मस्तके धारण करे, नवा वस्त्र पहेरे, वली

जेमां भार अल्प अने मूल्य घणुं एवां घणां मूल्यनां घरेणा पहेरे, पहेरीने भोजननी वेलाए भोजन मंडपमां सुखे बेसे. वली पूर्वे नोतरेला मित्रादिकोने अशन, पान, खादिम, स्वादिमादिक चार प्रकारना आहार जमाडे. हवे तेमां केटलाएक आहार स्वाद करवा योग्य तेना स्वाद करतां थकां अशनादिक मोदक प्रमुख सर्व चीज खवाइ जाय तथा केटलीएक सेलडी प्रमुख चीज थोडी खाय अने घणी न्हांखी देवाय वली केटलीएक खजूर प्रमुख चीज घणी खाय अने थोडी न्हांखी दीए एवी रीते चारे प्रकारनो आहार साधर्मिकादिकोने सिद्धार्थराजा जमाडता थका विचरे.

भोजननो विधि कहे छे—

केलिपत्रे छायेला मांडवा नीचे मध्यान्ह वेलाए कुंकुमछांटित मंडपमां सर्वने बेसाड्या, मखमलनां पांतिया नाख्यां, ते ऊपर सर्व पवित्र थइने आवी बेठा, तेना पेट पाताले पेठा, आगल स्वर्णरत्नजटित बाजोट मेल्या, तिण ऊपर सोनाना थाल, जमवावाला थया उजमाल; कन्हे मेली कटोरियां, निर्मल जलसे धोवे, मांहे मुखडा जोवे, ते केवा छे? तो के–फांदाला, फुंदाला, दुंदाला, सुंहाला, आंखे अणिआला, मुछाला केइ जमाइ केइ साला, इसी पांति बेठी, त्यां पीरसणवाली पेठी, ते घणी रूपाली, भला वस्त्र पहेर्यां, शोले सणगार कर्यां, हाथमां म्होटी झारी, युवानोंनी निजरो ठारी; हाथ धोवाया, मनमें काम जुराया; पहेलां ते फल पिरसे, देख्यासे मन विकसे, ते कहेवा फल पिरस्यां तेनां नाम कहे छे–अखोड, मिसरीकीपात, चोपडी चारोली, केला, रायण, लीलां नालिएर, बदाम, पिस्ता, द्राख, आखा आंबा तथा स्याग दाल पक, सेवां, सेतुत, दाडिम, नारंगी, मीठां लींबु, पाकां किरणां खारेक, खजूर, सेव, जांबु, गुंदा, पेमदीबोर, लीलीद्राख, छोलेली सेलडी, कांगटा, जामफल, रामफल, सीताफल, बीजोरां, इत्यादिक उदार मनथी

पिरस्यां, ढेरकीया खातां हीया हर्ष्या। किस्याक खावे के-पिरसवा वाली तेना मुख सामा जोइ मोहमां पड्या खायां जावे, पण पेटफाटे ते नजर न आवे। मालवानी जमीनमां नीपज्या घउ हाथथी मसल्या धोइने दल्या भला वस्त्रथी मेंदो छाण्यो ' तेना पिरस्या खाजा, दांतोमां करे अवाजा, हवे कहु पकवान, खावा थया सावधान, पिरसण वाली सुहाली, मान करे रढीयाली, पहेली पिरसे लाडू, जिमे बेठा जाणे साढू, सिंहकेसरीया भेल्या, मसाला अधिका भेल्या, कसार मगद्रा मोदक, किटिया जसरीया दालिया, इस्या मोदक खावे, बूढो मरद हो जावे, अच्छी पिरसी मुरकी, खाता जीभडी फुरकी, जलेबी मुखमां घाले, रसना गटका चाले, पेडा पेटमां पडिया, मुख मेलता गुडिया, मखाणा मुखमां घाले, बड बड जाणे बोले, घेवर मुखमां धरिया, खातां घृत बहु झरिया, झीणा तारनी फीणी, आणी सेवा भीणी, दहीथरां दीठा खावे, मनमां हसता जावे, सांकली तिलनी खाधी, सिंघोडा सेवसुं साधी, आवे साकर सीरो, डोकरा मन थयो धीरो, लापसी आछी आवे, मेवा खीचडी खावे, इम अनेक पकवान, जीमे बेठा राजान, देवसुगधी साल, खावा थया उजमाल, मगदालने भेली, घी सुगधी ठेली, खीचडी पतली पोली, थाये इकवीशनी एक कोली, सालणा मुखमां भावे, जीभ फरफरी थावे, मूगीया केर रायडोडी, वालोल, करमदा काचा, केलां, चोरानी फली, मगनी फली, नीलाचणा, मिरच, पीपल, सांगगी, काचरी, थावल्या, करेलां, भींडी, तरोइ, वेंगण, मोगरी, काकडी, तउडा, तीडसी इस्या जातना साग, जीरा मिरच समभाग, गरम मसाला पडिया, घृतमांहे पहेला छमकिया, हिंग वघार सुगधा, खातां तज्या सब धधा, जीभ फरफरी होवे, कलीकद्ने जोवे, भाजी-चिणारी, मेथीरी, चदलेवारी, पालखारी, सुआरी, थेगरी, खातां जीभ शोभाधरी, मिसरीमां भेल्यो दूध, पीतां न रही सूध, भर्यो पेट घोल्या सहु एम, हवे

खावानो नेम; दही देखीने मुखडे चाल्यो पाणी, जीराराव शुद्ध त्यां आणी; करवो खाधो पूर, राइपडी रायता पूर; मीठा पाणी पीधां, पापडमुख शुद्ध कीधां; शुद्ध पाणीसे चळु करीजे, न मावे पेटमें उत्तर दीजे; वळी दीधा पान तंबोल, केशर छांटे रंगरोल; हीरचीर मखमल पटंवर, वस्त्र दीधां ते पहिरे सुंदर; फूलमाला पहेरावे, हर्ष मने बहु लावे; आभूषण पहेरामणी देवे, एम सिद्धार्थ जस बहु लेवे.

प्रकारान्तरे भोजन अने आभरणनी विधि—

प्रकारांतरे कच्छ-गुर्जरादि देशोमां जे प्रमाणे भोजनविधि कहेवानो चाल प्रवर्त्ते छे ते मुजब आहीं लखीए छीए—मांड्यो तोरण उत्तंग मांडवुं, तरत आंगणुं बेसवानुं नवुं; तेतो नीला रत्नज तणुं, त्यां सरखा मांड्यां आसन, बेसतां किसी विमासण; वळी आगल मूकी सोनानी आंडणी, ते केम जाए छांडणी; ऊपर सोनाना थाल, अत्यंत घणा विशाल; विचमां चोसठ वाटकी, लगार नहीं जास काटकी; गंगोदक दीधा थाल, कचोलामां हाथज लाल; हवे सघली पंक्ति बेठी, एटले पीरसण हारी पेठी। ते कहेवी छे ?—शोल शणगार सज्यां, बीजां काम तज्यां; हावभावनी रूडी, खलके हाथे सोनानी चूडी; लघु लाघवनी कला, मन कीधां मोकला; चित्तनी उदार, अति घणी दातार; बोलती हाथ, परमेश्वर देजो तेहना साथ; धसमसती आवे, सघलांने मन भावे; पहेलां फल हव पिरसे, सघलांनां मन हर्षे; एवी छे पिरसनारी भली मृगनयनी, होंसनी पूरी, धर्मनी शूरी; शीलवंति, शक्तिवंती एवी पिरसनारीयो छे ते प्रथम फल खावानां लावे छे—पाका आंबानी कातली, ते बूरा खांडशुं भली; वळी पातलां पाकां केलां, ते खांडशुं कीधां भेलां; सखरां करणां, वळी पीला वरणां; लीलां नारंगा, दीसे महासुरंगा; नीलीरायण, पिरसी भली भायण; दाडिमनी कली, खातां पूगे मन रली; लींबजा ने अखोड, खातां पूगे मनना कोड; द्राख ने बदाम, कइ कागदी ने कइ श्याम; सिलेमी खारेक ने खजूर, ते पिरश्यां भरपूर; नालियेरी नगरी, ते भालवी गोलशुं भरी; लींबु खाटां ने मीठां, एहवां ते कदी न दीठां; चारोली ने पिस्तां, लोक जमे हसतां; वळी शेलडी ने सीताफल, ते पण पिरश्यां परिघल; हवे पकवान आणे, ते कहेवां वखाणे; सतपडा खाजां, ते तुरत कीधां ताजां; सदलां ने साजां, जाणे प्रसादनां छाजां; एहवां पवित्र प्रधान, मालवी घउं, तेहने दन्यां तेहनी पडशुदी, महाचतुरे शोधी; घीयें करमोर, तेहनां खाजां घीयें तन्या फन्यां, महाविशाल, एवा सातपुडां खाजां, वळी फगफगता

फेणा, दुधवर्णा दहींथरां, घृतवर्णी सुवाली, अमृतजेवी जलेबी, घीना घेवर, पतासा, मोती-चूर, गुदवडां, एलचीदाणा सहित साकरीया चणा, खांडसाकरनां दहींथरां, अनेक भातिनी सुखडी पिरसे, विशुद्धदलें केलव्या, सारमिश्र खांडथी भेलव्यां; मांहे एल-चीना चमत्कार, पछी पिरश्या लाडु, जाणे नाना गाडु; जुण जुण तेहनां नाम, जमतां मन रहे नही एक ठाम, वली लाडुनां नाम कहे छे—मोतीआ लाडु, दलिया लाडु, सेवैया लाडु, चूरमानां लाडु, तिलना लाडु, तिगडुना लाडु, मगना लाडु, जगरीना लाडु, सिंहकेसरीया लाडु, कीटीना लाडु, तेजाना लाडु, खसमसीयाना लाडु, जांख-रीया लाडु, चोंटीया लाडु, अडदीया लाडु, अमृतिया लाडु, दीठां दाढ गले, पूरण-पुन्याइयें ए मले, भोजनने अर्थे पिरसे, लक्ष्मी एवा मोदक, जातजातनां दीसे, जमतां वाधे मुखनो वान, तेनां हैयडा हीसे; दातारना हाथे परीघल, कृपणना हाथ धूजे। वली बीजां आण्यां पकवान, जमतां वाधे मुखनु वान, जुण जुण जाति, नव नवि भांति; सखरा सांटां, तेमांहे नही खाटां, बरफीनी जाति, फीणीनी जाति, घरकीनी जाति, दूधपिंडीनी जाति, साकरीयां मोतिचूरनी जाति, मसूरनी जाति, जलेबीनी जाति, सक्करपारानी जाति, गोलपापडीनी जाति, हवे आण्यां वडां गुदवडां फीणी सखरी सोट, ते मांहे नहीं खोट; दहीवडां, फेणा वडां, मथीयावडां, कांजीयावडां सालियावडां पातली सेव, पिरश्यानी रूडी टेव, ताजो गुद, तल्यो गुद, कुडलाकृत जलेबी, शीरो, लापसी, जिण दीठे दाढा गले, स्वर्गद्युति देव देवी टलवले वली मीठा मगद, मारो माल नगद; खांडनु चूरमु साकरनु चूरमु पछी पिरशी सालि, ते जमीयें निशाल, ते जुण जुण भेद, सांभलतां उपजे उमेद, सुगध सालि, सुवर्ण सालि घरनी सालि, रातीं सालि, नीली सालि, पीली सालि, महा सालि शुद्ध सालि, कुमुद सालि, मालवी सालि, कलम सालि, कुकणी सालि, तिलवासी सालि, जीरा सालि कद सालि, रायभोग सालि, कुवारी सालि, चन्द्रायण सालि, निकी सालि, गुरुडा सालि, वली साबु चोखा, अखड चोखा ने वली खांड्या, सबला छांड्या, हलवा हाथथी सोधा, नख थकी वीण्या, उत्तम स्त्रीयें ओर्या, सुजाण स्त्रीये ओसाव्या, एवा अणीयाला सुगंधि फरहरा, ऊचा कूर पीरश्या। वली ऊपर दाल पीरशी, तेनां नाम कहे छे:-मडो-रनी दाल, मगनी दाल, कावली चणानी दाल, गुजराती तुयरनी दाल, अडदनी दाल, जालरनी दाल, मठनी दाल, वर्णे पीली, परिणामें सीली, वली परिघलघृत पिरश्यां ते कहेवां छे ? तो के आजना ताव्यां, एवा गायनां घी, भेंशनां घी, पीला वरणनां घी, नाके पीयां घी, मजीठवर्णा घी, हवे पोली पिरसी, ते कहेवी छे ? तो के आछी पोली, घीमांहे जबोली; फूकनी मारी फलसी जाय, एकवीश पोलीनो एक कोलीओ थाय छप्पो—" घरकी मोतीचूर, सेव फिणी साकर सरखी। खाजां खुरमां खाट, प्रिया तिहां पिरसें हरखी ॥ केला वर्णी कातली, अमरस मूके मोली । घल

घल घीनी नाल, पिरसे पातली पोली ॥ साल दाल बहु सालणां, गोरस करवे चित्त ठर्युं । ऋषभ कहे ए जमण कर्युं, बाकी सघलुं एजो वर्युं ॥ १ ॥ चोला मरटी तेल, साक विण नित्यें सारे । पिरसे भूंडी नार, पेट कहो केणी परे ठारे ॥ ऊपर ढीली धेंश, छाश पण पिरसे पाणी । सिंधव नहीं लगार, किशुं कहे कर्मनी कांणी ॥ आहार सेर अढी तणो, सेर सवा दोहिलो लहे । कवी ऋषभ कहे एजो वर्युं, भोजन एहने कुण कहे ॥ २ ॥" हवे शाक पिरस्यां तेनां नाम कहे छे, नीली डोडीनां शाक, टिंडसीनां शाक, चीभडानां शाक, कोल्हा, कंकोडां, करमदां, कालिंगडां, केलां, कारेलां, आरियां, तुरियां, खडबुजां, वेंगण, मोगरी, नींबु, अंबोलीया, वालोल, चोलानी फली, सरगवानी शिंग, सांगरी, काचरी, आमलां, केरनां फूल, केरडां, लीलां मरचां, लीली पीपर, लीली रायण, खाटां, खारां, मोळां, गल्यां, तल्यां वघार्यां, फुगार्यां, छमकार्यां, वली पिरसी भाजी, ते उपरे सहु को राजी; ते कोण कोण जातनी ते कहे छे—सरसवनी भाजी, बथुानी भाजी, मूलानी भाजी, चणानी भाजी, चीलनी भाजी, मेथीनी भाजी, थेगीनी भाजी, अफीणनी भाजी, तांदूलनी भाजी, हवे वडीनां शाक कर्यां तेना नाम कहे छे—दाजवडी, डचकावडी, चूयरावडी, घासवडी, घारवडी, दहीवडी, घोलवडी, पापडवडी, मरियालावडी, घणा झोले मीना, घणा वघार मसालाना चमत्कार सबडका देतां अंगुली चाटता मनमां विशेषे भावतां, हवे रायतानां नाम कहे छे—खारेकना रायतां, टोपरानां रायतां, द्राखना रायतां, बदाम प्रमुख मेवानां रायतां, हवे वडां कइ कइ जातनां पिरस्यां ? ते कहे छे—मरचानां वडां, तल्या वडां, कोरां वडां, काजीघोल वडां, घोल वडां, मगनी दालनां वडां, चोलानी दालनां वडां, अडदनां वडां, दहींवडां, गूंदवडां, फेणवडां, मेथीया वडां, सालीया वडां, घणे झोलें भीनां, घणे तेले सीनां; मरचांना घणा चमत्कार, अत्यंत घणा सुकुमार; हाथें लीधा उछले, मुखें घाल्यां तरत गले; घणुं शुं कहिये ? ए वडां एवां तो छे, के जेने खावाने अर्थे घणा देव देविओ पण टलवले छे. हवे पलेव पिरसी, ते कहेवी छे ?—चोखानी पलेव, जुआरनी पलेव, बाजरीनी पलेव, गहुंनी पलेव, हलदीया पलेव, पींपलीया पलेव, सुंठीया पलेव, सबडकीया पलेव, हवे भोजन जमतां वचमां पीवानां पाणी आवे छे, ते कहे छे—साकरनां पाणी, द्राखनां पाणी, खांडनां पाणी, गंगानां पाणी, पालर पाणी, कपूरे वास्यां पाणी, एलचीये वास्यां पाणी, टाढां सीतल पाणी, हीमनां पाणी. हवे दहीं अने दहींनां घोल आवे, ते कहेवां छे ? ते कहे छे—गायनां दहीं, भेंशनां दहीं, काठा जाम्यां दहीं, मधुरां, सखरां, सजीरालां, सलवणां, जाडां, घोल, तेनां भर्यां कचोल, घावलशुं जिमतां, थया रंगरोल । वली सखरां करंबा मरी आखीने पिरस्यां, ते करंबा मांहे घणी राइ, जमतां ढील न कांइ, ऊपर जीरा लूणनो प्रतिवास करणहारी पच खास । एम भोजन कराव्या पछी एकांते तेहज आशने रह्या थकां ने

चलु कराव्या ते चलु कराववानां पाणी केवां आण्यां, ते कहे छे—केवडानी वासनां पाणी, कायानां पाणी, कपूरें वास्यां पाणी, चदने वास्यां पाणी, पाडले वास्यां पाणी, सुगंधी पाणी, गंगोदकनां पाणी, चदने निवास्यां पाणी, एलचीयें निवास्यां पाणी, इत्यादिक पाणीयें करी चलु कर्या पछी तृणशला प्रमुखथी मुख सोधी दांतोनी शुद्धि करीने परम शोच्य थया. हवे मुखवास दीधां ते कहे छे—वांकडी सोपारी, चीकणी सोपारी ते पण केशर वरणी, कपूरें वासित, वली तीखां, लविंग, जावत्री, जायफल, मोटा डोडा एलची, पाकां नागरवेलनां पान, ते वली काथा चूना सहित दीधां, वली घणां आदर सन्मान, घणां गीत गान, घणां तान ने मान, हवे कइ कइ जातिनां, कइ कइ भांतिनां वस्त्रोनी पहेरामणी करी, ते कहे छे—देवदुष्यवस्त्र, रत्नकंबलवस्त्र, पांमडी, खीरोदक, अटाणां, सेलां, अधोतर, मूलकसबी, जरबाफ, मखमल, चित्रीयां, बुलबुल, चसम, पाटु, टसरिया, शणीया, मेरव, नागीकुंजर, पट्टहीर, पटसीओली, पचसइयां फूलपगर, फूलकारी, दोरीयां, जादर, चादर, नेत्रपट्ट, धोतीपट्ट, राजपट्ट, गजवडी, सुवर्णवडी, हंस वडी, कालवडी, सुमखिमा, पटकूल, पट्टहीरसाडी, घाटडी, चीर, कुमखाव, अतलश आदि, खाराचीनी, पापडीआंचीनी, सधीआ, गुमागरी, आसखिआ, आगराइ, सद्यलीपट्टणी, मशरु, तास्ता, शालु, दोपट्टा, ग्रपट्टा, बास्ता, टुकडी, मुगटां, छायल नारीकुंजर, साडला, रत्नकंबल, चूनडी, घाटडी, इत्यादिक पांचरंगी वाघा पहेराव्या, वली काशमीरी केशरना छांटणां कीधां, भलां भलां सुगंध बावना चदननां विलेपन कीधां, अरगजा, चूआ, चपेल, फूलेल, केवडो, मोगरो, जाइ, जुइ, कुंद, मचकुंद, चपो, मरुओ, दमणो, केतकी अने मालती प्रमुख फूलोनी मालाओ पहेरावी पछी मुकुट, तिलक, बाजुबंध, हार, चीर, बेरखा, रत्नावली, मुक्तावली, चद्रावली, हीरावली, प्रवालावली, सूर्यावली, ग्रहावली, नक्षत्रावली, श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, पट्ट शीखर, चूडामणि, कुंडल, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रनदक, दशमुद्रक, चक्रक, अजर, मेखला, मुदक, पदक, सांकलु, सांकली, चिचिष्ट, भंगउत्तरी, दारा हांसडी, कपाली, ग्रैवेयक, हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, वर्णसरीका, झांझर, नेउर, घुघरा, पीगडां, वींछीया, अंगुठडी, वालाजाल, छमणां, अकोटा, रूपाला, हरीयाराखडी, गोफणा, उलसीयो, त्रिसंधीयो, ओटी, बोरडाकरी, वेढला, मुरकी, मोतीदर, गठोडा, युगल, चपकली, पानडी, होलेरवाली, मोतीसर, सरलीया, टीलां, टीली, चांदला, आड, नवग्रह, मुद्रडी, अंगूठी, बींटी, वांकरु, गलसरी, छापकरजाली, हेमजाली, मादलीयां, खेलमादलीयां, कदोरा, पाटीआला कदोरा, लटकणमोड, नागफूली, नागला, मोरबेसण, नथवाली, सिंदूर, कुंकुमरीली, जबलाचूडी, घरचूडी, चूडा, कांकणी, कारेली, छाब, पोंची, मेखला, हाथलां कली, सोना लहेरीयां, तावीत, कडलां, फरली,

वांकडी, वेलीयां, लोलीयां, इत्यादिक आभरण पहेराव्यां. ए रीते मित्र, ज्ञाति पोताना क्षत्रियो तथा कुटुंब, सगा संबंधीनी भक्ति विविध प्रकारनी कीधी. इति भोजन तथा आभरण विधिः

—

प्रभुनो नाम स्थापन—

बालकनुं श्रीवर्द्धमान एवुं नाम दीधुं, ते वखाणे छे. ते मित्र, न्याती, गोत्री, स्वजन, पितरीया प्रमुखने सत्कार, सन्मान आपीने त्रिशलादेवी तथा सिद्धार्थ राजा एवुं कहेवा लाग्या के–हे देवानुप्पियो ! अमारे घेर ए पुत्र गर्भने विषे आवी उपन्या पछी अमे रूपे करी, अणघड्या सोने करी, धान्ये करी, राज्ये करी, वाहने करी, मनुष्यना सत्कारे करी, अत्यंत (घणा) वृद्धि पाम्या, तथा सामंत जे सीमाडाना राजा अने चंडप्रद्योतनादिक राजा, ते पण अमारे वश थया, तथा अमारी चाकरी करवा आव्या तेथी अमारा मनमां एवुं चिंतव्युं हतुं के ज्यारे अमारे घरे बालकनो जन्म थाशे त्यारे ए बालकनुं नाम रूप गुणे करी प्रधान 'श्रीवर्द्धमान' एवो आपीशुं, ते अमारा मनोरथ सिद्ध थया, अमारी इच्छा पूरण थइ माटे अमे ए कुमारनुं 'वर्द्धमान' एवुं नाम आपीए छिए. तमें पण ए कुमारने 'श्रीवर्द्धमान–कुमार' एवा नामे बोलावजो. ए रींते संबंधी सर्वने शिरपाव पहेरामणी करीने सर्व सजननी साखे बालकनुं नाम स्थापन कर्युं पछी ते सर्वने विदाय कर्या.

श्रीवर्द्धमान भगवान् कहेवा छे ? तो के सात हाथनुं म्होटुं शरीर छे जेनुं, वली समचोरस संस्थान छे, सुवर्णवर्ण देहनी निर्मल कांति छे, वज्रऋषभनाराच संघयण छे, एवा भगवान् छे. हवे श्रीवर्द्धमान स्वामीनां सर्व मली त्रण नाम थयां ते कहे छे–एक तो माता पिताए आपेलुं नाम श्रीवर्द्धमान छे अने बीजुं रागद्वेष रहित तपस्यामां खेद सहन करवाथी 'श्रमण' एवुं नाम जाणवुं अने त्रीजुं जे अकस्मात् उपजे

ते भय अने सिंहादिकोना उपद्रवथी जे भय उत्पन्न थाय ते भैरव कहीए ए भय भैरवोथी चलायमान थया नहीं, निर्भय पणे रह्या थका भूख तृषा प्रमुख परिषहोथी क्षोभ पाम्या नहि एम परिषह उपसर्ग सहन कर्या तथा सर्वतोभद्र प्रमुख प्रतिमाना पालवावाला, चार ज्ञान सहित, धैर्यवान, अरति रति परिषहने वेठीने राग द्वेष रहितपणे सुख दु ख सहन कर्यां तेथी द्रव्यवीर्य पाम्या, मोक्ष जवानो निश्चय कर्यो छे तो पण चारित्र पालवामा तत्पर रह्या, एवा वीरपणाना गुणोथी देवताओए 'श्रीमहावीरस्वामी' एवु नाम दीधु, तथा भगवान् आमलकी क्रीडा करती वेलाए देवता क्षोभ पमाडवा आव्यो तेनाथी बीक पाम्या नहीं तेथी पण देवताए महावीर एवु नाम दीधु भगवान् श्रीमहा-वीरस्वामी दिवसे दिवसे चंद्रकलानी परे वधता थकां, घणा दास-दासीयो साथे परवर्या थकां, अत्यत रूपवान, मस्तके भमरानां सरखा काला केश छे जेना, कमल सरखां नेत्र छे, परवाला समान बिंबोष्ठ छे, धोला दांत छे, गर्भ सरखो गौर वर्ण छे, कमलना गंध सरखो श्वासोश्वास छे, सर्व देवताओना रूपथी पण घणुज रूप छे जेनु एटले सर्व देवोनु रूप जो एकठुं करीए तो भगवानना डावा पगना अगू-ठानी एक कलाने पण पहोंचे नहीं केमके त्रणे लोकमां सर्वथी अधिक रूप श्रीतीर्थंकर भगवाननु होय छे तेथी ओछु गणधर महाराजनु रूप, तेथी ओछु आहारक शरीरवाला साधुनु रूप, तेथी ओछु अनुत्तर विमान-वासी देवोनु रूप जाणवु, तेथी ओछु नव ग्रैवेयकना देवोनु रूप, त्यार पछी बारमो देवलोक, अगीयारमो, दशमो, नवमो, आठमो, सातमो, छट्ठो, पांचमो, चोथो, त्रीजो, बीजो, पहेलो देवलोक ए सर्व क्रमे करी एक बीजाथी उतरता उतरता रूपवाला कहेवा त्यार पछी जोतिषि देवोनुं, पछी भवनपतिदेवो, पछी व्यतर देवो, पछी चक्रवर्त्ति-राजा, पछी वासुदेव, पछी बलदेव, पछी मांडलिक सामान्य राजानु रूप जाणवु. ए सर्व अनुक्रमे एकेकथी हीन हीन रूपवाला जाणवा.

प्रभुनी आमलकीक्रीडा अने देवनो जय—

भगवान जातिस्मरण ज्ञान सहित अप्रतिपाति—मति, श्रुत अने अवधि मली त्रण ज्ञाने करी सहित, सर्वथी उत्कृष्ट देहनी कांति छे जेनी, एवा भगवान अबीह, बलवंत, बुद्धिमंत, सुरूपी, दिव्यस्वरूप धारी, साहसिक, रूपाला, रंगीला, रढीयाला, रेखाला, रतीला, मतिला एवा भगवान् रमतां रमतां ज्यारे आठ वर्षना थयां त्यारे सरखे सरखा राजकुमारो साथे क्रीडा करता थका ते देशमां प्रसिद्ध पामेली एवी आमलकी क्रीडा रमवा सारुं नगरनी बाहिर एक पीपलीनुं वृक्ष छे त्यां सर्व कुमारो एकठा थइने सर्व छोकरा दोडवा लाग्या ते आवी रीते के बे बे छोकरा साथे दोडे तेमां पहेलो जे पीपलीना वृक्षने जइ पकडे ते जीत्यो अने जे पाछल रही जाय ते हार्यो. पछी जे हारे ते पोताना खांध ऊपर जीतेला छोकराने बेसाडीने जे स्थानकथी होड करीने दोड्या होय ते स्थानके पाछो जइ मूके एवी रीतनी रमत पोताना जेवडा छोकरा साथे भगवान् करे छे; एवामां सौधर्मेन्द्र सभामां बेठा थकां अवधिज्ञाने करी भगवाननुं महाबल जाणीने सभामां कहेवा लाग्या के—आजना समयमां जेवा श्रीमहावीर भगवान् बलवान् छे तेवो कोइ बीजो बलवान नथी जो म्हारा सहित सर्व देवो मलीने तेने डराववा जाय तोपण डरे नहीं एवा छे. ते इंद्र महाराजना वचनने अणसद्दहतो थको एवो कोइ मिथ्यात्वी देवता त्यांथी उठीने ज्यां भगवान रमे छे त्यां आव्यो अने छोकरानुं रूप करी भगवान् साथे रमवा लाग्यो. त्यारे भगवान अत्यंत वेगथी दोडीने तरत जइ पीपलीना झाडने हाथ लगाडीने आगल चाल्या अने देवताए पीपलीना नीचेनी डालीयोमां सर्वत्र फूत्कार करता एवा सर्पनुं रूप बनाव्युं ते भगवाननी सामो फणाटोप करीने डराववा लाग्यो पण भगवाने सर्पने पोताना हाथथी दूर करीने पोते पीपली ऊपर चढी गया अने मनमां ते सर्पनो

काइ पण भय आण्यो नहीं, ज्यारे ते देवकृत बालक हार्यो अने श्रीवर्द्धमान जीत्या त्यारे ते देवरूप बालके पोतानी खाध ऊपर भगवानने चढावीने तेने डरावषा सारु सात ताडवृक्ष जेटलुं ऊचु रूप कर्युं तेने जोइने बीजा सर्व बालको भय पामीने नाशी गया अने प्रभुना मातापिताने जइ सर्व वृत्तांत कह्यु, माता पिता चिंता करवा लाग्यां तेमनी चिंता टालवाने माटे भगवाने वज्रप्रहार जेवी पोतानी मुष्टि, देवनी पीठ ऊपर मारी तेथी ते देव अरराट करतो अने चीस पाडतो जमीन ऊपर पडी गयो पछी घणो लज्जायमान थइ पोतानु रूप प्रगट करीने कहेवा लाग्यो के हे प्रभु। जेवा तमोने इन्द्र महाराजे वखाण्या हता तेवाज तमे धीरजवाला महा बलवान छो ए अवसरमा इन्द्र महाराज पोते पण त्या आव्या अने ते देवताने भगवानने पगे लगाड्यो. देवताए पण भगवानने पगे लागी अपराध खमाव्यो, ते देव मिथ्यात्वपणु त्यागी समकिति थयो. पछी इंद्रमहाराज तेने पोतानी साथे देवलोकमां लइ गया इति आमलकी-क्रीडा.

लेखकशाला-महोत्सव —

भगवान आठ वर्षना थया एटले माता पिताए मोहना वशथकी विचार्युं के—

> ' लालयेत् पचवर्षाणि, दशवर्षाणि ताडयेत् ।
> प्राप्ते षोडशके वर्षे, पुत्र मित्रवदाचरेत् ॥ १ ॥
> ' माता वैरी पिता शत्रु, पुत्रो येन न पाठित ।
> शोभते न सभा मध्ये, हंसमध्ये बको यथा ॥ २ ॥

' छोकराने पांच वर्ष रमाडयो—रमत कराववी अने दश वर्षनो थाय त्यारे धाकमां राखवो, तथा शोल वर्षनो थाय त्यारे तेने मित्र

सरखो जाणवो १, तथा जो पुत्रने भणावे नहिं तो माता तेनी वैरिणी जाणवी अने पिता तेनो शत्रु जाणवो. केमके जो भणे नहीं तो ते पंडितोनी सभामां जेम हंसोनी पंक्तिमां बगलो शोभे नही तेम ते पण शोभा पामे नहीं २ ' एवो विचार करी, सारुं मुहूर्त्त जोइने शुभ दिवसे पोताना स्वजन क्षत्रियोने जमाडी, वस्त्राभरण आपी, केशर कस्तूरीनां छांटणा करी, हाथी रथ घोडा शणगारी, गीत वाजित्र सहित महा महोत्सवथी निशालियाओने आपवा सारुं गोलधाणी मेवा प्रमुख लीधां. तेनां नाम कहे छे-वरसोला, गुंदवडां, खारक, टोपरां, द्राख, खजूर, सिंघोडा, अखोड, बदाम, चारोली, नालियेर, साकर, सेव, पेडा, फल-फूल, साकरिया चणा, एलचीपाक, धाणी, गोलधाणी, वीजोरां, चणा, सोनाना खडीया, रत्नजटित लेखणो, रूपानी पाटीओ, पाननां वीडां प्रमुख अनेक वस्तुओ साथे लइने, तथा पंडितने आपवा योग्य वस्त्राभूषण साथे लइने सोहागण स्त्रीयो गीत गाती थकी श्रीवर्द्धमानने स्नान करावी, शणगार पहेरावी, हाथी ऊपर वेसाडी, मेघाडंबर छत्र चामरो सहित, याचकोने दान देतां थकां, भाट स्तुति करतां थकां, ब्राह्मण वेदध्वनि भणतां थका, अने वन्दीजनो आशिर्वाद बोलतां थकां भणाववा वाला पंडितनी पासे आव्या. त्यारे पंडित पण सिद्धार्थराजानो छोकरो सकल देशनो अधिपति म्हारी पासे भणवा आवे छे एवुं जाणी अहंकार आणी म्होटुं आसन मंडावी शणगार करीने वे मणिबंध, बे बाहु, बे कक्षा, वे कान, वे काननी मूलमां, एक ललाटमां अने एक कोटमां एवा बार स्थानके तिलक करी पोताना परिवारने सर्व शणगारी वाट जोतो जोतो बेठो छे. ए अवसरमां इंद्रमहाराजनुं आसन पण ध्वजानी परे कम्पायमान थयुं अथवा जलमां चंद्रबिंबनी परे चपल थयुं अथवा हाथीना काननी परे चपल थयुं, त्यारे इंद्रमहाराजे अवधिज्ञाने जोयुं तो भगवान भणवा जाय छे एवुं देखी, कौतुक पामी इन्द्र

चिंतववा लाग्यो के—आ मोहनीयनो चमत्कार जूओ केवो छे माटे माता-पिता जाणे छे के एने भणावीए पण भगवान तो त्रण ज्ञाने सहित छे, महा गभीर छे, एने शु भणवु छे ? एतो भण्या गुण्या स्वयबुद्ध छे, अमृतमां वली मिठाश शी करवी छे ?, सरस्वतीने वली पोथी शी देखाडवी छे ?, चद्रमाने वली उज्ज्वलता शी करवी छे ?, आंबाने विषे तोरण शु बांधवु ?, तथा मातानी आगल मोसाल वर्णव करवो तेम एओ अज्ञानना वशथी भगवानने निरर्थक भणवा लइ जाय छे माटे हवे भगवाननी आशातना न होवी जोइए, एवु विचारी शक्रेन्द्र ब्राह्मणनु रूप करी ज्या भगवान निशालमां आव्या छे त्यां ब्राह्मणने सिंहासन ऊपरथी उठाडी भगवानने ऊचा सिंहासन ऊपर वेसाडी प्रथम तो उपाध्यायनी समीपे वेसी तेने केटलाएक शास्त्रार्थना प्रश्न पूछ्या, परतु उपाध्याये बराबर तेनो जवाब आप्यो नहीं त्यारे तेज प्रश्न भगवानने पूछ्या तेना उत्तर भगवाने तत्काल नि सदेहपणे आप्या ते जोइ अध्यापक (भणावनारो) मनमा विचार करवा लाग्यो के—आ वातोना तो म्हारा मनमा पण आज सुधी सदेह हता, म्हें पूर्वे घणा पडितोने एनां अर्थ पूछेला हता पण कोइए म्हारी शकाओनु समाधान कर्युं नहीं अने आ न्हाना बालके म्हारा सदेह दूर कर्या ए म्होटो आश्चर्य जणाय छे वली पण इन्द्र महाराजे भगवानने शब्दोनी उत्पत्ति पूछी त्यारे भगवाने सज्ञासूत्र, परिभाषा सूत्र, विधि सूत्र, नियम सूत्र, प्रतिषेध सूत्र, अतिदेश सूत्र, अधिकार सूत्र, अनुवाद सूत्र, विभाषा सूत्र अने निपात सूत्र ए दश सूत्रना अर्थ सर्व पृथक् पृथक् कही बताव्या, अने शब्दसाधनिका पण बतावी त्यारे लोकोए जाण्यु के आ कोइ परदेशी ब्राह्मण आवेलो छे ते बालकने प्रश्न करे छे अने बालक तेना उत्तर आपे छे, पण एवा उत्तर तो आ भणावनार पडितनां मातापिता पण आपी शके नहीं एम सर्वे लोको साश्चर्य कहेवा लाग्यां के

आटलां शास्त्र आ बालक क्यां भण्यो हशे ? अने उपाध्याय पण चमत्कार पामीने कहेवा लाग्यो के आ ते कोण ब्रह्मा पोते साक्षात् अहीं आव्या छे के शुं ? त्यारे सर्व लोकना मननां संशय मटाडवा सारुं इन्द्र महाराज बोल्या के-अरे लोको ! आ वर्द्धमान-कुमार छे, एने सामान्य पुरुष जाणशो नहीं, ए त्रण लोकनो नाथ छे, सर्व पदार्थोंनो जाण छे, परंतु महा गंभीर छे माटे पूछया विना उत्तर आपे नहीं. लोकोमां कहेवत छे के "ठाला ते वाजणा, ठाला बोला पोला ढोल, जेवो आश्विन अने कार्त्तिकनो मेघ, जेवो असति स्त्रीनो स्नेह अने जेवो शरदृऋतुनो गर्जारव तेवो ठालो जाणवो पण जे पंडित छे ते तो वर्षादना मेघ सरखा. ठाला बोले नहीं, जे मूर्ख होय ते पोते पोताने जाणे के हुं पंडित छुं पण म्होटा पुरुष जे छे ते विना पूछे बोले नहीं." एवुं कहीने भगवाने प्ररूप्यां जे व्याकरण संबंधि दश प्रकारना सूत्र तेनी वृत्ति तथा उदाहरण गोठवीने व्याकरण बनाव्युं. ते जिनेन्द्र व्याकरण नामा आठ व्याकरणनी आदिमां थयो. पछी इन्द्र महाराज पंडित प्रमुख लोकोमां भगवान सर्वज्ञ छे एवुं जणावी पोतानुं रूप प्रगट करीने स्वर्गमां गया. उपाध्याय भगवानने पगे लागीने बोल्यो के-प्रभो ! तमे ज्ञानसमुद्र छो, हुं तो अपूर्ण कलशनी पेरे छुं माटे तमे म्हारा गुरु छो. पछी प्रभुए उपाध्यायने घणुं दान आप्युं. भगवानना माता पिता घणां राजी थया थकां भगवानने हाथी ऊपर बेसाडी उत्सव सहित गाजते वाजते घरे तेडी आव्या. इति लेखकशालामहोत्सवः ।

अथ सार्थं भलेप्रकरणम्—

श्रीवीरप्रभुने नीशाले बेठा जाणीने सौधर्मेन्द्रे ब्राह्मणना रूपे आवी प्रभुने नमस्कार करी सर्व लोकने चमत्कार पमाडवा सारु प्रथम भलेना अर्थ पूछया, प्रभुजीए आ प्रमाणे अर्थ कह्या-१ 'बे लीटी'-जीवनी बे राशि छे. तेमां एक सिद्धना जीव ते निष्कर्मी अने बीजा संसारी जीव ते सकर्मी जाणवा. २ 'भले'-अरे जीव ! तुं सिद्धना जीवनी राशिमां भलवानी इच्छा

राखजे. ३ 'मींडु '–ससार रूप गोलाकारे ऊंडो कूप छे ते मांहेथी निकलवानु धर्मरूप छिद्र छे माटे नीकलीश तो सिद्धमां मलीश ४ ' बिलाडी '–जेम कूवामां वस्तु पडी होय तेने लोढानी बिलाडीथी बाहेर कहाडीए तेम ससारी जीवने ससार रूप कूपमांथी काहाडवानी एक देशविरति अने बीजी सर्वविरति रूप बे बिलाडी जाणवी. हवे ते सिद्धना जीव क्यां रहे छे ? ते कहे छे—५ ' ओगण चोटीओ माथे पोटीओ ' एटले चौद राजलोकना एक अधोलोक, बीजो मध्यलोक अने त्रीजो उर्ध्वलोक एवा त्रण भाग छे तेमां उर्ध्वलोकने चोटीने स्थानके बार योजन विस्तारवाली, ईषत्प्राग्भारा नामे पृथ्वी छे त्यां एक योजनना चोवीशमा भागे ३३३ धनुष ऊपर बत्रीश अंगुल जेटला विस्तारमां लोकने मस्तके अलोकने अडी रह्यां थकां सिद्धना जीव रहे छे ६ ' ननो बीटालो '—हे जीव ! तु ससारना काममोगमां मग्न थइ बीटाइ रह्यो छे, तेथी अधोगति एटले नीचीगति पामीश. ७ ' ममो माऊलो '—आ ससार जे छे ते जीवनु अनादि घर छे तेमां मोह नामे माउलो एटले मोसालीयो छे ८ ' ममा हाथ बे लाडवा '—पूर्वे कहेलो जे मोह नामे मोसालीयो छे ते जीवने काममोग रूप बे लाडवा हाथमां आपीने मोलवी राखे छे ससारमांथी नीकलवा देतो नथी ९ ' सेरी-राणी चोकडी '—सिद्धिरूप राणीना मंदिर चढवां चार कषाय रूप चोकडीनी चोकी राखी छे ते चोकीने बचीने कदापि कोइ ऊंचो चढे तो पण तेने चढवा देती नथी १० ' पाछी चार कुडावलि '—अगीआरमी पावडीथी पाछो डोलीने तेने ते चोकडी ससारकूपमां न्हांखे छे ११ ' ढांउ ढांउ ढोकलो माथे छोकरो ' एटले हे जीव ! तु ससारमां धाइ धाइने गर्भावासमां पडीश त्यां ढोकलानी परे सीजाइ रहीश वली छोकरां छैयां ते त्हारे माथे विटंबना पाडशे. माटे जो तु धर्मना चक्रवर्त्ती महाराजनु सिद्ध नगर छे तेने जोवाने वांछतो होय तो प्रथम तेनो सम्यकत्व नामे महामंत्रीश्वर छे तेनी साथे मलजे एटले ते तुजने धर्म महाराजथी मेलाप करावी देशे हवे ते सम्य कत्व नामा प्रधानना घर सुधी जातां थकां वचमां घाट छे त्यां लूटारा रह्या छे तेने निवारण करवानो उपाय कहे छे–१२ ' हाथमां डांगडी '—धर्मकथावार्त्ता रूप यथा प्रवृत्ति करण करी, अपूर्वकरणना शुभ परिणाम रूप डांगरी एटले महामुद्गर हाथमां लइने १३ ' भाइडा दो भाइडा बडो भाइ कांनो ' एटले राग द्वेष रूप बे भाइडाने अलगा करजे तथा बीजो पण सात प्रकृति रूप चोरनो चय करी अपूर्वकरण रूप मुद्गरथी मिथ्यात्वनी गांठ भांगीने एटले ग्रंथीभेद करी आगल जाजे त्यां सम्यं-कत्वनामा महामंत्रीश्वर पांच रूप करी रह्यो छे तेनां तु दर्शन पामीश. पछी तेनी सेवामां रहेतां थकां ते त्हारामां योग्यता जाणीने १४ ' इडिकेवली इडिउकारु ' एटले धर्मचक्रवर्त्तिनी बे पुत्री छे, तेमां एक देशविरति नामे लघु पुत्री छे अने बीजी

सर्व विरति नामे म्होटी दीकरी छे ते तुजने परणावी देशे परंतु जो सम्यकत्व मंत्रीनी सेवा एकाग्रचित्ते सन्मुख रही करीश तो ते प्रसन्न थाशे केम के—१५ 'आउ आउ आंकोडा वडे आंकड फांकोडा' एटले त्यां शंका कंखा कषाय रूप आंकडा फांकडा म्होटा छे तेनी जो तुं संगत करीश तो सम्यकत्व मंत्रीना चित्तमां शङ्का पडशे तेथी ते त्हारो साथ करशे नहीं. १६ 'निली तोडवे कांठाला वडे' एटले त्यां वली विषय कषाय रूप अथवा ममता माया रूप एवी वे विषनी वेलडी छे. ते मांहे काम अने भोग रूप बे सर्प सूता छे तेने जगाडीशमां—छेडीशमां. एम करवाथी स्वामी सुप्रसन्न थयो थको तुजने सिद्ध नगरीए जवानो सथवारो करी आपशे. १७ 'एनवेन बे गाडी' एटले समिति अने गुप्ति रूप बे गाडीयोमां बेसाडीने. १८ 'ओरस्वाला बलदिया' एटले तेमां ज्ञान अने चारित्ररूप बे बलद जोतरी आपशे तेने. १९ 'अमीयां बे रासडी' एटले संवर अने निर्जरा रूप बे रासडी बांधीने गाडली शिवपुर नगरना मार्ग भणी चलावजे. २० 'कक्को केवडो' एटले केवलज्ञान रूप बोलावा विना सिद्ध नगरे पहोचातुं नथी ते केवलज्ञान तो अणाहार मार्गथी उपजे छे माटे. २१ 'खरको खाजलो' एटले तुं चार प्रकारना आहारनो लोलुपी थाइश मा—रसेन्द्रियनो लंपटी थाइश मा. २२ 'गगा गोरी गाय वीयाणी' एटले ते अणाहारी जे तपादिक मार्ग छे तेना बतावनारा तो गुरु छे माटे गुरुनी भक्ति बहुमान करजे. केम के गुरु म्होटा उपकारी छे संसार समुद्र तरवाने बोधबीज धर्मनुं आलंबनादिक गुरु आपे छे माटे गुरुनुं गौरवपणुं करजे. २३ 'घघो घरट पलाण्यो जाय' एटले अरे जीव! तुं घरनो धंधो जे आरंभ समारंभ तेना भारे करी अहर्निश पलाण्यो थको वहे छे ते भारथी तुजने गुरु छोडावशे. २४ 'ननीओ आमण दूमणो' एटले गुरुए जे घरनो भार छोडाववा माटे पांच अणुव्रत अने पांच महाव्रत रूप अभिग्रह नियमादिक अंगीकार कराव्या ते पालतां थकां आमण दूमणो (मगनचित्तवालो) थइने पश्चात्ताप करीश मा. २५ 'चचा चिनीचोपडी' एटले गुरुदत्त चारित्रधर्म पालवानी चित्तमां चोंप राखजे. २६ 'छच्छा वदियापोटला' एटले छद्मस्थपणे गुरु समीपे श्रुतज्ञान—चौदपूर्वनी विद्यानुं पोटलुं बांधजे—ज्ञाननो अभ्यास घणो करजे. २७ 'जज्जो जेसलवाणीउं' एटले निनिदाशल्य, मायाशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रण शल्य त्हारा अंतरंगने विषे छे तेने टालवानो वणिज (व्यापार) करजे. २८ 'झझो झारी सारिखो' एटले तुं झारी सरखो स्वभाव राखजे जेम झारीनुं मुख सांकडुं होय अने पेट पोहोलुं होय तेम तुं पण पेट म्होटुं राखजे अने मुखथकी कोइना दोष (मर्म) प्रकाशीश मा. एवी रीते मुखने सांकडुं राखजे. २९ 'ञञीयो खांडो चांदो' एटले अर्द्धचंद्रमा जाणवो तेना जेवा आकार वाली सिद्धशिला छे ते स्थानके जावानुं छे

निरतर साधन करजे. ३० ' टट्टो पोलिखाडेपु ' एटले तु पोताना व्रत नियमा दिक जे कांइ गुरु समीपे लीधां छे ते खडित करीश नहीं अर्थात् पच्चक्खाणनी पोल जे बारणा तेने दृढ राखजे ३१ ' ठट्ठा ठोयर गाइओ ' एटले तु ठोयर ते भागेलो घडो तेनी पेरे थाइश मा, गुरुए आपेली श्रुत–शिक्षा ते हृदयरूप घटने विषे सग्रह करी राखजे ३२ ' डड्डा डामरगांठे ' एटले तु बाह्य आडबर करी अभ्यतर कर्मनी गांठे बधाइश मा ३३ ' ढड्डा सुणो पूछे ' एटले तु सुणो ते श्वान तेना पूछडानी पेरे वक्रस्वभाव राखीश नहीं परतु सरल स्वभाव राखजे ३४ ' राणो तायो खेले ' एटले जो तु मोहराणा साथे युद्ध करे तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा त्रणगुप्ति रूप त्रण खेल हाथमां राखजे. ३५ ' तचो तावे तेले ' एटले तु तप जप करतो थको कोइनां आक्रोश वचन सांभलीने तप्त तेलनी पेरे तातो थाइश मा ३६ ' थथ्या थै रखवाली ' एटले कदापि त्हारु मन वश न थाय तो पण वचन अने काया ए बेने तो थिरथाप करी राखजे ३७ ' ददीयो दीवटो ' एटले समकित (दर्शन) रूप दीवो तेने हृदयरूप घरमां राखजे वली दया दमन ने दान तेनी अभिलाषा धरजे ३८ ' धद्धीयो धायको ' एटले तु धन कमाववानु–परिग्रह मेलववानु ध्यान राखीश मा, केवल धर्मध्यान त्हारा हृदयमां राखजे. ३९ ' ननीयो पुलायरो ' एटले तु नास्तिकमति अगीकार करीने हृदयमांथी समकितने पोलु एटले पातलु करीश मा. ४० ' पप्पा पोलीपाटे ' एटले पाप आववानी पोल जे पांचे इन्द्रियना आश्रवद्वार छे तेने सवर रूप कमाड जडीने बध करी राखजे पण पोलां राखीश नहीं जेम अढार पाप स्थानकनो प्रचार तेमां प्रवेश करी शके नही एवां दृढ मजबूत बध करी राखजे ४१ ' फफ्फा फगडे जोडे ' एटले फोकट फासीया, अशुद्ध, अविनीत, अनाचारीनी जोडे सगत करी विचरीश मा ४२ ' बब्बामांहे चांदणु ' एटले बोधबीजनो वधारो करजे जेम जेम बोध वधतो जाशे तेम तेम हृदयने विषे ज्ञानरूप चांदणु एटले चद्रमा प्रगट थाशे ४३ ' भब्भो भारी भैंसको ' एटले भैंस जेम सूकु लीलु भक्षण करीने पेटे भारी थाय तेम तु पण बावीश अभक्ष अने बत्रीश अनतकाय जे कदमूल कहेवाय छे ते पामीने तेनु भक्षण करी पेटे भारी थाइश मा कदापि देवादिक आवीने चलावे तो पण चलायमान थाइश नहीं प्रतिज्ञा मूकीश मा, अर्हन्नक श्रावकनी पेरे दृढता राखजे तथा वली व्रत नियमादिक पालतो थको मनमां म्होटो अभिमान धरीश मा, फरी कहे छे ' ममीयो माटचूलेतरो ' एटले जेम चूलानी माट धगधगती रहे छे तेम तु कोइना आक्रोश (असह्यमर्मवेधाला) वचन सांभलीने अतरग हैयामां क्रोध रूप अग्निये धगधगतो रहीश मा एटले क्रोधाग्निये भेटाइश मा ४४ ' ममयीयो मोचक ' एटले आठ कर्मने मूकजे, मोक्ष मार्ग म्होटो छे तेने आदरजे ४५ ' ययीयो

जाडो पेटको ' एटले संसारमांहे यम जे कृतांत तेनुं पेट म्होटुं छे ते सर्व जगतने ग्रास करे छे तो पण तेनुं पेट भरातुं नथी माटे एनो भय त्हारा हृदयमां राखीने धर्मने विषे आलस करीश मा. ४६ ' रायरो कटारमल्ल ' एटले राग अने द्वेष ए बे म्होटा मल्ल छे. तेमां रागना वली बे प्रकार छे.—एक प्रशस्तराग अने बीजो अप्रशस्तराग. ए बेहु मल्लने जीतीश तो कर्मथी हलवो थइ केवलज्ञान उपार्जन करीने अचयपद जे मोक्षपद तेनो भोगी थइश. ४७ ' लव्वा घोडो लातवा ' एटले लोभरूप घोडानी लातथी वेगलो रहेजे. ४८ ' वन्ना विंगण वासदे ' एटले कामादिक व्यंग छे तेने त्हारा मनरूप घरमां वास एटले वसवा देजे नहीं, केम के जो कामादिक त्हारा मनरूप घरमां प्रवेश करशे तो आत्माना उत्तम गुण रूप धनने सर्व चोरी लइ जशे. ४९ ' शशा कोटा मरडीया ' एटले शसलानी पेरे कोट अने कानथी ढंकाइने गळीयार थइ बेसी रहीश मा पण धर्मने विषे उद्यमी थाजे, नहीं तो शसलानीपरे एक दिवसे कालरूप पारधी दुर्गतिमां लइ जाशे. जेम ससलाने आहेडी लइ कोट एटले गलुं मरडी न्हांखे तेम तुजने पण काल आहेडी मरडी न्हांखशे. ५० ' पष्पा खूणे फाडिया ' एटले खरुं बोलजे खोटुं बोलीश मा. केमके एक पण मृषावाद वचन बोलवाथी सर्व गुण अने सर्व व्रतनो नाश थइ जाय छे. जेम कोइक वस्त्रनो कोथलो खूणे फाट्यो पछी तेमां जे वस्तु भरेली होय ते हलवे हलवे निकलती अनुक्रमे सर्व खाली थइ जाय, तेम मिथ्याभाषणथी त्हारा गुण तथा व्रत जता रहेशे. तथा खूणे बेशी एटले कोइ नहीं देखे एवी रीते एकांते बेशी पाप करीश तो पण ते आगल उदयिककाले प्रगट थाशे. ५१ ' सारसे दंती लोक ' एटले जो तुं मोहराजानी साथे युद्ध करे तो दंती एटले हाथीनी परे साहसिक थाजे, जेम हाथी साहसिक थको सर्वनी आगल आगेवान थइ किल्लानां कपाट, गढ, कोट सर्वने भांगी न्हांखे तेम तुं पण मोह राजानो मिथ्यात्वरूप गढ भांगी न्हांखीश. ५२ ' हाहोलो हरिणेकलो ' एटले तुं मोहरूप पारधीनां पाशमां पडीश मा, पण हरण जेम पारधीने देखी नाशी जाय तेम तुं पण फाल मारीने नाशी जाजे; परंतु जो मोहना पाशमां पड्यो तो संसारना बंधनथी छूटीश नहीं. ५३ ' लावे लच्छी दो पणिहार ' एटले जो तुं मोक्षनो अभिलाषी थइने संसारनां बंधन छेदीश तो एक द्रव्यलक्ष्मी अने बीजी भावलक्ष्मी ए बे प्रकारनी लक्ष्मी त्हारे घेर पाणी भरशे एटले जो अनुत्तरविमाने देवता पणे उपजीश अथवा मनुष्यभवे नरदेव (चक्रवर्त्ति) पणे उपजीश तो भरतादिक जेम द्रव्यलक्ष्मीना पुण्य भोगवीने सिद्धने विषे भावलक्ष्मी भोगवे छे तेम तुं पण पामीश. हवे एवां सिद्धनां सुख केवी रीते पामीए ते कहे छे—५५ ' खडीया खाटक मोर पालें बांध्या बे चोर ' एटले संसारने विषे षट्काय जीवोना आत्माना जे ज्ञानादिक गुण छे तेने

लूटवाने माटे राग अने द्वेष रूप बे चोर खडा छे एटले ऊभा छे तेने पकडी बांधीने तेनु बीजमात्र काहाडी न्हांखजे के जे थकी कर्मरूप वृक्षनी उत्पत्ति फरी थाय ज नहीं. ए बेने टालीने चार घनघातीया कर्मने टालजे के जेम केवल-रूप लक्ष्मी पामे. पछी ते केवलश्री भोगवीने अते चौदमां गुणठाणे योग-निरुधी शैलेशी करण करी शुक्ल ध्यानना चोथा पाये कार्मण शरीर छेदी क्रिया रहित थइ सिद्धना जीवोनी राशिमां भलजे, जेथी ५५ 'मगलमहाश्री, देविधा परमेश्वरी' एटले मगलिक रूप म्होटी भावलक्ष्मी पामीश अर्थात् पोताना आत्मानां अनतज्ञान, अनतदर्शन, अनतचारित्र, अनतवीर्य, अगुरु लघु, अरूपी, अखड, अक्षय; एवी महामगलिक रूप भावलक्ष्मी पामी सादिअनतभांगे अजर, अमर, अविनाशी पणे, महानद, परमानद पद पणे रहीश. इति तत्त्व. वली एनो अर्थ प्रकारांतरे जुदा जुदा महापुरुषोनो करेलो घणा प्रकारनो दीठामां आव्यो छे परतु अत्रे ग्रथगौरवना भयथी मात्र आ एक ज प्रकारनो अर्थ दाखल करेल छे

प्रभुनो विवाह अने परिवार—

भगवान ज्यारे बाल्यावस्थाए करी रहित थया अने यौवनवय पाम्या त्यारे मातापिताए रूडु मुहूर्त्त जोवरावीने घणा आडंबर सहित समरवीर नामा सामंतनी पुत्री 'यशोदा' नामे हती ते प्रभुने पर-णावी घणी प्रतोमां नरवर्मराजानी पुत्री यशोदा परण्या, एवा अक्षर लखेला छे पछी ते यशोदा राणी साथे विषयसुख भोगवतां 'प्रियद-र्शना' नामे एक पुत्री थइ ते पुत्री भगवाननी व्हेनननो पुत्र जमाली नामे हतो तेने परणावी एम करता भगवानने गृहस्थपणामा अट्ठा वीश वर्ष वीत्यां महावीरस्वामीना पिता काश्यपगोत्रीय छे तेनां त्रण नाम छे–एक सिद्धार्थ, बीजु श्रेयास, त्रीजु यशस्वी । भगवाननी मातानु वासिष्ट गोत्र छे अने तेमना पण त्रण नाम छे–एक त्रिशला, बीजु विदेहदिन्ना, त्रीजु प्रीतिकारिणी । भगवानना काकानु सुपार्श्व एवु नाम छे, तथा भगवानना म्होटा भाइनु नदीवर्द्धन नाम छे, अने व्हेननु नाम सुदर्शना छे तथा स्त्रीनु नाम यशोदा छे तेनु कोडिन्न गोत्र छे तथा भगवाननी पुत्रीनु काश्यप

गोत्र छे अने तेनां अणोद्या अने प्रियदर्शना एवां बे नाम छे. भगवाननी दौहित्री तेनुं काश्यप गोत्र छे अने शेषवती तथा यशस्वती एवां बे तेनां नाम छे. भगवान श्रीमहावीरस्वामी कहेवा छे ? तो के—सर्व कलाओमां निपुण छे, भली रीते निर्वाह करवा वाला, भला रूपवंत, सर्व गुणे संपूर्ण, सरल परिणामी, विनयवान, ज्ञात राजाना पुत्र प्रसिद्ध एवा जे सिद्धार्थराजा तेना कुलमां चंद्रमा समान, भलो छे देह एटले शरीर जेमनुं, वज्रऋषभनाराच—संघयण, समचउरंस—संस्थान, त्रिशलामाताना पुत्र, महा कोमल शरीर वाला, कांतिवंत, ममता रहित, दीक्षानी वांछा करनार, त्रीश वर्ष गृहस्थावासे रह्या, प्रभुना मातापिता तो प्रभुनी अट्ठावीश वर्षनी वयमां देवलोके पहोंच्या[1] ते वखते दीक्षा लेवाने माटे पोताना म्होटा भाइ नंदीवर्द्धननी आज्ञा मांगी अने भाइने कह्युं के ' मातापिता जीवता रहे त्यां सुधी म्हारे घरमां रहेवुं ' एवी म्हारी प्रतिज्ञा हती ते पूर्ण थइ. त्यारे नंदीवर्द्धन बोल्या के भाइ ! तुं दाझ्या ऊपर लूण न्हांखे छे. केमके मातापिता मरण पाम्यां तेनो वियोगरूप दुःख तो हालमां मने कायम छे तेना ऊपर वली त्हारा वियोगरूप लूण न्हांखवुं ते म्हाराथी सह्युं जाय नहीं. हजी तो माता पितानो शोक पण मट्यो नथी. माटे हुं दीक्षा लेवानी रजा हमणा आपीश नहीं. भगवान बोल्या के माता, पिता, भाई, ब्हेन एतो जीवने अनंतिवार थयां, ते सर्वने मूकीने वली जीव तो एकलोज आवे छे, एकलोज जाय छे, अने एकलोज पोतानां करेलां शुभाशुभ कर्मोने

---

१ आवश्यकनिर्युक्तिमां तो चोथे देवलोके गया एवुं लख्युं छे. ए वातनुं समाधान करवा सारुं केटलाएक एवी कल्पना करे छे के देवोनी बधी मली चार निकाय छे तो ते चार देवनिकाय आश्रयी ए चोथी निकाय वैमानिक देवोनी छे माटे ए चोथो देवलोक ते चोथी निकाय वैमानिक देवोनी समजवी. तो ते चोथी निकायमां बारमो देवलोक आवी गयो. तेथी आचारांगमां कह्या प्रमाणे बराबर वात मली आवे छे. ए प्रमाणे समाधान करे छे, पछी तत्त्व केवलीगम्य छे.

भोगवे छे, एवी रीते ससारमा कोइ कोइनो सगो नथी तो हवे कोनो कोनो शोक करीए अने कोनी कोनी साथे प्रतिबध राखीए ?, नदीवर्द्धन बोल्या के भाई ! एवु हु पण जाणु छु तो पण हु शु करु ? म्हारे मोहनीय कर्मनो बध हजी घणो भारे छे, तेथी त्हारो विरह हु खमी शकतो नथी माटे हजी म्हारा कहेवाथी तु बे वर्ष घरमां रहे तो ठीक छे उत्तम पुरुषनी चाल छे के-दु खियाओने देखी तरत करुणा आवे माटे भाइनु एवु कहेण सांभलीने कह्युं के हे भाई ! हु बे वर्ष रहीश पण भातपाणी सर्व फासु लइश, म्हारा वास्ते आरम करीने कांइपण बनाववुं नहीं त्यारे भाइए कह्युं के सुखे एमज रहो, अमे तमारा वास्ते कांइ करीशु नहीं, त्यारे भगवान फरी पण बे वर्ष गृहवासे रह्या. ज्यारे भगवान जन्म्या हता त्यारे लोकमां एवी प्रसिद्धि थइ हती के चौद स्वप्न माताए दीठां छे माटे ए चक्रवर्त्ति थाशे, एवु जाणीने श्रेणिक अने चंद्रप्रद्योतन राजाए पोताना कुमारोने बालक ठाकोरनी सेवा करवा निमित्ते मोकल्या हता ते सहुए प्रभुने आवा घोर अनुष्ठान करता देखीने विचार्युं के ए चक्रवर्त्ति तो नथी, एतो संयम ग्राही तीर्थंकर छे एवु जाणी ते सर्व पोत पोताने स्थानके गया भगवान पण एवी स्थितिमां वली बे वर्ष गृहस्थावासे रह्या, सर्व सचित्त वस्तुनो त्याग कर्यो, ब्रह्मचर्य पाल्यु पण जे वखत दीक्षा लीधी छे ते वखत सचित्त जलथी स्नान कर्युं छे. केमके एवी मर्यादा छे के दीक्षा लेती वखतनु स्नान उष्ण जलथी करवु तीर्थंकरने न होय तेथीज प्रतिमाने पण उष्ण जल चढावता नथी.

भगवाने आपेलो वार्षिकदान—

ज्यारे एक वर्ष बाकी रह्यु त्यारे नवलोकांतिक देवो आव्या तेनां नाम कहे छे-१ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वह्नि, ४ वरुण, ५ गर्दतोय, ६ तुषित, ७ अव्याबाध, ८ अग्नि, ९ अरिष्ट ए नव आवीने जो पण

भगवान स्वयंबुद्ध छे तो पण एमनी एवीज मर्यादा छे माटे प्रभुनी पासे आवीने बोल्या के जय जयवंत होवो, हे समृद्धिमान ! हे कल्याणवान ! तमारुं भलुं थाओ, हे क्षत्रियोमां वृषभ समान ! तमारो जय होवो. बोध करो, बोध करो, बूझो बूझो, हे भगवान् ! हे लोकनाथ ! सर्व जगतना जीवने हितकारी प्रवर्त्तो, हे भगवान् ! तमे धर्मतीर्थ प्रवर्त्तावो, ते धर्मतीर्थ सर्व लोकने हितकारी, सुखकारी, मोक्षकारी थाशे एवुं कहीने जय जय शब्द करे. श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामीने मनुष्य योग्य गृहस्थधर्मथी—गृहस्थना व्यवहारथी पहेला पण अनुपम उपयोग ते अप्रतिपाति एवुं अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन हतुं ते अनुत्तर अवधिज्ञान अने अवधिदर्शने करी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणीने, रूपानो त्याग करीने, सोनानो त्याग करीने, धननो, राजनो, देशनो, वाहननो, कोठारनो, भंडारनो, अंतेउरनो, देशवासी लोकनो, धन, कण, धान्य, मणिरत्न, मोति, दक्षिणावर्त्त—शंख, शिला, प्रवालुं, रातां रत्नादिक जे पोतानी पासे छतां छे, हाजर छे ते सर्वनो त्याग करीने अर्थात् तेना उपरथी मन उतारीने सर्व रूपादिक छोडीने जे चांदी प्रमुख धरतीमां दाटेला होय तेने बहार काडीने ते सहु आपणा गोत्रिओने वांटी आपीने वरसीदान आप्यो. तेनो अधिकार एवो छे के—भगवान दीक्षाना दिवसथी एक वर्ष पहेलां वरसीदान देवा मांडे, ते सूर्य उग्याथी मांडीने जमवानी वेला पर्यन्त प्रतिदिवसे प्रभातना सवा पहोर दिवस चढतां सुधी नित्यप्रत्ये एक क्रोड ने आठ लाख सोनैया भगवान दानमां आपे अने गाममां एवी उद्घोषणा करे के जेने जे वस्तु जोइए ते धणी ते वस्तु मांगे त्यारे जे धणी जे मांगे तेने ते आपे. ते सर्व शक्रेंद्रना आदेशथी देवता पूर्ण करे. एवी रीते एक वर्षमां त्रणसो क्रोड एटले त्रण अब्ज, अट्ठासी क्रोड, ने एंशी लाख, एटला सोनैया दानमां आपे. ते सोनैयो एक एंशी रतीभार जेटलो होय अने

तेना ऊपर तीर्थंकरनां मा बापनुं तथा पोतानु नाम होय छे बारसो सोनैयानो एक मण करता नव हजार मण सोनैया दिनप्रत्ये दान देवाय, तेना आजना समय प्रमाणे एक गाडलामां चालीश मण भार न्हांखता बसो ने पच्चीश गाडला थाय ते सोनैया शक्रेंद्रना आदेशथी वैश्रमण देवता देवमायाए करी आठ समयमा निपजावीने, तीर्थंकरना घरमां भरे, ए दान देवानो अतिशय छे, अने तीर्थंकरना हाथने विषे सौधर्मेन्द्र एवी स्थिति करे के दान देतां थका तीर्थंकरनो हाथ थाके नहीं अने ईशानेन्द्र रत्ने जटित सुवर्णनी लाकडी लइ ऊभो रहे ते चोसठ इन्द्र वर्जीने बीजा सामान्य देवताओने दान लेतां वर्जे, तथा जे मनुष्यना ललाट माहे जेवी प्राप्ति होय, तेवु तेना मुखमाथी ईशानेन्द्र वचन कहेवरावे, तथा चमरेन्द्र अने बलेन्द्र ए बे इन्द्र जो तीर्थंकरनी मुठीमाहे अधिक द्रव्य आव्युं होय तो पाछु पडावी लेवे अने ओछु द्रव्य आव्यु होय तो पूर्ण करे मागनारनी प्राप्ति माफक पामे तथा भुवनपति देवता भरतक्षेत्रना मनुष्यने दान लेवा सारु तेडी लावे अने वाणव्यतर देवो ते मनुष्यने पाछा तेना स्थानके मूकी आवे तथा ज्योतिपी देवता विद्याधरोने दान लेवानी खबर आपे ए सर्व तीर्थंकरनां अतिशय जाणवा ए प्रस्तावे तीर्थंकरना पिता म्होटी त्रण शालाओ करावे अहीं भगवानना माता पिता देवलोक गया छे माटे तेना ठेकाणे एमनो म्होटो भाई नदीवर्द्धन छे ते त्रण शालाओ करावे, तेमा पहेली शालाए भरतक्षेत्रना मनुष्यने अन्नपानादिक आपे, बीजी शालामा वस्त्र आपे अने त्रीजी शालामां आभरण आपे

तीर्थंकरना हाथनां दाननो महिमा कहे छे—

चोसठ इन्द्रने दानना प्रभावे बार वरस पर्यंत मांहोमांहे क्लेश उपजे नहीं, तथा राजा अथवा चक्रवर्त्ति प्रमुख तीर्थंकरनु दान

लइने ते सोनैया पोताना भंडारमां मूके तो बार वर्ष सुधी तेमनो भंडार अखूट रहे, तथा शेठ सेनापति आदिकने दान मले तो तेना महिमा थकी बार वर्ष पर्यंत यशःकीर्त्ति घणी वधे, तथा रोगी पुरुषने दान मले तो तेना प्रभावथी रोग सर्व मटी जाय अने फरी बार वर्ष पर्यंत तेना शरीरमां कोइ नवो रोग पेदा थाय नहीं इत्यादिक दाननो महिमा जाणवो. "छ घडी दिवस चढ्या पछी दान देवा मांडे ते पोणा बे पोहोर दिवस चढ्या सुधी दान आपे एवो पाठ घणी प्रतोमां लखेलो छे, परंतु आमां सूर्य-ऊग्याथी ते जमवाना वखत सुधी आपे एवो प्रथम लेख आव्यो छे." एवी रीते प्रभुजी वरसीदान रूप वर्षाद एक वर्ष सुधी वरसावीने मनुष्योना दारिद्र्य रूप दावानलने उपशमावे. आ दानना प्रभावथी जे दारिद्री हता ते सर्व धनवंत थया, घोडे करी वध्या, वस्त्रे करी वध्या, आभरणे करी वध्या, अने लक्ष्मीए करी सहित थया. ए प्रभुना हाथनुं दान लइने ज्यारे पोताने घेर पाछा आवे त्यारे तेना घरनी स्त्रीयो सरखी पण पोताना स्वामीने ओलखे नहीं. पछी इन्द्र महाराज आवी ओलखाण करावे त्यारे तेने सर्व प्रकारनी ओलखाण पडे. ए प्रभुना हाथनुं दान सर्व भव्य जीवोने मले परंतु अभव्यने सर्वथा मले नहीं.

प्रभुनो दीक्षा महोत्सव वर्णवे छे—

भगवाननो दीक्षा समय जाणीने नंदीवर्द्धन राजाए दीक्षानो महोत्सव करवाने अर्थे प्रथम तो क्षत्रियकुंडपुर नगरने विषे ध्वजाओ बंधावी, हाट शणगार्यां, घरघर तोरण बंधाव्यां. एवी रीते नगर शणगारीने पछी चोसठ इन्द्र अभिषेक करवा आवे त्यारे देवोना प्रभावथी देवोए करेला जे आठ जातिना अभिषेक कलश ते कलश नंदीवर्द्धन राजाना करावेला अभिषेक कलशमां प्रवेश करी मली जाय. पछी नंदीवर्द्धन राजा भगवानने पूर्व सन्मुख बेसाडीने देवताए लावेला जलथी

भगवानने अभिषेक (स्नान) करावे ते वखते इन्द्रादिक देवो सर्व भृंगार दर्पण हाथमां लइ जय जय शब्द कहेता थका आगल ऊभा रहे पछी भगवानना शरीरने लूछी बावनाचंदने करी लेपे, अमूल्य वस्त्र, मुकुट, मोतीना हार, कंठसूत्र, केयूर, बाजुबन्द, बहिरखा अने कुंडलादिक सर्व जातना आभरण पहेरावे, पुष्पादिके करीने कल्पवृक्ष समान करे पछी नंदीवर्द्धनना कहेवाथी अनेक सेवक पुरुष पचास धनुष लांबी, पच्चीश धनुष पोहोली अने छत्रीश धनुष ऊंची माणिकनक रचित एवी एक 'चंद्रप्रभा' नामे पालखी बनावे तेमज देवता पण एवीज एक पालखी बनावे ते पालखी दिव्यानुभावे नंदीवर्द्धनकृत पालखीमा प्रवेश करे पछी ते पालखी प्रभुना मुख आगल मूके प्रभु ते पालखीमा पूर्व सन्मुख सिंहासन ऊपर आवीने बेसे अने भगवाननी जमणी बाजु कुलमां वडेरी कुलमहत्तरिका हंसलक्षणा स्त्री साडी लेइने बेसे, तथा डाबी बाजु भगवाननी धात्र्यमाता आवी दीक्षाना उपकरण लइने बेसे, तथा भगवाननी पछवाडे शोल शणगार पहेरीने एक घणीज स्वरूपवान भली स्त्री छत्र धरीने बेसे, तथा ईशानकोणे एक स्त्री जले पूर्ण कलश हाथमां लइ ऊभी रहे, अग्निकोणे एक स्त्री मणिमय विचित्र वींजणो करती ऊभी रहे, ए सर्व स्त्रीयो शणगार करेली अने युवान अवस्थावाली जाणवी त्यार पछी नंदीवर्द्धन राजानी आज्ञाथी एक हजार सेवक पुरुषो जेटलामां ते शिबिकाने उपाडे एटलामा ते वखतमां शक्रेन्द्र ते पालखीनी जमणी बाजुनी आगली ऊपरली तरफनी बाहा उपाडे, तथा ईशानेन्द्र डाबी बाजुनी आगली ऊपरनी बाहा उपाडे, तथा चमरेन्द्र जमणी बाजुनी पाछली तरफनी ऊपरनी बाहा उपाडे तथा बलीन्द्र डाबी बाजुनी पाछली तरफनी ऊपरनी बाहा ऊपाडे अने बीजा भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक देवोना जे इन्द्र छे ते ज्यां देखे त्यांथी उपाडे, केटलाएक देवदुंदुभी वजावे, केटलाएक पंचवर्ण

फूलनो वर्षाद् करे, पछी शक्रेन्द्र अने ईशानेन्द्र वाहाने छोडीने चामर ढोले त्यारे शिबिकाने बीजा इन्द्रो उपाडे. एम शिबिकाने प्रथम तो मनुष्य उपाडे पछी सुरेन्द्र, असुरेन्द्र, अने नागेन्द्र उपाडे. बीजा सर्व देवो हर्ष पाम्या थका केटलाएक आकाशे रह्या थका नृत्यादिक करे. आ ठेकाणे जेम वनखंड फूले करी शोभे, जेम पद्मसरोवरमां शरद्काले कमल शोभे, तेम देवता आकाशे रह्या थका शोभे छे तथा जेम अलसीनुं वन, कणेरनुं वन, चंपानुं वन, फूले करी शोभे तेम क्षत्रियकुंड नगरथी मांडीने देवताना भवन सुधी देवदेवीओथी आकाश संकीर्ण थयुं थकुं शोभे छे. प्रधान पडह, भेरी, झल्लरी, दुंदुभी इत्यादिक करोडोगमे वाजित्र आकाशे तथा धरतीए वाजी रह्यां छे, घरना व्यापारधंधा मूकीने मनुष्यना वृंद् जोवा मल्या छे, हवे पालखी चालतां देवदेवी तथा नरनारी पोतपोतानी खुशी प्रमाणे मनमां आवे तेवा प्रकारनां हर्षनां वाजां वजावे छे, गाय छे, नाचे छे, फूल फल मोती प्रमुखने वरसावे छे. वरघोडामां भगवाननी आगल अनुक्रमे सहुथी पहेला तो आठ मंगल चाले, पछी पूर्ण कलश (भृंगार कलश) चाले, पछी म्होटी वैजयंति ध्वजा चाले, पछी छत्रधर चाले, पछी मणीपीठ (सिंहासन) चाले, पछी शणगारेला पण अस्वार विनाना एवा एकसो ने आठ हाथी चाले, पछी एकसो ने आठ घोडा चाले, पछी एकसो ने आठ शस्त्रोथी भरेला रथ चाले, पछी एकसो ने आठ पुरुष चाले, पछी घोडा, हाथी, रथ, अने पाला ए चार प्रकारनी सेना चाले, पछी एक हजार योजन उंचो अने न्हानी न्हानी एक हजार ध्वजाओथी मंडित महेन्द्रध्वज चाले, पछी अनुक्रमथी कुंतग्रहा, बाणग्रहा, तीरग्रहा, गोफणग्रहा, हास्यकारिका, कर्मकारिका, वशकारिका, ज्ञानकारिका, विनोद्कारिका, खड्गधर, धनुर्धर, एवा पुरुषो चाले, पछी पाटीया धरवावाला पुरुष चाले, पछी घणा चारण, भिखारी मागता थका चाले, पछी घणा उग्र-भोगकुला-

दिकना क्षत्रिय, मांडविक, कोडम्बिक, शेठ, सेनापति, सार्थवाह, देव, देवी, प्रजालोक चाले, भगवाननी पछवाडे घणी सेनाये परवर्यो थको, छत्र चामर धरावतो थको, घणा आडंबर सहित नदीवर्द्धन राजा चाले, वीजा पण घणा लोक चाले, ते वखत अनेक प्रकारना वाजा वाजे तेनो शब्द साभलीने नगरनी स्त्रियो पोतपोतानु काम मूकीने त्यां आवे ते केवी रीते आवे ? तो के—

त्रण वातो स्त्रीयोने वल्लभ छे. एक झगडो, वीजु काजल, त्रीजो सिंदूर वली त्रण वातो बीजी अत्यंत वल्लभ छे एक दूध, बीजो जमाइ, अने त्रीजु वाजु यत.—" तिण्णिवि तिया वल्लहा, कलि कज्जल सिंदूर । ए पुण अतिहि वल्लहा, दूध जमाई तूर ॥ १ ॥ " माटे ते स्त्रीयो वाजानो शब्द साभलीने उतावलथी आवी तेथी कोइएक स्त्री तो काजल आखमा आजती हती ते आखने वदले गालोमा लगावी दीधु अने गालोमा कस्तूरी लगाडवी हती ते आखोमा आजी दीधी, केटलिएक स्त्रीयो पगोमा झांझर पहेरवा हता तेना वदले गलामां झणणाट करतां झाझर पहेरी लीधां, केटलिएक स्त्रीयोए गलामां पहेरवानां घरेणां हतां ते पगमां पहेरी लीधा, केटलीएक स्त्रीयोए कटीमेखला गलामा पहेरी लीधी अने गलानो हार ते कटीमेखलाने स्थानके केडमा वाधी दीधो, केटलिक स्त्रीयोए चदन घसीने पगे चोपडयु अने अलतो मस्तके चोपडी लीधो, केटलिएक स्त्रीयो अर्धु स्नान कर्युं न कर्युं एवी थकी दोडती आवी, कोइक तो घाघरा ओढीने चालती आवी तेथी नीचेना भागमां नागीज दीसवा लागी, कोइक वीजी पारका पुरुषनी स्त्रीयोनां छोकरा ते भूलथी पोतानी काखमां तेडीने दोडी आवी, केटलिएक पोताना रडतां वालकने पडतां मूकी चाली आवी, केटलिएक स्त्रियोए पहेरवानु वस्त्र ताणीने वाध्यु नहीं तेथी वायराना योगे ते वस्त्र उडी गयु. तेना योगे नववधू वालकुमारी सरखी दीसवा लागी, कोइ एक

स्त्रीए एक कानमां आभूषण पहेर्युं अने बीजा कानमां पहेरतां भूली गइ, कोइ एक स्त्री जमी तो खरी पण चळु करवुं रही गयुं, कोइक स्त्रीए एकज पग धोयो बीजो धोवो रही गयो, कोइक कांचली पहेरतां वीसरी गइ. एवी उतावलथी जोवा नीकली. केटलिएक स्त्रियो चावल उछाले छे, केटलिएक नाचे छे, अने केटलीएक गान करे छे. एवा आडंबरथी भगवाननो दिक्षामहोत्सव थयो ते क्या दिवसे थयो ? के–

ते काल ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी हेमंतऋतु एटले शीयालानी ऋतुनो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडीयुं, मागशिर वदि दशमीने दिवसे दिवसनी पाछली छाया एटले पोरिसी (एक पहोर) दिवस चढ्यां तथा सुव्रतनामा दिवसनुं नाम ते दिवसने विषे, विजयमुहूर्त्त आवे थके, चंद्रप्रभा नामा पालखीमां बेठा थका, जेनी आगल पाछल देवता अने मनुष्य चाली रह्या छे, शंखना वजाववा वाला, सोनानां चक्रना धरवावाला, हलना धरवा वाला तथा मंगल शब्द बोलवावाला एवा भिक्षु प्रमुख, चारण प्रमुख अने भाट प्रमुख; तथा घंटाना वजाववा वालाओनो समुदाय आशीष आपे छे के–हे समृद्धिवंत ! तमारो जय जय होवो, हे कल्याणवंत ! तमारो कल्याण थाओ, तमारां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र अतिचार रहित होवो, एमां भंग म थाजो, नही जीतवामां आवे एटले जीतवाने घणी कठण एवी जे इंद्रियो तेने तमे जीतो, साधुधर्म पालो, सर्व–विघ्न रहित होवो, उग्रविहार करवामां तमारुं नाम थाओ, रागद्वेषरूप बे मल्लोने तमो हणो, तथा तपरूप धैर्य अने संतोष रूप लंगोटाने कसीने आठ कर्मरूप शत्रुओनुं मर्दन करो, उत्तम शुक्लध्यानथी अप्रमत्तपणे रह्या थका विचरो, हे वीर ! तमे आराधना पताका ग्रहण करो, त्रण लोकरूप रंग एटले मल्लनो अखाडो तेमां अंधकार रहित एवुं अनुपम केवलज्ञान, ते तमे पामो. मोक्षरूप परमपद पामवाने केवली भगवाने देखा-

छ्यो जे सीधो मार्ग ते मार्गे तमे जाओ केवी रीते जाओ ? तो के- वावीश परीपह रूप फोजने हणीने जाओ, हे क्षत्रियोमां वृषभ समान ! तमारो जय थाओ, घणा दिवस, घणा पक्ष, घणा मास, घणा वर्ष, जय पामो वली वे पक्षनो एक मास, वे मासनी एक ऋतु थाय, त्रण ऋतुए एक अयन थाय अर्थात् छ मासे एक अयन थाय एवा घणा अयन लगें, वली वे अयने एक वर्ष थाय छे, पाच वर्षनो एक सव- त्सर थाय छे, एवा घणा सवत्सर पर्यंत परीपह तथा उपसर्गोथी डर नहीं राखो, वीजली सिंहादिकोना वीहामणा भय भैरवोने क्षमा सहित सहन करो, तमोने धर्ममा कोइ विघ्न म करो, एवु कहीने जय जय शब्द करे, पछी भगवान श्रीमहावीर स्वामी दीक्षा लेवा नीकल्या ते वखते हजारो नेत्रोथी लोको देखी रह्या छे, देखी देखीने हर्ष पामी रह्या छे, हजारो लोको वचने करी स्तवना करी रह्या छे, हजारो लोकोना मनमा एवु छे के घणा काल पर्यंत ए जीवता रहो, हजारो लोको विस्तारी विस्तारीने मनमां एवा मनोरथ करी रह्या छे के-ए तीर्थंकर थाशे त्यारे एनी सेवा करीशु, एमना काति रूप गुण देखीने लोको एवु चिंतवन करे छे के-ए अमारो स्वामी थाओ, हजारो लोको पोताना जमणा हाथनी आंगु लीथी देखाडी रह्या छे के-ए भगवान विराज्या छे एवो कहेते थके, हजारो लोकोना एटले हजारो पुरुप, हजारो स्त्रीयो अजली सहित हाथ जोडी जोडीने प्रणाम करे छे ते जमणा हाथे लेते थके, हजारो गमे घरोनी श्रेणी प्रत्ये उल्लघते थके, रूडा प्रकारे वीणा, हस्तताल, वाजित्र, गीत, शब्द ते मीठा मनोहर जयजय शब्दनी साथे मलेला एवा लोकोना स्वरोथी सावधान होते थके, सर्व ऋद्धि सहित, सर्व आडवर सहित, सर्व वल सहित, सर्व सेना सहित, सर्व वाहन सहित, सर्व समुदाय सहित, सर्व आदर सहित, सर्व सपदा सहित,

सर्व उत्सव सहित, देखवाने मनमां आवे एवा सर्व मेलाप सहित, सर्व लक्ष्मी सहित, संभ्रम सहित, सर्व नगरलोक सहित, सर्व नाटक सहित, सर्व तालेवर सहित, सर्व अंतेउर सहित, सर्व पुष्प गंधमाला घरेणाए सुशोभित, सर्व वाजानां घोष सहित, म्होटी ऋद्धि, द्युति, बल, वाहन, समुदाय सहित, म्होटा भलां वाजां समकाल वाजतां थकां, शंख, ढोल, पडह, झालर, खरमुखी, हुडुक, देवदुंदुभी प्रमुख वाजानां प्रतिशब्द सहित, क्षत्रियकुंडपुर नगरनी वचमां थइने निकले, नीकलीने ज्यां ज्ञातखंडवन नामे उद्यान छे ज्यां अशोकवृक्ष घणुंज रूडुं छे, त्यां आवे, आवीने अशोकवरवृक्षनी नीचे पालखी राखे, राखीने पालखीथी उतरे, उतरीने पोतानां हाथथीज घरेणां माला प्रमुख अलंकारादि उतारे, उतारीने ते घरेणां जे तेमनां कुलमां वडेरी हंसलक्षण स्त्री ते पोताना वस्त्रमां लीए, पछी पोतानां हाथथीज पंचमुष्टि लोच करे ते केश इन्द्र महाराज पोते लइजइने खीरसमुद्रमां मूके. लोच करीने चउविहार छट्ठ एटले वेलानी तपस्या करे थके उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रनी साथे चंद्रमानो योग आवे थके एकज शक्रेन्द्रे आपेला देवदुष्य वस्त्र लइने, एकला रागद्वेष रहित तथा साधुना सथवारा रहित थका द्रव्यथी अने भावथी मुंडित थइने, गृहस्थपणानो त्याग करीने अणगारपणो (साधुपणो) अंगीकार कर्यो.

जे वखते भगवान सामायिकनो उच्चार करे ते वखते शक्रेन्द्र सर्व कोलाहल वाजित्र प्रमुख बंध करे. पछी भगवान् 'नमोसिद्धाणं' एवुं कहीने 'करेमि सामाइयं' यावत् 'तस्स पडिक्कमामि' इत्यादि पाठ कहे. इहां बीजो गुरु करवानो अभाव छे. पोते स्वयं बुद्ध छे माटे 'भंते' ए पद कहे नही. तीर्थंकरनो एवोज कल्प छे, सामायिक उच्चार करतां ज भगवानने चोथुं मनःपर्यवज्ञान उपन्युं पछी सर्व इन्द्र तथा देवो ते भगवानने नमस्कार करीने नन्दीश्वरद्वीपे

जइ अट्ठाइ महोत्सव करीने पोत पोताने स्थानके गया, अने भगवाने पण पोताना भाइ नन्दीवर्द्धन प्रमुखने पूछीने विहार कर्यो हवे स्वजनादिको पण ज्या सुधी भगवान नजरे देखाता हता त्या सुधी त्याज ऊभा रह्या पछी सर्वे भगवानना गुण याद करता सशोक पोताने घेर आव्या

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते
श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे पञ्चम-व्याख्यान समाप्तम् ।



अथ षष्ठ व्याख्यान-प्रारभ ।



भगवाने दीक्षा लइने पछी विहार कर्यो ते वखतमां वे घडी दिवस शेप बाकी रह्यो हतो त्यारे भगवान कुमारगामनी बाहेर काउस्सग्ग रह्या ते वखत एक हाली आव्यो तेणे पोताना बलदो भगवानने भलाव्या अने पोते घेर जइ जमीने केटलिएक वार पछी पाछो त्या आव्यो, एटलामा आखो दिवस खेडवाथी थाकी गएला बलदीया तो वनमा चरता चरता क्याय चाल्या गया पछी हालीये चोमेर घणा जोया पण बलद् मल्या नही त्यारे भगवानने पूछवा लाग्यो के बलद् क्यां गया ? ते वखते भगवान मौन रह्या थका काइ पण बोल्या नही पछी ते हालीए वनमां जइ आखी रात्रि बलदोने शोध्या परंतु तेने बलद् जड्या नहीं अने बलद् तो वनमा चरी चरीने पाछली रात्रे पोतानी मेले त्यांज आवी बेशी रह्या हाली पण पाछो आवीने जूएछे तो बलद् त्याज बेठा छे ते देखीने क्रोध पाम्यो थको बोलवा लाग्यो के हे पापी ! हे पाखडी ! आ बलद् त्हेंज सताडी मूक्या हता ए बधु त्हारुज काम करेलु देखाय छे मने आखी रात्रि निरर्थक भमवुं पडयु एम कही हाथमा रासडी लइने भगवानने मारवा दोड्यो ते वखतमां इन्द्र महाराजे पण अवधिज्ञाने करी भगवानने थतु उपसर्ग

जाण्युं अने पोते त्यां आवीने हालीने कहेवा लाग्या के अरे दुष्ट! तुं जाणतो नथी के आ श्रीवर्धमान–स्वामी नंदीवर्द्धन राजाना भाई छे, सिद्धार्थराजाना पुत्र छे एणे दीक्षा लीधेली छे एम कहीने हालीने हलकारी कहाड्यो. पछी इन्द्र महाराजे भगवानने कह्युं के–हे भगवन्! आपने बार वर्ष पर्यंत छद्मस्थपणुं छे तेमां उपसर्ग घणा थवाना छे माटे आप आज्ञा करो तो हुं आपनी पासे हरहमेश रहुं अने आपनी सेवा करुं तथा उपसर्ग निवर्त्तन करुं एवो म्हारा मननो मनोरथ छे. त्यारे भगवान बोल्या, के इन्द्र! आ वात थइ नथी, थाती नथी अने थशे पण नहीं के श्रीअरिहंत भगवंत इन्द्रनी सहायथी केवलज्ञान पामीने मोक्षे जाय। अरिहंत तो पोताना बलवीर्यथीज केवलज्ञान पामीने मोक्षे जाय. एवुं सांभल्युं तो पण इन्द्रे मरणांतिक उपसर्ग टालवा सारुं भगवाननी माता त्रिशलादेवीनी बहेनना पुत्र सिद्धार्थनामे व्यंतरदेव तेने आज्ञा आपीने भगवान पासे मूकी गयो. अत्रे सिद्धार्थ व्यंतरने मासीनो दीकरो कह्यो पण कोइक स्थानके एने काको पण लखेल छे. पछी इन्द्रमहाराज देवलोके गया अने हाली पण पोताने घेर गयो इति हालीकृतोपसर्गः।

हवे प्रभातमां भगवान त्यांथी विहार करीने कोल्लाग सन्निवेशे गया, त्यां 'बहुल' नामे ब्राह्मणना घरे कांस्यपात्रमां खीर लइने प्रभुए परमान्नथी पारणुं कीधुं. पात्र–धर्म बतावबा सारुं गृहस्थना कांस्यपात्रमां खीर लीधी त्यां पांच दिव्य प्रगट थया ए भगवंतनो अतिशय छे. ते पांच दिव्य कहे छे–एक तो देवता आकाशमां ध्वजा विस्तार करे, बीजो सुगंधि जल वर्षावे, त्रीजो फूल वर्षावे, चोथो देवदुंदुभी बजावे, पांचमो ' अहो दानमहो दानम् ' एवो ध्वनि करे, प्रकारांतरे पाचमा दिव्यने विषे साडी बार क्रोड सोनैया वरसावे एवो पण लखेल छे. इहां पण कोइक आचार्यना मते पांचमुं वखाण पुरुं थयुं कहेवाय छे.

हवे प्रभुए ज्यारे दीक्षा लीधी, त्यारे इन्द्रादिकोए सुगंधित बावना चंदनादिके करी भगवतना शरीरे लेप कर्यो छे, तेनो गंध, चार मास जाजेरा पर्यंत न जाय, ते वासनाथी हजारो गमे भ्रमरादिक मदोन्मत्त थया थका भगवतना अंगोपांगने वेधे छे, म्होटो उपद्रव करे छे कोनी पेरे ? तो के–जेम कामी पुरुष कामांध थया थका स्त्रीने आलिंगन देता तेना गलस्थल होठादिकने विषे अनुकूल पणे चुंबन करे, डख मारे तेम भमरा पण वासनाए अन्ध थया थका, भगवतना शरीरना अवयवे डख मारे छे ए दृष्टांत कह्यु पण अहींआ एटलो फेर छे, के स्त्री तो कामी पुरुषथी हारी जाय, परंतु भगवान् तो भमरानो एटलो बधो उपद्रव छता पण वज्रऋषभनाराच संघयणना प्रतापथी मेरुना परे अडग रहे छे अथवा अजाण्या कामी पुरुष, गंध ऊपर मूर्च्छा पाम्या थका गंध लेवाने अर्थे, भगवानना शरीर साथे पोतानु शरीर घसवा लाग्या, तथा कामी स्त्रीयो आवीने आलिंगन करवा लागी एम भगवान पासेथी सुगंध मागवा लाग्या एवो उपसर्ग चार महीना जाजेरा रह्यो तो पण भगवान डग्या नहीं मेरुनी पेरे अकंप (अचल) रह्या

हवे भगवान त्याथी विचरता मोराक–सन्निवेशना विषे सिद्धार्थ राजा प्रभुना पिता तेनो मित्र कुलपति, 'दुरइज्जत' नामा तापसना आश्रमे आव्या, तापस पण भगवानने देखी स्हामो मलवा आव्यो, तेने भगवत पण नजीकमाज पूर्वपरिचयाभ्यास थकी हाथ पसारीने मल्या, पछी तेना आग्रह थकी नीराग चित्त थका एक रात्रि त्या रह्या, फरी प्रभाते विहार करवा लाग्या, त्यारे ते तापस, पहोंचाडवा साथे चाल्यो अने आठ मास अन्यत्र विहार करीने चोमासु पोताना आश्रमे रहेवानी प्रभुने विनंति करी, घणो आग्रह कर्यो त्यारे प्रभुए देशकाल विचारीने कह्यु के एमज थाओ एवु कही पछी चार ज्ञाने सहित एवा प्रभु

ते पृथिवीने विषे विहार करतां ज्यारे चोमासुं आव्युं त्यारे ते तापसनी झूंपडीमां रहेवाने आव्या, कुलपतिए तृणनुं झूपडुं प्रभुने रहेवा सारुं आप्युं. भगवान तेमां रह्या पण दैवयोगे वर्षाद न थयो त्यारे गामनी गायो प्रमुख ढोर भूखें मरतां थकां झूंपडीना तृणखलां खावा आवे ते जोइ बीजा तापसो तो पशुना समूहने हांकी काढे पण प्रभु तो मौनपणे रहे, कोइ जानवरने तृणखलां खातां दूर करे नहीं, एम करतां सर्व तृण पशुओ खाइ गयां त्यारे झूंपडुं उघाडुं देखी कुलपति बोल्यो के प्रभो ! पंखीओ पण पोताना माला सांचवे छे अने तमे तो राजपुत्र थइ पोतानो आश्रम पण सांचवी शकता नथी ? एवी रीते कुलपतिने अप्रीति उपजी देखी भगवाने निर्धार्युं के म्हारे अहींआं रहेवुं नहीं, पछी आशाढी पूनमथकी पंदर दिवसे एटले श्रावणवदि अमावास्याए चोमासाना पन्नर दिवस जातां प्रभुए त्यांथी विहार कर्यो. तेथी ' उपन्या भगवंत न गणे चोमासुं ' एवुं कहेवाणुं. त्यां भगवंते पांच अभिग्रह लीधा—ते कहे छे. एक अप्रीति उपजे त्यां न रहेवुं. बीजुं ज्यां सुधी छद्मस्थपणुं छे त्यां सुधी निरंतर काउस्सग्गमांज रहेवुं, त्रीजुं गृहस्थनो विनय न करवो, चोथुं यथासंभव मौनपणे रहेवुं, तथा कायाए करी ऊभाज रहेवुं पण सुवुं नहीं, अने पांचमुं सर्वदा हाथमां भोजन करवुं.

शूलपाणियक्ष—कृतोपसर्ग; अने प्रभुने आवेलां दश स्वप्न—

एवा अभिग्रह सहित विचरतां थकां शूलपाणि यक्षने देहरे अस्थिग्रामे प्रथम चोमासुं रहेवा पधार्या, त्यां अत्यंत उपसर्ग सहन करीने शूलपाणि यक्षने प्रतिबोध्यो, तेनी कथा कहे छे—धनदेव नामे सार्थवाह पांचशे गाडां मालनां भरी, व्यापार करवा कोइ गामांतरे जतो हतो, मार्गमां वेगवती नामे बहुवालुकावाली नदी वर्द्धमान गाम पासे आवी, त्यां उन्हालाना दिवस हता तेथी कोइ बळद ते रेती

भरेली नदीमाथी गाडु ताणीने चाली शके नहीं, पण ते बलदोमां एक बलद् घणो जोरावर हतो तेणे ते पांचशे गाडा नदी थकी उतारी पहेले पार कर्यां, परतु पोते त्रूटी पड्यो, तेथी चाली न शक्यो त्यारे सार्थवाहे चारा पाणीने अर्थे वर्द्धमान गामना अधिकारि शेठ, पटेल, गामोद, पटवारी, प्रमुख पचने ते धोरी भलाव्यो तेने घृत, गोल, तृण, जलादिक सारु घणु धन आप्यु, वली ते बलदनी चाकरी करवानी घणी भलामण आपीने शेठ त्याथी चाल्यो गयो. पछवाडेथी ते गामना लोकोए ते बलदनी सार संभाल कांइ पण कीधी नहीं, शेठनु धन आपेलु सर्व वाटीने खाइ गया पछी ते बलद भूख–तृषाथी पीड्यो थको अकाम निर्जराए मरण पामीने व्यतर देवोमां शूलपाणी नामे यक्ष थयो तेणे अवधिज्ञानथी पाछलाभवनु वृत्तात जोयुं,अने गामनां लोको ऊपर रुठ्यो थको मरकी विकूर्वी, तेथी घणां माणस अने ढोर मरवा लाग्या त्यां कोइ माणसने बालवावालो पण मले नहीं जे कोइ मरे तेने लोको गामनी बाहेर न्हाखी जाय तेथी त्या हाडकाना ढगला थइ गया. आव–जाव करनारा लोकोए तेनु 'अस्थिगाम' नाम पाडी दीधु पछी घणा माणसोने मरता देखीने गामना लोके मली तेने आराध्यो त्यारे यक्ष प्रगट थइ आकाश वाणीथी बोलवा लाग्यो के–"हु बलदनो जीव छु, तमे म्हारु द्रव्य खाइने काइ पण चाकरी करी नहीं तेथी तमे मन्हे कुमरणथी मारेल छे, माटे हु कोप्यो छु तो तमे हवे म्हारा नामनु हाडका ऊपर देहेरु करावो, तेमा वृषभना रूपे शूलशस्त्र हाथमां आपीने म्हारी मूर्त्ति थापो, तेनी पूजा करो तो रोग पण मटशे, अने जीवता पण रहेशो, नहीं तो सर्व मरण पामशो" एवी वात सांभलीने लोकोए मरण भयथी देहेरु करावी तेमां तेनी प्रतिमा थापी पूजा करी, तेथी मरकी उपशम थइ हवे भगवान् ते शूलपाणी नामा यक्षने प्रतिबोधवा ते देहेरे आव्या त्यारे ते यक्ष महा दुष्ट छे, कोइने पोताना

देहेरे रात्रे वास करवा दिए नहीं, तेथी ते यक्षना देरानो पूजारी इंद्रशर्मा नामे विप्र हतो, तेणे भगवंतने रहेवानी मनाइ करी, तेम बीजा लोकोए पण वार्या, तो पण प्रभु मौनपणे त्यां रात्रे काउस्सग्ग रह्या, त्यारे यक्ष रूठ्यो अने संध्या समयथी उपसर्ग करवा लाग्यो, प्रथम तो प्रभुने डरावत्रा सारुं अट्टाट्टहास्य कर्युं. पछी हस्तीनुं रूप करी उछाल्या, पिशाचनां रूप करी छरी कहाडी वीवराव्या, तेमज सर्प्प थइने डंक मार्यो इत्यादि घणा उपसर्ग करवा मांड्या पण भगवंत लगार मात्र क्षोभ पाम्या नहीं; ते पछी मस्तक, कान, नासिका, आंख, दांत, होठ, पूंठ, नख, ए आठ स्थानके विविध वेदना उपजावी. तथापि भगवंतने अक्षोभ जाणी, यक्ष प्रतिबोध पाम्यो अने प्रभुनी भक्ति करवा लाग्यो, एटलामां सिद्धार्थ व्यंतर आव्यो, तेणे कह्युं के— अरे यक्ष ! आ तें शुं कर्युं ? तुं नथी जाणतो के ए सिद्धार्थ राजानो पुत्र छे, म्होटी समतानो भंडार छे, जो इन्द्र महाराज जाणशे, तो तने बाहिर काढी मूकशे, ते सांभली भगवानी शांत मुद्रा देखी यक्षे पोतानो अपराध खमाव्यो अने ते प्रभु आगल गीत गान करवा लाग्यो अने समकित पण पाम्यो. भगवंतने पण रात्रिना चार प्रहर पर्यन्त कदर्थना थई तेना श्रमे करी काउस्सग्गमां ज पाछली रात्रे बे घडी निद्रा आवी गई, निद्रामां प्रभुए दस स्वप्न दीठां, ते कहे छे—एक ताल पिशाच हण्यो, बीजुं उज्ज्वल कोकिला पक्षी अने त्रीजुं पंचवर्ण विचित्र कोकिलानुं जोडुं सेवा करतुं दीठुं. चोथी फूलनी बे माला दीठी. पांचमुं गायनो वर्ग दीठो, छट्ठुं पद्मसरोवर दीठुं, सातमुं समुद्र भुजाए तर्यो दीठो, आठमुं सूर्य ऊगतो दीठो, नवमुं आंत्रडे वींट्यो मानुषोत्तर पर्वत दीठो, दशमुं पोते मेरुपर्वते चढ्या, एवुं दीठुं. ए दश स्वप्न देखीने भगवंत प्रभाते जाग्या, ते वखते लोक पण एवुं जाणता हता के ए साधु रात्रे मरी गयो हशे. तेथी प्रभाते जोवा

आव्या त्यां भगवानना महिमा देखीने लोकोए भगवतने पूज्या, घणां हर्ष पाम्या, अने स्वामीनो घणो महिमा कर्यो, एवा समयने विपे श्रीपार्श्वनाथनो श्रावक उत्पल नामा निमित्तियो पण त्या आव्यो प्रभुने वांद्या, अने कहेवा लाग्यो के हे स्वामिन्! तमे पाछली रात्रे स्वप्नमा ताल पिशाच हण्यो, तेथी तमे तरत मोहनीय कर्मने हणशो वली श्वेत कोकिल पखी दीठो, तेथी अक्षोभपणे शुक्लध्यान ध्यावशो पाचवर्णा विचित्र कोकिल पंखीनु जोडलु दीठुं, तेथी द्वादशांगी प्ररूपशो तथा गायनो वर्ग दीठो तेथी अनुपम चतुर्विध सघनी थापना करशो, वली तमे देवताओथी सेवित पद्मसरोवर दीठु, तेथी चार निकायना देवता तमारी सेवा करशे वली मेरुपर्वतनी चूलिका ऊपर तमे चढ्या एवुं दीठु, तेथी तमे देवोथी रचित सिंहासने वेसी, धर्मोपदेश देशो, धर्मनी प्ररूपणा करशो, वली सूर्यनु मडल दीठु, तेथी केवलज्ञान पामशो, तथा मानुपोत्तर पर्वत आंत्रडे वींट्यो दीठो, तेथी जगत्मां यश कीर्त्तिनु मडाण पामशो, तथा प्रतापवंत देवनिकायथी सेवनीय थशो पोतानी भुजावले समुद्र तर्यो दीठो तेथी तमे ससाररूप समुद्रने तरशो हे भगवन्! तमे फूलनी मालानु युगल दीठु तेनो अर्थ हु नथी जाणतो माटे तमेज उपकार करीने कहो, त्यारे भगवत मौनी छे माटे छद्मस्थावस्थाने विपे वोल्य नहीं, तेथी सिद्धार्थ व्यतरो भगवानना मुखमा प्रवेश करीने कहेवा लाग्यो के फूलनी वे माला दीठी माटे श्रावकनो अने यतिनो ए वे प्रकारना धर्मनी प्ररूपणा हु करीश एवी रीते फल सांभलीने सर्व लोक भगवानने वदन करी पोतपोताने स्थानके गया हवे भगवान निर्विघ्न पणे पन्नर दिवस न्यून प्रथम चोमासु पूर्ण करीने मेरुनी परे धैर्य धरता समता रूप रसमा रमता थकां चोमासी पारणु करी त्याथी विहार कर्यो. ए प्रथम चोमासु १

अच्छन्दक-निमित्तियानो वृत्तान्त—

त्यांथी विहार करी मोराकसन्निवेशे उद्यानमां आवी काउस्सग्गे रह्या, त्यां भगवानननो महिमा करवा सारुं सिद्धार्थ व्यंतरो स्वामीना शरीरमां संक्रमीने लोक आगल भूत, भविष्यत् अने वर्त्तमान संबंधि निमित्त भाषे छे, तेथी त्यांना लोक भगवानननी सेवा करवा लाग्या. ते गाममां ' अहच्छंदक ' नामा निमित्तियो रहे छे ते भगवानननी ईर्ष्या करवा लाग्यो. केमके लोक तेने कहेवा लाग्या के देवार्य सरखो तुं निमित्त जाणतो नथी. म्हे काले खेत्रमां सर्प्प दीठो, ते तेणे कही दीधो तथा हुं जमीने गयो हतो ते कही दीधुं त्यारे ते अहच्छंदक नामा निमित्तियो क्रोध करी भगवानननुं निमित्त असत्य करवा सारुं हाथमां तृण लइने प्रभुने पूछवा लाग्यो के हे आर्य ! आ तृण छेदाशे, किं वा नहीं, ते सांभली सिद्धार्थे ना कही, त्यारे ते छेदवा लाग्यो. एटलामां इंद्रे अवधिज्ञानथी जोइने भगवंतनो महिमा राखवाने ते निमित्तिआनी आंगली छेदी न्हांखी तेथी तृण त्रुटच्यु नहीं. निमित्तिओ विलखो थयो. पछी सिद्धार्थे लोक आगल कह्युं के ए निमित्तिओ चोर छे, कांइ भण्यो नथी. एणे ' वीराघोष ' कर्मकरनो दश पलनो कांसीनो पात्र चोरीने खर्जूरी वृक्ष हेठे दाट्यो छे तथा इन्द्रशर्मा ब्राह्मणनो बोकडो मारीने तेनुं मांस एणे खाधुं छे, तेनां अस्थि एना घरनी पछवाडे बोरडीना झाड नीचे दाट्यां छे तथा त्रीजुं दूषण जे एमां छे ते हुं नहीं कहुं. एनी स्त्रीज कहेशे. एवुं सांभली लोके सर्व वात सांची मानी एनी स्त्रीने जइ पूछ्युं, त्यारे ते स्त्री बोली के ए पापिष्ट, पोतानी भगिनीने भोगवे छे, एवी पोतानी निंदानी वातो प्रसिद्ध थवाथी अहच्छंदक लज्जा पाम्यो अने गाममां फिट् फिट् थयो थको प्रभु पासे आवी विनंति करवा लाग्यो के तमे त्रैलोक्य पूजनीक छो, हुं अहींआंज सुखे उदरपूरणा करुं छुं ने जीवुं छुं. भगवंत अप्रीति थई जाणी त्यांथी विहार करी गया.

निर्भाग्य-सोमदेवविप्रनी कथा—

भगवान श्रीमहावीरस्वामी एक वर्ष ऊपर एक महीना सुधी तो इन्द्रे आपेला देवदुष्य वस्त्र सहित रह्या अने त्यार पछी वस्त्र रहित अचेलक थया, पण अतिशयना योगथी नागा देखाय नहीं हवे वस्त्र रहित शी रीते थया ? ते कहे छे–भगवाने ज्यारे वरसीदान दीधु त्यारे सिद्धार्थराजानो मित्र सोमदेव नामा ब्राह्मण जन्मथी दरिद्री छे ते परदेश धन कमाववा गयो हतो पण क्याए धन पाम्यो नहीं जेवो गयो तेवो ठाले हाथे पाछो पोताने घेर आव्यो, पण एक कोडी मात्र कमाइ आव्यो नहीं, दरिद्रीज रह्यो त्यारे तेनी स्त्रीये तेने घणो निभ्रछयो अने कहेवा लागी के–अरे निर्भाग्य ! श्रीमहावीरस्वामिए वरसीदान दई दीक्षा लीधी ते वखते तु क्यां मरी गयो हतो ? तु ज्या त्या आवो ने आवो दरिद्री रह्यो जेम घडो ज्या जाय त्या पाणी भरे, तथा कपासीयो ज्यां जाय त्या लोढाय तेम तु पण दरिद्री रह्यो पण दारिद्र्य त्हारो केडो मूकतु नथी, जेम कोइ दरिद्री पुरुष धन कमावाने अर्थे परदेशे जवा तैयार थयो त्यारे ते पुरुषे दारिद्र्यने कह्यु के–"रे दालिद्दवियक्खणा, वत्ता इक्क सुणिज्ज । हम देसातर चल्लिया, तु थिर घेर रहिज्ज ॥ १ ॥" एटले हे दारिद्र्य ! हे विचक्षण ! तु एक म्हारी वात कहु ते सांभल के हवे हु देशातर जाउ छु अने तुं घरमा ज थिर थइ रहेजे. एवां तेना वचन साभली दारिद्र्य बोल्यु–' पडिवन्नो गिरुआ तणो, अविहड जाण सुजाण । तमे देशातर चल्लिया, तो अमे आगेवान ॥ १ ॥ " हे भाई ! साभलो हु तो म्होटानो विनय मूकीश नहीं केमके जे उत्तम पुरुष अगीकार करे ते अविचल जावज्जीव अगीकार करे माटे जो तमे देशातर जाशो तो हु पण आगेवान थइने तमारी साथे आगलनु आगल चालीश तेम हे निर्भाग्य ! त्हारी पछवाडे पण एमज दारिद्र्य रहे छे तु हमणा घरमा आव्यो छे पण घरमां तो कांइ

नथी, खावाने अन्न नथी, पीवाने पाणी नथी, भूखे मरती बेठी छुं, क्यांथी त्हारा वास्ते खावा सारुं लइ आवुं, घरमां तो शाकमां न्हांखवाने मिरची अने मीठुं पण नथी, मात्र दारिद्रनी लहेरो आवे छे. यतः—
" जिणघर भेंस न रीके पाडो, जिणघर बलद न दीसे गाडो । जिणघर नारि न चूडी खलके, तिणघर दारिद्र लेहेरी लहके ॥ १ ॥ " जेना घरमां भेंस सहित पाडो रींकतो न होय, वली जेना घरमां बलद अने गाडुं दीसतुं न होय, अने जेना घरमां स्त्रीना हाथमां चूडी खलकती न होय, तेना घरमां दारिद्र लहेरे लहकतुं जाणवुं. माटे तुं घरमां आवीश नहीं, आवीश तो भूखे मरीश. अरे दरिद्री ! हजी पण तुं भगवान पासे जइश तो कांइक मलशे. एवां स्त्रीनां वचन सांभली ते ब्राह्मण, भगवान पासे आव्यो अने बे हाथ जोडी हीन स्थिति देखाडतो थको पगे लागीने दीन वचने विनंति करवा लाग्यो के—कृपानाथ! हे परदुःखभंजक ! हे परमार्थना करनार ! हे म्हारा मित्रना पुत्र ! हे दारिद्रय रूप वेलडीनां छेदक ! तुं म्हारी मूल थकी विनंति सांभलीने म्हारो निस्तार कर, आ म्हारो दारिद्ररूप बांधव, म्हारो सहायी, म्हारी साथे जन्म्यो, म्हारी साथे वध्यो, वली परणवाना समयमां पण म्हारा पहेलां म्हारी स्त्रीने परण्यो, शुं घणुं तमारा आगल कहुं ? ए दारिद्रय म्हारा शरीरनी छायानी परे तथा पोतानी बांधेली कर्मप्रकृतिनी परे एक क्षण मात्र पण म्हारो केडो मूकतो नथी. म्हें धन उपार्जन करवा निमित्ते परदेश चालवाना समये एने घणो घणो वर्ज्यो तो पण ए म्हारी साथेज चाल्यो, म्हें गंगामां स्नान कर्युं तो पण एणे साथेज स्नान कर्युं, म्हे यमुना, नर्मदा संबंधि तीर्थो कर्यां तो एणे पण म्हारी साथेज तीर्थ कर्यां, माटे एना प्रभावथी परदेशमां घर घरने विषे लोकोनी आगल भिक्षा मागती वखते हुं तो सर्वने देखुं परंतु दारिद्रय बांधवना प्रतापथी हुं प्रत्यक्ष (प्रगट) छतां पण म्हने कोइ पण देखे

नहीं. यदुक्तम्-"दीसति जोगसिद्धा, अजनसिद्धा य केइ दीसंति। दारिद्दजोग सिद्धा, पासेवि ठिया न दीसति ॥ १ ॥ " पुनरपि-"भो दारिद्रय! नमस्तुभ्य, सिद्धोऽह तव दर्शनात्। अह सर्वं प्रपश्यामि, न मां पश्यति कश्चन ॥ २ ॥ " मतलब के योग साधीने सिद्ध थया ते पण नजरे देखाय छे, वली जे आंखोमां अजन करी अदृश्य थया एवा सिद्ध जे होय ते पण कोइएक प्रयोगथी प्रगट नजरे देखाय, परतु दारिद्र्यरूप योगे करीने जे सिद्ध थया ते पुरुष जो पासे ऊभा रह्या होय तो पण देखाय नहीं माटे हे दारिद्र्य! तुजने नमस्कार थाओ. जे हु तारा दर्शनथी सिद्धपुरुष थयो तेथी हु तो सर्वने देखु छु पण म्हने तो कोइ पण देखतो नथी, माटे हे स्वामिन्! ते दारिद्र्य बाधवना प्रसादथी हु परदेशने विषे घणो भम्यो, घणो उद्यम कर्यो, घणा शेठ साहुकारोनी चाकरी करी पण हु भाग्यहीन तेथी एक फूटी कोडी मात्र पण धन पाम्यो नहीं जेवो घरथी गयो हतो तेवोज घेर पाछो आव्यो तेथी म्हें हजी म्हारा घरमा प्रवेश न कर्यो तेनी पहेलां ज तेणे म्हारा घरमा प्रवेश कर्यो, तेना प्रतापथी अनार्यिका एवी जे म्हारी स्त्री ते क्रोध करी, मुसल लइने म्हारी सन्मुख मने मारवाने दोडी त्यारे म्हें जाण्यु के मगलिक करीने मुजने वधावे छे पण तेणे तो पासे आवीने एवा कठोर अने निष्ठुर वचन बोलवा माड्या अने कह्यु के हे निर्भाग्य-शिरोमणी! अरे जन्मदरिद्री! अरे निर्गुणनाथ! अरे ढोला! हु तुजने धन विना साक्षात् दारिद्री रूपने शु करुं! तु परदेशे गयो, तो पण काइ लाव्यो नहीं म्हारे पण रहारा दारिद्र्य रूप भाइना सहायथी " अन्न नास्त्युदक नास्ति, गृहे नास्ति युगन्धरौ। शाकमध्ये लवण नास्ति, तन्नास्ति यत्तु भुज्यते ॥ १ ॥ " अर्थात् घरमा खावाने अन्न पण नथी अने पीवाने पाणी पण नथी, जुवार पण नथी, शाकमां न्हाखवाने मीठु पण नथी एवु काइ पण घरमां नथी के जेथी तुजने

आदर करी घरमां वेसाडीने जमाडुं. घरमां तो एक दारिद्र्य लहके छे. वली ब्राह्मणी कहे छे—रे ढोला ! धनथीज जगतमां मानीता थाय छे, पण धन विना जगतमां कोइ कोइने पूछतुं नथी, यदुक्तम्—"धनैर्दुष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति, धनैरेव पापात्पुनर्निस्तरन्ति । धनिभ्यो विशिष्टो न लोकेऽपि कश्चित्, धनं प्रार्जयध्वं धनं प्रार्जयध्वम् ॥ १ ॥' धनथी हीन—कुलवालो पण उत्तम कुलवालो कहेवाय छे, वली धने करीने पापथकी निस्तार पामे, धनवान होय तेज जगतमां म्होटो कहेवाय माटे धन उपार्ज्जन करवानो उद्यम पुरुषने श्रेष्ठ छे. वली धन विना जीवतो थको पुरुष पण मडदा समान छे. यदुक्तम्—" धनमर्जय काकुत्स्थ ! धनमूलमिदं जगत् । अन्तरं नैव पश्यामि, निर्धनस्य मृतस्य च ॥ १ ॥" ज्यारे रामचंद्रजीने वनवास थयो त्यारे विचार्युं के वसिष्ट—ऋषिने नमस्कार करीने चालीए त्यारे ज्यां कदलीवनमां वसिष्ट ऋषि बेठा छे त्यां जइ रामचंद्रजीए नमस्कार कर्यो. परंतु वसिष्ट ऋषिए नेत्र उघाडीने सामुं पण जोयुं नहीं. कारण के रामचंद्रजीनी पासे ते वखते कांइ पण धन न हतुं. पछी ज्यारे लंका जीतीने चतुरंगिणी सेना लइ धनधान्य सहित पाछा आव्या ते वखते वसिष्ट ऋषि सात आठ पगलां स्हामा चाली आव्या, त्यारे रामचंद्रजी वोल्या के—त्हेज हुं रामचंद्र छुं. अने आ तेनुं तेज कदलीवन तथा तमे वसिष्टऋषि पण तेना तेज छो परंतु पहेलां हुं तमारी पासे आव्यो हतो त्यारे तो तमे नेत्र उघाडीने सामुं पण जोयुं न हतुं अने हमणा उठीने सात आठ पगलां स्हामा आव्या तेनुं शुं कारण ? वसिष्टजी वोल्या के 'हे काकुत्स्थ ! (रामचंद्र !) एक धननुं उपार्जन करो, आ जगतमां धनथी ज प्राणीओ शोभे छे, परंतु निर्धनने अने मडदाने कांइ पण अंतर देखातुं नथी ' तुं प्रथम आव्यो हतो त्यारे निर्धन हतो तेथी म्हें त्हारा स्हामुं न जोयुं अने हमणां तो तुं सर्व विभूति सहित छे माटे हुं स्हामो

आव्यो छुं वली स्त्री कहेवा लागी के हे मूर्ख ! धन विना हुं तने शु करु ? कह्युं छे के-" पुत्ता य सीसा य सम विभत्ता, रिसी य देवा य सम विभत्ता । मुक्खा तिरिक्खा य सम विभत्ता, मुया दरिद्दा य सम विभत्ता ॥ १ ॥ " पुत्र अने शिष्य ए बे बरोबर जाणवा, ऋषी अने देव ए बे बरोबर जाणवा, वली मूर्ख अने तिर्यंच ए बे समान जाणवा, तेमज मूवेला अने दरिद्री ए पण सरखाज जाणवा ' अरे भाग्यहीन ! श्रीवीरभगवाने वरसीदान आपीने सर्वना दारिद्र्यदु खनो विनाश कर्यो, ते वेलाए तु परदेश गयो ते व्हारे जेम द्राक्ष पाकवाना समये कागडानी चाच पाकी जाय तेनी पेरे थयु अथवा नदी तटे जवासाना झाड तुल्य तु थयो अथवा रात्रि दिवस मेघ वर्षता छतां पण पलाशवृक्षना पानडा त्रणज होय माटे रे अनिष्ट ! पापिष्ट ! रे पाडुरपृष्ट ! तु इहाथी चाल्यो जा, इत्यादिक निष्ठुर वचनोथी घणो निर्भ्रंछीने, गलहत्थो देइने म्हने घरथी बाहेर काढ्यो माटे ' आगे दारिद्र्य पाछे दारिद्र्य, डाबे जमणे पासि । पडियाणी मुज मारण माड्यो, तेणे हु आयो नासि ॥ १ ॥ ' स्वामिन् ! म्हारे आगल पण दारिद्र्य चाले छे, पाछल पण दारिद्र्य चाले छे अने बे बाजुए पण दारिद्र्य चाले छे एम म्हारे चारे बाजु दारिद्र्य चाल्यु आवे छे तेथी ब्राह्मणीए म्हने मारवा माड्यो, परतु हु नाशिने तमारी पासे आव्यो छु अने म्हें विचार्यु के श्रीवीरप्रभु अगम्यगतिवत छे, जो पण दीक्षा लीधी छे तो पण परमकृपालु छे, तेथी मुजने अवश्य काइक आपशे, एवु चिंतवीने प्रतीति पूर्वक निरधार करीने तमारी पासे आव्यो छु माटे म्हारा दारिद्र्यने चूरीने मनोरथ पूर्ण करो पण हे स्वामिन् ! एवु मनमां आणशो नहीं के म्हारा वर्षीदानने अवसरे सर्व लोक मनवाछित दान पामी गया अने तु काइ पण केम पाम्यो नहीं, एवो विचार आणशो

मा. यतः—" स्वामिन् ! कनकधाराभि—स्त्वयि सर्वत्र वर्षति । अभाग्यच्छत्रसंछन्ने, मयि नायान्ति विन्दवः ॥ १ ॥ " हे स्वामिन् ! तमे कनक रूप धाराथी सर्वत्र वरस्या पण म्हारा मस्तक ऊपरे अभाग्य रूप छत्र ढंकायुं हतुं तेथी एक विंदु मात्र पण म्हारे माथे पड्युं नही त्यारे म्हें एवुं विचार्युं के ' रे मन अप्पा खंति धर, चिंताजाल म पाड । फल तित्तोहिज पामीए, जित्तो लख्यो लिलाड ॥ १ ॥ ' एम चिंतवी वेसी रह्यो पण हे स्वामिन् ! एक तो तमारुं दान न पाम्यो ने वली तमारा दाननो व्यतिकर सांभलीने स्हामो मुजने म्हारी स्त्रीए घरथी काढी मूक्यो. कह्युं छे के ' त्वयि वर्षति पर्जन्ये, सर्वे पल्लविता द्रुमाः । अस्माकमर्कवृक्षाणां, पूर्वपत्रेषु संशयः ॥ १ ॥ '—स्वामिन् ! तमारा रूप मेघवर्षतां छतां सर्वजन रूप वृक्ष नवपल्लवयुक्त थयां अने म्हारा सरखा अर्क वृक्षोने पूर्वपत्रनो संशय थयो.

इत्यादि ललित पल्लवित वचन सांभलीने, कृपासागर भगवंत विचारवा लाग्या के हुं निर्ग्रंथ छुं, म्हारी पासे कांइ पण नथी अने ब्राह्मणने नहीं देवाथी प्रार्थना भंग थाय ते प्रार्थना भंग करवाथी लघुता थाय छे. यतः—" तणलहुयं तूस लहुयं, तणतुस लहुयं च पत्थणा लहुयं। तत्तोवि सो लहुओ, पत्थण भंगो कओ जेण ॥ १ ॥" सर्व थकी तृण लघु छे ते थकी तुष लघु छे अने तृण तथा तुष थकी पण प्रार्थना करवा वालो लघु जाणवो अने वली प्रार्थनानो भंग करवा वालो जे छे ते तो सर्व थकी लघु जाणवो. पुनरपि—" परपत्थणापवत्ति, मा जणणी जणउ एरिसं पुत्तं । उयरोवि मा धरिज्जओ, पत्थण भंगो कओ जेण ॥ १ ॥" पर पासे प्रार्थनानो करवा वालो एवो पुत्र हे माता ! तुं जणीश नहीं अने वली प्रार्थना भंग करनारने तो उदरने विषे पण धारण करीश मा. पुनरपि—" यान्तु यान्तु वत प्राणाः, अर्थिनि व्यर्थतां गते । पश्चादपि हि गन्तव्यं, क्व सार्थः पुनरीदृशः ॥ १ ॥ "—जाओ रे म्हारा

प्राण जे अर्थिप्राणी व्यर्थ घरथी जाय तेनी साथे तमे पण जाओ. केमके पाछल पण तमने कोइक दिवसे जावुं तो छेज तो एवो साथ वली तमोने मलवो मुस्केल छे माटे हमणाज जाओ इत्यादिक शिष्टा-चार आचारनो विचार जाणीने श्रीमहावीर देवे कृपा करी अरधु देव दुष्य वस्त्र फाडीने ब्राह्मणने दीधो विप्रने चीवर दीधाथी बीजा प्राणी-ओने एवु जणाव्यो के-' जा सत्ति ता देहु धन, इणपरि अक्खइ वीर। पितामित्र बाभण भणी, आधो दीधो चीर ॥ १ ॥ '-ज्यां सुधी घरमां संपत्ति होय त्या सुधी धन, चीवर, अने अन्नादिकनु दान देवु, एवु जणाववा प्रभुए पिताना मित्र ब्राह्मणने अरधु चीर आप्यो

ते ब्राह्मण अरधु चीर लइने पोताने घेर गयो तेने चीवर सहित घरना समीपे आवतो देखीने ब्राह्मणी हर्षित थइ थकी उठीने सन्मुख आवी, वे हाथ जोडी एवी रीते कहेवा लागी के प्राणनाथ ! हे मम जीवन ! हैयाना हार ! हे कात ! सुभग ! हु तमारी मेघनी परे बाट जोती हती अने जेम जल विना माछली टलवले छे तेम तमारा विना हु टलवली रही छु इत्यादिक मीठां मनोहर वचन रचना कथन पूर्वक अपूर्व रीते, घणी प्रीतिथी स्नान मज्जन करावी, भोजन पान तांबूल आपीने वली घणा सन्मान पूर्वक सुखशय्या शयन प्रमुख सुख उप-चार करीने स्त्री घणो प्रमोद पमाडवा लागी त्यार पछी ब्राह्मण ते वस्त्रनी दशीयो बधाववाने वास्ते तन्तुवाय पासे गयो तन्तुवाय पण ते वस्त्रने अणत्रुटथु जाणीने सोमविप्रने कहेवा लाग्यो के-' हे ब्राह्मण ! आ वस्त्रनो बीजो कटको लइ आव तो एने सांध्या थका ए लाख मूल्यनु थाशे तेथी त्हारा अने म्हारा बेहुना दारिद्र्यनो नाश थइ जशे ' त्यारे ते विप्र लोभथी पाछो फरीने श्रीवर्धमान-स्वामी पासे आव्यो, पण मनमां विचारवा लाग्यो के हु वारवार केवी रीते याचना करु, अति लोभ करवो पुरुषने युक्त नथी अने भगवान पण एवु जाणशे के

आ विप्र लोभी छे. एवुं जाणीने लज्जाथी मौन पणे रह्यो, पण मुखथी मांगे नहीं. यतः–" लज्जा वारेइ मुहं, असंपया भणई मागि रे मग्ग । दिन्नं मानकवाडं, देहित्ति मग्गिया वाणी ॥ १ ॥ " लज्जा छे ते मुखने वारवा लागी, अने असंपदा बोली के मांग रे मांग ! पण मानरूप कमाड देवराणा तेथी ' आपो ' एवी वाणी मुखथी न निकली. अने जाण्युं के क्यांइ पण खभा ऊपरथी वस्त्र पडी जाय तो उपाडी लइश ? ज्यारे भगवंतने दीक्षा लीधे एकवर्ष ने ऊपर एक मास थयो त्यां सुधी भगवाननी पाछलनी पाछल ते ब्राह्मण फरतो रह्यो, पछी एक दिवस ते देवदुष्य, भगवाननां खभा ऊपरथी वायराना गोटाथी उडीने उत्तरवाचाला गामनी पासे सुवर्णवालुका नदीना कांठे बोरडीना वृक्षनां कांटामां जइ पड्युं, तेने विप्र लइ चालतो थयो. भगवाने पण सिंहावलोकन दृष्टिथी देख्यो.[1]

कंटके लाग्युं तेथी भगवाने विचार्युं के ' म्हारी पछवाडे जे साधु स्वसंतानिक थाशे ते सर्व बहुल कषायी, कंटकी, कलहकारी प्रायः असमाधिकारक थाशे, मुंडा घणा थशे अने साधु थोडा थाशे ' एवुं जाणी वस्त्रने निर्ममत्वथी ग्रहण न कर्युं. हवे विप्र पोताना आत्माने धन्य कृतार्थ मानतो अने संपूर्ण मनोरथवंत थयो थको तुंनारा पासे बे खंड संधावी–तूणावीने ते देवदुष्य वेच्युं तेना लक्ष सोनैया आव्या. तेमांथी अर्द्धा तुंनाराने दीधा अने अर्द्धा पोते राख्या. बेहुनुं दारिद्र्य गयुं. अने ते जावज्जीव सुधी सुखी थया.

---

१ इहां कोइक तो कहे छे के ममत्वे करीने देख्यो, कोइक कहे छे के शुभ स्थानके पड्युं के अशुभ स्थानके पड्युं ते जोवाने माटे देख्यो. वली कोइक कहे छे के सहसात्कारे देख्युं, कोइक कहे छे के म्हारी पाछल म्हारा शिष्योने वस्त्रपात्र सुलभपणे मलशे के नहीं एवा कारणथी देख्युं.

चडकोशिक नागनो उपसर्ग अने तेने प्रतिबोध—

ते दिवसथी भगवान अचेलक थया अने बीजा त्रेवीश तीर्थंकरोना देवदुष्य वस्त्र जावज्जीव रह्यां हता केटलिक प्रतोमां वचला बावीश तीर्थंकरोना देवदुष्य जावज्जीव रह्या कह्या छे तेथी ते सचेलक जाणवा हवे श्रीमहावीर स्वामी बार वर्ष ऊपर साडा छ महीना छद्मस्थपणे रह्या कायाने वोसरावी, अने काइपण शुश्रूषा कर्या वगर विचरता रह्या तेमा जे काइ देवताना करेला, मनुष्यना करेला, तिर्यंचना करेला, अनुलोम अने प्रतिलोम एवा बे प्रकारना उपसर्ग थया नाटक देखाडवा आलिंगन करवा, इत्यादिक देवादिकोना करेला उपसर्ग ते सर्व अनुलोम उपसर्ग जाणवा अने देवादिकोए भय बताव्या, प्रहार कर्या, कूट्या, मार्या एवा उपसर्ग ते सर्व प्रतिलोम उपसर्ग जाणवा ए बन्ने प्रकारना उपसर्ग सर्व पोतानी खुशीथी सहन कर्या पण चारित्रथी लगार मात्र चलायमान थया नहीं, तेमज कोइ ऊपर रागद्वेष पण लाव्या नहीं, तथा कोइनी पासे दीन वचन पण बोल्या नहीं, तेमज कोइथी भय पण पाम्या नहीं, एवी रीते अनेक प्रकारना उपसर्ग सहन कर्या एकदा भगवान् उत्तरवाचाल सन्निवेशे जाता मार्गे वर्द्धमान गामे आव्या, त्या एक सुवर्णवालुका, बीजी रूपवालुका, ए बे नदीओ आवी, ते उतरी आगल चालता एक वक्रमार्ग अने बीजो सरल मार्ग, एवा बे मार्ग आव्या, त्यारे लोको बोल्या के सरल मार्गमा सर्पनो भय छे माटे जशो नहीं, तो पण भगवत वक्रमार्ग मूकीने सरल मार्गे चडकोशीया सर्पने प्रतिबोध देवा सारु चाल्या ते मार्गमा ' कनकखल ' नामा वनमा तापसनो आश्रम छे, त्या एक महा जोरावर घणो डशीलो ' चडकोशीयो ' सर्प रहे छे

चडकोशीया नागनी कथा—

कोइक गामना विषे बे साधु गुरु—चेला चोमासु रह्या हता,

ते एक दिवस मासखमणना पारणाने अर्थे वे जणा गोचरीए गया, त्यां वर्षाऋतुना लीधे घणा जीवोनी उत्पति थए छते मार्गमां गुरुना पग नीचे सूक्ष्म देडकी आवी, ते चंपाइ मरण पामी. त्यारे चेलाए कह्युं के महाराज ! तमारा पग नीचे देडकी आवी ते मरण पामी छे. एवुं सांभली गुरु बोल्या—घणी देडकी मरेली पडेल छे माटे बीजा कोइनो पग आववाथी मरण पामी हशे. त्यारे त्यां चेलो मौन रह्यो. वली गोचरी आलोवतां शिष्य बोल्यो के देडकीनो मिच्छामि दुक्कडं ल्यो. ते सांभली गुरुने रीस चढी अने चेलाने कहेवा लाग्यो के अरे ! ते देडकी तो प्रथमथी ज मरेली हती, म्हे तो मारी नथी, चेले घणुं कह्युं तो पण मान्युं नहीं. त्यारे चेले विचार्युं के सांजे पडिक्कमणामां आलोयण लेशे. गुरुए पण सांजे पडिक्कमणामां सर्व आलोयण लीधी, पण देडकीनी आलोयणा न लीधी. त्यारे चेले कह्युं के महाराज ! देडकीनी आलोयणा ल्यो. त्यारे पण गुरुए रोष करीने तेवोज जवाब आप्यो, फरी रात्रे संथारानी वेलाए कह्युं के महाराज ! देडकीनी आलोयणा ल्यो. एवुं सांभलतां गुरुने रोष चढ्यो तेथी हाथमां ओघानी डांडी लइ चेलाने मारवा दोड्यो, रातनी वेला हती तेथी चेलो नाशी गयो, गुरु तेनी पाछल दोड्या अने उपासराना थांभला साथे अथडाया तेथी गुरुनुं मस्तक फूटचुं. तेथी ते मरण पामी बीजे भवे ज्योतिषी देवता थयो. त्यांथी चवीने चंडकोशी नामे तापस थयो. तेने पांचसो शिष्य थया परंतु पोते घणो क्रोधी हतो तेथी एक दिवसे राजकुमारोने वाडीमां फूल लेतां देखीने हाथमां फरसी लइ तेमने मारवा दोडतां पग लपसी गयो तेथी मार्गमां एक अंध कूप हतो, तेमां पड्यो. पोताने फरसी वागी तेथी आर्त्तध्याने मरण पामीने तेज आश्रमना विषे चोथा भवे चंडकोशीओ सर्प्प थयो. जे कोइने देखे, तेने बाली भस्म करे छे, घणा तापसोने बाल्या, बीजा केटलाएक

नाशी गया लोके पण ए मार्गे जवानु छोडी दीधु, एक कोश प्रमाण भूमिमां रहेला जीव मात्रने बाली न्हाखे छे त्या ते सर्प्प कोइने रेवा देतो नथी ते सर्प्पना बिल ऊपर भगवत काउस्सग्गध्याने रह्या, ते देखी सर्प्पे क्रोध आणीने प्रभुने डख मार्यो, त्यारे प्रभुना पगमाथी दूध सरखु लोही मांस नीकल्यु, तेने देखी सर्पे विचार्युं के हु जेना स्हामु जोउ, तेने पण बाली भस्म करुं अने एने तो डख मार्यो तो पण धोळु लोही नीकल्यु माटे ए कोइ म्होटो पुरुष छे एम चिंतवीने भगवानना मुख सामु जोयुं त्यारे भगवान् बोल्या के 'अरे चडकोशिया ! बुज्झह बुज्झह (बुध्यस्व बुध्य स्व) तु नथी जाणतो ?' एवु केता थका ते सर्प्पने विचार उपन्यो के आवुं रूप म्हें क्याय दीठेल छे एटलामा मूर्च्छा आवी गइ अने जातिस्मरण ज्ञान उपन्यु त्यारे पाछलो भव दीठो पछी प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा देइ विनति करी के हे करुणासागर ! दुर्गति रूप कूपथी त्हमे मुजने ऊद्धर्यो पछी वैराग्य पामी पन्नर दिवसनु अनशन करी परोपकारार्थे ते सर्प्प पोताना बिल मांहे मुख राखी अने आखु शरीर बाहेर राखीने रह्यो पछी ते मार्गे दूध, दही, घृतनी वेचनारी अहिरणीओए नागराज सतुष्ट थयो एवु जाणी दूध, दही, घृत शर्करादिकथी सर्प्पने पूज्यो तेनी गधथी कीडीओ शरीर ऊपर चढी पछी सर्पे विचार्युं के हु म्हारा शरीरने फेरवीश तो कीडीयो मरी जशे एवु जाणी शरीर हलाव्यु नहीं कीडीओए ते सर्प्पने फोली चालणी सरखो कीधो, ते सर्प्प शुभ ध्याने मरण पामीने आठमे देवलोके देवता थयो प्रभु त्यांथी विचरता ऊत्तरवा चाल–सन्निवेशे पहोता अने नागसेन श्रावकने घेर परमान्नथी पारणु कर्युं, देवताए पचदिव्य प्रगट कर्यां

प्रभुने सुदष्ट्र नामा देवनो उपसर्ग—

त्यांथी विहार करीने भगवान श्वेताविका नगरीए गया, त्या परदेशी राजाए प्रभुनो महिमा कर्यो. त्यांथी विचरता थका भगवान

सुरभिपुरनगरना मार्गमां गंगा नदी आवी ते ऊतरवाने अर्थे घणा लोक सिद्धदत्त खारुआनी नावमां बेठा तेनी साथे प्रभु पण बेठा. एवामां घूवड बोल्यो. तेनुं शुकन जोइ क्षेमिल नामे निमित्तिओ बोल्यो के—हे लोको ! आज ' आपणने मरणांत कष्ट उपजशे. परंतु आ साधु महात्मा पुरुषना प्रभावथी जीवता रहीशुं—मरशुं नहीं.' एवामां भगवंते त्रिपृष्ठ वासुदेवना भवमां जे सिंहने विदार्यो हतो ते सिंह घणा भवभ्रमण करीने भुवनपति देवोमां 'सुदंष्ट्र' नामे नागकुमार देवता थयो ते अवधिज्ञानथी प्रभुने जोइ, पूर्व वैर संभारी त्यां आवीने नाव डूबाडवानो उपद्रव करवा लाग्यो. ते वखते नवा उपन्या एवा कंवल अने संवल नामे बे नागकुमार देवता तेणे आवीने एक देवताए तो नाव डूबती राखी अने बीजा देवताए पहेला सुदंष्ट्रदेवनी साथे लडाइ करी. तेमां सुदंष्ट्र हारी गयो. तेथी भगवान सुखे गंगा नदी उतर्या.

कंबल—संवलनी पूर्वभव संबंधि कथा—

मथुरा नगरीमां जिनदास नामे श्रावक रहे छे, तेनी साधुदासी नामे स्त्री ते पण श्राविका छे. ते बन्ने जणाए पांच अणुव्रतमां चतुष्पद जीवो राखवानो त्याग करेलो छे तेथी दूध, दही जे घरमां वापरवा सारुं जोइए ते एक अहीर पासेथी मूल्य आपीने वेचातुं लीए छे. तेना लीधे ते अहिरने अने शेठने मांहोमांहे प्रीति थइ. ते अहिर साथे लेवड—देवडनो संतोष व्रतमां राखेलो छे. हवे एक दिवस ते अहिरने घेर विवाह आव्यो त्यारे अहिरे शेठ पासेथी विवाहने माटे केटलिएक चीजो मांगी. शेठे पण तेने चंद्रवा प्रमुख सर्व उपकरण तेना मांगवा मुजब आप्या. तेथी तेनो विवाह घणो श्रीकार थयो. त्यारे ते अहिर खुशी थइने सरखी अवस्थावाला घणा रूपवंत एवा बे बाल—वृषभ लावीने शेठने घेर बलात्कारे बांधी, चाल्यो गयो. ते यद्यपि शेठने तो राखवानी इच्छा हती

नहीं, तो पण शेठे विचार्युं के पाछा आपीश तो ए बीजे क्याय वेचाशे त्यां ए बापडा दु खी थशे, बाध्या रहेशे, भार ताणशे, एवु विचारीने पोताने घेर राख्या, तेमने पुत्रनी पेरे फासु घास जल प्रमुख खवरावीने पोष्या तेना कवल अने सवल एवां नाम दीधा हवे शेठ पाखीने दिवसे पोसह करे, धर्मचर्चा करे, पुस्तक वाचे, ते वातो साभलता सांभलता ते वलदीया घणीज रूडी समजण वाला थया एवा भद्रिक परिणामि थया के शेठ ज्यारे उपवास करे त्यारे ते पण उपवास करे, तृणादिक चारो विलकुल खाय नहीं, एवी रीते शुभभावनायुक्त विचरे छे एक दिवस शेठ पोसहमा वेठा हता, एटलामा कोइ एक शेठनो मित्र आव्यो ते पुष्ट वृषभनु जोडलु देखी शेठने पूछ्या वगर पोताना रथमा जोडीने भडीरवनमा यक्षनी यात्राए लइ गयो मार्गमा घणा दोडाव्या तेथी ते बलदोनी नाडियो त्रूटी पडी पछी ते छानो आवीने पाछा शेठने घेर वांधी गयो पण तेओना हाडका भागी गया तेथी ते चारो पाणी त्यागी वेठा शेठे पोताना पुत्र जेवा वलदोने दु खी थयेला देखी घणो विपाद करीने तेओने अनशन कराव्यु, अने चार आहारना पच्चक्खाण करावी नवकार सभलाव्यु तेथी ते वलदीया शुभ ध्याने मरण पामीने नागकुमार देव थया तेओए अवधिज्ञानथी जोयु तेथी नावमा भगवानने उपसर्ग थतो जोई, तेमनो उपसर्ग मटाव्यो अने भगवान आगल नाटक गीतगान करी, पूजा सत्कार करी स्वस्थानके गया इति कवल-संवल दृष्टात

पुष्पनिमित्तियो अने गोशालानो वृत्तान्त—

एक दिवसे भगवान् विहार करता गगा नदी उतरता सूक्ष्म वेलु मांहे प्रतिविंवित पगलानी श्रेणीने विषे चक्र, ध्वज, अङ्कुश प्रमुख लक्षण थया एवामा पाछलथी कोइ एक पुष्प नामा सामुद्रिकशास्त्रनो

जाण आव्यो. तेणे मनमां चिंतव्युं के आ कोइ एक चक्रवर्त्ती थनारो जीव छे चक्रवर्त्ति विना एवा पग बीजानां न होय. ते हमणां एकाकी जाय छे माटे हुं जइ एनी सेवा करूं. पछी ते चरणानुसारे त्यां आव्यो अने भगवानने वस्त्र रहित दिगम्बररूपे देखीने विचारवा लाग्यो के हुं सामुद्रिकशास्त्र फोगट भण्यो छुं. जो एवा लक्षणनो धणी भिक्षुकरूपे एकाकी छे तो ए म्हारां पुस्तक खोटां छे–पाणीमां बोलवा लायक छे. एम चिंतवी पुस्तकने पाणीमां बोलवा लाग्यो, एटलामां इन्द्रमहाराजे ए वृत्तांत जाण्युं त्यारे त्यां आवीने प्रभुनी सेवा सांचवी. पुष्पनिमित्तिया आगल प्रभुनुं स्वरूप वर्णवी, शास्त्र पाणीमां बोलवा न दीधां, पछी भगवंतना गुणग्राम करी, इन्द्र स्वस्थानके गया. पुष्प पण इन्द्र पासेथी मणि कनकादिक धन पामी हर्ष पामतो पोताने स्थानके गयो. प्रभुए परोपकारार्थे गंगानदी उतरी विहार कीधो. गंगानदी उतरीने भगवान बीजे चोमासे राजगृही नगरीए नालंदा नामा पाडामां वणकरनी (तंतुवायकनी) शाला छे तेना एक देशने विषे खूणामां आज्ञा लइने रह्या अने त्यां प्रथम मासखमण कर्युं. अहींआ शरवणग्रामे मंखलीपुत्र सुभद्रानो अंगज, बहुल द्विजनी गोशालाने विषे उपन्यो छे ते माटे तेनुं नाम पण गोशालो राखेलो छे. ते अनुक्रमे भमतो भमतो भगवंत पासे आव्यो, भगवाने त्यां चार मासमां चार मासखमण करीने चार पारणा कर्यां. तेमां पहेला मासखमणने पारणे प्रभुने विजयशेठे क्षीरादिक विपुल भोजनथी पारणुं कराव्युं. त्यां देवताए पंच दिव्य प्रगट कर्यां. पछी ते सरस क्षीरादिक, कूरादिक, अने मोदकादिकनो आहार देखीने गोशालाए विचार्युं के एने घेर घेर व्होरावे छे, माटे हुं पण जूदो भिक्षाए फरीश, तो म्हारी पण मान्यता वधशे, त्यारे भगवंतने जेणे व्होराव्यो तेना पाडोसीने घरे गोशालो पण व्होरवा गयो, ते देखी पाडोसी हर्ष पाम्यो के म्हारे घरे भगवान् पधार्यां, तेथी उठी बेठो थयो.

पछी वांदीने कह्यु के हे महाराज! म्हारे घेर पारणो करो, त्यारे गोशालाए बे हाथ पसार्या गृहस्थे ऊनी ऊनी रसोइ पीरसी अने ऊचु माथुं करी जोवा लाग्यो के म्हारे घरे सोनैयानो वर्षाद थाय एम करतां वायस आवी माथे बेठो त्यारे मेडा ऊपरथी गोशालाना हाथ ऊपर एक बाइए देवता न्हाख्यो ते जोइ शेठे विचार्युं के पाडोसीने घेर तो सोनैयानो वर्षाद वरस्यो अने म्हारे घरे तो कोयला वरस्या, गोशालाना हाथ बल्या, त्याथी उदास थइ गोशालो निकल्यो हवे भगवानने बीजु पारणु नदे पकान्नादिकथी कराव्यु त्रीजे मासखमणे त्रीजु पारणु सुनदे परमान्नादिकथी कराव्यु त्या पण सर्वत्र पच दिव्य प्रगट थयां, ते जोइ गोशाले मनमां विचार्युं के "एना पासे कोई सारविद्या छे जेथी घरो घर सोनु वरसावे छे, ए विद्या हु पण शीखु तो म्हारी पण शोभा वधे" एम विचारी गोशालो बोल्यो हे भगवन्! हु आपनो शिष्य छु, एम कही भगवत साथे फरवा लाग्यो भगवाने त्याथी जइ चोथु पारणु कोल्लागसन्निवेशे वहुल नामा ब्राह्मणने घेर केवल खीरना भोजनथी कर्युं त्या पाच दिव्य प्रगट थया ए बीजु चोमासु जाणवु

पाछलथी गोशाले भगवानने दीठा नहीं, सर्व नगरमां फरी जोयु तो भगवान मल्या नहीं त्यारे सर्व उपकरण ब्राह्मणने आपी क्षुरमुड थइने चाल्यो पछी कोल्लागसन्निवेशे भगवानने देखी बोल्यो के आपनी दीक्षा मुजने हो, हु आपनो चेलो छु ए वात भगवाने पण मानी पछी गोशाला सहित भगवान विहार करी एक दिवसे स्वर्णखल ग्रामे चाल्या, मार्गमा कोइ गोवालीआने खीर पकावता देखी गोशालो बोल्यो, भगवन्! ए खीर थाशे ते खाइने जइशु माटे थोडीवार वेसो, त्यारे सिद्धार्थ बोल्यो ए खीरनु पात्र भांगशे पछी गोशालाए जइ गोवालीयाने कह्यु हांडी फुटी जशे. गोवालीयाए घणा यत्न कर्या तो पण हाडी

फूटी गइ त्यारे गोशालाए " जे थनार होय ते थायज." एवुं निर्धारी, हठ पकडी नियतवादीपणुं पडिवज्युं. त्यांथी भगवान विहार करी ब्राह्मण गाम गया. त्यां एक नंद अने बीजो उपनंद ए बे भाइना बे पाडा छे. तेमांथी भगवाने नंदना पाडामां पारणुं कर्युं. अने गोशालाने उपनंदने घेर वाशी सात–दिवसनी घेंस मली, तेथी कोपायमान थइने गोशालो बोल्यो के म्हारा धर्माचार्यना प्रभावथी त्हारुं घर बली भस्म थाओ. एवुं कहेतां ज व्यंतरदेवोए भगवाननुं महत्व राखवा माटे तेनुं घर बाली न्हांख्युं. त्रीजे चोमासे बे बे मासनी तपस्याए प्रभु चंपा-नगरीए रह्या. त्यांथी छेल्लुं पारणुं करी, कोल्लाग सन्निवेशे गया. त्यां शून्य गृहमां काउस्सग्ग रह्या. त्यां सिंह जजपुत चोधरीनो पुत्र विद्युन्मती दासी साथे क्रीडा करतो हतो. तेने रमतो देखीने गोशालो हस्यो, त्यारे तेणे गोशालाने कूट्यो. गोशालो प्रभुने कहेवा लाग्यो के म्हने मार मारे छे, माटे तमे एने कां वारता नथी ? प्रभु मौन छे तेथी सिद्धार्थ बोल्यो के आज पछी एवुं हास्यनुं काम म करीश. ए काम करीश तो एवांज फल पामीश, त्यार पछी प्रभु मोराकसन्निवेशे रमणीय नामा उद्यानमां काउस्सग्ग रह्या, त्यां कुंभार-शालामां श्रीपार्श्वनाथना शिष्य मुनिचन्द्रसूरि घणा शिष्यो साथे रह्या छे. ते साधुओने देखी गोशाले पूछ्युं–तमे कोण छो ? ते बोल्या अमे साधु छीए, गोशालो बोल्यो, तमे क्यां अने म्हारो धर्माचार्य क्यां ? त्यारे ते साधु बोल्या–जेवो तुं छे, तेवो त्हारो गुरु पण हशे. त्यारे गोशालो क्रुद्ध थइने बोल्यो के म्हारा धर्माचार्यना तपतेजना प्रभावथी तमारो आश्रम बली भस्म थाओ. त्यारे ते साधु बोल्या–एथी अमे कांइ डरता नथी. आश्रम बल्यो नहीं. त्यारे गोशाले आवीने प्रभुने कह्युं के स्वामिन् ! आगल जेवो तमारो प्रभाव हतो, तेवो हमणां नथी. तपतेज घटी गयुं जणाय छे. त्यारे सिद्धार्थे बोल्यो–अरे ! ए साधु-

ओने शाप लागे नहीं. ए साधु नहीं वले, पछी ते पार्श्वनाथना शिष्य मुनिचद्रसूरि जिनकल्पनी तुलना करता काउस्सग्गमा ऊभा छे तेने कुभारे चोर जाणीने मार मार्यो मुनिचद्रने अवधिज्ञान उपन्यु, मरण पामी देवलोक गया तेनो देवताओए महिमा कर्यो त्या अजवालुं थयु ते देखीने गोशालो बोल्यो, जुओ! साधुनो आश्रम जले छे, म्हारा गुरु साचा छे त्यारे सिद्धार्थ व्यतरो बोल्यो के—अरे कुपात्र! ए तो मुनिचद्र देवलोके गया तेनो महोत्सव थाय छे, ते सांभली गोशालो विलखो थयो ते पछी प्रभु चोरा नगरीए गया त्यां गोशालो गाममाहे हेरतो फरे त्यारे त्याना लोकोए हेरु जाणी प्रथम गोशालाने कूप जेवा खाडामांहे घाल्यो पछी भगवतने पण न्हाखवा लाग्या, एवामां उत्पल नामा विप्रनी व्हेन सोमजयंति नामे ते चारित्र त्यागीने सन्यासणी थइ छे, तेणे आवी भगवानने ओलखीने छोडाव्या. गोशालाने पण छोडी मूक्यो त्यार पछी त्याथी विहार करीने चोथु चोमासु स्वामी पृष्टचपाए चार मासी तप करीने रह्या त्या चोमासु सपूर्ण करी बाहेर पारणुं कर्युं

त्यांथी विहार करी भगवान कयंगलसन्निवेशे गया त्यां माघ मासे जागरणाना दिवसे दारिद्र अने स्थविर पाखडिणी नाचे छे, गाय छे तेनी गोशाले हासी करी, तेथी तेओए गोशालाने मार मार्यो वली प्रभुनो शिष्य जाणी छोडी मूक्यो त्याथी विहार करी भगवान सावत्थीनगरीए आवीने काउस्सग्गमा रह्या त्या पितृदत्त वणिकनी स्त्री श्रीभद्रा छे तेने पुत्र जीवता नथी, त्यारे शिवदत्त निमित्तिए तेने पूर्वे कह्यु हतु के—मृतक पुत्रनु मांस खीरमा राधीने कोइ भिक्षुकने खवरावजो तो तमारा पुत्र जीवता रहेशे, हवे ते स्त्रीने ज्यारे मृतक पुत्र थयो त्यारे तेना मासनी खीर तैयार करी, अने आ वखतेज गोशाले सिद्धार्थ व्यंतरने पूछ्यु के म्हने आज केवु भोजन मलशे ? सिद्धार्थे कह्यु त्हने आज मनुष्यनुं मास

मलशे, ते खाइश. पछी सिद्धार्थनुं वचन खोटुं करवा सारुं गोशालो श्रावक वाणीयाने घेर व्होरवा गयो, मनमां विचार्युं के वाणीयाने घेर मांस होय ज नहीं, एवुं जाणी त्यां खीर जमी, फरी पाछो आवी सिद्धार्थने कहेवा लाग्यो के हुं खीर जम्यो छुं. सिद्धार्थे कह्युं तुं मांस जम्यो छे, त्यारे गोशालाए गलामां आंगली घाली वमन कर्युं, मांहे मांसना कटका दीठा त्यारे गोशालो क्रोध करीने तेने घेर गयो, परंतु ते स्त्रीए आपना भयथी पहेलांज घरनुं बारणुं फेरवी न्हांख्युं हतुं तेथी गोशालाने घर लाधुं नहीं त्यारे कहेवा लाग्यो के म्हारा स्वामीना तपना प्रभावथी तमारो पाडो वली भस्म थाओ, तेथी पाडो बल्यो. त्यांथी भगवान दरिद्र सन्निवेशनी बाहेर काउस्सग्गे रह्या, त्यां पंथीओए भगवानना पग पासे आग बाली तो पण भगवान किंचिन्मात्र सरक्या नहीं. भगवानना पग बलता देखीने गोशालो नाशी गयो. त्यांथी प्रभु गलगामे जइ वासुदेवने देहरे काउस्सग्गे रह्या. त्यां गोशालो आंख्यो काढीने बालकोने बीवरावबा लाग्यो त्यारे लोकोए मार्यो, कूट्यो, वार्यो, भगवाननो शिष्य जाणी छोडी मूक्यो. त्यांथी विहार करीने भगवान आवर्त्त गाममां बलदेवनां मंदिरने विषे काउस्सग्गे रह्या, त्यां गोशालाए छोकराओने बीवरावबा सारुं म्होढुं मरडी बताव्युं, तेथी छोकरा सर्व भय पामिने, पोताना माता पितानी आगल कहेवा लाग्या. त्यारे तेओना माता पिता त्यां आवीने कहेवा लाग्या के आ चेलाने शुं मारवो? एना गुरुनेज मारो एटले फरी चेलाने आवा मार्गे चालवानो उपदेश करशे, एवुं कहीने जेटलामां भगवानने मारवा तैयार थया छे तेटलामां तो बलदेवनी मूर्त्तिए हल लइने लोकोने बीवराव्या. तेथी सर्व लोक भगवानने नमवा लाग्या. पछी त्यांथी विहार करी घणा क्लिष्ट कर्मोनी निर्जरा करवाने अर्थे भगवान लाट देशे गया, त्यां अनार्य लोकोए घणाज उपद्रव कर्या, ते प्रभुए शांतिथी सहन कर्या. त्यांथी पूरणकलश

नाम अनार्य गामे जता भगवानने मार्गमां बे चोर मल्या ते भगवा-
नने देखी अपशुकन थया एवु मानीने खड्ग लइ मारवा दोड्या. तेने
इन्द्र महाराजे वज्रथी मारी न्हाख्या (केटलिक प्रतोमा इन्द्र महाराजे ते
चोरोनां पग थम्भ्या तेथी ते वृक्षनी पेरे त्याज ऊभा रह्या एम लखेलुं छे)
एवी रीते उपसर्ग निवारण थयो पछी प्रभु चोरांगे आव्या त्या माडवे धान
रधातु देखी गोशालो नीचो थइ जोवा लाग्यो तेने लोकोए चोर जाणी
मार्यो, गोशालो क्रोध करी बोल्यो के म्हारा स्वामीना तप बले तमारो
मडप बलजो, तो तेमज थयु त्यार पछी भगवत हरिवृक्ष नीचे काउ-
स्सग्गे रह्या, त्या कोइ पथीए आगल भूमिका बाली हती तेमां गोशा
लाना पग बल्या त्यारे त्यांथी गोशालो भाग्यो त्यार पछी पाचमु
चोमासु प्रभु भद्रिकानगरीए रह्या. त्या चोमासी तप प्रभुए कीधु ए
पाचमु चोमासु चार मासी तपनु जाणवु

पछी पारणु करी त्याथी भगवान कुदिक सन्निवेशे गया, त्या
लोकोए चोर जाणीने पकड्या पछी श्रीपार्श्वनाथजीनी एक विजया, अने
बीजी प्रगल्भा ए बे साध्वियो परिव्राजिकणी थयेली छे तेमणे छोडाव्या
अहीं गोशाले जाण्यु के एनी पछवाडे फरवाथी घणा दु ख सहन करवा
पडे छे, एवुं विचारी भगवतथी जूदो विचरवा लाग्यो मार्गमा जाता
पाचसौ चोर मल्या, ते मामो मामो कहीने, गोशालानी खाध ऊपर चढी
आगल पाछल फेरववा लाग्या, तेथी दु ख पाम्यो वली बीजे पण ज्या
जाय त्या तोफान करे, त्यारे लोक मार मारे तेथी गोशालाए विचार्युं
के भगवत साथेज रहेवु भलु छे, एवु जाणी भगवानने शोधवा लाग्यो
भगवत विशाला नगरिए गया, त्या लोहकारनी शालामा काउ-
स्सग्गे रह्या, लोहार पण छ महीनाथी आजारी (रोगी) हतो ते
पण ते दिवसे साजो थयो छे, तेथी लोह घडवाना उपकरण लइने आव्यो,
प्रभुने मुडा देखी अप्रमगलिक थयु जाणी घण लइने मारवा उठ्यो,

एटलामां इंद्रे अवधिज्ञानथी जाणी, त्यां आवी, लोहारने निवार्यो. (कोइक स्थानके इन्द्र महाराजे लोहारने तेहज घणथी मारी न्हाख्यो, एम पण लखेलुं छे.) पछी त्यांथी भगवान ग्रामाक सन्निवेशे आव्या, वनमांहे विभेलेक यक्षे प्रभुनो महिमा कर्यो. त्यांथी शालिशीर्ष ग्रामनी बाहेर आवी काउस्सग्गे रह्या. ते वखते माघ मासनी ऋतुं हती तेथी अत्यंत टाड पडती हती. ए वखते भगवाने शीत उपसर्ग सहन कर्यो.

प्रभुने कटपूतना देवीनो थयेल उपसर्ग—

त्रिपृष्ट–वासुदेवना भवमां भगवाननी अपमानिती स्त्री हती ते स्त्री अनेक भव भमती थकी ते वखते 'कटपूतना' नामा व्यंतरी थयेली छे, भगवानने देखी तेने द्वेष उपन्यो. तेथी तापसणीनुं रूप करी, पोतानी जटा मांहे पाणी भरीने भगवानना शरीर ऊपर छांटयुं. घणो कठण शीत उपसर्ग कर्यो. एक तो शीयालानी ऋतु हती, तेमां वली व्यंतरिए मेघवृष्टि करी, घणो ठंडो पवन विकूर्व्यो. एवा एवा विकट उपसर्ग कर्या, ए सर्व प्रमाण विनानां पूर्वकृतकर्म प्रभुनां हतां ते अत्रे आवी नड्यां, तेने कठण उपसर्ग सहन करीने दूर कर्यां. व्यंतरीनां उपसर्गथी प्रभु अडग रह्या. एवा धैर्यवंत प्रभुने जाणी पोतानो अपराध खमावीने व्यंतरी स्वस्थानके गइ. अने त्यां शीतवेदना सहन करतां थकां भगवंतने छट्ठना तपे यथार्थ लोकावधि ज्ञान उपन्युं.

गोशालो फरी प्रभुने आवी मल्यो—

त्यांथी भगवाने फरी छट्ठुं चोमासुं भद्रिका नगरीए कर्युं, त्यां चार महीना सुधी अनेक प्रकारना दुःसह अभिग्रह कर्या. अहीं छ महीना बाहेर भटकीने गोशालो पण फरी आवी प्रभुने मल्यो. हवे चोमासुं पुरुं थया पछी शेषकाल आठ महीना सुधी भगवान मगधदेशमां विचर्या. ते आठ महीनामां भगवानने कोइ पण उपसर्ग थयो नहीं. त्यार पछी सातमुं

चोमासु आलंभिका नगरीनी वाहिर देवकुले चारमासी तप करीने रह्या. त्या गोशालाए बलदेवनी प्रतिमाना मुखमा लिंग धर्युं, ते लोके दीठुं, त्यारे गोशालाने मार मार्यो (कोइक प्रतमा बलदेवनी मूर्त्ति ऊपर पुरुषचिन्ह राखीने सूतो तेथी पूजारीए मार मार्यो एम पण लखेलु छे)

त्यांथी विहार करी प्रभु मर्द्दनग्रामे वासुदेवना दहेरे काउस्सग्गमां रह्या अहीं पण गोशालाए मूर्त्ति ऊपर पुरुषचिन्ह धर्युं तेथी मार खाधो पछी प्रभु उन्नागगामे जतां रस्तामा कोइ एक नवपरिणीतवधूने तेडी जाय छे तेमां वरनां दांत बहार निकलेला म्होटा हता अने वहु काणी हती, ते जोइ गोशालो हसीने बोल्यो के आ–तो दैवे ठीक सरखी जोड मेलवी आपी छे, तेणे गोशालाने मार मारीने वशजालमा न्हांखी दीधो एक दिन विचरता थका भगवान पुरिमताल नगरनी वाहेर शकटमुख उद्यानमां काउस्सग्गे रह्या, ते वखत ते नगरनो वग्गुर नामा शेठ तेनी सुभद्रा नामे भार्या ते वेहु जणे पुत्र थवा सारु ओगणीसमा तीर्थङ्कर श्रीमल्लीनाथजीनी मानता करी हती, ते ज्यारे पुत्र थयो त्यारे उद्यानमा श्रीमल्लीनाथजीनुं नवुं मंदिर करावीने त्या नित्यपूजा करे छे जे वखते शेठ स्त्री सहित पूजा करवा आव्यो छे ते वखते भगवाननी आगल इन्द्रमहाराज वेठा छे तेणे भगवाननो महिमा करवा माटे शेठने कह्यु के— शेठ ! ' जेनी तु पूजा करे छे ते हु तुजने प्रत्यक्ष देखाडु ' एवुं कही शेठने तेडी भगवानने पगे लगाड्यो शेठे पण भाव सहित भगवानने पूजीने पछी श्रीमल्लीनाथजीनी पूजा करी त्यार पछी आठमु चोमासु भगवाने राजगृही नगरीमां कर्युं त्या चार मास पर्यन्त चोमासी तप कर्युं, पछी चोमासी तपनु पारणु वाहेर जई कर्युं

अनार्यदेशमा प्रभुनो विहार—

चोमासा पछी प्रभु अनार्यदेशमा गया, त्यां विचरता थका

भगवाने घणा घणा कठण उपसर्ग सहन कर्या अने नवमुं चोमासुं पण अनार्यदेशमां ज व्यतीत कर्युं. ते वली चारमासी तप सहित कर्युं. वली त्यां प्रभुने रहेवाने जग्या पण मली नहीं, तेथी विचरताज रह्या. वली पाछल पण भगवान बे महिना सुधी अनार्यदेशमांज तप सहित विचर्या. ते पण आहार विनानुं बे मासी तप थयुं. पछी अनार्यदेशमांथी विहार करीने सिद्धार्थगामथी कूर्मगामे जतां मार्गमां एक तलनुं झाड ऊभुं देखीने गोशाले भगवानने पूछ्युं के— 'आ थंभ थशे के नहीं थाय?' भगवाने कह्युं ए तिलनां फूल सात छे तेना जीव मरण पामीने एक सांकलीमां (शींगमां) तलपणे उपजशे. ते सांभली गोशाले भगवाननुं वचन झुंठुं करवा सारुं ते झाडने उखेडीने फेंकी दीधुं. त्यारे निकट रहेला व्यंतर देवताए चिंतव्युं के भगवाननुं वचन झुंठुं म थाओ, एवुं जाणी वर्षाद वरसाव्यो. पछी गायना खुरथी ते तलनुं झाड चंपाणुं तेथी धरतीमां पेठी थिर थयुं अने वर्षादनां योगे पाछुं ऊभुं थयुं. भगवान कूर्मगाम गया, त्यां एक वेश्यायन नामा तापस छे तेनुं नाम वेश्यायन केम पड्युं? तेनी कथा कहे छे—

वेश्यायन तापसनी कथा—

राजग्रही नगरी अने चंपानगरी ए बेनी वचमां गूर्वर नामा एक गाम छे तेमां कोशंबी नामे एक कुटुंबी रहे छे, ते गूर्वर गामनी पासे वली एक बीजुं गाम छे, ते गामनी बाहेर कोइएक राजानी फोज आवी पडी तेथी गामनां लोक सर्व नाशी गया. तेमां एक स्त्री पोताना पुत्र सहित भागती थकी जाय छे. ते स्त्रीने मार्गमां चोर लोकोए पकडी लीधी अने बालक गूर्वरगामने बाहेर पड्यो रह्यो, तेने कोशंबी नामा कुटुंबीए बाहेर भमतो देखीने उपाडी लीधो, ते कुटुंबीने पुत्र हतो नहीं माटे तेने पुत्रनी परे राखीने म्होटो कर्यो. अने ते छोकरानी माताने

चोर लोकोए जइ चंपानगरीमा कोइ वेश्यानी पासे वेची तेथी ते वेश्यानो धधो करवा लागी पछी अनुक्रमे ते छोकरो ज्यारे म्होटो थयो त्यारे एक दिवसे चपानगरीमां व्यापार करवाने अर्थे आव्यो त्या पोतानी माता जे वेश्यानो धधो करे छे, तेनी साथे अजाणपणे भोग भोगववा लाग्यो एक दिवस तेनी कुलदेवी गाय अने वाछडानु रूप करीने रस्तामां आवी बेठी, एटलामां ते छोकरो पण वेश्याने घेर जाय छे तेणे रस्तामा वाछडाना पूछ ऊपर पग दीधो त्यारे वाछडो बोल्यो जूओ माताजी! आ म्हारा पूछ ऊपर पग आपीने चाल्यो जाय छे, पण रस्तो देखतो नथी त्यारे गाय बोली के बेटा ! तु एनु नाम लइश नहीं, एतो पोतानी सगी माता साथे भोग करता पण कांइ डरतो नथी तो वली त्हारु शु सांभलशे ? ए वात सांभली छोकरो चमक्यो. पछी सर्व हकीकत कुलदेवीए कही ते साभलीने तापस थयो लोकोए तेनु ' वेश्यायनऋषि ' नाम आप्यु ते झाडमा ऊधे मुखे लटकतो नीचे अग्निकुड कर्यो छे तेमां तापे छे तेने तेजोलेश्या उपजी छे एवामां त्यांथी भगवान चाल्या जाय छे, पछवाडे गोशालो पण चाल्यो जाय छे ते वखते वेश्यायन पोतानी जटाजूटमाथी जूओ निकलीने जमीन ऊपर पडी छे तेने उपाडीने पाछी पोतानी जटामा मूके छे ते जोइने गोशालो बोल्यो–अरे ! तु तो केवल जूनोज सय्यातर छे के तापसमुनि ? एवु हास्यनु वचन बे–त्रणवार बोल्यो एटले वेश्यायनने क्रोध आव्यो तेथी गोशाला ऊपर तेजोलेश्या मूकी ते जोइ भगवानने करुणा आवी त्यारे भगवाने तेनी सामे शीतलेश्या मूकी तेथी गोशालो बल्यो नहीं तापसे पण भगवाननो प्रताप जाणी प्रभुने खमाव्या पछी गोशालाए भगवानने पूछ्यु के तेजोलेश्या केम प्राप्त थाय तेनो उपाय बतावो ? त्यारे भगवान बोल्या के बेलानी तपस्या करे एटले छट्ठ करीने पारणे एक मुट्ठी अडदना बाकुला खाइने तेना ऊपर एक पसलीभर उष्ण-

पाणी पीये, सूर्य स्हामो ऊभो रहे, ए रीते छ महीना सुधी करे तो छेवट तेजोलेश्या पुरुषने उपजे. (केटलाएक कहे छे के सिद्धार्थ व्यंतरे ए विधि कह्यो छे.) गोशाले पण ए सामान्य विधि धारण करी लीधी. हवे भगवान कूर्मगामथी सिद्धार्थपुरे आवतां रस्तामां पूर्वे कहेला तलना झाडने उगेलुं स्तंभरूप देखी तेने गोशाले विदार्युं, तेमां सात पुंज तल दीठा त्यारे सर्व सत्य मानीने गोशाले विचार्युं के 'जे थवा वालुं होय ते अवश्य थाय' एवी रीते मानी लइने निश्चयवादी थयो. ए मत निरधार करी लीधो. त्यार पछी गोशालो भगवानथी जूदो रह्यो, अने सावत्थीनगरीए आवी तेजोलेश्या साधी ते पण सिद्ध थइ, तथा दिशाचरोनी पासेथी अष्टांग निमित्त शीख्यो. ते जिन नही एटले तीर्थंकर न हतो, तो पण लोकोने कहेके 'हुं तीर्थंकर छुं' एम फोगट तीर्थंकर नाम धरावतो पोतानी सिद्धाइ लोकोनी आगल देखाडतो थको भगवानथी न्यारो सावत्थीनगरीमां फरे छे. एवामां भगवान पण विचरता विचरता दशमुं चोमासुं सावत्थी नगरीमां आवीने रह्या, अने त्यां अनेक प्रकारनां तप कर्यां.

प्रभुने संगमदेवनो थयेल उपसर्ग—

'दढभूमि बहु मिच्छा, पेढालुज्जाणमागओ भयवं ।
पोलास चेइयंमि, ठि एगरायं महापडिमं ॥ १ ॥
सक्कोय देवराया, सभागओ भणइ हरिसीउ वयणं ।
तिन्निवि लोग समत्था, जिणवीरं नमणं चालेउं ॥ २ ॥
सामाणिय संगमओ, देवो सक्कस्स सो अमरिसेण ।
अह आगओ तुरंतो, मिच्छाद्दिट्ठि पडिनिविट्ठोय ॥ ३ ॥"

चोमासो पूरो थया पछी भगवान दढ एटले कठणभूमिने विषे बहु म्लेच्छ ज्यां वसे छे एवा म्लेच्छना देशमां गया, त्यां भगवानने कूतरा प्रमुखे करड्या, एवा बीजा पण अनेक प्रकारना कठण उपसर्ग

थया ते सर्व सहन कर्या पछी एक दिवस भगवान पेढालनामा ग्रामना उद्यानमा पोलास नामा कोइ एक देवनो चैत्य छे तेने विषे अट्ठमतप सहित एक रात्रि महाप्रतिमाए रह्या. एवामा शक्रेन्द्र देवताओनो राजा ते पोतानी सभाने विषे रह्यो भगवानना धीरपणानी प्रशसा करे छे के ' जो त्रण लोक भेगा थाय तो पण श्रीवीरप्रभुने चलाववाने कोई समर्थ थाय नहीं, एवु प्रभुनुं सत्त्व छे' एवु इन्द्रमहाराजनु वचन सर्व देवताए सत्य करी मान्यु परतु एक सगम नामे सामानिक देव मिथ्यादृष्टि अभव्यजातिनो छे तेणे अमर्ष आणीने विचार्यु के मनुष्यने चलाववु–डगाववुं ए काइ म्होटी वात नथी एवु चिंतवी इन्द्रमहाराज पासे बोल्यो के ' हु एक क्षणवारमा चलावी आवु ' एवुं कही इन्द्रनां वचन अणमानतो थको चलाववानी प्रतिज्ञा करीने तुरत प्रभु पासे आव्यो तेणे आवीने एक रात्रिमा म्होटा वीश उपसर्ग प्रभुने कर्या प्रथम धूल उडावी धूलनो वरसाद करीने प्रभुनां श्वासोश्वास रूध्या बीजो वज्रना जेवी मुखवाली कीडीओ विकूर्वीने प्रभुना शरीरने चुटाव्यु–करडाव्यु, अने चालणी जेवुं शरीर कर्यु त्रीजु वज्रना जेवा मुखवाला डास, मच्छर विकूर्वीने प्रभुना शरीरने करडाव्यां चोथुं धीमेल कीडीओ बनावीने चुटाव्यु पाचमु वींछी बनावीने शरीरने करडाव्यो छट्ठु सर्प्पना रूप करीने डसाव्यु सातमु नोलीयानां रूप बनावीने मुख अने नखथी शरीरने विदारण कराव्यु आठमु ऊदरोना रूप बनावीने शरीरने करडाव्यु नवमु हाथी अने हाथीनियोना रूप करीने शूढथी ऊचा उछाल्या दशमु दात अने पगथी शरीर मर्दन एटले शरीरने कचराव्यु अगीआरमु पिशाचोना रूप बनावीने अटट्टहास्य करी व्हीवराव्या बारमु सिंहनु रूप करी नख मार्या, शरीर फाड्यु तेरमु सिद्धार्थ पिता तथा त्रिशला मातानां रूप करीने विलाप करतो बोल्यो के–हे पुत्र ! अमे त्हारा माता पिता

आव्यां छियें माटे तुं दुःख देखीश मा, अमारी साथे आव. अमो तने सुख करी आपीशुं. चौदमुं तीक्ष्ण चांचवालां पंखीनां रूप विकुर्व्वीने प्रभुना कान अने मुखनुं मांस खवराव्युं. पन्नरमुं चांडालनां रूप करीने तर्जना करी. सोलमुं लाकडाना कटका वाली करीने वेहु पग ऊपर हांडी चडावी ऊपर खीर रांधी, अग्निथी वाल्या. सत्तरमुं प्रचंड वायु विकु-र्व्वीने भगवंतने ऊंचा उछालीने पाछा नीचे जमीन ऊपर पटकी दीधा. अढारमुं कलिकाल वायु विकुर्व्वीने ते वायुवडे भगवानने चक्रनी परे भमाड्या. ओगणीशमुं हजार भार प्रमाण लोखंडनो गोलो वनावीने भगवानना मस्तक ऊपर न्हांख्यो, तेणे करी भगवान केड सुधी, (केट-लिक प्रतोमां ढींचण सुधी) भूमिमांहे पेसी गया. ए उपसर्गथी जो वीजो कोइ गमे तेवो वलवान होय तो पण चूर्ण थइ जाय, पण आ तो तीर्थंकरनुं शरीर छे तेने कांइ पण थयुं नहीं. वीशमुं रातनी वखते दिवस करी देखाड्यो. अने वोल्यो के–हे देवार्य ! प्रभात थयुं छे माटे हवे विहार करो, गोचरी जाओ, ते वखते भगवाने अवधिज्ञानथी रात्रि जाणीने विचार्युं के ए देवकृत चरित्र छे. वली संगमाए देवतानी ऋद्धि देखाडी देवांगनानां रूप करी हावभाव देखाडी अनुकूल उपसर्ग कर्या. अने वली वोल्यो के–तमोने जोइए ते वर मांगो. जो स्वर्ग मांगो तो स्वर्ग आपुं, एवुं कह्युं तो पण कोइ रीते भगवान लगार मात्र डग्या नहीं. चलायमान थया नहीं. एम महा विकट एवा वीश उपसर्ग एक रात्रिमां संगमे कर्या. पछी ज्यारे भगवान गाममां गोचरी करवा जाय त्यारे ते घरनो आहार अशुद्ध करी आपे. जे भगवानने लेवो कल्पे नहीं, एवो करी न्हांखे. तथा हरहमेश गाममांथी चोरी करीने ते चीज भगवान पासे मूकी जाय, तेथी लोक भगवानने मार मारे, कलंक चढावे. वली भगवाननो चेलो वनीने गाममां कोइ कोइ लोकोनां छिद्र जोवा जाय, ज्यारे लोक पूछे के तुं शावास्ते अहीं आडुं अवलुं

जोयां करे छे त्यारे तेने कहे के म्हारो गुरु रात्रिए चोरी करवा आवशे ते माटे हु आगलथी जोइ राखु छु ते साभली लोक आवीने भगवानने मार मारे, एवो उपसर्ग थयेलो जोइने भगवाने अभिग्रह कर्यो के ज्या सुधी आ उपसर्ग मने थाय छे त्या सुधी म्हारे आहार–पाणी लेवो नहीं वली ते सगमो केटलिएक गामनी स्त्रीयो भगवान साथे मलती छे, एवु लोक माने तेवु करी देखाडे तेवु छता पण त्या भगवान एकांत स्थाने रह्या एवा छ महीना सुधी उपसर्ग कर्या तो पण इन्द्रमहाराजे तेने उपसर्ग करताने वार्यो नहीं केमके इन्द्रमहाराजे एवु विचार्यु के हु एने वारीश तो ए कहेशे के–हुतो भगवतने चलायमान करत पण शु करु तमे मने वर्जी दीधो तेथी लाचार थयो, एवो अपवाद टालवा सारू इन्द्रे तेने काइ पण कह्यु नहीं तो पण ज्यां सुधी एणे उपद्रव कर्या त्या सुधी इन्द्रे श्वास लीधो नहीं, मनमा घणोज उदास रह्यो बीजा पण सर्व देव–देवीयो शोकमा निस्तेज थकां बेसी रह्या एम करता छ महीनानी अते ते सगमो देवता पोतानी मेले पोतेज हार खाइने बोल्यो, के–हे आर्य ! तमे सुखेथी गोचरी करो हु हवे बिलकुल उपसर्ग करीश नहीं त्यारे भगवाने कह्यु के–' हु म्हारी इच्छाए गोचरी जइश कोइना कहेवाथी जवानो नथी ' अते हारीने सगमो स्वर्गमा गयो, इन्द्रमहाराजे तेनु मुख पण जोयु नहीं लाकडीयोथी कुटावी मार मराव्यो ने स्वर्गमाथी काढी मूक्यो ते स्वर्गथी निकलीने पोतानी देवागनाओ साथे मेरुपर्वतनी चूलिकाए आवी रह्यो एनु एक सागरोपमनु आयुष्य छे अने ए अभव्य जीवनी जाति छे, एवुं कहेवाय छे एम प्रभुने दशमा वर्षने विषे घणा उपसर्ग थया पछी प्रभुए छमासी तपनु पारणु वज्रगाममा गोपालकने घेर जइ खीरना भोजनथी कर्युं (घणी प्रतोमा गोकुलने विषे वत्सपाली नामे वृद्ध स्त्रीये परमान्ने पारणुं कराव्यु कह्यु छे) त्या पाच दिव्य प्रगट थया वली चोसठ इन्द्रोए तथा

देवोए आवीने प्रभुने सुखशाता पूछी, सावत्थी नगरीमां शक्रेन्द्रे यक्षप्रतिमामां प्रवेश करीने प्रभुने वांद्या, लोकोए देखीने भगवाननो घणो महिमा कर्यो.

जीर्णसेठ अने चन्दनवालानो अधिकार—

अगीआरमुं चोमासुं भगवाने विशाला नगरीमां कर्युं. त्यां जीर्णशेठे भावना भावी के—भगवन्! 'भातपाणीनो लाभ देजो' एवी रीते चार महीनां पर्यंत भावना भावी तो पण मिथ्यात्वी पूरणशेठे दासीने हाथे अडद्ना बाकुला आप्या ते लइने भगवाने तेने घेर पारणुं कर्युं. त्यां पंचदिव्य प्रगट थयां त्यारे सर्व लोक पूरणशेठने धन्य छे धन्य छे एम कहेवा लाग्या. अने जीर्णशेठे जाण्युं के हुं भाग्यहीण छुं तेथी म्हारे एवो योग क्यांथी मले, एम पश्चात्ताप करतो रह्यो. पछी केटलेक दिवसे केवली भगवान ते गाममां पधार्या. त्यारे राजा प्रमुखे पूछ्युं के—म्हारा नगरमां भाग्यशाली कोण छे? केवली बोल्या के जीर्णशेठ भाग्यशाली छे. राजाए पुछ्युं भगवानने दान तो पूरणशेठे दीधुं छे? केवली बोल्या एणे भाव विना दान दीधुं छे, माटे तेने द्रव्यथी लाभ थयो छे. अने जीर्णशेठे भावथी दान दीधुं छे माटे तेणे बारमा देवलोकनुं आयुष्य बांध्युं छे. भगवान त्यांथी विहार करीने सुसमारपुरे आवी प्रतिमापणे काउस्सग्गे रह्या ते वखते चमरेन्द्रनुं सौधर्म देवलोके जावुं थयुं छे अने ते चमरेन्द्रे प्रभुनुं शरण लीधुं छे. ए अधिकार दश अच्छेरामां सविस्तर आवी गयेल छे माटे अत्रे लखेल नथी. त्यार पछी अनुक्रमे चंदनबालाए प्रभुने पडिलाभ्या छे एटले भगवंते कांइक कर्म शेष रह्यां जाणी कोशंबीनगरीने विषे पोषवदि एकमना दिवसे पोतानी इच्छाथी एवो अभिग्रह लीधो के " १—द्रव्यथी तो सूपडानां खूणामां अडद्नां बाकुला राखेला होय. २—क्षेत्रथी एक पग घरनी डेलीनी मांहेली कोरे होय अने एक पग डेलीनी बाहेर रह्यो होय. ३—कालथी

सर्व भिक्षुक लोक भिक्षा मांगी जाय ते पछी ४–भावथी राजानी पुत्री होय परतु दासपणु पामेली होय. ५–माथु मुडेलु होय. ६–जेनां पगमां बेडीयो पडेली होय ७–अट्ठम तप करेल होय अने वली रुदन करती बेठी होय एवी स्त्री जो बे पहोर दिवस चढे मध्यान्ह पछी भिक्षा आपे तो म्हारे पारणो करवो " एवो अभिग्रह करीने श्रीवीरभगवान् गोचरीए नित्य भ्रमण करे, पण कोइ ठेकाणे एवो योग बने नहीं, राजाना मंत्रीश्वर प्रमुखे अनेक उपाय कर्या पण कोइ रीते प्रभुनो अभिग्रह पूर्ण थयो नहीं एवा अवसरमा चपानगरीनो दधिवाहन नामे राजा तेनी धारणी नामा स्त्रीनी वसुमति नामा पुत्री छे तेनुं अपर नाम चदनबाला छे हवे कोशबी नगरीनो शतानिक नामे राजा छे तेणे राज्यविरोधना लीधे चढाई करीने चपानगरीने लूटी त्यारे दधिवाहन राजा नाशी गयो अने धारणी राणी तथा चदना ए बे कोइ एक शतानिक राजानो पायदल सेवक हतो तेना हाथमां आवी तेणे धारणीने कह्यु के–' तने हु म्हारी स्त्री करीश ' ते साभली धारणी राणी तो पोतानी जीभ चापीने मरण पामी पछी सुभटे विचार्युं के रखेने आ छोकरी पण मरी जाय ' तेथी तेने विश्वास आपीने कोशबी नगरीना चौटा मांहे चदनबालाने वेचवा गयो, तेने वेश्या लेवा आवी त्यारे चदनाए पूछ्यु ' तमारो शो आचार छे ? ' वेश्या बोली, उत्तम पुरुष साथे प्रीति करवी, भला मन मान्या भोजन करवा, ए अमारो आचार छे. त्यारे चंदना बोली,' ए म्हाराथी न थाय' तथापि ते वेश्याए बलात्कारे लेवा माडी त्यारे शासनदेवीए वेश्याना कान अने नाक छेदी न्हाख्या वेश्या नाशी गइ, पछी धनावह नामे शेठ जिनधर्मी हतो तेणे मूल्य आपीने चदनाने वेचाती लइ पोताने घेर तेडी आव्यो अने चदना एवुं नाम आपी पुत्रीपणे थापी, पण चंदनानु सुरूप देखी धनावह शेठनी मूला नामा वाजणी फूहड स्त्री छे ते मनमा द्वेष राखवा लागी

के 'रखेने ए म्हारी शोक थाय ! माटे प्रथमथी ज कांइ ऊपाय करुं तो सारुं.' पछी एक दिवस शेठना पग पखालतां चंदनाना माथानी वेणी धरती ऊपर पडी, तेने शेठे उपाडीने ऊंची करी, ते पेहली दुराचारिणी मूला स्त्रीए दीठी अने मनमां चिंतववा लागी के शेठ एनी वेणी ऊपर मोह्यो देखाय छे. मुखथी तो पुत्री कहे छे; पण कालांतरे एने स्त्री करी राखशे, एमां संदेह नथी. केमके हुं हवे बुड्ढी थइ छुं अने ए स्वरूपवती छे. पछी एक दिवसे शेठ कोइ एक गामे गयो हतो, पाछलथी मूलाए चंदनानुं मस्तक मूंडावी, हाथ पगमां वेडी घाली, धूसानुं वस्त्र पहेरावीने छाण प्रमुखना ओरडामां वेसाडी अने पोते घरने वारणे ताळुं लगावीने पोताने पीयरे जती रही. चंदना तो ओरडामां बेठी नवकार गणे छे. पोताना करेलां कर्मने निंदे छे. एम करतां चोथे दिवसे शेठ ज्यारे पोताने घेर आव्यो त्यारे चंदनवालाने दीठी नहीं, जेथी पाडोसीने पूछवा लाग्यो. पण पहेली कजीयाखोर मूलानी व्हीकथी कोइ जवाव आपे नहीं. पछी एक डोकरीए सर्व वात कही. त्यारे शेठे तालो उघाडी, ओरडामांथी वाहेर काहाडी, डेलीमां वेसाडीने कह्युं के हुं लोहारने बोलावी लावुं छुं, ते त्हारी वेडीयो उघाडशे. चंदनाए कह्युं हुं भूंखे मरुं छुं, त्यारे शेठे अडदना वाकला एक सूपडाना खूणे न्हांखी चंदनाने आपीने कह्युं के तुं त्रण दिवसनी भूंखी छे, माटे आ वाकला खाजे. हुं वेडी कहाडवा सारुं लोहारने तेडी आवुं छुं. एम चंदनाने पूर्वेली अवस्था सहित उंबरे वेसाडी पोते लोहारने तेडवा गयो. हवे शुद्ध सम्यक्त्वनी धरनारी चंदना सती चिंतवे छे के—कोइ अतिथी आवे तो तेने ए वहोरावीने खाउं. एवामां मध्यान्ह काल थयां पछी प्रभु पधार्या. तेने देखी चंदनवाला हर्षवंत थइ थकी वाकला देवा लागी, परंतु प्रभुए लीधेला अभिग्रहना चार भेद तो मलता दीठा, पण पांचमुं रुदन दीठुं नहीं तेथी पाछा वल्या, त्यारे चंदना दुःख धरती थकी रुदन करवा लागी के

'साधु पण म्हारा हाथनो आहार लेता नथी माटे मने धिक्कार छे' पछी भगवने रुदन करतीं देखी पोतानो संपूर्ण अभिग्रह थयो जाणी ते अडदना बाकला लीधा देवताए पचदिव्य प्रगट कर्या, तेज वखते बेडी भागीने नेउर थया, मस्तके वेणी पाछी आवी, इन्द्रमहाराज आव्या, चदनानी मातानी व्हेन मृगावती ते चदनानी मासी थाय तेना सबधथी शतानिक नामे राजा धन लेवा आव्यो तेने इन्द्रे वार्यो अने कह्युं के चदनाने दीक्षा लेवानी वखते ए धन काम आवशे चदनाए कह्यु ए धन धनावह शेठने स्वाधीन करो त्यारे तेने आपीने इंद्र बोल्यो, 'आ चन्दना भगवाननी प्रथम साधवी थशे' एम कही इन्द्र स्वस्थानके गयो अहींआ पाच दिवसे ऊणा छम्मासी तपनु प्रभुने पारणु थयु

प्रभुने थयेल गोपालककृत कर्णकीलोपसर्ग—

पछी भगवान पड्जृंभिका गामे कायोत्सर्गे रह्या त्यारे इन्द्रमहाराज वादवा आव्या अने बोल्या के–हे भगवन्! आपने आटला दिवस पछी अमुक दहाडे केवलज्ञान उपजशे, एवु कहीने गया हवे प्रभु विचरता अनुक्रमे चपा नगरीए स्वातिदत्त ब्राह्मणनी शालाए बारमुं चोमासु रह्या त्याथी पारणुं करीने भगवान विचरता षण्मानिक गामे आवी बाहेर उद्यानमा काउस्सग्गे रह्या ते अवसरमा भगवतना कानमा गोवालिए खीला ठोक्या ते उपसर्ग कहे छे-प्रभुए त्रिपृष्ट वासुदेवना भवे शय्या पालकना कानमा सीसुं उग्ण करी रेडाव्यु हतुं ते कर्म अहींआ प्रभुने उदयमा आव्यु, ते शय्यापालक अनेक

१ कोइक मतमां एम पण कह्यु छे के वसुधारानी वृष्टि आपणे घेरे थइ एवु सांभळीने मूळा पोताना पियरथी दोडीने त्यां आवी पछी उतावळथी खोलामां धन उपाडवा मांडयु ते उपाडता अग्निज्वाला उठी तेथी तेना सर्व वस्त्र बळी भस्म थयां पछी ते श्याम वदन थइ थकी त्यांथी चालती थई तेने देवताए तर्जना करी कह्यु के-ए द्रव्य चदनबालानु छे, चदनाए ते धन शेठने अपाव्यु शेठे ते सर्व धन चदनानी दीक्षाना महोत्सवमां वापर्यु

भवभ्रमण करी गोपालक थयो छे, वैरना लीधे तेणे गोवालीए प्रभुने बलद भलाव्या, पोते गाममां गयो, त्यांथी पाछो आव्यो. त्यारे बलद न दीठा, पछी बलद जोवा सारुं चार प्रहर रात्रि भम्यो, प्रभाते आव्यो तो भगवंत पासे बलद बेठा दीठा. ते वखते ते गोवालीयाने पूर्वभवना वैरथी द्वेष उपन्यो तेथी भगवंतना कानमां खीला बेसाड्या, जेम कोइ देखे नहीं, कोइने खबर पडे नहीं, तेवी रीते बाहेरथी कापीने सरखा करी दीधा. ते खीला जेना तीर थाय छे एवा शरकट वृक्षना अग्र कापीने कानमां ठोक्या तेथी भगवंतने महावेदना उत्पन्न थइ. तेना योगे प्रभु अत्यंत कृश थइ गया. पछी भगवंत त्यांथी विहार करता मध्यम अपापानगरीमां सिद्धार्थ वणिकना घेर गोचरीए पधार्या. त्यां खरक वैद्य बेठो हतो, तेणे मार्गानुसारे प्रभुने सशल्य दीठा, त्यारे शेठने केहवा लाग्यो के भगवानने व्यथा छे. शेठे कह्युं तो ए व्यथा मटाडी आपवानो लाभ तमे कां लेता नथी ? पछी शेठ अने वैद्य बेहु प्रभुनी पछवाडे गया. त्यां वैद्ये विचार करी बे साणसा लइ बे वृक्षोनी डालीयो रेशमथी बांधी कान मांहेली खीली साणसामां पकडीने रेशमनी दोरीयोथी बे बाजुए बे वृक्षोनी डालोमां बांध्यां. पछी ते बेहु डालीयो नमावीने एकज वखते साथे ज छोडी तेथी बेहु कानना खीला तरत साथेज नीकली आव्या. एम बुद्धिना प्रपंचे करी खीला तो कढाव्या, पण ते वखते प्रभुने वेदना एटली थइ के ते वेदनाना योगथी हांकमारी अरडाट मूक्यो, तेथी वनमां घोराकार शब्द थयो. पर्वत फाटी पड्या. ते पर्वत हालमां बंभणवाड गामनी पासे छे, त्यां बंभणवाड तीर्थ थयुं. प्रभु मूर्च्छा पामी धरतीपर पड्या. तेने बे पुरुषे उपाडी बेसाड्या एम लोको कहे छे. परंतु तीर्थंकरने एवुं संभवे नहीं ते ऊपरथी अनुमान करीए छिए के कायाना व्यापारथी हांक थइ हशे पण भावथी थयेली जणाती नथी. एवो " अनंत बलित्वात् " ए वचनथी

निरधार थाय छे पछी कानोनी ऊपर व्रणसंरोहिणी औषधी लगावी, तेथी ते घाव मली गयो समाधि थइ ते शेठ अने वैद्य बेहु मरण पामी देवलोके गया गोवालीयो मरी सातमी नरके गयो ए रीते भगवानने ए छेल्लो म्होटो उपसर्ग गोवालीए कर्यो

प्रभुने जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट, एवा त्रण प्रकारना उपसर्ग थया तेमां क्या क्या जातिना उपसर्गमां म्होटामां म्होटो उप सर्ग कयो कयो थयो, ते देखाडे छे-प्रथम जघन्य उपसर्गोमां तो शीत परीषहनो म्होटो उपसर्ग कटपूतना व्यतरीये कर्यो, तथा मध्यम उपसर्गोमा संगम देवताये म्होटो उपसर्ग कर्यो अने उत्कृष्ट उपसर्गोमां म्होटो उपसर्ग कानमा खीला ठोकाणा तथा खीला काढ्यानो थयो ए रीते भगवाने बार वर्ष सुधी काया वोसरावी, जेम कोइ पुरुष गाय दोहोवाने बेसे तेवे आसने प्रभु बेठा पण कोइ दिवसे धरती ऊपर बेठा नहीं तेमां मात्र बे घडी शूल-पाणि यक्षना देहेरे निद्रा करी, बाकी सर्वकाल निद्रा विनानो गयो एम श्रीवीरप्रभुने घणा उपसर्ग सहन करवा पड्या अने श्रीऋषभदेव तीर्थंकरने एक वर्ष सुधी भिक्षा मली नहीं एटलो उपसर्ग थयो, तथा मध्यम बावीश तीर्थंकरने स्वल्प उपसर्ग थया छे

प्रभुनी आचार-विचार दिनचर्या—

भगवान ज्यारे आगार एटले घर तेणे करी रहित एवा अण गार थया त्यारे एक चालवानी ईर्या—समिति एटले जोइने चाले, बीजी भाषा—समिति एटले विचारीने बोले त्रीजी एषणा—समिति एटले दोष रहित आहार लीए चोथी आदाण—भंडमत्त—निक्खेवणा—समिति एटले भंड मात्रा प्रमुखने जोइने जयणाए ग्रहण करे तथा जयणाए मूके पांचमी उच्चार—प्रश्रवण—खेलजल्ल—सिंघाणपारिट्ठापनिका—समिति एटले ठलो, मात्रो, खखार अने सेडो ए सर्वे निर्जीवस्थानके परठवे ए पांच

समितिए समता थया, पण श्रीतीर्थंकरनो आहार निहार कोइनां दीठामां आवे नहीं, कोइना जाणवामां आवे नहीं. खेल, नाकमल, खंखार, होयज नहीं. केमके एने रोगनो अभाव छे. वली भगवाने मन, वचन अने कायाने कुकर्ममां न चलाव्या. मन, वचन, कायाने भली रीते वर्त्ताववाथी त्रण समिति सहित थया. वली भगवान मन गुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्तिए गुप्ता थया. वली भगवान इंद्रियोने गोपवी नववाड सहित शीलवंत थया. वली क्रोध, मान, माया अने लोभरहित, घणाज शीतल स्वभाववाला, जेमने क्रोधादिक उपशांत थइ गया छे एवा, वली जेणे पापने रोधि मूक्यां, निराश्रव थया. ममत्व रहित, धनरहित, ग्रंथरहित होवाथी निर्ग्रंथ थया. जेम कांसीना पात्रने पाणी लागे नहीं तेम भगवान पण निर्लेप स्नेह रहित छे, जेम शंखने रंग लागे नहीं तेवा निरंजन छे तथा कोइ ऊपर राग नहीं, द्वेष नही माटे रागद्वेष रहित, जेम जीवनी गति क्यांय रोकाती नथी तेम भगवानने क्यांय जातां गति हणाती नथी. एटले भगवानने विहार करवामां कोइ रोकी शके नही. आकाश जेम निरालंब छे तेम भगवान पण कोइनो आधार राखता नथी, वायरानी परे अप्रतिबद्ध विहार करे, शरदऋतुना मेघ समान जेनुं हृदय निर्मल छे, कमलनां पत्रनी परे निर्लेप छे, काचबानी परे इंद्रियोने गोपवी राख्यां छे, वली खड्गी नामनुं जानवर थाय छे तेना सींगडानी परे एकलाज छे, पंखी जेम पोतानी पासे कांइ पण परिग्रह राखे नहीं, तेम भगवान पण पोतानी पासे कांइ पण परिग्रह राखे नहीं. भारंडपंखीनी परे अप्रमत्त, हस्तिनी परे कर्मरूप शत्रुओने मथन करवामां महापराक्रमवंत, वृषभनी परे संयमरूप भार निर्वाह करवाने सामर्थ्यवान, सिंहनी परे परीषह जीतवामां दुर्द्धर, मेरुनी परे अचल अकंप (चलायमान थाय नहीं) एवा छे, समुद्रनी परे गंभीर छे, चंद्रमानी परे सौम्य लेश्यावंत छे.

वली सूर्यनी परे दीपतु तेज छे जेनु, तपाव्या कुदनना सोना सरखा जातरूप छे, पृथ्वीनी परे सर्व फरस सहन करनार छे, घृते होमेला अग्नि सरखा तेजे करी जाज्वल्यमान छे, तेथी भगवानने क्याये प्रतिबध नथी प्रतिबध चार प्रकारनो छे ते कहे छे–प्रथम द्रव्यथकी प्रतिबध त्रण प्रकारनो छे तेमा एक तो मातापिता पुत्रादिक ते द्रव्य थकी सचित्त प्रतिबध जाणवो बीजो घरेणा प्रमुखनो प्रतिबध–ते द्रव्यथी अचित्त प्रतिबध जाणवो त्रीजो शणगार करेली स्त्री प्रमुखनो प्रतिबध ते मिश्रप्रतिबध जाणवो ए रीते द्रव्यथकी त्रणे प्रकारनो प्रतिबध जेने नथी माटे ममत्व रहित छे वली बीजो खेत्रथकी प्रतिबध–ते गाम, नगर, उद्यान, खेत्र, खला, घर, घरना आंगणा, आकाश इत्यादिक कोइनी ऊपर म्हारापणु नथी त्रीजो कालथी प्रतिबध–ते समयने विषे आवलिका, श्वासोश्वास, सात श्वासोच्छ्वासे एक स्तोक (क्षण) सात स्तोकनो एक लव, वे घडीनु मुहूर्त्त, त्रीश मुहूर्त्ते एक अहोरात्रि, पन्नर अहोरात्रीए एक पक्ष, वे पक्षे एक मास, वे मासे एक ऋतु, त्रण त्रण ऋतुनु एक अयन, वे अयननु एक वर्ष, पाच वर्षनो एक सवत्सर, इत्यादिक बीजा पण दीर्घ कालने विषे कोइ वखत आ अमुक काम हु करीश एवो प्रतिबध नथी तथा चोथो भावथी प्रतिबध–ते क्रोध, मान, माया, लोभ, भय, हास्य, राग, द्वेष, वचन युद्ध, खोटु कोइने कलक आपवु, चुगली करवी, परना दोष प्रगट करी कहेवा, अरति–द्वेष, रति–प्रीति, कपटथी बोलवु, मिथ्यात्वशल्य ए काम करे तो भावथी प्रतिबध कर्यो कहेवाय ते माहेलो भगवानने विषे एके पण नथी वली भगवते वर्षादना काल विना शेष उन्हाला अने शीयालाना आठ महीनामा गामने विषे एक रात्रि अने नगरने विषे पाच रात्रि लगण रहेवु एवो विहार कर्यो तथा जेम कुहाडो चदनने कापी न्हाखे, पण चदन तो उलटो कुहाडानी धारने

सुगंध ज आपे अने जे नहीं छेदे तेने पण सुगंध आपे छे, तेम भगवानने कोइ वांसले छेदे, कोइ चंदने लेपे ते बेहुनी ऊपर समान (सरखुं) मन छे, वली तृण अने मणी तथा पाषाण अने सोनुं ए बेहु समान छे जेने, दुःख अने सुख बेहु समान छे जेने, इहलोक अने परलोकनी गरज नथी जेने, जीववा अने मरवानी इच्छा नथी जेने, संसार समुद्रथी पार थवा वाला, कर्म रूप शत्रुने मारवाने उजमाल थया एवा थका विचरे छे. भगवाननां उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन अने चारित्र छे, आदि रहित, स्थान विहार, पराक्रम, आर्जव, मार्दव, अल्प उपधी, क्षमा, निर्लोभता, गुप्ति, मनःप्रसन्नता, ए सर्व काम उत्कृष्ट छे. साचो संयम तप करवाथी उपचय करेलुं फल निर्वाणमार्ग तेने विषे आत्माने भावता थका विचरे एवी रीते भगवानने बार वर्ष वीत्या.

प्रभुए करेल तप अने पारणानी संख्या—

हवे भगवाने बार वर्षमां जे कांइ तप कर्युं, तेनी संख्या तथा पारणां कर्यां, तेनी संख्या कहे छे—एक संगम देवना उपसर्गमां छ मासी तप तेनुं पारणुं एक. बीजुं पांच दिवसे न्यून छमासी तप तेनुं एक पारणुं, नव वखत चारमासी तप कर्युं तेनां नव पारणां, बे त्रिमासी तपनां बे पारणां, बे अढीमासी तपनां बे पारणा, छ दोयमासी तपना छ पारणां, बे दोढमासी तपनां बे पारणां. बार एकमासी तपनां बार पारणां. व्होतर अर्द्धमासी तपनां व्होतेर पारणां, बसेंने ओगणत्रीश छट्ठ तप कर्यां. तेनां बसेंने ओगणत्रीश पारणां, ए बेलानी तपस्या करतां पन्नर महीना ने आठ दिवस तपस्यामां गया, भद्रप्रतिमा दिन बे महाभद्रप्रतिमा दिन चार, सर्वतोभद्र प्रतिमा दिन दश. ए त्रण प्रतिमानां त्रण पारणां अने तपना दिवस सोल जाणवा तथा एक रात्रिकी प्रतिमा बार तेनां पारणां बार. ए रीते सर्व तपना दिवसो मेलवतां सरवाले अगीआर वर्ष छ महीना ने पचीश दिवस थया एटला सर्व दिवस

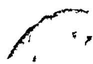
निराहार पणे चउविहार जाणवा. एना तपयत्रमां वशेने उगणत्रीश छट्ठ करेल छे तेनां पारणा बशे ओगणत्रीश थया तेमाथी एक छट्ठनुं छेलुं पारणु केवली पणे थयु बाकी बशे अट्ठावीश पारणा लख्यां छे तथा बार एक रात्रिकी प्रतिमाने स्थानके वार अट्ठम तप लखीने सरवाले ४१६५ दिवस चउविहार तपना थया अने ३५० दिवस प्रथम पारणा सहित आहारना थया, सर्व मली ४५१५ दिवस छद्मस्थपणे रह्या, तेना एक वर्षमां ३६० दिवसनी सख्या करता बार वर्ष ने साडा छ महीनां थाय. ए रीते भगवाने नित्य भोजन तो रह्यु, पण चतुर्थभक्त तप एटले एक उपवास करीने पण पारणु कोइ वखते कर्युं नही, थोडामां थोडुं तप कर्युं, ते पण छट्ठनुं एटले बे उपवासनुज कर्यु छे

तपसख्यायत्र-स्थापना—

तपनाम	केटला कर्या	एकंदर दिवसनी सख्या	पारणानी सख्या	तपनाम	केटला कर्या	एकंदर दिवसनी सख्या	पारणानी सख्या
छमासी (पूर्ण)	१	१८०	१	एक मासी	१२	३६०	१२
पचदिनन्यून छमासी	१	१७५	१	अर्घ मासी	७२	१०८०	७२
चार मासी	९	१०८०	९	अट्ठमतप (तेला)	१२	९६	१२
त्रण मासी	२	१८०	२	छट्ठतप (बेला)	२२९	४५८	२२८
अढी मासी	२	१५०	२	भद्रप्रतिमा	१	२	१
बे मासी	६	३६०	६	महाभद्र प्रतिमा	१	४	१
दोढ मासी.	२	९०	२	सर्वतोभद्र प्रतिमा	१	१०	१
सरवाले-१२ वर्ष, ६ महीना अने १५ दिवस तपना, तथा ३५० दिवस पारणाना जाणवा सर्वे पारणा पण एकलठाणाना समजवा							

चातुर्माससख्या, अने केवलज्ञान—

छद्मस्थपणामां एक अस्थिग्रामे, बीजु नालदी पाडे, त्रीजु चपानगरीए, चोथु पृष्टचपाए, पाचमु अने छट्ठु भद्रिकाए, सातमु आल



प्रथम देशनानी निष्फलता अने रात्रि–विहार—

भगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी चोसठ इद्रोनां आसन चलायमान थया त्यारे चोसठे इद्र दिक्षा महोत्सवनी परे केवलज्ञाननं महोत्सव करवा आव्या ते महोत्सव करीने जृंभिका गामनी बाहे समोसरणनी रचना करी त्या, प्रभुए क्षणेक वार देशना आपी पण ते देशना निष्फल गइ, कोइए सामायिकादिक व्रत पण ग्रहण कर्य नहीं तथा देव सर्वे अव्रति छे तेथी तेओए नवकारशी प्रमुख पच्चक्खाण पण कर्युं नहीं. तीर्थङ्करनी देशना कोइ वखते खाली जाय नहीं, पण वीरप्रभुनी देशना खाली गई माटे "इदमप्याश्चर्यम्" एटले ए पण आश्चर्य जाणवुं भगवाने लाभनो अभाव अने आगल लाभ थवानो अवसर जाणी तेज वखते त्याथी विहार कर्यो कह्यु छे के- 'तत्रादिश्य क्षण धर्मं, देवोद्योते जगद्गुरु । लाभाऽभावान्मध्यमाया महीसेनवनेऽगमत् ॥ १ ॥' ज्या केवलज्ञान उपन्यु त्या तीर्थंकरनें आचार पालवा माटे एक क्षणमात्र धर्मदेशना आपीने देवोना उद्योतनें विषे जगतना गुरु श्रीमहावीरस्वामी लाभनो अभाव जाणीं त्यांथी बार योजन छेटे मध्यम पावानगरी तेनो महसेन नामक वन त्यां आव्या

रात्रिमा विहार करवानी मर्यादा नथी, अने एमगे विहार कर्यो ते कल्पातीत पणु जणाववा माटे जाणवु परतु छद्मस्थ साधु तो तीर्थङ्कर भगवनोए जे प्रमाणे आज्ञा आपेल होय, तेज प्रमाणे चाले, पण जो तेथी विपरीत चाले तो प्रायश्चित्तने पामे वली रात्रिनो विहार जीवनी जयणाने अर्थे वर्ज्यो छे, केमके रात्रिमा कोइ पण जीव जोवामा आवे नहीं ऊपरना श्लोकमा 'देवोद्योते' एवो पाठ कह्यो ते व्यवहार मात्रथी जाणवु अन्यथा तीर्थंकरने तो केवलज्ञानरूप उद्योत सदा सर्वदा विद्यमान छे अने प्रभु देवरचित कनक कमल ऊपर पगल देता चाले छे माटे एमनुं चालवु सदा रात्रि–दिवस सरखुज छे पण

प्रभुनो दृष्टांत आपीने जे साधु रात्रिमां विहार करे छे ते सुखशीलिया, तीर्थंकरनी आज्ञा बाहिर अने चारित्रथी भ्रष्ट जाणवा.

गणधरादिसंघस्थापना, श्रीगौतमगणधर १—

ज्यारे वीरप्रभु मध्यम पावापुरीये पधार्या, त्यारे देवोए विशेष समवसरणनी रचना करी त्यां भगवंत पूर्वना बारणे पेसी अशोकवृक्षने त्रण प्रदक्षिणा आपी अने सिंहासने बेसी " नमोत्तित्थस्स " एम कही प्रभुए धर्मोपदेश आप्यो, तीर्थ—एवुं सूत्रनुं नाम छे, तेने नमस्कार कर्यो ते मंगलाचार जणाववा माटे जाणवुं. एज अरसामां त्यां एक यज्ञार्थि—सोमिलनामा ब्राह्मण यज्ञ एटले होम करावे छे तेमां घणा ब्राह्मणो एकठा थयेलां छे, अने

" अपापायां महापुर्यां, यज्ञार्थी सोमिलो द्विजः ।
तदाहूताः समाजग्मु—रेकादशद्विजोत्तमाः ॥ १ ॥ "

अपापा नामनी महाननगरीना विषे रहेनारो सोमिल नामा ब्राह्मण तेणे यज्ञ करवाने अर्थे अगीयार म्होटा ब्राह्मण पंडितो बोलाव्या. तेनां नाम कहे छे—१ इंद्रभूति, २ अग्निभूति, ३ वायुभूति, ४ व्यक्त, ५ सुधर्म्मा, ६ मंडित, ७ मौर्यपुत्र, ८ अकंपित, ९ अचल-भ्राता, १० मेतार्य, अने ११ प्रभास; ए अगीयारे महापंडित, चौदे विद्यानां जाण, वेदपाठी, अने महा अभिमानी होवाथी एवुं जाणे छे के अमारा जेवो जगतमां कोइ पंडित नथी, तेम सर्वज्ञ जे लोक कहे छे ते अमेज छिये. ते अगीयारे जणना मनमां अगीयार जुदा जुदा संदेह छे ते कहे छे—पहेलां इंद्रभूतिना मनमां जीव छे के नथी ? एवो संदेह छे, बीजा अग्निभूतिना मनमां कर्मनो संदेह छे, त्रीजा वायुभूतिना मनमां जीव अने कर्म जुदां छे के एक छे ? एवो संदेह छे, ए त्रणे संदेहवाला त्रणे जण सहोदर एटले सगा भाइ छे, एमनुं गौतमगोत्र छे. चोथा व्यक्तना मनमां पंचभूतनो संदेह छे, पांचमा सुधर्मना

मनमां जे उहेवो ते रहेवो एटले जे स्त्री होय ते मरीने बीजे भवे पण स्त्रीज थाय अने जे पुरुष होय ते मरीने पुरुष ज थाय ? एवो संदेह छे, छट्ठा मडितना मनमा बंध मोक्ष छे के नथी ? एवो संदेह छे, सातमा मौर्यपुत्रना मनमां देव छे के नथी ? एवो संदेह छे, आठमा अकंपितना मनमा नरक छे के नथी ? एवो संदेह छे, नवमा अचलभ्राताना मनमां पुण्य-पाप छे के नथी ? एवो संदेह छे, दशमा मैतार्यना मनमा परलोक छे के नथी ? एवो संदेह छे, अने अगीआरमा प्रभासना मनमां मोक्ष छे के नथी ? एवो संदेह छे एवा अगीयारे जणने वेदना अर्थ विपरीत समजवाथी संदेह रही गया छे पोता पासे पंडितपणानुं बल घणु छे माटे अभिमानथी बीजानी वात चालवा देता नथी ए अगीआरनी पासे जे छात्र भणे छे तेनी संख्या कहे छे-" पंचण्ह पंचसया, अद्धुट्ठसयाइ हुंति दुन्निगणा । दुन्न तु जुअल सयाण, तिसओ तिसओ हवइ गच्छो ॥१॥ "-पहेला पांच पंडितोनी पासे पाच पांचसो छात्र भणे छे ते पाचेना पचीशसो छात्र थया, तथा छट्ठा अने सातमा पासे साडात्रणसो (३५०) साडात्रणसो (३५०) छात्र भणे छे एम बेउना मली सातसो थया, आठमो अने नवमो ए पहेलो युगल अने दशमो तथा अगीयारमो ए बीजो युगल मली चारजणनी पासे त्रणसो त्रणसो छात्र भणे छे ते चारना मली बारसो थया, एम सरवाले अगीआरेना मली चुमालीशसो (४४००) छात्रोनो समुदाय थयो एटले अगीआरे पंडितोने चुमालीशसो विद्यार्थीओ छे एम घणा विप्र त्यां यज्ञमा मल्या छे ते सर्व यजन, जापन, अध्ययन अध्यापन, दान, प्रतिग्रह ए षट्कर्म साधे छे, प्रभाते ब्रह्म गायत्री जपे छे, मध्यान्हे विष्णुगायत्री जपे छे, अने संध्याये शिवसरस्वती जपे छे एमा उपाध्यायोनां नाम कहे छे-शंकर, शिवकर, ईश्वर, महेश्वर, धनेश्वर, सोमेश्वर, शुभंकर, सीमंकर, क्षेमकर, करुणाकर इत्यादि जानीना नाम कहे छे-गंगाधर, गयाधर, विद्याधर, महीधर,

श्रीधर, लक्ष्मीधर, धरणीधर, भूधर, दामोदर, वृषोदर इत्यादि, दुवेनां नाम कहे छे–महादुवे, शिवदुवे, रामदुवे, धामदुवे, कामदुवे, सहदुवे, हरदुवे, वासुदुवे, श्रीदुवे, वलदुवे, धनदुवे, चंद्रदुवे. व्यासनां नाम कहे छे–श्रीपति, उमापति, गणपति, प्रजापति, विद्यापति, भूपति, महिपति, लक्ष्मीपति, गंगापति, पृथ्वीपति, देवपति, दानवपति. धनपति. पंडितोनां नाम कहे छे–नागार्जुन, गोवर्द्धन, गुणवर्द्धन, विष्णु, कृष्ण, मुकुंद, गोविंद, आनंद, परमानंद, उद्धव, माधव, केशव, पुरुषोत्तम, नरोत्तम. जोषीनां नाम कहे छे–खिमाइत, भीमाइत, रामाइत, प्रभाइत, गुणाइत, विख्याइत, सोमाइत, धनाइत, कर्माइत, धर्माइत, देवाइत, चंद्राइत, सूराइत. त्रिवाडीनां नाम कहे छे–हरिशर्म, अग्निशर्म, महाशर्म, देवशर्म, नरशर्म, सोमशर्म, सूरशर्म, राजशर्म, वासशर्म, गुणशर्म, धर्मशर्म, कर्मशर्म, कुमारशर्म, धनशर्म, जयशर्म, नागशर्म, विष्णुशर्म, शिवशर्म. चतुर्वेदीना नाम कहे छे–हरि, हरिहर, नरहरि, नारायण, नीलकंठ, कालकंठ, वैकुंठ, श्रीकंठ, सुरारि, हरिराम, जगन्नाथ, विश्वनाथ, श्रीराम, रामकृष्ण, शुकदेव, वामदेव, चंद्रदेव, स्वयंभू. शुकलनां नाम कहे छे–कमलाकर, दिवाकर, प्रभाकर, शंकर, यशस्कर, शोभाकर, गुणाकर, रत्नाकर, श्यामदास, रामदास, गोकुलदास, कृष्णदास, देवीदास, हरदास, द्वारिकादास, इत्यादिक जुदी जुदी शाखानां नामवाला ब्राह्मण ते देवलोकनां सुख पामवानां अर्थी थया थका यागकर्म करी रह्या छे. एवा अवसरमां श्रीवीरस्वामी पूर्व सन्मुख वेठा थका मिथ्यात्वकर्दम दूर करे एवी मेघसमान गंभीर ध्वनिथी देशना आपी रह्या छे ते सांभलवा सारुं वैमानिक देवता आकाशे देवदुंदुभि वजाडता थका आवे छे, ते दुंदुभिनो नाद सांभली सर्व ब्राह्मण हर्ष पाम्या अने चिंतववा लाग्या के अमारा यज्ञमंत्र केवा छे के–अमोए हमणा एवा मंत्रो भण्या के

जेथी देवो पण आव्या एटलामा तो जेम चांडालनो पाडो वेगलो मूकीने माणस वीजे रस्ते चाले तेम ते देवो पण विप्रोनो यागमडप मूकीने श्रीवीरना समोसरणे जावा लाग्या अने ते देवो माहोमाहे एवु कहेता चाल्या जाय छे के जलदी उतावला जइ सर्वज्ञ-देवने वादीए

देवोना मुखथी आवी वाणी साभलीने इद्रभूति मनमा अमर्ष लावीने वीजा ब्राह्मणोनी आगल केहवा लाग्यो के जूओ, भाइ ! ए आश्चर्य जेवी वात छे के मनुष्य तो अजाण छे मूर्ख छे माटे भूले, पण आ देवो ज्ञानवान थइने पण भूले छे माटे ए आश्चर्य लागे छे के आवो म्होटो यज्ञमडप छाडीने न जाणे देवो क्या जाय छे ? वली म्हाराथी उपरांत वीजो सर्वज्ञ ते कोण छे, के जेनी पासे ए जाय छे ? त्यारे ते ब्राह्मणमाथी एक ब्राह्मण केहवा लाग्यो के–हे स्वामिन् ! ए कोइक म्होटो ढोंगी इद्रजालीओ आ नगरनी वाहेर आव्यो छे ते इद्रजाल काढीने पोते ज्ञानी थइ वेठो छे वीजा लोकोने कहे छे के हु पारका मननी वात वधी जाणु छु, एम घणा लोकोने भरमाव्या छे तेथी देवता पण त्या जोवा जाय छे एवु साभली इद्रभूतिने अत्यत मान सहित क्रोध चढ्यो त्यारे केहवा लाग्यो के एवो कोण छे जे म्हारा छता ज्ञानीनु अभिमान धारण करीने इहा आवे शु ते मने जाणतो नथी ? माटे जूओ भाइ ! ए देव जे भूला ते पण एना जेवाज अणसमजु हशे जेवो ए ज्ञानी तेवा ए देव पण जाणवा यत –' अहो ! सुरा कथ भ्रात्या, तीर्थांभ्श्च इव वायसा । कमलाकरवद्भेका, मक्षिका चन्दन यथा ॥ ३ ॥ "–आश्चर्य छे के ए देव थइने भ्रातिथी जेम कागडा तीर्थप्रत्ये छोडी जाय छे, तेम ए पण यज्ञ छोडीने जाय छे माटे ए देव कागडा सरखा छे अथवा जेम देडका समुद्र तजी जाय छे तेम ए पण समुद्र जेवो यज्ञ तजीने जाय छे माटे ए देव देडका जेवा छे.

अथवा जेम मक्षिका चंदनने छोडी जाय तेम ए देव पण यज्ञरूप चंदनने छोडी जाय छे. अथवा 'करभा इव सद्वृक्षान्, क्षीरान्नं शूकरा यथा। अर्कस्यालोकवद् घूका, त्यक्त्वा यागं प्रयान्ति यत् ॥ ४ ॥"– जेम ऊंट भला वृक्षोने छोडीने कांटाना वृक्ष ऊपर जाय तेम ए देवो पण यज्ञने छोडी चाल्या जाय छे, माटे ऊंट जेवा छे. अथवा जेम क्षीरना भोजनने मूकीने भूंड विष्टा ऊपर जाय, तेम ए देवो पण यज्ञरूप क्षीर–भोजन मूकीने विष्टाना भोजन समान इन्द्रजालीया पासे जाय छे, माटे ए देव भूंड जेवा छे. अथवा जेम सूर्यना तेजने मूकीने घूड अंधारामां जाय तेम ए देव यज्ञरूप सूर्यने मूकीने अंधकाररूप इन्द्रजालीया पासे जाय छे माटे घूड समान छे. वली एवी पण रीति छे के जे भूंडो माणस होय ते भूंडा पासे जाय. कह्युं छे के–' अहवा जारिसो चिय, सो नाणी तारिसा सुरा वेंति । अणुसरिसो संजोगो. गाम नडाणं च मुरकाणं ॥ १ ॥ '–अथवा ज्हेवो ए ज्ञानी छे तेवा ए देव छे तेथी ए वेहुनो सरखो संयोग मल्यो छे. जेम ग्रामनट मूर्ख छे, तेम गामना लोक पण मूर्ख छे. ए वेनो सरखो संयोग मले छे तेम ए देवता जे जाय छे ते पण मूरख छे अने जे ए ज्ञानी छे ते पण मूरख छे. माटे जे पोते जेवो होय ते पोताना सरखा बीजा पासे जाय, एम सरखे सरखा एक बीजानी पासे जाय आवे एवी रीत छे. वली ' रे हिल्ली विहिल्ली करेली, मम चढीस पायवे निंबे । अहवा तुज्ज न दोसो, सरिसा सरिसेण रच्चंति ॥ १ ॥ '–कोइ एक माणस कारेलीनी वेलिने लिंबडाना वृक्ष ऊपर चढती देखीने बोल्यो के–हे कारेली ! तुं ए निंबना वृक्ष ऊपर चढीश नहीं, केमके तुं पोते कडवी छे. अने निंब वृक्ष पण कडवो छे. माटे रे भूंडी ! तुं वली अधिक कडवी थइश, एवुं केण तेणे मान्युं नहीं अने निंबना वृक्षनी ऊपर चढती वंध थइ नहीं. त्यारे ते माणस बोल्यो के भोली ! ए त्हारो

दोष नथी केमके जगतमा सरखे सरखा मले त्यारे राजी थाय तेम तमे पण वे सरखे सरखा छो तो एमा काइ आश्चर्य नथी, तेवीज़ रीते ए देवता अने ए ज्ञानी पण बेहु सरखे सरखा मल्या छे एवा इन्द्रजालीयाने जइ देवो वादे छे, तो शु ए देवो पण भूला पड्या न कहेवाय ? वली पण इन्द्रभूति चिंतववा लाग्यो के म्हारा जेवा पंडितनी आगल ए लोकोने ठगे छे अने ज्ञानी नाम धरावे छे, ते म्हाराथी केम सहन करी शकाय ? म्हाराथी तो एनु खोटु अभिमान सह्यु जाय नहीं, अने ए ढोंगीनो ढोंग पण म्हारा शिवाय बीजो कोइ उतारी शकशे नहीं माटे हु जइने एनु अभिमान उतारु जेम एक आकाशमां वे सूर्य होय नहीं, एक गुफामा वे सिंह एकठा रहे नहीं, तथा एक म्यानमा वे तरवार समाय नहीं तेम ए पण सर्वज्ञ अने हुं पण सर्वज्ञ एम कोइ वारे थायज नहीं ए इन्द्रजालियो तो विदेशमा कला शीखीने आवेल छे ते सर्वज्ञनु नाम धरावी लोकोने अने देवताओने भोलवे छे अने हु तो सर्व विद्याओमा निपुण छुं एवो विचार करे छे एवामां प्रभुने वांदीने समोसरणथी केटलाएक लोक आव्या तेमने इद्रभूति पूछवा लाग्यो के लोको ! तमे जेनी पासे गया हता, ते सर्वज्ञ कहेवोक छे ? त्यारे लोक बोल्या के एनी वात कांइ कहेवामा आवती नथी परंतु तमे पोते सर्वज्ञ नाम धरावीने अमने शु पुछो छो, ते सर्वज्ञ तो मननी वातो जाणे छे पण तमे तो एटलु पण नथी जाणता, अने फोकट सर्वज्ञ कहेवरावो छो ते सांभली इंद्रभूतिए जाण्यु के ए निश्चय मायानु घर छे माटे सर्वलोक तो एने मानवा लाग्या परतु ज्यारे हु जइश त्यारे तो ए म्हारा आगल बोली शकशे पण नहीं यत –" घरसूरा मठ पडिया, गाम गमारा गोठ। भरी सभामा बोलता, थरथर ध्रूजे होठ ॥ १ ॥ " पोताना घरमा तो वधाय कहे के अमे शूरवीर छिये अने पोताना मठमां पण वधाय कहे के

अमे पंडित छिये, वली पोताना गाममां जे गमार होय ते पण पंच थाय छे. परंतु ज्यारे पंडितोनी भरी सभामां बोलवुं पडे त्यारे तो तेना होठ पण थर थर ध्रूजवा मंडी जाय छे; तेम ए पण सर्वज्ञ एवुं नाम बीजानी आगल कहे छे पण म्हारी आगल ते बोली शकशे नहीं. अरे ! जे अग्निए पर्वतोने बाली नाख्या, ते अग्निनी आगल वृक्षनो शो भार ?, जे वायुए हाथी जेवाने उडाडी मुक्या, ते वायुनी आगल पुणीनुं शुं जोर चाले ? अने जे नदीमां हाथी तणाइ गया, ते नदीमां कीडी बापडी शा हिसाबमां गणाय ? एम इंद्रभूति चिंतवे छे एटलामां अग्निभूति बोल्यो के–भाइ ! तमे ए इन्द्रजालीयाने जीतवा माटे एटलोबधो विचार शुं करो छो, ए कीडी ऊपर कटक शो करवो ? अलसीयानी ऊपर गरुडने तेडवो ते शुं ? तृणनी ऊपर कुहाडो उपाडवो ते शा कामनो, कमलनी नालने कापवा सारुं फरशी उपाडवी ते शा कामनी, वेलडी उखेडवा माटे हस्तिनुं शुं काम पडे ! तेम ते बिचारा गरीबडा सर्वज्ञ पासे तमे वाद करवा शुं जाओ छो ? मनेज आज्ञा आपो तो हुंज एने जीती आवुं. एवां भाइनां वचन सांभली इंद्रभूति बोल्यो के–भाइ ! एने शुं जीतवो छे ? एने तो म्हारा पांचशे शिष्य मांहेलो कोइ एक शिष्य जाय ते पण जीती आवे, तथापि म्हाराथी रह्युं जातुं नथी, केमके थोडुं पण शल्य कामनुं नहीं. माटे हुं पोतेज जइश, कारण के बीजा तो सर्ववादी मात्रने में जीत्या छे; पण ए क्यांइ रही गयेलो देखाय छे. जेम हाथीना मुखमांथी कोइक कण पडी जाय, जेम मग रांधतां कोइक करडु रही जाय, जेम घाणी पीलतां कोइक तलनो दाणो रही जाय, जेम अगस्ति ऋषिने समुद्रनां त्रण चलु करतां कोइक जलबिंदु रही जाय, जेम चणा भूंजतां कोइक चणो बाहेर पडी जाय, तेम ए पण रही गयेल छे. माटे हे भाइ ! ए एकने अणजीते सर्वने न जीत्या एम लोकोमां कहेवाय.

जेम एकवार जे स्त्रीनुं शील खडन थयुं ते स्त्री असती कहेवाय, तेम एने जीत्या विना लोकमां म्हारो यश रहे नहीं माटे एना साथे म्हारे पोतानेज वाद करवा जवु पडशे अने एने हु हरावु तोज म्हारो यश जगतमा रहे वली पण अभिमानथी इद्रभूति कहे छे'–" हहो ! वादि-गणा भोटा, कर्णाटादि–समुद्भवा । कस्मादहश्यतां प्राप्ता, यूय मम पुर सदा ॥ १ ॥ "–अरे कर्णाटादिक देशोमा उत्पन्न थयेला वादिओ ! तमे म्हारा आगल केम नथी देखाता ? शा माटे अदृश्य थइ रह्या छो ? तमे बद्धाय वादियो म्हारा आगल हारेला छो, तेथी छुपी रह्या छो, शा माटे ? के–में आटला देशोना पडितोने हराव्या छे.–

लाटा दूरगता प्रवादिनिवहा मौन श्रिता मालवा,
मूकत्वं मगधागता गतमदा गर्ज्जन्ति नो गुर्ज्जरा ।
काश्मीरा प्रणता पलायनकरा जातास्ति लङ्कोद्भवा,
विश्वे चापि स नास्ति योहि कुरुते वाद मया साप्रतम् ॥ १ ॥

भोट कर्णाटक देशना वादि म्हारी आगल अदृश्य थया, तो बीजा देशोना वादिओनो म्हारा आगल शो भार (तेज) छे, लाटदेशना वादि-ओना समूह ते तो म्हारु नाम साभलीने एवु विचार्युं के जइशु तो हारीने पाछु आववु पडशे एम जाणी दूर चाल्या गया, तथा एक लाख ने बाणु हजार मालव देशना वादि हता ते हारी जवाना भयने लीधे म्हारी आगल मौनपणु धारण करी रह्या, वली मगध देशना दश लाख वादि ते तो म्हारा आगल मुगा थया एटले एक बोल पण बोली शक्या नहीं, तथा सत्तर हजार गुजरात देशना वादि ते म्हारी आगल मद रहित थइ गया, परतु हाथीनी परे गाजीने एक शब्द पण कही शक्या नही. एटले दीन थइ गया वली ज्या सरस्वतीनो वास छे एवा श्रीकाश्मीर देशना वसनारा वादी तो आवीने म्हारे पगे लाग्या, तेथी जे तैलग देशमा उत्पन्न थयेला नवलाख वादि हता ते तो मात्र म्हारु नाम सांभ

लीने नाशी गया. बीजी कांइ पण बुद्धि तेमने उपनीज नहीं. वधारे शुं कहुं? जगतमां एवो कोइ पण पंडित नथी जे म्हारी साथे आवीने हमणा वाद करे! एटले में सर्व वादियोने जीत्या पण मने जीतनारो जगतमां कोइ नथी, तो ए इन्द्रजालीयानो शो भार छे? हुं ज्यां सुधी प्रमादमां छुं त्यां सुधी ए सर्वज्ञ कहेवाय छे; पण ज्यारे हुं वाद करवाने स्हामो थयो, त्यारे ए तेज वखते भागी जशे. कह्युं छे के–' तावद्गर्ज्जन्ति खद्योता–स्तावद्गर्ज्जति चंद्रमाः। उदिते तु सहस्रांशौ, न खद्योतो न चंद्रमाः ॥ १ ॥ 'खजुआनो उद्योत क्यां सुधी रहे के ज्यां सुधी चंद्रमानो उद्योत न थाय अने चंद्रमानो उद्योत पण क्यां सुधी रहे के ज्यां सुधी सूर्यनो उदय न थाय, पण ज्यारे हजार किरणोने धरनार सूर्य उदय पामे त्यारे खजुआनो अने चंद्रमानो ए बेहुनो उद्योत रहे नहीं. तेम बीजा वादीयोने हराववाने तो ए इन्द्रजालियो समर्थ छे, पण म्हारी आगल एनो प्रभाव चाले नहीं. एणे ज्यां सुधी मुजने दीठो नथी त्यां सुधी बीजा लोकोने भरमावे छे. तो हवे म्हारे फोकट घरमां बेशी मान करवुं ते शा कामनुं! हुं पोते त्यां जइने तेनुं बल पराक्रम जोउं के ए शुं भण्यो छे? अरे! मुजने एटलां शास्त्र तो भलेना पाठनी परे आवडे छे–" लक्षणे मम दक्षत्वं, साहित्ये संहिता मतिः। तर्के कर्कशता नित्यं, क शास्त्रे नास्ति मे श्रमः ॥ १ ॥" लक्षण शास्त्रमां म्हारुं दक्षपणुं छे. एटले लक्षणशास्त्र तो हुं सारी पेठे जाणुं छुं. स्त्री पुरुषादिकोनां बत्रीश लच्चण रुडी रीते कही देखाडुं छुं तथा पदार्थनां लच्चण तो एवां प्रतिपादन करुं के जेमां अव्याप्ति प्रमुख दोष रहे नहीं, साहित्य शास्त्र जे काव्यादिक ते तो सर्व म्हारे अस्खलित छे, तथा तर्कशास्त्रमां तो हुं एवो निपुण छुं के म्हारा स्हामो कोइने जवाब देतां आवडेज नहीं, एवा कठण तर्कने हुं जाणुं छुं माटे तर्कशास्त्र म्हारे कठण नथी–एतो सदा अकर्कश छे. घणुं शुं कहिये!

एवु कयु शास्त्र छे ? के जेमां म्हारो श्रम न थयो होय ? अर्थात् अढार व्याकरण, अगणित कोश, छंद रत्नाकरादिक अलंकार ते काव्यनी शोभा अतिशयालकारादिक, नवरसादिक ते वात्स्यायनादिक, धर्मशास्त्र ते सर्व पुराण मीमासादिक, ज्योतिष शास्त्र ते चूडामणि प्रमुख, वैद्यकशास्त्र कालज्ञानादिक, ए घर्धां शास्त्र म्हाराथी अजाण्या नथी तो ए इन्द्रजालीयो शु म्हाराथी जीते एवो छे ? माटे हवे हु त्या जइ देव, दानव, मानव सर्वने देखता एने हरावीने एनु सर्वज्ञ पणानु मान उतारी नाखु एवो मनमां गर्व आणी पांचसो छात्रोने लेइ जेम जाणे इन्द्र खेंची लइ जतो होयनी ? ते शा माटे के भगवाननी देशना प्रथम खाली गइ हती, तेथी भगवान एक रात्रिमां बार योजन चालीने आव्या तेथी इन्द्रमहाराजे जाण्यु के एमने शिष्यनी प्राप्ति थाय तो रुडु थाय ते माटे इद्रनो प्रेयोंज जाणे इन्द्रभूति समोसरण तरफ जतो होयनी ? एवी कवीश्वर घटना करे छे, अन्यथा तो एमज थनारु छे

इन्द्रभूति पांचसो छात्रथी परवर्यो थको वाद करवानी इच्छाथी श्रीवीर भगवानना समोसरण तरफ चाल्यो ते वखते पांचसो छात्रो इन्द्रभूतिनी विरुदावली बोले छे के–" सरस्वती कठाभरण, वादिविजय–लक्ष्मीशरण, ज्ञात–सर्व पुराण, वादिकदली–कृपाण, पंडितश्रेणी–शिरोमणि, कुमतांधकार–नभोमणि, जितवादिवृंद, वादि गरुड–गोविंद, वादिघटमुद्गर, वादिघूकभास्कर, वादिसमुद्र– अगस्ति, वादिवृक्षहस्ति, वादिमुखभजन, सकलभूपालरंजन, पद्भापावलीमूल, परवादिमस्तकशूल, वादिगोधूमघरट्ट, मर्दितवादि मरट्ट, वादिकदकुद्दाल, वादिवृदभूपाल, वादिगजसिंह, वादिशिरलीह, वादिवेश्याभुजग, शब्दलहरी, गगातरग, सरस्वतीभडार, चौदविद्या अलकार, वादिहृदयशाल, वादियुद्धमाल, बहुराजसमाज-

मुकुट, बहुबुद्धिविकट, ज्ञानरत्नाकर, शब्ददिवाकर, महाकवीश्वर, कृतशिष्य बृहस्पति, निर्जितभार्गवमति, कौजंगमसरस्वती, प्रत्यक्षभारती, जितानेकवाद, सरस्वतीलब्धप्रसाद. " इत्यादि अनेक प्रकारनी विरुदावली छात्रो बोली रह्या छे अने इन्द्रभूति चाल्यो जाय छे. वली रस्तामां विचार करवा लाग्यो के अरे जुओ तो खरा के आ मूर्खें शुं कर्युं ? एणे सर्वज्ञपणाना आटोपथी मने नाहक क्रोध चढाव्यो तो हवे एथी ए शुं सुखी थवानो छे ? जेम कोइ अग्निमां पडे तो वली भस्म थया विना रहे नहीं, तेम एणे पण कर्युं छे, एम चिंतवतो चालतो चालतो ज्यारे समवसरणनी पहेली पावडी छे त्यां चढीने जोयुं तो त्रण गढ दीठा. ते गढ कहेवा छे के त्यां प्रथम रूपानो गढ छे तेना सुवर्णमय कोशीशा छे, चार दिशामां चार पोल छे. बीजो सुवर्ण गढ छे तेना रत्नना कोशीशा छे. त्रीजो रत्ननो गढ छे. तेमे मणिकांतना कोशीशा छे. एक योजनने विस्तारे छे. तेनी वचमां अशोकवृक्ष छे. ऊपर त्रण छत्र सहित, सुवर्णनुं सिंहासन छे. तेनी ऊपर स्वामि बेठा छे ते इन्द्रभूतिए पोतानी नजरे दीठा त्यारे मनमां विचार्युं के में घणाय वादी दीठा छे; परंतु आवो तेजस्वी वादी क्यांइ पण दीठो नथी तो ए शुं ब्रह्मा छे ? ना ए ब्रह्मा पण देखातो नथी केमके ब्रह्माने तो सावित्री नामे स्त्री छे, हाथमां पवित्री अने कमंडल छे, हंसवाहन छे, पांचमुं गर्दभनुं मुख छे एटला एमां मलतां नथी माटे ए ब्रह्मा नथी, तो शुं ए विष्णु छे ? ना ते पण नथी; केमके विष्णुने तो लक्ष्मी नामे स्त्री छे, चार हाथ छे, शंख, चक्र, गदा अने धनुष ए आयुध छे, गरुड वाहन छे, वरणे श्याम छे, माटे ए विष्णु पण नथी. तो ए शुं ब्रह्मज्ञानी छे ? ना ते पण नथी; केमके ते तो अरूपी छे. वली चंद्रमा सोले कलाए संपूर्ण छे. परंतु कलंक साहित छे माटे चंद्रमा पण नथी, तथा जो एने सूर्य कहुं

तो सूर्यथी पण एनु तेज तो घणु अधिक छे, परतु तेना किरण उष्ण छे ते उष्ण किरण एने नथी माटे सूर्य पण केम सभवे ?, वली इद्र छे एम जो कहुं तो ते पण नथी, कारण के तेने सहस्र नेत्र छे ते एने नथी वली जो ए मेरु हशे एम कहु तो मेरु कठण छे ते एमा कठण-पणु देखातु नथी माटे ए मेरु पण नथी तो ए सर्वगुण सपूर्ण सर्वथी अधिक जे तीर्थंकर कहेवाय छे ते ए तीर्थंकर छे केमके एवा गुण तो तीर्थंकर विना बीजा कोइमा होयज नहीं माटे समस्त पापहर, सर्व लोकना शिवकर, षट्कायना रक्षक, अनाथना नाथ, अशरण–शरण, तरण तारण, एवा श्रीवर्धमान सर्वज्ञ तीर्थंकर जे कहेवाय छे ते सभवे छे सूर्यनी परे तेजवत, चद्रमानी परे सौम्य, समुद्रनी परे गभीर एवा श्रीमहावीर तीर्थंकर विना बीजो केम सभवे ?, इन्द्रभूति श्रीवी-रप्रभुने देखीने चिंतवे छे–

‘ किं नदी किं मुरारि किमुरतिरमण किं नल किं कुनेर ,
किं वा विद्याधरोऽसौ किमिह सुरपति किं विधु किं विधाता ।
नाय नाय न चाय न खलु न हि न वा नापि नासौ न चैव,
तीर्थं कर्तुं प्रवृत्तो निजगुणविभवैर्वीरदेवाधिदेव ॥ १ ॥’

शु ए महादेव छे ?, शु ए कृष्ण छे ?, शु ए बहु रूपवत कामदेव छे ?, शु ए नलराजा छे ?, शु ए इद्रनो भडारी कुनेर छे ?, शु ए विद्याधर छे ?, शु ए इद्र छे ?, शु ए चद्र छे ? अथवा शु ए विधाता छे ?, एवी रीते कल्पनाओ करीने पछी विचारपूर्वक निर्णय करवा लाग्यो के, ए महादेव तो नथी, केमके–ते तो लगोट्यो छे, तथा एनो सुवर्ण सरखो वर्ण छे माटे ए कृष्ण पण नथी, राजचिन्हे करी वर्जित होवाथी ए नलराजा पण नथी, त्यागी छे माटे कुनेर भडारी पण नथी, पादचारी छे माटे विद्या-धर पण नथी, भग रहित छे माटे इद्र पण नथी, कलक रहित छे माटे

चंद्र पण नथी, अने घटना वित्रर्जित छे माटे विधाता पण नथी, ए तो सर्वथी अधिक लक्षणधारी देखाय छे तो ए कोण छे एम विचार करतां जाणवामां आव्युं के–अरे! ए तो तीर्थ करवाने अर्थे पोताना अतिशयादि गुण रूप धनवडे करीने प्रवर्त्तित छे एवा देवाधिदेव 'श्रीवीर–जिनेन्द्र' जे लोक कहे छे ते एज छे बीजो कोइ नथी. एम जणाय छे.

हा! ए में शुं कर्युं. आ हुं केवा संकटमां आवी पड्यो, हवे हुं शुं करुं? एनी आगल म्हारुं मान केम रहेशे? 'कथं मया महत्वं मे, रक्षणीयं पुरार्जितम् । प्रासादं कीलिका हेतो–र्भंक्तुं को नाम वांछति ॥ १ ॥" हवे म्हारुं पूर्वे उपार्जेल म्होटाइपणुं हुं केम राखीश? एटले में पूर्वे घणा वादियोने जीत्या छे तेथी हुं लोकमां प्रसिद्ध थयो छुं. पंडित कहेवाउं छुं, तो हवे म्हारे म्हारा पंडितपणांने राखवानो उपाय श्यो करवो के जे थकी ए म्हारी पंडिताइ लोकोमां कायम रहे अने जो एनाथी वाद न करुं तो लोको कहेशे के ए वाद करवा गयो हतो ते पाछो केम भागी आव्यो, माटे म्हें मूर्खाई करी तो पण वाद कर्या वगर म्हारे पाछुं जावुं ठीक नथी. केमके मारे तो हवे ए एकज जीतवो रह्यो छे, तो हवे अल्पने माटे म्हारो वधो यश न गुमाववो ' जेम कोइने एक खीलो जोइतो होय तो ते एक खीलाने माटे आखो प्रासाद भांगी खीलाने काढवा वांछे नहीं, एवो मूर्ख कोइ होय नही ' वली " सूत्रार्थी पुरुषो हारं, कस्त्रोटायितुमीहते । कः कामकलशस्यांशं, स्फोटयेत् ठिक्करीकृते ॥ २ ॥ "–एवो कोण पुरुष होय जे सूत्र एटले तांतणाने अर्थे हारने त्रोडवानी वांछा करे एटले सूत्रनो त्राग जोइतो होय तेटला माटे हार त्रोडवो एम कोइ वांछे नहीं तेम म्हारे पण ए एकने हराव्या विना म्हारो यश रूपी हार त्रोडी नाखवो नहीं. तथा कोण पुरुष ठीकरी जोइती होय तेना

अर्थे मनोवांछितने पूरनार एवो जे कामकुभ तेने फोडी नाखे अर्थात् ठीकरीने अर्थे कामकुभने कोइ फोडी नाखे नहीं, तेम हु पण एनी साथे वाद कर्या विना जो एमज पाछो फरी जाउं तो कामकुभ जेवो म्हारो यश रूप घट ते फोडी नाख्या जेवु थइ पडे, तेथी हु मूर्खोनी गणतीमा थाउ माटे म्हारे एम न करवु वली " भस्मने चदन को वा, दहेद् दु ष्प्राप्यमप्यथ । लोहार्थी को महाम्भोधौ, नौं भङ्क्तुमिच्छति ॥ ४ ॥ " कोण डाह्यो पुरुष भस्म एटले राखने अर्थे दु खे प्राप्त थाय एवा चदनने बाले एटले भस्मने अर्थे मलयागिरि चदनने कोइ बाले नहीं, तथा एवो कोण मूर्ख होय जे लोखंडना कटकाने अर्थे महासमुद्रनी मध्ये नाव एटले वहाण तेने भागी न्हाखवानी वाछा करे अर्थात् कोइ पण भागे नहीं परतु जो मूर्ख होय तो भागी न्हाखे तेम जो हु एनी साथे वाद न करु तो म्हारु यशरूप मलयागिरि चदन ते बलीने भस्म थाय, तथा म्हारी यश रूपी नौका महासमुद्रमा भागी नाख्या जेवु गणाय माटे एवो मूर्ख हु न थाउ अथवा ए पूर्वोक्त श्लोकोनो अर्थ आवी रीते मेलववो के–इन्द्रभूतिए भगवानना अतिशय दीठा तेथी चिंतववा लाग्यो के ए कोइ महापुरुष छे माटे एनी साथे हु वाद करीने अवश्य हारी जइश, तेथी में पण एनी पासे आवीने एक खीलाने माटे म्हारो यशरूपी प्रासाद भांगी न्हाखवा जेवी मूर्खाई करी, तथा एक तातणाने माटे हार त्रोडी न्हांखवानी इच्छा करी वली एक ठीकरीने माटे कामकुभने फोडी न्हाखवा जेवु कर्युं, तथा राखने अर्थे चदन बालवा जेवु कर्युं, तथा लोखडना कटकाने अर्थे महासमुद्रमा म्हारा सपादन करेला यशरूपी ज्हाजने भांगी न्हाखवा जेवु कर्युं, एम चिंतवी प्रभुना वचननो अतिशय जोवा माड्यो

सारङ्गी सिंहशाव स्पृशति सुतधिया नन्दिनी व्याघ्रपोत,
मार्जारी हसबाल प्रणयपरिवशात्केकिकान्ता भुजङ्गम् ।

वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जन्तवोन्ये त्यजन्ति,
श्रुत्वा साम्यैकरूढं प्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहम् ॥ १ ॥

समपरिणामे करी एकांते रहेवाथी प्रकर्षे करीने उपशम्यां छे कलुष एटले पाप जेमनां एवा, वली क्षीण थयो छे मोह जेमनो एवा योगीयोने सुणीने एटले उपशम सहित, पाप रहित, मोहरहित एवा जे योगी मुनिराज तेमने सुणीने अर्थात् एवा मुनिनां वचन सांभलीने बीजा जीव पण जेने जन्म थकीज अरस्परस एक बीजानी साथे वैर रहेलां छे एवा तिर्यंच जीव पण समवसरणमां मदरहित थया थका पोत पोतानां वैरने छांडे छे एटले जेनां एवां वचन छे के जे सांभलवा थकी जीवो आजन्मनां वैरने पण भूली जाय छे ते वैर कोने कोने छे ते कही देखाडे छेः—प्रभुना समवसरणमां आवेली मृगली ते सिंहना बालकने स्पर्शे छे एटले सिंहने अने हरणने आजन्मनुं वैर छे; पण समवसरणमां तेओनो वैर मटी जाय छे तेथी ते पोत पोतामां मलीने एकठां बेठां छे, तथा गाय पोताना पुत्रनी बुद्धिथी वाघना बालकने चाटी रही छे. एटले वाघने अने गायने वैर छे तो पण इहां ते वैर टली गयुं छे, माटे वाघना बालकनी पासे बेठी थकी लाड करे छे, वली विलाडी छे ते स्नेहना वश थकी हंसना बालकने स्पर्श करीने बेठी छे, एटले विलाडी पण हंसना बालकने मारती नथी. वली मोर अने सर्प्पने पोत पोतामां वैर छे तो पण ते प्रभुना समवसरणमां केवा थइ बेठा छे, तो के ढेल (मयूरी) छे ते सर्पनी साथे बेठी छे. ए रीते इहां एवा प्रकारनां वैर ते सर्व जीवोनां मटी गयां छे.

एवो भगवानना वचननो अतिशय देखी इन्द्रभूति विस्मय थइ रह्यो छे. एटलामां भगवान बोल्या के हे इन्द्रभूति ! गौतम गोत्रिय ! तुं भले आव्यो, तुं सुख समाधिमां वर्त्ते छे. एवुं स्वामिनुं वचन सांभली इन्द्रभूति मनमां चिंतववा लाग्यो के ए म्हारुं नाम, अने गोत्र

पण जाणे छे केमके हु एनी साथे क्यारे पण मल्यो नथी, तथापि एम विचार्यु के म्हारु नाम तो जगतमां प्रसिद्ध छे माटे कोण नथी जाणतो ? सर्व कोइ जाणेज छे हु कांइ अछतो माणस नथी. सूर्य क्या छानो रहे ? पण एणे मने म्हारु नाम कहीने जे बोलाव्यो तेनु तत्त्व म्हारा जाणवामां आवी गयु के एणे मात्र मने ठगवा सारुज बोलाव्यो जणाय छे परतु हु कांइ एवो अणसमजु नथी के एना मीठा वचनथी मोहित थइ जाउ हु तो ज्यारे ए म्हारा मनमा जीव छे के जीव नथी ? एवो संदेह रहेलो छे ते कही आपे अथवा ते सदेह भांजी न्हाखे त्यारे जाणुं के ए खरेखरो सर्वज्ञ छे नहीं कां तो मात्र म्हारी साथे एने वाद करवो पडे तेथी व्हीतो थको मने राजी राखवा माटे मीठा वचनथी बोलावे छे तेणे करी ए पोताना मनमां एवु समजतो हशे के ए म्हारी साथे वाद करशे नहीं, पण ते तो हु मानुं नहीं, एवु विचारे छे एटलामा भगवान बोल्या के–हे इद्रभूति ! जीव छे के नथी ? एवो त्हारा मनमा सदेह छे. वेदनां पद जीवने उत्थापवा वालां अने जीवने थापवा वालां जाणीने सदेहमा पड्यो छे त्हेनो अर्थ तु विपरीत करे छे, तेथी तने सदेह रही गयो छे माटे ते वेदनां पदोनो अर्थ पूर्वापर विरोध रहित हु त्हने कहु छु ते सांभल, एम कही भगवान पोते स्वमुखे वेदना पदोनु उच्चारण करे छे ते केवा ध्वनिथी करे छे ते कहे छे–' समुद्रो मथ्यमान किं, गंगापूरोऽथवा किमु । आदिब्रह्मध्वनि किंवा, वीरवेदध्वनिर्विभौ ॥ १ ॥ ' जेम समुद्र मथन करवा मांड्यु होय ते वखते जे ध्वनि थाय त्हेवोज ध्वनि थाय छे के शु ? अथवा गंगानदीनु पूर आवे ते वखते जे ध्वनि थाय तेज ध्वनि थाय छे के शु ? अथवा आदिब्रह्मनी ध्वनि थाय छे के शुं ? एवो वीर भगवानना मुखथी ध्वनि थयो तेमां वेदमा जीवसत्ता निषेधकपद एवां छे के " विज्ञानघन एवैतेभ्यो भूतेभ्य समुत्थाय, तान्येवानुविन-

श्यति, न प्रेत्यसंज्ञास्तीति जीवाऽभावश्रुतिः ” हे गौतम ! ए वेदना पदोनो अर्थ तें आ प्रकारे जाण्यो छे के विज्ञानघन एटले विज्ञान समूह जे चेतननो पिंड (सएव के०) रहेज चेतन पिंड ते (भूतेभ्यो भूतेभ्यः के०) भूत जे पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने आकाश ए पांच भूतो थकी (समुत्थाय के०) उत्पन्न थइने (तान्येवानुविनश्यति के०) ते भूतोनो नाश थया पछी ते विज्ञानघन चेतननो पण नाश थाय छे माटे (न प्रेत्यसंज्ञास्ति के०) परलोक नथी एटले ए पृथिव्यादिक पांच भूतोथी जीव उत्पन्न थाय छे अने ए पृथिव्यादिक पांचभूत ज्यारे नाश पामे त्यारे जीवनो पण नाश थइ जाय माटे जीव मरण पामीने परलोके जाय छे एम कहेवुं वृथा छे केमके परलोके जाय एवो जीव नथी. तो शुं छे तो के ज्ञान छे, रहेज ए भूतोथी उत्पन्न थाय छे. जेम दीपक उपजीने ज्यारे विनाशने पामे छे त्यारे तेनो प्रकाश पण जतो रहे छे तेम भूतोनो नाश थये ए जीवनो पण नाश थाय छे. प्रयोग पण छे के–‘ ज्ञानं नान्यभवगं भौतिकत्वात् दीपवत् ’ ज्ञान छे ते भूतथकी उत्पन्न थाय छे, माटे बीजे भवे जनार नथी एटले बीजा भवमां जवावाळुं नथी. जेम दीपक छे तेम ए पण छे, माटे परभवे जनारो जीव नथी. वली प्रत्यक्ष देखीये छिये के पांचभूत तो देखवामां आवे छे, पण जीव देखवामां आवतो नथी. ज्यारे माणस मरण पामे छे त्यारे तेने बालीने राख करीये छिये. त्यां हाड प्रमुख तो नजरे दीठामां आवे छे, पण जीवनुं चिन्ह तो कांइ देखातुं नथी. एवो विचार वेदना पदना अर्थथी तने भासे छे के जीव नथी. बीजुं वली त्हारा मनमां एम पण भासे छे के वेदमां एवुं पण पद छे ‘ स वै अयमात्मा ज्ञानमयो मनोमयो वाङ्मयश्चक्षुर्मय आकाशमयो, वायुमयस्तेजोमयः, आपोमयः, पृथिवीमयः, क्रोधमयः, अक्रोधमयः, हर्षमयः, शोकमयः, धर्ममयः, अधर्ममयः’ इत्यादि–(स के०) ते

(वै के०) पादपूरणे अथवा सबोधने (अय के०) ए (आत्मा के०) जीव ते ज्ञानमय एटले ज्ञानवत, मनवालो, वचनवालो, नेत्रवालो एमज आकाशमय, वायुमय, तेजमय, जलमय, पृथ्वीमय तथा क्रोधमय, अक्रोधमय, हर्षमय, शोकमय, धर्ममय, अधर्ममय, इत्यादिक वेदना पद देखवाथी तने शंका उत्पन्न थयेली छे के जीव छे के नथी एवो रहने सदेह छे

हे इद्रभूति ! योगीश्वरे प्रत्यक्ष जाणेलो एवो ए आत्मा छे एटले ज्ञानीने ए आत्मा प्रत्यक्ष छे जेम परमाणु बीजा सामान्य जीवोने दीठामा आवता नथी पण ज्ञानवत जाणे छे अनुमानथी पण ए जीवसत्ता सिद्ध थाय छे, ते अनुमान आ प्रमाणे छे–' अस्त्यात्माशुद्धपदवाच्यत्वाद् घटवत्'–छे आत्मा शुद्धपद कहेवापणाथी, माटे जेम घट पद छे ते असयोगी पद छे, तो ए घट नथी एम न कहेवाय तेम आत्मा पद जे छे ते पण सयोग रहित पद छे, तेथी एनी पण नास्ति कहेवाय नहीं जगतमा जे जे पदार्थ शुद्धपद वाच्य छे, ते ते पदार्थ असत् नथी अर्थात् सत् छे वली शास्त्रमा पण आत्मा कहे छे तो हवे शु जाणीए? जीव छे के नथी, केमके एक सूत्र जीव कहे अने एक सूत्र नास्ति कहे एवु जाणी हे इन्द्रभूति ! तने सदेह पड्यो छे पण ते सदेह खोटो छे, व्यर्थ छे, केमके जीवने नास्ति कहेनारु जे " विज्ञानघन " पद तेनो अर्थ तु विपरीत करे छे तेथी ए पूर्वापर विरोधने लीधे तने शका रही छे माटे एनो अर्थ आम करवो योग्य छे के ' विज्ञान ' एटले ज्ञान अने दर्शन ते अभिन्नपणाथकी विज्ञानघन एवु जीवनु नाम छे रहेज " एतेभ्यो भूतेभ्य " एटले भूत ते घटादिक छे तेने देखी उत्पन्न थाय छे एटले ज्ञाता जे विज्ञानघन तेने घटादिक जे ज्ञेय ते देखी ज्ञान उपजे छे त्यारे जाणे के घट ते एहज छे ए ज्ञान ते " समुत्थाय " उपजीने " तान्येव " रहेज ज्ञान ते ज्ञेयनो

उपयोग जावाथी तेमांज नाश थाय " अनुविनश्यति " पछी ते घटना बोधनो पर्याय विनाश पामे छे " न प्रेत्यसंज्ञास्ति " जे पूर्वनी ज्ञानसंज्ञा हती ते रहे नहीं एटले जे घट दीठो ते घटनुं ज्ञान त्हेज घटमां रह्युं पण घटनो उपयोग पटमां न थाय, परमार्थ ए छे के इन्द्र-भूतिने विज्ञानघननी श्रुतिना अर्थथी संदेह हतो के जीव भूतमां उत्पन्न थाय अने भूतमांज नाश थाय परंतु परलोक नथी, ए संदेह हतो ते प्रभुए अर्थ कह्यो के जे उपयोग घटनो हतो ते उपयोग घटमांज रह्यो ? परंतु पटमां नथी. जो एम न मानीए तो " यथाकारी तथा भवति " ज्हेवुं करे त्हेवुं थाय " साधुकारी साधुर्भवति " भलुं कर-नारो भलो थाय अने " पापकारी पापी भवति " पाप करनारो पापी थाय ' पुण्यं पुण्येन कर्मणा भवति ' पुण्य कर्म करीने पुण्य थाय ' पापः पापेन भवति ' पाप करीने पापी थाय तथा " दृदृदृ " ए त्रण दकारनो अर्थ दया, दान अने दम छे ' इति दकार त्रयं यो वेत्ति ' ए त्रण दकारने जाणे ' स जीवः ' ते जीव छे ए यजुर्वेदादिकनां पद छे ते केम मले, माटे ए अनुमान करीये के ' विद्यमान भोक्तृकमिदं शरीरं. भोग्यत्वादोदनादिवत् ' विद्यमान छे भोक्ता जेहनो एवुं ए शरीर एटले विद्यमान छे भोगवनारो ज्हेनो एवुं शरीर छे तो ए सूत्रथी एनो भोगवनारो जीव छे ते विद्यमान छे एम सिद्ध थयुं. तेथी ए शरीर भोगववा योग्य छे, माटे एनो भोगवनार पण छे. जेम आहार भोग्य छे तो तेनो भोक्ता पण छे तेम ए शरीरने भोगवनारो जीव छे ए अनुमानथी जीव छे ते माटे हे इन्द्रभूति ! जेम ' क्षीरेघृतं ' दूधमां घृत ' तिले तैलं ' तिलमां तेल ' काष्टे अग्निः ' काष्टमां अग्नि ' सौरभ्यं कुसुमे ' फूलमां सुगंध अने ' चद्रकांतौ सुधा ' चंद्रनी कांतिमां अमृत ' यद्वत्तथा ' जेम ए छे तेम ' आत्माङ्गगतः प्रतिक्षेत्रं भिन्नः ' आत्मा शरीरमां छे. सर्व शरीर क्षेत्रमां जुदो जुदो

छे ते ' अपौद्गलिक ' पुद्गल रहित ' पारिणामिक ' पारिणामिक छे, कर्ता छे, भोक्ता छे, ' स जीव ' ते जीव छे ' अन्यथा जीव विना-दया किंविषया स्यात् ' एम जो जीव न मानिये तो जीवदया ते शाने विषे होय ' तस्मादस्ति जीव ' माटे हे इन्द्रभूति ! जीव छे इत्यादिक वेदपदना अर्थ सांभली, सशय टाली, मद छाडी, वैराग्य पामी, श्रीवीरप्रभुने त्रण प्रदक्षिणा देइ, इन्द्रभूति पगे लाग्यो अने शुद्ध-भावथी पाचसो छात्रो सहित दीक्षा लीधी, एनु गौतमगोत्र हतु माटे गौतम एहवे नामे प्रसिद्ध थयो भगवानना मुखथी ' उपन्नेवा, विगमेइवा, धुवेवा, ' ए त्रिपदी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी कह्यु छे के–' श्रीवीरमुखतो वेदपदार्थमवगत्य च । प्रव्रज्य त्रिपदीं लब्ध्वा, द्वादशाङ्गी स निर्ममे ' ॥ १ ॥ श्रीवीरप्रभुना मुखथी वेदपदनो अर्थ जाणी दिक्षा लेइने त्रिपदी पामी बार अगनी रचना करी

२ श्रीअग्निभूतिगणधर—

इन्द्रभूतिए दिक्षा लीधी ए वात एनो बीजो भाइ अग्निभूति छे तेणे सांभली त्यारे विचारवा लाग्यो के कदाचित् अग्नि छे ते पाणी थइ जाय, पाषाण नरम थइ जाय, पर्वत वायुथी डगी जाय, सूर्य पश्चिम दिशामां उदय थाय, चद्रमाथी अगारा वर्षे, पाणी छे ते अग्निज्वाला थइ जाय, अमृत खावाथी मरण नीपजे, विष खावाथी जीवतो थाय, पातालमां पृथ्वी पेसी जाय, मेरु पर्वत चलायमान थाय, समुद्र मर्यादा मूकी दे, एटलां वानां बनी जाय, परन्तु म्हारो भाइ ए इन्द्रजालीयाथी हारी जाय ए वात क्यारे पण बने नहीं एम चिंतवना करे छे एवामां समोसरणथी केटलाक बीना लोको गाममां आव्या तेमने अग्निभूतिए पोताना भाइ सबधि वृत्तांत पूछवाथी ते कहेवा लाग्या के शु पूछो छो ? इन्द्रभूति तो भगवानना शिष्य थया, ए अमे अमारी नजरे जोइ आव्या छिये एवु सांभली अग्निभूति विचारवा लाग्यो के म्हारो भाइ अत्यत डाह्यो छतां केम छलाय ? पण दैवेच्छाथी खरेखर छलाइ गयो हशे, तो हवे हु त्यां जइ ए इन्द्रजालियाने जीतीने म्हारा भाइने पाछो लइ आवु अने एना सर्वज्ञपणानु बिरुद पण टाली आवु एम विचारी आमर्ष सहित पांचसे छात्रोना परिवारे परवर्यो थको, बिरुदावली बोलावतो थको त्यां जइ समवसरणनी पहेली पावडीए पग मा्यो त्यारे प्रभुए पण तेने पूर्वनी रीते नाम

गोत्र सहित बोलाव्यो अने कह्युं के हे अग्निभूति ! तुजने ' कर्म छे किंवा नथी ' एवो संशय छे ते तुं वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी तेथी संशय रहे छे. ते आवी रीते— ' पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यं ' इत्यादिक वेदना पदथी तुं जाणे छे के जीव छे व्हेज सर्वे छे, तो एथी बीजुं कर्म ते वली जूदुं केम संभवे ! एटले कर्म नथी, केमके आत्मा तो अमूर्त्त छे तेने कर्म केम लागे ? कारण के मूर्त्तने अने अमूर्त्तने मांहो मांहे संयोग होय नहीं माटे कर्म नथी. वली कर्मथी जीवने सुख दुःख पण केम थाय. ए पद ऊपरथी कर्म नथी, एम तुं माने छे. तथा वली कोइक वेदनां पद आम पण छे के " पुण्यः पुण्येन, पापः पापेन " ए उपरथी कर्म छे एम पण देखाय छे. तो शुं कर्म छे के नथी ए त्हारो संदेह छे. पण हे अग्निभूति ! जे वेदनां पद छे ते आत्मस्तुतिनां छे, परंतु कर्म निषेध करनारां नथी; केमके अमूर्त्त छतां मूर्त्त द्रव्य साथे संयोग तो प्रत्यक्ष देखाय छे. अमूर्त्त आकाशने मूर्त्ति वादलाओने परस्पर योग थाय छे. जे मूर्त्तिवंत छे ते अमूर्तने सुख दुःख करे छे, जेम मदिरापान करनारने अचेतपणुं थाय छे ते मदिरा मूर्तिवंत छे पण अमूर्त्त जीव छे तेने मुंझावे छे माटे कर्म छे एम सिद्ध थाय छे. वली लोकमां एक सुभाग्य, एक दुर्भाग्य, एक सुरूपवान एक कुरूपवान, एक धनवान, एक दारिद्री ए सर्व शुभाशुभ कर्म विना केवी रीते संभवे ? ए रीते वेदपदमां पण कर्म सत्ता सिद्ध छे तेथी कर्म अवश्य छे, इत्यादिक वेदपदना अर्थ सांभलीने अग्निभूतिनो पण संशय टल्यो. त्यारे अहंकार छोडी भाव-सहित पांचसौ छात्रनी साथे दीक्षा लीधी.

३ श्रीवायुभूतिगणधर—

त्रीजो भाइ वायुभूति छे तेणे अग्निभूतिए दीक्षा लीधी. ते वात सांभली त्यारे चिंतववा लाग्यो के म्हारा बे भाइए ए सर्वज्ञनी पासे दीक्षा लीधी तो ते कोइ महात्मा पुरुषोत्तम देखाय छे माटे हुं पण तेने वांदुं पूजुं अने संशय पूछी पाप रहित थाउं. एम विचारी ते पण भगवान पासे आव्यो. भगवाने तेमने पूर्वोक्त रीते बोलाव्यो अने कह्युं के हे वायुभूति ! ' जीव व्हेज शरीर एटले जीव अने शरीर ए बे एक छे ?' एवो तुजने संशय छे, ते वेदपदना अर्थ बराबर न जाणवाने लीधे छे. ते वेदपद— " विज्ञानघनएवैतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय " इत्यादि ए पदथी जीव सत्ता सिद्ध छे, जीव छे तो ते जीवनुं भोग्य जे शरीर ते जीवथी भिन्न छे तथा ' सत्येन लभ्यस्त-पसाह्येष ब्रह्मचर्येण ' इत्यादि वेदपदनो अर्थ छे के सत्य, तप, ब्रह्मचर्यथी संयुत पुरुष, जाणे छे के जीव शरीरथी भिन्न छे. प्रमाणथी पण जीव अने शरीर भिन्न देखाय छे; केमके ए म्हारुं शरीर छे एम कहेवाय छे, तो इहां म्हारुं शरीर छे एम कहेनारो जीव छे, माटे जीव अने शरीर भिन्न छे. एवुं सांभलीने वायुभूतिए पण दीक्षा लीधी.

४ श्रीअव्यक्तगणधर—

चोथो अव्यक्त पण प्रभु पासे आव्यो, स्वामीए कह्यु के 'पांचभूत छे के नथी' ए तुजने संदेह छे, ते तु वेदपदनो अर्थ बराबर नथी जाणतो माटे संदेह रहे छे 'स्वप्नोपम वै सकल' स्वप्ननी पेठे सर्व छे ए वेदपद उपरथी तु जाणे छे के—पांचभूत छे के नहीं ? पण ए पाठ जे छे ते अनित्यता बतावनारो छे, परतु भूतनी नास्ति करनार नथी. वली पृथ्वी देवता, आपो देवता, इत्यादिक वेदपद जे छे ते सहु भूतनी सत्ता जूदी जूदी कहे छे, माटे पांचभूत छे. ते प्रत्यक्ष देखाय छे. एवु सांभली संशय रहित थइ तेणे पण दीक्षा लीधी.

५ श्रीसुधर्मगणधर—

पांचमो सुधर्म आव्यो, तेने भगवाने कह्यु के हे सुधर्म ! आ भवमां जे व्हेवा होय ते परभवमां रहेवाज थाय एटले पुरुष मरीने पुरुषज थाय अने स्त्री मरण पामीने परभवमां पण स्त्रीज थाय छे' एवो तुजने संदेह छे ते वेदपद 'पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते पशु पशुत्व' एनो अर्थ तु आवी रीते जाणे छे के पुरुष मरीने पुरुष थाय, अने पशु मरण पामीने पशु थाय, ए अर्थ तु नित्य जाणे परतु नित्य नथी, ए जे वेदपद छे ते कोइक जीव आश्रयी छे जो ए पद नित्य होय तो वेदमां लखे छे के 'शृगालो वै जायते य स पुरुषो दह्यते' (य') जे पुरुष (दह्यते) बले छे (स) ते पुरुष (शृगालो) सीआलीओ (जायते) थाय छे, एटले जे पुरुष बले छे ते पुरुष मरण पामीने सीआल थाय छे एमां पुरुष ते सीयाल थाय एम कह्यु, माटे पुरुष मरीने पुरुष ज थाय एवो संशय राखवो नहीं. पुरुष मरी सीआल पण थाय छे इत्यादि सांभली संशय मटावी सुधर्मे पण दीक्षा लीधी

६ श्रीमण्डितगणधर—

छठ्ठो मंडितजी आव्यो तेने प्रभुए कह्युं 'बंध मोक्ष छे के नथी' ए तुजने संशय छे ते तु वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी. ते वेदपद 'सएष विगुणो विभुर्न बध्यते, संसरति वा न मुच्यते' (स) ते (एष) ए (विगुण) [illegible] रहित (विभु) सर्वव्यापी जीव (न बध्यते) कर्मे करी बंधानो नथी (संसरति वा) [illegible] नथी एटले चालतो पण नथी (न मुच्यते) कर्माथि [illegible] नथी ए अर्थथी तु जाणे छे के जीवने बंध मोक्ष नथी परतु [illegible] सिद्ध जीवना वर्णवनु छे, केमके सिद्धना जीवोने बंध [illegible] नथी [illegible] छे तेने तो बंध अने मोक्ष बने छे एवु सांभली [illegible] दीक्षा लीधी.

७ श्रीमौर्यपुत्रगणधर—

सातमो मौर्यपुत्र आव्यो, तेने प्रभुए कह्युं हे मौर्यपुत्र ! 'तुजने देव नथी' एवो संदेह छे ते तुं वेदना पदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी, ते वेदपद 'मायोपमान इन्द्र, यम, वरुण, कुबेरादि' माया जेम इन्द्र, यम, वरुण अने कुबेरादिक छे एनाथी तुजने एवो संदेह छे के देवादि सर्व मायारूप छे; परन्तु वस्तुगते नथी, एम तुं जाणे छे. पण ए मायारूप जे कह्या छे ते तो अनित्यता जणाववा माटे कह्या छे अने वेदमां 'सएष यज्ञायुधी यजमानोऽञ्जसा स्वर्गलोकं गच्छति'—यज्ञरूप आयुध छे जेहने ते ए यज्ञ करनारो यजमान तत्काल सूधो स्वर्ग एटले देवलोके जाय छे ए वेदपद ऊपरथी देवलोक छे एम सिद्ध थाय छे एवी रीते वेदपदनो अर्थ सांभली मौर्यपुत्रनो संदेह टल्यो तेथी दीचा लीधी.

८ श्रीअकंपितगणधर—

आठमो अकंपित आव्यो, तेने स्वामीए कह्युं हे अकंपित ! तुजने 'नारकी नथी' ए संदेह छे ते वेदपदना अर्थनुं रहस्य तुं जाणतो नथी तेने लीधे संदेह छे. ते वेदपद 'नेह वै प्रेत्य नरके नारकास्सन्ति' ए वेदपदना अर्थथी तुं एम जाणे छे के परलोकमां नारकी नथी. परन्तु ते अर्थ तुं खोटो समजे छे एनो अर्थ आम छे के (नेह) नहीं इहां (प्रेत्य) परलोकमां (नरके) नरकने विषे शाश्वता (नारका) नरकना जीव (वै) निश्चय एटले नारकीना जीव शाश्वता नथी एम जाणवुं, पण नारकी नथी एम न जाणवुं. केमके 'नारको वै एष जायते यः शूद्रान्नमश्नाति' जे शूद्रनुं अन्न लीये छे ते नारकी थाय ए वेदपद ऊपरथी नारकी छे एम सिद्ध थाय छे एम सांभली निःसन्देह थई एणे पण दीक्षा लीधी.

९ श्रीअचलभ्रातागणधर—

नवमो अचलभ्राता आव्यो, तेने प्रभुए कह्युं के म्हारा मनमां 'पुण्य पाप छे किं वा नथी' एवो संदेह छे ते तुं वेदना पदनो अर्थ विरुद्ध समजे छे तेने लीधे छे. ते वेदपद 'पुरुष एवेदम्' इत्यादि बीजा गणधरना वेदपदना पाठमां एनो बधो अर्थ करेलो छे ते रीते आंही पण जाणवो, माटे जीव पुण्यथी सुख पामे अने पापथी दुःख पामे. एम पुण्य अने पाप ए बे वेदमां छे. ए अर्थ सांभली संदेह टाली एणे पण दिचा लीधी.

१० श्रीमेतार्यगणधर—

दशमो मेतार्य आव्यो, तेने प्रभुए कह्युं. हे मेतार्य ! 'परलोक छे के नथी'

एवो तुजने संदेह छे तेनी ऊपर वेदनां पद जे रीते प्रथम गणधरने कह्यां हतां ते रीते सर्व कही देखाड्यां वली ' अस्ति परलोक इहलोकस्यान्यथानुपपत्तेस्त्वत्पूर्वजवत् '– परलोक छे जो न होय तो आ लोक पण केम कहेवाय माटे त्हारा पूर्वजनी परे परलोक पण छे, जेम त्हारा पूर्वज छे तो तु पण छे अने जे पाप करीने मरण पामे ते नरकमां जाय, अने धर्म करे ते मोक्षे जाय एवो अर्थ सांमली तेणे पण दीक्षा लीधी

११ श्रीप्रभासगणधर—

अगीआरमो प्रभास आव्यो, त्यारे प्रभु बोल्या, हे प्रभास ! तुजने ' मोक्ष छे के नथी ' एवो संदेह छे ते तु वेदपदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी, तेने लीधे छे ते वेदपद " जरामर्यं एतत्सर्वं यदग्निहोत्र "–' अग्निहोत्र ' यज्ञ छे ' तत्सर्वं ' ते सर्व ' जरामर्यं वा ' जावज्जीव करवो अने ए होममां जीव मरण पामे छे, ते पाप रूप छे ते स्वर्गना सुख आपे, पण तेथी मोक्ष न थाय केमके जावजीव ए करवो कह्यो माटे स्वर्गे न जवाय पण ते विना मोक्ष जावानो उपाय नथी तो मोक्ष केम थाय एम विचारतां मोक्ष नथीज, एवो अर्थ तु करे छे तेथी तुजने संदेह रह्यो छे परंतु ते अर्थ तु करे छे तेम नथी. एनो अर्थ आवी रीते छे के अग्निहोत्र छे ते जावज्जीव सर्व पण छे परंतु वा शब्दथी मुक्तिना अर्थी जे जीवो छे तेओए मोक्षना कारण सारू पण क्रियानुष्ठान करवु, एटले ए होमज सर्वकाल करवो नहीं परंतु मोक्षनो पण उपाय करवो तथा वली बे ब्रह्म छे ' परमपर ' तेमां एक तो परब्रह्म अने बीजो अपरब्रह्म, ' तत्र पर सत्य ज्ञानमनंत ब्रह्म ' त्यां परब्रह्म तो सत्यरूप, ज्ञान अनंतरूप, नाश रहित छे एटले अनंत ज्ञानमय ब्रह्म ते पर छे ए श्रुतिथी मोक्ष छे एम जाणवु ए अर्थ सांमली निःसन्देह थई एणे पण दीक्षा लीधी. इति गणधरवाद .

गणधरस्थापना अने चन्दनबालानी दीक्षा—

श्रीगौतमस्वामीथी मांडीने यावत् प्रभासजी पर्यंत सर्व मली अगीआर विद्वान् आव्या ते सर्वना मनमा जे जे संशय हता ते प्रभुए टाल्या तेथी अगीआरे जणे मली पोताना चुम्मालीशसो शिष्यो सहित प्रभु पासेथी दीक्षा लीधी, प्रभुए सर्वने त्रिपदी आपी ते आवी रीते–प्रथम ' उपन्नेइ वा ' एटले सर्व उपजे छे एम कह्यु त्यारे शंका पेदा थाय छे के जे सर्व उपजे छे तो ते जगनमा केवी रीते समाय ?, त्यारे बीजु पद ' विगमेइ वा ' एटले विनाश पामे छे ए पदमा पण शंका

उपजे छे के जो विनाश थतो जाय तो सर्व संसार शून्य थइ जाय ?, एम विचारी त्रीजुं पद कहे छे ' धुवे वा ' एटले ए संसारनी स्थिति निश्चल छे त्यारे जाण्युं के उपजे छे, विणसे छे अने रहेनारो छे ते रहे पण छे एवी संसारनी स्थिति सदा सर्वदा त्रणे कालमां चालती आवे छे. एम त्रिपदी प्रभु पासेथी पामीने ए अगीआरे गणधरोए बे घडीमां एटले एक मुहूर्त्तमां द्वादशांगीनी रचना करी ते अवसरने विषे इन्द्र महाराज पोते रत्नना थालमां वासक्षेप लेइ हाजर थया. तेमांथी प्रभुए मुट्ठी भरीने अगीआरे गणधरने माथे अनुक्रमे वासक्षेप कर्यो, ए तीर्थनी स्थापना थइ. देवताओए देवदुन्दुभि वगाड्यां अने जय जय शब्दोच्चार कर्यां पछी चंदनबालाए पण भगवाननी देशना सांभली प्रतिबोध पामीने महामहोत्सव सहित प्रभुपासेथी दीक्षा लीधी, तेनी पछवाडे बीजा पण घणा जनोए दीक्षा लीधी, घणा श्रावक थया, घणी श्राविकाओ थइ, एम चार प्रकारना संघनी स्थापना थइ.

गौतमस्वामिए अष्टापदतीर्थनी यात्रा करतां १५००३ तापसने दीक्षा आपी—

गौतम स्वामीनुं उत्कृष्टरूप, प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान, छट्ठ अट्ठमादिक तपश्चर्या करता थका, धर्मदेशना देता थका, तेजोलेश्यादिक अट्ठावीश लब्धिना धरनार, चार ज्ञानवंत, चौद पूर्वधारी, श्रुतकेवली थया, जेने दीक्षा आपे, तेने केवलज्ञान उपजे पोताने प्रभु ऊपर स्नेह घणो तेथी केवल उपजे नहीं त्यारे चिंतव्युं के मने केवलज्ञाननी प्राप्ति थाशे के नहीं ? गौतमनी एवी चिंतवणी जोइ श्रीवीर भगवान देशनामां एवी रीते बोल्या के—जे पोतानी लब्धिए अष्टापद पर्वत ऊपर चढी चोवीश तीर्थंकरने वांदे, ते जीव तेज भवे मोक्षे जाय, एवी वीरनी वाणी सांभली बत्रीश कोश ऊंचो अष्टापद पर्वत छे, जेनी आठ पावडीयो छे. तेना ऊपर सूर्यना किरण अवलंबीने श्रीगौतमस्वामी पोतानी लब्धिथी चढ्या,

चोवीश जिनने वादी ' जगचिंतामणि ' स्तवन करी श्रीवयरस्वामीनो जीव तिर्यक्‌जृंभकनामा सामानिक देव छे तेने पुडरीकाध्ययनथी प्रतिबोधीने नीचे उतर्या, त्यारे पन्नरशेने त्रण तापस चोथ, छठ्ठ अने अट्ठम तपने पारणे कदमूल फलादिनु पारणु करे, एम करता वार मास वही गया छे तेमणे श्रीगौतमने उतरता दीठा त्यारे चिंतव्यु के आपणे एना शिष्य थाइए तो अष्टापद ऊपर जइ देवने वादीये एम धारी उठीने श्रीगौतमजीने पगे लाग्या, गौतमे तेमने प्रतिबोधिने दीक्षा आपी, पछी त्यांज ऊभा रही, सर्वे तापसोने स्वलब्धिबलथी ऊपर चढावी अने देव वदावीने पाछा नीचे उतार्या, गौतमस्वामीए पूछ्यु के हे शिष्यो ! तमे पारणु करशो ? ते बोल्या हा स्वामी, पछी गौतमस्वामी पोतानी लब्धिथी खीरनो एक पात्र सवा शेरनो भरी आव्या अने तापसोने कह्यु के उठो पारणु करो, त्यारे खीरपात्र देखी तापसो कहेवा लाग्या के खीर थोडी ने खानार घणा, माटे आटली खीरथी तो आखे आंजण थाशे ? अथवा बधाने एकेकु टीलु कराशे ? पछी, गौतमस्वामीए कह्यु के हे शिष्यो ! माडले बेसो म्हारे पारणु करी गुरु पासे जावु छे एम कही माडले बेसाडी तापसोनो सदेह भाजवाने अर्थे खीरना पात्रामा पोतानो अगूठो मेल्यो, त्यारे अक्षीण लब्धियकी पन्नरशे त्रण तापसने पारणा कराव्या, पोते पण पारणु कर्युं, त्या पांचशे एक तापसने तो खीर जमता जमता श्रीगौतमना गुण चिंतवता चिंतवता केवलज्ञान उपन्यु अने पाचशे एकने प्रभुनु समोवसरण देखी केवलज्ञान उपन्यु तथा पाचशे एक तापसने श्रीवीर भगवाननु मुख देखताज केवलज्ञान उपन्यु एम पन्नरशे त्रण तापस केवली थया तेओ वीरभगवानने वांदी केवलीनी सभामा जावा माड्या, त्यारे गौतम बोल्या हे शिष्यो ! तमे छद्मस्थनी सभामा बेसो, ए तो केवलीनी सभा छे माटे एमां न बेसवु त्यारे

वीरभगवान् बोल्या हे गौतम ! तमे केवलीनी आशातना म करो, ए पन्नरशे त्रण केवली थया छे, ते सांभली गौतम खेद पाम्या के जुओ ! म्हारा शिष्य केवली थया पण हुं केवली थातो नथी. एम घणो घणो चित्तमां खेद करवा लाग्या, त्यारे भगवाने कह्युं के हे गौतम ! तुं खेद म कर, अंते आपणे बन्ने सरखे सरखा थइशुं.

चातुर्माससंख्या अने प्रभु महावीरनो निर्वाण—

ते काल, ते समयने विषे, श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने अस्थिग्रामनी निश्राये वर्षाकालनुं पहेलुं चोमासुं थयुं. त्यार पछी चंपानगरीमां अने पृष्टचंपानी निश्राये त्रण चोमासां वर्षाकालना थया, विशाला नगरीमां वाणिज्य गामनी निश्राये बार चोमासां वर्षाकालनां थयां, राजगृहनगरना नालंदीनामे पाडानी बाहेर चौद चोमासां वर्षाकालनां थयां, मिथिला नगरीए छ चोमासां कर्यां, भद्रिका नगरीए बे चोमासां कर्यां, आलंभिका नगरीमां एक चोमासुं कर्युं, सावत्थि नगरीमां एक चोमासुं कर्युं, अनार्य देशमां एक चोमासुं कर्युं, एवं एकतालीश थयां, छेल्लुं बेतालीशमुं चोमासुं मध्यम पावापुरी (अपापा) नगरीमां हस्तिपाल राजानी जूनी लेखकशालामां जगातनी मांडवी कारकुननी सभामां वर्षाकाले रह्या. ते चोमासानो चोथो महीनो सातमुं पखवाडीयुं कार्त्तिक वदि आमावास्याना दिवसनी रात्रिना छेहडाने विषे, भगवान श्रीमहावीरस्वामी काल प्राप्त थया. जाति, जरा, मरण, बंधन एटले जनमवुं, वृद्ध थावुं, मरवुं तेनुं जे बंधन तेने छेदीने सिद्ध थया, तत्त्व जाणवा वाला थया, मुक्त थया, सर्व दुःखनो अंत कर्यो, संताप रहित थया, सर्व दुःखनो क्षय थयो. पांच संवत्सर मांहेलो चंद्रनामा बीजो संवत्सर वर्त्ते छे तेने विषे, प्रीतिवर्द्धन नामे मास ते कार्त्तिक मास तेने विषे, नंदीवर्द्धन नामा पक्ष, अग्निवेश्य

नामा दिवस तेने विषे तथा क्यांएक 'उपशम' एवु बीजु नाम ए दिवसनु कहे छे, देवानदा नामा रात्रि क्याएक बीजो ' निरत्ति ' एवु नाम पण ए रात्रिनुं छे जे लवमा भगवत मोक्षे पहोता, ते लवनो नाम अर्च छे एटले अर्च नामा लव, मुहूर्त्त नामा प्राण एटले श्वासोच्छ्वास, सिद्ध नामा स्तोक, नाग नामा करण, सर्वार्थ सिद्ध नामा मुहूर्त्त, स्वाति नामा नक्षत्रनी साथे चद्रमानो योग आवे छते भगवान काय स्थिति, भवस्थिति खपावीने कालगत थया, यावत् मन सबधि शरीर सबधि सर्व दु खथी रहित थया, जे रात्रिमा श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रात्रिमा चारे निकायना घणा देव, अने घणी देवीयो स्वर्गलोक थकी हेठा तिर्च्छा लोकने विषे उतरवा लाग्या तेथी तथा ऊचा उर्ध्वलोकने विषे जावा लाग्या तेथी ते रात्रिने विषे आकाशमा घणो उद्योत थयो जे रात्रिमां श्रमण भगवत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रात्रिमा घणा देव अने देवीओ आवता जाता बहुज आकुल थया तेथी अव्यक्त (कोलाहल) शब्द थयो जे रात्रिमा भगवान श्रीमहावीर स्वामी कालगत थया ते रात्रिमा गौतम जे इद्रभूति–अणगार भगवानना शिष्य तेनु प्रेमबधन त्रूटयु तेथी श्रीगौतमस्वामीने केवलज्ञान अने केवल दर्शन उपन्यु

श्रीगौतमस्वामीने केवलज्ञान केम उपन्यु ?—

पोतानो अतसमय जाणीने श्रीमहावीर देवे श्रीगौतमस्वामीनो पोतानी ऊपर निबिड स्नेह जाणी ते प्रशस्त स्नेह राग निवर्तन करवाने अर्थे सध्या समयथी पहेला श्रीगौतमस्वामीने देवशर्मा ब्राह्मणने प्रतिबोध करवा सारु पार्श्ववर्त्ती ग्रामे मोकल्या हता, ते ब्राह्मणने प्रतिबोध आपी त्या रात्रि रही प्रभाते पाछा वल्या, त्यारे मार्गमा केटलाएक देवोने शून्य चित्ते देख्या अने उपयोगथी वीरनिर्वाण सांभल्यु, त्यारे वज्राहतनी परे मूर्च्छा पाम्या, थोडीवार पछी सावधान थया, त्यारे मोहना वशे

विलाप करवा लाग्या के हे प्रभो ! तमे त्रण लोकना सूर्य अस्त पाम्या तो हवे मिथ्यात्व अंधकार पसरवा मांडशे ! कुतीर्थरूप घुवडना समूह जाग्रत थइ गर्जारव करशे ! दुरमति दुःष्कालरूप राक्षस प्रवेश करशे ! कुमतिरूप चोर घणा जागशे ! जेम सूर्य अस्त थये कमल कुमलाय, तेम चतुर्विध संघरूप कमल वन कुमलाशे ! जेम चंद्र विना आकाश, दीपक विना मंदिर, अने सूर्य विना दिवस, शोभता नथी तेम तमारा विना ए भरत क्षेत्र शोभा रहित थाशे ! हे वीर ! तमारा विना हवे सात प्रकारना ईति उपद्रव प्रवृत्त थशे, हे वीर ! तमारा विना पाखंडी रूप तारा देदीप्यमान थशे, तमारा विना धर्मरूप चंद्रमाने पापरूप राहु ग्रहण करशे, हे महावीरदेव ! हवे हुं कोना पगतलियामां उल्लासतो थको म्हारा मनना संदेह पूछीश ? कोने हुं भगवान् कही बोलावीश ? कोने हुं नमीश ? हे प्रभो ! हवे मुजने तमारे विना बीजो कोण गौतम कही बोलावशे ? हा हा !!, हे वीर ! हे वीर !! तमे ए शुं कर्युं जे आ वखते मने दूर कीधो, लौकिक पणुं पण नहीं राख्युं, हुं शुं बालकनी परे आडो वेशी आपनो छेहडो पकडी रहेत ? अथवा शुं केवलज्ञाननो भाग मांगत ? शुं मोक्षमार्ग संकीर्ण थात ? अथवा शुं तमोने कांइ भार लागत, के मुजने भोलवीने चाल्या गया ? हे वीर ? जे वेलाए पोतानो बालक वेगलो होय तो पण तेने बोलावीने पोतानी पासे राखवो जोइये ते वेलाये उलटो तमे मुजने पोताथी दूर कर्यो. हे वीर ! तमे शुं तमारा ऊपर म्हारो कृत्रिम स्नेह जाण्यो ? हे वीर ! हुं तमारे शुं असुखकारी थतो हतो जेथी मने मूकी गया, हे वीर ! तमे मुजने केम वीसारी मूक्यो, हे वीर ! तमे आजे मुजने म्होटा विरह रूप समुद्रमां नाख्यो, प्रभो ! तमारा विना हुं म्होटा वियोग रूप दाहमां दाझ्यो, हवे तमारा विना म्हारो दुःख कोण भांजशे, हे वीर ! हवे समोसरणनी शोभा विलय थइ गइ, हवे मुक्ति मार्गनो साथ

भाग्यो, अने हवे जेम जल विना माछली टलवले तेम तमारा विना चतुर्विध श्रीसघ टलवलतो थशे, हे वीर ! तमारा वचनरूप उपशम जलविना जिनशासन रूप वाडीयो, वाग, वगीचा सूकाइ जशे, तमारा विना समता रूप केतकी सूकाइ जशे, माटे हे वीर ! हवे भव्य जीवना मनरूप भ्रमर क्या जइने गुजारव करशे ? हे वीर ! हे गुणनिधान ! हे जिनशासननायक ! हे भव्यजीवसुखदायक ! हे जिनशासन–सणगार ! हे करुणासागर, तमे मुजने विलविलतो मूकीने सात राज दूर जइ वस्या तो हा हा वीर ! हवे हु कोनी साथे सदेशो कहेवराबु ? एम अनेक प्रकारे गौतमस्वामी प्रशस्त मोहना उदयथी नाना प्रकारना दु ख करता थका श्रीगौतमने वार वार मोहना वशथकी वी ! वी ! एवा अक्षर मुखे रही गया पछी गौतमस्वामीए विचार्युं के ए श्रीवीत राग तो नि स्नेहीज होय, माटे ए तो म्हारोज अपराध छे, हुंज मूर्ख थयो जे में मोहना वश थकी श्रुतनो उपयोग आपी जोयु नहीं माटे ए म्हारा एकपक्षी स्नेहने धिकार थाओ अरे ! आ मोहराजानो कहेवो महात्म्य छे के म्हारा सरखाने पण एवी रीते पीडा करे छे तो वली वीजा ते शी गणतीमां ? अरे ! म्हें रागना वशथकी विचार्यु नहीं के ए श्रीवीर प्रभु तो निरागी निस्नेही हता तो म्हारे एना ऊपर राग करवो ते फोकट क्लेशकारीज जाणवो ए निर्मोहीने शानो मोह होय अर्थात् कांइ पण न होय वली हे जीव ! तु कोण छे अने ते कोण छे तेमा पण जो निश्चय दृष्टीथी विचारवा जइये तो श्रीवीर अने हु काइ जूदा नथी केमके आ आत्मा तो एकज ज्ञान, दर्शन, चारित्रमयी शाश्वतो छे, वीजा सर्व भाव अशाश्वता छे, हु एकलो छु, म्हारो वीजो कोइ स्नेही नथी, जगतमा कोइ कोइनु नथी इत्यादिक सम भावना भावता श्रीगौतम स्वामीने केवल-

ज्ञान उपन्युं, इंद्रादिक देवताओए प्रभाते केवलज्ञाननो महोत्सव कीधो कवि कहे छे के ' श्रीगौतमस्वामी अहंकारथी तो प्रतिबोध पाम्या अने रागथी गुरुभक्ति करी तथा विषादमां केवलज्ञान पाम्या ' ए आश्चर्य छे, गौतमस्वामिए सौधर्मस्वामीने दीर्घायु जाणीने पाट दीधो. पछी वार वरस केवल पर्याय पाळी अने सर्व मली बाणुं वर्षायु भोगवीने, मोक्षे पोहोता. गौतमस्वामी जेमने दीक्षा आपे ते तेहेज भवमां मोक्षे जाय ए गौतमस्वामीमां म्होटो अतिशय हतो.

दीपमालिका पर्वनी उत्पत्ति—

जे रात्रीमां भगवान मोक्षे गया ते रात्रिमां नव मल्लकी जातिना उपन्या, अने नव लिच्छवी जातीना उपन्या, काशी कौशल्य देशना मालिक गण एटले परिवारना धणी एवा अढारे गण राजा छे ते भगवाननो मामो चेडो महाराजा छे तेना ए अढारे देशना राजा मित्र समान छे माटे मलवाने अर्थे आव्या हता ते राजा अमावास्याने दिवसे उपवास करीने रात्रे पोसहमां वेठा हता. पछी ते राजाओए भगवंत निर्वाण पाम्या माटे केवलज्ञानरूप जे भाव उद्योत हतो ते तो गयो तो हवे द्रव्य उद्योत करीशुं. एटले पोसह उपवास रूप जे द्रव्य उद्योत ते वरसो वरसे ए अमावास्या दिवसे करीशुं ? अथवा हवे द्रव्य उद्योत करशुं एवुं विचारीने दीवा प्रमुख द्रव्य उद्योत कर्यो. ते दिवसथी मंगलिकने अर्थे म्होटुं पर्व दीवालीनुं थयुं ते पर्वमां भगवान मोक्ष पाम्या, शिवसुख निरुपद्रव सुख पाम्या. वली कार्त्तिक शुदी एकमने दिवसे गौतमस्वामीने केवलज्ञान उपन्युं तेनो हर्ष जाणवो अने कार्त्तिक शुदी वीजने दिवसे भगवाननो म्होटो भाइ नंदीवर्द्धन छे ते प्रभुनुं निर्वाण सांभलीने घणोज शोकवंत थयो हतो तेनो शोक मटाडवा सारुं भगवाननी वहिन सुदर्शनाए पोताने घेर नंदीवर्द्धनने तेडीने जमाड्यो ने भाइनो शोक टाल्यो ते दिवसथी लोकोमां ' भाइवीज '

चालू थइ, जे रात्रिमां भगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां क्षुद्र एटले क्रूर स्वभाव छे जेनो एवो अठ्यासी ग्रह माहेलो त्रीशमो भस्मराशि नामा ग्रह तेनी बे हजार वर्षनी एक नक्षत्र ऊपर स्थिति छे ते भगवानना उत्तराफाल्गुनी नामे जन्मनक्षत्र ऊपर आव्यो छे जे दिवसथी भस्म-राशि नामा म्होटो ग्रह भगवानना जन्म नक्षत्र ऊपर आव्यो ते दिवसथी प्रारभीने निर्ग्रंथ जे साधु—साधवी छे तेमनी घणी पूजा एटले ऊठीने उभु थावु, आहारादिकनु देवु तथा सत्कार ते वस्त्रादिकनु देवु तेनी वृद्धि थाशे नहीं. निर्वाणनी वखते प्रथम भगवानने सौधर्मेन्द्रे वीनाति करि हती के हे महाराज ! तमे मोक्ष जाओ छो परतु तमारा सतानीयांने बे हजार वर्ष पर्यंत पीडा थाशे माटे बे घडी भस्मग्रह बाकी रह्यो छे एटलु बे घडीनु आयुष्य तमारु वधारो एटले भस्मग्रह उतरी जाय तो पाछलथी आपना सतानीयां (चेला—चेली)ने शाता उपजशे ते सांभली भगवान बोल्या हे इद्र ! ए वात त्रणे कालमा न थाय, तमे तो बे घडी आयु वधारवा कहो छो, परतु एक समय मात्र पण आयु म्हाराथी वधे नहीं, त्रूटथुं आयु कोइथी वधार्युं जाय नहीं ए एमज भावी छे जे बे हजार वर्ष पर्यंत म्हारा तीर्थमां शिष्योने बाधा थवा वाली तेने कोण वर्जी शके, कोइनु पण सामर्थ्य नथी अने ज्यारे भस्मराशी ग्रहना बे हजार वर्ष पूरण थइ जशे त्यारे निर्ग्रंथोनी घणीज पूजा सत्कारादिक मानता अने धर्मनो उदय थशे, श्रीसघने पण हर्ष थशे. माटे " घडी न लब्भे आगली, इश्यु आखे वीर । इम जाणी जीव धर्म कर, ज्या लगे वहे शरीर ? " जे रात्रिमां भगवान मोक्ष गया ते रात्रिमा घणा झीणा झीणा कुथुआ त्रीन्द्रिय जातीना जीव उत्पन्न थया ते उद्धर्या पण न जाय, उद्धरीने अलगा पण न मूकाय अने साधु साधवीने नजरे पण नहीं आवे, सीघ्र चाले त्यारे देखाय ते देखी घणा साधु साध्वीओए भात पाणी आदिक चारे आहारनो त्याग करी

कालने विषे दुःषम सुषमा नामे चोथो आरो घणो वीत्यो अने ते आरानां त्रण वर्ष ने साडा आठ महीना बाकी रहे थके पावानगरीमां हस्तिपाल राजानी कारकुननी सभामां पोते एकला परंतु साथे बीजो कोइ नही एटले बीजा तीर्थंकरो सर्व साधुओना परिवार सहित मोक्ष गया छे अने श्रीवीर भगवान तो एकलाज बेलानुं तप एटले पाणी रहित चउविहार बे उपवास करीने पलांठीवाली बेठा थका स्वाति नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके पाछली चार घडी रात रहे थके पंचावन्न अध्ययन पुण्य फलना कहेवावाला अने पंचावन अध्ययन पाप फलना कहेवावाला तथा छत्रीश अध्ययन पूछ्या विना कहीने छेल्लो प्रधान नामा मरुदेवीनुं अध्ययन प्ररूपता थका काल प्राप्त थया, ऊंचा गया, जाति, जन्म, जरा, मरणनुं बंधन कापीने सिद्ध थया, बुद्ध थया, मुक्त थया, कर्मोनो अंत करीने सर्व संताप रहित थया. दुःखथी छूटा थया. भगवान श्रीमहावीरस्वामी मोक्ष गया पछी नवसे वर्ष वीत्यां अने दशमा सैकडानां एंसी वर्ष थयां त्यारे एटले वीरनिर्वाणथी ९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं अने वाचनान्तरे नवशे त्र्याणुं वर्षे पुस्तक लखाणुं एवुं देखाय छे.

निर्वाणमां इन्द्रादिकनो कर्त्तव्य—

भगवंतनुं निर्वाण थयुं, त्यारे इन्द्रादिकना आसन चलायमान थयां, भगवंतनुं पांचमुं निर्वाण कल्याणक जाणी सर्व इन्द्र भेगा थइने चमरेन्द्रादिकोए बावना चंदनथी भगवंतनी चय रची, अग्निकुमार देवोए अग्नि मूक्यो, वायुकुमारे वायरो विकूर्व्यो, भगवंतना मांस सर्व शोषाव्यां. पछी मेघकुमार देवोए वरसाद वरसाव्यो, शरीरनी राख खीर समुद्रमां न्हांखी, भगवंतनी ऊपरनी दाढा सौधर्मेन्द्रे लीधी, हेठली दाढा चमरेन्द्रे लीधी, ते दाढाने रत्नमय डाबलामां पूजवामाटे राखी ए अधिकार श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिमां विस्तारथी कह्यो छे, त्यांथी जोवुं.

पुस्तकलेखन क्यारे केवीरीते थयु—

श्रीवीर निर्वाण पछी वल्लभीपुर नगरे देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण प्रमुख सर्वे श्रीसघे मलीने सिद्धात पुस्तकारूढ कीधो, एटले आगल तो सर्व सूत्रो आचार्य प्रमुखने मुखपाठे हता पछी बार वर्ष दु काल पड्यो तेना लीधे केटला एक साधुओ मरण पाम्या तेथी घणा सूत्रपाठ साधुओने मुखे हता ते विच्छेद गया त्यार पछी ज्यारे सुगाल थयो, त्यारे सूत्रोनो विनाश थतो देखी साधुनो सघ भेगो थइ जेने मुखे जेटलो पाठ स्मरणमा रह्यो हतो ते सर्वे ताडपत्र ऊपर लखी पुस्तकारूढ कर्यो तथा केटलीएक प्रतोमा नवशे एशीमा वर्षथी सर्व सिद्धात पुस्तके लखवा मांड्या, ते नवशेने त्राणुमे वर्षे सपूर्ण लखाइ रह्या एवु पण देखाय छे यत —' वल्लहिपुरम्मि नयरे, देवड्डिपमुह—सयलसघेहिं । पुत्थे आगमलहिओ, नवसय असिआओ वीराओ ॥ १ ॥ ' तथा कोइ एम कहे छे के स्कदिलाचार्ये माथुरी वाचना करी पुस्तक लिख्यो छे तथा कोइ कहे छे के कालिकाचार्ये चोथनी संवत्सरी नवशेने त्राणुं वर्षे थापी अने पाक्षिक चौमासी एक दिवसे थापी एवा केटलाएक मतथी बोले छे तेनो मुद्दो केवली जाणे ए वातनो विशेष विस्तार दीपिका प्रमुख थकी जाणवो श्रीवीर प्रभुना शासननु प्रमाण एकवीश हजार वर्षनु कह्युं छे श्रीवीर प्रभुना नव गणधर तो प्रभु पोते छता ज राजगृहि नगरीमा एक महीनानी सलेखणा करीने परिवार सहित सिद्धि पाम्या छे अने वीरनिर्वाण पछी बार वर्षे श्रीगौतमस्वामी मोक्ष पाम्या छे, साप्रत पांचमा कालमां जे मुनिराज वर्त्ते छे ते सर्व भगवतना पाटे श्रीसुधर्मास्वामी पाचमा गणधर बेठा हता तेनो परिवार जाणवो ते श्रीसुधर्मास्वामी वीरनिर्वाण पछी वीश वर्षे सिद्धि पाम्या छे तथा श्रीवीर भगवाननो जन्म चैत्र महीनामा छे अने कार्त्तिक मासमा मोक्ष गया छे माटे बहोंतिर वर्षायु बराबर मलतु

नथी ते बाबत घणा ग्रंथोमां संवत्सरना दिनमाननो फेर देखाडी समाधान करे छे. परंतु खरेखरी वात केवली गम्य छे ए श्रीमहावीरना पांच कल्याणक विस्तारे कह्यां. ए छट्ठा व्याख्यान पर्यंत श्रीवीर भगवाननो अधिकार जाणवो.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक–विजयराजेन्द्रसूरीश्वर–सङ्कलिते
श्रीकल्पसूत्र–बालावबोधे षष्ठं व्याख्यानं समाप्तम् ।

अथ सप्तम व्याख्यान–प्रारंभः ।

पश्चानुपूर्वी न्यायथी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनां पांच कल्याणक कहे छे—

ते काल ते समयने विषे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत त्रेशठ शिलाका पुरुषमां प्रसिद्ध जेने सर्व मतवाला जाणे छे एवा श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना पांच कल्याणक विशाखा नक्षत्रमां थया. विशाखा नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने वामादेवीनी कूंखे उपन्या, विशाखा नक्षत्रमां जन्म पाम्या, विशाखा नक्षत्रमां गृहस्थपणाने त्यागीने साधुपणुं ग्रहण कीधुं, एटले दिक्षा लीधी, विशाखा नक्षत्रमां सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान अने केवल दर्शन उत्पन्न थयुं छे अने विशाखा नक्षत्रमां मोक्ष गया छे. इति संक्षेप वाचना.

पार्श्वनाथप्रभुनो जन्म अने तेमना दश भव—

ते काल ते समयमां श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोमां प्रधान ते उन्हालानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडियुं एटले चैत्रवदि चोथने दिवसे प्राणत नामा दशमा देवलोकथी वीश सागरोपमनुं आउखुं पूर्ण करीने चव्या ते आ जंबूद्वीपना भरत क्षेत्रने विषे वाणारसी नगरीमां अश्वसेन नामा राजा तेनी वामादेवी नामे राणी तेमनी कूंखे मध्यरात्रीए विशाखा नक्ष-

त्रमा चद्रमानो योग होते छते देव सबधि आहार, देव सबधि शरीरनो त्याग करीने गर्भपणे उपज्या श्रीपार्श्वनाथ भगवान प्राणत देवलोके कया भवथी आव्या ते दर्शाववा सारु श्रीपार्श्वनाथ स्वामिना प्रथम दशभव कहिये छिये—आ जबूद्वीपना भरतक्षेत्रमा पोतनपुर नामक नगरनो अरविंद नामा राजा तेनो विश्वभूति नामे पुरोहित हतो तेनी अनुद्धरी नामनी स्त्रीना एक कमठ अने बीजो मरुभूति ए बे पुत्र हता अनुक्रमे तेना माता पिता काल धर्म पाम्या पछी राजाये कमठने पुरोहित पदवी आपी पण ते कमठ स्वभावे कठोर, लपटी, दुष्ट, माठा लक्षणवालो मूर्ख छे, तेनी स्त्रीनु नाम वरुणा छे अने मरुभूति तो सरल स्वभाववालो, भद्रकपरिणामी, धर्मात्मा, श्रावकधर्म पालनारो छे तेनी स्त्री वसुधरा नामे अत्यत स्वरूपवाली अने घणी चपल स्वभाववाली छे एक दिवसे ते कमठ मरुभूतिनी स्त्रीने देखी तेना रूपे मोह्यो थको भोग करवाने माटे तेने बे त्रण वार बोलावी त्यारे ते स्त्री पण कमठ ऊपर राग करवा लागी एक दिवसे कमठे प्रधान वस्त्राभूषण आपीने वसुधराने पोताने वश करी माहोमाहे प्रीति बाधी भोग कर्म करवा माड्यो ते वात कमठनी स्त्री वरुणाना जाणवामा आवी त्यारे ते पोताना भरतारने कहेवा लागी के आ अकृत्य तमे करो छो ते सारु देखातु नथी. जो देवरना जाणवामा आवशे तो लोकोमा निंदा थशे, एवो पोतानी स्त्रीनो कहेलो उपदेश कमठे मान्यो नहीं तेना लीधे ते वरुणा नाराज थइने कमठना अनाचारनी वात मरुभूतिने कही दीधी, त्यारे मरुभूतिये जाण्यु के पोतानी नजरे दीठा विना एकाएक स्त्रीयोनी वात मानवी नहीं, एम विचारी एक दिवसे कपटथी कोइक गामे जवानो मिष करीने बाहेर गयो वली कापडीनो वेश करी पाछो पोताने घेर आवी रह्यो ते रात्रीये तेणे दुराचारी कमठ अने पोतानी स्त्री बेहुने

क्रीडा करतां दीठां त्यारे क्रोध करीने प्रभाते कमठना दुराचारनी वार्त्ता अरविंद राजा आगल आवीने कही, राजाये कमठने पकडी चोरनी परे भूंडे हाले करी रासभ ऊपर चढावी, नगरमां फेरवी, त्रिटंबना करी, शुहेरनी बाहेर काहाडी मूक्यो अने मरुभूतिने पुरोहित कर्यो. पछी कमठ दुःखी थयो थको कोइ तापसनी पासेथी दीक्षा लइ बारवर्ष पर्यंत तपस्या करतो पृथ्वीमां भमतो भमतो फरी पाछो पोतनपुरनी बाहेर एक पर्वतनी ऊपर आवी तपस्या करवा लाग्यो, पण गाममां न आवे. गामना सर्व लोक तेने तपसी देखी भोजनादिक आपे, प्रशंसा करे ते वात मरुभूतिये सांभलीने विचार्युं के ए म्हारो म्होटो भाइ छे. म्हें एने दुःख दीधुं छे, तेथी तापस थयो छे माटे हुं पण जइने म्हारो अपराध खमावी आवुं. एम चिंतवी घणा भोजनादिक रंधावी, साथे लइ कमठने खमाववा गयो, त्यां जइ तेना पगे लागी पोतानो अपराध खमावी पाछो फरे छे एटलामां कमठे मरुभूतिने ओलखी पोतानो वैर संभारी, तेना मस्तक ऊपर एक म्होटी शिला नांखी तेथी मरुभूति मरण पाम्यो ए पहेलो भव कह्यो.

ते मरुभूतिनो जीव आर्त्तध्यानथी मरण पामीने बीजे भवे विंध्याचलनी अटवीमां सुजातिक नामा हाथी थयो अने कमठनो जीव पण दुष्टकर्मना जोरथी ते पर्वत ऊपरथी उतरतां नीचे रपसी पड्यो. तेथी मरण पामीने तेज विंध्याचलनी भूमिमां पंखीनी परे उडतो चाले एवो कूर्कट नामे सर्प्प थयो. एकदा अरविंद राजाए संध्या समयने विषे पंचवर्णां वादलां दीठां, तेथी ते वैराग्य पामी, दीक्षा लइ अगीआर अंग भणी उग्रतप करता थका एकाकी विचरवा लाग्या. तेओ एकदा सागरचंद्र नामा सार्थवाहना संघनी साथे अष्टापद सम्मेतशिखरनी यात्राये गया, त्यां विंध्याचल वनमां एक सरोवर देखी संघे ते स्थानके उतारो कर्यो, एवामां मरूभूतिनो जीव जे हाथी थयो छे ते

पोतानी हाथणीयोना परिवार सहित त्या सरोवरने विषे जल पीवा सारु आव्यो, तेणे क्रोध करी सर्व सघने उपद्रव कर्यो तेथी सर्व सथवाराना लोक नासी गया पछी साधु काउस्सग्गमा ऊभा हता तेने ते हाथी मारवा आव्यो त्यारे मुनिना तपप्रभावथी त्यां थभाइ गयो ते अलगो ऊभो थको मुनिने जोवा लाग्यो मुनिने जोता थकां हाथीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्यु त्यारे पूर्वना भव देखी साधुने ओलख्या पछी सूढ लांबी करी साधुने पगे लाग्यो मुनिये पण भव्य जीव जाणीने तेने प्रतिबोध आप्यो तेथी ते हाथी समकित पाम्यो ते जोइने बीजा पण घणा लोक त्या प्रतिबोध पाम्या पछी हाथीये श्रावकधर्म अगीकार कर्यो श्रावकना बार व्रतनी अभिलाषा धरतो थको साधुने नमस्कार करी सरोवरमाथी पाणी पीइने पोताने स्थानके गयो साधुजी पण त्याथी विहार करी सथवारानी पाछल चाली यात्राये गया चारित्र पालीने शुभगति पाम्या हवे मरुभूतिनो जीव हाथी ते एक दिवस उन्हालाना दिवसोमा मध्यान्ह समये तृषाथी पीडायो थको तलाव ऊपर पाणी पीवाने आव्यो त्यां कादवमां खूची गयो, ते वखते कमठनो जीव कूर्कट सर्प्प पण तृषाथी पीडायो थको उडतो उडतो आव्यो, तेणे पाणी पीइने पछी हाथीने दीठो त्यारे आगला भवना वैरना लीधे हाथीनी ऊपर चढीने तेना मस्तकमा डक मार्यो, तेथी तेज वखते हाथीने झेर व्यापी गयु अने श्रावकधर्म पालवाना योगे शुभ ध्याने मरण पाम्यो ए बीजो भव त्रीजे भवे ते हाथी त्याथी मरण पामीने आठमा देवलोके देवता थयो अने हाथी पडता सर्प्प पण चपाइने मरण पाम्यो ते हाथी घातना पातकथी पांचमी नरके जइ नारकीपणे उपन्यो ए त्रीजो भव.

चोथे भवे मरुभूतिनो जीव आठमा देवलोकथी चवीने जंबूद्वीपना पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमा सुकच्छ नामा विजयना वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण श्रेणिमा तिलवती नामा नगरीने विषे विद्युतगति राजानी कनकवती

नामा स्त्रीनी कूंखे पुत्रपणे उपन्यो. तेनुं ' करणवेग ' नाम दीधुं. अनुक्रमे युवावस्थाए सुरूपा नामा स्त्री परण्यो, राज्यने पण पाम्यो, एक दिवसे सुरूपा राणी साथे सुख भोगवतां गोखमां बेठा थकां संध्या फूली देखी वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. पछी वैताढ्यना हेमशैल ऊपर काउस्सग्गमां ऊभा रह्या. ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमी नरकथी नीकलीने ते पर्वत ऊपर सर्प थयो छे तेणे साधुने करड्यो तेथी साधुये काल कीधो ए चोथो भव. पांचमे भवे साधु बारमा देवलोके देवता थयो अने सर्प्प मरण पामीने पांचमी नरके गयो ए पांचमो भव. छट्ठे भवे मरुभूतिनो जीव बारमा देवलोकथी चवीने आ जंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे गंधीलावती विजयमां शुभंकरा नगरीनो वज्रवीर्य नामे राजा तेनी लक्ष्मीवती नामे राणीनी कूंखे पुत्रपणे आवी उपन्यो. मात पिताए तेनुं वज्रनाभ नाम दीधुं. अनुक्रमे तेना पिताए तेने राजपाटे बेसाड्यो. ते यौवनवयमां राज पालतो थको संसारिक सुख भोगवे छे. एक दिवसे शुभंकरा नगरीना उद्यानमां 'श्रीक्षेमंकर' नामा तीर्थंकर आवी समोसर्या. तेमने वज्रनाभ राजा वांदवा गयो. त्यां तीर्थंकरनी देशना सांभली, संसार अनित्य जाणी, तीर्थंकर पासेथी दीक्षा लइ, अगीआरे अंग भण्यो, जंघाचारणनी लब्धीना बले सुकच्छ विजय मांहे निज्वलन पर्वत ऊपर काउस्सग्ग रह्या. ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमा नरकथी नीकलीने, संसारने विषे बीजां पण घणां भवभ्रमण करी ते पर्वतमां कुरंग नामा भिल्ल थयो. ते भिल्ल पोताना स्थानकथी बाहेर आहेडो करवा निकल्यो त्यारे वज्रनाभ साधुने देखी आगला भवना वैरना लीधे साधुने देखतांवार ज अपशुकन थयुं जाणी क्रोध उपन्यो. तेथी साधुना मर्मस्थानके एक बाण खेंचीने मार्यो तेथी साधु शुभ ध्यान ध्यावता मरण पाम्या ए छट्ठो भव.

सातमा भवे साधु शुभध्याने मरण पामीने मध्यम ग्रैवेयके देवता पणे उपन्यो अने भिल्ल मरण पामी साधुघातना पापथी सातमी नरके गयो ए सातमो भव आठमा भवे मरुभूतिनो जीव मध्यम ग्रैवेयकथी चवीने आ जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहमा शुभकर विजयने विषे पुराणपुर नामे नगरमा कुशलबाहु नामे वासुदेवनी सुदर्शना नामे राणीनी कूखने विषे पुत्रपणे आवी उपन्यो, माताए चौद स्वप्न दीठा पछी पुत्रजन्म थयो त्यारे माता पिताए सुवर्णबाहु नाम आप्यु चौद सुपन देखवाना प्रभावथी ते सुवर्णबाहु चक्रवर्त्तिनी पदवी पाम्यो, छ खंड साधी, चक्रवर्त्तिनी पदवी भोगवी, वृद्धावस्थामा तीर्थंकरनी देशना सामली, दीक्षा लइ, वीश स्थानकनुं तप आराधन करी तीर्थंकर गोत्र बाध्यु ते राजर्षी एक दिवसे उजाडमा काउस्सग्ग ध्याने रह्या छे एवामा ते भिल्लनो जीव सातमा नरकथी मध्यम आउखु पूर्ण करीने तेज उजाडमा क्षीर गुफामा सिंहपणे आवी उपन्यो, तेणे त्यां सुवर्णबाहु मुनिने दीठो त्यारे पूर्वभवना वैरथी राजऋषीने मारी नाख्यो ए आठमो भव नवमा भवे साधु शुभध्याने मरण पामी दशमा प्राणात देवलोके देवतापणे जइ उपन्यो अने सिंह मरण पामीने चोथी नरके गयो ए नवमो भव दशमा भवने विषे मरुभूतिनो जीव दशमा देवलोकथी चवीने श्रीवामादेवीनी कूखे आवी उपन्यो अने कमठनो जीव चोथी नरकथी मरण पामीने एक दरिद्री ब्राह्मणना घेर पुत्रपणे आवी उपन्यो तेना माबाप बालपणामाज मरण पाम्या पाछलथी दु खी थयो थको लोके तेना ऊपर दया आणीने म्होटो कीधो. अनुक्रमे यौवनावस्था पाम्यो त्यारे निर्द्धनपणाथी स्त्री मळी नहीं तेथी अमर्ष धरी पेट भरवा सारु अज्ञान तपस्या आदरी तापसी दीक्षामा पचाग्नि साधवा लाग्यो तेथी ते तापस कमठ नामे विख्यात थयो.

पार्श्वप्रभुनो जन्म विवाह अने नागोद्धार—

श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत, पुरुषमां प्रधान, त्रण ज्ञाने करी सहित मातानी कूंखमां आव्या. माताए चौद स्वप्न दीठां "अत्रे स्वप्न पाठक बोलाव्या यावत् गर्भनी प्रतिपालना करी इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीर स्वामिनी परे जाणी लेवो." ते काल ते समयना विषे पार्श्वनाथ स्वामी शीयालानो वीजो महिनो, त्रीजुं पखवाडियुं, पोषवदि दशमीना दिवसे नव महीना ने साडा सात दिवस गर्भमां रहीने, मध्यरात्रिमां विशाखा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके वामाराणीनी कूंखथी रोग रहित पुत्रपणे जन्म्या. जे रात्रिमां श्रीपार्श्वनाथ जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता आव्या. "यावत् चोसठ इंद्र जन्ममहोत्सव प्रमुख करवा आव्या तथा दिग्कुमारिकादि आवी ते सर्व श्रीमहावीर स्वामिनी परे श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनुं नाम लइने अहीं कहेवुं." पछी अश्वसेन राजा जन्ममहोत्सव करीने पोताना न्याति गोत्रिमां कहेवा लाग्या के—म्हारी वामाराणीनी कूंखे ज्यारे ए पुत्र आव्यो त्यारे वामाराणीए शय्यामां पोतानी पासेथी निकलतो कालो सर्प दीठो तेथी अमारा आ पुत्रनुं नाम पार्श्व होजो एम कही 'श्रीपार्श्व' एवुं नाम दीधुं. पांच धावे पालन कराता, बीजना चंद्रमानी परे वृद्धि पामता, माता पितादिकने आनंद उपजावता थका प्रभु अनुक्रमे युवान अवस्था पाम्या त्यारे कुशस्थल नगरना प्रसेनजीत नामे राजाने म्लेच्छ लोकोए रोक्यो. तेने सहाय करवा माटे अश्वसेन राजा जावा लाग्यो ते वखते पिताने वर्जिने पार्श्वकुमार त्यां जवाने तैयार थया. ते जोइ इंद्रमहाराजे सारथी सहित पोतानो रथ मूक्यो ते ऊपर चढीने प्रभु आकाश मार्गे थइ त्यां उतर्या. तेने जोइ सर्व म्लेच्छ लोको नाशी गया. प्रसेनजीत राजाए प्रभुने घणो सन्मान दीधो त्यां नीलवर्ण छवी, नवहाथनुं शरीर, युवान अवस्था, एक हजार आठ लक्षणधारक, अत्यंत रूपवान, महा कांतिवान सुंदर देदीप्यमान

अने तेजस्वी, एवा श्रीपार्श्वकुमरने देखीने प्रसेनजीत राजानी पुत्री प्रभावती नामे हती ते बोली के पिताजी ! मुजने पार्श्वकुमर साथे परणावो पछी भगवानने परणवानी इच्छा हती नही तो पण राजाए घणो आग्रह करीने पोतानी पुत्री परणावी, ते परणीने पाछा घेर आव्या प्रभु प्रभावती राणी साथे सुख भोगवता विचरे छे एवामा एक दिवसे वाराणसी नगरीनी बाहेर पेलो कमठ नामा तापस आव्यो घणा लोको हाथमां पूजापो लइने पंचाग्नि तापतो देखी तापस पासे जवा लाग्या प्रभुए गोखमां बेठा थकां दीठा त्यारे पार्श्वकुमर बोल्या के आ लोको सर्व क्यां जाय छे ? त्यारे हजुरीओ (चाकर) पासे ऊभो हतो ते बोल्यो महाराज ! एक दरिद्री ब्राह्मण हतो तेना मावाप न्हानपणमा मरी गया तेथी तापस थइ कमठ नाम धारण करीने फरतो फरे छे, ते अहीं आव्यो छे तेने आ सर्व लोको पूजवाने जाय छे, ते साभली भगवान पण त्या गया त्या काष्टमां बलता सर्पने अवधिज्ञानथी देखी भगवान बोल्या-अरे मूढ तपस्वी ! आ तु दया विना शु वृथा कष्ट करे छे, आ त्हारो श्रम ते दया विना सर्व मिथ्या छे त्यारे क्रोध करीने कमठ तापस बोल्यो, अरे ! राजाओना पुत्रोने तप जप करवानी शी परीक्षा होय, तमे तो हाथी घोडाओनी परीक्षा करो, तपनी वात तो अमेज योगी पुरुषो समजीए छियें, ए वातमां तमे शु समजो ? एवु कमठनु बोलवु साभली भगवाने ते अग्निकुडमाथी एक बलतु लाकडु बाहेर काहाडी तेने कोहाडाथी फाड्यु तेमांथी अर्धदग्ध व्याकुल थयेलो सर्प नीकल्यो ते सर्प भगवानना मुखने देखीने श्रद्धापूर्वक भगवानना मुखथी नवकार-महामत्र साभलीने तत्काल मरण पामी धरणेन्द्र नागराजा थयो " घणी प्रतोमा तो अग्निकुडमाथी बलतु लाकडु भगवाने सेवकना हाथे बाहर निकलावी कुहाडो मगावी, फोडाव्यु अने बलता सर्पने नवकार सभलाव्यो छे ते पण सेवकना मुखथीज

संभलाव्यो एम स्पष्ट लखेलुं छे. " पछी एकठा थयेला लोको कमठने कहेवा लाग्या के अरे अज्ञानी ! तुं अधर्म करे छे, जीवोने हणे छे, एवो पोतानो अवर्णवाद सांभलीने कमठ लज्जा पाम्यो. भगवान घरे आव्या पछी कमठ त्यांथी मानभ्रष्ट थइ, वली अन्य स्थानके जइ, घणा कालपर्यंत विशेष पणे अज्ञान तपस्या करी, मरण पामीने भवनपति मांहे मेघमाली नामा देवता थयो.

श्रीपार्श्वनाथ प्रभुनी दीक्षा—

एकदा वसंतऋतुमां भगवान पोतानी राणी साथे वनक्रीडा करवा गया त्यां एक सुंदर प्रासाद जोइ तेमां जइ बेठा. ते प्रासादमां नेमीश्वर भगवाननी जान संबंधी राजीमतीने त्यागी दीक्षा लीधी तेनुं चित्र चित्रेलुं जोइने वैराग पाम्या. हवे भगवान श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत, दक्ष, चतुर, भली प्रतिज्ञा वाला, रूपवान, गुणवान, भद्रक, विनयवान, त्रीश वर्ष लगण गृहस्थावासे रह्या पछी लोकांतिक देव आवीने तेमने इष्टकारी वाणीए करी कहेवा लाग्या के—जय जय होवो हे समृद्धिमान् ! यावत् हे कल्याणवान् ! एवुं कहीने जय जय शब्द करे. श्रीपार्श्वनाथजी मनुष्य योग्य गृहस्थ धर्ममां पण अवधिज्ञाने करी सहित छे तेणे करी जाण्युं के म्हारे हवे दीक्षा लेवानो अवसर आव्यो एवुं जाणीने संवत्सरी दान प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी परे आपीने शीआलानो बीजो महीनो, त्रीजुं पखवाडियुं, पोष वदि अगीआरसना दिवसे बपोर पहेला विशाला नामा पालखीमां बेठा, देव मनुष्ये ते पालखी उपाडी ए सर्व दीक्षा महोत्सव श्रीमहावीरजीनी परे समजवो; परंतु एटलुं विशेष छे के वाराणसी नगरीमांथी थइने ज्यां आश्रमपद नामा उद्यान छे अने ज्यां अशोकवृक्ष छे त्यां आवीने पालखीथी उतरीने अशोकवृक्षनी नीचे पोताना हाथथी घरेणा प्रमुख सर्व उतारीने, पोताना हाथथी पंचमुष्टी लोच करीने, अने

अट्ठम तप पाणी रहित करीने विशाखा नक्षत्रे चद्रयोग आवे थके एक देवदुष्य वस्त्र लेइने त्रणसे पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, अणगार थया श्रीपार्श्वनाथ अरिहत त्र्याशी दिवस पर्यंत नित्य कायाने वोसरावीने जे कोइ देवना, मनुष्यना अने तिर्यंचना करेला उपसर्ग थया ते सर्व सहन कर्या अने प्रभुए अट्ठम तपनु पारणु कोपट सन्निवेशमा धन्नाने घेर परमान्न वडे कर्युं त्या पांच दिव्य प्रगट थया, साडी वार क्रोड सोनैया वरस्या

कलिकुंड अने कुकुडेसर तीर्थनी स्थापना—

एक दिवस भगवान विचरता थका कादवरी अटवीमां गया, त्या कलिगिरि पर्वतनी नीचे कुडनामा सरोवरनी पासे काउस्सग्गमा रह्या ते स्थानके महीधर नामा हाथी पाणी पीवा आव्यो ते भगवानने देखीने जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेथी पोतानो पूर्वनो भव दीठो के "आगला भवमा हु हेमलनामा वामनो कुलपुत्र हतो. म्हारां स्वजन कुटुब म्हारा ऊपर हसता हता तेथी मने चिंतातुर देखीने म्हारो सुप्रतिष्ठनामा मित्र मने गुरु पासे लइ गयो तेनी पासेथी म्हें श्रावकधर्म लीधो पण अत अवस्थामा म्हारी वामणी न्हानी कायाने निंदतो थको मरण समये म्होटी काया पामवानु म्हें नियाणु कर्युं तेना योगथी हु म्होटी काया वालो हाथी थयो छु" एवु जाणी ते हाथीए भगवानने कमले करी पूज्या ए हाथीनी वात साभली चपानगरीनो वासी करकडू राजा त्या आव्यो तेटलामा भगवान विहार करी गया जेथी राजा घणो दु ख करवा लाग्यो त्यारे इन्द्रे आवीने त्या नव हाथनी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनी प्रतिमा प्रगट करी पछी राजाए तेनी पूजा करीने त्या मदिर कराव्यु, ते स्थानके 'कलिकुंड' नामे तीर्थ थयु, हाथी मरण पामीने व्यतर देवता थयो ते चैत्यनो अधिष्ठायक थयो.

एकदा समये राजपुरनो ईश्वर नामा राजा ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामीने काउस्सग्गमां ऊभा देखी जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, ते पोतानो पूर्वभव देखीने मूर्च्छा पाम्यो. पछी ज्यारे सावधान थयो त्यारे तेने मंत्रीए पूछ्युं के स्वामिन् ! तमे मूर्च्छा केम पाम्या ? त्यारे राजा बोल्यो म्हें म्हारो पूर्वनो भव दीठो. "हुं वसंतपुर नगरमां एक कोढीयो ब्राह्मण हतो ते रोगना दुःखने लीधे गंगानदीमां पडीने मरवा तैयार थयो हतो. एटलामां एक चारण मुनिए आवीने मुजने प्रतिबोध दीधो. पछी समकित वासनाथी हुं नित्य चैत्यनां दर्शन करवा जाउं त्यां मुजने पुष्कलनामा श्रावके दीठो अने कहेवा लाग्यो के अरे ! आ कोढीयो मंदिरमां केम जाय छे? पछी ते श्रावके मुनिने पूछ्युं के महाराज ! ए कोढीओ मंदिरमां जाय छे तेनो कांइ दोष छे किं वा नथी? त्यारे मुनि बोल्या—दूरथी नमवामां कांइ पण दोष नथी, वली हे श्रावक ए ब्राह्मण आगामी भवे राजपुरनगरे ईश्वर नामा राजा थाशे. ते श्रीपार्श्वनाथजीने काउस्सग्गे रह्या देखीने जातिस्मरण पामशे." माटे हे प्रधान ! ते कोढीयो ब्राह्मण मरीने हुं ईश्वर नामे राजा थयो छुं; पछी ते ईश्वर राजाए भक्तिभावथी त्यां चैत्य कराव्यो तेमां श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा थापी ते ' कुक्कुडेसर ' नामे तीर्थ थयुं.

पार्श्वनाथप्रभुने कमठासुरनो उपसर्ग—

एक समय भगवान विहार करता थका कोइ नगर नजीक तापसनो आश्रम हतो तेनी पासे आव्या एटलामां सूर्य अस्त थयो त्यारे भगवान वडवृक्षनी नीचे एक कूवानी पासे अडग ध्याने काउस्सग्गमां रह्या. ते अवसरमां पूर्वभवनो वैरी मेघमाली अधम देवता अवधिज्ञानना बले भगवानने ऊभा देखी पूर्वभवनुं वैर संभारी, अमर्षे पूर्यो थको क्रोधे करी उपसर्ग करवा लाग्यो. तेणे प्रथम वेतालनां रूप करी भगवानने बीवराव्या, पण भगवान तेनाथी डर्या नहीं. पछी सिंहनां रूप,

वींछीनां रूप, सर्प्पना रूप, हाथीनां रूप बीजां पण अनेक जातिनां रूप विकूर्वीने भगवानने करडवा लाग्यो, मसलवा लाग्यो, तो पण भगवान तेनाथी क्षोभ पाम्या नहीं, चलायमान थया नही, त्यारे विशेप क्रोधारुण थइने घणो गर्जारव करी, विजली विकूर्व्वी तेनी साथे कल्पातकालनो पवन विकूर्व्वी ते पवनथी धूलने उडावतो थको आकाशने पण आच्छादित कर्यो अने धूल साथे मलेला पाणीनी मूसल धारा वृष्टि करी तथा ब्रह्माड स्फोट सदृश गर्ज्जारव कर्यो, अने दशे दिशाए वीजलीना कणीया उत्पन्न करी त्रास पमाडवा लाग्यो, त्या पाणीनुं पूर नदी जेवु व्हेवा लाग्यु जोरवालु पाणी चढ्यु, आकाश अंधकार मय थइ गयु ते वखते भगवानना कठ सुधी पाणी ऊचु आवी लाग्यु तो पण प्रभु डग्या नहीं ते वखते धरणेन्द्रनु आसन चलायमान थयु त्यारे अवधिज्ञान प्रयुजी, भगवानने उपसर्ग थयो जाणीने, पद्मावती प्रमुख अग्रमहीषियो सहित त्या आवीने प्रभुने मस्तके फणाटोप करी छत्र धर्यु अने प्रभुना चरणनी नीचे कमलनी रचना करी ए प्रकारे वरसादना समूहने वंध राखवानो उपाय करी पोते इन्द्राणी सहित प्रभु आगल नाटक करवा लाग्यो पण वरसाद पडतो वध थयो नहीं, त्यारे धरणेन्द्रे जाण्यु के प्रलयकाल तो हमणा छे नहीं तो आवा प्रकारनो मेघ केम वरसे छे ? एम विचारी अवधिज्ञानथी जोयु तो मेघमाली कृत उपसर्ग जाण्यो त्यारे मेघमालीने ललकार्यो के " अरे दुप्ट, पापिप्ट, उन्नठ, अधम ! तें आ शु अकार्य करवा मांडयुं छे ? प्रभुए तो त्हारा ऊपर गुण कर्यो छे ते उलटो तुजने अवगुण थइ परिणम्यो तेथी तु विपरीत थइने एमनी ऊपर द्वेप करे छे, परतु भगवान पोते तो अतुलवलना धणी छे, तथापि ते क्षमावत दयालु छे ते तो सहन करशे पण हु त्हारो अपराध सहन करनार नथी अरे मूर्ख ! तुजने रूडो उपदेश पण वैरकारी थइ पड्यो तो हवे तुजने हु त्हारी

कमाइ देखाडीश. तें स्वामीनी घणी आशातना कीधी छे पण हवे तुं क्यां नाशी जइश ?" एम कही धरणेन्द्रे तेना ऊपर वज्र मूक्युं त्यारे जेम बाजने देखी सूडो तथा कबूतर भयभ्रांत थाय तेम कमठ भयभ्रांत थयो थको पोतानी देवांगना सहित भगवान पासे आवी तेमना चरणनुं शरण ग्रही, भगवानने नमस्कार करीने पोतानो अपराध खमावत्रा लाग्यो अने कहेवा लाग्यो के प्रभो ! आज पछी हुं एम नहीं करीश. ते जोइ धरणेन्द्रे कह्युं के तुं म्होटाने शरणे आव्यो माटे म्हारो साधर्मी भाइ समजीने तने छोडी मूकुं छुं. पछी दश भवनुं वेर खमावी प्रभु पासे नाटक करीने कमठ पोताने स्थानके गयो अने धरणेन्द्र पण नाटक करी पोतानी इंद्राणी सहित स्वस्थानके गयो. अहीं धरणेन्द्रे त्रण दिवस पर्यंत भगवानना मस्तक ऊपर फणनुं छत्र राख्युं तेथी ते नगरी 'अहिच्छत्रा' नामे प्रसिद्ध थइ.

पार्श्वनाथप्रभुनो परिवार अने मोक्ष—

श्रीपार्श्वनाथ स्वामी अणगार थया, पांच समिति अने त्रण गुप्ति सहित थया, यावत् ग्रामानुग्राम विचरता आत्माने भावता थका त्र्याशी दिवस वीत्या अने चोराशीमो रात्रि दिन वर्त्तमान छतां उन्हालानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडियुं चैत्र वदि चोथना दिवसे, विशाखा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके, पहेला बे पहोरना काल समयने विषे, धावडी वृक्षनी नीचे पाणी रहित चउविहार छट्ठतप कीधे थके, निर्व्याघातपणे आवरण रहित समग्र परिपूर्ण झलहलता सूर्य सरखुं एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन प्रभुने उत्पन्न थयुं. तेथी सर्व जीवोना भाव जाणता थका देखता थका विचरवा लाग्या. श्रीपार्श्वनाथजीने एक शुभ, बीजो आर्यघोष, त्रीजो विशिष्ठ, चोथो ब्रह्मचारी, पांचमो सोम, छट्ठो श्रीधर, सातमो वीरभद्र अने आठमो यशस्वी ए आठ म्होटा गच्छना धणी एवा गणधरोनी संपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने

आर्यदिन्न प्रमुख सोलहजार साधुओनी उत्कृष्टी सपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी पुष्पचूला प्रमुख आडत्रीश (३८०००) हजार साधवीओनी सपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी सुव्रत आदिदेइ एक लाखने चोसठ हजार श्रावकोनी सपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी सुनदा प्रमुख त्रण लाख ने सत्तावीश हजार श्राविकाओनी सपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी केवली नहीं पण केवली सरखा एवा साडा त्रणशे चौद पूर्वधारी मुनिओनी सपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी चौदशे अवधिज्ञानिओनी सपदा थइ, एक हजार केवलीओनी सपदा थइ, अगीआरसो वैक्रिय लब्धिवतोनी सपदा थइ, छशे ऋजुमति मन - पर्यवज्ञानीओनी सपदा थइ, एक हजार साधु मोक्षे गया, वे हजार आर्या मोक्षे गइ, आठशे विपुलमतिनी सपदा थइ, छसे वादीओनी सपदा थइ, बारसे साधु अनुत्तर विमाने गया–एकावतारी थया, ए प्रभुना परिवारनु प्रमाण जाणवु श्रीपार्श्वनाथ पुरुषादाणीने वे प्रकारनी अतगड भूमि थइ, तेमा एक तो युगान्तकृतभूमि ते श्रीपार्श्वनाथना चार पाट पर्यंत मोक्ष मार्ग चाल्यो, बीजी पर्यायान्तकृतभूमि ते भगवान केवलज्ञान पाम्या पछी त्रण वर्षे कोइक मुनि सिद्धि पाम्यो एटले त्रण वर्षे मोक्षमार्ग चाल्यो ते काल ते समयने विषे श्रीपार्श्वनाथ पुरुषादाणी त्रीशवर्ष पर्यंत घरवासे रह्या अने त्राशी दिवस छद्मस्थपणे रह्या तथा त्र्याशी दिवसे न्यून सीतेर वर्ष पर्यंत केवल पर्याय पाल्यो, परिपूर्ण सीतेर वर्ष साधुपणु पाल्यु सर्व मली एकसो वर्षनु आयुष्य पालीने, शेष रहेलां चार कर्म खपावी आ अवसर्पिणी कालनो दुपम सुपमा नामे चोथो आरो ते घणो वीती गयो अने स्वल्प रह्यो ते अवसरमा वर्षादनो पहेलो महीनो, बीजु पखवाडियु, एटले श्रावण शुदि आठमना दिवसे सम्मेतशिखर पर्वतनी उपर मासखमणना चउविहार (पाणी रहित) तपमां अणसण कीधे थके शैलेसी अवस्थाए

योग संवरीने तेत्रीश वीजा साधुओ अने चोत्रीशमा श्रीपार्श्वनाथ पोते, विशाखा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके मध्यरात्रिना समयमां लांबा हाथे काउस्सग्गे ऊभा काल प्राप्त थया, निर्वाण पाम्या, सर्व दुःखथी रहित थया. विशेष वात श्रीपार्श्वनाथ चरित्र थकी जाणवी, श्रीपार्श्वनाथ परमेश्वर पुरुष मांहे आदानी एटले आदेय वचनीय ए विरुद्ना धरनारा छे. श्रीपार्श्वनाथ स्वामी मोक्षे गया पछी बारसो ने त्रीश वर्षे श्रीकल्पसूत्र पुस्तक ऊपर लखाणुं; केमके श्रीपार्श्वनाथ मोक्षे गया पछी अढीशे वर्षे तो श्रीमहावीरस्वामी मोक्ष गया ते पछी नवशे एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयुं. इति श्रीपार्श्वनाथ चरित्र.

श्रीनेमनाथप्रभुनो जन्म—

पश्चानुपूर्व्वीए वावीशमा श्रीनेमनाथ स्वामिनुं चरित्र कहे छे—ते काल, ते समयने विषे अरिहंत श्रीअरिष्टनेमि तेमना पांच कल्याणक चित्रा नक्षत्रमां थया. एक चित्रा नक्षत्रमां देवलोकथी चव्या, बीजो चित्रा नक्षत्रमां जन्म थयो, त्रीजो चित्रा नक्षत्रमां दीक्षा लीधी, चोथो चित्रा नक्षत्रमां केवलज्ञान उपन्युं, पांचमो चित्रा नक्षत्रमां मोक्षे गया. इति संक्षेप वाचना. विशेष वाचना कहे छे—ते काल ते समयमां श्रीनेमनाथ स्वामी आ वर्षा कालनो चोथो महीनो, सातमो पक्ष एटले कार्त्तिक वदि वारसना दिवसे अपराजित नामा महाविमान ज्यां बत्रीश सागरोपमनुं आयु छे त्यांथी चवीने आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे शौरीपुर नगरना समुद्रविजय नामा राजानी शिवादेवी नामे भार्या तेनी कूंखमां मध्यरात्रिना विषे चित्रा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते छते गर्भपणे आवी उपन्या त्यारे चौद स्वप्न माताए दीठां इत्यादिक सर्व वर्णन श्रीमहावीर स्वामीना परे कहेवुं. ते काल, ते समयने विषे श्रीनेमिनाथ अरिहंत वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजुं पखवाडियुं एटले श्रावणशुदि पंचमीना दिवसे नव महीना ने साडा सात

दिवस गर्भमा पूरण थए थके यावत् चित्रा नक्षत्रे चन्द्रमानो योग आवे थके पुत्रपणे जन्म्या, इहा जन्म महोत्सव प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी परे श्रीनेमिनाथजीना नामथी कहेवु पछी माता पिताए अरिष्टनेमि एवु नाम आप्यु, तेनु कारण के भगवाननी माता शिवादेवीजीए पन्नरमा स्वप्नमा अरिष्ट रत्ननु चक्र दीठु तेथी अरिष्टनेमि एवु नाम आप्यु तथा लोकोना अरिष्ट चूर्या—मटाड्या माटे अरिष्टनेमि एवु नाम दीधु भगवानने बालपणामा इन्द्राणी आवी रमत करावे, ज्यारे प्रभुने भूख लागे त्यारे पोताना अगूठाने चूसे ते अगूठामा देवो आवीने अमृतनो सचार करे परतु माताना स्तन चूसे नहीं अनुक्रमे प्रभुजी वृद्धि पामवा लाग्या प्रभुना शरीरनो श्यामवर्ण छे तथापि महा स्वरूपवान छे एक दिवसे श्रीनेमिनाथजी पालणामा रमत करे छे ते वखते इन्द्रमहाराजे पोतानी सभा माहे प्रभुना वल पराक्रमनी प्रशसा करी ते वात कोइएक देवता अणसद्दहतो थको त्या आवी भगवानने पालणा माहेथी उपाडीने सवा लाख योजन दूर लइ गयो त्यारे भगवाने आ कोइ देवप्रयोग छे एवु जाणीने काइक स्वल्प वल देखाड्यु तेथी देवता नीचे आवी पड्यो अने एकसो योजन पर्यंत धरतीमा पेसी गयो त्यारे इन्द्रे आवी अनुकपा आणीने देवताने छोडाव्यो अने भगवानने पाछा पालणामा मूकी, स्तवना करीने इन्द्रमहाराज पोताने स्थानके गया

यादव अने पाडवोनी उत्पत्ति—

श्रीनेमीश्वर भगवाने द्वारिका नगरीमा दीक्षा लीधी त्यारे सांभलनारने आशका थशे के जन्म तो शौरीपुरमा थयो अने दीक्षा द्वारिकामा लीधी ए वात केम मले ? ए सदेहने मटाडवाने माटे यादवोनी उत्पत्ति कहे छे

पूर्वे हरि अने हरिणी ए बे युगलीया थकी हरिवश कुल प्रगट

थयुं, ए वात दश अच्छेराना अधिकारमां संक्षेपथी लखाइ गइ छे. ते पछी हरिराजानो पुत्र 'अश्व' थयो अने तेनो पुत्र 'वसुराजा' थयो. तेना वंशमां अनुक्रमे ' यदु ' राजा थयो त्यांथी यादववंश प्रगट्यो. पछी ते यदुनो पुत्र ' शूरराजा ' थयो तेना वली एक ' शौरी ' अने बीजो ' सुवीर ' ए बे पुत्र थया, तेमां म्होटो पुत्र शौरी छे तेने मथुरानुं राज्य आपीने सुवीरने युवराज पणे थापी शूर राजाए चारित्र लीधुं, पछी शौरीराजाए पोताना न्हाना भाइ सुवीरने मथुरानुं राज्य आपी पोते कुशावर्त्त देशमां जइ पोताने नामे ' शौरीपुर ' नामा नवीन नगर वसावीने तेनुं राज्य करवा लाग्यो अने सुवीर मथुरानुं राज्य करे छे. शौरीराजाने ' अंधकवृष्णि ' नामे पुत्र थयो अने सुवीरने ' भोजकवृष्णि ' नामा पुत्र थयो ते भोजक वृष्णिने वली ' उग्रसेन ' नामा पुत्र थयो. पछी भोजकवृष्णिए उग्रसेनने मथुरानुं राज्य आपी पोते दीक्षा लीधी, अंधकवृष्णिने दश पुत्र थया. तेनां नाम–एक समुद्रविजय, बीजो अक्षोभ, त्रीजो स्तमित, चोथो सागर, पांचमो हिमवंत, छट्ठो अचल, सातमो धरण, आठमो पूरण, नवमो अभिचंद्र अने दशमो वसुदेव ए दशे दशार्ह कहेवाया. अंधकवृष्णिए पोताना म्होटा पुत्र समुद्रविजयने शौरीपुरनुं राज्य अने एज अंधकवृष्णिनी एक कुंती अने बीजी माद्री ए बे पुत्रीओ थइ. तेमां कुंती पांडुराजाने परणावी अने माद्री दमघोष राजाने परणावी.

संक्षेपथी पांडवोनी उत्पत्ति कहे छे–प्रथम ऋषभदेवजीनो पुत्र ' कुरु ' नामा थयो तेणे कुरुदेश वसाव्यो तेनी पछवाडे तेना पाटे असंख्यात राजा थइ गया, तेमांथी एक ' हस्ति ' राजाए हस्तिनागपुर वसाव्युं ते पछी केटलोएक काल वीत्या पछी सुभूमनामा चक्रवर्त्ति राजा थयो, त्यार पछी वली घणा राजा थया बाद एक ' शंतनु ' नामे राजा थयो तेनी बे स्त्री थइ–तेमां एकतो विद्याधरनी पुत्री ' गंगा '

हती तेने ' गागेय ' नामे पुत्र थयो तेनु भीष्मपितामह एवु बीजु नाम लोकमा प्रसिद्ध थयु हतु अने बीजी राणी ' सत्यवती ' नामे हती तेना वे पुत्र थया एकनु नाम 'चित्रागद' अने बीजानु नाम ' विचित्र-वीर्य ' पछी शतनु राजा चित्रागदने राज्य आपीने परलोक प्राप्त थयो चित्रागद एक दिवसे कोइ नीलागद राजा साथे युद्ध करतां मरण पाम्यो, त्यारे विचित्रवीर्य राजा थयो तेनी एक अंबिका, बीजी अबा लिका अने त्रीजी अबा ए त्रण भार्या हती तेमा अंबिकानो पुत्र 'धृत-राष्ट्र' थयो तेनी गाधारी प्रमुख आठ स्त्रीयो हती, तेना दुर्योधनादिक सो पुत्र थया अने बीजी अबालिकाने पाडु नामे पुत्र थयो तेनी एक कुंती नामे स्त्री हती तेने एक युधिष्ठिर, बीजो भीम अने त्रीजो अर्जुन ए त्रण पुत्र थया अने वली बीजी माद्री नामे स्त्री हती तेनु अपर नाम पद्मा एवु हतु तेना एक नकुल अने बीजो सहदेव एवा वे पुत्र थया एम बन्ने स्त्रीयोना मली पाडु राजाना पाच पुत्र थया ते पाच पाडवो कहेवाया, अने विचित्रवीर्यनी त्रीजी स्त्री अबा हती तेने एक ' विदुर ' नामे पुत्र थयो ए रीते पाडवोनो सबध सक्षेपथी कह्यो

अधकवृष्णिनी बीजी पुत्री जे दमघोष राजाने परणावी हती तेनो 'शिशुपाल' नामा पुत्र थयो तेने श्रीकृष्णे मार्यो छे एवी रीते व्यवस्था कर्या पछी अधकवृष्णिए दीक्षा लीधी, हवे मथुरानु राज्य उग्रसेन राजा चलावे छे, तेनी ' धारणी ' नामे राणी छे अने शौरीपुरनु राज्य समुद्रविजय राजा चलावे छे तेनी ' शिवादेवी ' नामे भार्या छे ते शिवा-देवीने 'नेमिकुमार' पुत्र थयो बीजा पण सर्वे भाइओ एकठा (भेला) रहे छे. मथुरामा उग्रसेनराजा सुखे राज करे छे एक दिवसे ते नगरीनी बाहेर वनमा एक मासी उपवासनो करनारो एवो एक तापस आव्यो तेने एवो नियम छे के महीनानी अदर कोइ आवीने कहे के–

म्हारे घरे पारणुं करजो, तो तेने घेर पारणुं करे. पण बीजाने घेर पारणुं करे नहीं अने जो नोतरुं आपनार धणी भूली जाय अने तापसने पारणुं करावत्रा माटे तेडवा सारुं नहीं आवे तो वली बीजा एक मासनुं पच्चख्काण करी लीए एवो ते तापस मासिक उपवास करीने वनमां बेठो छे त्यां उग्रसेन राजा रमवा गयो अने वनमां तापसने देखी राजाए पोताने घेर पारणुं करवानी वीनंति करी. पारणुं करवुं कबूल करावीने पोताने घेर आव्यो; परंतु जे दिवसे पारणुं करावत्रानुं हतुं ते दिवसे विस्मृतिमां तापसने बोलाववा माणस मोकल्युं नहीं. तापस पण सांज सुधी वाट जोइ कोइ बोलाववा नहीं आव्यो त्यारे वली बीजा महीनानी तपस्यानो नियम करी लीधो. त्यार पछी वली केटलेएक दिवसे राजाने ते तापस याद आव्यो के अरे ! म्हें आ केवुं अकार्य कर्युं. जे तापसने नोतरीने जमवा तेड्यो नहीं. एम चिंतवी फरी पण तापसने जमवानुं आमंत्रण करी आव्यो, परंतु बीजी वार पण पारणाने दिवसे जमवा सारुं तेडवाने भूली गयो. एवीज रीते वली त्रीजे महीने पण नोतरुं आपीने जमाडवाने वखते तेडवानुं भूली गयो. तेथी तापसे राजा ऊपर क्रोध करीने विचार्युं के आ दुष्ट राजा मने नोतरुं आपी जाय छे ने जमाडतो नथी, माटे जो म्हारा तपनो प्रभाव होय तो हुं एने भवांतरमां दुःख देवावालो थाउं एवुं नियाणुं करी त्यांथी मरण पामीने उग्रसेन राजानी भार्या धारणीनी कूंखमां आवी उपन्यो, तेना प्रभावथी राणीने त्रीजे महीने राजानुं कालजुं खावानो डोहलो उपन्यो तेथी शरीरे दुर्बल थइ, तेने घणुं. घणुं राजाए पूछ्युं त्यारे डोहोला संबंधि जेवी वात हती तेवी राजा आगल कही, पछी राजाए प्रधानवी अक्कलथी ते डोहलो पूरण कर्यो. राणीए गर्भ पाडवाना घणा उपाय कर्या पण गर्भ पड्यो नहीं. छेवट नव महीना पूरण थयां पुत्र जन्म्यो ते जन्मतां ज राणीए तेने कांसानी पेटीमां नाखीने

माहे नामांकित मुद्रिका मूकीने ते पेटी यमुना नदीमां वहेवरावी दीधी. ते कासानी पेटी तरती तरती मथुराथी शौरीपुर आवी एवामां घृत अने तेलनो वेचनार सुभद्र नामे वाणीयो ते यमुना नदीमा स्नान करवा आव्यो, तेणे ते पेटी नदीमाथी बाहेर कहाडी, उघाडी जोइ तो तेमा बालक दीठो त्यारे ते वाणीयो मुद्रिका सहित ते वालकने गुस-रीने पोताने घेर लइ आवीने पोतानी स्त्रीने सोंप्यो अने लोकोने कहेवा लाग्यो के म्हारी स्त्रीने गूढगर्भ पुत्र थयो, तेनु नाम 'कस' आप्यु अनुक्रमे ते बालक म्होटो थयो त्यारे मस्ति करे अने लोकोना छोकराओने मार आपे, तेथी लोक आवीने सुभद्रने नित्य ओलभा आपे, त्यारे वाणिए विचार्युं के हु तो सामान्य माणस छु अने आ तो राजपुत्र छे माटे म्हारे घेर ए केवी रीते रही शके? एवु जाणी वाणीयाए ते छोकरो वसुदेव कुमरने जइ सोंप्यो अने कस पण वसुदेवजीनो चाकर थइ रह्यो. तेमज वसुदेवजी पण कस ऊपर घणी कृपादृष्टि राखवा लाग्या एवा अवसरमा वसुराजाना वशमा ' बृहद्रथ ' राजा थया तेनो पुत्र 'जरासध' नामे प्रतिवासुदेव त्रण खडनो भोक्ता छे ते राजगृही नग-रीमां राज्य करे छे अने यादव पण सर्वे तेनीज आज्ञा पाले छे ते जरासध राजाए समुद्रविजयनी ऊपर दूतनी साथे एक कागल लखी मोकल्यो के " वैताढ्य पर्वत पासेनो रहेवासी सिंहनामे पल्लिपति ते सिंहपुर नगरनो राजा छे तेने जीवतो बाधी पकडीने जे म्हारी पासे लइ आवे तेने हु म्हारी जीवयशा नामे पुत्री परणावु अने वली एक नगर जे ते धणी पसद करे ते नगरनु राज्य पण आपु " एवी रीतनो कागल वाचीने समुद्रविजयजी पोतानी सेना तैयार करी सिंह नामा पल्लिपतिने जीतवा माटे चढाइ करवाने तैयार थया एटलामा वसुदेव कुमरे आवी समुद्रविजयजीने वर्ज्या अने कसने साथे लइ पोते सैन्य सहित ते राजानी ऊपर चढी गया त्या जइ कसने आगेवान करी

तेनी साथे युद्ध कर्युं, कंसे सिंहराजाने बांधी लावीने वसुदेवजीने आधीन कर्यो. पाछलथी समुद्रविजयजीए कोष्टक निमित्तियाने पूछयुं के वसुदेवजी अने जीवयशानुं जोडुं मलतुं छे के नथी ? त्यारे निमित्तिए कह्युं के ' ए जीवयशा परण्या पछी श्वसुरना कुलना अने पोताना पिताना कुलना ए रीते वेहु कुलनो क्षय करनारी छे. माटे तमे विचारीने काम करजो. म्हारा वचनमां लगार मात्र संदेह जाणशो नहीं.' एवुं सांभली निमित्तियाने शीख आपी विदाय कर्यो. निमित्तियानी वातथी चिंतातुर थया अने विचारवा लाग्या के वसुदेवजी जीत्यो एवुं सांभलशे तो जरासंध पोतानी पुत्री वसुदेवजीने आपशे अने ते कन्या तो वंने कुलनो क्षय करनारी छे तो हवे आपणने एनो शो उपाय करवो ? एवा चिंतातुर थइ बेठा एटलामां वसुदेवजी पण सिंहराजाने बांधीने समुद्रविजयजीनी पासे लइ आव्या अने समुद्रविजयजीने चिंतातुर थएला देखीने पूछवा लाग्या के तमे शी चिंतामां बेठा छो ? त्यारे वसुदेवजीने एकांतमां लइ जइने समुद्रविजयजीए, जीवयशा वेहु कुलना क्षयने करवावाली छे ए वात संभलावी त्यारे वसुदेवजी बोल्या के ए सिंहराजाने म्हें बांध्यो नथी, परंतु कंसे बांध्यो छे. ए वात सांभली समुद्रविजयजी विचारमां पड्या के ए वाणियाना छोकरामां एटलुं वल होय नहिं, माटे तेनी हकीकत पूछवा सारुं सुभद्र वणिकने बोलाव्यो, तेणे सर्व वृत्तांत कह्यो. पछी ते वाणियानी पासेथी मुद्रिका मगावी कंसने आपी. सिंहराजा सहित कंसने राजगृहनगरे जरासंध पासे मोकल्यो. जरासंधे पण कंसने पोतानी पुत्री जीवयशा परणावी दीधी अने वली कंसे तेनी पासेथी मथुरानुं राज्य माग्युं त्यारे जरासंधे पोतानुं सबल सैन्य आप्युं, ते लेइ कंसे मथुरामां जइ पोतानो पिता जे उग्रसेन तेने जीवतो पकडी काष्टना पांजरामां नाखी दीधो अने पोते मथुरानुं राज्य करवा लाग्यो. पोतानो पिता काष्टपिंज-

रमां पड्यो थको दु ख भोगवे छे एवु जोइने कसनो न्हानो भाई अतिमुक्तक नामे छे ते ससारथी विरक्त थयो अने दीक्षा लइ चाली निकल्यो

वसुदेवजीनो पाछलो भव—

वसुदेवकुमरे पूर्वभवमां स्त्रीवल्लभ कर्म उपार्जन कर्यु छे, ते पूर्व-भवनी कथा कहे छे वसुदेवनो जीव पाछला भवमां कोइ एक गामनें विषे नदीपेण एवे नामे कुलपुत्र हतो तेनां माता–पिता बाल्याव-स्थामांज मरण पामी गया पछी ते मामाना घरमां रहीने म्होटो थयो ते ज्यारे युवान अवस्था पाम्यो, त्यारे कालु रूप, कुदर्शनी, बिलाडाना जेवी न्हानी आंख, गणेशना जेवु म्होटु पेट, हाथीना जेवा मोटा दांत ऊंटना जेवा मोटा होठ, वानराना जेवा कान, चपटी नासिका, त्रिखूणु कपाल, एवो कुरूपो देखीने तेने कोइ कन्या आपे नहीं, सर्व स्त्रीयो तेनी निंदा करे तेथी चिंतातुर थयो थको मामाना घरमां काम काज करवु मूकी दीधु, मामाए कह्यु के म्हारी सात पुत्री छे तेमांथी एक तुजने परणावीश, तु चिंता करीश नहीं पछी मामाए पोतानी दीकरीओने एनी साथे परणवानुं कह्यु त्यारे ते साते बोली के अमे मरी जइशु, पण ए दांतलाने तो कदापि परणीशु नहीं एवु सांभली ते नदीपेण मरवाने माटे कोइ एक पर्वत ऊपर चढीने त्यांथी पडवा लाग्यो, एवामा एक मुनिराजे तेने वर्ज्यो अने कह्यु के– भोला ! आवा प्रकारे मरवाथी त्हारू दु ख मटे नहीं त्या प्रतिबोध पामीने चारित्र लीधु अने साधुओनो वेयावच्च करवानो अभिग्रह धारण कर्यो वली पोते मासखमणनी तपस्या करे अने साधुओनी पण वेयावच्च करे. एक दिवस इन्द्रराजे पोतानी सभामा नदीपेणनी वेया-वच्च करवा आश्चर्य घणीज प्रशसा करी के एना सरखो वेयावच्चनो करनार बीजो कोइ नथी, ते वातने एक देवता अणमानतो त्या आव्यो

तेणे अतिसारना रोगें करी ग्रस्त थएला एवा एक साधुनुं रूप विकूर्वीने एक गामने बाहेर जइ वेसाड्यो. अने वली बीजा एक साधुनो रूप बनावीने ज्यां नंदीषेण मासखमणनुं पारणुं करवा लाग्या छे त्यां मोकल्यो. ते कृत्रिम साधु आवीने नंदीषेणने कहेवा लाग्यो के अरे! अतिसारना रोगवालो साधु वहार पडेल छे, तेनो वेयावृत्य कर. ते सांभली नंदीषेण पारणुं करवुं पडतुं मूकीने तरत ज ते साधुना शरीर शुद्धिने माटे गाममां सूजतुं पाणी लेवा सारुं फरवा लाग्यो. परंतु ते देवे देवमायाथी असूजतुं करी दीधुं, लेवा योग्य पाणी क्यांय मले नहीं तो पण मनमां खेद आवतो नथी, पण उलटो पश्चात्ताप करवा लाग्यो के अरे! जूओ तो खरा के हुं केवो भाग्यहीन छुं के आवा मुनिओनो वेयावच्च करवामां पण मने अंतराय पडवा लाग्यो छे. पछी एम करतां पाणी पण मल्युं, ते लइने साधु पासे आव्यो. त्यारे ते अतिसारी साधुए रीश करी लात मारीने पाणी ढोली नाख्युं अने कहेवा लाग्यो के–अरे! मूर्खा आटलो वखत रहीने केम आव्यो? एम कह्युं तो पण तेना ऊपर रोष न कर्यो. पछी ते साधुने पोतानी खांध ऊपर चढावी गाममां लइ चाल्यो, त्यारे ते साधुए देवमायाथी तेना ऊपर अत्यंत दुर्गंधित विष्टा करवा मांडी तेथी नंदीषेणनुं शरीर संपूर्ण मलथी भराइ गयुं, तो पण नंदीषेणने द्वेष उपज्यो नहीं. एवी तेनी धीरज जोइ देव तुष्टमान थइ नंदीषेणने वांदीने स्वस्थानके देवलोकमां गयो. एवी रीते नंदीषेणे वार हजार वर्ष पर्यन्त चारित्र पाल्युं "घणा ग्रंथोमां पंचावन हजार वर्ष चारित्र पाल्युं एम कहेलुं छे." अंते अनशन कर्युं ते वखत कोइक चक्रवर्ति तेने वांदवा आव्यो. त्यारे चक्रवर्तिनी पटराणीने देखी तेणे नियाणुं कर्युं के हुं परभवे स्त्रीवल्लभ थाउं. त्यारे त्यांथी काल करी देवलोक गयो अने देवलोकथी चवीने आ वसुदेव थयो छे तेनुं पूर्वे करेला नियाणाना प्रभावथी कामदेव जेवुं

रूप थयु छे ते वसुदेव जे वखत शौरीपुर नगरमां फरे त्यारे ते नगरनी सर्वे स्त्रीयो पोताना घर उघाडा मूकी तथा बीजा पण सर्वे कामकाज पडता मूकी रूपे मोही थकी वसुदेवनी पछवाडे फरे अने भरतारनु कह्यु पण माने नहीं, तेथी कोइ कोइना घरोमा चोर पेसी जाय अने घर पण लूटी चाल्या जाय एवु कृत्य जोइ ते नगरना रहेनारा सर्व लोकोए समुद्रविजय राजानी पासे जइ विनति करी के गामनी सर्वे स्त्रीयो घर सूना मूकीने वसुदेव कुमरनी पाछल भमे छे माटे जो तमे वसुदेवजीने नहीं वर्जो तो अमने बीजे क्याइ रहेवानी जगा बतावो ते साभली समुद्रविजय राजा बोल्या के–हे पचो ! तमे कहो छो तेम हु करीश तमे सुखे पोतपोताने घरे जाओ अने सुखसमाधिमा रहो एम कही महाजनने शीख आपी थोडी वार पछी वसुदेवजी पण समुद्रविजयजीने पगे लागवा आव्या त्यारे वसुदेवजीने खोलामां बेसाडीने समुद्रविजयजी बोल्या के हे भाइ ! आज काल तु शरीरमा दुर्बल थइ गएलो देखाय छे ते हु जाणु छु के तु ज्या त्या घणो रखडे छे, माटे वेला कुवेलाए कोइ छिद्र जोइ छल करीने त्हारा रूपनी खरावी करशे तथा वली आपणे राजा छिए माटे आपणा वैरी पण घणा छे ते कोइ उपद्रव करे माटे तु आपणा घरना बगीचामा रम्या कर अने बाहेर भमवानु मूकी दे बाहेर भमवाथी विद्या शीखेली छे ते पण भूली जइश एवु साभली वसुदेवजी पण विनयपूर्वक बोल्या के तमारो हुकुम म्हारे प्रमाण छे एम कही घरनी वाडी माहे ज रमत करवा लाग्या, एवामा उन्हालो आव्यो त्यारे शिवादेवीए समुद्रविजयजी माटे चदन घसी तेनी कटोरी भरी ढाकीने दासीना हाथमा आपी समुद्रविजयजी पासे मोकली, ते कटोरी दासी लइ जाय छे, तेने देखी वसुदेव बोल्यो के आ शु छे ? दासी बोली हजूरने विलेपन करवा सारु चदननी कटोरी राणीए दीधी छे ते लइ

जाउं छुं. त्यारे वसुदेवजीए ते दासीना हाथमांथी छीनवी लइ पोताना अंग ऊपर चंदननुं विलेपन करी लीधुं. ते जोइ दासी कोप करीने बोली के ह्हारां आवां लक्षण छे तेथीज तुं बंदीखाने पड्यो छे. ते सांभली वसुदेवजीए दासीने पूछयुं के बंदीखानुं ते वली कयुं ! त्यारे दासीए जवाब दीधो नहीं, पण ज्यारे घणो हठ करीने पूछयुं त्यारे दासीए गामना लोको संबंधि विचार सर्व कही संभलाव्यो. तेथी वसुदेवजी राजानी ऊपर तथा पंचोनी ऊपर अमर्ष आणीने अर्धरात्रे एकला घरमांथी बाहेर निकली गया, अने विचार्यु के हवेथी ए समुद्रविजयजी म्हारी आशा मूकीने पछवाडे शोध करवा नीकले नहीं एवो कोइ उपाय करुं, पछी नगरनी बाहेर एक मडदाने बालीने पोलना कमाड ऊपर लोहीना अक्षरोथी लख्युं के हे नगरवासी लोको ! तमे सांभलो हुं तमोने तथा म्हारा म्होटा भाइने सुख थवाने माटे बली भस्म थयो छुं. हवे तमे सुख समाधीमां रहेजो. एवी रीते लखीने चालतो थयो. प्रभाते पोलीए पोल उघाडी त्यारे मडदुं बल्युं दीठुं अने वसुदेवजीना लखेला अक्षर वांची समुद्रविजयजीने जइ कह्युं, समुद्रविजयजी त्यां आवी ते कृत्य जोइ शोकथी मरवा लाग्या. त्यारे प्रधानादि लोकोए समजावी राख्या, तो पण शोकमां गरकाव थया थका राज्य करे छे. हवे वसुदेव गामे गामे फरवा लाग्यो. ते ज्यां जाय त्यां पूर्वे करेला नीयाणाना प्रभावथी अत्यंत स्वरूपवान कन्याओ परणे. एम क्यांक दश, क्यांक वीश, क्यांक सो, क्यांक पांचसो परणे. ते सर्व विद्याधरराजाओनी पुत्रीओ तथा बीजा भूचरराजाओनी पुत्रीओ तथा शेठ प्रमुख म्होटा धनाढ्य लोकोनी पुत्रीओ जाणवी एम सर्व मली बहोंतेर हजार कन्याओने वसुदेवजी परण्या अने घणी विद्याओ पण शीख्या, एवा अवसरमां रोहक राजानी पुत्री रोहिणी नामे छे तेनो स्वयंवर मंडप मंडाणो छे. त्यां त्रण खंडनो

स्वामी जरासंध आदि सर्व राजा स्वयवर मंडपे आव्या तेमज समुद्रविजयजी प्रमुख सर्व यादवो पण आव्या ते रात्रिए वसुदेवजीने रोहिणी प्रज्ञप्ति विद्यादेवीए आवी स्वप्नामां कह्युं के–हे वसुदेव ! रोहिणीना स्वयंवर मडपने विषे तु जा अने तुजने ते रोहिणी परणशे वली रोहिणी शिवाय बीजी पण कन्या तु हजी परणीश एम तुजने बे कन्याओनी प्राप्ति हवे थवानी छे माटे तु का सूतो छे ? प्रभाते तु त्या जाजे एम कहीने पछी ते विद्यादेवीए रोहिणीनी पासे जइ, तेने पण स्वप्नामा कह्यु के तुं मृदग वजाववावाला कूबडाने परणी लेजे

रोहक राजाए प्रभाते स्वयवर मडप शणगार्यो त्यां सर्व राजा, राजकुमारो पण शणगार करी पोत पोताना नामनां सिंहासनो ऊपर आवी विराजमान थया, एटलामा रोहिणी राजकन्या पण सखियोनी साथे सोल शणगार सजी अने हाथमा फूलमाळा लइने स्वयंवर मडपमा आवी, त्यारे सर्व राजा ते कन्याने देखवा लाग्या अने प्रतिहारिणी प्रत्येक राजाओना गुण रूपादिकनु वर्णन करवा लागी केमके रोहिणी सती छे माटे कांचमाथी सर्व देखी शके नहीं तेथी प्रतिहारिणीए सर्व राजाओने वर्णवी देखाड्या, पण कुलदेवीना वचनने हृदयमा धारण करीने रोहिणीए कूबडाना रूपे वसुदेव आव्या छे तेना पासे मृदग छे तेने वजावता ' एज वसुदेव एज वसुदेव ' एवी ध्वनि थवा लागी तेने जोइने तेना गळामां वर माला पहेरावी त्यारे कूबडो नाचवा लाग्यो अने मुखथी कहेवा लाग्यो, के अहो ! आ सर्व राजाओ करता हु अधिक भाग्यशाली छु माटे ए सर्व राजाओ बेठा रह्या अने मुजने वरमाला मली गइ एवु जोइ ते मडपमा आवेला सर्व राजाओ कन्या ऊपर क्रोध करीने, केटलाएक तो कन्याने निंदवा लाग्या, केट-

लाएक कन्याना पितानी निंदा करवा लाग्या अने केटलाएक बोल्या अरे ! आ कूबडाने मारीने एनी पासेथी वरमाला खेंची ल्यो, फोकट बीजा ऊपर रीश करवाथी शुं थाय, एवुं मांहो मांहे कहीने बोल्या के जेना सुभट कूबडा पासे ऊभेला छे ते कूबडा पासेथी वरमाला खेंची लीए अने तेनीज ए वरमाला पण जाणवी. एवुं सांभली सर्व राजाओना सेवक कूबडा पासे आव्या, कूबडे पण सर्व सेवकोने सोनाना मृदंगथी मारीने जमीन ऊपर न्हांखी दीधा. ते देखी सर्व राजा शस्त्र लइने मारवा दोड्या त्यारे वसुदेवे सर्व राजाओने विरूप करी न्हांख्या, कोइनी मूछो, डाढी कापी न्हांखी, अने कोइने रुंड मुंड करी न्हांख्या ते जोइ जरासंध राजाए समुद्रविजयना स्हामुं जोयुं त्यारे समुद्रविजय राजा बख-तरटोप पहेरी धनुष बाण लइने युद्ध करवा उठ्या तेने देखी वसुदेवे जाण्युं के भाइना साथे लडवुं ठीक नहीं. तो हवे हुं म्हारुं स्वरूप प्रगट करी देखाडुं, नहीं तो संग्राम थशे. एम विचारी, कूबडानुं रूप त्यागी मृदंग न्हांखीने समुद्रविजय पासे एक बाण मूक्यो. तेमां ' वसु-देवनो आपने नमस्कार थाओ ' एवुं सुवर्णमयी अक्षरोथी लखेलुं हतुं, ते वांचीने समुद्रविजयजीए सविस्मय विचार्युं के वसुदेव तो मरण पाम्यो ते अहीं क्यांथी आव्यो, ए कोइ इंद्रजालीयो मने भोलवतो तो नथी एवुं विचारे छे एटलामां तो वसुदेव पण आवी पगे लाग्यो. त्यारे तो समुद्रविजयजीए सारी पेठे ओलख्यो अने सर्व यादव खुशी थया. जरासंध प्रमुख राजाओ पण खुशी थया, महोत्सव करीने वसुदेवने रोहिणी परणावी तथा आगल पण जेटली स्त्री परण्या हता ते सहुनी हकीकत समुद्रविजयजीने कही. पछी पोतानी परणेल व्होतेर हजार स्त्रीओने भेली करी, विमानमां बेसाडी लावीने वसुदेव घेर आव्या. स्नेहना लीधे वसुदेवजीने मथुरा नगरीमां कंस लइ आव्यो. त्यां कंस तथा वसुदेवजी बेहु मथुरामां रहे छे.

एकदा देवकराजानी पुत्री देवकीजी, वसुदेवने परणवा आवी, देवकीजी अने जीवयशा ए बे साथे रमत करे पण जीवयशा पोताना बापना बलना गर्वे करी उन्मत्त छे ज्यारे देवकीजीनो विवाह मंडाणो त्यारे जीवयशा मदिरापान करी देवकीजीने पोतानी खांध ऊपर बेसाडी नाचवा लागी एवा अवसरमा कसनो न्हानो भाइ अइमुत्तो नामा साधु गोचरी सारु फरतो फरतो कसना घरे आव्यो, तेने जीवयशाए दीठो त्यारे ते मदोन्मत्त थइ थकी मुनिने कंठे वलगीने बोली के-देवरजी ! तमे भला अवसरमां आव्या छो तो हवे एक राजकन्या तमोने पण परणावीश एवु बोलती तेने मूके नहीं त्यारे वीवरावबा माटे साधु बोल्या के अरे मुग्धे ! तु शु नाचे कूदे छे जेने तें त्हारी खाध ऊपर बेसाडी छे तेनो सातमो गर्भ जे थाशे, ते त्हारा भरतारने तथा त्हारा पिताने मारवावालो थशे एवा साधुना वचन साभली, साधुने मूकी दीधो त्यांथी साधु तो विहार करी गया अने जीवयशानो मद उतरी गयो, मनमा शका पडी के ' साधुनु वचन खोटु थाय नहीं ' पछी ते वात एकांते जइ पोताना भरतार (कस)ने कही, कसे पण ते वात सत्य करी मानी तो पण ते वचन जुठु करवाने अर्थे विचार्यु के आ वात कोइने जाण वामा नहीं आवे तेवी रीते एनो उपाय करवो एवु चिंतवन करी, एक दिवस वसुदेवजीने कसे राजी कर्या त्यारे वसुदेवजी बोल्या के कंस ! त्हारा ऊपर हुं तुष्टमान थयो छु, माटे तु मागे ते हु आपीश एवु साभली कस बोल्यो के ' हे मित्र ! तु तुष्टमान थयो तो देव-कीजीना पहेलवेला साते गर्भ थाय ते मने आपजे ' ते वात वसुदेवजीए सरल चित्तथी मान्य करी अने कसने कह्यु के हु तमोने साते गर्भ आपीश एवी रीते वसुदेवजी वचनथी बंधाइ गया, पछी ते वात देव कीजी आगल कही त्यारे देवकीजीए अइमुत्ता मुनिना कहेला वचन

वसुदेवजीने संभलाव्यां अने कह्युं के आ कंस आपणा पुत्रोने लइ मारी नाखशे. ते सांभली वसुदेवजीने घणो पश्चात्ताप थयो पण वचने बंधाइ गयो त्यां शो उपाय ? सत्पुरुषनुं बोलवुं फरे नहीं. एवा अवसरमां भद्दिलपुर नगरनो रहेवासी नाग नामे शेठ छे. तेनी सुलसा नामा स्त्रीने मृतवच्छा दोष छे तेथी ते बधा मरेला पुत्रोने जन्म आपे छे माटे ते स्त्रीए अट्ठम तप करी हरणीगमेषी देवनुं आराधान कर्युं. ते देव त्रीजा उपवासमां प्रगट थइने बोल्यो के मने शा वास्ते बोलाव्यो ? त्यारे सुलसा बोली के हे देव ! मुजने मृतक पुत्र आवे छे ते जीवता करी आप. त्यारे देवता बोल्यो कोइनुं कर्म दूर करवाने हुं समर्थ नथी. माटे ह्हारा पुत्र तो जीवता रहेशे नहीं, ए वात निश्चयात्मक छे तथापि तारी पुत्र संबंधि इच्छा हुं पूरण करी आपीश. एवुं कहीने देवता जतो रह्यो. पछी कर्मयोगे देवकीजी अने सुलसा ए बेहुने साथेज गर्भ रह्यो, अने साथेज जन्म्यो. त्यारे हरणीगमेषीए देवकीजीना जीवता पुत्रो लावीने सुलसानी पासे मूक्या अने सुलसाना मरेल पुत्र देवकीजीनी पासे लावी मूक्या. ते मरेला बालकोने कंसना चोकीदारोए लइ जइने कंसने स्वाधीन कर्या. कंसे तेमने शिला ऊपर पछाडी मारी नाख्या. एवी रीते देवकीजीना छ पुत्र सुलसानी पासे वृद्धि पाम्या अने सुलसाना मृतक पुत्र देवकी पासेथी लइने कंसे मार्या. " देवकीजीए पूर्वना भवमां पोतानी शोकनां सात रत्न चोरी लीधां हतां. तेथी शोक, दिलगीर थइने ज्यारे घणुं रुदन करवा लागी त्यारे एक रत्न तेने पाछुं दीधुं हतुं. ते कर्मना योगे अनिकयशा, अनंतसेन, विजयसेन, निहतारि, देवयशा अने शत्रुसेन ए छ पुत्र देवकीजीना लइने हरणीगमेषी देवे सुलसाने आप्या. "

श्रीकृष्णवासुदेवनो जन्म अने तेना हाथे कंसनो वध—

हवे सातमो गर्भ सात स्वप्न सूचित पांचमा देवलोकथी

चवीने देवकीजीनी कूंखे आवी उपन्यो ते गर्भ जन्मता ज लइ जवाने माटे कसना माणसो चोकीदार वेठेला हता तेथी देवकीजीए वसुदेवजीने कह्यु के आ सातमो गर्भ उत्तम छे माटे कोइ पण उपाय करीने कदापि एना माटे जुठु वोलवु पडे तो जुठु वोलीने पण आपणे, ए गर्भ राखवो, ए वात वसुदेवजीए साभलीने पछी वसुदेवजी जे वखत देवकीजीने परण्या हता ते वखते जे देवकराजाए दायजो आप्यो हतो, तेमा गोकुलगाम पण साथे आप्यु हतु ते गोकुलगाममा नंदनामे गोप तथा तेनी यशोदा नामे स्त्री ए वे रहे छे ते पण दायजामा आवी गया हता एटलामा देवकीजीने गर्भ थयो ते वर्णे कालो हतो तेने देखी कृष्ण कृष्ण एवु कहीने वसुदेवजी तेने त्यांथी छानो लइने निकली गया, ते वखते कसे वेसाडेला चोकीदारोने निद्रा आवी गइ, आगल जता दरवाजो खोलीने निकल्या त्यारे उग्रसेन वोल्या आ कोण छे वसुदेवजी वोल्या आ म्हारु काष्टनु पाजरु भांगीने तुजने मुक्त करनार छे एवु कही आगल चाल्या, मार्गमां यमुनानदीए पण मार्ग आप्यो, नदी उल्लघीने गोकुलमा जइ यशोदाजीने ते वालक सोंप्यो अने ते वखत यशोदाजीने पुत्री थई हती ते लइ देवकीजीने सोंपी पाछलथी कसना पोरायत निन्द्रामाथी जाग्या ते वोल्या शुं पुत्र आव्यो के पुत्री आवी त्यारे वसुदेवजीए पुत्री आपी ते कसे लईने तेनु नाक कापीने पाछी वसुदेवजीने आपी [1]

हवे कंस निश्चित थयो, गोकुलमा यशोदाजी वसुदेवना कहेवाथी कृष्णनु पुत्रनी परे पालन पोपण करे छे कृष्ण पण सुखे वृद्धि पामे छे देवकीजी कृष्णजीने देखवानी घणी घणी चाहना करे पण कसनी धीकना लीधे पन्नर पन्नर दिवसे अथवा महीने महीने आज

१ अन्यदर्शनवाला कहे छे के—कन्याने कसे शिला ऊपर पछाडी मारी न्हांखी अने ते मरीने विद्युत् थइ, पण ए वात मिथ्या छे

वच्छ बारश छे, आज गोत्राट छे, आज काजली त्रीज छे, एवा नवा नवा वहाना करीने गोकुलमां जाय तेथी ते दिवसो सर्व मिथ्यात्वीओना पर्व थयां, पछी त्यां जइ देवकीजी श्रीकृष्णने रमत करावे, दूध धवरावे अने यशोदाजीने कहे के त्हारो पुत्र मने घणो वल्लभ लागे छे. एवां वचन कही पाछी घेर आवे. ए रीते कृष्णजी बाललीला करता थका यशोदाजीनां दूध, दहीं प्रमुखनां वासण ढोली न्हांखे, फोडी नाखे, इत्यादिक अनेक प्रकारनी रमत करता विचरे छे. एकदा वसुदेवजीए देवकीने कह्युं के तमारे घणी वखत त्यां जावुं नहीं कारण के जो कंसने ए वातनी खबर पडशे तो वली कांइक उत्पात करशे. कृष्ण ज्यारे सात आठ वर्षना थया त्यारे तेने कलाओ शीखववा सारु रोहिणीना पुत्र बलदेवजीने कंसथी छांनो मोकल्यो अने ते छांनो रहेवानी हेतुभूत कंस संबंधि सर्व हकीकत बलदेवजीने निवेदन करी. एम बलदेवजी अने कृष्ण बेहु जण गोकुलमां नंदने घेर रहे छे अने बलदेवजी श्रीकृष्णने विद्याओ भणावे छे, अने सर्व कलाओ शीखावे छे एम करतां श्रीकृष्ण चौद वर्षना थया, हवे राम कृष्ण बन्ने भाइओ गोवालीयाओनी साथे नाचे, कूदे, गावे, बजावे, नीला पीला वस्त्र पहेरे, कृष्ण पोताने मस्तके मोरपींछ राखे, मुरली बजावे, गोपीयोनी साथे गावे, आखो दिवस रमत करे, सांजना घेर आवे. एवा अवसरमां वली एक दिवसे कंसना मनमां एवी वात आवी के साधुनुं वचन जूठुं थयुं के नहीं तेनी चोकसी करवा माटे निमित्तियाने पूछयुं के मने कोइ मारनार छे किं वा नथी ? ते सांभली निमित्तियो बोल्यो के 'साधुनुं वचन जूठुं नथी त्हारो शत्रु कोइक जग्याए म्होटो थइ रह्यो छे पण मरण पाम्यो नथी' त्यारे कंसे पूछ्युं के ते केवी रीते म्हारा जाणवामां आवे, निमित्तियो बोल्यो के–' जे अरिष्टनामा बलदने दमन करशे, काली नागने वश करशे, त्हारा केशी

नामना घोडाने दमशे, खर अने मेष नामा खरोने मारशे, चपोत्तर अने पद्मोत्तर नामा हाथीओने मारशे, सारग धनुष्य चढावशे, चाणूर-मल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए बेने मारशे ते म्हारो मारनार जाणजे ' ए वात साभली कसे तेनी निगाह करवाने माटे पडह वजडाव्यो के जे कोइ सारग धनुष्यने चढावे तेने म्हारी व्हेन सत्यभामा हु परणावु ए वात साभली घणा राजा त्या भेला थया एज अवसरमा वसुदेवजीनो एक अनादृष्ट नामा महा वलवत पुत्र छे ते पण धनुष्य चढाववाने जाय छे मार्गमा साज पडी तेथी रात्रे गोकुलमा रह्यो तेने वलभद्र ओलखतो हतो तेथी तेनी घणी सेवा करी, प्रभात थयु त्यारे अनादृष्ट वलभद्रने कहेवा लाग्यो के एक वोलावो आपो तो मने मथुरानो मार्ग देखाडी आवे, ते साभली वलभद्रे श्रीकृष्णने अनादृष्ट साथे मार्ग देखाडवा मोकल्यो, मार्गे जता अनादृष्टनो रथ वृक्षोमा अटकी गयो ते अनादृष्टथी निकल्यो नहीं त्यारे कृष्णजीए वेहु वृक्षोने लात मारी उखेडी नाख्या अने मार्ग करी रथ वाहेर रस्ते चडावी दीधो ते जोइ अनादृष्टी तेने वलवान जाणी, रथमा वेसाडी मथुरामा लइ गयो, त्या जइ अनादृष्टी धनुष्यने फरसना लाग्यो दैवयोगथी पाछो पड्यो त्यारे तेनी ऊपर लोक हस्या श्रीकृष्णे अनादृष्टीनु हास्य थतु देखी ते धनुष्यने सहेज उपाडीने चढावी लीधु सत्यभामा पासे ऊभी हती तेणे श्रीकृष्णना गलामा वरमाला पेरावी, त्यारे वसुदेवजी अनादृष्टी ऊपर क्रोध करीने कहेवा लाग्या के एने शा वास्ते अहीं लइ आव्यो जा हमणाज पाछो मूकी आव ते सांभली अनादृष्टी छानो मानो कृष्णने गोकुलमा लइ गयो एटला दिवससुधी आ वलभद्र म्हारो भाइ छे एवु श्री-कृष्णना जाणवामा न हतु अनुक्रमे श्रीकृष्ण सोल वर्षना थया त्यारे कसे केशी घोडो अने मेष घोडो तथा अरिष्टनामा वलद ए सर्वने गोकुलमा मोकल्या ते जइ गोकुलमा उपद्रव करवा लाग्या, तेमने

श्रीकृष्णे मारी न्हांख्या. एज अरसामां मथुरामां कंसे मल्लनो अखाडो मांड्यो त्यां घणा मल्ल एकठा थया तेमां एक चाणूरमल्ल अने बीजो मुष्टिकमल्ल ए बे मल्ल घणा बलवान छे ते वखते कंसे जाण्युं के धनुष्य चढाववावालाने म्हें सारी पेठे ओलख्यो नहीं माटे हवे कोइ रीते ते अहीं आवे तो हुं तेने मारी न्हांखीश. एवुं विचारी एक बाजु कंस बेठो. एवामां श्रीकृष्णे सांभल्युं के आज मल्लयुद्ध छे ते हुं देखवा जाऊं एवुं चिंतवी बलभद्रने गुरु जाणी पगे लागी बोल्यो स्वामिन्! आज आज्ञा आपो तो मथुरामां मल्लयुद्ध जोवा जाउं. त्यारे बलभद्रे जाण्युं के त्यां जवाथी कदाच कंसनी साथे युद्ध थइ जाय, माटे कृष्णने भाइ पणानी वात जणावी आपुं एम विचारी बलभद्र बोल्यो-'हे यशोदा! अमोने स्नान करवा माटे उन्हुं पाणी आप? अमे आज मल्लयुद्ध देखवा जइशुं. ते वखते यशोदा बीजा कोइ काममां लागी हती तेथी बलभद्रनुं वचन सांभल्युं अणसांभल्या जेवुं करी दीधुं. त्यारे बल-भद्र बोल्यो-केम यशोदा! तुं म्हारा भाइनुं पालन-पोषण करवाथी शुं राणी बनी बेठी? दासपणुं भूली गइ? शुं तेथी म्हारी वातने गणकारती नथी?' एवुं कहीने श्रीकृष्णने साथे लइ बलभद्र बोल्यो के चालो आपणे यमुनामांज स्नान करीने, पछी मथुरामां जइशुं. एम यशोदाने कडवां वचन बलभद्रे कह्यां तेथी श्रीकृष्ण नाराज थया त्यारे मार्गमां बलभद्रे छ भाइने मारवा आदिक, कंस संबंधि सर्व वृत्तांत कह्यो तथा आपणे बे भाइनी माताओ जुदी जुदी छे, परंतु बाप एकज छे. तने कंसना भयना लीधे अहीं गोकुलमां राखेल छे ते सांभ-ळीने श्रीकृष्ण बोल्यो के 'जो आजना आज हुं म्हारा छ भाइने मार-वानुं वैर कंस पासेथी लउं तोज हुं खरेखरो कृष्ण छुं' एम कही मार्गे यमुना नदीमां स्नान करवा प्रवेश कर्यो, त्यारे कालियद्रहनो काली नाग आव्यो तेने श्रीकृष्णे पकडीने नाक वींधी नाकमां कमलवेलथी

नाथी तेना ऊपर चडी असवार थइने घोडानी पेठे दोडाव्यो आ वात लोकोए जइ मथुरामा एक बीजानी पासे करी, कंसे पण लोकोना मुखथी साभली के आजे नद गोवालीयाना पुत्रे कालिनागने दम्यो एटलामा तो राम कृष्ण बेहु भाइ घणा गोवालीयाना वृदथी परवर्या थका नगरने बारणे आव्या त्या चपोत्तर अने पद्मोत्तर ए बे हाथीए तेमने रोक्या तेथी बधा गोवालीया डरवा लाग्या पछी बलभद्रे अने कृष्णे मली हाथीओना दतोसल उखेडी नाखी हाथीओने उपाडी दूर फेंकी दीधा तेथी हाथी मरण पाम्या पछी कृष्ण अने बलभद्र बेहु जण मल्लने अखाडे आव्या त्यां एक राजाने मच ऊपरथी नीचे पटकीने ते मच ऊपर बेठा त्या बलभद्रे श्रीकृष्णने पोतानु सर्व कुटुब बताव्यु वली कसने पण देखाड्यो अने कह्यु के ए कस आपणो ज छे परतु दुष्ट छे. एटलामा कसे पण चाणूरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए बे ने युद्ध करवा तैयार कर्या अनुक्रमे कृष्णजीए चाणूरमल्लने मार्यो अने बलभद्रे मुष्टिकमल्लने मारी नाख्यो ए रीते बेहु मल्लने मरण पामेला जोइ कस क्रोध करीने बोल्यो, अरे सुभटो ! जेणे ए बन्ने सर्पने पालन–पोषण करी म्होटा कर्या छे ते नद अने यशोदा बेहुने बाधी पकडीने अहीं लइ आवो, एटले घाणीमा पीली न्हखावीए एवु कसनु बोलवु साभली श्रीकृष्ण रोपारुण थया थका कूदको मारीने कसने कहेवा लाग्या अरे दुष्ट ! म्हारा छ भाइओने तें मार्या छे तेनु हु वैर लउ छु एम कही कसनी चोटली पकडी, नीचो न्हाखी दइ, मूकी मारी तेथी कस मरण पामी नरके गयो यादवोए मली उग्रसेन राजाने पाजरामाथी बाहेर काहाडी छूटो करी सभामां लइ आवी बेसाड्यो, त्यारे लोकोए जाण्यु के आ राम अने कृष्ण बेहु वसुदेवना पुत्र छे पछी उग्रसेन राजाए सोल वर्षनी ऊमरवाला श्रीकृष्णजीने त्रणसे वर्षनी ऊमरवाली सत्यभामाने परणावी दीधी.

सौरीपुरथी यादवोनुं निर्गमन अने कालकुमरनी प्रतिज्ञा—

यादवोए जरासंधथी बीक पामीने जीवयशाने पूछयुं के कंसने अग्निसंस्कार करीए ? त्यारे जीवयशा बोली राम—कृष्ण तथा बीजा पण घणा यादवोनी साथे कंसने दाह देवाशे तमे जुओ तो खरा शुं थाय छे ? ते सांभली कृष्णजी बोल्या के अरे ! रंडा ताराथी शुं थवानुं छे ? एवुं सांभली जीवयशा त्यांथी निकली परबारी राजगृहमां पोताना पिता पासे जइ उघाडे माथे रोवा लागी अने कह्युं के आपना जीवतां यादवोए तमारा जमाइने मारी न्हाख्यो. यादव घणा उन्मत्त थया छे ते सांभली जरासंध बोल्यो पुत्रि ! तुं धीरज धर. जे थवानुं हतुं ते थयुं. हवे ए राम कृष्ण बेहु म्हारा अपराधी छे. ते बेहुने आवी म्हारे स्वाधीन करी जाशे तोज यादवो म्हारा राजमां रही शकशे. नहीं तो हुं ए सर्व यादवोने मारी नाखीश. एवी रीते जीवयशाने दिलासो आपी संतोषी पछी एक सोमनामा सामंतने यादवोनी पासे जरासंधे मोकल्यो. ते यादवो पासे आवीने समुद्रविजय प्रमुख राजाओने कहेवा लाग्यो के हे यादवो ! तमे म्हारी वात सांभलो के—जे थवावालुं हतुं ते थइ गयुं. हवे मात्र एक राम अने बीजो कृष्ण ए बे गोवालीयाना छोकरा छे तेने बांधीने म्हारी साथे जरासंध पासे मोकली आपो. ए दासोना लीधे तमारा सर्व यादवकुलनो क्षय करवो ठीक नथी, ते सांभली समुद्रविजय बोल्या अरे सोम ! तुं समजतो नथी, जे एवा गुणवान अने बलवंत पुत्रोने मरावबाने अर्थे अमे तुजने केम आपी दइए ? हवे तो अमे वृद्ध थया छिये. केटला काल पर्यंत जीवता रहीशुं ? माटे जे थवानुं हशे ते थशे. अमे कांइ अमारा पुत्र आपीशुं नहीं. वली बलभद्र बोल्या के अरे सोम ! तुं पिताओनी पासेथी पुत्रने मांगता लजातो नथी ? अरे ! हजी तो अमे अमारा एक भाइ मारवानुं कंस पासेथी वैर लीधुं छे; परन्तु पांच भाइ बीजा मार्या छे तेनुं वैर तो लेवुं बाकी रह्युं

छे. माटे तु जीवत्रानी चाहना राखतो होय तो इहाथी चाल्यो जा, नही तो तने हमणांज फल देखाडीश एवु साभली सोमनामा सामत बीक पामीने जरासध पासे गयो. पाछलथी यादवो भय पाम्या तेथी कोष्टिक निमित्तियाने पूछ्यु के अमारो जय क्यां थशे ते दिशा अमने बतावो, त्यारे निमित्तियो बोल्यो 'तमारा कुलमा राम अने कृष्ण महापुरुषो छे वली नेमीश्वरभगवान तीर्थंकर छे माटे तमारो कोइ रीते विगाड थवानो नथी, परन्तु हाल तमे कृष्णने राजा करीने पश्चिमदिशाए जाओ मार्गमा जतां जता जे स्थानके सत्यभामा, पुत्रनु जोडलुं प्रसवे ते स्थानके तमारे रही जानु त्या तमारी वृद्धि थवावाली छे, पण अहीं तमारे रहेवु नही ' एवुं साभलीने शौरीपुरथी समुद्रविजय प्रमुख अगीआर कुलकोटी यादव नीकल्या अने मथुराथी उग्रसेन प्रमुख सात कुलकोटी यादवो एकठा थइने सर्व कुटुंब सहित सोरठ देश तरफ चाल्या हवे सोमनामा सामते राजगृह नगरे जइ राजा जरासधने समाचार विदित कर्या जरासध पण सैन्य सज्ज करी यादवो ऊपर चढाइ करवा तैयार थयो, ते वखते जरासधनो पुत्र कालकुमर बोल्यो के जो म्हारु नाम काल छे तो हु सर्व यादवोने कालरूप थइ मारी न्हाखीश जो यादवो आकाशमा ऊंचा गया हशे तो नीसरणी माडीने ऊपर आकाशमा जइ यादवोनो नाश करीश अने जो यादवोए जमीनमा प्रवेश कर्यो हशे तो जमीन खोदीने हु पण प्रवेश करी तेमने मारीश, जो पाणीमा यादवोए प्रवेश कर्यो हशे तो हु पण पाणीमा प्रवेश करी तेमने मारीश तथा जो अग्निमा प्रवेश कर्यो हशे तो हु पण अग्निमा प्रवेश करीने यादवोनो नाश करीश ' एवुं पण करी पाचशे भाइओ सहित पिताने नमस्कार करीने कालकुमरे यादवोनी पछवाडे चढाइ करी अने जीवयशाने पण जती वखते कहेवा लाग्यो के म्हारा वनेवीनु वेर

यादवो पासेथी लउं तो म्हारुं नाम काल करी जाणजे. जीवयशाए आशीर्वाद आप्यो अने कह्युं के भाइ ! त्हारुं मृत्यु थाय तो भले थाओ पण यादवोनो क्षय करजे. ए रीते जेम थवानुं हतुं तेम जीवयशाना मुखमांथी वचन पण नीकल्युं. पांचसो भाइओ सहित घणी ताकीदथी कालकुमर चाल्यो, ते चालतां चालतां ज्यारे यादवोथी एक दिवसना मुकाम जेटले अंतरे आवी रह्यो एटलामां श्रीनेमीश्वर तीर्थंकर, कृष्ण वासुदेव, राम बलदेव, बीजा पण वली तद्भव मोक्षगामी एवा घणा जनो यादवोना परिवारमां छे, तेमना पुण्यना योगे खेंची थकी यादवोनी कुलदेवी आवीने यादवोनुं मुकाम तथा कालकुमरनुं मुकाम जे जे स्थानके हतुं तेना वचला मध्यभागमां एक पर्वतनी रचना करी ते पर्वतना मार्गमां एक चिता सलगावी, ते चितानी पासे वली एक डोशीनुं रूप करीने कुलदेवी रुदन करती थकी बेठी. तेने कालकुमरे आवीने पूछयुं के आ चितामां कोण बल्या छे अने तुं शा वास्ते रुदन करे छे ? त्यारे कुलदेवी छल करी रोती थकी बोली के हे पुत्र ! कालकुमरना भयना लीधे सर्व यादवोनुं कुंटुंब आ चितामां वली भस्म थइ गयुं छे. कोइ पण यादव रह्यो नथी माटे हुं तेमनी कुलदेवी छुं तो हवे मने कोण पूजशे ? ए कारण माटे मुजने बहु दुःख लाग्युं तेथी रुदन करुं छुं. ते वात सांभली कालकुमर पोताना मुखे करेली प्रतिज्ञा राखवा माटे घणा सामंत तथा केटलाएक भाइओ सहित तरवार काहाडीने यादवोने मारवा सारुं अग्निमां पड्यो अने वली भस्म थइ गयो. पछी प्रभाते बाकी रहेला जरासंधना लश्कर मांहेला लोको देवमाया जाणीने पाछा फरी राजगृहे जइ जरासंधने सर्व वृत्तांत कह्यो.

द्वारिकानगरीमां यादवोनुं राज्य अने शंखेश्वरतीर्थनी स्थापना—

हवे सर्व यादवो मोज-मजामां खुशी थया थका पश्चिम समुद्रना तट ऊपर आव्या, त्यां सत्यभामाए भ्रमरनामा पुत्रनुं जोडुं

जण्युं. त्या नैमित्तिकना कहेवा प्रमाणे यादवो रह्या पछी कृष्ण महाराजे अट्ठम तप करी सुस्थित नामा लवणाधिपदेवनु आराधन कर्युं तेथी देवता प्रत्यक्ष आवी ऊभो रह्यो तेनी पासेथी श्रीकृष्णे रहेवाने सारु जगा मागी, त्यारे देवताए कह्यु इन्द्रमहाराजने पूछीने तमोने जगा आपीश एवु कहीने सुस्थित देवताए इन्द्र महाराज पासे जइ सर्व वात कही त्यारे इन्द्रे धनद नामा भंडारीने मोकल्यो, तेणे आवीने बार योजन लांवी अने नव योजन पोहोली एवी एक द्वारिका नगरी बनावी, तेने फरतो अढार हाथ ऊंचो अने बार हाथ जाडो तथा नव हाथ पृथ्वीमा ऊंडो एवो सोनानो कोट बनाव्यो ते कोटने रत्नना कांगराथी शोभित कर्यो वली ते कोटनी चारे बाजु फरती खाइ करी तथा वाडी वाग वगीचाओ सहित एवो ते सुंदर कोट बनावी पछी धनदे ते द्वारिका नगरीमा श्रीकृष्णने वसवानी आज्ञा आपी ते नगरीमा एक सातभूमिवालु कल्पवृक्षोनी वाडी सहित घर श्रीकृष्णजीने रहेवा सारु बनाव्यु वली ते घरनी एक बाजु समुद्रविजयादिक दश भाइओने माटे घरो बनाव्या तथा श्रीकृष्णना घरनी बीजी बाजुमा उग्रसेननु घर बनाव्यु तेनी बाजुमां वली बीजा सर्व भाइओना घर बनाव्या ते सर्व घरो त्रण दिवस पर्यंत धन, धान्य, वस्त्र, घरेणा प्रमुख उत्तम वस्तुओथी भरीने श्रीकृष्णने स्वाधीन करी धनद देवता स्वर्गमा पोताने स्थानके गयो सर्व यादवोए मली द्वारिका नगरीमा वास कर्यो अहीं यादवोना कुटुंबोनी वृद्धि थवा लागी ते अनुक्रमे पचाश वर्षनी मुदतमां अढार कुलकोडी यादवोमांथी वधीने छपन्न कुलकोडी यादवोनी वस्ती थइ एवा अवसरमां राजगृही नगरीमा कोइ रत्नकंबलना व्यापारीओए आवीने एवी वात करी के आ नगरीमा काइ माल खपतो नथी, सत्वविनानी निर्धन लोकोथी आ नगरी भरेली छे, कारण के अमारा रत्न कंबलना लेवावाला पण कोइ

आ शहेरमां निकल्या नहीं अने द्वारिकामां यादवो वसे छे ते महा-सुखी छे. एवी रीते द्वारिका नगरीनी प्रशंसा जरासंधे सांभलीने विचार्युं के म्हारा वैरी हजी लगण जीवता छे माटे हवे एनो नाश करुं, एम चिंतवी सेना लइ युद्ध करवा चाल्यो एवामां नारद ऋषीये जइ श्रीकृष्णने कह्युं के तमारे चेतवुं होय तो चेतजो जरासंध तमारी ऊपर चढी आवे छे ते सांभली श्रीकृष्ण पण सेना तैयार करी लडवाने तेनी सामे चाल्या. तेणे पंचासरा गामनी पासे आवी पडाव (मुकाम) कर्युं अने जरासंधनुं लश्कर पण पंचासरा गामथी चार योजन दूर आवी पोहोच्युं. तेमां जरासंधनुं लश्कर चक्रव्यूहना न्यायथी अने श्रीकृष्णनुं लश्कर गरुड-व्यूहना न्यायथी एवा आकारे आवी पडाव कर्यो. ते वेहु लश्करने मांहोमांहे म्होटुं युद्ध थयुं. लाखो सुभटो मरण पाम्या. (इत्यादि विशेष अधिकार श्रीनेमिनाथचरित्रादि ग्रंथोथी जाणी लेवो. आंही ग्रंथगौरवना भयथी लखता नथी) ते वेहु तरफवाला सुभटोनी लडाइ चालतां श्रीकृष्णने जीतवो आपणने कठण थइ पडशे. एवुं जरासंधे विचारीने कोइ उपाय न सूजतां जरा नामे एक बाण हतुं ते श्रीकृष्णनी सेना ऊपर नाख्यो तेथी श्रीकृष्णनी सर्व सेना मुखे लोही वमती मूर्च्छा पामी गइ, त्यारे श्रीनेमिनाथजीना कहेवाथी श्रीकृष्णे अट्ठम तप करी धरणेन्द्रने आराध्यो. धरणेन्द्रे आवीने आगा-मिक तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा श्रीकृष्णने आपी, त्यां मंगल निमित्ते श्रीकृष्णजीए सुस्थित देवे आपेलो शंख वजाव्यो अने धरणेन्द्रे आपेला विंवनुं स्थापन कर्युं तेथी 'श्रीशंखेश्वर' नामा तीर्थ थयुं ते आज लगण मोजुद छे. कोइक आचार्य वली एम पण कहे छे के श्रीकृष्णजी त्रण दिवस उपवास करी वेठा. ते त्रण दिवस पर्यंत श्रीने-मिनाथ स्वामीए संग्राम कर्यो. वली इन्द्र महाराजे मातली नामा सारथी सहित रथ मोकल्यो तेना ऊपर चढीने नेमिनाथजीए शंख

वजाड्यो तेथी जरासधनी सेना शिथिल थइ, अने त्रण दिवस श्रीशखेश्वर पार्श्वनाथनी मूर्तिनु न्हवण पोतानी सेनामा श्रीकृष्णे छाटयु तेथी श्रीकृष्णजीनी सेना सज्ज थइ छेवट कोइ पण रीने श्रीकृष्णने जीतवानो उपाय जरासधने सूझ्यो नहीं त्यारे श्रीकृष्णने मारवा सारुं जरासधे पोतानु चक्र तेना ऊपर चलाव्यु तेथी काइ श्रीकृष्णनुं बगड्यु नहीं पण उलटु ते चक्र श्रीकृष्णने त्रण प्रदक्षिणा आपीने तेमना हाथमा आवी बेठु पछी तेज चक्र लइ श्रीकृष्णे जरासध ऊपर चलाव्यु, तेणे जरासधनु मस्तक छेदी नाख्यु ते वखते देवताओ आकाशमा देवदुदुभी वगाडीने बोल्या के ' श्रीकृष्ण नवमो वासुदेव थयो ' ते वात साभळी समस्त जरासधनी सेना आवीने श्रीकृष्णजीनी सेवामा हाजर थइ पछी श्रीकृष्ण द्वारिकामा आव्या सुख समाधिमा त्रण खडनु राज्य भोगववा लाग्या बहोतेर कुलकोडी यादव द्वारिकामा रहे छे अने साठ कुलकोटी यादवो द्वारिकानी बाहेर रहे छे तथा महापुरुष समुद्रविजयादिक दशे दशार्ह, तथा बलदेवादिक पांच महावीर एटले म्होटा योधा, तेमज उग्रसेनादिक सोल हजार राजाओ तथा प्रद्युम्नादिक साडा त्रण क्रोड कुमर, तथा साबादिक सोल हजार दुर्दांत कुमर, अने वीरसेन प्रमुख एकवीश हजार वीर तथा महासेन प्रमुख छपन्न हजार बलवत राजाओ द्वारिकामा वसे छे वली रुक्मिणी प्रमुख बत्रीश हजार राणीओ तथा अनगसेना प्रमुख अनेक गणिकाओ एवा परिवार सहित म्होटु राज्य श्रीकृष्णजी करे छे

नेमनाथनी बलप्रशसा अने बलपरीक्षा—

एज अवसरमा इन्द्रमहाराजे श्रीनेमिनाथजीना बलनी प्रशंसा करी त्यारे ते सभामा कोइ मिथ्यात्वी देव इन्द्रमहाराजना वचनने नहीं मानतो थको गिरनार पर्वत ऊपर आव्यो त्या सुरधरा नामे नवीन नगर वसाव्यु तेमा ते देवता पोते आवीने मनुष्यनुं रूप धारण करीने

रह्यो अने द्वारिका नगरीना रहेनारा लोकोने नित्यप्रत्ये घणुंज दुःख देवा लाग्यो—उपद्रव करवा लाग्यो ए वात सांभलीने महा अभिमाननो धरनार एवो अनादृष्टिकुमर देवने पकडवा सारुं गिरनारनी ऊपर देवे वसावेला नगरनी ऊपर चढी आव्यो. तेने देवताए देवमायाथी जीती लीधो अने बांधीने पोताना नगरमां लइ गयो. ए वात सांभलीने समुद्रविजयजी तेनी साथे लडवाने माटे जवाने तैयार थया त्यारे राम कृष्ण बे भाइओए समुद्रविजयजीने वर्ज्यां अने पोते लडाइ करवा सारुं गया. तेने पण देवताए हरावीने पोताना नगरमां लइ जइ बंदीखानमां नाखी दीधा, त्यारे द्वारिकामां कोलाहल थइ रह्यो अने लोको कहेवा लाग्या के राम कृष्ण बे भाइओ हारी गया तो हवे आपणी रक्षा कोण करी शकशे ? त्यार पछी सत्यभामाजी प्रमुख स्त्रीओए श्रीनेमनाथजीने कह्युं के तमे अनंत बली छतां तमारा भाइओने शत्रु दुःख आपे छे तो एथी तमारी लाज जाय छे, त्यारे नेमीश्वर भगवान एकला रथमां बेसीने शत्रुना नगरने चारे बाजु रथ फेरव्यो तेथी कांगरा सहित सर्व कोट पडी गयो, त्यारे देवे सिंह विकुर्व्या ते जोइ नेमिनाथे धनुष्यनो टंकारव करीने सर्व सिंहोने भगाडी दीधा देवताए अंधकार करी मूक्यो, भगवाने उद्योतवालो बाण मूकीने अंधकारनो नाश कर्यो. देवताए मेघ वरसाव्यो, भगवाने वायरो चलावीने मेघने दूर कर्यो, देवताए अंगारानो वर्षाद वरसाव्यो, भगवाने पाणीथी बुझावी न्हाख्यो. पछी भगवाने मोह बाण मूक्युं तेथी सर्व शत्रु मूर्च्छा खाइने पडी गया महा दुःखी थया, त्यारे इन्द्रमहाराज त्यां आवीने विनंति करवा लाग्या, के महाराज ! ए अज्ञानी देव छे ते आपना अनंत बलने शुं जाणे ? त्यारे भगवाने कृपा करीने देवताने छोडी मूक्यो. पछी ते देवताए म्होटा महोत्सव सहित श्रीकृष्णादिकने द्वारिकामां मोकली दीधा, पोते भगवानने नमीने पोताने स्थानके गयो.

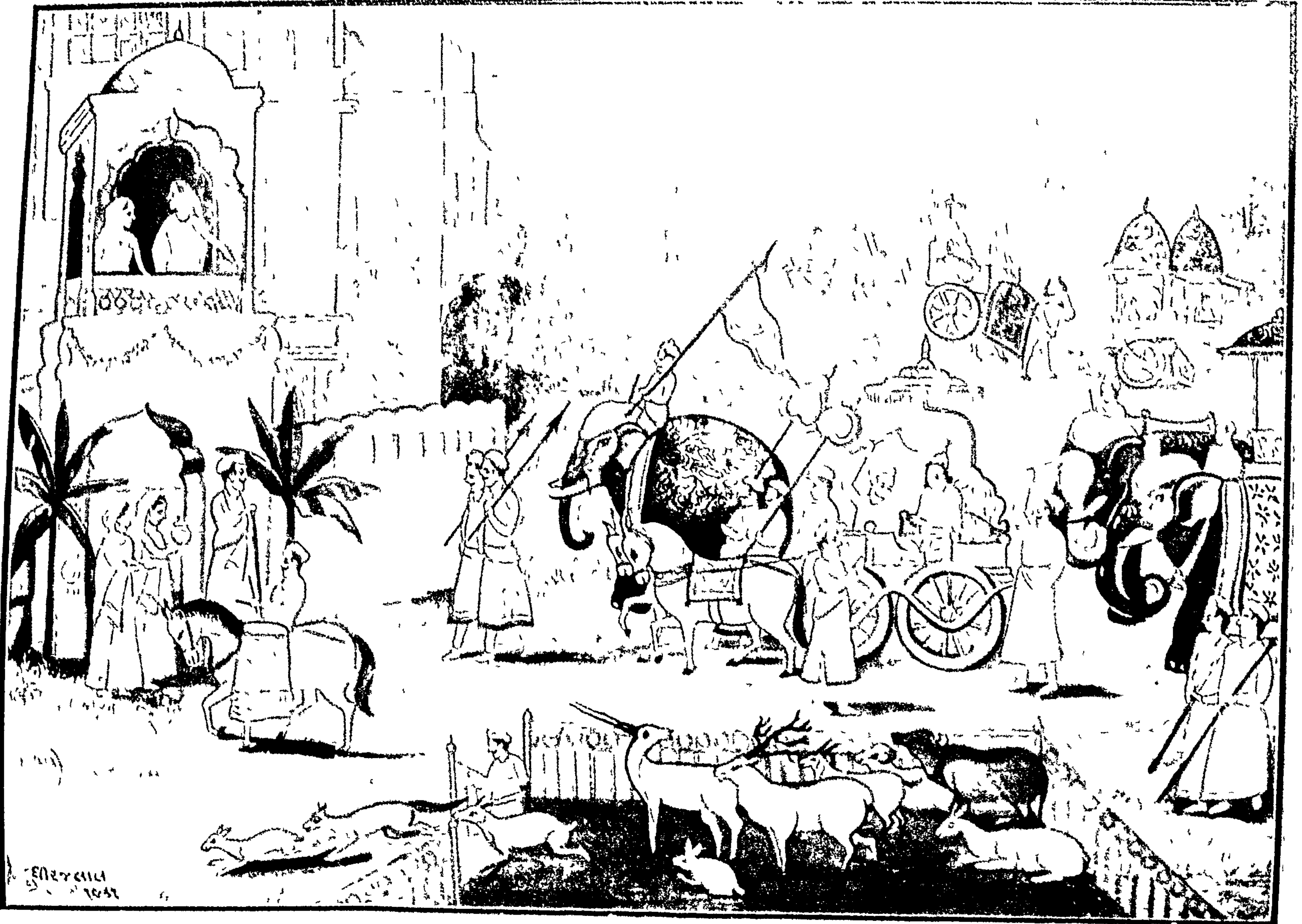
प्रभुनु आयुधशालामा गमन, अने कृष्ण साथे बलपरीक्षा—

अनुक्रमे श्रीनेमीश्वर भगवान त्रणसे वर्षना थया पण परणवानी इच्छा राखे नहीं, त्यारे शिवादेवीजीए कह्यु के-पुत्र ! तु विवाह करीने म्हारा मनोरथ पूर्ण कर, भगवान बोल्या-माताजी ! कोइ म्हारा योग्य कन्या हशे, तो हु परणीश ते वात सांभली माताजी मौन धारण करी रह्यां हवे श्रीसमुद्रविजयकुलशणगार, शिवादेवी मात मल्हार, एक दृढनेमि, बीजा दृढनेमि, त्रीजा अतिनेमि, चोथा अरिष्टनेमि अने पाचमा रथनेमि ए पांच कुमर माहेला श्रीअरिष्टनेमि कुमर ते लघुवय सरखा सरखी जोडि, मनतणे कोडि, घणा कुमरे परवर्या लीलाए रमता भमता श्रीकृष्णनी आयुध शालामा आव्या, आयुध जोवा लाग्या, रक्षपाल बोल्यो, तमे लघु बालक छो, माटे अलगा रहो, एनो स्पर्श करवो पण दोहिलो छे, छोकरडे छाश न पीवाय, म्होटु कार्य ते म्होटाथी ज थाय, ते न साभलतां श्रीअरिष्टनेमि कुमारे श्रीकृष्णना चक्रने उपाडी कुभारना चक्रनी परे भमाव्यु तथा सारग धनुष्यने उपाडीने कमलना नालनी परे नमाव्युं तथा कौमोदकी नामे गदाने लाकडीनी पेठे उपाडीने पोताना खाधा ऊपर राखी, अने ज्यारे पाचजन्य शख पूर्यो त्यारे तेनो शब्द सांभलीने त्रण भुवन कम्प्या, पर्वतना शृग तूटी तूटीने पडवा लाग्या, समुद्रना जल उच्छलवा लाग्या, हस्ती तुरगमादिकना बधन तूटी पड्या तेथी सर्व भागी गया, लोक सर्व बहेरा थइ गया, धरती कपवा लागी, नगरनो कोट पण कम्प्यो, दिग्गज त्रास पाम्या, यादवो सर्व मूर्च्छागत जेवा थइ गया, सर्व बीक पामवा लाग्या, श्रीकृष्ण, बलभद्र कपवा लाग्या अने भयाकुल थया थका चिंतववा लाग्या के आ ते कोण बलवत छे? के जेणे सर्व पृथ्वीने क्षोभ पमाड्यो ? एवी रीते तेमने काइ पण जप न

आव्यो, तेथी तरत त्यां आव्या अने पृच्छा करी, त्यारे सर्वे बोल्या के श्रीअरिष्टनेमि कुमारनो ए बल छे, ते सांभली चमत्कार पाम्या पछी श्रीकृष्णे कह्युं के–हे भाइ ! आपणे बलपरीक्षा करीए तो वंछित सीझे त्यारे नेमिकुमर बोल्या के भूमि लुंठनादिक बाह्य खेल करवुं, तेतो उत्तम नरने योग्य नथी, माटे मांहोमांहे एकेकनी भुजा वालीने बल-परीक्षा करिए, ते वचन श्रीकृष्णे प्रमाण करी पोतानी भुजा लंबावीने कह्युं के, आ म्हारी बांह नमाडो, त्यारे नेमिकुमारे कमलनालनी परे एक आंगुलीथी श्रीकृष्णनी बांह नमावी दीधी. पछी श्रीनेमिकुमारे पोतानी बांह लंबावी त्यां कृष्ण घणुं बल करी वानरनी परे वलगीने हिंचवा लाग्या त्यारे श्रीनेमिकुमार सहास्य वचन बोल्या के कृष्णजी ! तमोने माता देव-कीए पालणे पोढाडीने रमाड्या नहीं, ते माटे हवे हुं तमने हिंचोळुं, (रमाडुं) छुं एम कहीने श्रीकृष्णने हिंडोलानी माफक हिंचोल्या. जेम जुगारी दाव हारे, तेम कृष्ण हारी गया. एवुं जोइने बलभद्रजी बोल्या के हे भाइ ! भ्रमरने भारे तरुशाखा नमे नही, पछी कृष्ण तथा बलभद्रजी चिंता-तुर थका चिंतवे छे के ए पितराइ भाइ आपणाथी अधिक बलवान् छे, माटे आपणुं सर्व राज्य लइ लेशे ?, कीडी–तीतर न्याय करशे. एटलामां आकाशे देव वाणी थइ के अहो ! कृष्ण–वासुदेव ! तमे चिंता म करशो. ए तो नेमीश्वर भगवान, बाल ब्रह्मचारी, बावीशमां तीर्थ-कर एनुं अतुल बल छे तथापि तमारुं राज्य लेवानी एने गरज नथी अने स्त्री परणवानी पण गरज नथी. ए तो परण्या विना ज संसारनो त्याग करी दीक्षा लेशे. ए वचन सांभली कृष्णजी घणो हर्ष पामीने पोताने घेर पहोंच्या.

प्रभुने विवाह मंजूर कराववा माटे गोपियोनो प्रयत्न, अने प्रभुनी जान—

एक दिवस शिवादेवीजीए नेमिकुमरने निरागी जाणीने गोपी-योने भलामण करी के ' तमे वसंत रमवाने माटे नेमीश्वरने तेडी जाओ



नेमिनाथ भगवानकी बरात

अने एने जेम बने तेम सरागी करी, विवाह करवाने मनावो ' त्यारे सत्यभामा प्रमुख सोल हजार गोपीयो मलीने श्रीनेमीश्वरने सहस्राम्र वनमा लइ गइ, विचित्र प्रकारना वचनो कहेवा लागी–एक बोली तमे शामाटे परणता नथी, तमारो भाइ श्रीकृष्ण सोल हजार स्त्रीयो परण्या छे अने तमे एक पण परणता नथी तेनु कारण शु ?, बीजी बोली के भला पुरुष ! आवी रीते युवानपणुं कां फोकट गुमावो छो ? परणवामा घणी मजा छे, त्रीजी बोली परण्या विना मोक्ष पण जइ शकशो नहीं, केमके ऋषभादिक तीर्थंकर पण सर्व परणीने मोक्ष गया छे तो वली तमे कांइ नवा मोक्ष जवावाला थया छो ? एक बोली एतो मोल्यो थाशे, परणीने शु करशे ? सत्यभामा बोली जो नहीं माने तो एनो पल्लो पकडो, लक्ष्मणा बोली ए पूज्य छे माटे एनी साथे जबराइ करवी नहीं, पण परणवु तो अवश्य जोइएज सत्यभामा बोली, एनी पासे काइ सामर्थ्य नथी कारण के जो स्त्री परणे तो तेने पालवानु काम मुश्केल छे ते एनाथी बनी शके नहीं, तथापि जो परणी लेशे तो सोल हजारने एनो भाइ पाले छे तेनी साथे ए पण पलाशे एवी वातो साभलीने नेमिनाथजी काइक हस्या त्यारे सर्व गोपीयो तालोटा पाडीने बोलवा लागी के 'एणे विवाह मान्यो,' माता-पिताए पण जाण्यु के विवाह मान्य कर्यो एवु समजीने शिवादेवीना कहेवाथी श्रीकृष्ण तथा समुद्रविजयजी प्रमुख राजाओए उग्रसेन राजाने घेर जइने राजीमती कन्यानी मागणी करी. तेणे पण खुशीथी कह्यु के सुखेथी परणावो पछी बेहु जगाए विवाहनो महोत्सव थवा माड्यो, परणवा माटे शणगार करावबा लाग्या, पण नेमजी विनयवान छे माटे मातापितानो हर्षभग थवाना भयथी जो पण निस्पृही छे तो पण मौन धारण करी रह्या हवे जान निकली ते वखते अनेक यादवोना क्रोडो गमे मनुष्य साथे चाल्या, सर्व राजाओ साथे चाल्या, अनेक

वाजां वाजतां, हाथी ऊपर बेठा, चमर ढलता, देवदेवी आकाशमां चालतां, स्त्रीयो पृथ्वी ऊपर गीत गाते थके चालता चालता उग्रसेनना महेल पासे जान आवी, त्यारे नेमजी सारथीने पूछवा लाग्या के-आ महेल कोनो छे, सारथी बोल्यो-तमारा श्वसुरनो महेल छे.

बीजी एक प्रतमां नीचेमुजब लखेल छे—

ज्यारे वसंत मास आव्यो, त्यारे बत्रीश हजार राणी सहित श्रीकृष्ण-वासुदेव श्रीनेमिकुमरने साथे लइ वसंतक्रीडा करवा वनमां गया. त्यां सत्यभामादिक राणीयोने नेमिकुमरने विवाह मनाववानो सत्कारी कृष्ण स्थानांतरे रह्या, ते अनेक गोपिओ मली थकी श्रीनेमिकुमरने केसर, गुलाब प्रमुख सुगंध नीर छांटे, फूलनो दडो हृदयमां मारे, कटाक्ष बाणे वींधे, कामचेष्टा पूर्वक जल छांटे, एम घणा प्रकारे हास्य करीने कहेवा लागी के हे देवर ! विवाह मानो अने एक स्त्री तो परणो, जो स्त्रीनुं भरण-पोषण तमाराथी न थाय तो तमारो भाइ बत्रीश हजार स्त्रीयोनो भरण-पोषण करे छे, तेम तमारी एक स्त्रीनुं पण पोषण करशे ? तेनी कांइपण चिंता करशो नहीं, पण स्त्री जरूर परणो, स्त्री विना पुरुष शोभे नहीं, कोइ विश्वास न करे, कोइ माने नहीं, वली अंगनी शुश्रूषा कोण करे ? प्राहुणाने कोण साचवे, माटे पाणिग्रहण अंगीकार करो, मन मानती कन्या वरो, ए विनंति मानो, वधे जेम वानो, नहींतर पण नहीं छूटो, जोर करी जूठो, अमारे वश आव्या आज, करवी हवे केही लाज. एवा वचन सांभली नेमीश्वर नीचुं जोइ रह्या, स्त्रीओ साथे ते वली श्यो वचनविचार करवो ? एम चिंती हां ना कांइ न कही, त्यारे स्त्रीओ कहेवा लागी के मान्यो मान्यो विवाह, सहुने थयो उछाह, श्रीसमुद्रविजय शिवादेवी राणीने तिणीकाल, आपे वधामणी उजमाल, हवे श्रीकृष्ण नरिंद, मनने आणंद, उग्रसेन राजान, पासे बहु मान, मांगे राजीमती कन्या, सती शिरोमणि धन्या, उग्रसेन पभणे सघले साज, इहां आणो ते वरराज, तो देउं कन्या तास, जग विस्तरे जश वास. हवे समुद्रविजय राजा, शिवादेवी राणी ज्योतषी क्रोष्टुकना मुखथी श्रावण सुदि छट्ठनुं लग्न जाणी, वांटे वधामणी, तेडावे सगासागीयीजा भणी, मांडे म्होटो आडंबर, धवल मंगल गाये घर घर, पोषे भल भले पकवान, जुगते चलावे जान. तद्यथा-सोल हजार मुकुटबद्ध छत्राधिपति राजान, बेतालीश लाख हस्ती ऐरावत समान, बेतालीश लाख घोडा, सुवर्ण साज तेने सजोडा, बेतालीश लाख रथ, शोभा पामता पथ, अडतालीश कोडी पायक, शत्रुदल घायक, नव कोडी सामान्य तुरंगम, एक एकथी अनोपम, छन्नुं कोडी चिराकदार, नव कोडी छागलियादार, बार कोडी वाजित्र वाजे, अंबर गाजे, सांबकुमर प्रमुख साठ सहस

दुर्दान्त कुमर ते पारसीक जातिना घोडे चढ्या, प्रद्युम्न प्रमुख पचोतेर सहस्र कुमर महावीर ते हयरेवा जातिना अश्वे आरूढ थया, अरिमर्दन प्रमुख पांच लाख कुमर ते बहोली जातिना अश्वे चढ्या, वीरप्रमुख सात लाख कुमर ते पाणीपथा जातिना तुरगे चढ्या, सागरचद्र प्रमुख एक लाख कुमर ते कनोजा जातिना अश्वे चढ्या, अनादृष्टि प्रमुख तेर लाख कुमर रेवाजातिनाअश्वे आरूढ थया, पालकप्रमुख सात लाख कुमर अष्टमगल, जातिना अश्वे चढ्या, दृढनेमि प्रमुख बार लाख कुमर रेमगली जातिना अश्वे चढ्या, रथनेमि प्रमुख नव लाख कुमर चद्रप्रभा जातिना अश्वे चढ्या, महानेमि प्रमुख पन्नर लाख कुमर अग्निपथा जातिना अश्वे चढ्या, एवा यादव कुमर, भोगी भ्रमर, जेहना जाणीता कुल, मालानु थल, आगलथी चाले, थोडु बोले, थोडु ठाकुरने नमे, दर्शनीने नमे, परनारी सहोदर, वाचा अविचल, शरणागत साधार, सूर वीर दातार, झूम्भार, रणांगण धीर, रिपुहृदय हल सीर, कमचोइ गरकाव, केशरीए पागे, लीधीए वागे, कांधाल, मूछाल, मलमला भूपाल, आवे उमह्यां, पथे वह्यां, वली बे कोडी सेजवाला, चोराशी कोडी स्त्री गीत गान करे, छपन्न कोडी प्रलय धजा, बार कोडी भाट विरुदावली बोले, बार कोडी सुखासन पालखी, पन्नर लाख खचर द्रव्ये भर्या, त्रण लाख श्वेतछत्र, बेतालीश लाख रथ, त्रण कोडि चामर ढले, एसी लाख नीसान वाजे, सत्तर लाख ढोल वाजे, छन्नु कोडी भेरी वाजे, नव लाख मादल वाजे, पीस्तालीश कोडी छडीदार, साठ कोडी सुरहीया, वडवडा वहीया, मत्रीश्वर प्रधान, कहिए केवा अभिधान, नवाणु कोडी सामान्य वहिल, थइ इम जाननी चहिल पहिल, हवे वरराजाने सर्वौषधि नीरे कराव्यु स्नान, उजुवाल्यु विशेषे वान, माताए भालस्थले कीधो तिलक, अक्षतनो प्रतिष्ठ्यो ऊपर पदक, नव कोडीनो मुकुट, पचास कोडीनो नवग्रहो, बार कोडीना बे कुडल, अडतालीश कोडीनु रत्न जडित तिलक, पचीश कोडीनी मुद्रिका, पचीश कोडीना अनेक रत्न जडित हार, बे लाख कोडीनी रत्नजडीत सांकली, जनो इनी परे पहेरे, पन्नर कोडीनी चपकली, देवदत्त अमूलिक पागडी, पचीश लाख कोडीनी कचाइ, एकाणु कोडीना बे बहिरखां, पीस्तालीश कोडीना बे बाजुबध, सत्तावीश लाखनो कणदोरो, पचीश कोडीनो रत्नजडित कणो, त्रीश कोडीनी वाणही पगरखां, छन्नु कोडीनो अनेक रत्नजडित श्रीफल रूप फूलदडो, अमूलक वस्त्र पहेरावी, सकल सणगार करावी, आंख आंजी, मुख मांजी, सिर धार्यो खूप, शोभे सुरूप, आण्यो गजराज, सुवर्णमय साज, मेघाडबर छत्र, प्रतिष्ठ्यो पवित्र, चढ्यो वरराज, जाणे इन्द्र महाराज, के मूर्त्तिवतो कामराज, शोभा समाज, पसर्यो तूर्यमगलनिनाद, गह गह्यो स्त्रीजनसाद, आकाशे अनेक देव देवांगना इन्द्र-इन्द्राणी रमा अपसरा आवे, मनने भावे, किन्नरी गीत गाये, सरस्वती वीणा वाये, तुबर गधर्व नाचे सहु मन साचे, कृष्ण बलभद्र दशे दशार्ह उमावे, जीर्णदुर्ग भणी जान आवे, जेम

ज्येष्ठमास उद्धान, साजन जनने अधिको मान, याचक जनने देतां दान, हुओ धवल मंगल उच्चार, आवीओ वर तोरण बार, जोए जोवणहार, धन्य धन्य राजीमती नार, जेणीए वर लाधो श्रीनेमिकुमार.

तोरणथी प्रभुनो पाछा फरी जवुं अने राजुलनो संताप—

राजीमती गवाक्षमां बेठी थकी सखीयोने कहे छे के–म्हारो भर्त्तार केवो छे? त्यारे सखीयो बोली–आ हाथी ऊपर बेठा थका महाऋद्धि सहित चाल्या आवे छे ते नेमजी छे. राजिमती प्रभुनुं रूप देखी मोह पामीने विचारवा लागी के म्हारो म्होटो भाग्योदय थयो के नेमजी जेवो वर आवीने मन्हे परणशे. एम विचारती चंद्रानना, मृगलोचना सखी सहित वार्त्ता करतां, सखीए कह्युं के–ए वर सर्वगुण संपूर्ण छे पण एक अवगुण ए छे के एनुं श्यामवर्ण छे, वर तो गोरो जोइए, राजीमती बोली ए तो दूध मांहेथी पूरा काढवा मांड्या. श्यामवस्तु मांहे तो घणो गुण छे, भूमि, चित्रावेली, अगर, कस्तूरी, मेघ, कीकी, केश, कसोटीनुं पाषाण, मसी, रात्रि, इत्यादिक वस्तु श्याम होय छे ते जगतमां भली कहेवाय छे तथा धोली वस्तु कपूर छे, तेने मरी अंगाराशुं मेल छे, चित्रा ने रोहिणी श्याम होय तो शोभे, निःकेवल गौर तो लूण, अस्थि, हिम, स्वेत–कुष्ट, ए मांहे शुं वखाणवा योग्य छे? श्यामले वरणे वर प्रशस्य देखी लोचन अमीय भराणी, हृदयकमल उल्लश्यां, मनना मनोरथ रूप वेली प्रसरी. एवामां राजीमतीनी जमणी आंख फरकी, त्यारे शोच करवा लागी अने जाण्युं के सर्वथा प्रभुनो संयोग न मले, पछी सखी प्रत्ये कहेवा लागी के म्हारुं जमणुं अंग फरके छे, ते सांभली सखी बोली के तुं मंगलमां अपमंगल कां बोले छे? एवामां प्रभुए पण तोरणे आवतां थकां मार्गमां चतुष्पदादिक जीवोना भर्या वाडा दीठां, पंखीयोना भरेला पांजरा दीठां तथा घणा जलचर जीव पाणी विना ऊंचा ऊंचा कुदीं रह्या छे,

तथा थलचरमा हरिण, सांवर, रोज, घेटा, मेंढा, ससला, प्रमुख अनेक जातिना जीव तथा खेचरमा कूर्कुट, तीतर, मोर, सारसना जोडला, राजहस, कोयल, वगला, सूडा, इत्यादिक जीवो एकठा कर्या छे, तेनो पोकार साभल्यो. एवामा एक हरिण अने हरिणी कोटे कोट भरावी विलाप करता प्रभुने विनति करे छे के हे प्रभो ! अमने आ कष्ट मांहेथी उगार, अमे काइ अपराध कीधो नथी, तृणखला मुखे दीये छिये, हे अनाथनाथ ! प्रभो ! राख राख ते जोइ श्रीनेमिकुमरे मावतने पूछ्यु के ए जीवोने शा कारणे रोकी राख्या छे? त्यारे मावत बोल्यो. तमारा विवाहना गौरव-भोजनार्थे राख्या छे ते साभली प्रभु बोल्या धिक् धिक् ए विवाहथी सर्यु, मने आ नरकनो मूलरूप विवाह जोतो नथी प्रभु दीनदयाल सर्व जीवयोनीने छोडावी हस्ति थकी उतरी, रथे वेसी पाछा वल्या, त्यारे श्रीसमुद्रविजय राजा, शिवा देवी राणी, कृष्णवासुदेव अने वलभद्र प्रमुख छप्पन्न कुलकोडि यादव रथ अटकाववाने आडा फर्या, परतु प्रभु कोइना वार्या वल्या नहीं अने एवु बोल्या के आ सर्व जीवो वधनमा वाध्या थका महा दुःख देखे छे, तेम हु वधाउ नहीं अने ससारमा पग रहु नहीं 'हाथीओ वाधे जाल्या न जाय, त्या जाय रे जाय यादव राय' एवी वार्त्ता सांभली राजीमती धरणी ढली, पछी क्षणेकमा सचेतन थइने वोली के-हे हे हे प्रभो ! तमें हर्षस्थानके ए श्यो विषवाद उपजाव्यो ? एम कहेती हार त्रोडती, वलय मोडती, आभरण भाजती, वस्त्र माजती, किंकणीकलाप छोडती, मस्तक फोडती, कुतलकलाप रोलती, भूमि लोटती, साश्रु-वाष्पजले भूमि सींचती, सखीजन अपमानती, जेम थोडा पाणी माहे माछली टलवले तेम विकल थाती, विरहमाती, क्षणे रोवे, क्षणे जोवे, क्षणे आक्रद करे, क्षणे नीसास भरे, क्षणे मूझे, क्षणे बूजे, क्षणे धूजे, क्षणे न सूजे, वली अनेक ओलभा पूर्वक वचन

कहे छे के-हा यादवकुलदिनकर !, हा करुणासागर !, हे शरणागतवत्सल !, आ अबलाने एम एकली मूकवी तमने न घटे, जो सर्व जगजीवनी दया पालो छो तो मुज ऊपर कां दया न आणी, माटे अरे निष्टुर निर्लज्ज हैडा ! तने प्रभु मूकी गया तो हवे तुं शतखंड कां नथी थातो ? हवे तुं श्यो ल्हावो लइश. एवा राजीमतीना विलाप सांभली सखीवर्ग, सज्जनवर्ग, अने मातापितादिक कहेवा लाग्या के ' ए निस्पृहि छे एना पर श्यो राग करवो ? तुं एटला विलाप शा वास्ते करे छे ? त्हारो कांइ विवाह थयो नथी माटे ए कालो कुरूपो वर गयो तो शुं थयुं. त्हारे वली बीजो रूपवान वर मलशे माटे हवे अन्य उत्तम वर वरो. ' राजीमती बोली ए वचन सांभलवा योग्य नहिं, तमे एवा वचन मुजने म कहो, म्हारे तो श्रीनेमिनाथना चरणनुं शरण छे, काली तो कस्तुरी पण थाय छे ते गुणवान छे माटे तेनुं मूल्य घणुं थाय छे अने जे सपेत लसण थाय छे ते निर्गुणी छे माटे तेनो कोइ भाव पण पूछतो नथी तो ए प्रभुजीए मारो हाथ न साह्यो पण हुं एनो हाथ म्हारे माथे मूकावीश. ए प्रभुने नामे हुं सौभाग्यवती छुं, माटे जो एणे मुजने नहीं परणी तो हुं एनी चेली थइने एनी पछवाडे फरीश पण बीजो कोइ पण वर वरीश नहीं. ' एम कही वली गिरनारजीने कहेवा लागी के हे गिरनार ! मुजने त्यागीने नेमजी जो त्हारी पासे आवे तो तुं एने पेसवा दइश नही. वली एवो ओलंभो आपजे के तुं अबलाने दुःखिणी करीने कां आव्यो ? इत्यादिक विकल्प करती, शील पालती थकी पोताना पिताना घरमां रहे छे. एवामां रथनेमि राजीमतीने कहेवा लाग्यो के नेमजीए तुजने परणी नहीं अने हुं नेमजीनो भाइ छुं माटे हवे तुं मने ज परण, त्यारे राजीमती बोली ! अरे ' वमेला आहारने खावानी तुं शुं चाहना राखे छे ? हुं तो एक श्रीनेमीश्वर विना बीजानी चाहना करती नथी ' एवुं सांभली रथनेमि विलखो थइ गयो.

नेमिनाथनी दीक्षा अने केवलज्ञान—

अरिहत श्रीअरिष्टनेमि तोरणथी पाछा फरी घरे आव्या, वधा मली त्रणसे वर्ष कुमारावस्थाए घरमा रह्या पछी लोकातिक देवो आवीने बोल्या के–प्रभो ! धर्म प्रवर्त्तावो, नेमिनाथ स्वामीए अवधिज्ञानथी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणी वरसीदान देवा मांड्यु ते पछी प्रभुए वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजु पखवाडियु, श्रावणशुदि छठ्ठना दिवसे पहेला पहोरथी पूर्वदिवसमां अर्थात् मध्यान्ह पहेला, देव अने मनुष्योथी उपाडेल उत्तरकुरा नामा पालखीमा बेशी यावत् द्वारिका-नगरीनी वचमाथी थइने ज्या रेवत नामा उद्यान छे त्या आवीने अशोक वृक्षनी नीचे पालखीमाथी उतरीने, पोताना हाथथी सर्व घरेणा अलकार उतारीने, पाच मुष्टि लोच करीने, छठ्ठ भक्त पाणीरहित एटले चउविहार बे उपवासे, चित्रा नक्षत्रना साथे चद्रमानो योग होते छते, एक देवदुष्य वस्त्र लइने एक हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, घर त्यागीने साधुपणु अगीकार कीधु अरिहत अरिष्टनेमिए चोपन रात्री सुधी काया वोसरावी यावत् पचावनमा दिवसनी रात्रिमा वर्त्तमान वर्षाकालनो त्रीजो महिनो, पाचमु पखवाडियु, आशोज वदिनी अमा-वासना दिवसे पाछला पहोरमा, गिरनार पर्वत उपर, वेतस नामा वृक्षनी नीचे पाणी रहित अट्ठमना तपमा प्रभुने चित्रा नक्षत्रसाथे चद्रमानो योग आवे छते शुक्लध्यान ध्यावता थका अनत केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयु, सर्व भाव जाणवा देखवा लाग्या श्रीनेमिनाथ स्वामीने गिरनार पर्वतना सहस्राम्र वनमा केवलज्ञान उपनु, देवे समवसरण रच्यो, वनपालके आवी श्रीकृष्णने वधामणी आपी, श्रीकृष्ण म्होटी ऋद्धि सहित वादवा आव्या, राजीमती पण वादवा आवी, बीजा पण घणा लोक वादवा आव्या, भगवाननी देशना सुणीने वरदत्त नामा

राजाए बे हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी. कृष्णजीए पूछयुं के-स्वामिन्! आपनी ऊपर राजीमती एटलो मोह केम राखे छे? तेनुं कारण मने संभळावो. भगवान बोल्याः—हे कृष्ण! म्हारे एनी साथे पूर्वे आठ भवनो संबंध छे. पहेले भवे हुं 'धन' नामे राजा हतो, त्यारे ए म्हारी 'धनवती' नामे राणी हती. बीजा भवमां बेहु जण पहेले देवलोके देव-पणे उपन्यां. त्रीजे भवे देवलोकथी चवीने हुं 'चित्रगति' नामा विद्याधर राजा थयो, त्यारे ए 'रत्नवती' नामे म्हारी स्त्री थइ. चोथा भवमां बन्ने जण चोथे देवलोके गया. पांचमे भवे देवलोकथी चवी हुं 'अप-राजित' नामे राजा थयो त्यारे ए 'प्रियमती' नामे म्हारी राणी थइ, छट्ठा भवे बेहु जण अगीआरमां देवलोके देवता थया. सातमा भवमां हुं 'शंख' नामे राजा थयो त्यारे ए 'सोमवती' नामे म्हारी राणी थइ. आठमे भवे अमे बेहु अपराजित नामा अनुत्तर विमाने देवता पणे जइ उपन्या. त्यांथी चवीने नवमा भवमां हुं 'नेमि' थयो अने ए 'राजी-मती' थइ. एवी रीते नव भव संबंधि वार्त्ता संभलावीने भगवाने त्यांथी विहार कर्यो अने श्रीकृष्णादिक तथा राजीमती प्रमुख वृत्तांत सांभली द्वारिकाए गया.

रथनेमिनी भोगपिपासा, अने राजिमतीनो प्रतिबोध—

एकदा श्रीनेमिनाथजी गिरनार ऊपर आवी समोसर्या, त्यारे राजी-मतीए बीजी घणी राजकन्याओनी साथे दीक्षा लीधी. अने रथनेमीए पण दीक्षा लीधी. एक दिवस गिरनार पर्वत ऊपर भगवानने वांदवा जतां मार्गमां वर्षाद वर्ष्यो, तेथी राजीमतीना वस्त्र पलली गयां. तेने सूका-ववा सारुं एक गुफामां प्रवेश कर्यो, तेज गुफामां आगलथी रथनेमि काउसग्ग ध्यानमां रहेल हतो, तेनी कांइ राजीमतीने खबर पडी नहीं. तेथी राजीमतीए ते गुफा मांहे पोताना भींजेला सर्व वस्त्र उतारी न्हाखीने सूकववा मूक्यां. राजीमतीने नग्न देखीने रथनेमीनुं मन

चलायमान थयुं अने कामदेवथी पीडाइने लज्जानो त्याग करी बोलवा लाग्यो के " हे राजीमती ! तमे शा वास्ते तपस्या करीने नकामा शरीरने शोषवो छो, आवोनी म्हारी पासे, आपणे बेहु जग विषयसुख भोगवीए हमणा युवान अवस्थामा तप करवानो अवसर नथी, फरी वृद्धावस्थामा दीक्षा लइशु " रथनेमिना वचन सामली, पोताना अगोपाग सवरी, धैर्य धरी, दृढता धारण करीने राजीमती बोली के " अरे ! तने धिक्कार पडो, जे तु दीक्षा ग्रहण करीने एवी वात करे छे ? अरे ! समुद्रविजयराजाना पुत्रे सर्व सावद्य व्यापार त्यागी साधुपणुं आदर्युं तेणे मुजने वमी छे अने तु चाहना करे छे ? जे अगन्धन कुलना सर्प छे, ते तिर्यंच जातीना होवा छता पण वमेली वस्तुने वाछता नथी तो तु शु ते तिर्यंचथी पण नीच थाय छे ? जे वमेली वस्तुने भोगववा वाछे छे, वमेली वस्तुने तो श्वानादिक वाछे छे माटे तु त्हारु मन ठेकाणे राख हु कोइ रीते त्हारे हाथ आववानी नथी अरे ! तु भोग त्यागीने फरी नरके जवानी अभिलाषा शा माटे करे छे ? महानुभाव ! ए पापनी आलोयणा लइ, फरी सयमनो उच्चार कर, नहीं का दुर्गतिमा पडीश " इत्यादिक वचन रूप अकुशे करी हस्तिनी परे रथनेमीने स्थिर कीधो पछी रथनेमी पण पापनी आलोचना लइ, खमावी, सयमने विषे स्थिर थइ, केवलज्ञान पामी अनुक्रमे मोक्ष पोहोतो श्रीनेमीश्वर भगवानथी राजीमती आठ वर्ष ऊमरमा न्हाना हता, एवु कोइक आचार्य कहे छे राजीमतीजी चारसे वर्ष पर्यंत घरवासे रह्या तथा एक वर्ष पर्यंत छद्मस्थपणे रह्यां अने पाचसो वर्ष केवल पर्याय पाली सर्व मली (९०१) वर्षनु आयुष्य भोगवीने श्रीनेमिनाथजीनी पहेला मोक्ष गया. कवि उत्प्रेक्षा करे छे के ' राजीमतीजीए एवु जाण्यु के शिवनारी जे मोक्षरूपिणी स्त्री छे तेने म्हाराथी अधिक रूपवती जाणीने तेना ऊपर नेमीश्वरजी मोहित थया छे तो हु पहेलाथी ज ते स्त्रीने देखी

तो लेउं. एटले मुक्तिरूप स्त्रीए राजीमतीना भर्त्तारनुं मन वश कीधुं, माटे ते पोतानी शोकने जोवा सारुं राजीमतीजी पण क्षपकश्रेणी साधी, कर्म खपावी पोताना भर्त्तारनी पहेलां ज मुक्तिमां गया.'

श्रीअरिष्टनेमिप्रभुनो परिवार अने निर्वाण—

श्रीअरिष्टनेमि भगवानने अढार गच्छ अने अढार गणधर थया, अने वरदत्तप्रमुख अढार हजार साधुओनी संपदा थइ, गुणरूप मणिरत्नना भंडार जेवी यक्षणी प्रमुख चालीश हजार साध्वीओनी संपदा थइ, नंदीषेण प्रमुख एक लाख ओगणोतेर हजार श्रमणोपासक व्रतना धरनार श्रावकोनी संपदा थइ, महासुव्रता प्रमुख त्रण लाख ने छत्रीश हजार श्राविकाओनी संपदा थइ, जिन नही पण जिन सरखा एवा सर्व अक्षरानुयोग (चौद पूर्व) धरनार चारसौ साधुओनी संपदा थइ, पन्नरशे अवधिज्ञानी साधुओनी संपदा थइ, तथा पन्नरशे वैक्रिय लब्धिना धरनार साधुओनी संपदा थइ, पन्नरशे केवलज्ञानी केवलीनी संपदा थइ, एक हजार साधु विपुलमतीना धणी मनःपर्यव ज्ञानीनी संपदा थइ, आठशे वादी साधुओनी संपदा थइ, सोलसौ साधु पांच अनुत्तर विमाने पोहोता, पंदरशे साधु भगवंत थका सिद्धि पाम्या अने त्रण हजार साध्वीओ भगवंत थका मोक्षे गइ—सिद्धि पामी. एवी रीते श्रीनेमीश्वर भगवाननो परिवार जाणवो. अरिहंत श्रीअरिष्टनेमिने वे प्रकारनी अंतगड भूमि थइ—तेमां आठ पाट पर्यंत मोक्षमार्ग चाल्यो ते युगांतकृतभूमि जाणवी तथा भगवानने केवलज्ञान उपन्या पछी वे वर्षे कोइक साधु सिद्ध थयो ते पर्यायान्त अंतकृत भूमि जाणवी. ते काल ते समयने विषे श्रीअरिष्टनेमि भगवान त्रणशे वर्ष गृहस्थावासे कुमारावस्थामां रह्या, चोपन दिवस छद्मस्थ पर्यायमां दिक्षा पाली अने चोपन दिवस ऊणा सातशे वर्ष केवल पर्याय पाल्युं एटले सातसौ वर्ष साधुपणे रह्या. एम सर्व मली एक हजार वर्षनुं पूर्ण आयु भोगवीने शेष

रहेला चार अघाती कर्म खपावीने आ अवसर्पिणीनो दुष्पम सुपमा नामे चोथो आरो घणो वीत्यो अने थोडो रह्यो ते वखतमा उन्हालानो चोथो मास, आठमो पक्ष, आपाढ शुदि अष्टमीना दिवसे गिरनार पर्वत ऊपरे मध्यरात्रिमा, चित्रा नक्षत्रसाथे चद्रमानो योग आवे थके, पाचशे ने छत्रीश साधुओनी साथे, एक मासनु चउविहार (पाणी रहित) अनशन कीधे छते, पद्मासने वेठा कालधर्म पाम्या. यावत् सर्व दु ख थकी रहित थया श्रीपार्श्वनाथ भगवानथी ज्याशी हजार सातशे ने पच्चाश वर्प पूर्वे श्रीनेमिनाथ भगवान थया एटले श्रीअरिष्टनेमि भगवान मोक्ष पोहोता पछी चोराशी हजार नवशे एसी वर्पे पुस्तक लखाणु–वाचना थइ इति श्रीनेमिनाथ चरित्रम्

एकवीशमा तीर्थंकरथी श्रीऋपभदेव सुधीना आतरा—

(२१) एकवीशमा श्रीनमिनाथ भगवान निरवाण थया पछी पाच लाख वर्प गये थके बावीशमा श्रीनेमिनाथजी निर्वाण थया अने नेमिनाथजीथी चोराशी हजार, नवसौ एसी (८४९८०) वर्पे पुस्तक लखाणु, (२०) वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया पछी छ लाख वर्पे एकवीशमां श्रीनमिनाथजी मोक्ष गया ते पछी पाच लाख, चोरासी हजार नवसौ एसी (५८४९८०) वर्पे पुस्तक लखाणु, (१९) ओगणीशमा श्रीमल्लिनाथ मोक्षे गया पछी चोपन लाख वर्पे वीशमां श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया ते पछी अग्यारेलाख, चोरासी हजार, नवसौ, एसी (११८४९८०) वर्पे पुस्तक लखाणु, (१८) अढारमा श्रीअरनाथ मोक्ष गया पछी एक हजार कोडी वर्पे ओगणीशमा श्रीमल्लिनाथ स्वामी मोक्ष गया, ते पछी पासठ लाख, चौरासी हजार, नवसो, एसी (६५८४९८०) वर्पे पुस्तक लखाणु (१७) सत्तरमां श्रीकुंथुनाथ मोक्ष गया पछी एक हजार कोडी वर्पे न्यून एक पल्योपमनो चोथो भाग एटला वर्पे अढारमा श्रीअरनाथ मोक्ष गया, ते पछी एक हजार क्रोड ऊपर पासठ

लाख चोराशी हजार नवशे एंसी वर्षे पुस्तक लखाणुं, (१६) सोलमां श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया पछी अर्द्धो पल्योपमे श्रीकुंथुनाथ मोक्ष गया, ते पछी एक पल्योपमना चोथा भागनी ऊपर पांसठ लाख चोरासी हजार नवसे एंसी वर्षे पुस्तक लखायुं, (१५) पन्नरमां श्रीधर्मनाथ मोक्ष गया पछी पोणा पल्योपमे ओछा त्रण सागरोपम गये श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया, ते पछी पोगा पल्योपम ऊपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखायुं, (१४) चौदमां श्रीअनंतनाथजी मोक्ष गया पछी चार सागरोपम गये थके श्रीधर्मनाथजी मोक्ष गया ते पछी त्रण सागरोपम ऊपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं. (१३) तेरमां श्रीविमलनाथजी मोक्ष गया पछी नव सागरोपम गये थके श्रीअनंतनाथजी मोक्ष गया, ते पछी सात सागरोपम ऊपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं, (१२) बारमां श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया पछी त्रीश सागरोपम गये थके श्रीविमलनाथ मोक्ष गया, ते पछी सोल सागरोपम ऊपर ६५८४६८० वर्षे पुस्तक लखायुं, (११) अगीयारमां श्रीश्रेयांसनाथनो निरवाण थया पछी चोपन सागरोपम गये थके श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया, ते पछी छेतालीश सागरोपम ऊपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखायुं, (१०) दशमां श्रीशीतलनाथजी मोक्ष गया पछी एकसो सागरोपम तथा छासठ लाख छव्वीस हजार वर्षे ऊपर एटला वर्षे एक क्रोड सागरोपममांथी ओछा एटले एक क्रोड सागरोपममांथी एकसो सागरोपम ओछा करीए तथा वली छासठ लाख ने छव्वीश हजार वर्ष बीजा पण ओछा करीए, बाकी जेटला वर्ष रहे तेटले वर्षे श्रीश्रेयांसनाथजी निरवाण पाम्या अने ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष ने साडा आठ महिने न्यून एवा छासठ लाख छव्वीश हजार वर्षे अधिक एकसो सागरोपम गये थके श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया, त्यार पछी नवशे एंसी वर्षे पुस्तक लखायुं, (९) नवमां श्रीसुविधिनाथ मोक्ष गया

पछी नव कोडी सागरोपम गया थका श्रीशीतलनाथ मोक्ष गया त्यार पछी बेतालीश हजार ने त्रण वर्ष तथा ऊपर साडा आठ महिना एटले वर्षे न्यून एक कोडी सागरोपम गये थके श्रीवीरनो निरवाण थयो त्यार पछी नवसो एशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो, (८) आठमा श्रीचद्रप्रभ स्वामी मोक्ष गया पछी नेवु कोडी सागरोपम गये थके श्रीसुविधिनाथजी मोक्ष पाम्या, ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष ने साडा आठ महिने न्यून दश कोडी सागरोपम गया पछी श्रीवीर निरवाण पाम्या, ते पछी नवसे एशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो, सातमा श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया पछी नवसौ क्रोड सागरोपम गये थके श्रीचद्रप्रभ स्वामी मोक्ष गया, ते पछी बेतालीश हजार ऊपर त्रण वर्ष साडा आठ महीना एटला वर्षे न्यून एकसो क्रोड सागरोपमे श्रीवीरप्रभु निरवाण पाम्या ते पछी नवसे एशी वर्षे पुस्तक लखायु (६) छट्ठा श्रीपद्मप्रभजी मोक्ष गया पछी नव हजार क्रोड सागरोपमे श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया, ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष ऊपर साडा आठ महीना एटला वर्षे ऊणा एक हजार क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रभु मोक्ष गया, ते पछी नवसे एशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो, (५) पाचमा श्रीसुमतिनाथजी निरवाण पाम्या पछी नेवु हजार क्रोड सागरोपम गये थके श्रीपद्मप्रभ स्वामी निरवाण पाम्या, ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष साडा आठ महीना एटला वर्षे ऊणा दस हजार क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया, ते पछी नवसे एसी वर्षे पुस्तक लखायु (४) चोथा श्रीअभिनदनजिन मोक्ष गया पछी नव लाख क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीसुमतिजिननो निरवाण थयो, ते पछी बेंता लीश हजार त्रण वर्ष ने साडा आठ महीना ऊपर एटला वर्षे न्यून एक लाख क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीरजीनु निर्वाण थयु, ते पछी नवसे एसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो, (३) त्रीजा श्रीसभ-

वनाथजी निर्वाण पाम्या पछी दश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीअभिनंदनजिननो निर्वाण थयो, ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष ऊपर साडा आठ महिना एटला वर्षे न्यून दश लाख क्रोड सागरोपम गये श्रीवीर निरवाण पाम्या, ते पछी नवसे एंसी वर्षे पुस्तक लखायुं, (२) बीजा श्रीअजितनाथ जिन मोक्ष गया पछी त्रीश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीसंभवनाथजी मोक्ष गया, ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष ने साडा आठ महीने न्यून वीश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरजिन मोक्ष गया, ते पछी नवसौ एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो. (१) पहेला श्रीऋषभदेव भगवान मोक्ष पाम्या पछी पचास लाख कोडी सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ भगवान निरवाण पाम्या, ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष ऊपर साडा आठ महीना एटला वर्षे न्यून पच्चास लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रभु निर्वाण पाम्या, ते पछी नवसौ एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो. ए श्रीमहावीर प्रभुना निरवाणथी लइने पश्चानुपूर्व्वीए आंतरा कह्या. हवे चोथो, पांचमो अने छट्ठो ए त्रणे आरानुं प्रमाण एक कोडाकोडी सागरोपमनुं छे. तेमां बेंतालीश हजार पंचोतेर वर्षनी ऊपर साडा आठ महीना एटला वर्ष ऊणां करीए त्यारे चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीरजिननो जन्म थयो. तेमां बहोंत्तेर वर्ष श्रीमहावीर स्वामीनुं आयुष्य हतुं अने चोथा आरानां त्रण वर्ष ने साडा आठ महीना शेष रह्या त्यारे श्रीवीरप्रभु निरवाण पाम्या तथा एकवीश हजार वर्षनुं कालमान पांचमा आरानुं जाणवुं अने एकवीश हजार वर्षनुं कालमान छट्ठा आरानुं जाणवुं. ए सर्वनो सरवालो करीए त्यारे एक कोडाकोडी सागरोपम काल पूर्ण थाय.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक—विजयराजेन्द्रसूरीश्वर—सङ्कलिते
श्रीकल्पसूत्र—बालावबोधे सप्तमं व्याख्यानं समाप्तम् ।



अथाष्टमो व्याख्यान. प्रारंभ.।

श्रीआदिनाथ भगवाननु चरित्र कहे छे—

ते काल ते समयने विषे श्रीऋषभनाथ अरिहत अयोध्या नगरीमां थया तेना लीधेज ए भगवान् कौशलिक कहेवाय छे तेमना चार कल्याणक तो उत्तराषाढा नक्षत्रमा थया अने पाचमो कल्याणक अभिजिन्नक्षत्रमा थयो. उत्तराषाढा नक्षत्रमा देवलोकथी चवीने गर्भमां आवी उपन्या, उत्तराषाढामा जन्म थयो, ऊत्तराषाढामा दीक्षा लीधी अने उत्तराषाढामा केवलज्ञान उपन्यु, तेमज अभिजिन्नक्षत्रमां भगवान मोक्षे गया.

भगवान श्रीऋषभदेवजीना तेर भव—

धण मिहुण सुर महब्बल, ललियगो वयरजघ मिहुणे य ।
सोहम्म विज्ज अच्चु, चक्की सव्वट्ठ उसभे य ॥ १ ॥

पहेले भवे आ जबूद्वीपना विषे महाविदेह क्षेत्रमा सुप्रतिष्ठित नामा नगरे प्रियकर नामा राजा राज्य करे छे ते नगरमां म्होटो धनाढ्य 'धन्ना' नामे एक सार्थवाह रहे छे एकदा ते धन्नो सार्थवाह वसतपुर नगरे जवाने तैयार थयो त्यारे नगरमा पडहो वजडाव्यो के 'जो कोइने वसतपुर नगरे जावुं होय तो तेणे म्हारी साथे आववुं तेनो हु निरवाह करीश' एवो पडह सांभली घणा लोक तेनी साथे जवाने एकठा थया, म्होटो सथवारो थयो हवे तेज नगरमां श्रीधर्मघोषसूरि पाचसो साधुओ साथे रहेला हता तेमनी पण यात्राने अर्थे वसतपुर जवानी इच्छा थइ तेथी धन्ना सार्थवाहनी पासे आवीने धर्मलाभ आपी बोल्या के 'सार्थवाह ! जो तमारी आज्ञा होय तो अमे पण वसतपुर जवाने अर्थे साथे

आवीए.' त्यारे धन्नो बोल्यो के–स्वामिन्! सुखेथी म्हारी साथे पधारो. त्यारे आचार्य पण तेनी साथे चाल्या. मार्गे जतां एक दिवसे शेठने आंबानुं भेटणुं आव्युं ते साधुने आपवा मांडयुं, पण साधुओए सचित्त जाणी लीधो नहीं. हवे सथवारो धीमे धीमे थोडा थोडा कोश दररोज चाल्यो जाय छे तेथी मार्गमांज चोमासुं आवी गयुं, वर्षाद घणो वर्ष्यो, नदीओ जलथी पूर वहेवा लागी तेना लीधे पंथिजनोने चालवानो मार्ग रोकाइ गयो. हरितकाय प्रमुख जीवोनी उत्पत्ति थइ, कादव पण घणो थयो तेथी लोक चाली शके नहीं. त्यारे सथवारो एकठो थइ तंबु डेरा ताणीने जंगलमांज रह्यो अने धर्मघोष आचार्य पण एक पर्वतनी गुफामां निरवद्य स्थानक देखीने पांचसौ साधु सहित मासखमणनी तपस्या करी चोमासुं रह्या थका धर्मध्यान करवामां प्रवृत्त थया. एम करतां सथवाराना लोको पासे संवल खूटी गयुं, माटे सर्व लोक कंद-मूल फलादिकनो आहार करीने दिवस निर्गमन करवा लाग्या. तेथी साधुओने पण पारणे शुद्ध आहार मले नहीं. एम करतां केटलाक दिवस पछी त्यां एक भाट आव्यो. ते शेठने खुशी करवा माटे सुभा-षित वचनथी बोल्यो के 'हे शेठ! म्होटा पुरुष जे वात अंगीकार करे ते पार पाडे पण अधवच्च मूकी दिये नहीं.' ए वात सांभलीने शेठे धर्म-घोषसूरिने याद कर्या. अने मनमां विचारवा लाग्या के अरे! म्हारा कहेवा ऊपरथी साधुओ म्हारी साथे आव्या अने म्हें तो एक दिवस पण तेमनी सार संभाल लीधेल नथी. माटे तेओनो हुं विश्वासघाती थयो. तो हवे प्रभाते एमनी पासे जइने खमतखामणा करुं, एम चिंतवी प्रभाते आचार्य पासे जइ, वंदना करीने लज्जाथी पोतानुं मुख नीचुं करी बेठो अने विनंती करवा लाग्यो के–स्वामिन्! म्हारो अप-राध तमे खमजो. म्हें आपनी कोइ वखते पण निगाह करी नथी. महा-राज! लोकनुं सर्व संवल क्षीण थयुं छे. आप मुजने कांइ आज्ञा करो,

हुकुम फरमावो त्यारे आचार्य बोल्या–सार्थेश ! अमारा माटे तमे कांइ पण चिंता करशो नहीं, अमारे तो सुखे धर्मध्यान थाय छे, तमारा साथना योगे अमे घणी अटवी उल्लंघन करी तेमां तमे अमारी म्होटी वात्सल्यता करी एवु साभली धनो शेठ खुशी थयो अने सर्व साधुओने आहारनी निमंत्रणा करी सथवारामा लइ आव्यो. पछी पोतानी पासे शुद्ध आहारमां घृतना कूपा हता ते साधुओने घणाज उलटथी व्होरावता थका अत्यत भावनी वृद्धि थवा माडी. तेथी समकित पाम्यो[1] पछी वर्षाकाल वीत्या बाद वसतपुरे आव्या, धर्मघोष आचार्य पण सार्थवाहने धर्मलाभ देइने तीर्थयात्रा करवा गया, धन्नो पण घणा दिवस समकित पाली अते शुभ ध्याने मरण पाम्यो, वीजा भवमा उत्तरकुरुक्षेत्रे जइ युगलीयामा उपन्यो त्या त्रण पल्योपमनु आयुष्य भोगवी मरण पाम्यो, त्रीजा भवे सौधर्म देवलोके देवता थयो चोथा भवे देवलोकथी चवीने पश्चिम महाविदेहनी गधिलावति विजयमा शीतवल राजानी चद्रकाता राणीने महावल नामा पुत्र थयो, परतु महा विषयलोलुपी भोगपुरदर थयो. विनयवती प्रमुख घणी राणीयोनी साथे विषयसुख भोगववामा मग्न रहे छे, धर्मनी वात न जाणे, सर्वदा गीत, गान, तान, मान अने नाकटने प्रियकारी जाणे छे एम महामोहनी निद्रामा काल गमावता एक दिवस नाटकादिक थाय छे ते देखे छे, गीतमा एक चित्त लागी रह्यु छे, ते वखते सुबुद्धि नामा प्रधाने राजाने प्रतिबोधवा सारु एक गाथा कही के–' सव्व विलविय गीअ, सव्व नट्ट विडवणा । सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहा-

---

१ केटलाएक आचार्योनु लखवु छे के–घीना भरेला पांचसो कूपा वहोराव्या पछी धन्नाए विचार्यु के ' हवे तो घणो वहोराव्यु ' एवी रीते धन्नाना परिणाम घटता देखी साधुओए कह्यु के–बस, वधारे खप नथी परन्तु सेठनो परिणाम लगार वार घट्यो न होत तो ते केवलज्ञान पामत, पण तेना अभिवर्द्धित भाव न रहेवाथी केवल समकितज पाम्यो !

बहा ॥ १ ॥ "–ए सर्व गीत छे ते विलापात करवा जेवा छे, सर्व नाटक छे ते विटंबना सरखां छे, सर्व आभरण छे ते भार समान छे, अने ए सर्व कामभोग छे ते दुःखदायी छे. ए गाथा सांभली राजा बोल्यो के प्रधान ! तमे विना प्रस्तावे आ वैराग्य उत्पन्न करनारी गाथा केम कही ? " यत्र सरागस्तत्र विरागः कथं ?, यत्र विरागस्तत्र सरागः कथं ?, यत्र श्रीरर्थः तत्राऽश्रीरर्थः कथं ? " माटे मंत्री ! विना प्रस्तावे आ वात शा कामनी, त्यारे प्रधान बोल्योः–में आ वात प्रस्तावेज कही छे, ते आवी रीते के आज मुजने केवली मल्या. तेमणे कह्युं के तमारा राजानुं आयुष्य एक मासनुं शेष रह्युं छे, माटे आपने चेतवणी आपुं छुं. एवी वात सांभली राजा चमक्यो, मरण समान कोइ भय नथी. पछी मंत्रिने कहेवा लाग्यो के हुं तो मोहनिद्रामां सूतो हतो, तें सूताने जगाड्यो तो खरो, परंतु आग लागी ने कूवो केम खणाय ? तेम हवे एक मासनुं आयु रह्युं, तेमां शुं धर्मसाधन थइ शके ? त्यारे प्रधाने कह्युं–तमे विषाद म करो, एक दिवसनुं चारित्र पण मोक्षने देवावालुं थाय छे अने जो मोक्षप्राप्ति न थाय तो पण देवताना सुखने तो आपे छे. एवुं सांभली पुत्रने राज्य आपी, सात क्षेत्रे धन वावरी, अट्ठाइ महोत्सव करी, सुगुरु पासे चारित्र लई, चोत्रीश दिवस चारित्र पाली, अंते अनशन करी काल कर्यो, पांचमा भवे ईशान देवलोके प्रभव नामा विमानना विषे ललितांग नामा सामानिक देवता थयो. त्यां स्वयंप्रभा नामा देवी घणीज वल्लभा छे तेनी साथे विषयसुख भोगवतो विचरे छे, पछी एक दिवसे स्वयंप्रभा नामा देवी चवी, तेना विरहथी मूर्च्छा पाम्यो, घणो दुःखी थइ शोक करतो थको रुदन करवा लाग्यो, त्यारे पूर्वभवनो सुबुद्धि मंत्री पण त्यांज देवता थयो छे. तेणे प्रतिबोध्यो तो तथापि तेनो शोक मट्यो नहीं. त्यारे मंत्री देवताए कह्युं तमारी स्त्रीने हुं आणुं छुं

तेने मेलवी आपवानो हु उपाय बतावुं तमे शोक करशो नहीं, ते स्त्रीनो संबध सांभलो--धातकी खडना महाविदेह क्षेत्रे नद नामा ग्रामना विषे नागिल नामे एक गृहस्थ महा दरिद्री छे, तेनी नागश्री स्त्रीए पूर्वे छ पुत्री तो जणेली छे कह्युं छे के ' दारिद्रीने छोडीयो घणी थाय, ' पछी तेणे विचार्युं के–हवे जो म्हारी स्त्रीने सातमी पुत्री आवशे तो हुं देश त्यागीने चाल्यो जइश दैवयोगे स्वयप्रभा देवीनो जीव पण तेना घेर पुत्रीपणे आवी अवतर्यो ए सातमी पुत्री थइ तेथी शेठ अने शेठाणी बेहु दु ख करवा लाग्या अने नागिलतो दु खे पीडातो परदेश गयो पछवाडे कुटुबीओए ते पुत्रीनु नाम पाड्यु नहीं लोक तेने 'अनामिका' कही बोलावे, अभागणी माटे कोइ परणे पण नहीं तेथी काष्टना भारा वेचीने पेट भरे तथा लोकोना घेर काम करीने पेट भराइ करे एक दिवसे कोइ धनवतना बालकने मोदक खाता देखी अनामिकाए पण पोतानी माता पासेथी मोदक मांग्या, त्यारे माताए कह्यु म्हारो पिता मोदक लेवा गयो छे ते आवशे त्यारे आपीश, त्यांसुधी तु अतरतिलक नामा पर्वत थकी काष्टनो भारो लाव, पछी रुदन करती भारो लेवा गइ, त्या युगधरमुनिने केवलज्ञान उपन्यु छे, तेनो इन्द्र महाराज महोत्सव करे छे, अनामिका पण नमस्कार करी त्या बेठी, धर्म देशना साभली केवलीने पूछ्यु के हु आवी दु खनी अवस्था केम पामी ? तथा म्हारे भर्तार प्रमुखनु सुख कांइ पण थयु नहीं तेनु कारण शुं ? प्रभुए कह्यु–तें पूर्व भवमा धर्म आराध्यो नथी माटे धर्म विना सुख होय नहीं हवे जो सुखनी इच्छा होय तो धर्म कर धर्मना प्रभावे देवना सुख पामीए. पछी अनामिकाए श्रावकना व्रत आदर्यां, उपाश्रयमा बेठी श्रावकनो धर्म करे तेथी लोकोए ' धर्मिणी ' एवुं नाम दीधु साधर्मि श्रावको तेने पारणा प्रमुखनी सहाय आपे छे एम धर्मना प्रभावथी ते सुखी थइ छे. पछी छेवटे अनशन करी सूती छे, ते समये ललितां-

गने स्वयंबुद्ध मंत्रिए कह्युं के तमे त्यां जइ तमारुं रूप एने देखाडो के जेथी ए नियाणो करे. ते सांभली ललितांगे आवी पोतानुं अत्यंत उत्कृष्ट रूप देखाडयुं. ते रूप देखी अनामिकाए व्यामोह पामी नियाणुं कर्युं के म्हारे तपस्यानुं फल होय तो एनी स्त्री हुं थाउं, पछी अनामिका मरण पामी स्वयंप्रभा देवी थइ, तेनी साथे ललितांग देव सुख भोगववा लाग्यो. त्यांथी चवीने छट्ठा भवे जंबूद्वीपे पूर्व महाविदेहनी पुष्कलावती विजयमां लोहार्गल नगरे सुवर्णजंघ राजानी लक्ष्मीवती राणीनो वज्रजंघ नामा पुत्र थयो अने स्वयंप्रभा देवी पण तेहिज विजयनी पुंडरीक नगरीमां वज्रसेन नामा चक्रवर्त्तिनी श्रीमती नामा पुत्री थइ, ते यौवन पामी थकी एक दिवसे चंद्रोदय सभामां बेठी छे ते समये कोइ साधुने केवलज्ञान उपन्युं छे तेने देवता वांदवा आवे छे, ते देवोने देखी एने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं त्यारे विचार्युं के म्हारो पूर्वभवनो भर्तार ललितांग नामा देवतानो जीव क्यां उपन्यो हशे? ते मले, अने हुं तेने परणुं तो सारुं थाय, एम विचारी मौनपणे रही, मातापिताए अनेक उपचार कर्या पण बोले नहीं, पछी धाई माताए एकांतमां वात पूछी त्यारे कुमरीए तेने एक कागल ऊपर हाथपेन्टरनी ललितांगदेवनी तस्वीर आलेखी आपी, धाइए ते चित्रपट राजाने दीधो. पछी एना पिता वज्रसेन चक्रवर्त्तीना वर्ष महोत्सवे अनेक राजपुत्रो आव्या अने धाई पण ते दिवसे चित्रपट लइ राजमार्गे बेठी, ते राजकुमरो पण जाति वखते चित्रपटने देखतां जाय छे, त्यारे वज्रजंघ ते चित्रपटने देखी जातिस्मरण पाम्यो अने कहेवा लाग्यो के आ चित्र तो म्हारी पूर्वभवनी स्त्री स्वयंप्रभा नामा देवीए चितरेलुं छे, ए वात धाइ माताए श्रीमतीने कही. पछी श्रीमती ते वात सांभलीने वज्रजंघ कुंवरने परणी.

---

१ केटलीक प्रतोमां आम लख्युं छे के ते पुत्री तीर्थंकरनी सभामां देवोने देखी जातिस्मरण पामी तेणे पूर्वभव जाण्यो, त्यां अनामिका अने स्वयंप्रभानो भव देखी

एकदा सुवर्णजघराजाए वज्रजंघ कुमरने राज्य आपी पोते दीक्षा लीधी, पछी वज्रजघे पण श्रीमती राणी सहित गोखमां बेठा थका सध्या फूली अने विलय थइ देखीने विचार्युं के एवी ज रीते ससारमा सर्व वस्तुओ विलय थवानी छे माटे प्रभाते पुत्रने राज्य आपी दीक्षा लेशु, ते समये पुत्रे पण राज्यना लोभथी झेरनो धूमाडो करी मातापिताने (श्रीमती समेत राजाने) विषप्रयोगे मार्यो त्याथी मरण पामी सातमा भवे राजा राणी बेहु उत्तरकुरुक्षेत्रना विषे युगलिक थया आठमा भवे सौधर्म देवलोके मित्रपणे देवता थया. त्यांथी चवीने वज्रजघनो जीव नवमा भवे जवूद्वीपे महाविदेह क्षेत्रे क्षितिप्रतिष्ठितनगरे सुविधिनामा वैद्यनो जीवानद नामा पुत्र थयो ते दिवसे ते नगरीमां बीजा पण चार जीव पुत्रपणे अवतर्या–एक प्रसन्नचद्र राजानो पुत्र महीधर, बीजो सुनासीर नामा प्रधाननो पुत्र सुबुद्धि, त्रीजो धनाशेठनो पुत्र गुणाकर, चोथो सागर नामा शेठनो पुत्र पूर्णभद्र जन्म्यो, श्रीमतीनो जीव सौधर्म देवलोकथी चवीने ईश्वरदत्तनो पुत्र केशव नामा थयो, ए पाचे जीवानदना परम मित्र छे ए छए मित्र साथे मली जमे, रमे, सुखे काल निर्गमन करे छे एक दिवसे जीवानदना घेर ते छए जणा बेठा छे एटलामा एक कोढीओ साधु गोचरी वहोरवा आव्यो, तेने देखीने ते पाच मित्र एकठा थइने वैद्य पुत्रने कहेवा लाग्या के ' अरे ! वैद्य तो मतलबीया थाय छे जो पुण्यना अर्थे वैदु करता हो तो आ साधुनो कोढ रोग मटावी आपो त्यारे तो अमे पण जाणीए के तमे धर्मात्मा

विचार्युं के म्हारो पूर्वभवनो भर्तार ललितांग केवी रीते मले, पछी पिताए पूछ्युं त्यारे पोतानी पूर्वभव सबधि वात कही चक्रवर्तीए केवलीने पूछ्यु के एनो पूर्वभवनो भर्तार क्यां उपन्यो छे ? केवलीए वज्रजघनो नाम कह्यु, पछी चक्रवर्तिए वज्रजघने परणावी तथा एक प्रतिमां एम पण लखेल छे के–चित्रपट बनावीने कह्यु के 'एना स्वरूपने जे कहे तेने हु परणु' पछी बीजा राजाओए अनेक प्रकारनी वातो बनावीने कही पण ललितांगनी वात मली नहीं; परतु ज्यारे वज्रजघे कह्यु के आ म्हारी स्वयप्रभा देवीनु रूप छे त्यारे चक्रवर्तिए तेने श्रीमती परणावी.

छो.' ते सांभली जीवानंद वैद्य बोल्यो के—मित्रो ! तमे म्हारी वात सांभलो आ साधुनो रोग मटाडवा माटे लक्षपाक तेल जोइए. ते तो म्हारा घरमां तैयार छे. पण बीजो रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चंदन जोइये ते म्हारी पासे नथी, माटे जो ए बे चीजो क्यांथी लावी आपो तो साधुनी वैयावच्च करीए. ए वात सांभली ते छए जणे मली अढी लाख सोनैया भेगा कीधा. पछी ते छए मित्र मली नगरशेठना घेर जइ सोनैया आपीने बोल्या के एक रत्नकंबल अने बीजो गोशीर्ष चंदन ए बे चीज अमने आपो. शेठे पूछ्युं के तमे एने शुं करशो ? तेणे कह्युं के अमे साधुनी वैयावच्च करीशुं. ते सांभली शेठे विचार्युं के ए बालको छे तो पण जुओ ! केवा धर्म बुद्धिवाला छे अने हुं आटलो म्होटो वृद्ध थयो छुं तो पण हजी लगण कांइ धर्ममां समजतो नथी. एम चिंतवी ते शेठे सोनैया लीधा विना रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चंदन तेमने आपीने पोते दीक्षा लइ, साधुपणुं पडिवजी अने अंतगड केवली थइने मोक्ष गयो. हवे ते छए जणा औषध लइ वनमां गया. मुनि काउसग्गध्यानमां ऊभा हता तेने " अनुजानीध्वं " एवुं कही चामडा ऊपर मुनिने सुवाडीने तेना शरीरे लक्षपाक तेल मसल्युं. पछी चंदननो लेप करी रत्नकांबलमां लपेटी दीधा. पहेली वारमां तो चामडीमां जे कांइ कीडा हता ते सर्व कांबलमां आवी लाग्या. तेने गायना मृत कलेवरमां मूक्या, फरी बीजीवार तेल मसल्युं तेनी ऊपर चंदन लगावी रत्नकांबलथी वींट्या त्यारे मांस मांहेला कीडा निकली पड्या. तेमज त्रीजीवार पण पूर्वोक्त रीते कर्युं ते वखते हाड मींजीना कीडा निकली पड्या. पछी रोहिणी औषध साधुना शरीरे लगाडी तेनुं शरीर कंचन सरखुं करी मूक्युं. पछी ते छए जणे रत्नकंबलनुं द्रव्य सात क्षेत्रमां खरचीने दीक्षा लीधी. निरातिचार चारित्र पालीने अने काल करीने दशमा भवे ते छए जणा बारमा देवलोके देवपणे जइ उपन्या. छए देव मित्र थया.

अगीआरमा भवे बारमा देवलोकथी चवीने जंबूद्वीपना महाविदेह क्षेत्रनी पुष्कलावती विजयमा पुंडरीकिणी नगरीए वज्रसेन नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमा ते छ जणमाथी पाच जण अनुक्रमे पुत्रपणे आवी उपन्या. तेमा जीवानद वैद्य जे धन्ना सार्थवाहनो जीव छे, ते चौद स्वप्न सूचित मातानी कूखमा उपन्यो, जन्म्या पछी माता पिताए तेनु 'वज्रनाभ' नाम आप्यु ए जीव ऋषभदेवजी थवा-वाला छे हमणा चक्रवर्त्ति पणे उपन्यो छे बीजो राजानो पुत्र महीधरनो जीव 'बाहु' नामे थयो त्रीजो मंत्रीनो पुत्र 'सुबाहु' नामे थयो, चोथो शेठनो पुत्र गुणाकरनो जीव, 'पीठ' नामे थयो अने पाचमो सार्थवाहनो पुत्र पूर्णभद्रनो जीव महापीठ' नामे थयो ए पाच तो भाइपणे आवी उपन्या अने छट्ठो केशवनो जीव जे पूर्वे अनामिकानो जीव छे ते वली बीजा एक राजाना घेर पुत्रपणे उपन्यो ते वज्रनाभ नामा चक्रवर्तिने घणोज वल्लभ छे तेथी ए एनो सारथी थाशे ए रीते छए मित्र सुखे रहे छे हवे वज्रसेन राजा तीर्थंकर थवाना छे माटे लोकातिक देवोना वचनथी उदास थइ सांवत्सरिकदान आपी, अने वज्रनाभ नामा पुत्रने राज्य देइ, दीक्षा लइ, घनघातीकर्म क्षय करी केवलज्ञान पाम्या-तीर्थंकर थया ते विचरता पुंडरीकिणी नगरीमा आव्या वनपालके वज्रनाभने वधामणी आपी तेज अवसरमा चक्ररत्न प्रगटवानी पण वधामणी आवी, त्यारे विचार्युं के पहेला केनी पूजा करु ? एम विचारता निरधार कर्यो के, तीर्थंकरने पूज्या तो सर्वने पूज्या ए त्रण लोकना नाथथी वली बीजो कोण वधारे गणाय एम चिंतवी केवलज्ञाननो महोत्सव कर्यो भगवानने वादवा आव्यो पछी चक्रने पूज्यो अनुक्रमे छ खड साधी, सुखे राज्य भोगवे छे एक दिवसे वली वज्रसेन तीर्थंकर समोसर्या तेमने वज्रनाभ प्रमुख वादवा गया, त्या प्रभुनी देशना साभली छए जणाए दीक्षा लीधी तेमा

पहेलो वज्रनाभ चक्रवर्त्ति साधु थयो ते चौद पूर्व भण्यो. अने बीजा पांचे साधु अगीआर अंग भण्या. तेमां बाहुनामा जे साधु छे ते पांचसे साधुने आहार लावी आपे, अने सुबाहु पांचसे साधुओनी पगचंपी करे तथा पीठ अने महापीठ ए बे एकांते तप, जप, सज्झाय अने ध्यान करे, हवे बाहु अने सुबाहुनी गुरु प्रमुख सर्वे प्रशंसा करे तेथी पीठ अने महापीठ एवुं जाणे के 'जुओ ! काम सर्वने वल्लभ छे. जो साधु थया तो पण मतलबी देखाय छे. केमके अमे सज्झाय ध्यान करीए छिए तो अमोने कोइ प्रशंसता नथी अने बाहु, सुबाहु एमनी चाकरी करे छे तो तेमनी प्रशंसा सर्वे करे छे, माटे संसारमां सर्वे स्वार्थी छे.' पछी वज्रनाभमुनिए वीश थानक तप करीने तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्जन कर्युं. बाहु साधुए आहारना दानथी भोगफल उपार्ज्जन कर्युं. सुबाहु साधुए पगचंपीना प्रभावथी बाहुबल उपार्ज्जन कर्युं. तथा पीठ अने महापीठे ईर्ष्या करवाथी स्त्रीवेद बांध्यो अने छठ्ठो अनामिकानो जीव ते श्रेयांस कुमर थशे. अंते अनशन करी मरण पामी, बारमा भवे छए जण सर्वार्थसिद्ध विमाने देवपणे उपन्या. पछी सर्वार्थसिद्ध विमानथी तेत्रीश सागरोपमनुं आयु पूर्ण करीने तेरमा भवे वज्रनाभनो जीव ते 'श्रीऋषभदेवजी' थया तथा बाहुनो जीव 'भरतचक्रवर्त्ती' थयो अने सुबाहुनो जीव 'बाहुबल' थयो. वली पीठ अने महापीठनो जीव 'ब्राह्मी अने सुन्दरी' थया. ए पांचे जीव अनुक्रमे मोक्ष जाशे.

प्रभुऋषभदेवनो मोरादेवीनी कुक्षिमां अवतरवुं—

ते काल ते समयना विषे श्रीऋषभदेव अरिहंत उन्हालानो चौथो महिनो, सातमुं पखवाडियुं, आषाढवदि चोथना दिवसे, सर्वार्थसिद्ध विमानथी, देवगतिनुं आयुष्य पूर्ण करीने चव्या. ते आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे इक्ष्वाकुभूमीमां नाभिकुलकरनी मरुदेवीनामा

भार्यानी कूखे मध्यरात्रिना विषे देव सवधी आहार, देव संवधि भव, अने देव सबंधि शरीर त्यागीने गर्भमा पुत्रपणे आवी उपन्या इक्ष्वाकु वशमां उपन्या तेथी इक्ष्वाकु भूमि थइ पूर्वे सर्वे युगलिया हता, नगर वगेरे कांइ हता नहीं युगलीयामा तो कल्पवृक्ष ज मनोरथ पूरण करता हता, तेमा सात कुलकर थया

कुलकरोनी उत्पत्ति अने नीति प्रचार—

आ अवसर्प्पिणीना त्रीजा आराना अतमा पल्योपमनो आठमो भाग बाकी रहे छते आ दक्षिण तरफनो अर्द्धो भरत तेने दक्षिणार्द्ध भरत कहीए तेना त्रण भाग करवा, ते त्रण भाग माहेला मध्य भागमा एटले वचला भागमा पहेला त्रण कुळकर थया, तेमा प्रथम कुलकर एवी रीते थयो के पश्चिम महाविदेहमा बे वाणीया हता ते बेहु वाणीया माहोमाहे मित्र हता परतु तेमां एक कपटी हतो अने बीजो सरल मनवालो हतो, ते ज्यारे मांहोमाहे द्रव्य वाटे त्यारे कपटी वाणियो सरल स्वभाववालाने ठगीने तेनाथी छानु धन पोते राखे अने सरल तो कपट रहितपणे व्यापार करे एक दिवसे सरलचित्तवालानी स्त्रीने देखीने कपटी मित्रे भोग भोगववानु कह्यु त्यारे ते सरल वाणियानी स्त्री पतिव्रता हती ते बोली के अरे मर्यादाहीन ! मित्रनी स्त्रीने वांछे छे ? एवु कहीने निर्भ्रंछना करी बाहेर काहाडी मूक्यो पछी ते कपटीए जइने सरल चित्तवालाने कह्यु के म्हारी स्त्री मने वाछती हती, परतु म्हें इनकार कर्यो ए वात साभली सरल चित्तवालो वाणियो वैराग्य पामी मरीने इक्ष्वाकुभूमिमा मनुष्यरूपे युगलीयो थयो अने कपटी मित्र मरण पामीने तेज इक्ष्वाकु भूमिमा हाथीरूपे युगलीयो थयो केमके 'जीव कपटाइथी बहुलताए तिर्यंचपणाने पामे छे' एकदा समयने विषे हाथी युगलियाए सरल युगलीयाने दीठो तेथी बेहु माहोमाहे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या, पछी परमस्नेहथी हाथी तेमने पोताना स्कध ऊपर बेसाडीने रात दिवस

फर्या करे, तेमने सफेद हाथी ऊपर बेठो जोइने बीजा युगलीया बोलवा लाग्या के ए विमलवाहन छे. एवुं तेनुं नाम पाडी दीधुं. केटलोएक काल गयो, त्यारे कालनां माहात्म्यथी जेवा कल्पवृक्ष प्रथम हता तेवा रह्या नहीं त्यारे युगलीया लडवा लाग्या अने सौ कोइ पोत पोताना कल्पवृक्ष थापी बेठा, अने तेमांज पोते रहेवा लाग्या, तेमां बीजाने आववा दीए नहीं अने कदापि कोइ आवे तो तेनो विमलवाहननी पासे पोकार करवा आवे. विमलवाहन तेने ' हकार ' एवो दंड आपे तेथी युगलीया मनमां जाणे के सर्व म्हारी वात गइ एवो जाणी लडे नहीं. ए प्रथम हकार नीति थइ. ते विमलवाहनने चंद्रयशा भार्या हती, नवसो धनुष्य प्रमाण शरीर हतुं. ए प्रथम कुलकर, पछी ते विमलवाहनना पुत्र चक्षुष्मान् थया. तेनी चंद्रकान्ता भार्या अने आठसो धनुष्य शरीरनुं प्रमाण, एनी पण हकार दंडनीति थइ, ए बीजो कुलकर. त्रीजो यशोमान् कुलकर थयो, तेनी सुरूपा नामे भार्या, एनुं सातसो धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं एनी वखतमां 'मकार' दंडनीति जाणवी. चोथो अभिचंद्र नामा कुलकर थयो तेनी प्रतिरूपा नामे भार्या, एनुं साडा छसे (६५०) धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं. एना वखतमां पण ' मकार ' दंडनीति जाणवी. पांचमो प्रसेनजित् नामा कुलकर थयो, तेनी चक्षुष्मती नामे भार्या, एनुं छशे (६००) धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं. एना वखतमां धिक्कार एटलुं कहेवाथी ते युगलिया एवुं समजी जाय के मने म्होटो दंड थयो, माटे ' धिक्कार ' दंडनीति जाणवी. छट्ठो मरुदेव नामा कुलकर थयो, तेनी श्रीकांता नामे भार्या, एनुं साडा पांचसे (५५०) धनुष्य प्रमाण शरीरनुं मान जाणवुं. एना वखतमां पण ' धिक्कार ' दंडनीति जाणवी. सातमो नाभि नामे कुलकर थयो, तेनी मरुदेवी नामे भार्या, एनुं सवा पांचशे (५२५) धनुष्य प्रमाण देहमान जाणवुं. एना वखतमां पण धिक्कार एटलो कहे त्यारे ते समजे के मुजने महादंड थयो,

फरीथी जन्म पर्यंत ते अन्याय करे नहीं एवीरीते पहेला तथा बीजा कुलकरना वारामा हकार दडनीति हती अने त्रीजा तथा चोथा कुलकरना वारामां जघन्यथी हकार अने उत्कृष्टथी मकार दडनीति चाली एटले घणो अन्याय करे त्यारे तेने 'म' एटलो कहे तेथी ते एवु समजे के मने म्होटो दड थयो, फरीथी कोइवारे ते अन्याय करे नहीं तथा पाचमा, छठ्ठा अने सातमा कुलकरनी वखतमा जघन्यथी तो हकार तथा मध्यमथी मकार अने उत्कृष्टथी धिक्कार एवी त्रण प्रकारनी दडनीति चालु थइ

प्रभुनो जन्म, नाम-वशस्थापन, अने विवाह—

श्रीऋषभनाथ अरिहत त्रण ज्ञाने सहित मरुदेवी मातानी कूंखे आवी उपन्या यावत् मरुदेवीए चौद स्वप्न दीठा इत्यादिक सर्व अधिकार महावीर स्वामीनी परे कहेवु परतु एटलो विशेष छे के मरुदेवीजीए पहेला स्वप्नमा वृषभ मुखमाहे पेसतो दीठो अने बीजा बावीश तीर्थंकरनी माताए पहेला स्वप्ने हाथी मुखमाहे पेसतो दीठो तथा श्रीमहावीर स्वामीनी माताए पहेला स्वप्ने सिंह मुखमां प्रवेश करतो दीठो" चौद स्वप्ननु फल नाभीराजाए पोतेज कह्यु परतु स्वप्न-पाठक ते वखते हता नहीं, ते काल ते समयने विषे ऋषभनाथ अरिहत उन्हालानो पहेलो महिनो, पहेलु पखवाडियु, चैत्र वदि आठमना दिवसे नव मास ऊपर साढा सात दिवस रात्री गर्भमा प्रतिपूर्ण होते छते उत्तराषाढा नक्षत्रसाथे चद्रमानो योग आवे थके निराबाध पणे जन्म्या (इहा जन्ममहोत्सव इन्द्रादिकोए आवी कर्यो इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीरजीनी परे कहेवो परतु बदीखानामाथी केदी छोडी मूकवा, तोल वधारवा, कुलमर्यादा करवी अने पूजादिकना अर्थे द्रव्य रखाववो ए कृत्य युगलीयाना वखतमा गाम नगर आदिकना अभावना लीधे हता नहीं माटे ते कर्या नथी)

ते वखते सर्व युगलीया हता तेथी प्रभुनुं नाम स्थापन करवानुं महोत्सव संबंधी व्यवहार पण चाल्यो नहीं. भगवानना जंघामां रोम्नुं वृषभ सरिखो लंच्छन दीठो तथा प्रभुनी माताए पहेला स्वप्नमां पण वृषभ दीठो तेथी 'ऋषभ' एवुं नाम दीधुं. भगवान महा स्वरूपवान थका देव तथा देवीओ साथे रमत करे, इन्द्राणी पोते खोलामां लइने रमाडे, सुनंदा भगवाननी साथेज युगलपणे जनमी हती तथा एक युगलीयाना मस्तक ऊपर तालवृक्षनुं फल पडयुं तेथी ते बालपणामां ज मरण पाम्यो. अने तेनी साथे जन्मेली युगलणी जीवती रही तेने बीजा युगलीयाओए दीठी, तेओए त्यांथी उपाडीने नाभि कुलकरने आपी, नाभिकुलकरे कह्युं के म्हारा पुत्र ऋषभदेवनी सुनंदानी साथे एने पण स्त्री करीशुं. एम कही तेनुं सुमंगला नाम दीधुं. ते पण भगवाननी साथे वधे छे, कंचनवर्ण शरीरवाला भगवान श्रीऋषभदेवजी मुणमुण बोले, रुकता रुकता चाले, हशे, त्यारे माता कहे के-पुत्र ! तुं इन्द्राणीनो वल्लभ छे. अने देवताए दीधेला अमृतनुं पान करे छे, म्हारी पासे तो रहेतो नथी, म्हारा स्तन पण चूसतो नथी, तो हुं त्हारी माता छुं एवो जगतमां कोण जाणशे ? इत्यादिक वातो करी रमाडे. ज्यारे भगवान देशे ऊणा एक वर्षना थया त्यारे इन्द्रमहाराज भगवाननुं वंश स्थापन करवा सारुं हाथमां सेलडी लइने आव्या ते वखते, भगवान नाभि-कुलकरना खोला मांहे बेठा हता ते खोला मांहेथी सेलडी लेवा सारुं हाथ लांबो कर्यो. तेथी इन्द्रे जाण्युं के प्रभुने सेलडी खावानुं मन थयुं, माटे इन्द्रे भगवाननो इक्ष्वाकुवंश स्थापन कर्यो. श्रीऋषभदेवने देवकुरु अने उत्तरकुरु क्षेत्र संबंधि कल्पवृक्षोना फलनो आहार देवताओए आणी आप्यो. ते आहार गृहस्थपणामां थयो अने बालपणामां तो अंगुठामां देवोए संचारेला अमृतनो आहार सर्व तीर्थ-

करोने होय छे अने एक श्रीऋषभदेवजी विना बीजा सर्व तीर्थंकरोने तो बालपणु टल्या पछी म्होटा थाय त्यारे पक्व थयेलो आहार होय अने संयम लीधा पछी तो चोवीसे तीर्थंकरोने फासु आहार होय भगवान ज्यारे भोग भोगववाने समर्थ थया त्यारे सर्व इन्द्र अने इन्द्राणि पोत पोताना परिवार साथे विवाह करवा आव्या, तेमा इन्द्रादिक देवो तो वरराजानी तरफ रह्या थका श्रीऋषभदेवने वींद बनाव्यो अने इन्द्राणी प्रमुख सर्व देवीओए मलीने कन्यानी तरफ रहीने सुनदा तथा सुमगलाने वींदणीयो बनावी, शणगार कराव्या माडवा माड्या इत्यादिक सर्व प्रकारनी विवाह सबधी रीतीओ करीने वर–कन्याने परणाव्या, त्यारथी युगलीयामा विवाह करवानी रीती प्रवर्त्त-मान थइ ते आजदिवस पर्यंत चाली आवे छे

ऋषभदेवनी सन्तति, राज्याभिषेक, अने विनीतानगरीनी स्थापना—

श्रीऋषभदेवजीने सुनदा तथा सुमगला ए बे राणीओ साथे भोग भोगवता छ लाख पूर्व व्यतिक्रम्या त्यारे सुमगलाने भरत अने ब्राह्मी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो अने सुनदाने बाहुबली तथा सुदरी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो तथा ओगणपचास तो केवल पुत्रोनाज जोडला थया ए रीते ऋषभदेव स्वामीने सो पुत्र तथा बे पुत्री थइ, कालना महात्म्यथी अनुक्रमे दिवसे दिवसे युगली-याओमा कषायनी वृद्धि थवा माडी त्यारे हकार, मकार अने धिक्कार ए त्रण जातनी जे दडनीतिओ चालती हती, तेने पण लोक उल्लघन करवा लाग्या, तेने मान्य न करतां परस्पर क्लेश उत्पन्न थवाथी श्रीऋषभदेवनी पासे आवी कहेवा लाग्या के अमारो न्याय करी आपो त्यारे भगवान बोल्या, हु राजा नथी, म्हारा पिता नाभिकुलकर राजा छे तेनी पासे तमे जाओ ते सांभली युगलीया नाभीराजा पासे गया नाभीराजाए कह्यु के तमारो राजा ऋषभदेव छे, ते तमारो न्याय

करशे. ए अवसरमां इन्द्र महाराजनुं आसन चलायमान थयुं, अवधिज्ञानथी भगवानने राज्यपाटे स्थापन करवानो अवसर जाणी इन्द्र-महाराजे आवी भगवानने मुकुट, कुंडल, हार प्रमुख पहेरावी, सिंहासन ऊपर बेसाडी राज्य अभिषेक कर्यो, युगलीया इन्द्र महाराजना कहेवाथी जल लेवा गया हता. परंतु ते राज्याभिषेक थइ गया पछी जल लेइने आव्या. त्यारे भगवानने शणगार सहित सिंहासन ऊपर बेठेला जोइने युगलीयाओने विवेक आव्यो के बीजा सर्व शरीर ऊपर तो शोभा थइ रही छे; परंतु एक भगवानना पग खाली देखाय छे एवुं जाणी पग उपरज पाणी ढोल्युं. त्यारे इन्द्रमहाराज बोल्या ए युगलीया भला विनीत पुरुषो छे माटे इहां विनीता नामे नगरी वसाववी. एवुं कहीने वैश्रवण देवने इन्द्रे नगरी वसाववानी आज्ञा आपी, वैश्रवणदेवे विनीता नगरी बनावी. ते बार योजन लांबी, नव योजन पोली, आठ दरवाजा कर्या, फरतो म्होटो कोट कर्यो, ईशान कोणमां सात भूमिओ चोखूणो एक म्होटो नाभिराजाने रहेवा माटे घर बनाव्युं. अने पूर्व दिशामां भरतना रहेवा सारुं सात भूमीनुं घर बनाव्युं, अग्निकोणमां बाहुबलीने रहेवा

---

१ केटलीएक प्रतोमां लखेलुं छे के युगलीया मांहोमांहे वढवाड करीने नाभिकुल-कर पासे न्याय कराववा गया, नाभिराजाए तेमने कह्युं के अमे वृद्ध थया माटे तमे ऋषभने जइ कहो ते तमारो न्याय करशे. युगलीयाओए जइ ऋषभजीने कह्युं. ऋषभजी बोल्या मने राज्य अभिषेक करी राजा स्थापो, त्यारे युगलीयाओए धूलनो एक म्होटो ओटलो बनावी तेना ऊपर प्रभुने बेसाडी पोते अभिषेक करवा पाणी लेवा गया. एवामां इन्द्रनो आसन कंप्युं तेणे आवीने मुकुटादिक अलंकार पहेरावी, सिंहासने बेसाडी, वस्त्रविभूषित करी राज्याभिषेक विधि साचव्यो. प्रभु ऊपर छत्र धारण कर्युं, चामर वींजतो थको इन्द्रमहाराज पोते प्रभुनी सेवा करे छे, एटलामां युगलीया पण कमलपत्रना दुनामां पाणी भरी लइ आव्या, भगवाननुं स्वरूप सर्वालंकार विभूषित देखीने चिंतववा लाग्या के प्रथम भगवानना मस्तक ऊपर नाखिए तो सर्व वस्त्र, अलंकार भींजाइ जाय माटे स्वामीनो डाबो पग खाली छे ते तेना ऊपर न्हवण करीए एम विचारी डाबा पग ऊपर अभिषेक कर्यो.

माटे म्होटु घर बनाव्यु, तेनी वचमा श्रीऋषभदेवजीने रहेवा सारुं एकवीश भूमिवालु घर बनाव्यु, एकसो आठ जिनमंदिर बनाव्या, वली राज्यना अर्थे हाथी, घोडा, गाय, उंट, वेसर (खच्चर) बलद प्रमुख चतुष्पदोनो संग्रह कर्यो आगल तो ए हाथी प्रमुख सर्व जीवो जंगलमा फरता रहेता हता वली केटलाएक जुगलीयाओने अपराधमां आवे तेमने दंड देवा माटे ' उग्रा ' एवा नामथी स्थापन कर्या, केटलाएक गुरुस्थानीया करी तेमने ' भोगा ' एवा नामथी स्थापन कर्या केटलाएक मंडलाधिप करीने तेमने ' राजन्य ' एवा नामथी थाप्या, बीजा 'पायदल–क्षत्रियो' एवा नामे करी थाप्या एम चार प्रकारना पुरुषोनी व्यवस्था थइ तथा वली जे ब्रह्मचर्य पाले ते ब्राह्मण, जे शस्त्र राखे ते क्षत्रिय, खेती करावे ते वैश्य, चाकरी करे ते शूद्र, एवा नाम स्थापन कर्या वली विनीता नगरीमा चोराशी चौटा कर्या, तेमा सौगंधिक–गांधी, तंबोली कंदोइ, सोनार, मणियार, सोनु वेचनार, माणिक वेचनार, नाणावटी, भाडभुंजा, धान्यबजार, दोसी, चमार, कसारा, माली, घृत बजार, तथा तेल, सूत्र, कपास भाडा, भाडा इत्यादिक बजारो करी अनेक जातना उद्यमीओ वगेरे थया

युगलिकधर्मनिवारण अने भोजनविधिनिरूपण—

श्रीऋषभनाथ स्वामीना पाच नाम थया–एक ऋषभनाथ, बीजु प्रथम राजा, त्रीजु पहेला भिक्षाचर, चोथु पहेला केवली अने पाचमु पहेला तीर्थंकर श्री ऋषभनाथ अरिहंत महाचतुर, भली प्रतिज्ञाना पालनार, भला रूपवंत, सर्वगुण–संपन्न, सरल, विनीत, वीश लाख पूर्व पर्यंत कुमर पदे रह्या, त्रेसठ लाख पूर्व लगे राज्य भोगव्यो, राज्य करता भरतनी साथे ब्राह्मी जन्मी हती ते बाहुबलीने परणावी अने जे बाहुबलीनी साथे सुंदरीनो जन्म थयो हतो ते

भरतने स्त्रीरत्न करवा माटे राखी–एटले युगलधर्म मटाड्यो. प्रथम तो युगलीया कल्पवृक्षना पत्रादिकनो आहार करतां हता ते अयोग्य थया, खावा योग्य रह्या नहीं त्यारे लोक मूल, पत्र, कंद, फल अने फूलनो आहार करवा लाग्या. अपकशालि प्रमुख काचुं धान्य खावा लाग्या, ते खातां खातां पचे नहीं, पेटमां दुखावो थाय त्यारे भगवान् पासे आवी कहेवा लाग्या के आहार कर्याथी अमारुं पेट चढी आवे छे. भगवान बोल्या लगारेक हाथमां मसलीने हाथनी बाफ आपीने खाओ तो पची जशे. तेम कर्यो तो पण केटलाएक दिवस पछी ते पण पच्यो नहीं. पछी कांखमां अने हृदयमां राखी बाफ आपीने आहार करवा कह्युं. तेम करतां केटलाएक काल पछी ते पण पचवा लाग्यो नहीं; आ अवसरे वन मांहे वंश घसातां अग्नि उपन्यो, ते देखीने युगलीयाओए जाण्युं के ए कोइ अपूर्व रत्न उत्पन्न थयुं छे. एवुं जाणी तेने हाथमां लेवा लाग्या, तेथी हाथ बलवा मांड्या, तेनाथी व्हीता थका ऋषभदेवजीने जइ कहेवा लाग्या के हे स्वामिन् ! एक अपूर्व रत्न उपन्युं छे परंतु तेमां क्रोध घणो छे तेथी हाथ लगाडीए तो बालवाने दोडे छे. (कोइ प्रतमां एवुं पण लखेलुं छे के युगलीआए जइ भगवानने कह्युं के–कोइ राक्षस उठ्यो छे) पछी भगवाने अवधिज्ञानथी जोयुं तो अग्नि उपन्यो दीठो, त्यारे युगलीयाओने कह्युं के–तमे एमां तृण लगावीने अग्नि ग्रहण करो, तेमां शालिप्रमुख धान्य पचावीने खाओ. युगलीओए पसवाडाना तृण तोडीने अग्नि जुदो सलगावी, तेमां धान्य नाख्युं ते सर्व बली गयुं, कांइ पण पाछुं हाथमां आव्युं नहीं. ते जोइ फरी भगवान् पासे आवीने कहेवा लाग्या के–ते पोतेज भुख्यो छे. माटे सर्व धान्य खाइ जाय छे, अमने कांइ पण आपतो नथी. ते सांभली भगवान् बोल्या, हुं हाथी ऊपर चढीने आवुं त्यारे मने एक माटीनो पिंड आपजो. पछी युगलीयाओए तेमज कर्युं. माटीनो पिंड

लइ आव्या, ते माटीमांथी भगवाने हांडी, कुंडी प्रमुख वासण बनावीं आप्या अने सर्वे विधि पण कही समजावी पछी वासणो (पात्रो) ने अग्निमा पचावी तेमा धान्य पाणी नाखीने अग्नि ऊपर चढावी, पाकु धान्य करीने खाओ, एवा भगवाने बतावेला विधिथी युगलीया अन्नने पचावीने खावा लाग्या त्यारे अन्न पचवा लाग्यु

प्रभुए आपेल लेखनादि कला शिक्षण—

भगवाने अढार जातिनी लीपी ब्राह्मीने जिमणा हाथथी लखवाने बतावी तेना नाम कहे छे १ हंसलिपी, २ भूतलिपी, ३ यक्षलिपी, ४ राक्षसलिपी, ५ उड्डी लिपी, ६ यावनीलिपी, ७ तुरक्कीलिपी, ८ कीरीलिपी, ९ द्राविडीलिपी, १० सैंधवीलिपी, ११ मालवीलिपी, १२ नडीलिपी, १३ नागलीलिपी, १४ लाटीलिपी, १५ पारसीलिपी, १६ अनिमित्तिलिपी, १७ चाणक्कीलिपी, १८ मौलदेवीलिपी, ए अढार लिपीना नाम, तथा देशाविशेषथी बीजी पग लाटी, चौडी, डाहली, कानडी, वगेरे १८ लिपिओ जाणवी तथा गणित जे आकनो विधान ते सुंदरीने भगवाने डाबे हाथे करवाने बताव्यु, ते शया भणी ? तो के " अकाना वामतो गति , अक्षराणा दक्षिणतो गति " वली भरत महाराजने रूप करवानु कर्म बताव्यु तथा बाहुबलीने पुरुषादि लक्षण बताव्या तथा पुरुषनी व्होंतेर कलाओ बतावी तेना नाम कहे छे–१ लेखनकला, २ पठनकला, ३ गणितकला, ४ गीत गावानी कला, ५ नाटकनी कला, ६ तालमाननी कला, ७ ढोल वजाववानी कला, ८ मृदंग वजाववानी कला, ९ वीणा वजाववानी कला, १० वासली वजाववानी कला, ११ भेरी वजाववानी कला, १२ हाथी परखवानी कला, १३ घोडा परखवानी कला, १४ धातुर्वादनी कला, १५ दृष्टिवादनी कला, १६ मंत्रवादनी कला, १७ पलितविनाशिनी कला, १८ रत्नलक्षण, १९ नारीलक्षण, २० नरलक्षण, २१

छंद्करण, २२ तर्कवाद, २३ न्याय, २४ तत्त्वविचार, २५ काव्यकरण, २६ ज्योतिष, २७ चार वेदनी कला, २८ वैद्यकला, २९ षट्भाषाज्ञान, ३० वशीकरण, ३१ अंजन, ३२ लिपी, ३३ कृषिकर्म, ३४ स्वप्नविचार, ३५ वाणिज्य, ३६ राजसेवा, ३७ शकुनविचार, ३८ इन्द्रजाल, ३९ वायुस्तंभन, ४० अग्निस्तंभन, ४१ मेघ वर्षाववानी कला, ४२ लेपनकला, ४३ मर्दनकला, ४४ ऊंचा जावानी (उडवानी) कला, ४५ घटबंधननी कला, ४६ घटभ्रमण, ४७ पत्रच्छेदन, ४८ मर्मभेदन, ४९ फल खेंचवो, ५० जलवृष्टि, ५१ लोकाचार शीखवानी कला, ५२ लोकोनी मरजी राखवानी कला, ५३ फल भरवानी कला, ५४ खड्ग धारवानी कला, ५५ छुरीबंधन, ५६ मुद्राकरण, ५७ लोहघटन, ५८ दंतसमारण, ५९ काष्ठच्छेदन, ६० चित्रकरण, ६१ बाहुयुद्ध, ६२ दृष्टियुद्ध, ६३ मुष्टियुद्ध, ६४ दंडयुद्ध, ६५ खड्गयुद्ध, ६६ वाग्युद्ध, ६७ गरुडमर्दन, ६८ सर्पदमन, ६९ भूतदमन, ७० योगध्यान, ७१ वर्षज्ञान, अने ७२ नामावली.

स्त्रीयोनी चोसठ कला बतावी तेनां नाम—१ नाचवानी कला, २ आदर देवानी कला, ३ चित्रकला, ४ वादकला, ५ मंत्रकला, ६ तंत्रकला, ७ ज्ञानकला, ८ विज्ञानकला, ९ दंडकला, १० जलस्तंभनकला, ११ गीत गावानी कला. १२ तालमाननी कला, १३ मेघवृष्टीनी कला, १४ फलाकृष्टीनी कला, १५ वाग्गोपन, १६ आकारगोपन, १७ धर्मविचार, १८ शकुन जोवुं, १९ क्रियाकल्प, २० संस्कृतभाषा बोलवी, २१ प्रसादनीति, २२ धर्मनीति, २३ वर्णिकावृष्टी, २४ सुवर्णसिद्धि, २५ सुगंधितेल करवुं, २६ लीलासहित चालवुं, २७ हाथी घोडानी परीक्षा करवी, २८ पुरुष—स्त्रीलक्षण जाणवुं, २९ सुवर्ण—रत्नभेदनुं ज्ञान, ३० अढार जातिंनी लीपी, ३१ तात्कालिक बुद्धि, ३२ वास्तुसिद्धि, ३३ वैद्यक्रिया, ३४ कामक्रिया, ३५ घटभ्रमण, ३६ सारिपरिश्रम, ३७ अंजनयोग, ३८ चूर्णयोग, ३९ हस्तलाघव, ४० वचनचतु-

रता, ४१ भोजनविधि, ४२ वाणिज्यविधि, ४३ मुखमंजन, ४४ शालिखंडन, ४५ कथा कथन, ४६ फूलगुथन, ४७ वक्र बोलवु, ४८ काव्यशक्ति, ४९ वेष बनाववो, ५० सर्व प्रकारनी भाषाओ बोलवी, ५१ अभिधानज्ञान, ५२ घरेणा पहेरवा, ५३ राजानी भक्ति करवी, ५४ घरनो आचार शीखवो, ५५ काव्यकरण, ५६ परने हराववो, ५७ धान्य राधवु, ५८ केश बांधवा, गूथवा, ५९ वीणा वजाववी, ६० वितंडावाद, ६१ अंकविचार, ६२ लोकव्यवहार, ६३ अत्याक्षरिका, अने ६४ प्रश्न प्रहेलिका

प्रभुना सो पुत्रोना नाम—

१ भरत, २ बाहुबलि, ३ शख, ४ विश्वकर्मा, ५ विमल, ६ सुलक्षण, ७ अमल, ८ चित्रांग, ९ ख्यातकीर्ति, १० वरदत्त, ११ सागर, १२ यशोधर, १३ अमर, १४ रथवर, १५ कामदेव, १६ ध्रुव, १७ वत्स, १८ नन्द, १९ सूर, २० सुनन्द, २१ कुरु, २२ अग, २३ वग, २४ कोशल, २५ वीर, २६ कलिंग, २७ मागध, २८ विदेह, २९ सगम, ३० दशार्ण, ३१ गंभीर, ३२ वसुवर्मा, ३३ सुवर्मा, ३४ राष्ट्र, ३५ सुराष्ट्र, ३६ बुद्धिकर, ३७ विविधकर, ३८ सुयशा, ३९ यश कीर्त्ति, ४० यशस्कर, ४१ कीर्त्तिकर, ४२ सूरण, ४३ ब्रह्मसेन, ४४ विक्रान्त, ४५ नरोत्तम, ४६ पुरुषोत्तम, ४७ चन्द्रसेन, ४८ महासेन, ४९ नभसेन, ५० भानु, ५१ सुकान्त, ५२ पुष्पयुत, ५३ श्रीधर, ५४ दुर्धर्ष, ५५ सुसुमार, ५६ दुर्जय, ५७ अजेयमान, ५८ सुधर्मा, ५९ धर्मसेन, ६० आनन्दन, ६१ आनन्द, ६२ नन्द, ६३ अपराजित, ६४ विश्वसेन, ६५ हरिषेण, ६६ जय, ६७ विजय, ६८ विजयन्त, ६९ प्रभाकर, ७० अरिदमन, ७१ मान, ७२ महाबाहु, ७३ दीर्घबाहु, ७४ मेघ, ७५ सुघोष, ७६ विश्व, ७७ वराह, ७८ सुसेन, ७९ सेनापति, ८० कपिल, ८१ शैलविचारी, ८२ अरिंजय, ८३ कुंजरबल, ८४ जयदेव, ८५ नागद,

८६ काश्यप, ८७ बल, ८८ सुवीर, ८९ शुभमति, ९० सुमति, ९१ पद्मनाभ, ९२ सिंह, ९३ सुजाति, ९४ संजय, ९५ सुनाभ, ९६ नरदेव, ९७ चित्तहर, ९८ सुस्वर, ९९ दृढरथ, अने १०० प्रभंजन[1]. आ सौ पुत्रोमांथी भरतने अयोध्यानगरीनो, बाहुबलिने तक्षशिला (गिजनी) नो अने बीजा अठ्याणुं पुत्रोने अंग, वंग, कलिंग, गौड, चौड, कर्णाट, लाट, सौराष्ट्र आदि देशोनुं राज्य भगवाने आप्युं.

प्रभुनी दीक्षा अने तापसोनी प्रवृत्ति—

प्रभुए एवी रीते लखवानी कला, गणवानी कला, पुरुष-स्त्रियोनी कला, कारीगिरोना सौ भेद, कृषीवलादि त्रण कर्म, लोकोना हितना माटे बतावीने अने जुदा जुदा पोताना सौ पुत्रोने राज्य आपीने लोकांतिक देवोनी प्रार्थनाने मंजूर करी अने वार्षिकदान आपी तथा गोत्रियोने धन वांटीने उन्हालानो पहेलो, पहेलो पखवाडियुं-चैत्र वदि आठमना दिवसे पाछला पहोरे सुदर्शना नामा पालखीमां बेसीने, देव मनुष्य सहित यावत् विनीता राजधानीमांथी थइने ज्यां सिद्धार्थवन उद्यान छे त्यां अशोकवृक्षनी नीचे पालखी राखीने, तेथी उतरीने, सर्वालङ्कार पोताना हाथथी उतारी, चार मुष्टी[2] लोच करीने, चोविहार

---

१ कल्पद्रुमकलिका आदि टीकाकारोए सौ पुत्रोना नामो बीजी रीते पण लखेल छे ते तेज टीकाओथी जाणवा.

२ सर्व तीर्थंकर पांच मुष्टि लोच करे छे परन्तु श्रीऋषभदेव प्रभुए चार मुष्टी लोच कर्यो. तेनुं कारण देखाडे छे-भगवाने ज्यारे चार मुष्टी लोच करी लीधो पांचमी मुष्ठी उखेडवी बाकी रही. एटलामां पवनथी केसनी शिखा विखरीने पोहोली थइ तेथी घणीज शोभवा लागी ते जोइने इन्द्रमहाराजे प्रभुने विनंति करी के महाराज केसनी शिखा घणीज सुन्दर देखाय छे, माटे एमज रहे तो सारुं. प्रभुए पण ते शिखा एमज राखी, जेम पद्मद्रहमांथी सिंधुनदी निकलती वखते सवा छ योजननी पोहोली छे अने पछी अनुक्रमे वधती वधती समुद्रमां मलतां साडी बासठ योजननी पोहोलपणे थयेली छे. तेम ए चोटली पण मस्तकना थडमांथी नीकली ते आगल

छट्ठ छतां उत्तराषाढा नक्षत्रना साथे चन्द्रयोग आवे थके उग्रकुल, भोगकुल, राजन्यकुल अने क्षत्रियकुलना कच्छ, महाकच्छ प्रमुख चार हजार पुरुषोनी साथे इन्द्रदत्त देवदुष्य वस्त्र लइने, गृहस्थपणानो त्याग करीने साधुपणु अगीकार कर्यु

हवे भगवान घोर अभिग्रह धारी थया थका, ग्रामानुग्राम विहार करता, आकरा परिषह सहन करता थका विचरे छे भगवानने यद्यपि छट्ठ तपनु पारणु करवु हतु तथापि ते वखतमा साधुने दान देवानो (भिक्षा आपवानो) विधि कोइ जाणतो न हतो, साधु ते शु ? अने भिक्षा ते वली शु ? एवो कोइ समजे नहीं अने ते वखते कोइ भिक्षानो मागनार पण हतो नहीं, तेथी प्रभु ज्या जाय त्या कोइ अन्न आपे नहीं चार हजार साधुओ भूख–तृषाथी पीडाता थका प्रभुने आहारनो उपाय पूछवा लाग्या पण प्रभु कांइ बोल्या नहीं, मौनपणे रह्या त्यारे कच्छ अने महाकच्छने पूछ्यु, तेणे पण कह्यु–के अमे पण काइ जाणता नथी त्यारे सर्वे विचार करवा लाग्या के 'आपणे प्रथमथी ज भगवानने काइ पूछ्यु नहीं अने हवे पाछा घेर जइने बेसवुं पण योग्य नथी, तेम आहार कर्या विना पण चाली शके नहीं तो हवे आपणने ए वनवासमा रहेवु ज ठीक छे एम चिंतवीने गगानदीना दक्षिण तटना वनमा जटिल तापस थइने रह्या अने वृक्षमाथी नीचे तूटी पडेला पत्र, फल, फूल आदिकनो आहार करवा लाग्या अने वृक्षनी छालना वस्त्र पहेरीने श्रीऋषभदेवजीनु ध्यान-स्तवना करता थका विचरवा लाग्या

ऋषभदेव स्वामिए पुत्र तरीके मानेला नमि अने विनमि—

प्रभुए ज्यारे दीक्षा लीधी हती त्यारे सर्व पुत्रोने जुदा जुदा

आगल पोहोलाइमां विस्तारने पामती दीठामां आवी तेथी पद्मद्रह सिंधुनदीना प्रवाहनी परे शोभाकारी देखावा लागी तेने लोक भाषामां 'अछा चोटली' पण कहे छे.

देशोना राज्य व्हेंची आप्या हता. ते वखतमां प्रभुए पुत्र तरीके पालेलां कच्छ अने महाकच्छना पुत्र एक नमि अने बीजो विनमी ए देशांतरे जता रह्या हता, तेओने भगवान राज्य आपवा भूली गया. ते ज्यारे पाछा आव्या त्यारे भरतने बोल्या के अमने राज्य केम न आप्यो ?, भरते कह्युं के—हुं तमने थोडोक भाग आपुं. तेणे कह्युं के त्हारा पासेथी न लहीए. भरते कह्युं, भगवान जाणे ने तमे जाणो. वेहु भाइ भरतनी अवगणना करीने भगवाननी पासे आवी तेमना चरणकमलनी सेवा करीने कहेवा लाग्या के—प्रभो ! तमे सर्वने राज्य दीधुं, माटे अमोने पण राज्य आपो. भगवाने तो संसारत्याग करेल छे माटे मौनपणे रह्या, कांइ उत्तर दीधुं नहीं. त्यारे ते बन्ने जण राज्यना अर्थे भगवाननी पाछल रह्या. ज्यां भगवान ऊभा रहे त्यां भूमि साफ करे, कांटो, कांकरो काहाडी न्हांखे, पाणी छटकावे, फूल विछावे, डांस, मशकादिक उडाडे, त्रिकाल खड्ग धरे; एम प्रभुनी सेवा भक्ति करता थका विचरे छे. एकदा धरणेन्द्र भगवानने वांदवा आव्यो. तेणे नमि, विनमिने कह्युं के—भगवान तो त्यागी छे माटे तमे भरतनी पासे जाओ, ते तमोने राज्य आपशे. त्यारे ते बोल्या—भगवान विना अमे बीजा कोइ पासेथी राज्य मांगीए नहीं. एवुं सांभली धरणेन्द्र तेमनी भक्तिथी संतुष्ट थइने कहेवा लाग्यो के तमे एकमना थइने प्रभुनी सेवा करो छो तो म्होटाना चरणनी सेवा क्यारे पण निष्फल थाय नहीं. तेथी हुं तमारा ऊपर प्रसन्न थयो छुं. माटे जे मांगो ते हुं आपुं. तो पण तेणे कांइ मांग्युं नहीं त्यारे धरणेन्द्रे भगवानना मुखमां अवतरी (प्रवेश करी) ने अडतालीश हजार विद्याओ गुणतांज सिद्ध थइ जाय तेवी शीखावी अने गौरी, गांधारी, रोहिणी तथा प्रज्ञप्ति प्रमुख शोल देवीयो ते विद्याओनी अधिष्ठायिकाओ छे ते आपी अने वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण उत्तर श्रेणीनुं राज्य आप्युं. पछी

विद्याओ साधी बन्ने भाइओ विद्याधरनी ऋद्धि पाम्या त्यारे पोतानो सर्व स्वजनवर्ग लइने रथनूपुर चक्रवालादि पचास नगर उत्तर श्रेणिना तथा गगनवल्लभ प्रमुख साठ नगर दक्षिण श्रेणीना वसावीने विद्याना बलथी सर्व परिवार सहित त्यां राज्य करवा लाग्या पछी ते बन्नेने धरणेन्द्रे कह्यु के-विद्याधरो ! तमे साभलो " एक तो केवली भगवाननी, बीजी जिनप्रतिमानी, त्रीजी चरम शरीरीनी अने चोथी प्रतिमाधर साधुनी ए चारनी जो तमे आशातना करशो अने ए चारने रस्तामा मूकी तेना दर्शन सेवा कर्या विना एम ज चाल्या जशो तथा परस्त्रीनी साथे जोरावरीथी भोग भोगवशो तो तमारी विद्याओ निष्फल थइ जशे " एवी रीते शिखामण आपीने अने ते शिखामण रत्नभित्ति उपर लखीने धरणेन्द्र पोताने स्थानके गयो पछी भगवाननी सेवानु फल भरतने कहीने सोलजाति विद्याधरोनी थापी दक्षिण श्रेणीनु राज्य नमि करवा लाग्यो अने उत्तर श्रेणीनु राज्य विनमि करवा लाग्यो.

अन्तरायकर्मना उदयथी प्रभुए करेल वार्षिकतप—

भगवान पूर्वोक्त अतराय कर्मना उदयथी एक वर्ष पर्यंत आहार विना रह्या, कयाय शुद्ध भिक्षा न पाम्या ज्यां गोचरी जाय त्या म्होटो माणस जोइने कोइ वस्त्र आपे, कोइ आभरण आपे, कोइ मणी, माणिक अने मुक्ताफलना थाल भरी आपे, कोइक तो घणी स्वरूपवान् एवी कन्याने शोल शणगारोथी शणगारीने आपवा तैयार थाय, कोइक हाथी, घोडा, रथ प्रमुख वाहन आपवा आवे, कोइ धनभृत सुवर्णस्थाल प्रमुख उचित वस्तु आपवा आवे, एम घणा घणा पदार्थ लावीने लोको स्वामिनी आगल मूके ते सर्व अणखपता जाणी स्वामी लीए नहीं, पण अन्न कोइ आपवा आवे नहीं ए प्रमाणे एक

वर्ष पर्यंत स्वामी निराहारी रह्या. पण आहार विना लगार मात्र डग्या नहीं, दीनपणुं आव्युं नहीं. एवी रीते भगवान विचरता थका एकदा गजपुर नगरे पधार्या.

प्रभुने वार्षिकतपनुं पारणुं अने कर-संवाद—

गजपुरनगरमां बाहुबलीनो पुत्र सोमप्रभ नामे राजा राज्य करे छे, तेनो पुत्र श्रेयांस—कुमर युवराज छे. तेणे ते रात्रीमां स्वप्न दीठुं के 'मेरुपर्वत मलिन थइ गयो हतो. तेने म्हें अमृतना घडाथी धोइने उज्ज्वल (शोभायमान) कीधो' तथा श्रेयांसना पिता सोमप्रभ राजाने एवुं स्वप्न आव्युं के 'कोइ एक पुरुषने शत्रुए घेरी लीधो ते श्रेयांस कुमरना सहाय थकी जय पामी छूटो थयो' तथा ते नगरना सुबुद्धि शेठने स्वप्न आव्युं के—'सूर्यना सहस्र किरणो पडता हता. तेने श्रेयांस कुमरे पाछा सूर्यमां थाप्या.' ए त्रण जण प्रभाते राजसभामां भेगा थया. सौ पोत पोताने आवेला स्वप्ननी वात कही, त्यारे सर्वना मनमां एवो विचार आव्यो के आ स्वप्नाओनुं सर्व फल श्रेयांसकुमरने मलशे अने श्रेयांसने कोइ म्होटो लाभ थशे, एम कही सहु पोत पोताना घेर गया. पछी मध्यान्ह समए गोचरी करवाने माटे श्रीऋषभदेवजी घर घरना विषे फरवा लाग्या. तेने लोको पूर्वोक्त रीते वस्त्राभरणादिक वस्तु आपवा लाग्या, पण प्रभु लेता नथी. तेथी लोकोमां कोलाहल थइ रह्यो के भगवान तो कांइ पण लेता नथी. एटलामां श्रेयांस कुमर गोखमां बेठा हता, तेणे श्रीऋषभदेवजीने दीठा. पछी ईहापो करता जातिस्मरण ज्ञान पाम्या, तेणे करी पूर्वलो भव दीठो. त्यारे जाण्युं के अहो ! हुं तो ए प्रभुनो पूर्वभवना विषे सारथी हतो. त्यां म्हें पण दीक्षा लीधी हती. अने वज्रसेन तीर्थंकरे एवुं कह्युं हतुं के ए वज्रनाभ राजर्षि भरतक्षेत्रेमां पहेला तीर्थंकर थाशे. तेज आ प्रभु तीर्थंकर, देवोना देव गोचरी माटे भमता देखाय छे एम जाणी गोखथी

नीचे उतरीने कह्यु के–हे प्रभु! लोको साधुने दान देवानी रीतीमां वाकेव नथी एम कही पाच अभिगमन साचवी, त्रण प्रदक्षिणा देइ " इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि " एम खमासमण आपी पछी ' इच्छाकारि सुहराइ, सुहदेवासि सुख तप शरीर निरावाध, सुख सजम जात्रा निर्वहोछोजी ' हे भगवन्! भातपाणीनो लाभ देवा पधारो, म्हारुं गृहागण पावन करो, म्हारे घरे पधारो, अने शुद्ध बेंतालीश दोप रहित आहार व्होरीने म्हारो निस्तार करो ' एम श्रेयास कुमर पहेला श्रावक प्रगट थया । ते समये शेलडीना रसे भरेला एकसो आठ घडा श्रेयास कुमरने कोइक भेट आपी गयेलो हतो ते शुद्धमान घडा लइने श्रेयास कुमरे भगवतने भिक्षा लेवानी विनती करी

कवी घटना करे छे के दान लेती वखते प्रभुना वेहु हाथनो मांहो माहे विवाद थयो ते आवी रीते के–प्रथम जमणो हाथ गद्गद्स्वरथी श्रेयास कुमर प्रत्ये बोल्यो के अहो श्रेयांस! तु सांभल, हु श्रीऋपभदेवनो आ जन्मनो सेवक छु, म्हें श्रीऋपभदेवजीना प्रसादथी घणा म्होटा म्होटा उत्तम कार्यो कर्यां छे तेणे करी हु घणो प्रतिष्ठा पामेलो छु ते म्हारा कर्त्तव्यो तु निरपेक्ष पणे साभल। प्रथम तो म्हें इद्रादिक देवोने देखता थका जमणे अगूठे करीने प्रभुने अमृतपान कराव्यु एटले तीर्थंकरनी एवी मर्यादा छे के पोतानी मातानु तथा अन्य स्त्रीयोनु स्तनपान न करे पण ज्यारे भूख लागे त्यारे पोताना जमणा हाथनो अगूठो चूसवा माडे के तरत ज तेमा अमृतमयी पुद्गल प्रणमी जाय तेथी क्षुधावेदनीय उपशमी जाय १, वली वशस्थापनाना अवसरे म्हे इन्द्रना हाथथी सेलडीनो साठो ग्रहण करीने स्वामीनी वाछा पूरण करी माटे वशस्थापनामा पण हु आगेवान थयो २, वली म्हे भरतराजाने तिलक करीने विनीता नगरीनु

राज्य आपी छ खंडनो भोक्ता कर्यो. एटले राज्यस्थापनमां पण जमणे हाथेज मंगालिक कामे टील्लुं कराय छे ३, वली भरतनी परेज म्हे बाहु-वलीने तक्षशिला नगरीनुं राज्य आप्युं ४, तथा प्रभुना शेष अठ्याणुं पुत्रोने पण एज रीते म्हे राज्यो आप्यां ५, तथा सुनंदा अने सुमंगला ए बे कन्याओने पण हाथ मेलाववाना अवसरे जमणे हाथे झालीने स्वामीने परणावी दीधी ६, वली म्हे एक वर्ष पर्यंत स्वइच्छित वरसी दान आपीने त्रण जगतना मनोवांछित पूरण कर्या. केमके दान पण जमणा हाथथी ज देवाय छे ७, वली हुं छत्र, चामर, चक्र, गदा, खड्ग, धनुष्य, अंकुश, वज्र अने शंखादिक शुभ लक्षणे करी बिराजमान थको शोभी रह्यो छुं. एवां सर्व लक्षणो हुं (जमणो हाथ) धारण करुं छुं. अने लक्षण जोवावाला लोक पण म्हारीज रेखाओ आदिक सर्व लक्षण जुए छे ८, वली तीर्थयात्रा, पुत्रप्राप्ति, सौभाग्य, यशः कीर्त्तिनी सूचक रेखाओनो धारक पण हुंज छुं. एटले ए सर्व भावोने सूचववा वाली रेखाओ जमणा हाथमां होय तो ज तद्रूप फलनी प्राप्ति थाय छे ९, तथा हुं चोखा देखवामां सोधवामां चतुर व्यापारवान छुं. एटले चोखा गोधूमादिकमांथी कांकरा प्रमुख शोधी कहाडवा ते जमणा हाथथीज बनी शके छे १०, वली भोजनने विषे, देवपूजाने विषे, परमे-श्वरना स्मरणने विषे, प्रीति बांधवाने विषे, बोल तथा कबुलात आप-वाने विषे, दानने विषे, इत्यादिक अनेक शुभ कार्योमां म्हारो ज अधिकार छे ११, माटे हुं सर्वनी ऊपर छुं अने म्होटा म्होटा कामोमां म्हारो अधिकार छे, तो कहो आ स्वल्प सेलडीना तुच्छ रसनी खातर नीचो केम नमुं. अने त्र्याशी लाख पूर्व वर्ष लगे भगवाननी साथे राज्य साम्राज्य पाल्युं. तो हवे हुं हमणां भगवंतनी आगल थइने केवी रीते याचना करावुं. तेज कारणथी म्हे खावुं, पीवुं, पहेरवुं, ओढवुं, नाटक देखवुं, विगेरे छोडी क्रीडा विना मौन धरावीने वन गहन अटवी-

ओमा प्रभुने भमाव्या तो हवे आ सेलडीना रसने हु ग्रहण करीश नहीं, माटे तमे डाबा हाथने कहो तो ते मागी लेशे

जमणा हाथना वचन सांभलीने डावो हाथ बोल्यो के–रे निर्लज्ज ! तु वृथा पोतानी मेले पोताना आत्मानी म्होटाइ करीने शु प्रशंसा करे छे पोताना मुखथी जे पोतानी म्होटाइ करे तेमा कोइ गुण होय तो पण ते लघुताने पामी जाय अने परनी प्रशसा करवाथी जो निर्गुणी होय तो पण गुणवान् थाय गुणवत होय तेना गुण तो पोतानी मेले ज प्रगट थाय छे जेम कपूरनो सुगध, रत्ननु तेज अने मणिनु निर्विषपणु इत्यादिक जे गुणो छे ते पोतानी मेले ज प्रगट देखाइ आवे छे पण ते कोइ कोइनी आगल कहेवा जता नथी तथा एकठा ज रहेनारा बे जण होय तेमाथी एक जण उठीने पोताना गुण बीजानी आगल वर्णवी देखाडे ते युक्त नथी जेम माताना मुख आगल मामाना गुणनु वर्णन करी देखाडवु युक्त कहेवाय नहीं तेनी पेठे ए पण जाणी लेवु माटे अहो ! श्रीश्रेयांस श्रीऋषभ देवना प्रपौत्र ! म्हारु पण कर्तव्य जे छे ते तु साभल परमेश्वरे जे बे कन्याने परणवानु स्वीकार्युं, तेमने सूवा बेसवानु ठेकाणु तो म्हेज आप्यु कारण के स्त्रीयो जे छे ते पतिना डाबा पासा तरफ सूवे–बेसे छे एटले जमणे हाथे तो मात्र स्त्रीनो हाथ झालीने उठाडी मूकी, पण तेमने बेसवा माटे स्थानक तो म्हेज आप्यु १, वली हु ढाल आगल राखीने सग्रामना विषे स्वामीनु रक्षण करु छु अने जमणो हाथ तो खड्ग उपाडीने पाछो नासी जाय छे २, वली हु सग्राममा धनुष्यने आगल धारण करीने ऊभो रहु छु अने आ जमणो हाथ तो तीर लइने कानना विषे चुगलनी परे पेसी जाय छे ३, वली आक गणवानो व्यापार पण म्हारी पासेज थाय छे एटले आकनी वामगति होय छे ४, वली ग्रामातरे प्रयाण करता गधेडो पण जो म्हारी दिशा तरफ आवीने

वोले तो सिद्धिदायक छे ५, तेमज देवचकली पण डावे पासे आवी वोले त्यारे शुभ फलनी सूचवनारी थाय छे ६, वली प्रथम प्रयाणना विषे प्रथम रात्रीना पहोरमां शृगालो पण म्हारी दिशाए रह्या वोले तो सिद्धिना करवावाला थाय छे ७, वली जे प्राणी रोगादिकथी पीडातो होय ते पण घणुं करीने डावे पासे सूवे तो तेने समाधि कारक थाय छे ८, वली म्हारी तरफनी चंद्रनाडी वहेतां जो शुभ कामनो प्रारंभ कर्यो होय तो ते सिद्धिदायक थाय छे ९, वली सांभल के आ पापी जमणा हाथे प्रभुने परणवाना अवसरे कन्याओनो हाथ ग्रहण कर्यो, त्यारे पण मने वोलाव्यो नहीं अने कंसार पण एणे एकले ज खाधो. एम पण न जाण्युं के आ म्हारो भाइ भूल्यो छे माटे थोडोक एने पण वोलावीने खवाडुं. एवो विचार कर्या विना म्हाराथी कपट करीने ए एक लोज खाइ गयो, तेथी ए निःकेवल पेटभरो देखाय छे. फोकट पोताना मुखथी पोताना गुणनुं वर्णन करे छे. वीजी पण एनी निष्ठुरता कही देखाडुं छुं के—जे वखत मिष्टान्नपान भोजन करे त्यारे भोजन तो पोते करे अने मक्षिकाओ म्हारा पासे उडवावे तो पण हुं ते वखत म्हारी दाक्षिण्यताथीं म्हारो म्होटो भाइ जाणीने एने कांइ कहेतो नथी. ए जमणा हाथमां चतुराइ किं वा वीजो कोइ गुण नथी; कारण के जे वखते मस्तके पाघडी वींटे छे, ते वखते एतो जेम तेम वींटी नाखे छे. पण पाछलथी वरोवर आंटा प्रमुख सुधारवा करवानुं काम, वरावर रचना करवी, सुंदर आकार करवो ते तो सर्व हुं ज करुं छुं. आ जमणो हाथ तो द्यूत रमवावालो छे. इत्यादिक तमोने केटलुं कहुं. अमारा वे जणना सारा माठा लक्षण तथा गुण अने अवगुणने सर्व जगत् जाणे छे अथवा आ श्रीऋषभदेव स्वामी पोते ज त्रण लोकना नाथ छे माटे सर्व जाणे छे. एवी रीते अमो वेहु जणने विवाद करता थका एक वर्ष व्यतीत थइ गयुं, तेथी भगवान्ने वर्षीतप

करवो पड्यो एम कुटुंबनो विरोध क्यारे पण कल्याणकारी न थाय माटे ए घणोज हठी छे तथापि हु त्हारी दाक्षिण्यताथी एने समजावु छुं केम के कोइ प्रकारे ज्यारे कुटुंबमा विरोध उत्पन्न थाय छे त्यारे सवधीने सवधीओ ज पोत पोतामा प्रतिबोध आपी समजावे छे. एम कही डावो हाथ, जमणा हाथने कहेवा लाग्यो के–भाई ! आ अवसरे आपणने विवाद करवो घटतो नथी हमणा स्वामीने केवलज्ञाननी उत्पत्तिना विषे, तीर्थ प्रवर्तनना विषे अने सघस्थापनाने विषे आपणु ज काम छे, एमा बीजा कोइनु काम नथी म्होटाओने पोतानु काम ते पारके अर्थेज थाय छे जेम माताए पीधेलु दूध ते बालकना अर्थेज थाय छे, ते कारणे आ वखते आपणे विरोध करवो योग्य नथी एवी रीते डावो हाथ बोली रह्यो त्यारे श्रेयास कुमर वेहु हाथने समजाववा लाग्यो. अरे ! तमे बन्ने जण पोत पोताना काममा कल्याणकारी छो परतु हमणा तमे म्हारी प्रार्थना सफल करो तमे वेहु एकठा थाओ के जे थकी भगवानने वार मासना तपनु पारणुं थाय अने म्हारे पण उत्तम दान आपवाथी ससार समुद्र थकी तरवु थाय माटे तमे भला थइ, म्हारा ऊपर कृपा करीने, वेहु जण झगडो मटावीने भेगा थइ जाओ एवी श्रेयासनी विनति सांभलीने बन्ने हाथ पसलीना आकारे एकठा मली गया त्यारे श्रेयांस कुमरे शुद्ध भावथी सेलडीनो रस व्होरावी दीधो तेनी शिखा ऊची चढी तथापि एक विंदु मात्र पण नीचे पड्यो नहीं "जो हजारो घडा हाथमा ऊधा वाली आपो अथवा सर्व समुद्रोना पाणी न्हाखो तो पण एक टीपु हाथथी बाहेर पडी जाय नहीं मात्र शिखा ऊची चढती जाय एवी लब्धि ज्यारे प्राप्त थयेली होय त्यारे करपात्री थाय. छे" ए भगवाननी लब्धिनो प्रभाव जाणवो पछी स्वामीए त्यांज

पारणुं कर्युं. ते वखते पांच दिव्य प्रगट थयां—एकतो गंधोदक फूलनी वृष्टि थइ, बीजुं वसुधारानी वृष्टि थइ, त्रीजुं वस्त्रनी वृष्टि थइ, चोथुं आकाशे देवदुंदुभी वागी, पांचमुं "अहोदानमहोदानम्" एवी उद्घोषणा देवोए करी. आ पात्रदानथी श्रेयांस कुमरे मोक्षफल उपार्जन कर्युं. ज्यां भगवाने पारणुं कर्युं त्यां रत्नमय पीठ कराव्युं. ए भगवानना पारणानो दिवस वैशाख शुदि त्रीजनो हतो, तेथी अक्षय त्रीज नामे पर्व जगतमां मान्य थयुं. लोकोए प्रशंसा करी के श्रीऋषभदेव सरखो पात्र अने सेलडीना रस सरखो शुद्ध आहार तथा श्रेयांस कुमरना जेवो भाव; ए कोइ म्होटा पुण्यना योगथीज थाय छे. श्रीआदिनाथनुं पारणुं सेलडीना रसनुं थयुं अने बीजा तीर्थंकरोनुं प्रथम पारणुं खीर भोजनथी थयुं.

प्रभुना साथे श्रेयांसकुमरनो आठ भवनो संबन्ध—

श्रेयांसकुमरने लोकोए पूछ्यो के—अमे तो भगवान आहार लेशे एवुं जाणता न्होता. अने तमे शी रीते जाण्युं ? श्रेयांस बोल्यो के हुं भगवानना जीवनी साथे आठ भव पर्यंत रहेलो छुं. तेथी दान देवानो विधि सर्व जाणुं छुं. लोकोए कह्युं के ते आठ भव केवी रीते छे ? श्रेयांसे कह्युं के—पहेला भवमां भगवाननो जीव ललितांग देव हतो, त्यां हुं एमनी 'स्वयंप्रभा' नामे देवी हती, बीजा भवमां स्वामी वज्रंधर राजा थया, हुं तेमनी 'श्रीमती' नामे राणी थइ, त्रीजा भवमां अमे बेहु युगलीया थया, चोथा भवमां बेहु जण सौधर्म देवलोकमां जइ मित्रपणे देवता थया, पांचमा भवमां प्रभु वैद्यपुत्र जीवानंद नामे थया अने हुं एमनो मित्र थयो, छट्ठा भवमां अच्युत देवलोके जइ बेहु जण देवतामां मित्रपणे उत्पन्न थया. सातमा

भवमा प्रभु तो वज्रनाभ नामे चक्रवर्ती थया अने हु एमनो सारथी थयो, त्यां तीर्थंकरनी पासेथी अमे दीक्षा लीधी, आठमा भवमा सर्वार्थसिद्ध विमाने देवतापणे उत्पन्न थया, त्याथी चवी ए भगवान थया अने हु एमनो पोतरो श्रेयास थयो छु ते वात एटला दिवस पर्यंत हुं काइ पण जाणतो न्होतो परतु आजे म्हें भगवानने दीठा तेथी मुजने जातिस्मरण ज्ञान उपन्यु, म्हें सातमा भवमां दीक्षा पाली हती, तेनी सर्व रीत मने जाणवामा आवी अने म्हें साधुनी मर्यादाथी आहार व्होराव्यो, ए म्होटा पुरुष छे, एमने काइ धनादिकनी गरज नथी, ए वात साभलीने सर्व लोकोए साधुने आहार आपवानो विधि जाणी लीधो एम आ अवसर्पिणी कालमा श्रेयासकुमरथी प्रथम सुपात्रदान प्रवर्त्त्युं

प्रभुए आहारान्तरायकर्म केवी रीते बाध्यो—

भगवानने एक वर्ष पर्यंत निराहार रहेवु पड्यु अने आहार मल्यो नहीं ए कया अतराय कर्मना उदयथी थयु ? ते देखाडे छे–भगवान पूर्वे कोइक भवमां शेठना जीव हता ते शेठ एक दिवस करसणीयोनी पासे उघराणी करवा गया, ते करसणीए खलो कर्यो हतो तेनु धान कहाढवा सारु ते करसणी पोताना बलदोने धानमा फेरवता हता ते बलद फरता फरता जे वखते नीचे नमीने धानमा म्होढु घाले त्यारे करसणी बलदोना म्होढानी ऊपर चाबका मारे, ते जोइ शेठने दया आवी तेथी शेठे करसणियोने कह्यु के–अरे ! एने तमो फोगट शा वास्ते मारोछो ? एमना म्होढा ऊपर छींकु बाधी मूक, तो धान खाशे नहीं अने तमोने मारवानो परिश्रम पण पडशे नहीं पछी करसणीओए बलदोना मुख ऊपर छींका बाध्या ते छींका चार पहोर सुधी बाध्या रह्या ए अतराय कर्म भगवाने बाध्यो हतो, ते आ

भवमां उदय आव्यो. माटे कोइने पण अंतराय पाडवो नहीं.

धर्मचक्रपीठनी स्थापना अने वांग मूकवानी प्रवृत्ति—

भगवान विहार करता थका बहुलीदेशमां तक्षशिला नगरीना उद्याने संध्या समयमां काउसग्गे रह्या. त्यांना वनपालके जइने बाहुबलिराजाने वधामणी दीधी. त्यारे वनपालकने दान आपी संतोषीने बाहुबलीए मनमां विचार्युं के 'हमणां सांज पडी अंधारु थयुं छे, तेथी थोडा वखतमां सर्व परिवार भेगो थइ शके नहीं. केमके त्रण लाख तो म्हारा पुत्र छे. वली पौत्रादिक अनेक छे. ते सर्व एकठा थइ शके नहीं माटे प्रभाते महामहोत्सव सहित प्रभुने वांदवा जइशुं' एम चिंतवी बेसी रह्यो, पछी प्रभाते नगरी शणगारी, घणा आडंबर सहित प्रभुने वांदवा गयो. एटलामां भगवान तो अप्रतिबंध विहारी छे माटे बाहुबली आव्यानी अगाउ विहार करी अन्यत्र चाल्या गया, तेथी बाहुबलीए भगवानने दीठा नहीं, तेथी घणो खेद कर्यो अने कानमां आंगलीओ नाखीने उच्चस्वरे रुदन कर्युं. तथा प्रभुना भूमिपर मंडेल बे पग पासे ऊभो रही बोल्यो 'हे बाबा आदम !, हे बाबा आदम ! !' एवी वांग मूकी तेथी वांग मूकवानो रिवाज चालु थयो, हमणां पण

---

१ कोइक आचार्य कहे छे के-भगवाने ज्यारे महाविदेह क्षेत्रमां छ मित्रनी साथे चारित्र लीधुं हतुं. ते छएमां श्रीऋषभनो जीव म्होटो हतो. ते सपरिवार विहार करता करता कोइक कणबीना क्षेत्रनी वाडे गया, तेवामां ते कणबी पण धान कहाडवा माटे बलदोने फेरवतो हतो. हालरुं खेडतां वचमां वचमां ते बलदो नीचा थइ थइने धान खाए त्यारे ते कणबी तेने परोणे करी मार आपे, ते देखी गुरु चिंतववा लाग्या के ए कणबी बिचारा बलदोने परोणानो मार आपे छे, ते करतां जो ए बलदोना मुखे शींकु बांधी मूके तो कांइ पण धान खाइ शके नहीं. अने हींव्याज करे. एवी रीते मुखथी तो बोल्या नहीं, पण मनमां चिंतव्युं हतुं. ते कर्मना प्रभावथी प्रभु एक वर्ष सुधी आहार पाणी पाम्या नहीं.

मुसल्मान अने बोराओ बांग मूके छे पछी भगवाननी भक्ति करवाने अर्थे ज्यां प्रभु काउस्सग्गमा ऊभा हता ते स्थानके 'धर्मचक्र' नामे आठ योजनना विस्तारवालो एक योजन ऊंचो, हजार खूणानो, अने हजार पगथीआवालो रत्नमय पीठ बाध्यो–थूभ कराव्यो तेनी ऊपर भगवानना पगला थाप्या. अने जाण्यु के एज भगवान छे एवी बुद्धिथी नमस्कार कर्यो, बीजा लोकोए पण तेवोज महिमा कर्यो अने ते धमचक्र तीर्थ तरीके प्रसिद्ध थयो त्यारथी बाहुबलीकृत पीठनो महिमा चाल्यो.

भरतप्रति मोरादेवी माताना ओलभा—

जे दिवसथी भगवान दीक्षा लइने विहार करी गया ते दिवसथी मरुदेवीमाता भरत महाराजने ओलभा आप्या करे छे अने कहे छे के हे भरत ! जेम कमलना फूलोनी मालाने नाखी दइए तेम ऋषभो मुजने छोडीने चाल्यो गयो, अने एकाकी वनवासी थयो छे, भूख तृषाथी पीडातो हशे, क्यांएक मसाण अथवा गुफाओमा तपस्या करतो हशे, टाढ, ताप सहन करतो हशे वर्षाकालमा भींजातो हशे, डांस, मच्छर, डंक मारता हशे, अरे ! हुं पापणी छुं जे पुत्रने आटलु दु.ख थयु छे, ते साभलुं छुं तेम छता मरती केम नथी ? माटे म्हारा जेवी दु खणी क्यांय पण कोइ हशे नहीं, अरे भरत ! तु तो राज्यना सुखमां लोभाणो छो, म्हारा छोकरानी खबर पण कहाडतो नथी तु तो सर्व प्रकारना सुदर भोजनो करावीने खाय छे. अने म्हारो पुत्र तो भिक्षा मागी सूका टुकडा खाय छे, तु तो सारा घरेणा पहेरे छे. अने म्हारो पुत्र तो नग्न फरे छे, तु तो सुखे शय्यामां सूवे छे. अने म्हारो पुत्र तो कठण काकरा काटावाली जमीन ऊपर सुइ रहे छे, अरे ! जे मधुर गीत गाने करी जागतो हतो, ते शृगालादिकना दुष्टस्वरे जागतो हशे,

वली तेनी भूख तृषा अने शरीरनी शुश्रूषानी खबर कोण लेतो हशे. तथा अलवाणे पगे चालतो हशे इत्यादिक अनेक ओलंभा आपती रहे छे, पुत्रनी चिंताथी मरुदेवी मातानी आंखे पडल आवी गयां. भरतराजा समजावे छे के-माताजी ! तमे कांइ दुःख करो नहीं, तमारो पुत्र घणो सुखी छे. त्यारे फरी माता बोली के-मने देखाड, भरत बोल्या के-हवे थोडा दिवसोमां अहींयां आवशे, त्यारे हुं आपने देखाडीश. एम मरुदेवी माता भरतने ओलंभा देती रहे छे.

ऋषभदेवने केवलज्ञान, अने मोरादेवीनो मोक्षगमन—

श्रीऋषभदेव अरिहंते एक हजार वर्ष पर्यंत कायाने वोसरावी दीधी. अने शरीरनी शुश्रूषा त्यागी दीधी, एमने कांइ उपसर्ग थया नहीं. परन्तु एक वर्ष आहार मल्यो नहीं एज उपसर्ग थयो तेने सहन करता थकां, अने आत्माने भावता थकां, एक हजार वर्ष वीत्या त्यारे सीयालानो चोथो महिनो, सातमुं पखवाडियुं, फाल्गुन वदि अगीआरसना दिवसे पूर्वान्ह कालना समयना विषे पुरिमताल नगरना शकटमुख नामा उद्यानमां, न्यग्रोध वडवृक्षनी नीचे, पाणी रहित अट्ठम तप कीधे थके, उत्तराषाढा नक्षत्र साथे चंद्रमानो योग आवे थके, शुक्लध्याननां विचाले वर्त्तता थका, जेनी समान बीजो कोइ जगतमां पदार्थ नथी. एवुं अनोपम अनंत केवलज्ञान अने अनंत केवलदर्शन उपन्यो. तेना योगथी प्रभु सर्व भावने जाणवा देखवा लाग्या. एज अवसरमां भरत महाराजनी आयुधशालामां चक्ररत्न पण प्रगट थयुं. त्यारे श्रीऋषभदेवना केवलज्ञाननी अने आयुधशालामां चक्ररत्न प्रगट थयानी बेहु वधामणी साथे आवी. वधामणी आपनारने हर्षदान आपीने विदाय कर्या. पछी भरतजी विचारमां पड्या के 'बे वधामणी साथे आवी छे एमांथी कोनो महोत्सव पहेलां करुं? एम क्षणेकवार विचारीने निश्चय कर्यो के चक्ररत्न तो सांसारिक छे अने

श्रीतीर्थंकरनो केवल महोत्सव तो लोकोत्तर छे तथा पिताने पूज्या तो सर्वने पूज्या, माटे प्रथम आ लोक अने परलोकमा सुखदायक जे केवलज्ञान तेनो महोत्सव करीने पछी चक्ररत्ननी पूजा करीश ' एम निरधारी श्रीमरुदेवीमाता पासे आवीने कहेवा लाग्या के–माताजी ! तमे मुजने ओलभा देता हता, ते तमारा पुत्र आजे अत्रे पधार्या छे माटे चालो म्हारी साथे हु तमारा पुत्रनो महिमा तमोने देखाडु एम कही मरुदेवीजीने हाथी ऊपर बेसाडी अने पछी पोते पण बेसीने घणा आडंबर सहित त्याथी चाल्या चालता चालता ज्यारे समवसरणनी नजीक आव्या, त्यारे माताजी बोल्या के–भरत ! आ देव-सबधि वाजा क्या वाजे छे ? भरतजीए कह्यु–ए वाजा तमारा पुत्रनी आगल वाजे छे तो पण माताजीए मान्यु नहीं वली आगल चालता घणा देव अने देवीओ समवसरणनी रचना करवा अने केवलज्ञाननो महोत्सव करवा आव्या छे ते पोत पोतामा एक बीजाने हाकोहांक करी रह्या छे, ते साभली मरुदेवीजीए भरतने पूछयु के–आ कोलाहल शानो थइ रह्यो छे ? त्यारे भरतराजा बोल्या के–माताजी ! आ तमारा पुत्रनी पूजा करवाने माटे देव–देवीओ आवे जाय छे, तेमनो कोलाहल थाय छे तो पण माताए मान्युं नहीं वली आगल जाता भरत महाराजाए कह्यु के–माताजी ! आ रूपा, सोना अने रत्नमयी त्रण गढवालु तमारा पुत्रनु घर तो जुओ ! एनी शोभानुं हु शु वर्णन करु, एनु वर्णन तो क्रोडो गमे ब्रह्माओ सहस्रजिह्वाओथी पण करी शके नहीं ए वातने माताजी सत्य मानीने पोतानी आंखो हाथथी मसलवा लाग्या तेथी पडल दूर थइ गया, त्यारे खरे खरो समवसरण दीठो त्या अनेक देव देवीयोने देखी मनमा विचार कर्यो के जुओ तो खरा, आ मोहनी विकलता केवी छे हु तो जाणती हती के म्हारो पुत्र दु खी छे पण आ तो घणा ज सुखमा मस्त छे.

हुं तो रडी रडीने आंधली थइ गइ, आंखे पडल वली गया. अने पणे तो मने संभारी पण नहीं, म्हारी तो ऋषभ ऋषभ करतां जीभ पण सुकाइ गइ. भरतने पण ओलंभा देती हती के–म्हारो पुत्र भूख, तृषा, टाढ, तडका तथा वर्षाद आदिकनी पीडा खमे छे अने उपान्ह तथा वाहन रहित थको एकाकी डूंगर, वन तथा अटवीओमां भ्रमण करे छे तेने मनावी लइ आव, अने ए तो म्हारा दुःखने कांइ पण जाणतो नथी, सुखवार्त्ता पण पूछतो नथी, अहीं आव्यो तो पण मने संदेशो मोकल्यो नहीं, माटे धिक्कार छे ए मोहने. तो हवे म्हारे पण पुत्रनी साथे शुं काम छे ? हुं कोण अने आ पुत्र ते वली कोण ? जगतमां कोइ कोइनुं नथी, सर्वे स्वार्थी छे, अरे ! म्हारा पुत्रे मने एटलुं पण कह्युं नहीं के हुं सुखियो छुं. म्हारी चिंता करशो नहीं, परंतु ए शा वास्ते एम कहे. केम के ए तो निरागी छे, एने कोइनी ऊपर राग रह्यो नथी, अने हुं तो सरागी छुं. तेथी मने तो एवा विकल्प थाय एमां कांइ संशय नथी. तो हवे म्हारे पण ए निरागी साथे श्यो प्रतिबंध करवो. ए एक पखिया स्नेहने धिक्कार हो. इत्यादिक चिंतवना करी, सर्व वस्तु ऊपर ममत्व रहित थइने श्री मरुदेवी माताजी, शुभध्याने अव्यक्त भावना भावता थका केवलज्ञान पाम्या, अने अंतगड केवली थइने तेज वेलामां ऋषभदेवप्रभुथी पहेलां मोक्षे पोहोता. कवीश्वर कहे छे के–

'पुत्रो युगादीशसमो न विश्वे, भ्रान्त्वा क्षितौ येन शरत्सहस्रम् ।
यदर्जितं केवलरत्नमग्र्यं, स्नेहात्तदेवार्पित मातुराहुः ॥ १ ॥
मरुदेवी समा नास्ति, याऽगात्पूर्वं किलेक्षितुम् ।
मुक्तिकन्यां तनूजार्थं, शिवमार्गमपि स्फुटम् ॥ २ ॥

श्रीयुगादिदेव सरखो पुत्र वीजो कोइ विश्वमां थयो नथी, अने थाशे पण नहीं. के जेणे पृथ्वीने विषे एक हजार वर्ष पर्यन्त भ्रमण

करी, अने कष्ट सहन करीने कमावेल अमूल्य केवलज्ञान रूप महारत्न ते परम स्नेहथी प्रथम पोतानी माताने आप्यु, तेमज मरुदेवी समान कोइ माता पण थइ नथी, अने थाशे पण नहीं केम के-जे पुत्रने परणाववाने अर्थे मुक्तिकन्या जोवाने माटे आगलथी ज त्या गइ एम आ अवसर्पिणीमा पहेलवहेला श्रीमरुदेवीजी मोक्ष गया इन्द्रादिके तेना शरीरनु सस्कार करी क्षीरसमुद्रमा परठव्यु पछी इन्द्रना वचनथी शोक निवर्त्तावी, वापिका माहे स्नान करी, भरत महाराजे हर्ष शोकाकुल थका भगवतने जइ वाद्या एम पहेल वहेलुं केवली नाम प्रवर्त्तमान थयु

श्रीचतुर्विधसघनी स्थापना—

भरत महाराज श्रीऋषभदेव स्वामीने नमस्कार करीने परषदामा बेठा, त्यारे भगवाने धर्मोपदेश दीधो त्या पहेली देशनामां ऋषभसेन प्रमुख पाचसो भरतना पुत्र तथा सातसौ भरत राजाना पोतरा सर्व मली बारसौ कुमारोए दीक्षा लीधी ए बारसो कुमारोमा मरिचि पण भेगो जाणवो त्या पुडरीकादिक चोरासी गणधरोनी थापना करी तथा ब्राह्मीए बाहुबलने पूछीने दीक्षा लीधी ए प्रथम साध्वी थइ अने भरत महाराज श्रावक थया तथा सुदरी दीक्षा लेती हती तेने घणी स्वरूपवाली जाणीने स्त्रीरत्न स्थापवा सारु भरते दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी नहीं त्यारे ते श्राविका थइ एम साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध सघनी स्थापना अने धर्मनी प्ररूपणा करीने प्रथम तीर्थंकर नाम धारण कर्युं जे वृक्षना नीचे प्रभुने केवलज्ञान उपन्यो तेनु नाम 'प्रयागवड' थयु ते वृक्षनी लोकोमा पूजा चाली हमणा पण प्रयागवड नामथी ते पूजाय छे तथा कच्छ अने महाकच्छ ए बे तो तापसज रह्या बीजा सवे भद्रक—परिणामवाला तापसो प्रभु पासे आवी फरीथी दीक्षा लीधी, भरतमहाराज वांदीने

पाछा अयोध्यामां आव्या. अने श्रीऋषभदेवप्रभुए अनेक जीवोने तारवा माटे अन्यत्र विहार कर्यो.

पट्खंडसाधना, अने सुंदरी तथा ९८ भाईओनी दीक्षा—

भरतराजाए घरे आवीने चक्ररत्ननो अट्ठाइ महोत्सव कर्यो. पछी छ खंड—पृथ्वी साधवाने अर्थे भरत महाराज सैन्य लइ चाल्या तेनी आगल हजार देवताधिष्टित चक्ररत्न चाल्युं. ते जेटला योजन दूर जइ रहे तेटला योजन सैन्य पण चाले, अनुक्रमे तमिस्त्रा गुफा पासे जइ पडाव कर्यो. त्यां नवी नवी रीते अने नवा नवा वेशे गंगा-देवीनी साथे विषयसुख भोगव्या, पछी गंगादेवीए मार्ग आप्यो. त्यारे तामिस्त्रा गुफा मार्गे जइने म्लेच्छोना देश साध्या; एम पट्खंड साधीने साठ हजार वर्षे भरतजी पाछा अयोध्यामां आव्या. वली नमी विद्या-धरना घेर स्त्रीरत्न नवुं उपन्युं, ते भरतजी परण्या सुंदरीए पण साठ हजार वर्ष सुधी आयंबिल तप कर्युं, तेथी दुर्वल थइ गइ. पछी भरतजी ज्यारे आव्या त्यारे सुंदरीए भरतने मोतीयोथी वधाव्या. सुंदरीने दुर्वल देखीने लोको ऊपर भरत खीज्यो, अने कहेवा लाग्यो के तमे एनी सार संभाल कांइ करी नहीं, त्यारे लोक बोल्या. एणे आयंबिल तप कर्युं तेथी दुर्वल थइ छे. पछी भरतजीए तेने संयम लेवानी आज्ञा आपी, सुंदरी पण दीक्षा लइने साध्वी थइ, हवे भर-तजी अयोध्यामां सुख भोगववा लाग्या. एवामां आयुधशालानो अधि-ष्टायक पुरुष आवीने भरतने कहेवा लाग्यो के स्वामिन् ! चक्ररत्न आयुध-शालामां आवतुं नथी. भरते पूछयुं के केम नथी आवतुं ? त्यारे अधिकारीए कह्युं के—तमारा भाइओ तमारी आज्ञा मानता नथी तेथी नथी आवतुं. त्यारे भरते सर्वे भाइओने दूत मोकलीने कहेव-राव्युं के जो तमो राज्य करवानी चाहना राखता हो तो सर्वे भाइओ म्हारी आज्ञा मानो, सेवा करो, नहीं तो राजनो त्याग करो, ते सांभली

अट्ठाणुं भाइयोए विचार्युं के आपणने राज्य तो पिताजीए दीधेल छे तो भरतनी चाकरी शा माटे करीए, एम चिंतवी भगवान पासे गया. भगवाने अगारा करवा वालानो दृष्टांत आपी, सूयगडांग सूत्रनो ' वेतालिय अध्ययन ' समलाव्यु तेथी प्रतिबोध पामीने सर्व भाइयोए दीक्षा लीधी, भगवानना शिष्य थया

भरत बाहुबलिनो युद्ध अने बाहुबलने दीक्षा-केवलज्ञान—

मुख्य अधिकारी पुरुषे भरतने विनव्यु के स्वामिन् ! आपना ९८ भाइयोए दीक्षा लीधी तो पण 'चक्ररत्न' आयुधशालामां आवतो नथी ?, त्यारे मंत्रीश्वर बोल्यो के—स्वामिन् ! बीजा तो सर्व आपनी आज्ञा माने छे पण बाहुबली महा अहकारनो धरनार छे ते आपनी आज्ञा मानतो नथी, पोतानी भुजाना बलनु पराक्रम घणु दखाडे छे. माटे एने मूलथी उठाडी देवो जोइए ए म्होटो रोग छे ते तमोने व्याधि उत्पन्न करे छे. एवु सांभली भरतराजाए 'सुवेग' नामा दूतने सर्व वात समजावीने बाहुबलीनी पासे मोकल्यो ते दूतने जतां थका पुठे छींक थइ, वस्त्रे कांटो वलग्यो, रथनी पींजणी भागी, जमणो रासभ बोल्यो इत्यादिक अनेक अपशुकन मार्गमा थयां तो पण ते वन, अटवी अने पहाड प्रमुख उल्लंघन करीने बाहुबलीना देशमां पोहोच्यो तेने मार्गनी धूले भर्यो देखीने गोवालणीयो तथा पाणीहारीओए पुछ्यु के तमे कोण छो ? क्यांथी आव्या अने कोण तमारो मालेक छे ? त्यारे दूते कह्यु हुं भरतराजानो दूत छु, ते सांभली स्त्रियो बोली के भरत ते शु ? जे अमारा पहेरवानी कांचलीओमां भरत काढीए छिए ते ? अथवा वासणमां भरत किंवा रोग संबधि भरत ? ए त्रण भरत तो अमे जाणीए छिए परंतु ए त्रण विना बीजो कोइ भरत छे, एवुं तो अमे साभल्युं पण नथी त्यारे दूत आश्चर्य पाम्यो अने विचारवा

लाग्यो के आ बाहुबलीनुं राज्य अने प्रजा पण जबरजस्त छे. एम वातो सांभलतो विचार करतो तक्षशिला नगरीमां गयो. त्यां दरवाजा ऊपर पोलीए रोकी राख्यो. ज्यारे बाहुबलीनी आज्ञा आवी त्यारे गाम मांहे प्रवेश करी, राज्यसभामां गयो. बाहुबलजीए आसन ऊपर बेसाडीने. पूछ्युं के अरे दूत ! भरतने पोताना सवाक्रोड पुत्रादिको सहित कुशल छे ? दूत बोल्यो-राजन् ! लाखो गमे देवताओ जेनी चाकरीमां तत्पर रहेला छे तेने कुशल केम न होय ? कुशल ज छे. परंतु आप तेनी चाकरीमां आव्या नहीं, तेथी ते सर्व वात निष्फल गणे छे. माटे तमे भरत राजानी पासे पधारो, अने एटला दिवस नहीं आव्या तेनो अपराध खमावो. ते पण तमारो म्होटो भाइ छे, ते तमारा पितानी जग्याए छे. माटे तमारा सर्वे अपराध माफ करशे. अनेक राजाओ तेनी सेवा करी रह्या छे ते तमोने तो अवश्य पूजवा योग्य ज छे. एवा दूतना वचन सांभली बाहुबली ते वचनोनो परमार्थ जाणी गयो. अने भृकुटी चढावी, राता लोचन करी बोलवा लाग्यो के अरे दूत ! ' तुं मारवा योग्य नथी माटे तने मारतो नथी. पण न्हाना अट्ठाणुं भाइओना राज्य तो लइ लीधा, अने म्हारुं पण राज्य लेवा वांछे छे; तेथी भाइनो स्नेह तो जाणी लीधो. हवे तुं तेने कहेजे के बालपणामां ज्यारे आपणे बेहु रमत करता हता, त्यारे हुं तुजने दडानी पेठे म्हारा हाथमां धरतो हतो ते दिवस भूली गयो छे के शुं ? हुं तो तेनो तेज छुं. म्हारा पासे चाकरी करावबानी वांछा राखवी ते म्होतने आमंत्रण करवा जेवुं समजवुं. दूत बोल्यो हे राजन् ! जो बे दिवस सुखे जीववानी तमोने वांछा होय अने कुंटुबनी साथे प्रयोजन होय तो तमे एनी सेवा भक्ति करो, हुं तमोने सत्य कहुं छुं. ते सांभली क्रोध करीने बाहुबले दूतने धक्का अपावीं कहाडी मूक्यो. दूत पण पाछ-

लना बारणाथी निकली पोतानो जीव लइ नाशी गयो ते चालतो चालतो अयोध्यामा आवीने भरत राजानी आगल बनावी बनावीने बमणी वात कही सभलावी त्यारे भरत पण रणभभा वजडावी, चतुरंगिणी सेना लइने, पोते श्रीऋषभदेवजीनी पूजा करी, वज्रसन्नाह पहेरी, हस्तिरत्न ऊपर बेसी चाल्यो, तेनी पछवाडे तेना सवा क्रोड पुत्र तथा पुत्रना पुत्र (पोतरा) पण घणा चाल्या चोराशी लाख हाथी, चोराशी लाख अश्व, चोराशी लाख रथ, छन्नुं क्रोड पायदल, शोल लाख रणतूर वजाडनार, दस क्रोड ध्वजा, चौद हजार म्होटा मत्रीश्वर, अढार क्रोड म्होटा घोडा, पच्चास क्रोड दीवेटीआ, चोराशी लाख म्होटा निशान, नव निधान, चौद रत्न, सोल हजार यक्ष, बत्रीश हजार मुकुटबद्ध राजा, वारांगना सहित बमणी चोसठ हजार अन्तेउर अने बत्रीश हजार नाटक, वली बीजा पण घणा विद्याधर, यक्ष, किन्नरादिक अनेक प्रकारनो परिवार चाल्यो, भरते रणपट्ट मस्तके बधावीने सुषेणनामा सेनाधिपतिने आगल कर्यो एवी रीते सेना लइने चढ्यो, अनुक्रमे बहुली देशनी सीमामां आवीने लश्करनो पडाव दीधो. बाहुबलि पण भरतजीनो आवागमन सांभलीने श्रीऋषभदेवजीनी पूजा करी वज्रनो सन्नाह पहेरीने, सर्व जगतने तृण समान मानता, भद्रनामा हस्ती ऊपर बेसीने, लडवा माटे निकल्यो. तेनी पछवाडे त्रण लाख पुत्र तथा पोतरा पण चार हजार राजा तथा घणा विद्याधरो, अनेक सुभट, हाथी, घोडा, रथ, पायक प्रमुख सहित चाल्या बाहुबलिए पोताना पुत्र सिंहरथने सेनापति बनावीने सौथी आगल चलाव्यो, ते पण जइ भरतनी सेनाने मल्यो. त्यां बेहु सैन्य एकठा मलवाथी धरती कंपवा लागी समुद्र चलायमान थयो, पर्वतना टोंक पडी गयां, भरतनी सेनामां सोल लाख रणतूर वाजते अने बाहुबलनी सेनामां पण लाखो गमे रणतूर वाजते तथा

वंदीजनो विरुदावली बोलते बन्ने तरफना सैन्यनुं मांहोमांहे युद्ध थवा लाग्युं. हाथीए हाथी, घोडे घोडा, रथे रथ, विद्याधरे विद्याधर, पाले पाला एम न्यायथी युद्ध शुरु थयो. एटलामां सुषेण नामा सेनापतिए पोतानी सन्मुख सिंहरथने आवतो देखीने कह्युं के–हुं तो भरतनो चाकर छुं अने तुं तो बाहुबलनो पुत्र छे तेथी तुं म्हारो स्वामी छे माटे तुं पहेला म्हारा ऊपर शस्त्र चलाव. ते सांभली सिंहरथे तेना ऊपर शस्त्र चलाव्युं. त्यारे सुषेण सेनानीए खड्ग चलाव्युं. मार्गमां सिंहरथना भाइ सिंहकेतुए ते खड्गने पाडी नाख्युं. तेथी सुषेणने घणो क्रोध चढ्यो. त्यारे ते बाहुबलनी सेनाने विलोवीने बाहुबलनी पासे गयो. एवामां अनिलवेग विद्याधर आवी, बाहुबलने नमस्कार करीने सुषेणनी सन्मुख लडवा आव्यो. ते बेहु जण मल्लनी पेठे परस्पर मुष्टा मुष्टियो अने लट्ठा लट्ठियोनो युद्ध करवा लाग्या. ते वखते सुषेण खड्ग लइने सिंहरथने मारवा जाय छे एटलामां तो सूर्य अस्त थयो. " एमना संग्राममां एवी मर्यादा छे के–कोइ पण श्रीऋषभदेवजीनी आण आपे तो लडवुं नहीं, बीजी सूर्य अस्त थया पछी लडवुं नहीं, त्रीजी मेघ वरसतो होय त्यारे लडवुं नहीं, जे सांज पह्यानी अगाउ मरी गया तेनो तो कोइ उपाय नहीं. परन्तु रात्रिमां जे अर्द्ध मरेला होय तेमने कांगणीरत्नना जले करी भरत पोताना सैन्यना माणसोने साजा करे. अने बाहुबली सोमयशना हृदयना आभरणोना जलथी साजा करे, एवी मर्यादा छे. " फरी बीजा दिवसनी प्रभाते युद्ध थवा मांड्युं. त्यारे सुषेण सेनानी अनिलवेगने देखीने अग्निनी परे बलवा लाग्यो अने अनिलवेगने मारवा आव्यो. एटलामां सिंहरथ वचमां आवी आडो पड्यो. अने सुषेणनी सामो लडवा ऊभो रह्यो. त्यारे अनिलवेग भरत राजानी सर्व सैन्याने उल्लंघन करी ज्यां हाथीओना त्रण कोट बनावीने भरतराजा सूतो छे.

त्यां आवीने हाथीओने काकरानी पेठे उछाली महा विकराल रूप धारण करीने सैन्यनुं मथन करतो करतो भरतनी पासे आव्यो भरते जाण्युं के आ दुर्द्धर विद्याधर छे ते म्हारी सुरत चूकावी देशे माटे ए न होय तो सारु एम चिंतवी तेना ऊपर चक्ररत्न मूक्यु. चक्रने देखी अनिलवेग नाठो, परन्तु ज्यां जाय त्यां चक्र पाछलनु पाछल चाल्यु आवे. त्यारे अनिलवेग वज्रपिंजर घनावीने छ महिना सुधी लवण समुद्रमां वेसी रह्यो, पण चक्र माथे भमतुज रह्यु छ महीना पछी समुद्रमांथी गावडी बाहेर कहाडी त्यारे चक्रे ते गावडीने कापी न्हाखी भरतपुत्र सूर्ययश बाहुबलीनु कटक उलघीने बाहुबल पासे आव्यो अने कहेवा लाग्यो के मने शस्त्र मारो, त्यारे बाहुबली हसीने वोल्यो–अरे ! तु इक्ष्वाकुवशमा भलो सूरवीर छे, पण हु जो तुजने एक मुठी मात्र मारीश तो पण तु चूर्ण थइ जइश माटे दूर ऊभो रहे पछी तेने देवताए कह्यु के अरे मूर्खा ! बाहुबली साथे तु शु लडवा आव्यो छे नाहकनो मार्यो जइश माटे चाल्यो जा त्यारे ते जतो रह्यो. एवी रीते वार वर्ष पर्यंत युद्ध चाल्यु, क्रोडो माणसो मरी गया, लोहीनी नदीओ व्हेवा लागी पण कोइ हार्यो नहीं त्यारे घणो अनर्थ थतो देखी सौधर्मेन्द्र अने चमरेन्द्र भरतनी पासे आवी कहेवा लाग्या के भगवान तो लोकोनु पालण पोषण करी गया अने तमे माणसोनो नाश करवा तैयार थया छो ए शुं ? भरत कहेवा लाग्यो के बाहुबली मारी आज्ञा न माने त्यांसुधी चक्र आयुधशालामां आवतु नथी, तो हवे कहो हु शु करु ? ते सांभली इन्द्र वोल्या–तमे वन्ने भाइ परस्पर युद्ध करो पण बीजा माणसोनो नाश म करावो, ए वात भरते कबुल करी. पछी ते वेहु इन्द्र बाहुबली पासे आव्या अने कहेवा लाग्या के आ प्रमाणे युद्धमा लोकोनो नाश करवो ठीक नथी माटे तमे बे भाइओ ज

अरस्परस युद्ध करो. बाहुबलीए पण ते वात मान्य करी. पछी इन्द्रे मलीने एक दृष्टियुद्ध, बीजुं वाक्युद्ध, त्रीजुं बाहुयुद्ध, चोथुं मुष्टियुद्ध, अने पांचमुं दंडयुद्ध ए पांच युद्ध करवानो ठराव कर्यो. अने बन्ने लश्करोने श्रीआदिनाथजीनी सोगन आपीने दूर कर्या. पछी पाणी छटकावी, फूल बिछावी, भूमि शुद्ध करीने मुकुट, टोप, सन्नाह पहेरी बेहु भाइ सामसामा लडवाने आव्या. ते युद्धने देवता आकाशमां साक्षीधर रह्या थका देखे छे. प्रथम भरत अने बाहुबली बे भाइ आंखो कहाडीने एक बीजानी सन्मुख दोड्या, आंख टमकार्या विना मांहोमांहे एक बीजाने देखताज रहे, महा सूरवीर छतां पण जेम सूर्यनी सांमो देखवाथी आंखमां पाणी आवी जाय, तेम भरत राजानी आंखोमां पाणी आवी गयुं. ते जोइ देवता फूलोनो वरसाद वरसावीने बोल्या के–बाहुबली जीत्यो, अने भरत हार्यो; ए प्रथम युद्ध. पछी भरते सिंहनाद कर्यो, तेथी पर्वत कंपायमान थया अने बाहुबलीए सिंहनाद कर्यो तेथी ब्रह्मांड फूटवा जेवो शब्द थयो अने भरते पोताना कान ढांकी लीधा, ते जोइ देवता बोल्या के बाहुबल जीत्यो अने भरत हार्यो ए बीजुं युद्ध. पछी बाहुयुद्धमां प्रथम भरत राजाए हाथ लांबो कर्यो, तेने बाहुबलीए कमलनालनी परे वाल्यो अने बाहुबलीए पोतानो बांह लांबो कर्यो तेने भरत वालवा गयो पण लगार मात्र चसक्यो नहीं. हिंडोलानी परे भरतजी लटकी गया, ते देखी देवो बोल्या के–बाहुबली जीत्यो अने भरत हार्यो ए त्रीजुं युद्ध. ते पछी मुष्टीयुद्ध करवा लाग्या. तेमां प्रथम तो बन्ने भाइ मल्लोनी पेठे भुजास्फोट करता मल्या. पछी भरते बाहुबलीने मुष्टी मारी तेथी बाहुबलीनी थोडीशी वार आंखो मींचाई गई. पछी भरतने दडानी परे उपाडीने आकाशमां उछाली दीधो. परंतु फरी अनुकंपा आणीने पोताना हाथमां पकडीने एक मुष्टी मारी

तेथी भरतजी जमीनमा पेसी गया ते जोइ देवता बोल्या के वाहुवली जीत्यो अने भरत हारी गयो ए चोथु युद्ध पछी पाचमु दडयुद्ध करवा माड्यो तेमा प्रथम तो भरत महाराजे लोहदड लइने वाहुवलने मार्यो, तेथी बाहुवलीनो मुकुट माटीना घटनी परे चूर्ण थइ गयो अने वाहुवली गोडा सुधी जमीनमा पेसी गयो पछी जमीनमांथी बाहेर निकलीने वाहुवलीए लोहदड मार्यो, तेथी भरतनो मुकुट चूर्ण थइ गयो अने भरत महाराजनु सपूर्ण शरीर धरतीमां पेसी गयु ते जोइने देवता बोल्या के आ युद्धमा पण वाहुवली जीत्यो, अने भरत हारी गयो ए पाचमु युद्ध एम पाचे युद्धमा भरतजी हारी गया त्यारे चिंतातुर थई विचार करवा लाग्या के म्हारु राज्य ए लइ लेशे आ ते वली कोइ बीजो चक्रवर्त्ति थयो छे के शु ? एवु चिंतवीने पछी चक्रने पोताना हाथमां लइ, भमाडीने पोतानी करेली प्रतिज्ञानो भग करी वाहुवली ऊपर मूक्यु, पण पोताना गोत्रमा चक्र चाले नहीं, तेथी ते चक्र बाहुवलीने त्रण प्रदक्षिणा आपीने पाछो जइ भरतना हाथमां आवी बेठो एवी रीते भरते ज्यारे प्रतिज्ञानो भंग कर्यो त्यारे वाहुवलने अत्यत क्रोध चड्यो तेथी भरतनी ऊपर मुष्टी उपाडीने मारवा दोड्यो त्यारे देवता बोल्या के विचार करो ते सांभली वाहुवलीए विचार्यु के धिक्कार छे आ राज्यने के जेना लीधे म्होटा भाइने पण मारवानो विचार थयो एवी रीते वैराग्य पामीने वाहुवले पोते भरतने मारवा माटे जे मुष्टी उपाडी हती, तेज मुष्टीथी पोताना मस्तकनो लोच करी दीक्षा लइ लीधी देवताओए फूलनो वर्षाद वरसाव्यो, वाहुवलजीए त्यांथी विहार कर्यो भरत राजा विलाप करवा लाग्यो के म्हारा सर्व भाइओ दीक्षा लइने जता रह्या पछी वाहुवलीना पुत्र सोमयशने तक्षशिला नगरीनु राज्य आपी भरत राजा अयोध्या नगरीमा आव्या विहार

दरमियान वाहुवलना मनमां विचार थयुं के म्हारा न्हाना अट्ठाणुं भाइओए प्रथम श्रीऋषभदेवजीनी पासे दीक्षा लीधेल छे, ते केवली थया छे. माटे हमणा हुं भगवानना समवसरणमां जइश तो न्हाना भाइओने वंदना करवी पडशे, माटे हुं अहींआंज काउसग्गे रही, केवलज्ञान प्राप्त करीने पछी प्रभु-पासे जइश. एवुं चिंतवी मनमां अभिमान धारण करीने काउसग्गमां रह्या थका एक वर्ष वीती गयुं. मस्तक ऊपर वेलडियो वींटाइ गइ. तेने प्रतिवोधवा माटे श्रीऋषभदेवस्वामीए ब्राह्मी अने सुंदरी ए वे साध्वीओने मोकली, ते त्यां आवीने वाहुवलजीने कहेवा लागी के—वीरा ! हे भाइ ! तमे गज ऊपरथी नीचे उतरो. हस्ती ऊपर आरूढ थयाथी केवलज्ञान उपजशे नहीं. एटलुं तेमनुं बोलवुं सांभलतांज वाहुवलजीए विचार्युं के आ साध्वीयो क्यारे जुठुं बोले नहीं, माटे हाथी तो म्हारी पासे नथी. परंतु अहंकार रूप हाथीनी ऊपर हुं चढेलो छुं एम विचारी माननो त्याग करी पग उपाड्यो के तरतज केवलज्ञान पण उपन्युं. अने प्रभुना समवसरणमां जइ केवलीनी परषदामां विराजमान थया.

ब्रह्मभोजन अने यज्ञोपवीतनी प्रवृत्ति—

एक दिवसे भगवान अष्टापद पर्वत ऊपर समवसर्या. त्यारे भरत-महाराजाए विचार्युं के बीजुं तो म्हाराथी कांइ थतुं नथी पण आ सर्व साधुओने आहार व्होरावुं तो लाभ मले. एवुं जाणी पांचसे गाडा सूखडीना भरी लाव्या अने भगवानने कहेवा लाग्या. स्वामिन् ! आजना दिवसे आ सर्व साधुओने आहार करावववानो हुकम म्हारे घेर थइ जाय तो घणुंज रुडुं थाय. त्यारे भगवाने कह्युं के—आधाकर्मिक राज्यपिंड साधुओने लेवुं कल्पे नहीं, तेमज सन्मुख लावेल आहार पण साधुओने कल्पतुं नथी. एवुं सांभली भरत राजाए जाण्युं के हुं

तो सर्व प्रकारे भक्ति रहित थयो, एम फिकर करवा लाग्यो ते जोई इन्द्रमहाराजे भगवानने पुछयु के-हे प्रभो ! अवग्रह केटला प्रकारना छे ? भगवान बोल्या-पाच अवग्रह छे तेमा-एक इन्द्रनो अवग्रह, बीजो राजेन्द्रनो अवग्रह, त्रीजो ग्रहपतिनो अवग्रह, चोथो सागारिकनो अवग्रह अने पाचमो साधर्मिकनो अवग्रह ए पाच अवग्रह जाणवा ते साभली इन्द्र बोल्या हु तो आपना सर्व साधुओने म्हारा सर्व क्षेत्रमा सुखे विचरवानी आज्ञा आपु छु त्यारे भरत महाराज बोल्या के म्हारी छ खड पृथ्वीमा हु पण आपना सर्व साधुओने विचरवानी आज्ञा आपु छुं, एम कहेवाथी भरतने घणो सतोष थयो वली भरते इन्द्रने पूछयु के आ आहारनु हवे शु करवु ? त्यारे इन्द्रे कह्यु के-ताराथी अधिक गुणवान होय तेने ए आहार जमाडी दे पछी भरते पण ते आहार श्रावकोने जमाड्यो अने ते पछी भरतराजा सदा सर्वदा श्रावकोने जमाडवा लाग्यो केटलाएक काल पछी ज्यारे घणा जमनारा थया, त्यारे परीक्षा करीने ओलखान माटे कागणीरत्नथी देव, गुरु अने धर्मरूप त्रण तत्व सबधी त्रण रेखाओ प्रत्येक श्रावकने करी अने ते श्रावकब्राह्मणोने स्वाध्याय करवा माटे भरतजीए श्रीऋषभदेवस्वामीनी स्तुति गर्भित-१ ससारदर्शन, २ सस्थापनपरामर्शन, ३ तत्त्वावबोध अने ४ विद्याप्रबोध, आ चार वेदोनी रचना करी त्याथी ब्रह्मभोज अने जनोई आपवानी चाल पडी एकदा भरत राजाए इन्द्रमहाराजने पूछयु के तमारु खरेखरु रूप केवु छे ? त्यारे इन्द्रे एक अगुली बतावी ते महाज्वाला मालाकुल देखीने भरत चमत्कार पाम्यो तेथी वर्षोवर्ष 'इन्द्रमहोत्सव' चालु थयो

भरतचक्रवर्त्तीनो निर्वाण—

एक दिवसे भगवत विहार करतां विनीतानगरीमा आव्या. भरत

वांदवा आव्यो, प्रभुए देशना आपी संसारनुं अनित्यपणुं देखाड्युं, जीव कर्मना भारे करी तुंवडाना दृष्टांते संसारमां बूडे छे, जेम तुंबडाने माटी चोपडी पाणीमां मूकीए तो हेठुं वेसे, तेम आठ कर्मोथी जीव भारी थयो थको हेठो वेसे छे, एवी भगवाननी वाणी सांभली भरत मनमां वैराग्य पाम्यो, ज्ञान दशामां लय लीन थयो. एम अनुक्रमे एकदा भरतराजा आरीसा भवनमां बेठा थका अनित्य भावना भावतां केवलज्ञान पामी, मोक्षे गया. पछी तेमना पाटे आदित्ययशा राजा थया. तेणे सोनानी जनोइ करीने श्रावक जमाड्या, तेनी पाटे महायशा राजा थया तेणे रूपानी जनोइ करीने श्रावक जमाड्या. एम आठ पाट लगे श्रावक जमाड्या. तेमां केटलाएक राजाओए सूत्रनी जनोइ करी जमाड्या छे, पछी ते जनोइना पहेरनार सर्व ब्राह्मण कहेवाया. आठमा तीर्थंकरनो तीर्थविच्छेद थयां पछी तेज श्रावक ब्राह्मणोए लोभलालचमां पडी अने धर्मभ्रष्ट थइने भरतरचित वेदोमां परिवर्त्तन करी तथा तेमां स्वार्थलोलुपताना पाठो उमेरी ऋग् १, यजु २, साम ३, अथर्व ४, ए कल्पित वेद बनाव्या. भरतनी पाटे आदित्ययशा, तेनी पाटे महायशा, तेनी पाटे अभिवल, तेनी पाटे वलभद्र, तेनी पाटे वलवीर्य, तेनी पाटे कीर्त्तिवीर्य, तेनी पाटे जलवीर्य, तेनी पाटे दंडवीर्य, ए आठ राजाओए भगवंतनो मुकुट पहेर्यो. अने ए आठे राजा आरीसा भवनमां केवली थइ मोक्षे गया.

श्रीऋषभदेवप्रभुनो परिवार अने निर्वाण—

भगवान श्रीऋषभदेवजीए एक लाख पूर्व पर्यंत विचरीने घणा जीवोने प्रतिवोध्या, श्रीऋषभदेवजीने ऋषभसेन प्रमुख चोराशी गणधर थया, चोराशी गच्छ थया, तथा ऋषभसेन प्रमुख चोराशी हजार साधुओनी उत्कृष्टी संपदा थइ. तथा ब्राह्मी अने सुंदरी प्रमुख त्रण लाख साधवीओनी उत्कृष्टी संपदा थइ. तथा श्रेयांस प्रमुख

त्रण लाख ने पांच हजार श्रावकोनी उत्कृष्टी सपदा थइ तथा सुभद्रा प्रमुख पाच लाख ने चोपन हजार श्राविकाओनी उत्कृष्टी सपदा थइ. तथा चार हजार सातसौ ने पचास चौद पूर्वधर ते केवली नहीं पण केवली सरखा साधुओनी उत्कृष्टी सपदा थइ. तथा श्रीऋषभनाथ अरिहंतने नव हजार अवधिज्ञानीनी सपदा थइ, वीश हजार केवलज्ञानीनी उत्कृष्टी सपदा थइ तथा वीश हजार ने छसौ वैक्रिय लब्धिवत साधुओनी उत्कृष्टी सपदा थइ तथा वार हजार छसौ ने पचास अढीद्वीपमा सज्ञी पचेन्द्रिय पर्याप्ता जीवोना मनना परिणामने जाणे एवा विपुलमति मन.पर्यवज्ञानना धरनार साधुओनी उत्कृष्टी सपदा थइ. तथा वार हजार छसौ ने पचास वादी साधुओनी सपदा थइ तथा वीश हजार साधु सिद्ध थया चालीश हजार साध्वी सिद्ध थइ श्रीऋषभनाथ अरिहत कौशलिकने वावीश हजार ने नवसौ साधुओ अनुत्तर विमाने गया–एकावतारी थया, श्रीऋषभदेव अरिहतने वे प्रकारे अतगड भूमि थइ, त्या यावत् असख्याता पाट लगे केवलज्ञान चाल्यो–मोक्षमार्ग वह्यो, ते युगांतकृत भूमि कहेवाय अने भगवानने केवलज्ञान उपन्या पछी अतर मुहूर्त वाद मरुदेवी माता मोक्षे गया ते पर्यायातकृत भूमि कहेवाय ते काल ते समयना विषे, श्रीऋषभनाथ अरिहंत वीश लाख पूर्व सुधी कुमारपणे रह्या अने त्रेसठ लाख पूर्व राज्यावस्थामा रह्या एवी रीते त्रासी लाख पूर्वसुधी घरवासे रह्या. एक हजार वर्ष छद्मस्थपणे रह्या तथा एक हजार वर्ष ऊणा एक लाख पूर्व केवल पर्याय पालीने सपूर्ण एक लाख पूर्व साधुपणु पालीने भवोपग्राही चार कर्मनो क्षय करी, आ अवसर्पिणीनो सुखम दुखमा नामा त्रीजो आरो घणो वीती गयो वाकी त्रण वर्ष ने साडा आठ महिना शेष रह्या, त्यारे शीतकालनो त्रीजो महिनो,

१ सीत्तेर लाख क्रोड वर्ष अने छपन्न हजार क्रोड वर्षनो एक पूर्व थाय छे.

पांचमुं पखवाडियुं, मावयदि तेरसना दिवसे अष्टापद पर्वतनी उपर दशहजार साधुओनी साथे चौद भक्त एटले छ उपवास पाणी रहित कीधे थके, अभीच नक्षत्रना साथे चंद्रमानो योग आवे थके, प्रथम पहोर पछी वपोरनी वखते, पालखी वालेला आसने बेठा थकां कालगत थया, यावत् सर्व दुःख थकी रहित थया. ते अवसरमां शक्रेन्द्रनुं आसन चलायमान थयुं त्यारे ते आंखोमां आंसु भराणो थको आव्यो, आवीने भगवानने त्रण प्रदक्षिणा आपी, नमस्कार करी, योग्य स्थानके बेठो, बीजा पण सर्व इन्द्रो आवीने बेठा. पछी शक्रेन्द्रे देवोने मोकली नंदनवनमांथी चंदन मंगाव्युं, तेनी त्रण चिता एक भगवानना शरीरने माटे, बीजी गणधरोना शरीरने माटे अने त्रीजी सर्व साधुओना शरीरने माटे बनावी. वली आभियोगिक देवोनी पासे खीरसमुद्रनुं पाणी मगावी शक्रेन्द्रे भगवानना शरीरने स्नान कराव्युं, सर्व वस्त्र आभूपण प्रमुख पहेराव्यां. पछी त्रण पालखी करी–एक पालखीमां भगवाननुं शरीर, एकमां गणधरोनुं शरीर अने एकमां मुनिओनां शरीरने मूकी चितानी पासे आव्या, शक्रेन्द्रे भगवानना शरीरने पालखीमांथी लइने चितामां मूक्युं. तथा अन्य देवोए बीजा गणधरादिकना शरीरने पालखीमांथी उतारीने चितामां मूक्या. तथा शक्रेन्द्रना हुकुमथी अग्निकुमार देवो मनमांहे उदास थया थका चितामां अग्नि सलगाववा लाग्या तथा वायुकुमार देवो पण उदास थया थका वायु चलाववा लाग्या. वली बीजा देवो चितामां घृत प्रमुखने सींचवा लाग्या. पछी ज्यारे मात्र हाडकां ज शेष रह्या अने बीजा शरीरनो भाग सर्व बलीने भस्म थइ गयो त्यारे मेघकुमार देवोए वर्षाद वरसावीने चिताने बूझावी, पछी शक्रेन्द्र भगवाननी ऊपरनी जमणी बाजुनी दाढा लीए अने ईशानेन्द्र ऊपरनी डावा बाजुनी दाढा लीए तथा चमरेन्द्र

[प्रश्नोत्तरीय पृष्ठ १८९.

नीचेनी जमणी बाजुनी दाढा लीए अने बलेन्द्र नीचेनी डाबी बाजुनी दाढा लीए तथा बीजा देवता जे छे ते केटलाएक तो जिनभक्तिना वश थकी, केटलाएक आपणु आचार छे एवु मानीने, केटलाएक धर्ममानीने परमेश्वरना अगोपागना सर्व हाडका लइ लीये पछी प्रभुने जे स्थानके दाग दीधेल छे, ते स्थानके शक्रेन्द्र रत्नोना त्रण पीठ बनावे एटलु करीने सर्व देवो नदीश्वरद्वीपना विषे जइ अट्ठाइ महोत्सव करीने पोत पोताने स्थानके जाय अने दाढा प्रमुख जे लइ आव्या होय ते पोत पोतानी सभाने विषे वज्रमय डाबलामा राखे, तेने गधमालादिकथी पूजे, धूप दीये, एज प्रकारनो निर्वाण महोत्सव सर्व तीर्थंकरोनो जाणी लेवो

श्रीऋषभदेवस्वामी मोक्ष गया पछी पचास लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ मोक्ष गया, श्रीऋषभदेव अरिहत मोक्ष गया पछी त्रण वर्ष ने साडा आठ महिना, त्रीजो आरो शेष रह्यो हतो ते पण वीती गयो पछी त्रण वर्ष ने साडा साठ महिना तथा ऊपर बेंतालीश हजार वर्ष ऊणा एक कोडाकोडी सागरोपम गयां पछी श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया। एटले ते वखते त्रण वर्ष ने साडा आठ महिना तो चोथा आराना बाकी रह्या हता अने पांचमा आराना एकवीश हजार वर्ष, तथा छट्ठा आराना एकवीश हजार वर्ष एम बे आराना मळी बेंतालीश हजार वर्ष ते एक कोडाकोडी सागरोपममा ओछा थया माटे बेंतालीश हजार ने त्रण वर्ष ऊपर साडा आठ महिने न्यून एवो एक कोडाकोडी सागरोपम काल चोथा आरानु गये थके महावीरप्रभु मोक्षे पोहोता अने ते पछी नवसो एसी वर्ष गया आ पुस्तक श्रीदेवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणे लख्यु अने नवसो त्राणु वर्षे श्रीसघमा वचायु

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते
श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे अष्टम व्याख्यान समाप्तम्।

—※—

अथ नवमो व्याख्यानः प्रारंभः ।

श्रीस्थविरावली अधिकार—

ते काल ते समयमां भगवान श्रीमहावीरस्वामीना नवगच्छ अने अग्यार गणधर थया, शिष्य प्रश्न करे छे के—हे गुरु महाराज ! मर्यादा तो एवी छे के जेटला गणधर होय तेटला ज गच्छ पण होवा जोइए परंतु आप तो नव गच्छ अने अग्यार गणधर फरमावो छो तेनुं कारण शुं ? गुरु कहे छे के—श्रीमहावीरस्वामीना म्होटा शिष्य इंद्रभूति नामा अणगार थया, ते गौतमगोत्रीया हता. अने पांचसौ साधुओने वाचना आपता माटे तेनो एक गच्छ. जेनी वाचना एक होय तेने गच्छ कहीए. इहां कोइ शंका करे के वाचनामां फेर होय तो शुं केवलीना कहेवामां फेरफार छे ? तेनो उत्तर—केवलीना कहेवामां फेर नथी. परंतु केवलीना वचन सांभलीने ते वचनोनां गणधरो सूत्रो बांधे छे—गूंथे छे तेनी रचना (शब्दो)मां फेर छे; पण मतलबमां फेर नथी. मात्र शब्द अनेक प्रकारना छे. तेमां रचना करती वखते एक गणधर एक जातिना शब्दथी गूंथे छे, तो बीजो गणधर बीजी जातना शब्दोथी गूंथे छे. तेना लीधे शब्दरचनामां फेरफार होय छे. ' बीजो वचलो भाइ—शिष्य अग्निभूति अणगार छे तेनुं गौतम गोत्र छे. अने पांचसौ साधुओने वाचना आपे छे ते बीजो गच्छ. त्रीजो न्हानो भाइ वायुभूति नामे शिष्य छे, ते पण गौतम गोत्रनो छे, ते पांचसौ साधुओने वाचना आपे छे ए त्रीजो गच्छ. ए त्रणे गृहस्थपणामां सगा भाइ हता. चोथा स्थविर आर्यव्यक्त नामा भारद्वायण गोत्रीया ते पांचसौ साधुओने वाचना आपे छे ए चोथो गच्छ. पांचमा स्थविर आर्यसुधर्म नामा अग्निवैश्यायन गोत्रीया छे ते पांचसौ साधुओने वाचना आपे छे ए पांचमो गच्छ. छट्ठा स्थविर मंडित

पुत्र वासिष्ट गोत्रीया छे ते साडा त्रणसो साधुओने वाचना आपे छे ए छठ्ठो गच्छ सातमा स्थविर मौर्यपुत्र काश्यप गोत्रीया छे ते साडा त्रणसो साधुओने वाचना आपे छे ए सातमो गच्छ. आठमा स्थविर अकंपित गौतम गोत्रीया छे तथा नवमा स्थविर अचलभ्राता हारिता-यन गोत्रीया छे ए बेहु स्थविर त्रणसो त्रणसो शिष्योने वाचना आपे छे ए बेहु गणधरोनी वाचना एक छे माटे एनो एक गच्छ गणीए ए बन्ने गणधर भाइ छे परतु तेनी माता एक अने पिता बे छे, तेथी एमना गोत्र जुदां जुदां कह्या छे आगल ब्राह्मणोमा एकपति मर्या पछी स्त्रियोने बीजो पति करवानो चाल हतो तेथी बे पिता कह्या ए आठमो गच्छ दसमा स्थविर मेतार्य अने अग्यारमा स्थविर प्रभास ए बन्ने कौडिन्य गोत्रीया भाइ छे ते त्रणसो त्रणसो साधुओने वाचना आपे छे ए बेहुनी वाचना एकज छे, माटे एकज गच्छ कहेवाय ए नवमो गच्छ ए रीते हे शिष्य ! अमे श्रीमहावीरना अग्यार गणधरना नव गच्छ कहीए छिये ए अग्यारे गणधर द्वादशांगीना धरवावाला, चौद पूर्व-धारी, सपूर्ण आचार्य रत्नकरडीयाना धारक एटले द्वादश अगरूप रत्ननो करडीयो तेना धरवावाला जाणवा, ए अग्यारे गणधर राजगृही नग-रीमां एक मासी अनशन पाणी रहित करीने कालगत थया, मोक्ष पाम्या सर्व दु खथी रहित थया तेमां नव गणधर तो श्रीमहावीर स्वामी विद्यमान छता ज मोक्ष गया अने स्थविर इद्रभूति तथा स्थविर आर्यसुधर्म ए बे गणधरो श्रीमहावीर भगवान मोक्ष गया पछी मोक्षे गया छे तथा बीजा सर्व गणधरोना शिष्यो पण काल करी गया हता कोइ पण शेष रह्यो हतो नहीं, माटे हमणां वर्तमान समयमा जे जैन साधुओ विचरे छे, ते सर्व सुधर्म गणधरना जाणवा बीजा गणधरोना शिष्यो विच्छेद गया छे तेथी एक सुधर्म गच्छज रह्यो

गणधर	जन्मगाम	पिता	माता	गृहवास	छद्मस्थ पर्याय	केवल पर्याय	सर्वायु
इन्द्रभूति	गुब्बर	वसुभूति	पृथिवी	५०	३०	१२	९२
अग्निभूति	,,	,,	,,	४६	१२	१६	७४
वायुभूति	,,	,,	,,	४२	१०	१८	७०
व्यक्त	कोल्लाक	धनमित्र	वारुणी	५०	१२	१८	८०
सुधर्मा	,,	धम्मिल	भद्दिला	५०	४२	८	१००
मंडित	मौरिकसन्निवेस	धनदेव	विजया	५३	१४	१६	८३
मौर्यपुत्र	,,	मौर्य	,,	६५	१४	१६	९५
अकंपित	मिथिला	देव	जयंती	४८	९	२१	७८
अचलभ्राता	कोशला	वसु	नंदा	४६	१२	१४	७२
मेतार्य	तुंगिक सन्निवेस (वत्सभूमि)	दत्त	वरुणदेवी	३६	१०	१६	६२
प्रभास	राजगृह	बल	अतिभद्रा	१६	८	१६	४०

श्रीसुधर्मस्वामी अने श्रीजंबूस्वामी—

श्रीमहावीर स्वामी काश्यप गोत्री हता, तेमनी पाटे श्रीसुधर्म स्वामी पांचमा गणधर बेठा. तेमनुं अग्निवैश्यायन गोत्र हतुं, तेनो संबंध आ प्रमाणे छे–कुल्लाग सन्निवेश नामा नगरमां 'धम्मिल' नामा ब्राह्मण रहेतो हतो. तेनी 'भद्दिला' नामे भार्याना पुत्र 'सुधर्म' नामे थया. ते चौद विद्याना निधान, चार वेदना पारंगामी, पचास वर्ष घरवासे रह्या पछी महावीरस्वामीना पासे दीक्षा लीधी, पांचमा गणधर थया, त्रीश वर्ष पर्यंत महावीरस्वामीना चरणकमल सेवता रह्या, अने श्रीमहावीर निर्वाण पाम्या पछी बार वर्ष पर्यंत छद्मस्थपणे विचर्या, तथा आठ वर्ष केवलीपणे विचर्या. सर्व मली एकसो वर्षनुं आयुष्य भोगवीने मोक्ष गया. १ श्रीसुधर्म स्वामीना पाट ऊपर श्रीजंबूस्वामी बेठा तेमनुं काश्यपगोत्र हतुं, तेनो संबंध आ रीते छे–एकदा श्रीमहावीर-

स्वामी राजगृही नगरीमा समोसर्या त्या एक म्होटो तेजवत देवता पोतानी चार अग्रमहीषीयो सहित तथा बीजा पण घणा देव अने देवीयोना परिवारे परवर्यो थको भगवानने वादवा आव्यो त्यारे श्रेणिक राजाए भगवानने पूछ्यु के हे स्वामिन्! आ देवतानी बीजा देवोथी अधिक काति केम देखाय छे? त्यारे भगवाने कह्यु के आ देवताए पूर्व भवना विषे दश वर्ष पर्यंत नित्य तप कर्यु छे, तेना प्रभावथी ए पाचमा ब्रह्म देवलोकना विषे तिर्यक् जृभ कनी जातिमा महर्द्धिक देवता थयो छे वली ए देवता आजथी सातमा दिवसे देवलोकथी चवीने राजगृही नगरीमां ऋषभदत्त शेठनी धारणी नामे भार्यानी कूखमा पुत्रपणे आवीने उपजशे, पछी एनो जन्ममहोत्सव करीने एनी माता स्वप्नमा जबुवृक्ष देखशे तेथी एनु नाम 'जबू' आपशे अनुक्रमे युवान अवस्था पामशे, त्यारे सुधर्म गण धरनी पासेथी धर्मदेशना साभलीने वैराग्य पामी कहेशे के हु चारित्र लइश पण म्हारा मातापिताने पूछी आवु, एम कही पाछो घर जता मार्गमा यत्रथी उपडेलो पथ्थर, पोतानी पासेथी निकल्यो देखीने विचार करशे के हमणा जो मने आ तोपनो गोलो लागी जात तो हु अव्रतिपणामा मरण पामत, एवु जाणी सुधर्मस्वामीनी पासे पाछो आवीने एकवार तो समकित मूल बारे व्रत लेशे तेमां चोथा व्रतमा, कदापि मातापिताना कहेवाथी स्त्रीयो परणवी पडे तो तेने परणु, पण ते स्त्रीयोनी साथे भोग भोगवु नहीं एवो त्याग करी, फरी घरे आवी, माता पिताने कहेशे के मने आज्ञा आपो हु श्रीसुधर्म-स्वामी पासे दीक्षा लेउ? माता पिता कहेशे के हे पुत्र! दीक्षा पालवी घणी दुक्कर छे एवी रीते घणो घणो समजावशे, तो पण ए मानशे नहीं त्यारे मातापिता कहेशे के हे पुत्र! आठ कन्याओ साथे त्हारु सगपण करेलु छे माटे तेने परणीने पछी दीक्षा लेजे ते

सांभली जंबुकुमर मौनपणुं धारण करी लेशे. मातापिता आठ शेठीयाओने कहेशे के अमारो पुत्र वैराग्यवान् थयो छे माटे तमारे दीकरीयो परणाववानी मरजी होय तो भले परणावो. पण ते कन्याओनो त्याग करीने जो दीक्षा लेशे, तो अमारो दोष कहाडशो नहीं. ते सांभली सर्व शेठीया कहेशे के अमे परणावीशुं नहीं. पण ते शेठियाओनी दीकरीयो कहेशे के अमे तो जंबुकुमरने ज परणीशुं, बीजाने परणवानो त्याग छे. त्यारे शेठिया पोतानी पुत्रीयोने कहेशे के ए तो दीक्षा लेशे. तो पण दीकरीयो कहेशे के ए दीक्षा लीये तो भले त्यो पण अमे तो एने ज परणीशुं. पछी ते एक रात्रीमां आठे कन्या परणशे. अने रात्रिए शय्या ऊपर वेसीने आठ स्त्रियोने कहेशे के हुं तो दीक्षा लइश. केमके आ संसार सर्व अनित्य छे, कोइ कोइनी साथे आवनार नथी, स्त्रीयो कहेशे के हे स्वामी ! तमे हमणां दीक्षा लियो नहीं, हमणा तो संसारनुं सुख मल्युं छे, ते सारी रीते भोगवीने पछी दीक्षा लेजो, नहीं तो करसणीना पठे पश्चात्ताप करशो. " जेम कोइ मारवाड देशनो करसणी पोताने घेर गेहुं वावीने पछी मेवाडमां पोताने सांसरे गयो, तेनी सासुए सारा रोटला करीने थालमां मूक्या. ऊपरथी काकब मूकी. ते काकब करसणीने घणी सारी स्वादिष्ट लागी. पछी शालाने पूछ्युं के आ काकब तमोने क्यांथी आवी ? शालाए कह्युं के ए अमारा घरमां नीपजे छे, वनेवीये पूछ्युं—केवी रीते नीपजे छे ? शालाए शेलडी वाववानो विधि देखाड्यो. पछी करसणीए जाण्युं के म्हारे घेर पण हुं वावीश एम निर्धार करी घेर आवीने प्रथम जे गहुंनुं खेत्र वाव्युं हतुं तेने उखेडवा लाग्यो. त्यारे लोकोए कह्युं के आ तुं शुं करे छे ? तेणे कह्युं के हुं एमां शेलडी वावीश. लोको कहेवा लाग्या के आ देशमां पाणी नथी, माटे शेलडी थशे नहीं, तेम छतां जो तने शेलडीज वाववानी इच्छा होय तो एकवार आ गहुंनी

करेली खेती पाकवा दे, पछी शेलडी वावजे एवुं लोकोनुं वचन तेणे मान्यु नहीं, अने शेलडी वावी. ते थोडी ऊगी एटलामा कूवानुं पाणी खुटी गयु, तेथी जे ऊगेली शेलडी हती, ते पण सुकाइ गइ त्यारे पश्चात्ताप करवा लाग्यो, तेम तमे पण छतु सुख मूकीने बीजा नवा सुखनी चाहना करो छो तो पछी पस्ताशो " एवी स्त्रीयोनी वाणी साभली जबू कुमर कहेशे के हुं पूर्वोक्त दृष्टाते पश्चात्ताप करीश नहीं परंतु तमो नहीं समजशो तो तमेज पस्तावो करशो. हु तो ललिताग-कुमरनी परे तमारा फदमा नहीं पडु. तेनी कथा सांभलो–" एक नगरमा एक शेठनो पुत्र ललितागकुमर महारूपवत हतो. तेने एक दिवसे ते नगरना राजानी रूपवती नामा राणीए दीठो त्यारे तेने एकाते बोलावीने तेनी साथे ससार सबधि भोग–विलास करवा लागी एटलामां राजा पण त्यां आव्यो त्यारे भयभ्रात थइने राणीए ते ललितांगकुमरने महेलना खालमां न्हाखी दीधो अने विचार्यु के पछी कहाडी लइश. राणी तो राजानी साथे रमवा लागी, तेथी तेने भूली गइ. ललितांग खालमां भूखे मरतो, कोइ अन्य आवीने एठवाडो न्हांखे ते खाय, अने एठो पाणी पडे ते पीये एवी रींते चार महिना पर्यंत ते खालमा पड्यो रह्यो अने ललितागना मावापे घणोये जोयो पण लाघो नहीं तेथी शोक करवा बेठा एटलामा वर्षाद आव्यो तेथी खालमां पाणी भराणुं ते पाणी कहाडवा सारु खाल खोली. ते खालना पाणीनी साथे ललिताग पण तणातो तणातो नगरनी म्होटी खालमा जइ पड्यो तेने लोकोए देखीने तेना मातापिताने जइ कह्यु मातापिता जइ खालमाथी कहाडी घेर लइ आव्या. त्या मूर्च्छा खाइने पड्यो. शरीर पीलु पडी गयु, हाडका नीकली आव्या, माता पिताए घणा प्रकारना तैलादिक मसल्या त्यारे काइक सावचेत थयो. पछी औषधोपचार करतां करता घणा दिवसे तेनु शरीर

सारुं थयुं. त्यारे वली कपडा प्रमुख पहेरीने बजारमां फरवा निकल्यो, तेने राणीए फरी ओलखीने बोलाव्यो. ते बोल्यो, हवे हुं तमारा फंदमां पडीश नहीं. " एवी रीते आठ स्त्रीयो जुदी जुदी आठ कथाओ संसार सुखनो त्याग न करवा आश्रयी जंबू कुमरने कहेशे. अने जंबू कुमर पण फरी संसारनी असारता बतावनारी जुदी जुदी आठ कथा आठे स्त्रीयोने कहेशे. त्यारे स्त्रीयो प्रतिबोध पामशे. एवामां एक प्रभवो चोर पांचसौ चोरने साथे लइने जंबु कुमरना घरमां आवशे. ते सर्वने विद्याना बलथी अवस्वापिनी निद्रा आपशे. तेथी सर्वने निद्रा आवी जशे. परंतु जंबुकुमरने निद्रा आवशे नहीं. पछी तालां उघाडवानी विद्याथी भंडार खोलीने नवाणुं क्रोड सोना महोरोनी गांठडीयो बांधी तेने लइने चालवा मांडशे. एटलामां जंबुकुमरने यद्यपि द्रव्य ऊपर मूर्च्छा तो बिलकुल नथी, तथापि एवो विचार आवशे के म्हारे तो प्रभाते दीक्षा लेवी छे. अने आजे चोर लोको द्रव्य लइ जशे तो लोक कहेशे के जूओ ! एनुं धन सर्व चोर लोको लइ गया तेथी माथुं मुंडावे छे. एवी रीते धर्मनी निंदा थशे. ते वात सारी नहीं. एवुं चिंतवीने नवकार गणवा लागशे, तेथी पांचसौ चोरोना पग थंभाइ जशे. त्यारे प्रभवाने विचार थशे के आते शुं थयुं ? जोशे तो जंबूकुमरने जागतो देखशे. त्यारे प्रभवो जाणशे के एनी पासे कोइ महा जोरावर विद्या छे. एवुं जाणी जंबूकुमरने कहेशे के म्हारी विद्या तमे ल्यो अने तमारी विद्या मने आपो. जंबूकुमर कहेशे के म्हारी पासे कांइ पण विद्या नथी. अने बीजी विद्या मने खपती पण नथी. मने तो मात्र नवकार मंत्रनो आधार छे. एवो धर्मोपदेश देशे, त्यारे प्रभवो कहेशे के आ नवी परणेली स्त्रीयोनो त्याग करीने तुं दीक्षा शा वास्ते लीये छे ? संसारना सुख भोगवी पछी दीक्षा लेजे. जंबु कहेशे के प्रभवा ! संसारमां सुख छेज क्यां ? के जेने हुं भोगवुं.

संसारनु सुख तो मधुर्बिंदुआ समान छे, तेनी लालचे जीव संसारमां रभले छे " जेम कोइ एक पुरुप भूलथी उजाडमा जइ पड्यो, तेनी पछवाडे एक हाथी दोड्यो, हाथीना भयथी ते नासतो भागतो एक वडनी शाखामा जइ लटकी रह्यो' ते शाखानी नीचे एक कूप छे तेमा चार सर्प्प पोतानु म्होडु फाडीने वेठेला छे, तथा वे अजगर पण म्होडु फाडी वेठा छे, तथा वडना थडने हाथी धूणावी रह्यो छे, तथा जे शाखामा ते पुरुप लटके छे, ते शाखाने एक कालो अने वीजो धोलो एवा वे उदरो कापी रह्या छे, वली तेनी ऊपर एक मधुमाखीनु मध पुडु छे, तेनी मक्षिकाओ उडी उडीने ते पुरुपना शरीरने चटका मारी रहेली छे, एटलामा ते महुआलमाथी एक मधनु टीपु टवक्यु, ते पहेला पुरुपनी जीभने जइ लाग्यु त्यारे ते पुरुपे ऊचो जोवा माड्यु तो तेणे दीठु जे महुआल माहेथी मधुर्बिंदु पडे छे, एवु जाणीने ते टीपानी नीचे म्होडु फाडीने ऊचो राख्यो अने टीपाना स्वादमा मग्न थयो, पोतानी ऊपर पूर्वोक्त अनेक जातना दुःख पड्या छे ते सर्वे भूली गयो एटलामां एक विद्याधर आवीने कहेवा लाग्यो के हे पुरुप ! त्हारु दुःख देखीने मने दया आवे छे माटे आव, म्हारा विमानमा वेशी जा, हु तुजन दुःखमाथी कहाडवा आव्यो छु ते पुरुप वोल्यो के विद्याधर ! आ एक टीपु मधनु म्हारा मुखमा आववा द्यो पछी हु आपनी साथे विमानमा वेसी चालु एम एक टीपु आव्यु, पछी वली पण कह्यु के आ वीजु टीपु आवे तो चालु एवी रीते एकेक टीपाना स्वादमा लोभाणो थको ते विकट स्थानने छोडे नहीं, त्यारे विद्याधरे जाण्यु के एतो एवोज मूर्ख छे, लोभी छे, ए काइ दुःख माथी निकलशे नहीं एवु जाणी तेने त्याज मूकी विद्याधर चाल्यो गयो तेम हे प्रभवा ! आ जीव ससाररूप अटवीमा आयुष्यरूप वृक्ष छे त्यां कुटुवना रसरूप मधुर्बिंदुने खातो खातो आयुष्य खुटावे छे, मोहे

माच्यो थको रहे छे; तेने सद्गुरु आवीने चारित्ररूप विमानमां बेस-वानुं कहे त्यारे संसारी जीव स्त्रीना भोगरूप मधुबिंदुमां लोभायो थको संसारमांथी निकलवा वांछे नहीं. माटे आ अवसर चूक्या तो फरी संसारमां मनुष्य अवतार मलवो महादुर्लभ छे." एवां वचन सांभलीने प्रभवो चोर पण प्रतिबोध पाम्यो अने बोल्यो के हे जंबू! हुं पण त्हारी साथे दीक्षा लइश. पछी जंबूकुमर पोताना माता पिताने प्रतिबोध देशे तथा आठ कन्याओ पण पोत पोताना माता पिताने प्रतिबोध आपशे. तथा प्रभवो पण पांचसो चोरोने प्रति-बोध आपशे, एम सर्व मली प्रभाते पांचसो ने सत्तावीश जनोनी साथे श्रीजंबूकुमर दीक्षा लेशे. एवुं श्रेणिकराजाने श्रीमहावीरस्वामीए कह्युं हतुं ते प्रमाणे नवाणुं क्रोड सोनैया धर्मक्षेत्रोमां खरचीने महा महोत्सव सहित पांचसो ने सत्तावीश जनोनी साथे श्रीजंबूस्वामीए सुधर्मस्वामी पासे दीक्षा लीधी. पछी द्वादशांगी भणी श्रीसुधर्मस्वामीनी पाटे बेठा; केवलज्ञान पाम्या. पोतानी पाटे प्रभवाजीने बेसाडीने पोते मोक्ष गया. ए श्रीजंबूस्वामी छेल्ला केवली थया. कवीश्वर कहे छे के-"वाणिया घणा लोभी थाय छे एवुं लोक एटला माटे कहे छे के जंबुस्वामीना हाथमां केवलज्ञान रूप धन आव्युं, ते बीजा कोइने आप्युं नहीं. छेल्लुं केवलज्ञान एज पाम्या छे, मोक्ष नगरनो दरवाजो बंध करी बेठा माटे लोभी कहेवाणा. तथा श्रीजंबूकुमर सरखो सोभागी कोइ थयो नहीं अने थशे पण नहीं. अने मोक्षरूपिणी स्त्री पण एने परणया पछी बीजाने परणी नथी. तथा एना जेवो कोइ कोटवाल पण नहीं थाय, केमके एणे पांचसो चोरोने साधु बनावी दीधा." श्रीजंबूस्वामी मोक्ष गया पछी दश वस्तु विच्छेद थइ, तेना नाम-एक मनःपर्यवज्ञान, बीजो परमावधि, त्रीजी पुलाक-लब्धि, चोथुं आहारक शरीर, पांचमी क्षपक श्रेणि, छट्ठी उपशम

श्रेणि, सातमो जिनकल्प मार्ग, आठमु परिहार विशुद्धि चारित्र, सूक्ष्म सपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्र ए त्रण चारित्र, तथा नवमु केवलज्ञान अने दशमु मोक्ष-गमन जबूस्वामी सोले वर्ष गृहस्थावासमा, वीस वर्ष व्रतपर्यायमा अने चुम्मालीस वर्ष केवलपर्यायमां, एव सर्वायु एसी वर्षनु भोगवीने श्रीमहावीरस्वामीथी चोसठमा वर्षे मोक्ष गया

श्रीप्रभवस्वामीनो सक्षिप्त वृत्तान्त—

त्रीजे पाटे श्रीप्रभवस्वामी कात्यायन गोत्री हता, तेमणे एक दिवस पोताना गच्छमां तथा श्रीसघमा उपयोग दीधो के-हु कोने आचार्य करु ? ते उपयोग देता गच्छमां तथा सघमा कोइ पोतानी पाटे बेसवा योग्य पुरुष दीठामा न आव्यो. त्यारे अन्य मतोमा उपयोग दीधो तेमा सज्जभवभट्टने दीठो, त्यारे श्रीप्रभवस्वामीए वे साधुने सीखावीने सय्यभवने घेर मोकल्या, ते सय्यभवना घेर जइने वोल्या " अहोकष्टमहोकष्ट, तत्व न ज्ञायते पुन " जूओ ! आ कष्ट करे छे पण तत्वने जाणतो नथी, एवु साभली तत्काल खड्ग लइने सय्यभव गुरुनी पासे आव्यो अने तरवार कहाडीने वोल्यो के अरे ! मने देखाड, तत्त्व केवु छे ? त्यारे गुरुए विचार्यु के माथो कपाता पण तत्त्व कहेवामा दोष नथी एम चिंतवी गुरु वोल्या-अरे ! तु यज्ञ करे छे ते यज्ञना कीलकनी नीचे श्रीशातिनाथजीनी प्रतिमा छे, ते शातिकारी छे तेनाथी शांति थाय छे परतु यज्ञथी काइ पण थतु नथी ते साभली तेणे त्याथी प्रतिमा कहाडी प्रतिवोध पाम्यो अने पोतानी स्त्री गर्भवती हती तेने छोडीने दीक्षा लीधी श्रीप्रभवस्वामी त्रीश वर्ष गृहस्थ पणे रह्या तथा पचावन वर्ष पर्यंत चारित्र पाल्यु सर्व मली पच्यासी वर्षनु आयुष्य भोगवी अने श्रीसय्यभवने पोतानी पाटे बेसाडीने महावीरस्वामीथी ७५ वर्ष पछी देवलोक गया.

श्रीशय्यंभवसूरिजी अने मनकमुनिनो संक्षिप्त वृत्तान्त—

चोथे पाटे श्रीसय्यंभवसूरि वच्छगोत्रीया पोतानी गर्भवती स्त्रीने छोडीने आव्या हता, तेने पाछलथी पुत्र थयो. तेनुं नाम मनक दीधुं. ते छोकरो एक दिवस पाठशालामां गयो, त्यां छोकराओनी साथे भणवा बेठो त्यारे बीजा छोकराओए मेणुं मार्युं के हे निष्पितृक ! अमो तने जाणीए छिये, त्हारो बाप तो छेज नहीं. आ वात सांभलीने छोकरो दुःखी थयो थको पोतानी माता पासे आव्यो. माताने पूछ्युं के माता ! म्हारो पिता छे के नथी ? त्यारे माताए कह्युं. के वत्स ! बाप विना पुत्र क्यांथी होय ? त्हारो बाप सय्यंभवभट्ट छे. छोकराए पूछ्युं, ते क्यां छे ? माताए कह्युं, त्हारा बापने जैनना साधुओ भोलवीने लइ गया; तेथी तेणे दीक्षा लीधी छे. एवुं सांभली जे गाममां सय्यंभव सूरि हता ते गामनी बाहेर ते मनक पण आव्यो, तेने सामा ठंडिले जाता गुरु मल्या. तेमने मनके पूछ्युं के महाराज ! अहीं सय्यंभवसूरि छे ? गुरु बोल्या—त्हारे शुं काम छे ? मनके पोतानी सर्व हकीकत कही, अने कह्युं के हुं तेमनो पुत्र छुं. गुरुए पण कांइक उत्तर आपीने उपासरे मोकली दीधो अने ठंडिलथी पाछा आव्या बाद गुरुए प्रतिबोध दीधो. मनके कह्युं के मने दीक्षा आपो. ते सांभली गुरु बोल्या म्हारुं तथा त्हारुं पिता-पुत्रपणुं तुं बीजा साधुओने नहीं कहे तो हुं तुजने दीक्षा आपुं. त्यारे मनक बोल्यो, हुं कोइने कहीश नहीं. गुरुए दीक्षा आपी पण मनकनुं आयुष्य स्वल्प जाण्युं. त्यारे गुरुए सिद्धांतोमांथी उद्धरीने 'दशवैकालिक' सूत्र मनकना माटे बनाव्युं. ते सूत्र छ महिनामां मनक भणी गयो, छ महिना झाझेरुं चारित्र पालीने देवलोक गयो. पछी श्रावको मनकना शरीरने दाग आपी गुरुनी पासे आव्या. ते वखते यशोभद्र प्रमुख बीजा घणा शिष्यो गुरुनी पासे बेठेला हता. गुरुए श्रावकोने धर्मो-

पदेश आप्यो. पण गुरुनी आंखोमा आसु आवी गया, ते देखीने यशोभद्र सहित सघना माणसो बोल्या–हे पूज्य ! आपना अनेक साधुओ परलोक जाय छे परतु आपनी आखमाथी आसु पडता क्यारे पण दीठा नथी अने आज आसु केम पड्या ? त्यारे गुरु बोल्या–मोहथी आसु पड्या सघे पूछ्यु–मोहनु कारण शु छे?, त्यारे गुरु बोल्या–ए अमारो ससारीपणानो पुत्र हतो परतु स्वल्प काल चारित्र पाल्यु, तेथी मोह आवी गयो त्यारे साधुओ बोल्या–महाराज ! तमे अमने क्यारे पण कह्यु नहीं के ए अमारो पुत्र छे ? त्यारे गुरु बोल्या–हु जो तमने एवु कहेत के ए म्हारो ससारीपणानो पुत्र छे तो पछी तमे एनी पासे वैयावच्च करावत नहीं, तेथी एने शो लाभ थात ? माटे एना अल्प आयुष्यमा एटलो लाभ जाणीने तमोने कह्यु नहीं पछी गुरु दशवैकालिकने पाछु सिद्धातोमा मलाववा लाग्या त्यारे सघे विनति करी के–स्वामिन् ! ए छोटो ग्रथ छे, ते आगल जता अल्पबुद्धि अने अल्पायुष्यवाला लोकोने घणोज उपकारी थशे माटे एमज रहेवा द्यो ते साभली एमज राख्यो पछी सय्यभवसूरि अट्टावीश वर्ष गृहस्थपर्यायमा, अग्यार वर्ष दीक्षापर्यायमा, तथा त्रेवीश वर्ष युगप्रधानपदवीमा, एव सर्वायु बासठ वर्षनो भोगवीने अने पोतानी पाटे श्रीयशोभद्रसूरिने बेसाडीने श्रीमहावीर स्वामीना निर्वाणथी अट्ठाणुमा वर्षे स्वर्गलोके गया

श्रीभद्रबाहु अने वराहमिहिरनो सक्षिप्त वृत्तान्त—

पाचमा पाटे श्रीयशोभद्रसूरि तुगीयायणगोत्रीया बेठा तेओ बावीस वर्ष गृहस्थ पर्यायमा, चौद वर्ष व्रतपर्यायमा, अने पचास वर्ष युगप्रधान पदवीमा, एव सर्वायु छयासी वर्षनो भोगवीने महावीर प्रभुथी १४८ वर्ष पछी देवलोके गया तेना पाटे बे शिष्य बेठा

तेमां एक तो आर्यसंभूतिविजयजी माढरगोत्रीया अने बीजा आर्य श्रीभद्रबाहुस्वामी पाईण (प्राचीन) गोत्रीया, तेमांथी भद्रबाहुजीनो संबंध आवी रीते छे के प्रतिष्ठानपुरना रहेवासी एक वराहमिहिर अने बीजा भद्रबाहु ए बे ब्राह्मण भाइओ हता. तेमणे श्रीयशोभद्रसूरिना पासे धर्मदेशना सांभलीने दीक्षा लीधी, चौद पूर्व भण्या पछी गुरुए विनीतपणानो गुण जोइने भद्रबाहुने आचार्यपद आप्युं. अने वराहमिहिरने अविनीतपणाना लीधे आचार्यपद आप्युं नहीं. कारण के जे आचार्यपद गणधरोए धारण कर्युं, ते आचार्यपद जो अविनीत अयोग्यने आपे तो ते गुरु जे आचार्य पदनो आपनार होय ते पण अनंत संसारी थाय. हवे भद्रबाहुने आचार्यपद मल्युं जोइने वराहमिहिर कुपित थयो. गच्छथी बाहेर नीकलीने गुरुनी ऊपर द्वेष धरवा लाग्यो. चौदे पूर्व भणेलो हतो तेथी नवीन ज्योतिषना 'वाराहीसंहिता' प्रमुख ग्रंथो बनावी अने साधुनो वेष मूकीने ब्राह्मणनो वेष धारण करी, लोकोनी आगल निमित्त कहीने आजीविका चलाववा लाग्यो. तेने लोक पूछे के एटलुं तमे क्यांथी भण्या ? त्यारे लोकोनी आगल एवुं कहे के में एक दिवस नगरनी बाहेर लग्न कुंडली मांडी हती. ते कुंडलीने भांग्या विना एमज पाछो चाली निकल्यो. पछी ज्यारे याद आव्युं त्यारे मटाडवा पाछो गयो अने त्यां जइने जोउं तो कुंडलीमां सिंहलग्ननो स्वामी सिंह पूंछडुं बधारीने ऊपर ऊभो छे. पछी में लग्ननी भक्तिना लीधे म्हारी छाती काठी करीने सिंहनी नीचे घुसीने लग्न भुसाडी न्हांख्युं. म्हारी भक्ति जोइने सिंहनो अधिपति सूर्य आवीने म्हारा ऊपर तुष्टमान थयो अने बोल्यो के जे मांगे ते त्हने आपुं त्यारे में कह्युं मने नक्षत्रादिकनो चार खरे खरो जेवो छे तेवो बतावो. पछी सूर्य पोताना ज्योतिषना मंडल चारमां मन्हे लइ गयो. त्यां मन्हे सर्व चार बताव्या, उदयास्तचक्र बताव्युं, ते ज्योतिषना बलथी

हुं त्रण कालनी वात जाणु छु. एवी कल्पित वातो कहीने लोकोमां पुजाय, राजा प्रमुखने निमित्त कहीने खुशी करे अने चमत्कार पमाडे एम घणा लोकोने मिथ्यात्वी कर्या. एवा अवसरमा श्रीभद्रबाहुस्वामी पण ते नगरमा आव्या तेमनो श्रावकोए म्होटा महोत्सव सहित गाममा प्रवेश कराव्यो पण वराहमिहिरथी ते सहन थयु नहीं त्यारे तेणे विचार्युं के एनु मान खडित करु तो सारी वात थाय एवु चिंतवी एक दिवस राजसभामा जइने राजाने कहेवा लाग्यो के आजथी पांचमां दिवसे पूर्व दिशाथी वर्षाद आवशे ते त्रीजे पहोरे वरषशे आ हु कुडालु करु छु, तेना वचमा बावन पलनु एक माछलु पडशे, एवु निमित्त कह्यु ते वात श्रावकोए आवीने भद्रबाहु स्वामी आगल कही के-स्वामिन्! आ वराहमिहिरे कहेली वात सत्य छे किं वा असत्य छे? त्यारे भद्रबाहु बोल्या-काइक सत्य छे अने काइक असत्य छे केम के पूर्व दिशाथी नहीं पण ईशान कोणथी वर्षा आवशे ते छ घडी दिवस पाछलो रहेशे, त्यारे पडशे पण त्रीजो पहोर कह्यो ते भूठ छे वली बावन पलनो नहीं परतु वायुथी सुकाइ जशे माटे साडी एकावन पलनो मत्स्य रहेशे ते कुडालाना मध्यभागमा नहीं पण कुडालानी कोर ऊपर एक बाजुए पडशे माटे वराहमिहिर मिथ्यात्वना योगथी आटलु भूलु बोले छे ए वात पण श्रावकोए राजाने कही राजा बोल्यो-साच भूठनी खबर हवे तरत पाच दिवसमा जणाइ आवशे एटलामा पाचमो दिवस आव्यो, त्यारे वर्षाद वरस्यो अने श्रीभद्रबाहु स्वामीना कहेवा प्रमाणे सर्व वात सत्य थइ त्यारे राजा प्रमुख सर्व लोकोए श्रीभद्रबाहु स्वामीनु ज्ञान वखाण्यु अने वराहमिहिरनी काइ साची काइ भूठी वात पडी तेथी तेनी मान्यता कम थवा लागी एक दिवस राजाने घेर पुत्रजन्म थयो तेनी वराहमिहिरे जन्मपत्रिका बनावीने तेमा कुमरनो एकसो वर्षनु आयुष्य बताव्यु

त्यारे सर्व लोक अक्षत लइने राजाने वधाववा आव्या. अन्यदर्शनी योगी संन्यासी प्रमुख सर्व आशीर्वाद आपवा आव्या, परंतु एक श्रीभद्रबाहु गया नहीं. त्यारे वराहमिहिर राजाने कहेवा लाग्यो के राजन् ! तमारे घेर पुत्रजन्म थयो ते भद्रबाहुने रुच्यो नहीं. तेथी ते आशीर्वाद आपवा आव्या नहीं. ए वात पण श्रावकोए जइ श्रीभद्रबाहुस्वामीने कही. त्यारे भद्रबाहु बोल्या—वारंवार केम जवाय. एकवार जइशुं. श्रावको बोल्या केम ?, गुरु बोल्या आठमा दिवसे रात्रीना वखते बिलाडीना योगथी कुमरनो मरण थशे, त्यारे आवीशुं. ए वात श्रावकोए जइ राजाने कही, राजाए सर्व बिलाडीयोने आखा गाममांथी बाहेर कहाडी मूकावी तथा बिलाडी कोइना घरमां अथवा गाममां न आवी शके, तेवा सेंकडो गमे जापता कर्या. परंतु आठमा दिवसे दैवयोगे दासीना हाथथी कमाडनी ठांसणी बालकना माथा ऊपर आवी पडी तेथी बालक मरण पाम्यो. त्यारे वराहमिहिर बोल्यो बिलाडीथी तो मरण पाम्यो नहीं ? पछी गुरुए ठांसणीनी ऊपर बिलाडीना मुखनो आकार लाकडामां कोतरेलो हतो ते देखाड्यो. तेथी वराहमिहिर लज्जा पाम्यो. अने त्यांथी निकली अन्यत्र स्थानके जइ अज्ञानकष्टथी मरण पामीने व्यंतर देवता थयो. तेणे आवी श्रीसंघमां मरकीना रोगनो उपद्रव कर्यो, तेथी घणा लोक मरवा लाग्या. त्यारे श्रीसंघनो उपद्रव टालवा माटे महा महिमावंत " उवसग्गहर " स्तोत्र गुरुए बनाव्युं. तेनो घर घरना विषे गणणो शरु थयो, तेथी सर्व उपद्रव दूर थइ गयो. पछी सर्व श्रावकोना घरमां जो थोडुं काम होय तो पण ते उवसग्गहरनो पाठ करे तेथी काम पार पडी जाय, एम करतां करतां छेवट लोकोमां एवी चाल पडी गइ के जो गाय दूध न आपे तो पण उवसग्गहर-स्तोत्र गणे त्यारे गाय पण दूध आपती थाय. तेमज कोइक स्त्री छाणा वीणवा गइ होय तेने कोइ

बीजो माणस छाणानो टोपलो उपडावनार न मले तो ते पण उवसग्गहरनो पाठ करे तेथी नागेन्द्रने आवी तेनो टोपलो उपडाववु पडे तेमज कोइ स्त्री रोटला करवा बेठी होय अने तेनो छोकरो झाडे गयो होय त्यारे ते पण उवसग्गहरनो पाठ करे, तेथी तरत नागराजाने त्या आवीने ते छोकराने शौच कराववु पडे, उवसग्गहरस्त्रोत्रथी नागराज पासे लोग एवा नीच कामो करावचा लाग्या त्यारे नागराज खीज्या अने गुरुपासे आवी विनति करी के-महाराज ! सघथी हु एक क्षणमात्र पण अलगो रही शकतो नथी लोको तो पूर्वोक्त हलका हलका काम म्हारी पासे करावे छे, गुरुए जाण्यु के ए निर्भाग्य लोको देवने खीजावशे तो उलटो अनर्थ थइ पडशे माटे आ स्तोत्र भडारी मूकवु युक्त छे नागेन्द्रे कह्यु के आप छट्ठी गाथा भडारी मूको अने शेष पाच गाथाथीज हु म्हारे स्थानके बेठो थको सर्व उपद्रव टालीश एवु साभलीने गुरुए छट्ठी गाथा भडारी दीधी श्रीभद्रबाहु स्वामीना करेला आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख अनेक ग्रथो हालमां विद्यमान छे ए श्रीभद्रबाहुस्वामी ४५ वर्ष गृहस्थ पर्यायमा, १७ वर्ष व्रतपर्यायमा, अने १४ वर्ष युगप्रधानपदमा, एव सर्वायु ७६ वर्षनो भोगवीने श्रीमहावीर स्वामीथी एकसो सितेर वर्ष पछी देवलोके गया तथा बीजा श्रीसभूतिविजयजी जाणवा ते ४२ वर्ष गृहस्थ पर्यायमा, ४० वर्ष चारित्रपर्यायमा, अने आठ वर्ष युगप्रधानपदमा, एव सर्वायु ९० वर्षनो भोगवीने स्वर्गलोकमा गया ए छट्ठो पाट

श्रीथूलिभद्रजी अने वररुचिनो सक्षिप्त वृत्तान्त—

श्रीसंभूतिविजयजी अने श्रीभद्रबाहुस्वामीना पाटे आर्य थूलिभद्रजी गौतम गोत्रीया थया तेमनो सबध आवी रीते के-पाडलीपुर नगरमा नवमो नदराजा राज्य करे छे, तेनो शकडाल नामे प्रधान

छे. तेनी 'लाछलदे' नामा भार्याना वे पुत्र थया. एक थूलिभद्र अने वीजो सिरियो. एक दिवस वररुचि नामा ब्राह्मण राजा पासे आव्यो. तेणे एकसो आठ काव्य नवा बनावीने संभलाव्या. एम ते ब्राह्मण नित्य आवीने एकसो आठ काव्य नवा नवा बनावीने राजा आगल कहे पण ज्यारे प्रधान तेनी प्रशंसा करे त्यारे राजा दान आपे. नहीं कां दान आपे नहीं. अने प्रधान तो वररुचिने मिथ्यात्वी जाणी तेनी प्रशंसा करे नहीं. त्यारे वररुचिभट्टे प्रधाननी स्त्री लाछलदेने कह्युं. स्त्रीए प्रधानने कह्युं के विचारा ते भट्टने कांइक अपावजो. त्यारे प्रधानना मनमां तो अपाववानो विचार न हतो पण स्त्रीना कहेवाथी राजसभामां कह्युं के ए काव्य सारा छे त्यारे राजाए संतुष्ट थइने नित्य तेने एकसो आठ सोनैया आपवा मांड्या. एम घणा दिवस देतां थया त्यारे प्रधाने जाण्युं के आवी रीते तो सर्व धन नाश थइ जशे. एवुं चिंतवीने पोतानी सात पुत्रीयो छे ते एवी बुद्धिमान् छे के पहेली पुत्री तो एकवार कांइ काव्य प्रमुख सांभले तो ते काव्य तेने मुखपाठ थइ जाय अने फरी तेनो पाठ कही संभलावे. एमज वीजी पुत्री वे वार सांभले तो तेने मुखपाठ थइ जाय. त्रीजी त्रणवार. चोथी चारवार एम यावत् सातमी सात वखत सांभलीने पाठ पाछो कही संभलावे. एम सात पुत्रीयो महा चतुर छे. तेने सीखावी मूक्युं के तमे राजसभामां एवुं कहेजो के ए काव्य जूना छे. अमोने आवडे छे. एम कही मुखपाठे संभलावजो. प्रभाते वररुचि पण एकसो आठ काव्य बनावीने सभामां आवी कहेवा लाग्यो, ते वखते प्रधान बोल्यो के महाराज! आगलना आपणा वडेरा नंदराजानी पासे कहेला ए काव्यो छे ते नित्य आवी कहे छे. ए काव्यो तो सर्व म्हारी पुत्रीयोने पण आवडे छे. त्यारे राजाए पुत्रीयोने बोलावी सर्व काव्य कहेवराव्या. ते साते जणीए अनुक्रमे एक वीजानी पाछल मुखपाठे कही संभलाव्या. त्यारे

राजाए भट्टने निर्भ्रंछना करी कहाडी मूक्यो पछी ते वररुचिए गगा-नदीमा एक यंत्र गोठवीने तेनी कल ऊपर छानो पाचसौ सोना म्होरोनो दडो नित्य मूकी आवे, अने प्रभाते लोक भेला करी त्या जइ गगानी स्तुतिना नवा काव्य कही कल खटकावे के पाचसौ सोना म्होरोनो दडो हाथमा आवी पडे ते कौतुक जोइने लोको बोलवा लाग्या के जुओ ! राजाए आपवानु बध कर्युं तो पण आ पडितने गगादेवीज द्रव्य आपे छे ए वात राजाए साभली त्यारे प्रधानने कह्यु के आपणे पण जोवा चालीए, प्रधाने कह्यु आवती काले चालीशु पछी प्रधाने त्या छाना छूपा माणसो बेसाड्या ते ज्यारे साजनी वखते भट्ट सोना म्होरोनी पोटली यत्रमा मूकी आव्यो त्यारे ते छाना बेठेला माणसोए पोटली कहाडी लइने प्रधानने आपी प्रभाते राजा प्रमुख सर्व लोको जोवा गया त्यारे ते वररुचि पण गगादेवीनी स्तुति करी घणा जोरथी कल दबावे छे, तो पण हाथमा काइ आवतु नथी त्यारे राजा बोल्यो, आम केम थयु ? ते वखते प्रधाने सर्व प्रपच प्रगट करीने पोटली बतावी पाछी भट्टने सोंपी दीधी. तेथी लोकोमा भट्टनी घणी निंदा थइ भट्ट मत्री ऊपर द्वेष करवा लाग्यो एवा अवसरमा प्रधानना छोकरा सिरियानो विवाह मडाणो त्यारे प्रधानना घरमा शस्त्र प्रमुख अनेक तरेहनी तैयारीयो देखीने भट्टे एक दुहो बनावी पोतानी पासे भणवा आवनार छोकराओने शिखाव्यो के "नदराय जाणे नहीं, जे सिकडाल करेसि । नदराय मारी करी, सिरियो रज्ज ठवेसि ॥ १ ॥" ए दुहो छोकरा राजाना महेल पासे आवीने कहेता थका निकल्या, राजाए भट्टने पूछ्यु आ वात केम छे ? भट्टे कह्यु–तमे चोकसी करावो सर्व जातिना शस्त्र तैयार थाय छे राजाए चोकसी करावी युद्धसामग्री जाणीने कुपित थयो, अने निरधार कर्यो के सकडालना सर्व कुटुबने मरावी न्हाखवु जोइए आ वात सकडाले जाणी त्यारे

राजा पासे आव्यो, राजाए सकडालने जोइ म्होडुं फेरवी लीधुं त्यारे प्रधान घेर आवीने सिरियाने कहेवा लाग्यो के—म्हारी वात सांभल. ज्यारे हुं जइ राजाने नमस्कार करुं ते वखते तुं म्हारुं मस्तक तरवारथी कापी नाखजे. ए वात घणीज महेनतथी सिरिए मान्य करी. पछी सकडाले राजाने प्रणाम कर्यो. राजाए म्होढुं फेरवी लीधुं. प्रधाने पोताना मुखमां तालपुट विष न्हांखी लीधो. सिरियो वोल्यो के ' जे कोइ राजानो द्वेषी होय तेने तो मारवोज जोइए ' एवुं कहीने तरवार मारी तेथी मस्तक कपाइ गयुं. राजा घणो खेद करीने पछी संतुष्ट थइ सिरियाने कहेवा लाग्यो के त्हारा पितानो अधिकार तुं ले, सिरियो वोल्यो—म्हारो म्होटो भाइ थूलिभद्र छे तेने अधिकार आपवो जोइए, राजाए पूछ्युं ते क्यां छे ? त्यारे सिरिए कह्युं म्हारो भाइ न्हानपणमां शास्त्र वांचवा ऊपर कालनिर्गमन करतो हतो ते परण्यो हतो पण पोतानी स्त्री पासे जतो नहीं. तेथी म्हारा मातपिताए जाण्युं के ए संसारनी कला शीखशे नहीं एवुं विचारीने कोशा वेश्याने कला शीखववा माटे सोंप्यो छे, तेने वार वर्ष थया. वेश्याने त्यांज लोभाइ गयो छे. वार क्रोड सोनैया खर्ची दीधा. माटे तेने वोलावीने अधिकारी करो. राजाए थूलिभद्रने तेडवा माटे छडीदार मोकल्यो, त्यारे वेश्या वोली राजा पासे म जाओ. केम के जाशो तो फरी राजा तमोने म्हारी पासे आववा देशे नहीं अने म्हाराथी पण तमारा विना कोई रीते रहेवाशे नहीं, माटे तमारे जावुं न जोइए. त्यारे थूलिभद्र वोल्यो के एक तो म्हारा पितानुं मरण थयुं छे. अने वीजो वली राजानो हुकम आव्यो छे ते फरी शके नहीं, तो पण एकवार तने मलवा माटे तो जरूर आवीश. एवुं कहीने पोताने घेर आव्यो. भट्टना प्रपंचनी सर्व वात तथा पिताना मरणनी सर्व वात सांभलीने पछी राजा पासे गयो. राजाए तेने प्रधान पद ग्रहण करवा कह्युं. थूलिभद्र वोल्यो, विचारीने ग्रहण करीश.

राजाए कह्यु–तुरत विचारी ले पछी राजानी ज अशोकवाडीमा जइने विचार कर्यो के–आ ससार तो मतलबी छे, कोइ कोइनो सगो नथी म्हारा पितानी जेवी अवस्था थइ तेवी ज अवस्था म्हारी पण एक दिन थवा सभव छे माटे राज्यना कामना आ लोकनु पण सुख नथी अने परलोकमां तो नरकनी प्राप्ति थाय एम ससारने असार जाणी, वैराग्यरग रगित थइ, रत्नकबलनो ओघो बनावी, लोच करी, साधु थइने राजाना पासे जइ धर्मलाभ आप्यो अने तरत त्याथी निकल्यो राजाए जाण्यु के आ व्यसनी छे माटे वेश्याने घेर जशे एवु विचारीने जोवा लाग्यो त्यारे ते तो कोइ महादुर्गंधित गलीमाथी थइने गाम बाहेर निकली गया पण दुर्गंधथी नाक ढाक्यु नहीं. तेथी राजाए जाण्यु के ए खरेखरो वैराग्यवान् छे पछी थूलिभद्रजीए जइने श्रीसभूतिविजयजीनी पासे दीक्षा लीधी अने राजाए सिरियाने मत्रीपदनी म्होर आपी

चोमासु आव्यु त्यारे श्रीथूलिभद्रजी गुरुना आदेशथी कोशावेश्याने घेर चोमासु रह्या अने बीजो साधु सिंहनी गुफामा चोमासु रह्या, तथा त्रीजो शिष्य सर्पना बिल ऊपर चोमासु रह्या चोथो साधु कुवाना बचला काष्ट ऊपर चोमासु रह्या, ए चारेमाथी थूलिभद्रजी वेश्याने घेर चामासु रह्या छे, त्या चोमासु निर्गमन करवु महा कठण छे, एक तो वर्षाऋतु छे, ते कामनी जगाववा वाली छे केमके जे कालमा मेघ गर्जारव करे, बीजली चमके, मोर बोले, पपइया पिउ पिउ करे, एवा कालमा भोगनी वाछा घणी थाय छे वली रहेवाने चोरासी आसनचित्रित चित्रशालावाली जगा, अने खावाने षड्रस भोजन नित्य मले, ए सर्व भोगना अग मले अने जो स्त्री रागवाली न मले तो सर्व निष्फल थाय परतु अहीं थूलिभद्रजीने तो कोशा वेश्या सरखी सर्वमा अग्रेसर रागवाली स्त्री मली छे, तेणे म्होटी उमेदथी चित्र शालामा उतार्या, अनेक प्रकारना भोजन कराव्या, अनेक तरेहना

हाव भाव कर्या, फूल ऊपर नाटक कीधुं, भोग विलासना वचन बोली, तथापि ए महापुरुषनुं एक रोम पण डग्युं नहीं. छेवटे वेश्या बोली के हुं आटला विलास करुं छुं तेनुं कांइ प्रत्युत्तर तो आपो. मुनिए उत्तरमां कह्युं के हे भोली! धर्म विना सर्व अवतार निष्फल छे. इत्यादिक उपदेश सांभलीने कोशा श्राविका थइ, एक राजाना हुकुमदार पुरुष विना बीजा कोइ पण पुरुषने घरमां पेसवा देवो नहीं एवो अभिग्रह लीधो. कोशाने श्राविका बनावी, पछी चोमासुं पूरण थयां थूलिभद्र मुनि गुरु पासे आव्या. अने बीजा त्रण साधु पण आव्या, तेमने तो गुरुए किंचित् उठीने कह्युं के हे दुक्करकारक! भले आव्या अने थूलिभद्रजीने तो आवतो देखतां ज तत्काल गुरु उठी ऊभा थइने बोल्या—भले आव्या, अहो! दुक्करकारक दुक्कर कारक, एवुं सांभली सिंहगुफावासी साधुए अमर्प आणीने विचार्युं के आ गुरु पण धनवंतना गरजु देखाय छे. केमके जे खूब माल खाइने मातो थइ आव्यो तेने तो अहो 'दुक्करदुक्करकारक' एवुं कह्युं. अने में एवुं कठण तप कर्युं, तेने तो 'दुक्करकारक' एटलुंज कह्युं, एवुं जाणीने आवता चोमासे सिंहगुफावासी साधुए गुरुने कह्युं के हुं वेश्याने घेर चोमासुं करवा जइश. गुरुए कह्युं—वत्स! कामदेवनी राजधानी सरखा घरमां जइ चोमासुं करवानुं काम अत्यंत कठण छे, तुं भ्रष्ट थइ जइश माटे त्हारे जावुं नहीं. तो पण तेणे मान्युं नहीं, अने कोशाने घेर चोमासुं रहेवा गयो. त्यां एक सामान्य जग्या वेश्याए तेने रहेवा माटे आपी अने तेनी पासे सामान्य वेष करीने बेठी, तो पण तेनुं रूप देखीने मुनि मुनिपदथी डगी गयो अने भोग माटे प्रार्थना करवा लाग्यो, त्यारे वेश्या बोली—धन विना तमारी कामना सिद्ध न थाय. साधुए कह्युं के धन क्यांथी लइ आवुं? वेश्या बोली—नेपाल देशनो राजा साधुओने रत्नकंबल आपे छे त्यांथी लइ

आवो साधु भोग करवानो मतलबी थयो माटे चोमासाना दिवसोमा कीचड खूंदतो खूंदतो नेपाल देशमा गयो. त्याना राजा पासेथी रत्नकंबल लइने पाछो वल्यो रस्तामा चोरोनो सूडो बोल्यो के-" लक्ष याति " चोरोए सूडानी वाणी साभलीने साधुनी पासेथी रत्नकंबल पडावी लीधो फरी पाछो राजा पासे जइ कहेवा लाग्यो के कंबल चोरोए लुटी लीधो त्यारे राजाए वासनी लाकडीमा रत्न कंबल मूकीने दीधो पाछो फरता वली पण रस्तामा सूडो बोल्यो " लक्ष याति " ते चोरोए साभल्यु. परंतु कंबल दीठामा न आवी, तो पण चोरोए जाण्यु के अमारो सूडो झूठु बोले नहीं, तेथी मुनिने कह्यु तमारी कंबल अमे लइशु नहीं, पण सत्य कहो, के तमारी पासे कंबल छे के नथी ? मुनिए सत्य कह्यु, चोरोए छोडी दीधो मुनिए रत्नकंबल लावीने वेश्याने दीधो, वेश्याए स्नान करी कांबलथी शरीर पुछीने खालमा न्हाखी दीधो ते जोइ साधु बोल्यो, हे भोली ! एवा अमूल्य रत्नकंबलने खालमा केम न्हाखी दीए छे ? वेश्या बोली अरे मूर्ख ! तु पण शु करे छे ? के आ महा दुर्लभ इहलोकमा अने परलोकमां सुखकारी रत्नकंबलथी पण अत्यंत अधिक मूल्यवान् एवु चारित्र रूप रत्न छे तेने मलमूत्रथी भरेलु एवु जे म्हारु शरीररूप दुर्गंधित खाल तेमा न्हाखवा तैयार थयो छे ? माटे तु म्हाराथी अधिक मूर्ख देखाय छे एवु साभली प्रतिबोध पामी, ते साधु पाछो गुरुनी पासे आवीने फरीथी चारित्र लइ शुद्ध थयो

एक दिवसे राजाना रथकारे कोशा वेश्याने घणीज स्वरूप वाली साभली तेथी तेनी पासे जवानी इच्छा थइ पण राजाना हुकुम विना बीजाने वेश्या राखे नहीं एवो तेनो नियम जाणीने रथकारे राजाने कोइ पोतानी कला बतावीने राजी कर्यो त्यारे राजा प्रसन्न थइने बोल्यो के-मांग जे तु मागे ते हु आपु रथकारे कोशानी

सांगणी करी, राजाए हुकम आप्यो अने कोशाने रथकार सोंप्यो. कोशा नित्य प्रत्ये रथकारना पासे श्रीथूलिभद्रजीना गुण गान करे, ते जोइ रथकारे जाण्युं के हुं एने कोइ कला वतावुं तो ए म्हारा गुण जाणशे ने म्हारी स्तुति पण करशे. एवुं चिंतवीने गोखमां बेसी एक वाणथी सात केरीनो झुमखो वींध्यो तथा तेनी पछवाडे वली बीजुं बाण सांध्युं एम एकेकनी पछवाडे बाणो सांधीने गोखमां बेठा थकां ज आंबानी लूंब तोडीने वेश्याने आपी दीधी, अने कहेवा लाग्यो के जो आ म्हारी कला केवी छे ? त्यारे कोशावेश्याए एक राइना दाणानो ढगलो करी तेना ऊपर फूल सहित एक सूइ ऊभी राखीने तेनी ऊपर नाटक कर्युं. ते नृत्य जोइने रथकार अत्यंत खुशी थइ गयो अने कहेवा लाग्यो के मांग मांग हुं त्हारी ऊपर संतुष्ट थयो छुं. कोशाए कह्युं तमे केवो तमासो जोयो, के जेथी खुशी थइने म्हारा ऊपर प्रसन्न थया ? आ में जे सूइनी अणी ऊपर नृत्य करी वताव्युं एवी कलाओ जो शीखवा बेसीए तो हजारो शीखी शकाय छे. तेमज आपें जे आम्रनी लूंब तोडी, ए पण शीखवुं सहेल छे. एमां कांइ कठण नथी, अभ्यास करवाथी बधी कला शीखी शकाय तेवी छे. परंतु म्हारा जेवी स्वरूपवाली स्त्री पासेनी पासे ऊभी रहेली हती, अने वली चोमासाना दिवस हता, तेमज कामने जागृत करनारी एवी आ चित्रशाला हती तथा शरीरने पुष्टीना करनारा, अने मन्मथने उत्तेजन आपनारा एवा घणा श्रेयमां श्रेय भोजन मलता हता ते आरोगीने रात्रि दिवस म्हारी पासे रहेता. तेम हुं पण तेमना ऊपर मोहित थई हमेश सराग दृष्टीथी बहु प्रीतिपूर्वक विषयसेवन करवानी याचना करती हती. आटलो अनुकूल योग छतां एक क्षणमात्र पण जेनुं मन चलायमान थयुं नहीं एवी कला श्रीथूलिभद्रजीनी पासे हती, ते शीखवी घणीज कठण छे. ---महा मुनिवरना आगल में घणा प्रकारना चाला कर्या तो पण ते

महापुरुष किंचिन्मात्र डग्या नहीं धन्य छे एमना मातपिताने के जेना कुलमां एवो पुरुषरत्न उत्पन्न थयो, एवो उपदेश आपी रथकारनु मन वैराग्य तरफ वालीने श्रीथूलिभद्रजी पासे मोकल्यो, तेणे पण थूलिभद्रना पासे दीक्षा लीधी

हवे ते समयमा बार वर्ष पर्यंत काल पड्यो त्यारे त्या सर्व मुनिराजो अग्यार अगना जाणनारा रह्या, पण द्वादशागीना जाण नारा कोइ न रह्या त्यारे सर्व सघे बे मनुष्य मूकीने श्रीभद्रबाहु स्वामीने बोलाव्या, भद्रबाहु स्वामीए कह्यु म्हे प्राणायाम ध्यान चालु करेल छे माटे म्हाराथी आवी शकाय तेम नथी तेमने श्रीसघे फरीथी कहेवराव्यु के महाराज ! जे श्रीसघनी आज्ञा न माने तेने केवा प्रकारनो दड आपवो ? श्रीभद्रबाहुजी बोल्या तेने गच्छ बाहेर करवो एवी आज्ञा छे पण मन्हे ध्याननो अतराय पडशे माटे श्रीसघने एम करवु योग्य छे के भणवावाला साधुओने म्हारी पासे मोकली आपवा तेथी तेमने भणाववानु कार्य बनी शकशे त्यारे श्रीसघे मली श्रीथूलिभद्र प्रमुख पांचसौ साधुओने श्रीभद्रबाहुस्वामी पासे मोकल्या, त्या गुरुए सर्व साधुने सात वाचना दीधी तेमा बीजा सर्व साधु तो भणवाथी हारी गया परतु एक श्रीथूलिभद्रजी बे वस्तुथी ऊणा दश पूर्व भणी गया एवामा श्रीथूलिभद्रजीनी सात व्हेनो–यक्षा, यक्षदिन्ना, भूता, भूतदिन्ना, सेणा, वेणा अने रेणा ए साते साध्वीओ श्रीसभूतिविजयजीनी शिष्यणीओ थयेली छे, ते श्रीथूलिभद्रजीने वादवा सारु आवी तेणे प्रथम श्रीभद्रबाहु स्वामीने वादीने पूछ्यु के थूलिभद्रजी क्या छे ? गुरु बोल्या–पर्वतनी गुफा माहे भणेला पूर्वनी आवृत्ति करे छे त्यारे साते जणी त्या गइ, तेमने आवती जोइ ज्ञाननो चमत्कार देखाडवा माटे श्रीथूलिभद्र सिंहनु रूप करी बेठा त्या सिंहने देखी साध्वीओ भय पामी थकी फरी गुरु पासे आवीने कहेवा

लागी के महाराज त्यां तो सिंह बेठो छे. त्यारे गुरुए ज्ञानथी जाण्युं के एणे विद्या प्रगट करी जणाय छे, एम विचारीने कह्युं के हवे तमे जाओ, थूलिभद्रजी त्यांज छे. ते फरी गइ अने भाइने देखी हर्ष सहित वंदना करी, वली गुरु पासे आवीने कहेवा लागी के महाराज! "अमारी साथे सिरिये दीक्षा लीधी हती. तेने यक्षाए उपवास- कराव्यो, तेथी ते देवलोक गयो. पछी यक्षाने प्रायश्चित्त लेवा माटे श्रीसंघने कह्युं. त्यारे श्रीसंघे काउसग्ग करीने शासन देवीने सीमंधर- स्वामी पासे मोकली, सीमंधरस्वामीना मुखथी बे चूलिका लइने शास- देवी पाछी आवी." एवुं कही गुरुने वांदीने पोताने स्थानके गइ. एक दिवसे श्रीथूलिभद्रजी पोतानो ब्राह्मण मित्र हतो, तेना घेर गया. त्यां ब्राह्मणनी स्त्रीने पूछयुं–म्हारो मित्र क्यां छे? स्त्रीये कह्युं घरमां खावा माटे कांइ नथी तेथी गाममां भीख मांगवा गया छे. त्यारे श्रीथू लिभद्रजीए ज्ञानबलथी जोयुं तो एना घरमां वडिलोपार्जित घणुं धन भरेलुं दीठुं, पण ब्राह्मणने तेनी खबर नथी माटे भीख मांगे छे, पछी श्रीथूलिभद्रजीए पोतानी दृष्टीथी दाटेला धननुं ठेकाणुं तेनी स्त्रीने वताव्युं, अने पोते चाल्या गया. ब्राह्मणे आवीने पोतानी स्त्रीना कहे- वाथी दाटेला धननुं स्थानक जाण्युं अने विचार्युं के पक्का मुद्दा विना मुनिराज दृष्टी आपे नहीं. माटे तेणे धरती खोदी जोयुं तो तेमांथी घणुं धन निकल्युं. तेना योगे ब्राह्मण सुखी थयो. एवी रीते एक सिंहनी विकुर्वणा करी अने बीजुं ब्राह्मणने धन देखाडयुं, ए बे वातो अयोग्य करीने श्रीथूलिभद्रजी गुरुनी पासे वाचना लेवा आव्या. त्यारे गुरुए कह्युं के पूर्वोक्त बे काम करवाथी तमे वाचना लेवाने अयोग्य थया छो, फूटेला भाजनमां दूध भरिये तो ठेरे नहीं, तेम तमने पण वाचना हवे देवाय नहीं. एवुं सांभली श्रीथूलिभद्रजी उदास थया. श्रीसंघने विनंति करी के म्हारामां चूक पडी छे माटे गुरु

वाचना आपता नथी श्रीसघे मली थूलिभद्रजीने वाचना आपवा माटे भद्रबाहुगुरुने अरजी करी ते ऊपरथी गुरुए चार पूर्व मूल पाठे वचाव्या पण अर्थ शीखाव्यो नहीं वली एवु पण कह्यु के ए चार पूर्व तमारे बीजा कोइने भणाववा नही त्यारथी पाछला चार पूर्वना ज्ञाननो विच्छेद थयो, अने दश पूर्वनु ज्ञान रह्यु ए श्रीथूलिभद्रजी आचार्य गृहस्थवासमां त्रीश वर्ष, व्रतपर्यायमां चोवीस वर्ष, अने युगप्रधानपदमा पेंतालीस वर्ष, एव सर्वायु नवाणु वर्षनो भोगवीने श्रीमहावीर स्वामीना निर्वाण पछी बसौ ने पन्नर (२१५) वर्षे देवलोक गया, एमा एक श्रीजबूस्वामी केवली थया अने बीजा सर्व श्रुत–केवली थया

आर्यमहागिरि, आर्यसुहस्ति अने राजासप्रतिनु वृत्तान्त—

श्रीथूलिभद्रस्वामानीना पाटे एक तो श्रीआर्यमहागिरि एलापत्य गोत्री अने बीजा श्रीआर्यसुहस्ति वाशिष्ट गोत्री, ए बे शिष्य आचार्य थया तेमना वखतमा जिनकल्प मार्ग विच्छेद थयो हतो, तो पण श्री आर्यमहागिरिजीए जिनकल्पनी तुलना करी एटले जिनकल्पनी मर्यादा प्रमाणे वर्त्तवा लाग्या एक दिवसे श्रीआर्यसुहस्तिसूरि कोइ शेठना घेर उपदेश आपी रह्या हता एज अवसरमां श्रीआर्यमहागिरिजी गोचरीए आव्या, तेमने देखीने श्रीआर्यसुहस्ति तरत उठीने ऊभा थया त्यारे शेठे पूछ्यु के ए महात्मा कोण छे ? आर्यसुहस्तिसूरिए शेठनी आगल आर्यमहागिरिजीनी स्तवना करीने सर्व वृत्तात कह्यो वली एमना समयमा दुकाल पड्यो, धान खावाने मलवु मुशकिल थयु, तेथी सर्व लोक दु खी थया, राजा जेवा हता ते पण रांक जेवा थइ गया, तो पण श्रावक लोको साधुओने बहु भिन्ना आपता हता साधुओने घणी भिक्षा मलती देखीने एक भिखारी साधुओनी पछवाडे चालवा लाग्यो, अने बोल्यो के मने खावाने आपो तमोने घणु खावानु मले छे साधुओए कह्यु के अमारा गुरुने पूछी तेनी आज्ञा लइ आव त्यारे भिखारी गुरुनी पासे

आव्यो, गुरुए कह्युं के अमारा जेवो होय तेने अमे आपीए. भिखारीए कह्युं के भले तमारा जेवो मने पण बनावी ल्यो. ते सांभली गुरुए पण भावी लाभ जाणी दीक्षा आपीने, तेनी इच्छा मुजब भोजन कराव्युं. अने कह्युं के पूर्वकृत पुन्यना उदयथी तमने चारित्र मळेल छे माटे शुद्ध भाव राखजो. एटलामां तेने उलटी थइ, त्यारे सर्व साधु तेनो वैयावच्च करवा लाग्या, तेथी भिक्षुए चारित्रनी अनुमोदना कीधी अने मरण पामीने उज्जयणी नगरीमां श्रेणिक राजाना पाटे कोणिक राजा, तेना पाटे उदायिन राजा, तेना पाटे नापित नंद नामे नव राजानां नव पाट थया. तेरमा पाटे मौर्य—चंद्रगुप्त, चौदमा पाटे विन्दुसार, पन्नरमा पाटे अशोकश्री अने सोलमा पाटे अशोकश्रीनो पुत्र कुणाल थयो, ते कुणालनो पुत्र संप्रतिनामे राजा थयो. जन्मतां ज तेना दादाए तेने राज्य आप्युं, ते अनुक्रमे त्रण खंड पृथ्वीनुं राज्य भोगवनारो थयो, एक दिवसे संप्रतिराजा गोखमां बेठो हतो, तेणे रथयात्रामां आर्य सुहस्तिसूरिने जता दीठा, तेथी राजाने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं अने पूर्वे भिक्षुना भवमां पोते साधु थयो हतो, ते सर्व वृत्तान्त दीठामां आव्युं, त्यारे गोखथी नीचे उतरी, गुरुने पगे लागीने पूछयुं के स्वामिन् ! अव्यक्त सामायिकनुं शुं फल ? गुरुए कह्युं, राज्यादि प्राप्ति थाय, ते सांभली संप्रति राजा वली विशेष दृढ थइने गुरुने पूछवा लाग्यो के स्वामिन् ! मने आप ओलखो छो ? गुरु उपयोग आपीने बोल्या के तुं भिक्षुना भवमां अमारो शिष्य हतो, तो हवे तने राज्य मल्युं छे माटे धर्मवृद्धि कर, एवुं गुरुनुं वचन सांभलीने राजाए श्रावकपणुं लीधुं अने सवालाख जिनमंदिर नवा कराव्या, सवाकोटी जिनबिंब प्रतिष्ठाव्या, तेर हजार जीर्णोद्धार कराव्या, पंचाणु हजार पीतलनी प्रतिमाओ भरावी, सातसौ दानशालाओ करावी, देवालयोथी सर्व पृथ्वी शोभायमान करी, कर छोडाव्या, साधुओना वेश पहेरावीने पोताना सुभटोने

अनार्य देशोमा मोकली त्यांना लोकोने समजावीने साधुओने अनार्य देशोमा विचराव्या, तथा बीजा घृत, गोळ, वस्त्र प्रमुखना सर्व व्यापारीओने, तेमज कदोइ लोकोने कहेवरावी दीधु के तमे शुद्ध आहारादिक मुनिओने व्होरावजो, तेना पैसा जे थाय ते राजभंडा-रथी लइ जाजो, पण ए वातनी साधुओने खबर पडवा देशो नहीं, लोको पण तेमज साधुओने आहारादिक देवा लाग्या, साधुओ पण शुद्ध जाणीने आहारादि व्होरवा लाग्या, एटलामा आर्यमहा-गिरिजी बोल्या के शिष्यो ! आवो स्निग्ध सदोष आहार नित्य केम लइ आवो छो ? त्यारे शिष्यो बोल्या के अमे चोकसी तो नित्य करीए छिए, पण एनी मालम पडती नथी गुरुए कह्यु हवे सारी रीते चोकसी करजो, पछी शिष्योए गोचरी फरता छोकराओने पूछ्यु, के तमने नित्य लाडु प्रमुख क्याथी मले छे ? छोकरा बोल्या–महाराज ! ए सर्व आपनो प्रताप छे, अमे पण तमारा प्रतापथी लाडु प्रमुख खाइए छिए, अने आपने पण व्होरावीए छिए, राजानो भडार अखूट छे, ते साभली शिष्योए आवीने आर्यमहागिरिजीने कह्यु आर्यमहागिरिए राजद्रव्य समजीने आर्यसुहस्तिने कह्यु, के तमे आहारनी चोकसी बराबर करो छो के नथी करता ? आपणने राजद्रव्य आवे छे ते केम ? त्यारे आर्यसुहस्ति विना उपयोगथी बोल्या के राजद्रव्य तो सर्वत्र छे, राजद्रव्य क्या नथी ? ते फरमावो. आर्य-महागिरिजी बोल्या, आवी शिथिलपणानी वात तमे केम करो छो ? जो तमे पोतेज एवु बोलशो तो पछी दोपनो परिहार केम थशे ? माटे हवे तमारे ने अमारे साभोगिकपणु नथी, एम मानजो एवु कहीने अन्यत्र विहार करी गया आर्य महागिरि ३० वर्ष गृहस्थावासमा ४० वर्ष व्रतमा अने ३० वर्ष युगप्रधानपदमा एव सर्वायु १०० वर्षनो भोगवीने स्वर्गवासी थया अहीं सुधी तो एकज समाचारी अने

एकज गच्छ हतो परंतु श्रीआर्यसुहस्तिसूरिथी सांभोगिकपणुं भिन्न थयो, आर्यसुहस्ति ३० वर्ष ग्रहस्थावासमां, २४ वर्ष व्रतपर्यायमां, अने ४६ वर्ष युगप्रधानपद्वीमां, एवं १०० वर्षनुं सर्वायु भोगवीने वीर-निर्वाणथी २५१ वर्ष बाद देवलोक गया.

९ श्रीआर्यसुहस्तिना बे शिष्य थया-एक तो सुस्थित अने बीजा सुप्रतिबद्ध. एमणे कोटी वार सूरिमंत्र जप्यो. काकंदी नगरीमां जन्म्या, तेमनुं व्याघ्रापत्य गोत्र हतुं. एमना पाटे १० श्रीआर्य-इंद्रदिन्नसूरि कौशिकगोत्रीया थया. एमना पाटे ११ श्रीआर्यदिन्न-सूरि गौतम गोत्रीया थया, एमना पाटे १२ श्रीआर्यसिंहगिरि कौशिक गोत्रीया थया जे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या हता, एना पाटे १३ आर्य-वज्रसूरि गौतम गोत्रीया थया, एमना पाटे १४ आर्यवज्रसेनसूरि उत्कौशिक गोत्री थया, एमना चार शिष्य थया-एक नाइल, बीजो पोमिल, त्रीजो जयंत अने चोथो तापस. ए चारेना नामथी चार शाखाओ निकली.

वज्रस्वामी अने वज्रसेनसूरि—

आर्यसिंहगिरिथी मांडीने त्रण पाटनुं संक्षिप्त स्वरूप देखाडे छे-श्रीसिंहगिरिनी पासे सुनंदानो भाइ आर्यसमित तथा बीजो सुनंदानो भरतार धनगिरि ए बे जणे दीक्षा लीधी. अने सुनंदा गर्भवती हती तेने तुंबवन गाममां मूकी दीधी. पछी सुनंदाने पुत्र थयो, ते वखतमां बीजी पाडोसीनी स्त्री बोली के-बाइ ! जो आज एना बाप धनगिरिए दीक्षा न लीधी होत, तो आ पुत्रना जन्मनो म्होटो महोत्सव थात. पण हमणां तो पिता विना बीजो कोण आवीने महोत्सव करे. एवी वात सांभलीने ते बालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. त्यारे बालके जाण्युं के हुं जो म्हारी माताने राजी राखीश तो ए मुजने छोडशे नहीं. माटे कोइ रीते एने कंटालो उपजे

तेवो उपाय करुं तो ए मने त्यागी देशे, त्यारे हु दीक्षा लइश एवु जाणी माताने उद्वेग करावबाने माटे नित्य रुदन करवानु चालु कर्युं केमके एने तो चारित्र लेवानो भाव वर्त्ते छे त्यारे बालकना रुदनथी माता घणो उद्वेग करवा लागी अने विचार्युं के हुं आ पुत्रने शु करु ? कोइने आपी दउ तो ठीक एवा अवसरमा सिंहगिरि आचार्य त्या पधार्या, त्यारे धनगिरि गोचरीए जवा लाग्या, तेने गुरुए ज्ञानदृष्टीथी विचारीने कह्यु के आज तमोने गोचरीमां सचित्त–अचित्त वस्तु जे काइ मले ते लइ लेवी पछी धनगिरि गोचरी फरता फरता सुनदाना घरे गया सुनदा बोली आ तमारा पुत्रे तो मने उलटो सताप करी दीधो छे, माटे एने लइ जाओ धनगिरिए कह्यु हमणा तो तु आपे छे पण पाछलथी दु ख करीश. सुनदा बोली, हु दु ख नहीं करु, तमे सुखेथी लइ जाओ. त्यारे धनगिरिजी घणी स्त्रीयोने तथा बीजा लोकोने साक्षी करी पुत्रने लइ झोलीमा न्हाखी उपासरे आव्या गुरुए झोली उपाडी तेमा भार घणो लाग्यो, त्यारे बोल्या के आ शु वज्र छे के ? एवु कहीने झोली उघाडी तो माहे बालकने दीठो तेनु ' वज्र ' एवु नाम दीधु उपासरामा आव्या पछी बालके रुदन करवु बध कर्युं. गुरुए शय्यातरिणी श्राविकाने ते बालक सोंप्यो, तेणे पारणामा राख्यो ते ज्यारे छ महीनानो थयो त्यारे त्या शालामा साध्वीओ भण्या करती हती तेमना वचन साभली पारणामा सूता सूता अगीआर अग भणी गयो. अनुक्रमे त्रण वर्षनो थयो त्यारे सुनदा बोली के हु म्हारो पुत्र पाछो लइश तेने सघे कह्यु के ए गुरुनो माल छे, अमाराथी अपाय नहीं पछी राज दरबारमा गइ त्या सघनी निनतिथी गुरु पण दरबारमा आव्या राजाए एवी रीते न्याय थाप्यो के जेना उपकरण ए बालक लइ लीए, तेनोज ए पुत्र जाणवो त्यारे माताए लाडु तथा रमकडा प्रमुख बालकने देखाड्या, परतु बालके तेनी स्हामु

पण जोयुं नहीं. पछी गुरुए बालकने कह्युं के आ ओघो त्हारे लेवो होय तो लइ ले, त्यारे बालके ओघो ग्रहण कर्यो. अने नाचवा कूदवा लाग्यो. राजाए कह्युं न्याय थइ चुक्यो. एम कही बालक गुरुने आपी दीधो. ते आठ वर्षना थयो त्यारे दीक्षा लीधी. ते वखते सुनंदाए कह्युं के म्हारो पुत्र पण तमे लइ लीधो तो हवे मने पण दीक्षा आपो, गुरुए सुनंदाने पण दीक्षा आपी.

एक दिवस उज्जयणीना मार्गमां वज्रऋषीना पूर्वभवनो मित्र कोइ देव हतो ते मनुष्यनुं रूप करीने वज्रऋषीनी परीक्षा करवाने अर्थे कोलानी भिक्षा देवा लाग्यो. वज्रऋषीए जाण्युं के कोलानी ऋतु तो हमणा नथी, तो आ वखतमां ए कोला क्यांथी लाव्यो. ए तो कोइ देवताए छल कर्यो होय एम जणाय छे माटे देवपिंड न लेवो. एवुं जाणी भिक्षा लीधी नहीं. देवे संतुष्ट थइने वैक्रिय लब्धि आपी. फरी वली उन्हालाना दिवसोमां घेवरनी परीक्षामां देव चलाववा आव्यो, तेमां पण वज्रमुनि चलायमान थया नहीं. त्यारे देवताए आकाशगामिनी विद्या आपी. एक दिवस गुरु ठंडिल भूमिए गया अने केटलाएक साधुओ गोचरीए गया, पाछलथी वज्रमुनि बालक्रीडाथी साधुओना उपधि प्रमुख उपगरण चारे बाजु मूकी पोते वचमां वेसीने जेवी रीते गुरु वाचना आपे तेवी रीते जुदी जुदी अगीआरे अंगनी वाचना देवा लाग्या. गुरुए पण बारणे छाना ऊभा रहीने सर्व वाचना सांभली, पछी बालकने कांइ पण शंका पडे नहीं तेवी रीते म्होटा स्वरथी निसीहि कहीने गुरु उपासरामां आव्या. वज्रऋषीए पण पोतानुं करेलुं सर्व कृत्य समेटी लीधुं. पछी गुरुए ते बालकना गुण प्रगट करवा माटे साधुमंडलने कह्युं के तमे अहींज रहेजो, हुं एक गाम जइने आवुं छुं, त्यारे साधुओ बोल्या–अमोने वाचना कोण आपशे ? गुरुए कह्युं वज्रऋषी आपशे. एवुं कहीने गुरु बीजे गाम गया. ते साधुओ गुरुनुं वचन

प्रमाण करवावाला विनयवत हता, माटे वज्रमुनिनो विनय करीने वज्रमुनि पासे वाचना लेवा लाग्या, तेमने वज्रमुनिए पण एवी वाचना आपी के गुरु घणी वाचनाओथी जेटलु भणावे, तेटलु एकज वाचनामां भणावी दीधु साधुओए विचार्यु के गुरु गाम गया छे तेने जो चार दिवस वधारे लागे तो ठीक, तेटलामा अमारो आ अमुक श्रुतस्कध पूरण थइ जशे पछी केटलाक दिवस वीत्या वाद गुरु आव्या, तेमणे पूछ्यु साधुओ ! तमारे वाचना सुखे थइ ? साधु बोल्या हा महाराज ! हवे अमारे वाचनाचार्य ए वज्रज थाओ, गुरुए वज्रमुनिने वाचनाचार्य कर्यो गुरुनी आज्ञाथी वज्रमुनि उज्जयणी-नगरीमा भद्रगुप्ताचार्य पासेथी दश पूर्व भण्या अने आचार्यपद पाम्या एक दिवस पाटलीपुरमा धनशेठना घरे साध्वीओ उतरी हती तेणे वज्रस्वामीना गुण अने रूपनु वर्णन कर्यु ते साभली शेठनी पुत्री रुक्मिणीए एवी प्रतिज्ञा करी के वज्रस्वामी विना वीजाने म्हारे परणवु नहीं. एटलामा वज्रस्वामी पण पाटलीपुरमा आव्या अने विचार्यु के म्हारा रूपथी लोको क्षोभ पामे छे ते नहीं पामे एटला माटे विद्याना वलथी रूप सक्षेप करी सामान्य रूपथी धर्मदेशना आपवा माडी साधु-ओए लोकोना मुखथी साभल्यु के गुरुनी देशना तो अमृत सरखी छे पण रूप तो सामान्य छे ए वातनी वज्राचार्यने खवर पडी त्यारे वीजे दिवसे हजार दलनु सुवर्ण कमल रचीने तेना ऊपर वेठा अने पोतानु जेवु मूलरूप हतु तेवाज रूपथी देशना दीधी, ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या धनशेठ पण पोतानी महारूपवाली रुक्मिणी नामा पुत्री अने एक क्रोड सोनाम्होरो लइ गुरुनी पासे आवी भेट करवा लाग्या गुरुए कन्याने प्रतिवोध आपी, धर्म पमाडी अने दीक्षा आपी साध्वी वनावी

एकदा वज्रस्वामीए पदानुसारिणी लब्धिना वले श्रीआचारांग

सूत्रना महापरिज्ञा नामा अध्ययनमांथी मानुषोत्तर पर्वत पर्यंत जइ शकाय एवी आकाशगामिनी विद्या कहाडी. पछी वज्रस्वामी एक समय उत्तर दिशामां दुकाल पडतो जाणी श्रीसंघने पट (कपडा) ऊपर बेसाडीने अन्य स्थानके लइ जवा तैयार थया, एवामां त्यां शय्यातर बोल्यो–महाराज ! हुं पण एमनो साधर्मि छुं. माटे मन्हे पण साथे लइ चालो, त्यारे तेने पण पट ऊपर बेसाडीने आकाशमां रह्या चालतां ठेकाणे ठेकाणे श्रीजिनचैत्य वंदावता ताकीद्थी महापुरि नामा नगरीमां गया. त्यां यद्यपि सुकाल हतो तथापि त्यांनो राजा बौद्धमतवालो हतो माटे तेणे बौद्धदर्शनीना भक्त लोकोना कहेवाथी पजोसणना दिवसोमां श्रीजैनमंदिरोमां फूल लइ जवा देवा नहीं एवो बंदोबस्त कर्यो. ते जोइने संघे श्रीवज्रस्वामीने विनंती करी के महाराज ! फूलनो अटकाव थयो छे.वज्रस्वामीए कह्युं के–तमे चिंता करशो नहीं, हुं एनो उपाय करीश. एम कही आकाशमां उडीने माहेश्वरीपुरीमां हुताशन नामा देवना वनमां पोताना पितानो मित्र वनमाली हतो, तेने जइ कह्युं के तमे फूल तैयार राखजो. एवुं कहीने हिमवंत पर्वत ऊपर गया, त्यां पद्मद्रहनी कमलनिवासिनी लक्ष्मीदेवीए श्रीवज्रस्वामीने वांद्या अने कहेवा लागी के–स्वामिन् ! आपनी दासीने कांइ हुकुम फरमावो. आचार्ये कह्युंः–पूजाना अर्थे फूल जोइए, लक्ष्मीदेवी पोते पूजा माटे लक्षदल कमल लइ आवी हती, ते हाजर कर्यां. ते लइने फरी पाछा वलतां हुताशन वनथी वीश लाख फूल लइ विमानमां बेसीने पूर्वभवनो मित्र तिर्यक्जृंभक जातिनो देव हतो ते पण आचार्यनी साथे गीत, नृत्य, वाजित्र प्रमुख महोत्सव करतो साथे आव्यो. वज्रस्वामीए पुष्पो श्रावकोने आप्या, अने जिनचैत्यनो महिमा वधार्यो. श्रीसंघ पण घणोज आनंद पाम्यो. ते नगरनो राजा पण बौद्धधर्म मूकी जिनधर्मी थयो. पछी एक

दिवस दक्षिण मार्गमा जाता थका श्रीवज्रस्वामीने श्लेष्म थइ गयुं त्यारे साधुओनी पासेथी गोचरीमा सूठ मंगावी ते पोते कान ऊपर राखीने विचार्यु के पछी खाइश, पण भूलमा एमज रही गइ, ते पडिक्कमणो करती वखते नीचे पडी त्यारे वज्रस्वामीए विचार्यु के हु दश पूर्वधर छु मन्हे पण आवी भूल थइ तो म्हारु आयुष्य स्वल्प रहेलु जणाय छे माटे अनशन करवु ठीक छे पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्यु के वार दुकाली पडशे त्यारे तु सोपारापुर पाटण जाजे, कोइ तने पूछे के सुभिक्ष क्यारे थशे ? त्यारे तु जे दिवसे लाख मूल्यनी एक हाडी चूल्हा ऊपर चढे ते दिवसथी बीजा दिवसे सुगाल थशे एवु जवाव आपजे हुं तो हवे अनशन करीशु एम कहीने वज्रसेनने सोपारा पाटण जवाने विदाय कर्यो पोतानी पासे रहेला साधुओने ज्यारे भिक्षा नहीं मले त्यारे विद्यापिंड करीने केटलाएकने जमाड्या, पछी पाचसौ साधुओने लइने अनशन करवा माटे चाल्या तेमां एक न्हानो चेलो हतो तेने भोलव्यो के तु अहीं वेस, हु आवु छु पण ते चेलाए मोहथी कह्यु के हुं तो तमारी पछवाडे आवीश तो पण गुरुए समजावीने राख्यो त्यारे चेलाए जाण्यु के गुरु महाराजने अप्रीति न थाय तेम करु तो ठीक, एवु चिंतवीने फरी पर्वतना मूलमा आवी तपेली शिला ऊपर अनशन करी दीधो, ते बालक हतो, माटे सुकुमारपणाथी तत्काल शुभ ध्याने मरण पामीने देवलोक गयो, देवताओए भेला थइने तेनो महिमा कर्यो, बीजा साधुओए पण विशेष दृढ थइने अनशन कर्या परतु मिथ्यात्वी देवो आवीने अनशनमा मोदकनी निमत्रणा करवा लाग्या अने बोल्या के हे महाराज ! आ शुद्ध निर्दोप आहार छे ते ल्यो, त्यारे साधुओए विघ्ननो ठेकाणो जाणीने नजीकना बीजा पर्वत ऊपर जइने अनशन

कर्युं, शुभ ध्यानथी काल करीने वज्रस्वामी ८ वर्ष गृहस्थावासमां, ४४ वर्ष व्रतमां, अने ३६ वर्ष युगप्रधानपदमां एवं ८८ वर्षनो सर्वायु भोगवीने वीरनिर्वाणथी ५०४ वर्ष पछी देवलोक गया, इन्द्र महाराजे रथ ऊपर वेशी पर्वतने प्रदक्षिणा करीने सर्व साधुओने वांद्या. त्यां ते इन्द्र महाराजाना रथनी रेखा मंडाणी. तेथी ते पर्वतनुं 'रथावर्त' एवुं नाम थयुं तथा त्यांना वृक्ष पण साधुओने नमवाथी नमेला थकाज आज पर्यंत देखाय छे. श्रीवज्रस्वामी देवलोक गया पछी दशमो पूर्व तथा चोथो अर्द्धनाराच संघयण विच्छेद गयो. "सुहस्ति अने वज्रस्वामीना वचमां १ गुणसुंदरसूरि, २ कालिकाचार्य, ३ स्कंदिलाचार्य, ४ रेवतिमित्र, ५ धर्मसूरि, ६ भद्रगुप्ताचार्य, ७ श्रीगुप्ताचार्य, ए सात युगप्रधान थया एम केटलीएक पट्टावलियोमां लखेल छे."

वज्रसेनाचार्य सोपारा नगरमां जिनदत्त श्रावक तथा तेनी भार्या ईश्वरी नामे छे ए वेहुने प्रथम श्रीवज्रस्वामीनो प्रतिबोध हतो तेमना घेर गोचरी गया. त्यां दुष्कालना लीधे धान नहीं मलवाथी शेठ अने शेठाणीए पोताना चार पुत्रो सहित लाख मूल्य धान्यनी हांडी चढावीने विचार कर्यो के सर्व आपणे आ रांधेला अनाजमां झेर मेलवी खाइने पछी अनशन करी लेवुं. एवुं चिंतवी हांडीमां झेर नाखवाने तैयार थया एटलामां वज्रसेनसूरि आव्या, तेमणे ते कृत्य देखीने पूछयुं के तमे शा वास्ते मरवानो उपाय करो छो ? त्यारे शेठाणी बोली धन तो अमारा पासे घणुं छे; परंतु धान्य मलतुं नथी, त्यारे वज्रसेनसूरि वोल्या. गुरुए कहेल छे के लाख द्रव्यनी हांडी चढशे तेना बीजा दिवसे सुगाल थाशे. ते सांभली शेठाणीने पण पूज्यना वचननी प्रतीति हती तेथी वोली के जो सुगाल थइ जशे तो आ म्हारा चार पुत्र हुं आपने आपीश, ने तमे चारेने दीक्षा आपजो. एवी प्रतिज्ञा करी हांडीमां झेर

न्हावलवु वध कर्यु. त्यार पछी बार पहोर गया बाद केटलाक वहाणो ऊभड वायराना योगथी छेटे निकली गया हता; ते सारो वायरो वाग्याथी पाछा आव्या. तेमा जुवार भरेली हती, ते लोकोए लीधी सुगाल थयो, ते धान्यथी युगोद्धार थयो तेथी तेनो नाम 'युगधरी' थयु, एने लोक भापामा जुवार पण कहे छे पछी शेठ अने शेठाणीए एक नागेंद्र, बीजो चद्र, त्रीजो निवृत्ति अने चोथो विद्याधर, ए चारे पुत्रोने दीक्षा अपावी अने पोते पण दीक्षा लीधी ते चारे साधुओ बहुश्रुत आचार्य थया अने तेना नामथी चार शाखा निकली. वज्रसेनसूरिजी ९ वर्ष गृहवासमा, ११६ वर्ष व्रतमा अने ३ वर्ष युगप्रधानपदमा, एव १२८ वर्षनो सर्वायु भोगवीने वीरनिर्वाणथी ६२० वर्ष पछी स्वर्गे गया वज्रस्वामी अने वज्रसेनना वचमा आर्यरक्षित अने दुर्वलिकापुष्प ए बे युगप्रधान थया छे

यशोभद्रसूरिथी विस्तृत स्थविरावली, गण, शाखा अने कुल—

तुगियायन आर्य यशोभद्रसूरिना वे शिष्य थया–प्राचीनगोत्रीय भद्रबाहू अने माढरगोत्रीय सभूतिविजय भद्रबाहूना काश्यपगोत्रीय चार स्थविर–शिष्य थया–गोदास १, अग्निदत्त २, यज्ञदत्त ३ अने सोमदत्त ४ स्थविर गोदासथी 'गोदास' गण निकल्यु अने तेनी १ तामलित्तिया, २ कोडीवरसिया, ३ पडुवद्धणीया, ४ दासीखब्बडिया ए चार शाखा थइ सभूतिविजयना बार शिष्य थया–१ नन्दनभद्र, २ उपनन्दनभद्र, ३ तीसभद्र, ४ यशोभद्र, ५ सुमनोभद्र, ६ मणिभद्र, ७ पूर्णभद्र, ८ थूलिभद्र, ९ ऋजुमति, १० जम्बू, ११ दीर्घभद्र अने १२ पाडुभद्र तथा यक्षा १, यक्षदिन्ना २, भूता ३, भूतादिन्ना ४, सेना ५, वेणा ६, अने रेणा ७ ए सात आर्यिका थइ गौतमगोत्रीय थूलिभद्रना वे शिष्य थया–एलापत्यगोत्रीय आर्यमहागिरी अने वाशि-

ष्टगोत्रीय स्थविर आर्यसुहस्ती. आर्यमहागिरिना आठ शिष्य थया–१ स्थविरउत्तर, २ बलिसह, ३ धनर्द्धि, ४ श्रीभद्र, ५ कोडिन्य, ६ नाग, ७ नागमित्र अने ८ कौशिकगोत्रीय षडुलूक रोहगुप्त. स्थविररोहगुप्तथी 'त्रैराशिकी' शाखा निकली अने उत्तर–बलिसहथी 'उत्तरबलिसह' गण निकल्युं. तेनी १ कोसंबिया, २ सोइत्तिया, ३ कोडंबाणी अने ४ चंदनागरी ए चार शाखा थइ. आर्यसुहस्तीना बार शिष्य थया–१ आर्यरोहण, २ भद्रयशा, ३ मेघ, ४ गणिककामर्द्धि, ५ सुस्थित, ६ सुप्रतिबद्ध, ७ रक्षित, ८ रोहगुप्त, ९ ऋषिगुप्त, १० श्रीगुप्त, ११ गणिब्रह्मा अने १२ गणिसोम. काश्यपगोत्रीय आर्यरोहणथी 'उद्देहगण' निकल्युं. तेनी १ उदुंबरिज्जिया, २ मासपूरिया, ३ मइपत्तिया, ४ पुन्नपत्तिया, ए चार शाखा थई. तथा १ नागभूत, २ सोमभूतिक, ३ उल्लग, ४ हस्तलीय, ५ नन्दिज्ज, ६ पारिहासक ए छे कुल थया. हारियसगोत्रीय श्रीगुप्तथी 'चारणगण' निकल्युं. तेनी १ हारियमालागरी, २ संकासीया, ३ गवेधुया, ४ वज्जनागरी ए चार शाखा अने १ वत्थलिज्ज २ पीइधम्मिय, ३ हालिज्ज, ४ पूसमित्तिज्ज, ५ मालिज्ज, ६ अज्जचेडय तथा ७ कण्णसह ए सात कुल थया. भारद्वायसगोत्रीय भद्रयशथी 'उडुवाडियगण' निकल्युं. तेनी १ चंपिज्जिया, २ भद्दिज्जिया, ३ काकंदिया, ४ मेहलिज्जिया ए चार शाखा. अने १ भद्दजसिय, २ भद्दगुत्तिय, ३ जसभद्द ए त्रण कुल थया. कुंडिलसगोत्रीय स्थविर कामर्द्धिथी 'वेसवाडियगण' निकल्युं. तेनी १ सावत्थिया, २ रज्जपालिया, ३ अंतरिज्जिया, ४ खेमलिज्जिया ए चार शाखा अने १ गणिय, २ मेहिय, ३ कामड्डिय, ४ इंदपुरग ए चार कुल थया. वाशिष्टगोत्रीय काकंदिक ऋषिगुप्तथी 'माणवगण' निकल्युं. तेनी चार शाखा थइ–१ कासविज्जिया, २ गोयमिज्जिया, ३ वासिट्ठिया, ४ सोरट्ठिया अने त्रण कुल थया–इसिगुत्तियत्थ १, इसिदत्तिय २, अभिज-

यंत ३ व्याघ्रापत्यगोत्रीय कोटिककाकन्दिक सुस्थित-सुप्रतिबद्धथी 'कोटिकगण' निकल्यु तेनी चार शाखा थई-१ उच्चानागरी, २ विज्जाहरी, ३ वइरी, ४ मज्झिमिल्ला अने कुल पण चार थया-१ बंभलिज्ज, २ वच्छलिज्ज, ३ वाणिज्ज, ४ पण्हवाहणय सुस्थित-सुप्रतिबद्धना पाच शिष्य थया-आर्यइन्द्रदिन्न १, प्रियग्रन्थ २, काश्यपगोत्रीय विद्याधरगोपाल ३, आर्यऋषिदत्त ४, अने स्थविर अरिहदत्त ५ आर्य प्रियग्रन्थथी मध्यमा शाखा, अने विद्याधरगोपालथी विद्याधरी शाखा निकली आर्य इन्द्रदिन्नना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्यदिन्न थया अने तेमना बे शिष्य थया-१ माढरसगोत्रीय आर्यशान्तिसेनिक अने २ कौशिकगोत्रीय आर्यसीहगिरी आर्यशातिसेनिकथी 'उच्चानागरी' शाखा निकली अने तेना चार शिष्य थया-१ आर्यसेनिक, २ आर्य तापस, ३ आर्यकुबेर, ४ आर्यऋषिपालित ए चारे शिष्योना नामथी अनुक्रमे 'अज्जसेणिया १, अज्जतावसी २, अज्जकुबेरा ३ अने अज्जइसिपालिया ४, ए चार शाखा निकली आर्यसीहगिरीना चार शिष्य थया-१ धनगिरी, २ आर्यवज्र, ३ आर्यसमित अने ४ आर्य अरिहदिन्न आर्यसमितथी 'ब्रह्मद्वीपिका' अने आर्यवज्रथी 'आर्यवज्री' शाखा निकली गौतमगोत्रीय आर्यवज्रना त्रण शिष्य थया-१ आर्य वज्रसेन, २ आर्यपद्म अने ३ आर्यरथ आर्यवज्रसेनथी 'आर्यनागिली' आर्यपद्मथी 'अज्जपउमा' अने आर्यरथर्थी 'अज्जजयती' शाखा निकली वच्छसगोत्रीय आर्यरथना शिष्य कौशिकगोत्रीय आर्यपूसगिरी थया, तेमना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्यफल्गुमित्र, तेमना शिष्य-वासिष्टगोत्रीय आर्यधनगिरी, तेमना शिष्य कुच्छसगोत्रीय आर्यशिव भूति, तेमना शिष्य काश्यपगोत्रीय आर्यभद्र, तेमना शिष्य काश्यप आर्यनक्षत्र, तेमना शिष्य काश्यप आर्यरक्ष, तेमना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्यनाग, तेमना शिष्य वाशिष्टगोत्रीय आर्यजेहिल, तेमना शिष्य

माढरसगोत्रीय आर्यविष्णु, तेमना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्यकालक थया. आर्यकालकना बे शिष्य थया-१ गौतमगोत्रीय आर्यसंपलित अने आर्यभद्र. ए बन्नेना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्यवृद्ध थया. आर्यवृद्धना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्य संघपालित, तेमना शिष्य काश्यपगोत्रीय आर्यहस्ती, तेमना शिष्य सुव्रतगोत्रीय आर्यधर्म्म, तेमना शिष्य काश्यपगोत्रीय आर्यसिंह, तेमना शिष्य काश्यप आर्यधर्म्म अने तेमना शिष्य आर्यसंडिल्ल थया. आ स्थविरावलिना अन्तमां पाछलथी नमस्कारात्मक जे चौद प्राकृतभाषामय गाथा उमेरवामां आवी छे, तेमां स्थविरोना नाम एवी रीते गोठववामां आव्या छे-गौतम फल्गुमित्र १, वासिष्ट धनगिरि २, कुत्स शिवभूति ३. कौशिक दुज्जंत ४, कौशिक कृष्ण ५, काश्यप भद्र ६, काश्यप नक्षत्र ७, काश्यप रक्षित ८, गौतम आर्यनाग ९, वाशिष्ट जेहिल १०, माढर विष्णु ११, गौतम कालक १२, गौतम संपलित १३, गौतम भद्रक १४, गौतम आर्यवृद्ध १५, काश्यप संघपालित १६, काश्यप आर्यहस्ती १७, सुव्रत आर्यधर्म १८, काश्यप हस्त १९, काश्यप सींह २०, काश्यप धर्म २१, गौतम आर्यजम्बू २२, काश्यप नन्दित २३, माढर देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण २४, वत्स्य स्थिरगुप्त २५, गणिकुमारधर्म २६, अने काश्यप देवर्द्धिक्षमाश्रमण २७ उपरोक्त सर्वे स्थविर भगवन्तोने त्रिकरण योगथी नमस्कार थाओ.

त्रैराशिकशाखा अने वैशेषिकमतनी उत्पत्ति—

श्रीमहावीरथी पांचसों चुम्मालीश वर्ष गयां पछी श्रीगुप्ताचार्यनो 'षडुलूक रोहगुप्त' नामा शिष्य हतो ते अंतरंजिका नामे नगरीमां आव्यो. ते वखते एक म्होटो वादी 'पोट्टशाला' नामे तापस पण ते नगरीमां आव्यो. ते वींछी, साप, उंदर, हरिण, सूअर, काग अने पंखी ए सात चीजो बनाववानी विद्याओनो जाण हतो तेना मदथी ते सर्व लोकोने एम बोल्यो के म्हारो पेट फाटीने कदाच विद्या बाहेर चाली जाय तेना भयथी म्हें म्हारा पेट ऊपर पाटो बांधी राखेल छे. वली एक जांबूनी डाली हाथमां राखीने एवुं जणाव्युं के आ जंबूद्वीपमां म्हारी साथे वाद करवावालो

कोइ नथी, पछी तापसे आवीने नगरीना राजाने पण कह्यु के तमारा नगरमां कोइ वाद करवावालो होय तो सुखेथी तेने तेडावीने म्हारी साथे वाद करावो नही तो मने जीतपताका आपो त्यारे राजाए पडह वजडाव्यो के जे वाद करवाने इच्छा राखतो होय ते आ पडह झाली ले, एटलामां रोहगुप्त नामा श्रीगुप्ताचार्यनो शिष्य गाममां गोचरीए आव्यो ते पडह सांभलीने बोल्यो हु वाद करीश. एवु कही गुरुनी पासे आवी पडहनी हकीगत कही, गुरु बोल्या ए वात त्हें ठीक करी नहीं केमके ते योगी क्रोधी छे माटे त्हारा ऊपर विद्या चलावशे त्यारे शिष्ये कह्यु आपना बेठा थका ते जीतपताका लइ जाय तो पछी आपणी शी विशेषता कहेवाय ? एवो शिष्यनो निश्चय जाणीने गुरुए तेने १ मयूरी, २ नकुली, ३ बिडाली, ४ व्याघ्री, ५ सिंही, ६ उलुकी, ७ श्यनी; आ सात विद्याओ आपीने कह्यु के जो कदापि तने कोइ अधिक उपद्रव थाय तो आ ओघो मन्त्री आपु छु ते तु फेरवजे तेथी सर्व उपद्रव निवर्तन थइ जशे एवी रीते गुरुपासेथी आज्ञा लइने रोहगुप्त बलश्रीनामा राजानी सभामां आवी योगीने कहेवा लाग्या के त्हारो वाद शु छे ते सभलाव. योगी छल करीने बोल्यो अमारा मतमां एक जीवराशि, अने बीजी अजीवराशि ए बे राशि कही छे. एवु योगीनु बोलवु सांभलीने रोहगुप्ते विचार्यु के आ वातनो जो हु हाकारो भरीश तो ए कहेशे के में म्हारी वात एने मजूर करावी, म्हारु मत एणे मान्यु, तेथी लोको जाणशे के शिष्य हारी गयो एम चिंतवीने शिष्ये पण कुतर्क करी कह्यु के बे राशि तु कहे छे ते खोटु छे परतु जीव, अजीव अने त्रीजो नोजीव ससारमां ए त्रण राशि छे योगी बोल्यो-तु नोजीव राशि केवी रीते कहे छे ? रोहगुप्ते तरत एक दोरो वटीने भूमि ऊपर नाख्यो. ते हालवा लाग्यो त्यारे कह्यु के जो आ नोजीव छे, एवी घणी युक्तियो लगाडीने ससारमां जीव, अजीव अने नोजीव ए त्रण राशि स्थापन करी, तेथी योगी हारी गयो पछी योगीए विद्याओ चलाववा माडी प्रथम तो म्होटा डकने मारवावाला वींछीओ बनाव्या, रोहगुप्ते मोर बनाव्या ते आवीने सर्व वींछीयोने खाइ गया, त्यारे योगीए सर्प बनाव्या, चेलाए नोलीयां बनाव्यां, योगीए उदर बनाव्या, चेलाए बिल्लाडी बनावी, योगीए तीखा सींगडावाला हरिण बनाव्या, चेलाए चीतरा बनाव्या तेणे आवीने सर्व हरिणोने मारी नाख्या. योगीए सूअर बनाव्या, चेलाए सिंह बनाव्या. योगीए काक बनाव्या, चेलाए घूड बनाव्या योगीए पखी बनाव्या, चेलाए बाज बनाव्या आखिर एमां पण योगी हारी गयो त्यारे योगिए गर्दभी विद्या चलावी ते वखते चेलाए ओघो फेरव्यो तेथी तेनी विद्या नाशी गइ ए रीते योगी हारी गयो अने चेलो जीत करीने घणा परिवारनी साथे गुरुनी पासे आव्यो. गुरुए पुछ्यु केवी रीते जीती आव्यो ? शिष्ये त्रण राशि थापी ने जीत्यो एवु कह्यु गुरु बोल्या के वत्स !

त्हें आ सारी वात नहीं करी, भगवानना मतथी तुं विपरीत बोल्यो, माटे राजसभामां जइने 'मिच्छामि दुक्कडं' दइ आव, जो मिच्छामि दुक्कडं नहीं आपशे तो जैनमतनो उत्थापक थइश. शिष्य बोल्यो, म्हारा मुखथी हुं केम झूठो पडुं, म्हाराथी तो मिच्छामि दुक्कडं देवाय नहीं, म्हे खोटुं थापन करेल नथी ? राशि तो त्रणज छे, गुरुए कह्युं के तुं म्हारी साथे पण जो वाद करवा इच्छे तो होय तो चाल राजसभामां जइ आपणे वाद करीए. एम कही गुरु पोताना शिष्यने साथे लइ राजानी पासे आव्या अने कहेवा लाग्या के राजन् ! आ म्हारा शिष्ये वादीने जीतवा माटे जे त्रण राशि थापन करी ते वात असत्य छे, ए म्हारुं कह्युं मानतो नथी ने म्हारी साथे वाद करशे. तेनी वचमां आप साक्षीदार रहो तो अमे वाद करीए. राजाए कह्युं सुखे वाद करो, पछी गुरु शिष्य वाद करवा लाग्या. त्यां छ महीना सुधी वाद चाल्यो. १४४४ प्रश्न शिष्ये पूछ्या, गुरुए सर्व प्रश्नोनो अकाट्य उत्तर आप्यो, तो पण समज्यो नहीं. राजाने घणो वखत खोवो पड्यो. तेथी राजाए 'हुं केटला दिवस सुधी एओना झगडामां खोटी थाउं' एम विचारीने गुरुने कह्युं. के स्वामिन् ! आपनुं बोलवुं सर्व साचुं छे. पण म्हारा राज्यसंबंधि कामकाजमां बिगाड थाय छे माटे हवे मने साक्षीथी मुक्त करो. गुरुए कह्युं आवती काले सर्व झगडो मटाडी दइश. बीजा दिवसे गुरुए चेलाने कह्यु के 'कुत्रिकापण' हाटमां त्रण-लोकनी सर्वे वस्तुओ मले छे. जो नोजीव त्यांथी मली जाय तो तुं सांचो अने न मले तो हुं साचो. शिष्ये पण ए वात मान्य करी, पछी राजसभादि परिवार साथे बन्ने कुत्रिकापणमां गया अने चेलाए कुत्रिकापणामां जीव, अजीव अने नोजीव मांग्या. त्यारे देवे जीवना बदले उंदर लावीने आप्यो तथा अजीवना बदले पत्थर लावीने आप्यो पछी नोजीव मांग्यो त्यारे बे त्रण वार जीव अने अजीव ए बेज वस्तु लावीने आपी, पण नोजीव आपे नहीं. एवामां आकाश वाणी थइ के जगतमां जीव अने अजीव ए बेज राशि छे पण त्रीजी कोइ राशि नथी. त्यारे सर्व लोक बोल्या गुरु साचा छे पछी गुरुए शिष्यने कह्युं के केम हवे समज्यो के नहीं ? जो समज्यो होय तो मिच्छामि दुक्कडं आप, शिष्य बोल्यो एम हुं मानवानो नथी. त्यारे गुरुए भस्मनुं कुंडुं तेना माथा ऊपर नाखीने तेने गच्छथी बाहेर कर्यो. रोहगुप्ते जइ वैशेषिक मत थापन कर्युं. तेमां नव द्रव्य, सत्तर गुण, पांच कर्म, त्रण सामान्य, एक विशेष, एक समवाय, ए छ पदार्थ प्ररूप्या, एना प्रत्यपणाथी चौदसौ चुमालीश भेद थया. एनो नाम गोत्रना मिलापथी स्थापन थयुं, अने एथीज त्रैराशिक शाखा थइ.

मध्यमा शाखानी उत्पत्ति—

स्थविर प्रियग्रंथथी मध्यमशाखा निकली तेनो अधिकार आ प्रमाणे छे—श्रीहर्ष-

पुर नामा नगर जेने हमणा 'अजमेर' कहे छे तेमां त्रणसौ जैनमदिर अने चारसौ अन्य-दर्शनीओना देरा हता तथा आठ हजार घर ब्राह्मणोना अने छत्रीश हजार घर महाजनोना हता, तेमज नवसे बाग, सातसौ वावडी, सातसौ दानशाला हती, त्या सुभटपाल नामे राजा राज्य करतो हतो एक दिवसे ब्राह्मणोए यज्ञ माड्यो एवामां प्रियग्रथसूरि पधार्या तेणे वासक्षेप मत्रीने श्रावकोना हाथमां आप्यो श्रावकोए जइने यज्ञमां ब्राह्मणो होम करवाने सारु बकरो लाव्या हता ते बकरानी ऊपर वासक्षेप नाख्यो तेना योगे बकराना शरीरमां अम्बिका देवीए प्रवेश कर्यो. तेथी बकरो उडी आकाशमां जइने मनुष्य वाणीथी बोलवा लाग्यो के–अरे निर्दयी ब्राह्मणो ! तमे जेम निरपराधि जीवोने निर्दताथी मारी नाखो छो तेम जो हु हमणा निर्दय थइ जाउ तो तमो सर्वेने मारी नाखु, जेवी रीते हनुमाने राक्षसोमां करी देखाड्यु तेम हु पण तमोने करी देखाडु परतु म्हाराथी दयानो उल्लघन थइ शकतो नथी माटे हु तमारी पेठे निर्दयी थतो नथी तथापि तमे बिचारा आवा कोमल–मूक पशुओने हणो छो, तेथी तमो महापापी बनो छो जे पशुने मारीए ते पशुना जेटला रोम होय तेटला हजार वर्ष पर्यंत ते पशुनो मारनार प्राणी नरकमां पडी दुःख भोगवे छे तेमज जे कोइ माणस मेरुपर्वत जेटलो सोनो दानमां आपे अथवा समस्त पृथ्वीनु दान आपे, तेटला दानथी पण अधिक फल एक प्राणी मरतो होय तेने बचाववाथी मले छे माटे मरता प्राणीने बचाववा जेटलु फल सोनाना दानथी के पृथ्वीना दानथी पण मलतु नथी केमके बीजा सर्व प्रकारना दान छे तेनु फल तो कालांतरमां खूटी जाय के भोगवाइ जाय छे, परतु अभयदाननु फल तो क्यारे पण खूटतु नथी, तेना वचन सांभली यज्ञ करनारा निर्दयी ब्राह्मणो बोल्या तु कोण छे ? बकरो बोल्यो हु अग्निदेव छु, बकरो म्हारु वाहन छे, तमे पशुओने मारो छो तेथी तेमने घणा दुःख वेठवा पडशे, माटे तमारा ऊपर दया लावी उपदेश करवा आव्यो छु ब्राह्मणो बोल्या–अमे धर्मना माटे मारीए, बकरो बोल्यो–पशुवध करवाथी धर्म क्यां थवानो छे ? ए तो म्होटु पापनु स्थानक छे. जो एनो मुद्दो तमारे पूछवो होय तो, जैनाचार्य श्रीप्रियग्रथसूरि पासे जइने पूछो, ते महा कृपापात्र छे माटे तमोने समजावी तमारा निस्तार करशे ब्राह्मणो प्रियग्रथसूरि पासे पूछवा आव्या, तेमणे दया रूप शुद्ध धर्म बताव्यो ते सांभली ब्राह्मण प्रमुख घणा लोको जैनी थया, एम श्रीप्रियग्रथसूरिथी मध्यमशाखा निकली

ब्रह्मद्वीपिका शाखानी उत्पत्ति—

थविर आर्य समित गौतमगोत्रीयाथी ब्रह्मद्वीपिका शाखा निकली तेनो सबध–

आभीर देशमां, अचलपुर नगरनी नजीक एक कन्ना अने बीजी बेन्ना ए बे नदीयो हती, तेनी वचमां ब्रह्म नामा द्वीप हतो, तेमां पांचसो तापस वसता हता. एक तापस पोताना पगमां लेप लगाडी पावडीयो पहेरी हरहमेश बेन्ना नदीना पाणीमां थलना जेम चालीने गाममां पारणुं करवा आवतो त्यारे लोक तेनी प्रशंसा करता के आ तापसनी केवी अथाग तपःशक्ति छे, एवा मर्ममां घणा लोको मिथ्यात्वी थइ गया अने तापसनी भक्ति करवा लाग्या. श्रावकोने पण कहेवा लाग्या के जूओ अमारा गुरुनो केवो प्रभाव छे ? एना प्रभावमां कांइ न्यूनता नथी. एवा उपदेशथी घणा लोकोने मिथ्यात्वी थता देखीने श्रावकोए श्रीवज्रस्वामीना मामा श्रीआर्यसमितसूरिने बोलाव्या, सूरि आव्या. त्यारे श्रावकोए पुछयुं-स्वामिन् ! आ तापसनी केवा प्रकारनी तपःशक्ति छे ? आचार्ये कह्युं के तपःशक्ति कांइ पण नथी. परंतु पादलेपशक्ति छे त्यारे सर्व श्रावक समजी गया, पछी तापसनुं छिद्र उघाडुं करवा माटे ते तापसने श्रावकोए पोताने घेर भोजनना अर्थे निमंत्रणा करी. मिथ्यात्वी लोक घणा खुशी थया अने जाणवा लाग्या के श्रावको पण हवे आपणा धर्ममां आवी जाशे. एवुं जाणीने श्रावकोना घेर योगीने लइ आव्या. श्रावकोए भक्तिना मिसे तापसना पग रगडी रगडीने धोइ नाख्या. योगीना मनमां तो म्होटुं दुःख थयुं पण शरमनो मार्यो नाकारो कही शक्यो नहीं. पछी तापस भोजन कर्युं नहीं कर्युं अने तरत त्यांथी उठ्यो. श्रावको आदर देइने पाछा तेना स्थानक ऊपर पोहोंचाडवाने साथे चाल्या, ते मनमां तो एवुं समजता हता के जोइए केवी मजा आवे छे पण बहारथी तेने पोहोंचाडवानुं डोल करीने साथे गया अने सर्व नदी किनारे आवी ऊभा; तापसे विचार्युं के जो थोडो लेप रहेल हशे तो पण नदी उतरी जइश. एम विचारी नदीमां पग दीधो के तरत डूबवा लाग्यो, लोकोमां निंदा थइ पछी दया लावीने श्रावकोए नदीमांथी तापसने खेंची बाहेर काढाव्यो. एटलामां लोकोने प्रतिबोध आपवा श्रीआर्यसमितसूरि पण त्यां आव्या अने चिपटी वजाडीने बोल्या के हे बेन्ने कन्ने ! म्हारे पेहेले पार जावुं छे माटे मार्ग आप. एटलुं आचार्यना मुखमांथी वचन निकलतांज नदीना बन्ने कांठा भेगा मली गया, लोक विस्मय पाम्या. पछी आचार्य तथा बीजा नगरना लोको सर्व मली ब्रह्मद्वीप गया, त्यां तापसोने धर्मोपदेश आपी प्रतिबोध आप्यो. त्यारे पांचसो तापसोए दीक्षा लीधी अने चूर्णना प्रयोगथी तापस नदी ऊपर चालतो हतो, परंतु तेमां तपस्यानो कांइपण प्रभाव न हतो एवी वात सर्व लोकोमां प्रसिद्ध थइ, जैनधर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो. पछी संघसहित गुरु पोताना स्थानके आव्या. ए तापस साधुओथी ब्रह्मद्वीपिका नामे शाखा सर्वत्र प्रसिद्ध थइ.

आर्यरक्षितसूरिजीनो संक्षिप्त वृत्तान्त—

यद्यपि आ स्थविरावलीमां श्रीआर्यरक्षित प्रमुख आचार्योना नाम लखेल नथी तथापि ए पण स्थविर सरखा थया छे माटे तेओनो संबंध कहे छे—दशपुर नाम नगरमां, सोमदेव पुरोहित तेनी रुद्रा नामे भार्या तेमना पुत्र आर्यरक्षितजी परदेश गया, त्यांथी चौद विद्या भणीने आव्या तेमने राजाए हाथी ऊपर बेसाडी, महोत्सव सहित नगरमां प्रवेश कराव्यो सर्व सज्जन कुटुंब मित्रादिक आवीने मल्या परंतु एमनी माता मली नहीं माताना पगे लागवा गया तो पण माता बोली नहीं आर्यरक्षितनीए पूछयु-माताजी तमे आमण दुमणा देखाओ छो पण कांइ आनंद दर्शावता नथी तेनु कारण शु छे ? माताजी बोल्या के पुत्र ! तु जे विद्या शीखी आव्यो छे ते सर्व नरकमां लइ जनारी विद्याओ छे. कारण के तु घणा होमादिक लौकिक कृत्य करवानां शास्त्र भणी आव्यो छे. हुं जैनी छु माटे ए दुर्गतिना देवावाला शास्त्रोने केवी रीते रूडा मानुं ? हुं तो आत्मानुं कल्याण थाय एवां शास्त्रो भणवाथी खुश थनार छु. पुत्र बोल्यो के माताजी ! आत्माने तारनार कयां शास्त्र छे ? ते मने कहो तो हु तेनो पण अभ्यास करु माताए कह्यु के दृष्टिवाद भण आर्यरक्षितजीए पूछयु के दृष्टिवाद क्यां भणवा जाउं माता बोली तोसलीपुत्राचार्यनी पासे जइ ए शास्त्र भण आर्यरक्षितजीए प्रात काले उठीने भणवा माटे प्रयाण कर्यु केटलाक दूर गया के पोताना पितानो मित्र एक ब्राह्मण शेलडीना सांठा हाथमां लइने आवतो स्हामो मल्यो तेणे पूछयु तु कोण छे ? एणे कह्यु हु आर्यरक्षित छु तेणे कह्यु के हु तो तने परदेशथी आव्यो जाणी मलवा आव्यो छु अने आ शेलडीना सांठा पण त्हारा वास्ते लाव्यो छु आर्यरक्षिते शेलडीना सांठा गणी जोया तो साडा नव निकल्या तेथी जाण्यु के हु दृष्टिवादना साडा नव भाग भणीश पछी ते ब्राह्मणने कह्यु के तमे म्हारी माता पासे जाओ, अने माताजीने कहेजो के आर्यरक्षित मने मल्या हता एवु कही आर्यरक्षित आगल चाल्या अने पेहला ब्राह्मणे तेनी माता पासे जइ शेलडी आपीने कह्यु के तमारो पुत्र आर्यरक्षित मने रस्तामां मल्यो हतो माताए जाण्यु के म्हारा पुत्रने शुकन तो सारा थया छे माटे साडा नव पूर्व भणशे. एवु मनमां धारी शीघ्र हवे आर्यरक्षित ज्यां तोसलीपुत्राचार्य हता त्यां गया. अने विचारवा लाग्या के एमने केवी रीते वंदना करुं एवु चिंतवी उपासरानी बाहेर बेठो एटलामां ढड्डर श्रावक निसिहि कही उपासरामां जइ ऊंचा स्वरथी वांदणा देवानी इरियावहि प्रमुख किरिया करवा लाग्यो. ते सांभली सर्व विधि

आर्यरक्षित शीखी गया. पछी गुरु पासे आवी तेवीज विधिथी गुरुने वांदीने विनयपूर्वक आगल बेठा. आ कोइ नवो श्रावक छे पण वांदवानो विधि तो बराबर जाणे छे. एवुं जाणी गुरुए ढड्ढर श्रावकने पूछयुं, ढड्ढरे बोलस्यो के आ गुरुनो भाणेज छे. पछी गुरुने कह्युं आ तो आर्यरक्षित आपना भाणेज छे. तेने गुरुए धर्मोपदेश आप्यो. त्यारे आर्यरक्षिते कह्युं, मने दीक्षा आपो. म्हारी माताए दृष्टिवाद भणवानी आज्ञा आपी छे. गुरुए लोकोना भयथी अन्य स्थानके जइ आर्यरक्षितने दीक्षा दीधी. पछी पोतानी पासे जेटली विद्याओ हती ते तो सर्वे गुरुए भणावी. अने अधिक पूर्व भणाववाने माटे श्रीवज्रस्वामी पासे मोकल्यो. त्यां जतां रस्तामां उज्जयणी नगरी आवी त्यां श्रीभद्रगुप्तसूरि मल्या ते बोल्या के तें बहु सारुं काम कर्युं. म्हारे अनशन करवुं छे, माटे तुं अनशनमां सहाय आपीने पछी जाजे. एवां गुरुनां वचन सांभली अनशनमां सहायी थयो, भद्रगुप्तसूरिए कह्युं के तुं वज्रस्वामी पासे भणजे पण तेमनी संघाते रात्रे भेगो रहीश नहीं. जुदा उपासरामां रहेजे, केमके श्रीवज्रस्वामीनी साथे जे एक रात्रीज रहे ते जो सोपक्रमी आउखावालो होय तो पण वज्रस्वामीना साथेज मरण पामे. ए वात सांभलीने तहत्ति करी संथारो करावी आर्यरक्षित श्रीवज्रस्वामीना पासे आव्यो. रात्रे नगरना बाहेर रह्यो. अने तेज रात्रीमां श्रीवज्रस्वामीने स्वप्न आव्युं के 'म्हारी पासे पात्रमां दूध भरेलुं हतुं ते कोइ प्राहुणो आवीने पी गयो, स्वल्पमात्र शेष रह्युं' प्रभात समये आर्यरक्षितजी पण तेमनी पासे आव्या. वज्रस्वामीए पूछयुं. तुं क्यांथी आव्यो? त्यारे सर्व हकीकत कहीने कह्युं के हुं बीजा उपासरामां रहीने आपनी पासे भणीश. वज्रस्वामीए पूछयुं म्हारी पासे भणवुं ने बीजा उपासरामां रहेवुं एम शा माटे करवुं पडे? त्यारे भद्रगुप्ताचार्ये कहेलुं सर्वे वृत्तांत संभलाव्युं. वज्रस्वामीए उपयोग आपीने विचार्युं के आ वात सत्य छे; महापुरुषना वचन अप्रमाण न होय. पछी अभ्यास करतां आर्यरक्षितजीए नवपूर्व तो संपूर्ण मुखपाठ करी लीधा अने दशमो पूर्व भणे छे, एटलामां माता पिताओने घणा दिवस पर्यंत आर्यरक्षितनुं कोइ समाचार न मलवाथी पोताना छोटा पुत्र फल्गुरक्षितने आर्यरक्षितना पासे मोकल्यो. तेणे आवी कह्युं के तमे माता पितानी पासे चालो. आर्यरक्षिते कह्युं के चालीने शुं करुं? तेणे कह्युं धर्मोपदेश आपो, केमके तेमने दीक्षा लेवानी इच्छा थइ छे. आर्यरक्षिते कह्युं. तुं तो दीक्षा लइ ले. फल्गुरक्षिते कह्युं—मन्हे दीक्षा आपीने पण तमे त्यां चालो त्यारे फल्गुरक्षितने दीक्षा आपीने गुरुने पूछयुं के दशमो पूर्व केटलो बाकी छे? गुरुए कह्युं हजी घणो छे तुं उद्यम कर. त्यारे फरी भणवानो उद्यम करवा लाग्यो पछी केटलाएक दिवस बाद मातापितानी पासे जवानुं मनमां घणुं उमंग थयो अने गुरुने पूछयुं के प्रभो!

दशमो पूर्व हजी केटलो शेप रह्यो छे ! गुरुए कह्यु दशमा पूर्वनुं बिन्दुमात्र तो तु शीख्यो अने समुद्र जेटलो शेप भणवो रह्यो छे पण उद्यम कर त्यारे फरी भणवानो उद्यम करवा मांड्यो पण चित्त बराबर लागे नहीं, तेथी बोल्यो के हवे तो हु जइश त्यारे वज्रस्वामीए 'पूर्वनो एटलो भाग हवे शेप रहेशे, बाकी विच्छेद थइजशे' एवो मनमां विचार करीने श्रीआर्यरक्षितने माविन्नो पासे जवानी रजा आपी पछी बन्ने माइ दशपुर नगरे आव्या, राजाए म्होटा महोत्सव सहित तेमने गाममां प्रवेश कराव्यो पछी माता प्रमुख सर्व कुटुम्बने धर्मोपदेश दइने दीक्षा आपी, पण पिताए दीक्षा लीधी नहीं परंतु कुटुंबना मोहथी पिता तेमना साथेज फरवा लाग्यो. आर्यरक्षितजी बोल्या तमे दीक्षा शा माटे नथी लेता पिता बोल्यो के मने एकतो म्होटु धोतीयु, बीजी जनोइ, त्रीजु छत्र, चोथा पगरखा अने पांचमु कमंडल ए पांच वस्तु विना चाले नहीं, ए विना चालु तो मने लज्जा आवे छे जो एने राखवानी छूट आपो तो दीक्षा लउ आर्यरक्षितजीए पांच वस्तुओनी छूट आपीने पण दीक्षा दीधी पछी 'आ वृद्धने तो जरुर तारवो ज जोइए' आर्यरक्षितजीए एवो निश्चय करी छोकराओने शीखव्यु के अमो ज्यारे चैत्यना दर्शन करवा जइए त्यारे तमो सर्वे साधुओने वंदना करजो, पण एक आ वृद्ध साधुने वांदशो नहीं, आ जो तमोने कहे के मुजने केम नथी वांदता ? त्यारे तमो कहेजो के तमे तो छत्र राखो छो पछी छोकराओए तेमज कर्यु वृद्धे कह्यु के वत्सो ! साधु छत्र न राखे तो म्हारे पण नहीं राखवु एम कही छत्र नाखी दीधु एमज अनुक्रमे जनोइ, पावडी अने कमंडलुनो त्याग करीने कह्यु के धोतीयु तो म्हाराथी मूकाशे नहीं आर्यरक्षितजी बोल्या भले धोत्यु राखो एक दिवस एक साधुए अनशन करीने काल कर्यो त्यारे आर्यरक्षितजीए बीजा साधुओने शीखावी दीधु के तमे मांहोमांहे विवाद करजो पण साधुने परठवा माटे उपाडशो नहीं एवु शीखवीने पछी बोल्या के आ साधुना शरीरने जे परठवी आवे तेने महा लाभ थाय. साधुओ माहोमांहे बोलवा लाग्या-एके कह्यु हु लइ जाऊ, बीजे कह्यु हु लइ जाऊ सोमदेव वृद्धसाधु बोल्या के शु ए कार्य करवामां घणी निर्जरा थाय छे ? गुरु बोल्या हां घणी निर्जरा थाय छे वृद्ध साधु बोल्यो के ए काम हुज करीश, गुरुए कह्यु एमां उपसर्ग घणा छे माटे उपसर्ग सहन करवानी शक्ति होय ते ए काम करे, नहीं कां अरिष्ट थइ जाय वृद्ध साधु बोल्यो हु सर्वे उपसर्ग सहन करीश, एम कही अनशनी साधुना शरीरने उपाडीने चाल्यो आचार्ये श्रावकोना छोकराओने शीखाव्या के वृद्ध साधुनी धोती खोसी लेजो तेथी छोकराओए हाको करी तेना पाछल पडीने धोतीयु खोसी लीधु वृद्धे जाण्यु एतो उपसर्ग छे पछी आचार्य साधु परिवार लइने वृद्धनी पाछल गया, वृद्ध लज्जा पाम्यो गुरु

बोल्या म्होटो उपसर्ग थयो, हवे बीजो धोतियो लावो. साधुओ बोल्या—धोतियुं तो नथी; वृद्ध बोल्यो. लाज तो गइ हवे शुं छे ? माटे चोलपट्टोज आपो. एवी रीते चोलपट्टो पहेराव्यो. हवे ते वृद्ध गोचरी करवा जाय नहीं तेथी गुरुए साधुओने कह्युं के हुं नजीकना गामे एक दिवस माटे जाउं छुं तमे गोचरी लावीने पोतेज वापरी लेजो, वृद्धने आपजो मती. एम कही गुरु अन्य गामे चाल्या गया. पाछलथी साधुओए पोतपोतानो आहार लइ आवीने जमी लीधो पण वृद्धने धाम्यो नहीं. बीजा दिवसे गुरु आव्या साधुओने बोल्या—वृद्ध साधुने आहार शा वास्ते नहीं आप्युं ? साधुओ बोल्या. वृद्ध पोते गोचरी केम जाता नथी ? पछी गुरु पोते गोचरी जवा लाग्या. 'आ तो गुरुनो अविनय थशे.' एवुं चिंतवीने वृद्ध पोतेज गोचरी गयो. त्यां एक शेठना घरमां पाछलना बारणाथी पेसवा लाग्यो, त्यारे घरना माणसो बोल्या स्हामां बारणामांथी आवो. वृद्ध साधु बोल्या अरे लक्ष्मी तो मरजीमां आवे ते तरफथी आवे. जे तरफथी आवे ते तरफथी सारी जाणवी, एनो कांइ विचार राखवो नहीं. शेठे खुशी थइने वृद्ध साधुने बत्रीश लाडु व्होराव्या. ते लइने उपासरे आवी गुरुने देखाड्या. ते जोइ गुरुए विचार कर्यो के म्हारा बत्रीश शिष्य थशे, वृद्ध बोल्या पहेलो लाभ थयो ते सर्व साधुओने देवो जोइए, एम विचारी सर्व मोदक साधुओने आपी दीधा. फरी गोचरीए जइने खीरनुं भोजन लइ आवी पोते पारणुं कर्युं. एम ए वृद्ध साधु भिक्षामां लब्धिवंत थयो, ज्यां जाय त्यां जो ते दातार महालोभी होय तो पण उत्तम भोजन एने व्होरावे एम अनुक्रमे ते वृद्ध साधु गच्छनो आधारभूत थयो. श्री आर्यरक्षितजीना गच्छमां त्रण साधु लब्धिवंत थया—एक दुर्बलिकापुष्पमित्र, बीजो घृतपुष्पमित्र अने त्रीजो वस्त्रपुष्पमित्र तथा चार साधुओ महापंडित थया—एक दुर्बलिकापुष्पमित्र, बीजो वृद्ध, त्रीजो फल्गुरक्षित अने चोथो गोष्टामाहिल. एक दिवसे इन्द्रमहाराजे सीमंधरस्वामीने निगोद विचार पूछ्यो, भगवाने वर्णन करी संभलाव्युं. इन्द्रे पूछ्युं. भरतक्षेत्रमां पण कोइ एवो स्वरूप कहेवावालो हालमां छे ? भगवाने कह्युं आर्यरक्षितसूरि छे पछी इन्द्र वृद्धनुं रूप करी आर्यरक्षितजी पासे आवीने पूछवा लाग्यो के महाराज ! म्हारुं आयुष्य हजी केटलुं छे ? गुरुए श्रुतउपयोगथी कह्युं के तुं पहेला देवलोकनो इन्द्र छे पछी निगोदना सूक्ष्म विचार पूछ्या गुरुए ते सर्व खुलासापूर्वक कह्या, पछी इन्द्रमहाराज गुरुनी स्तवना करी उपासरानुं द्वार फेरवीने चाल्या गया, तेथी शिष्योने खबर पडी के इन्द्र आव्यो हतो. आर्यरक्षितसूरिए बुद्धिनी हानी थती देखीने सूत्रोना जूदा जूदा चार अनुयोग कर्या.

वृद्धवादी, सिद्धसेनदिवाकर अने कालिकाचार्य—

एक साधु वृद्धपणामां म्होटा स्वरथी भणतो हतो तेने देखी राजा बोल्यो के

एटला जोरथी शोखीने तु शुं मूसलो फुलावीश ? ते सांभली वृद्ध साधुए सरस्वतीने प्रत्यक्ष करी अने तेथी विद्यावर पामीने चोवटा मांहे मूसलो ऊभो करी राजा वगेरे सर्व लोकोने देखतां फुल्लवित काव्यथी मूसलो फूलाव्यो, ते जोइ राजा प्रमुख चमत्कार पाम्या. तेमणे सिद्धसेन ब्राह्मणने प्रतिबोध्यो अने ते सिद्धसेनदिवाकरे विक्रमादित्यराजाने प्रतिबोध आपी, श्रीशत्रुंजयनो संघ कढाव्यो, ते संघमां एकसोने सीत्तेर सोनाना देवल हता वली शत्रुंजानो उद्धार कराव्यो तथा श्रीसिद्धसेनदिवाकर सूरिनी सहायथी विक्रमादित्य राजाए पोताना नामथी संवत् चलाव्यो आगल श्रीवीर भगवाननो संवत् हतो, ए वृद्धवादी अने सिद्धसेनदिवाकर बन्ने थविर थया

तेमज त्रण कालिकाचार्य थया छे तेमां एक तो श्रीवीरभगवानथी त्रणशेने छोंतेर(३७६) वर्षे थया तेमणे श्रीपन्नवणा सूत्र बनाव्युं छे अने सौधर्मेन्द्रने निगोदनो विचार कह्यो छे कोइक आचार्य कहे छे के ए कालिकाचार्य वीरथी त्रणशेने वीश वर्षे थया छे, कोइ कहे छे के त्रणशें पचीश वर्षे थया छे, कोइ एम पण कहे छे के चोथनी संवत्सरी थापवावाला एज कालिकाचार्य छे एमां खरु खोटुं केवली भगवान् जाणे बीजा कालिकाचार्य पूर्वे कालिकाचार्य कह्या तेमना मामा थया अने त्रीजा कालिकाचार्य श्रीवीरनिर्वाण पछी ९९३ मा वर्षे अने विक्रम संवत् ५२३ मा वर्षे तेणे चोथनी संवत्सरी करी ते छे तेमां कोइ कोइ चूर्णिकार लखे छे के कालिकाचार्यना केटलाक शिष्योए चोथनी संवत्सरी मान्य करी, अने केटलाएक श्रीसुधर्मस्वामीना शिष्योए पांचमनी संवत्सरी मानी तत्त्व केवली जाणे. ए विवादमां कांइ सार नथी

अथ हरिभद्रसूरिनो संक्षेप वृत्तांत—

हरिभद्रसूरि पण त्रण थया छे तेमां एकतो हरिभद्र नामा ब्राह्मण हतो तेणे व्याकरणादि भणवा पछी प्रतिज्ञा करीके जेनो अर्थ हुं समजी न शकुं ते पदनो अर्थ जे कही आपे तेनो हुं शिष्य थाउं पछी एक दिवस याकिनी महत्तरा साध्वी गाथा भणती हती के ' चक्किदुगं हरि पणगं, पणगं चक्कीण केसवो चक्की० ' ए गाथानो अर्थ हरिभद्रथी थइ शक्यो नहीं. तेथी साध्वीने पूछ्यो साध्वीए कह्युं अमारो अधिकार नथी गुरुने पूछो पछी गुरु पासेथी गाथानो अर्थ सांभली प्रतिज्ञा पालवा सारु दीक्षा लीधी, आचार्यपद पाम्या ते आचार्ये विक्रमसंवत् ५८५ मां आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख ग्रंथोनी टीकाओ करी तथा एमना एक हंस अने बीजा परमहंस ए बे शिष्य बौद्धोनी पासे भणवा गया, बौद्धोए जाण्युं के ए बे जैनी जेवा देखाय छे तेथी परीक्षा करवा माटे दादराना पगथीयाओ ऊपर जिनप्रतिमा मूकी, तेना उपर पग आपीने बौद्धनां शिष्यो तो सर्व चाल्या गया परंतु हंस अने परमहंस जिनप्रतिमा देखीने

प्रतिमाना हृदयमां खडीनी जनोइ करीने निकल्या. बौद्धोए जाण्युं के आ जैनीओ छे अने हंस परमहंस पण जाणी गया के ए आपणने अवश्य मारशे. पछी मरण भयथी ते बन्ने जण पोत पोतानी भणवानी पोथीओ हाथमां लइने पोताना देश भणी चालता थया. बौद्धोए राजाना सीपाइयो बन्नेने मारवा माटे मोकल्या. तेमे जइ प्रथम हंसने मारी नाख्यो अने भागीजता परमहंसने पण चितोड पासे मारी नाख्यो. हरिभद्रसूरि ए वात सांभलीने महा कोपायमान थया, एक तेलनी कढाइ उकालीने मंत्र जपता जाय अने एकेक कांकरो कढाइमां नाखता जाय. ते मंत्रित कांकराना प्रभावथी बौद्धनो एक तपस्वी ते कढाइमां पडी भस्म थइ जाय. एम १४४४ बौद्धोने हण्या. ते वखते एक श्रावक बोल्यो 'जइ जलइ जलउ लोए' एटलुं सांभलताज क्रोध उतरी गयो. केटलाक ग्रंथोमां एम पण लख्युं छे के " याकनी महत्तरा साध्वीए एक श्राविकाने लावीने गुरुने कह्युं के एणे पंचेन्द्रिय जीवनो वध कर्यो छे. तेनो दंड शुं अपाय ? गुरु बोल्या पांच कल्याणानो दंड अपाय छे. साध्वी बोली—महाराज ! एक पंचेन्द्रियना वधनो एटलो म्होटो दंड अपाय एवुं आप जाणो छो तो आ बौद्धोने केम मारो छो ! त्यारे गुरुनो क्रोध उतरी गयो, पछी तेना प्रायश्चित माटे १४४४ पंचाशक प्रमुख प्रकरण ग्रंथो बनाव्यां." एक पट्टावलिमां एम पण लखेल छे के " हंस अने परमहंस बौद्धमठमांथी लाग जोइने निकली गया. मठना कुलपतिए बन्नेने पकडवा पाछल मोटुं लश्कर दोडाव्युं. लश्कर आवे छे एम जणायाथी हंसे कह्यो के परमहंस ! तुं पासेना नगरमां चाल्यो जा. त्यांनो सूरपाल राजा तारी रक्षा करशे. हंस सहस्त्रयोधी हतो तेणे लश्करनो सामनो कर्यो पण लश्करमां १४४४ योद्धा हता तेमना बाणोथी हंस वींधाइ गयो अने मरण पाम्यो. परमहंस सूरपालराजा आगल सहीसलामत पहोंची गयो. तेणे बधी हकीकत सांभली मदद करी. बौद्ध लश्कर आव्युं ने परमहंसनी मांगणी करी. राजाए जणावी दीधुं के हुं लडवा तैयार छुं, पण ते तो नहींज मले. आखिरे एवुं नक्की थयुं के परमहंस बौद्धो साथे विवाद करे अने जो जीते तो ते छूटो थाय. खूब वाद विवाद थयो. परमहंस जीत्यो. सूरपाले सन्मान साथे परमहंसने त्यांथी विदाय कर्यो. बौद्धोये रस्तामांथी पकडवा अनेक प्रयत्नो कर्या पण परमहंस तो पोताना गुरु हरिभद्राचार्य पासे पहोंची गयो. हंस केवी रीते मार्यो गयो ते सर्व हकीकत गुरुने जणावीने परमहंस पण प्राण मुक्त थयो. आ बनावथी आचार्यने बहु क्रोध चढ्यो ने तेज वखते सूरपाल राजाना नगर तरफ चाली निकल्या. टुंक समयमां त्यां पहोंची राजाए बतावेली क्षत्रियवटने असीम धन्यवाद आप्यो. सूरपालना दरबारमांज बौद्धमठपति साथे वादविवाद करी पोतानी प्रबल विद्वत्ताथी हरिभद्राचार्ये बौद्धोने परास्त कर्या. अने मठपति ते वखतेज कलकलती तेलनी कढाइमां जइ पड्यो ने जोत जोतामां तलाइ गयो. एम एक पछी एक

बौद्ध भठियानी जेम कढाइमां तलाववा मळ्या एवामां वे जैनमुनि त्यां आव्या ने एक पत्र हरिभद्राचार्यना हाथमां मूक्यो तेमां लख्यु हतु के 'वीतरागना वचननो समभू होय तेनामा क्रोध न उद्भवे ' पत्र पठवनार पोताना गुरु जिनभद्रज हता हरिभद्र पत्र वांचतांज शांत थइ गया. तेओ त्यांथी रवाना थइ पोताना गुरु पासे आव्या अने क्रोधमा थएल अकार्यनो प्रायश्चित माग्यु गुरुए कह्यु तारो १४४४ बौद्धोने सहारवानो सकल्प हतो माटे तेटलाज ग्रथ बनावी निर्मल था हरिभद्राचार्ये ते मजूर कर्यु हस अने परमहस ससारीपणामां हमनाज भाणेज हता

बीजा हरिभद्रसूरि विक्रम सवत् ६६२ मां थया छे तेमना शिष्य सिद्धर्षिगणी हता ते बौद्धोना पासे एकवीश वार गया अने आव्या तेने प्रतिबोधवा माटे ललित विस्तरा शक्रस्तवनी वृत्ति बनावी. त्रीजा हरिभद्रसूरि विक्रम सवत् बारसोना सैकामां थया तेमणे बनावेला मुनिपति चरित्र आदिक ग्रथो प्रसिद्ध छे तथा श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण पण स्थविर थया छे, तेमणे विशेषावश्यकनु भाष्य बनाव्यु छे तेमज श्रीशीलगाचार्य, अभयदेवसूरि अने मलयगिरि प्रमुख टीकाओना करवावाला थया छे. ए सर्व स्थविरो जाणवा इति स्थविरावली–शेप सबधः

अट्ठावीश प्रकारनी साधु समाचारी—

१ ते काल ते समयना विषे, श्रमण भगवत श्रीमहावीर स्वामी आषाढशुदि पूर्णिमाथी एक महीनो अने वीश दिवस वरसादना गया पछी पजोसण करे एवो नियम छे शिष्य पूछे छे के चोमासाना पचास दिवस गया पछीज शा माटे पजोसण करे (१) गुरु ! कहे छे–शिष्य गृहस्थ श्रावको पोताना घरने खडी प्रमुखथी धोइ ऊपर छाया करी घठारे, मठारे, धूप आपे, परनाल प्रमुख पाणीना मार्ग बनावे इत्यादि सर्व काम गृहस्थे पोताना माटे कर्या होय अने पोते वापरी फासु करी लीधा होय, तेथी वर्षादना पचास दिवस गया पछी पजोसण करे कदाचित् साधु पहेलाथीज कहे के हु चोमासु रहीश, तो ते गृहस्थ साधुना निमित्ते घर प्रमुखनो आरभ करे माटे पचास दिन गया पछी साधु कहे के अमे चोमासु आंही करीशु (२) एवी रीते भगवान् पोते पचास दिन गया पजोसण करे तो तेमना गणधर पण

पचास दिन गयां पजोसण करे. (३) अने गणधर पचास दिन गया केडे पजोसण करे तो गणधरोना शिष्यो पण वर्षादना पचास दिवस गयां पजोसण करे. (४) गणधरोना शिष्यो पचास दिन गयां पजोसण करे तो थविर पण वर्षादना पचास दिवस गयां पजोसण करे. (५) थविरो, वर्षादना पचास दिवस गयां पजोसण करे तो जे आजना समयमां श्रमण निर्ग्रंथ विचरे छे ते पण पचास दिन गयां पजोसण करे. (६) आज वर्त्तमान श्रमण निर्ग्रंथ वर्षादना पचास दिवस गयां पजोसण करे तो असारा आचार्य उपाध्याय पण पचास दिवस गयां पजोसण करे. (७) असारा आचार्य उपाध्याय पचास दिवस गयां पजोसण करे तो असे पण वर्षादना पचास दिवस गयां पजोसण करिए छीए. अपवाद कहे छे के भादरवा शुदि पांचमना एक दिवस आगल अर्थात् भादरवाशुदि चोथना दिवसे पजोसण करवुं कल्पे परंतु भादरवा शुदि पांचमीने ओलंघवी कल्पे नहीं एटले एकावनमां दिवसे संवच्छरी करवी कल्पे नहीं, परंतु ओगण पचासमां दिवसे कारणे करवी कल्पे माटे कारणे चोथनी संवत्सरी करवी पण छठ्ठनी संवत्सरी तो अपवादे पण करवी न कल्पे. (८) ए आठ आलावे करी पजोसण करवा आश्रयी प्रथम समाचारी जाणवी.

२ वर्षाकालमां चोमासुं रहेला साधु अने साध्वीने पांच कोशनो चोफेर अवग्रह राखवो पण अवग्रहथी बाहेर हाथ मूके त्यां सुधी पण उभुं रहेवुं नहीं. साधु साध्वीने वर्षादे चोमासामां गोचरीना माटे पांच कोश जावुं आववुं कल्पे ए जावा आववानी बीजी समाचारी जाणवी.

३ विचाले नित्य नदी वहेती होय तो नदी उतरीने पांच कोश लगण पण जावुं आववुं कल्पे नहीं अने कुणाला नगरीनी पासे 'ऐरावती' नदी छे ते नित्य वहेती रहे छे पण तेनो पाट घणो पहोळो छे, पाणी

स्वल्प छे माटे एक पग जलमा अने एक पग ऊचो आकाशे थलमा राखतो उतरे तो चोफेर पाच कोश जावु आववु कल्पे एवी नदी न होय तो न कल्पे ए नदी उतरवा सबधि त्रीजी समाचारी जाणवी

४ वर्षादमा रहेला साधु अने साध्वीने गुरुए कह्यु होय के तमे गिलाणने आहार आणी आपजो तो तेना माटे आहार लावी देवो कल्पे, परतु पोतानी मतिए गिलाणना माटे आहार लावी देवु कल्पे नहीं अने जो गुरुए कह्यु होय के तु त्हारे माटेज लइ आव, तो पोताने माटेज लइ आववु कल्पे पण बीजाने आपवु न कल्पे. गुरुए कह्यु होय के तु गिलाणने आहार लावी आपजे अने तुं पण खाजे, तो लाववु अने देवु कल्पे ए साधुओने परस्पर देवा लेवा सबधि चोथी समाचारी जाणवी

५ चोमासे रहेला साधु साध्वीने १ दूध, २ दहि, ३ माखण, ४ घृत, ५ तेल, ६ गोल, ७ सहत, ८ मदिरा अने ९ मास ए नव विगय छे तेमा मदिरा, मास, माखण अने सहत ए चार विगय तो प्रथमथीज सर्व प्रकारे वर्जेली होय छे माटे ते मूकीने बाकीनी पाच विगय जे छे ते बलवान् अने रोगरहित शरीरवालाने, नित्य लेवी कल्पे नहीं अने कारणे लेवी पडे तो लेवाय, पण पजोसणमा लेवी नहीं ए विगय निषेध सबधि पाचमी समाचारी जाणवी

६ चोमासे रहेला साधु साध्वीने कोइ गिलाण कहे के म्हारा माटे अमुक चीज गृहस्थना घेरथी लइ आवजो त्यारे लावनार साधु गुरुने पूछे के स्वामिन् ! गिलाण साधु अमुक चीज मगावे छे ते लइ आवु ? गुरु कहे केटली मगावे छे ? त्यारे गिलाणने पूछे गिलाण कहे के आटली चीज जोइए पछी गुरुने कहे स्वामिन् ! अमुक चीज

आटली गिलाण मगावे छे. त्यारे गुरु कहे एटली चीज एटला प्रमाणनी लावजे. पछी ते साधु ज्यारे गोचरी जाय त्यारे गिलाणने खपती चीजथी वधारे श्रावक देवा मांडे तो कहेवुं के एटलीज गिलाणने खपे छे. तेम छतां श्रावक कहे के वधारे लइ जाओ, आप पण खाजो, पीजो, वापरजो, म्हारा घरमां घणी छे माटे सुखे ल्यो. तो लेवी. पण गिलाणना नामथी पोते लइने वापरवी नहीं कल्पे. ए गिलाणने खपती वस्तु लावी आपवा संबंधि छट्ठी समाचारी जाणवी.

७ वर्षादमां रहेला थविर कल्पी साधुओने श्रावकोना घरमां जे नवा श्रावक थएला होय तेमना घेर हरकोइ न्हाना अथवा म्होटा साधु जाय अने ते जे कांइ मागे ते आपे, पण नाकारो करे नहीं, न्हाना म्होटा साधु स्हामुं जुए नहीं, पण चोरासी गच्छना साधुओने दान देवानीज इच्छा राखे ते, अने ज्यां साधुओने पण एवो विश्वास होय के जे चीज क्यांय पण नहीं मलशे, ते एमना घरमां तो जरूर मलशे. एवा श्रावको जे होय तेमना घरमां साधुओए विना देखती चीज मागवी नहीं. कारण के ते श्रावक तो हरेक चीजनुं दान आपवुं एवी वांछावालो छे तेथी ते एवुं जाणे के ए चीज एमने क्यांय नहीं मली हशे माटे मागवा आव्या छे. तेथी ते वजारमांथी वेचाती लइने अथवा अणसमजु नवो थयेलो श्रावक होय तो ते बाहेरथी चोरी लावीने पण साधुने आपे माटे एवा घरोमां अणदीठी वस्तु मागवी कल्पे नहीं. ए अदृष्टयाचन वर्जनसंबंधि सातमी समाचारी जाणवी.

८ वर्षादमां रहेला साधुओए नित्य एकवार जमवुं अने गृहस्थोना घेर गोचरी माटे एकवारज जावुं. पण आचार्य, उपाध्याय, तपसी, गिलाण, जेने दाढी मूछ आव्या न होय एवा लघुवयना शिष्य तथा जेने स्तन न होय एवी लघुवयनी शिष्यणी प्रमुखनी वैयावृत्त्य करवा

सारु जो एक दिवसमां वे त्रण वखत गृहस्थना घेर जवु पडे तो पण तेनी मनाइ नथी, परतु पोताना माटे तो एकवारज जवु कल्पे, उपरात जवु कल्पे नहीं तथा एक उपवास करवावालाने, जो एकवार गोचरी लावी खाइ, पीने, तृप्त थइ रह्या, पातरा प्रमुख पूछी मूक्या, तो फरी वीजी वखत गोचरी न जावु अने जो तृप्ति न थइ होय तो वीजीवार गोचरीए जावु कल्पे चेलानी तपस्यावालाने वे वखत अने तेलानी तपस्यावालाने त्रणवार गोचरी जावु कल्पे त्रण उपवासथी उपरात तपस्या करनारने मरजीमा आवे तेटला वखत गोचरी जावु कल्पे ए गोचरी जवा सवधि आठमी समाचारी जाणवी

९ वर्षादमा रहेला साधु साध्वी जे नित्य जमवावाला होय तेमने श्रीआचारागसूत्रमा कहेला एकवीशे प्रकारना पाणी लेवा कल्पे एक उपवासवाला साधुने एक आटानु धोवण, वीजु पाननु धोवण अने त्रीजु चावलनु धोवण ए त्रण प्रकारनु पाणी लेवु कल्पे छट्ठना तपवाला साधुने तूसनु (कूकसानु) धोवण, जवनु धोवण अने तिलनु धोवण, ए त्रण जातनु पाणी लेवु कल्पे तथा अट्ठम तपवाला साधुने एक ओसामण, वीजु काजी, अने त्रीजु तीन उकालावालु उन्हुं पाणी, ए त्रण प्रकारना पाणी लेवा कल्पे, अने त्रण उपवासथी वधारे तप करनावाला साधुने छाणेलु उष्ण पाणीज लेवु कल्पे तथा अनशनवाला साधुने एक उष्ण पाणीज कल्पे, ते पण छाणेलु होय ते पण थोडु थोडु पीवु, परतु घणु पीवु नहीं कल्पे ए पाणी पीवा सवधी नवमी समाचारी जाणवी

१ ओसामण, २ पिष्टोदक, ३ सस्वेदिम, ४ तदुलोदक, ५ तुषोदक, ६ तिलोदक, ७ यवोदक, ८ सौवीर, ९ अम्बोदक, १० अम्बाडोदक, ११ कपित्थोदक, १२ मातुलिंगोदक, १३ द्राक्षोदक, १४ दाडिमोदक, १५ खर्जूरोदक, १६ श्रीफलोदक, १७ करीरोदक, १८ बदरोदक, १९ आमलकोदक, २० चिञ्चोदक, २१ उष्णोदक

१० वर्षाऋतुमां रहेला साधु जेणे मर्यादा करी छे के पांच दात पाणीनी अने पांच दात भोजननी लेवी, पण जो पाणीनी चार दात मळी अने भोजननी पांच दात मळी पण ते पांच दातमां भोजन स्वल्प आव्युं छे तेनाथी पेट भराय नहीं. त्यारे विचार करे के पाणीनी चार दात मळी छे पण पांच मळी नथी तो हवे एक दात भोजनमां मेळवी आपुं, एम करवुं कल्पे नहीं. जे जेटलुं मळ्युं तेटलुंज खाइने संतोष करवो, पण दात अदल बदल करवी नहीं. तेम बीजी वखत पण गोचरी जावुं नहीं. 'वोहोरती वखते पात्रमां मात्र एकज चावलनो दाणो आवी पड्यो, तो ते एक दात जाणवी; तेमज सर्व अन्न साथेज पात्रमां पडी जाय तो पण एकज दात जाणी लेवी. एमज पाणीनुं पण वहोरती वखते जो एकज टीपुं आवी पात्रमां पडे तो ते एकज दात जाणवी अने पाणीनी धारा खंडित थइ न होय, अस्खलित धार वहेतां संपूर्ण पात्र भराइ जाय तो पण एक दात समजवी; परंतु धार खंडित थया पछी बीजी धाराथी जे पाणी पात्रमां पडे ते बीजी दात कहेवाय.' ए दात आश्रयी दशमी समाचारी जाणवी.

११ वर्षाकाले जे उपासरामां साधु चोमासुं रह्या होय ते जगाथी मांडीने सात घर पर्यंत गोचरी माटे जवुं नहीं. गाममां जमण होय तो केटलाएक आचार्य कहे छे के उपासरा सहित सात घर अने केटलाएक आचार्य कहे छे के उपासरा सहित आठ घर लगण व्होरवुं नहीं. ए संखडी संबंधि अगीआरमी समाचारी जाणवी.

१२ चोमासा रहेला पाणिपात्रधारी (जिनकल्पी) मुनिने फुसारमात्र (अति झीणो) जल वर्षतो होय तो पण गृहस्थोना घरोमां गोचरी माटे जवुं कल्पतुं नथी. तेमज वगर ढांकेला स्थानके गोचरी करवी पण न कल्पे. गोचरी करतां अकस्मात् जल वर्षवा मांडे तो भुक्तावशिष्ट आहारने हाथमां ढांकी अने छाती के कक्षामूलमां राखी,

ढाकेली जगा अथवा वृक्षना मूलतले आवीने जो तेमा वर्षादना छांटा न लाग्या होय तो वापरवु कल्पे, पण पाणीना छाटा लाग्या होय तो वापरवु न कल्पे ए जिनकल्पीमुनिने गोचरी करवा सबधि बारमी समाचारी जाणवी

१३ वर्षादमा चोमासे रहेला स्थविरकल्पी साधुओने तो, जेनी धारा रोकाय नहीं एवो अखड धाराथी मेघ वर्षे तो गोचरी जावु नहीं कदाच कोइक साधु गिलाण होय अथवा अशक्त होय, एक बे दिवसनो भूख्यो होय अने अधिक भूख सहन करवानी शक्ति न होय तो एक सूतरनो कपडो तेना ऊपर ऊननु वस्त्र ओढीने थोडा छाटा पडता होय तो गोचरी जावु कल्पे ए अपवाद सूत्र छे तथा गृहस्थना घेर गोचरी गया केडे रही रहीने थोडो थोडो वर्षाद वरसे तो आराममा, उपासरामा, मडपनी नीचे तथा रूखनी नीचे आववु कल्पे तथा गृहस्थना घेर गोचरी गएला साधुने वर्षाद आव्यो तो तेना घरे जे वखते साधु आव्यो ते वखतथी पहेला जो भात उतर्यो होय अने पछी दाल उतरी होय तो साधुए भात व्होरवो पण दाल व्होरवी नहीं अने जो दाल पहेली उतरी होय अने चावल पछी उतर्या होय तो दाल व्होरवी अने चावल व्होरवा नहीं अने जो चावल तथा दाल बन्ने पहेला उतर्या होय तो बन्ने लेवा कल्पे अने पछी उतर्या होय तो बन्ने चीज लेवी कल्पे नहीं तथा गोचरी गएला साधुने आहार मल्या बाद वर्षाद रही रहीने वर्षतो होय तो बागमा, उपासरामा, ढाकेली जगामा, अथवा झाडनी नीचे आवीने प्राप्त आहार खाइ जवु, पण आहारने घणो वखत राखी मूकवो नहीं अने पातरा पूछी एकठा बाधीने वर्षाद पडतो होय तो पण दिवस छताज उपासरामा आववु पण राते उपासरा बाहेर रहेवु नहीं वर्षादमा रह्या साधु गृहस्थना घेर गोचरी गया पछी रही रही वरसाद वर्षवा लागे तो बागादिकमा अथवा उपासरे आववु,

परंतु बागादिक स्थानमां एक साधु अने एक साध्वीने, एक साधु अने बे साध्वीने, तथा बे साधु अने एक साध्वीने, तथा बे साध्वी अने बे साधु ए चारे भांगे ऊभा रहेवुं नहीं कल्पे तथा पांचमे भांगे बे साधु अने बे साध्वी होय तेमां एक वृद्ध साधु साध्वी होय तथा एक लघु साधु साध्वी होय अने जगा घणी मोकली होय ज्यां सर्व लोक देखता होय एवी जगामां रहेवुं कल्पे. एवाज चार भांगा साधुने श्राविकानी साथे कहेवा. तेमज एवाज चार भांगा साध्वीने श्रावकनी साथे कहेवा अने पूर्वोक्त पांचमा भांगे एकठाणे रहेवुं कल्पे. आ स्थविरकल्पीने गोचरी तथा साधु साध्वीने एकत्र वास संबंधि तेरमी समाचारी जाणवी.

१४ वर्षादमां रहेला साधु अथवा साध्वीए कोइ साधुना कह्या विना तेमना माटे अशनादिक चार आहार लाववा कल्पे नहीं. ते शा माटे ? के तेनी इच्छा होय तो ते आहार खाय अने इच्छा न होय तो न खाय माटे कह्या विना आहार लाववो नहीं. ए पूछया विना आहार नहीं लाववा संबंधी चौदमी समाचारी जाणवी.

१५ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने ज्यां सुधी शरीर भींजेलुं होय त्यां सुधी अशनादिक चार आहारमांथी कोइ पण आहार करवो कल्पे नहीं. एम शा वास्ते ? के घणुं करीने सात ठेकाणा भींजेला रहे छे, तेमां एक हाथ, बीजी हाथनी रेखा, त्रीजा नख, चोथी नखनी अणीओ, पांचमां भुंहारा, छट्ठा नीचला होठ अने नीचली दाढीनी जगा, सातमा ऊपरना होठ अने ऊपरनी मूछो, ए साते आला न होय तदन सूकी गया होय त्यारे चार आहार करवा कल्पे. ए आर्द्र शरीरे आहार न करवा संबंधी पन्नरमी समाचारी जाणवी.

१६ चातुर्मास स्थित साधु साध्वीओने सूक्ष्म आठ वस्तुओने वारवार सूत्र ज्ञाने करी जाणवी, पोताना चक्षुए करी देखवी, अने तेनी वारवार पडिलेहण करवी तेमा–एक प्राणसूक्ष्म, बीजु पनकसूक्ष्म, त्रीजु बीजसूक्ष्म चोथु हरितसूक्ष्म, पाचमु पुष्पसूक्ष्म, छट्ठु अडसूक्ष्म, सातमु गृहसूक्ष्म अने आठमु स्नेहसूक्ष्म ए आठ सूक्ष्म जाणवा तेमा प्रथम प्राण सूक्ष्म एटले झीणा झीणा जतुओ काला, नीला, राता, पीला अने धोला एवा पाच रगवाला अणुद्धरी (कुथुआ) जीव थाय छे, ए जीव एक स्थानके अणचालता रहे, ज्ञानरहित छद्मस्थ साधु साध्वीओने नजरथी देखाय नहीं माटे ते जीवोने वारवार सूत्र साभलवे करी जाणता रहेवु, चक्षुथी देखता रहेवु १. बीजा पनकसूक्ष्म एटले नीलफूल ते काली, लीली, राती, पीली अने धोली एवा पाच प्रकारनी थाय छे, ते जीवो जे वस्तुमां पडे ते वस्तुना रंग जेवा दीठामा आवे, तेथी छद्मस्थने नजरे नहीं आवे माटे तेने पण वारवार देखता तपासता रहेवु २ त्रीजा बीजसूक्ष्म ते पण काला, नीला, धोला, पीला अने राता ए रीते पाच प्रकारना छे शाल प्रमुखना जेवा वर्णवाला थाय छे, ते पण छद्मस्थने जाणवामा नहीं आवे माटे तेनी पण वारवार पडिलेहणा करवी ३ चोथा हरितसूक्ष्म एटले नीलोत्री सूक्ष्म थाय छे ते पण पूर्वोक्त पाच रगवाली थाय छे ते पृथ्वीना रग सदृश होय अने घणी बारीक होय, तेनी पण साधु साध्वीए घणीज रूडी रीते दृष्टि वडे जोइने पडिलेहण करवी ४ पाचमा पुष्पसूक्ष्म (झीणा फूल) ते पूर्वोक्त रीते पाच रगना थाय छे ते रूखनो जेवो रग होय तेवा रगवाला थाय छे ते पण जाणवामा नहीं आवे, तेनी पण पडिलेहण करवी ५ छट्ठा अडसूक्ष्म तेमा प्रथम मधुमाखीना इंडा, बीजा कलातरा(माकडी)ना इंडा, त्रीजा कीडीना इंडा, चोथा गिरोलीना इंडा अने पाचमा काकीडाना इंडा ए सर्वे जीवोना

ईंडां पण सूक्ष्म थाय छे; माटे एने वारंवार जोवा अने पडिलेहण करवी ६. सातमां गृहसूक्ष्म पण पांच प्रकारना छे-एक तो भूमिमां गद्दइया सरखा घर करेला होय ते, बीजा पाणी सुकाइ गया पछी पापडी भूमि ऊपर पडे ते, त्रीजा बिल, चोथा ताड प्रमुख वृक्षोना मूलमां न्हाना न्हाना घर थाय छे ते, अने पांचमां भमरानां घर ए पांच प्रकारना गृहोनी पडिलेहणा करवी ७. आठमो स्नेहसूक्ष्म ए पण पांच प्रकारनो छे-एक ओसनुं पाणी, बीजुं हेमारानुं पाणी, त्रीजुं धुंहरिनुं पाणी, चोथुं करानुं पाणी अने पांचमुं डाभ प्रमुखनी अणी ऊपर रहेल पाणीनां बिंदु, ए पांच प्रकारनुं पाणी छे तेने पण छद्मस्थे जाणीने पडिलेहवुं ८. ए आठ सूक्ष्म जीव आश्रयी सोलमी समाचारी जाणवी.

वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने ज्यारे गृहस्थोने घेर गोचरी (आहार प्रमुख) लेवाने जावुं होय त्यारे आचार्य, उपाध्याय, स्थविर प्रवर्त्तक, गणि, गणधर, गणावच्छेदक तथा जेनी आज्ञामां चालतां होइए तेमने पूछीनेज जावुं. तेमने एम कहेवुं के हे भगवन् ! आपनी आज्ञा होय तो गृहस्थोने घेर भात पाणी वगेरे लेवा वास्ते जाऊं. ते आचार्यादिक जो जवानी आज्ञा आपे तो जवुं कल्पे, विना आज्ञा नहीं. शिष्य पूछे छे के शा वास्ते ? गुरु कहे छे के आचार्यादिक साधु अमुक दिशा गयो तेने घणो वखत केम लाग्यो ? इत्यादि उपद्रव टालवाना उपायने जाणे छे. एवीज रीते जो श्रीजिनचैत्ये दर्शन करवा, ठंडेल भूमिकाए, बीजा कोइ पण कामना माटे जवुं होय, अने गामोगाम विचरवुं होय तो पण पूछया विना जवुं नहीं. तथा चोमासे रहेला साधु साध्वीने विगयनो आहार करवानी इच्छा होय तो आचार्यादिकने पूछया विना विगय लेवी कल्पे नहीं माटे आचार्यादिकने पूछवुं के हे महाराज ! आपनी आज्ञा होय तो हुं दूध प्रमुख

विगय गृहस्थना घेरथी लइ आवीने आहार करु ? आचार्यादिक कहे के अमुक प्रमाणवाली विगय लावीने आहार करजे शिष्य आशका करे छे के आज्ञा लेवानु शु प्रयोजन छे ? गुरु उत्तर आपे छे के विगयादिक खावा के नहीं खावा, तेथी थता गुण तथा अवगुण ए सर्व आचार्यादिक जाणे छे माटे पूछवु जोइए तथा चोमासामा कोइ साधु पोतानी आरोग्यता माटे औषध करवानी चाहना राखतो होय तो आचार्यादिकने पूछीनेज औषध करवु करावबु कल्पे तथा चोमासामा कोइ साधु, सारु, कल्याणकारि, उपद्रव रहित, धन्यकारी, मंगलिकनु करनार, सोभावत अने महा प्रभाविक एवु तप करवानी चाहना राखतो होय, तो आचार्यादिकने पूछीनेज तप करवुं तथा कोइ साधु अनशन करवानी चाहना राखतो होय, अने भात पाणीनो त्याग करी मृत्युने नहीं चाहता पादोपगमन अनशन प्रमुख करे, तेणे पण आचार्यादिकने पूछया विना अनशन करवु नहीं एमज आहार करवो, मात्रे ठले जावु, सज्झाय ध्यान करवु, धर्मजागरणा करवी, काउस्सग्ग प्रमुख करवु ते सर्व आचार्यादिकने पूछीनेज करवु, परतु पूछया विना कोइ पण काम करवु कल्पे नहीं ए आचार्यादिकने पूछीनेज दरेक कार्य करवा सबधि सत्तरमी समाचारी जाणवी

१८ वर्षाकालमा रहेला साधुओने पोतानी उपधी तडके तपाववी होय, तो पोते त्यां खबर राखवी, पासे बेसवु, परतु उपधिने तावडे राखीने गोचरी जावुं नहीं, आहार करवो नहीं, चैत्य जावु नहीं, ठले जावु नहीं, सज्झाय करवी नहीं, अने काउसग्ग करवो नहीं, जो एटला काम करवां होय तो बीजा साधुने कहेवु के हे आर्य ! मने गोचरी प्रमुख अमुक कार्य करवानु छे माटे तमे अमारी उपधीनी निगा राखो तो हुं गोचरी प्रमुखनु काम करु, जो ते साधु कहे

के हुं निगा राखीश तो गोचरी प्रमुख कार्य करवुं कल्पे. पण कदापि ते कहे के म्हारे बीजां काम छे तेथी बेशी नहीं शकुं, तो पूर्वोक्त गोचरी प्रमुख कार्य करवा कल्पे नहीं. ए उपधि तडके तपाववा संबंधि अढारमी समाचारी जाणवी.

१९ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने, एक हाथ उंची अने शब्द न करे, डगे नहीं, फरती काठी बांधेली एवी शय्या विना रहेवुं कल्पे नहीं. जो एवा शय्याऽऽसन विना रहे तो कर्मबंधनुं कारण थाय. तेमज ते शय्याऽऽसनने वारंवार पडिलेहवा, तडके नाखवा, अने पूंजता रहेवुं. तेम न करे तो तेने चारित्र पालवुं दुर्लभ थशे. ए शय्याऽऽसन ग्रहण करवा संबंधी ओगणीशमी समाचारी जाणवी.

२० चोमासामां रहेला साधु साध्वीने ठला मात्रानी त्रण जगाओ राखवी अने ते जगाओने वारंवार पडिलेहवी परंतु सीयाला अने उन्हालानी पठे चोमासामां न रहेवुं जोइए. शिष्य पुछे छे के शीयाला अने उन्हालाना दिवसोनी पठे चोमासामां शा वास्ते न रहेवुं ? गुरु उत्तर आपे छे के प्रायः चोमासामां नीली वनस्पति प्रमुख जीवो घणा उत्पन्न थएलां होय छे माटे चोमासानो जुदो प्रकार कह्यो. ए ठला मात्रानी जगा राखवा संबंधि वीशमी समाचारी जाणवी.

२१ चोमासामां साधु साध्वीने एक तो ठला (जंगल जवा)नुं, बीजो मात्रा (पेशाब करवा)नुं त्रीजो खेल (खंखार थूंकवा) प्रमुखनो एवं त्रण मात्रक (पात्र) राखवा. ए त्रण मात्रक राखवा संबंधि एकवीशमी समाचारी जाणवी.

२२ पर्युषण करीने रहेला साधु साध्वीने, गायना केश जेवडा सूक्ष्म केश पण पोताना मस्तके राखवा नहीं. केम के पंचमीनी रात्रे जो मस्तके केश रही जाय तो दंड आवे. जो कोइ अशक्त, ग्लान (रोगी),

अने टाटियो होय तो तेणे छरीथी मुडावी नाखवा के कतरणीथी कतराववा उत्सर्गथी तो लोचज करवो तथा जो कतरवा होय तो पाछा पदर पदर दिवसे कतरवा अने गुरु मासी दड लेवो, तथा महीने महीने खुर मुड करवो अने लघु मासी प्रायश्चित्त लेवो, युवान साधुने चार मासे लोच करवो, स्थविर अने जर्जर थएला साधुने चक्षुनो तेज राखवा माटे छे महीने लोच करवो, अथवा स्थविर (अतिवृद्ध)ने माथा ऊपर केश थोडा आवता होय तो वार महिने एकवार लोच करवो. ए लोच करवा संवधि वावीशमी समाचारी जाणवी

२३ वर्षाद्मा रहेला साधु साध्वीने सवत्सरी थया पछी पहेला थयेलो कलह खमाववो पण क्रोध राखवो नहीं, जे कोइ निर्ग्रंथ अने निर्ग्रंथणी पर्युपण वीत्या पछी क्रोध करे, क्रोध राखे, ते अनाचारी छे एम जाणवु तेमने बीजा साधुओए कहेवु के आर्य ! तमे क्रोध राखो छो ते ठीक नथी. एवु कहेवाथी नहीं समजे अने पर्युपण वीत्या पछी कषाय खमावे नहीं तो जेम तवोली सडी गएला पानने वाहेर फेंकी दे छे तेम क्रोधी साधु साध्वीने पण सघमांहेथी वाहेर काहाडी मूकवा ए अधिकरण न उदीरवा सवधि त्रेवीशमी समाचारी जाणवी

२४ वर्षाकालमां रहेला साधु साध्वीने, जो पर्युपणना दिवसोमां कलह थयो होय, कटुक वोलवु पडयु होय, उद्वेग कर्यो होय तो शिष्ये जइ रत्नाधिक (आचार्य) प्रमुखने खमाववा अने आचार्यादिके शिष्यने खमाववु ए रीते पोते खमवु अने बीजाने खमाववु पोते उपशम करवो अने बीजाने पण कराववो, घणा प्रकारे रागद्वेष रहित थवु जोइये. जे क्रोधादिकने न उपशमावे ते ज्ञानादिकनो विराधक थाय छे, एवु जाणीने नियमा उपशम करवो भगवान् उपशमनेज सार पदार्थ कहे छे माटे उपशम अवश्य अगीकार करवो ए परस्पर खमत खामणा सबंधि चोवीशमी समाचारी जाणवी

पांच समिति पालवा ऊपर जुदा जुदा दृष्टान्तो—

१ साधु साध्वीए चोमासामां विशेष करीने पांच समिति पालन करवी जोइये. प्रथम इरिया समिति पालवा आश्रयी वरदत्त मुनिनो दृष्टांत-एक दिवस इन्द्र महाराजे पोतानी सभामां कह्युं के आज भरत क्षेत्रमां वरदत्त मुनि समान कोइ इरियासमितिनो पालवावालो नथी. इन्द्रना मुखथी वरदत्त मुनिनी प्रशंसा सांभलीने कोइक देव परीक्षा करवा सारुं आव्यो. तेणे हाथीनुं रूप करी सुंढमां पकडीने मुनिने आकाशमां उछाल्या अने देवमायाथी जमीन ऊपर न्हानी न्हानी घणी डेडकीओ विकुर्वी. मुनि आकाशथी नीचे पडतां विचार करवा लाग्या के 'मन्हे तो मरवानुं भय नथी पण आ डेडकीओ म्हारा शरीरना पडवाथी मरण पामशे, तेनी विराधना न थाय तो सारुं' एवुं जाणीने आकाशथी पडतां पण ओघाथी जमीन पूंजवा लाग्या ते देखी देवताए जाण्युं के धन्य छे एने जे एवी रीते जीव विराधनाथी ब्हीए छे. पछी ते देवता प्रगट थइने पोतानो अपराध खमावी नमस्कार करीने पोताना स्थानके गयो.

२ भाषासमिति ऊपर संगतसाधुनो दृष्टांत-जे नगरमां संगतसाधु हता ते नगरनी बाहेर कोइ वैरी राजाए सेन्या लइ आवीने नगरने वींटी संगतमुनिने पूछयुं-साधु ! नगर मांहे केटलीक फोज छे ? साधु बोल्यो के घणो सांभल्यो काने, घणो जोयो आंख्ये, नहीं देख्यो सर्वे सांभल्यो, नहीं सुण्यो सर्वे दीठो, ज्यारे ज्यारे ते पूछे त्यारे त्यारे एमज बोलवा लाग्यो, सेन्याना लोकोए जाण्युं के आ भणी भणीने घेलो थइ गयेल छे, एम विचारी मूकी दीधा.

३ एषणासमिति ऊपर नंदीषेणनो दृष्टांत-वसुदेवजीनो जीव पूर्व भवमां नंदीषेण हतो, तेणे ग्लानमुनिनी वेयावच्च करवानो अभिग्रह कर्यो हतो. पोते छट्ठे छट्ठे पारणुं करता तेनी इन्द्रे प्रशंसा करी. त्यारे कोइक देवे आवी अतिसारना रोगवालो साधु बनावीने नंदीषेण पासे मोकल्यो. नंदीषेण तेना सारुं पाणी लेवा गयो. देवताए अशुद्ध करी दीधो, नंदीषेणे लीधुं नहीं, ग्लानने खांधे बेसाड्युं, ग्लाने तेना ऊपर अशुची करी तो पण घृणा लाव्या नहीं, देवे बहु स्तुति करी ए कथा श्रीनेमि प्रभुना चरित्रमां लखाएल छे.

४ आदानभंडमत्तनिक्खेवणा समिति ऊपर सोमिल साधुनो दृष्टांत- एक दिवस साधु विहार करीने कोइक गामे आव्या. दिवस केटलो छे एवी बराबर खबर न पडवाथी वहेली पडिलेहण करी लीधी. एटलामां पाछलथी वखतनी खबर पडी त्यारे गुरुए कह्युं 'पडिलेहण करवानो वखत तो हवे थयो छे

माटे पुन' पडिलेहण करो ' ते सांभली सर्वे साधुओए पडिलेहण करी; पण सोमिल बोल्या हमणा तो पडिलेहण करी छे एटलामां शु सर्प घुसी गयेल छे ?, पछी प्रभाते पडिलेहण करी, पातरा बांधेला हता तो पण तेमांथी देवप्रयोगथी सर्प निकल्यो तेथी ब्हीक पामीने गुरुपासे आवी कहेवा लाग्यो के महाराज ! सर्प निकल्यो, गुरु बोल्या तु उलठ वचन शा माटे बोल्यो ? एवां वचन आज पछी बोलवा नहीं पडिलेहण करवामां तो घणी निर्जरा छे पछी ते साधुए एवो अभिग्रह लीधो के आजथी सर्व साधुना दांडा हुं पडिलेहीश अने पडिलेहण करवामां सर्वे मुनिने सहाय आपीश, अभिग्रह पालता सोमिलमुनिए घणा कर्म क्षय कर्या

५ उच्चारप्रश्रवणसमिति ऊपर सुव्रताचार्यना शिष्यनो दृष्टांत-सुव्रताचार्यनो एक लघु शिष्य हतो तेने गुरुए कह्यु, मांडला कर, तो पण तेणे मांडला कीधा नहीं अने कहेवा लाग्यो शु वहार ऊटडा बेठा छे ? पछी रात्रिमां बाहेर मात्रु परठववा गयो कोइक देवे ऊटनु रूप करी ब्हीवराव्यो अने कह्यो, अरे ! आ गच्छमां एक साधु पण मडल कर्या विना मात्रा प्रमुख करता नथी. पछी एक दिवसे मडल कर्या नहीं अने रात्रे मात्रानी घणी बाधा थइ पण परठे नहीं ते देवताए उद्योत कर्यो शिष्ये जगा जोइने मात्रो परठव्यो माटे जे कोइ मडल देखी परठवणा करशे तेने देवता सहाय आपशे एवो निश्चय करी क्षुल्लक पण पारिठावणिया समितिमां सावधान थयो

त्रणगुप्ति पालवा ऊपर जुदा जुदा दृष्टान्तो—

१ तेमज चोमासामा त्रण गुप्तिनो पालन पण सारी रीते करवु जोइये मनगुप्ति ऊपर कौंकण साधुनो दृष्टांत-कौंकणमुनिने काउस्सग्गमां घणी देर लागवाथी गुरुए पुछ्यु घणो वखत केम लाग्यो ? साधु बोल्यो-जीवदया चिंतववाथी, गुरु बोल्या-केवी जीवदया चिंतवी ?, साधु बोल्यो-म्हारा घरमां छोकरा आलसु छे ते खेतरमां सूड निदानादिक करशे नहीं तो धान थोडो नीपजशे, तेथी दु खी थशे, गुरुए कह्यु-तमे सावद्य चिंतव्यु माटे मिच्छामि दुक्कड द्यो. ते सांभली साधुए मिच्छामि दुक्कड दीधो १

२ वचनगुप्ति ऊपर गुणदत्तसाधुनो दृष्टांत-गुणदत्त साधु एक दिवस पोतानी ससार सबधि धनवती नामे माताने वदाववा जतो हतो, रस्तामा चोर मल्या, तेणे साधुने पकड्यो अने कह्यो के आ रस्ताथी जान आवशे तेनी आगल तु अमारु नाम लइश नहीं साधुए कह्यु-हु तो बोलीश नहीं चोरोए तेने छोडी मूक्यो, त पोताने स्थानके जइ पोताना कुटुबने वदावीने फरी जाननी साथे तेज मार्गे आव्यो चोरोए जानने लूटी लीधी

अने बोलवा लाग्या के आ साधु केवो सत्यवादी छे के पोताना घरना माणसो आगल पण चोर रस्तामां बेठा छे एवुं कह्युं नहीं. ते वचन साधुनी माताए सांभल्युं, ते गुण-दत्त साधुने कहेवा लागी के दुष्ट! तें तारे हाथे चोरोने माल लुंटावी दीधो; तुं केम प्रथमथी बोल्यो नहीं, साधुने घणो कष्ट थतां देखीने चोरोए लूंटेलुं सर्व धन पाछुं आपी दीधुं; जानवाला खुशी थया. पण साधु बोल्यो नहीं २.

३ कायगुप्ति ऊपर अर्हन्नक साधुनी कथा–अर्हन्नक मुनि विहार करतां कोइ स्थानके जलनो खाल वहेनो देखीने विचारवा लाग्या के जो हुं आ खालमां पग देइश तो जीवविराधना थशे माटे कूदी निकली जाऊं एवुं चिंतवी कूदीने पेली तरफ गया. कोइक देवे ते साधुना पग छेदी नाख्या तेथी दुःखी थयो. देवता बोल्यो के हवे पछी कोइ वखते कूदीने जवुं नहीं, कदापि जीव मरे तो पण एने जयणाथी उतरी जवा माटे केवलीभगवंतनी आज्ञा छे माटे उतरीने जावुं पण कूदको मारीने जावुं नहीं ३.

खमावीनेज पडिक्कमण करवुं कल्पे, ते ऊपर उदायीराजानो दृष्टान्त—

पर्युषण आव्या के तरत सर्वेनी साथे खमतखामणा करवा, कारण के खमत-खामणा कर्या विना पडिक्कमणादिक क्रिया करवी कल्पे नहीं माटे जो कोइनी साथे वैरभाव थयो होय तो उदाइराजानी परे खमाववुं. जेम चंपानगरीमां कुमारनंदी नामा एक सोनार रहेतो ते जन्मथी स्त्रीनो लोलुपी हतो, धन आपीने महास्वरूपवाली पांचसौ स्त्री परण्यो हतो. एक दिवसे ते, हासा अने प्रहासा देवीयोने देखी मोहित थयो, देवीयोने बोल्यो के तमे म्हारी साथे भोग भोगवो. देवीयो बोली तुं पंचशैलद्वीपे आवे तो अमारे भोगयोग्य थाय एवुं कहीने देवीयो पोताने स्थानके गइ. सोनारे गाममां आवी पडह वजडाव्यो के जे कोइ मुजने पंचशैलद्वीपे लइ जाय तेने क्रोड सोनाम्होरो आपुं. ते सांभली एक वृद्ध खलासी लोभना वशथी 'घरना माणसो द्रव्यथी सुखी थशे' एवुं विचारी बोल्यो के हुं लइ जइश. पछी बन्ने जहाजमां बेठा, जहाज चाल्युं. आगल जतां एक वडवृक्ष आव्यो, नावड्यो बोल्यो आ वडनी ऊपर तुं चढी जाजे अने हुं तो पाणीना चक्रमां जहाज बूडशे तेनी साथे डूबी मरीश. तुं वड ऊपर बेशी रहेजे, रात्रिमां भारंड–पंखी आवशे तेना पगोमां ग्हारा शरीरने बांधी मूकजे, ते पंचशैल-द्वीपमां जशे त्यां तने मूकी देशे पछी तुं बंधनमुक्त थइ हासा प्रहासा देवीओनी पासे जाजे एटलामां ते वहाण वडनी पासे आव्युं, सोनार वड ऊपर चढ्यो अने जहाज भांगी पड्युं, नावड्यो मरण पाम्यो. सोनार भारंड पंखीना पगमां बंधाइने हासा प्रहासानी पासे गयो, ने भोग भोगववा माटे याचना करी. देवी बोली तारी अशुद्ध

देह छे तेथी अमो भोग करी शकीये नहीं एम कही फरी तेने चंपानगरीमां मूक्यो अने कह्यु के जे हमणा अमारो देवपति छे ते चवशे माटे तु जो मरण पामीने ते देवनी शय्यामा उपजे तो काम सिद्ध थाय सोनार पण अज्ञानथी चितामां पडी मरवा लाग्यो ते अवसरमा सोनारनो मित्र नागिल नामा श्रावक हतो ते बोल्यो, अरे ! तु आवी रीते मरवानु म कर, देवीओना माटे मरवु योग्य नथी तो पण तेणे मान्यु नहीं, काष्टमां भस्मथइ मरण पामीने हासा प्रहासाना ध्यानथी तेमनो पतिदेव थयो अने तेओनी साथे भोग भोगववा लाग्यो एक दिवसे इन्द्र महाराज, सर्व देव देवी सहित नदीश्वरद्वीपनी यात्रा जवा माटे तैयार थया, हासा प्रहासाना पतिदेव ऊपर एवो हुकुम आव्यो के तु सर्व देवोनी आगल मृदग बजावतो चालजे. हासा प्रहासाए ते देवना गलामां मृदग नाख्यो, देवे ते मृदग पोताना गलामांथी कहाडी फेंकी दीधो पण मृदग तो तेना गलामां फरी आवी गयो, फरी देवे फेंकी दीधो, एम बे त्रण वार कर्यु त्यारे हासा प्रहासा बोली अमारा भरतारनी एज मर्यादा छे के मृदग बजाव्या विना ते छूटी शकेज नहीं " हासा प्रहासानो मृदग गलामा पड्यो ते बजावे छूटको" एवी लोकमां पण कहेवत छे पछी ते विद्युन्माली देव हासा प्रहासा सहित मृदग बजावतो आगल चाले त्यां महर्द्धिक देवोने देखीने पोताना भवनी निंदा करवा लाग्यो एटलामा नागिल श्रावकनो जीव बारमा देवलोकमां उपन्यो हतो, ते पण साथमां आव्यो अने विद्युन्मालीने कहेवा लाग्यो के तु मने ओलखे छे देवे उपयोग आपीने कह्यु के हाँ मित्र नागिल ! तें मने बहु वर्ज्यो पण हु तुच्छ भोगना माटे मनुष्य जन्म गमावीने आवा पुण्यहीन देवोमां उपन्यो छु तो हवे म्हारे शु करवु ? नागिल बोल्यो–तु गोशीर्षचदनमय श्रीमहावीरस्वामीना प्रतिमा बनावीने तेनी पूजा कर के जे थकी तने सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय पछी विद्युन्मालीए पण श्रीमहावीरजीनी प्रतिमा बनावीने केटलाएक काल पर्यंत पूजी छेवट पोतानु अल्पायुष्य रह्यो त्यारे प्रतिमाने पेटीमां मूकीने जहाजोवाला लोकोनी जहाजो अटकी रही हती ते काहाडी अने तेमने पेटी सोंपीने कह्यु के आ पेटीमां श्रीदेवाधिदेवनी प्रतिमा छे ते तमे वीत भय पाटणमां जइने उदाइ राजाने आपजो जहाजना लोकोए ते पेटी लावीने उदाइ राजानी सभामां मूकीने कह्यु के आ श्रीदेवाधिदेवनी प्रतिमा छे कोइ देवताए मोकली छे राजाए जाण्यु के देवाधिदेव तो ब्रह्मानु नाम छे माटे ब्रह्मानु नाम लइने उघाडवा लाग्यो तो पण पेटी उघडी नहीं तेमज विष्णुना नामथी पण उघडी नहीं अने महेश्वरना नामथी पण उघडी नहीं, राजाने भोजननी वेला थइ गइ त्यारे राजानी राणी प्रभावती बोली के " देवाधिदेव श्रीअरिहत वीतराग होय तो पेटी उघडजो " बस, एम कहेवाथी पेटी उघडी, तेमांथी प्रतिमा निकली, ते लइ देरासरमां थापन करी, तेने प्रभावती राणी नित्य पूजवा लागी एक दिवस प्रभावती राणीए

पूजाना श्वेत वस्त्र दासीना हाथे मगाव्या. दासीए लावी आप्या पण राणीए पोतानी दृष्टीना भ्रमथी लाल वस्त्र जोया, तेथी दासी साथे लडवा लागी पण थोडीवार पछी तेज वस्त्रने श्वेत दीठा त्यारे जाण्युं के हवे म्हारुं आयुष्य छ महीनानुं बाकी छे माटे राजापासे दीक्षा लेवानी आज्ञा मांगी, राजा बोल्यो तुं देवलोक जाय त्यारे कष्टनी वेला मन्हे सांनिध्य करवानुं कबूल करे तो आज्ञा आपुं. प्रभावतीए मान्य कर्युं. राजाए आज्ञा आपी प्रभावतीए दीक्षा लीधी, संयम पाली आयुष्य पूरण करी देवलोक गइ. पछी योगीनुं रूप करीने राजाने अमृतफल देखाडी जंगलमां लइ गइ. त्यां घणा योगी बेठा हता ते राजाने मारवा उठ्या. राजाए बीक पामीने देवताने याद कर्यो. देवे आवी राजाने त्यांथी उपाडी साधु पासे मूक्यो, जगतमां खरा आधारभूत तो एज छे. एम जाणी तेमनी पासे राजा श्रावकना व्रत लइ श्रावक थयो. हवे श्रीवर्द्धमान स्वामीनी प्रतिमाने प्रभावती राणी दीक्षा लेती वखते देवदत्ता दासीने पूजवानुं कही गइ हती. ते प्रमाणे ते दासी नित्य पूजा करती हती. एक दिवस कोइ गंधार नामा श्रावक सर्व गामोना देरासरोने वांदवा निकल्यो ते वीतभय पाटण आव्यो, तेणे ते प्रतिमाने पूजी, अने त्यां गंधार श्रावक अजारी (रोगी) थयो तेनी देवदत्ता दासीए चाकरी करी तेथी तेनो रोग मटी गयो. तेणे उपकार करवा बदल देवदत्ता दासीने बे गोली आपीने कह्युं के 'आ गोलीमांथी एक गोली खावाथी महास्वरूपवाली थइश अने बीजी गोली खावाथी मनमां चाहीश ते पुरुष वश थइ जशे.' एवुं कहीने गंधार श्रावक जतो रह्यो. पछी देवदत्ताए एक गोली खाधी तेथी दिव्य रूप थयुं अने तेनुं नाम 'सुवर्णगुलिका' पडी गयुं. बीजी गोली खाइने चंडप्रद्योतन राजाने मनमां चाह्यो. गुटिकाना अधिष्ठायिक देवे उज्जयणीमां आवी चंडप्रद्योतन राजानी आगल दासीनुं रूप वर्णन करी राजाने दासी ऊपर अनुरागी बनाव्यो, पछी राजा अनलगिरि हाथी ऊपर चढीने त्यां गयो. दासीने बोलावी. दासी बोली-वीर प्रतिमा विना म्हाराथी आवी शकाय नहीं. चंडप्रद्योतन फरी उज्जयणीमां आवीने ते प्रतिमा सरखी बीजी प्रतिमा तैयार करावी लावीने फरी वीतभय पाटण आवी. नवी प्रतिमा त्यां राखी अने देवे दीधेली प्रतिमाने दासी सहित लइने उज्जयणीमां चाल्यो गयो. प्रभाते उदायी राजाए पोताना हाथीओना मद उतर्या देखीने जाण्युं के अनलगिरि हाथीनी ऊपर चढीने चंडप्रद्योतन राजा अत्रे आव्यो हतो, ते सुवर्णगुलिका दासी अने प्रतिमा लइने जतो रह्यो. पछी उदायी राजा दश मुगुटबद्ध राजा अने सेना साथे लइने उज्जयणी नगरी सहामुं चाल्यो, मार्गमां जेसलमेरना ब्रह्मसर पासे आव्यो, पण मार्गमां पाणी मले नहीं तेथी विलखो थयो. राजाए प्रभावती देवने याद कर्यो. तेणे आवीने त्यां अखूट पाणी भरी दीधुं. ते स्थानके पुष्कर प्रमुख घणा तलावो अखूट पाणी वालां थयां. पछी उदायी राजाए उज्जयणीनी

सीमामां डेरो दीधो अने चडप्रद्योतन ऊपर दूत मोकली कहेवराव्यु के दासी पाछी नहीं आपे तो गले तु राख, परतु अमारी प्रतिमाजी अमोने पाछी आप चडप्रद्योतने प्रतिमा दीधी नहीं अने चौद मुगुटबद्ध राजा साथे लइने उदायी राजा साथे लडवा आव्यो, अनलगिरि हाथी विना लडाइ करवानो ठराव थयो, तो पण चडप्रद्योतन अनलगिरि हाथी ऊपर चढीने सग्राममां आव्यो, माहोमांहे युद्ध करता आखिरे चड प्रद्योतन हारी गयो तेने अनलगिरि हाथी ऊपरथी उतारी, बाधी 'दासीनो पति चडप्रद्योतन छे' एवो तेना ललाटमां डाम दइने उदायी राजा प्रतिमा लेवा लाग्यो, पण प्रतिमा त्यांथी उठी नहीं एटलामां आकाशवाणी थइ के प्रतिमा लइ जशो नहीं, कारण के वीतभय नगरमा धूलनो कोट पडनार छे पछी प्रतिमाने त्या राखी चड प्रद्योतनने साथे लइ उदायी राजा पोताना नगर भणी चाल्यो मार्गमा पर्युषण पर्व आव्यो उदायी राजाए त्या पडाव कर्यो, पर्युषण कर्या, तेमां पोते उपवास करी रसोइ करनाराने कह्यु के चडप्रद्योतनने जे रुचे ते रसोइ करी जमाडने एवु कही उदायी राजा जिनपूजादिक करणीमा प्रवृत्त थयो, रसोइ करनारे चडप्रद्योतनने पूछ्यु के आपना सारु केवी रसोइ बनावु ?, चडप्रद्योतन बोल्यो के उदायि कहे ते बनावो, रसोइए कह्यु के तेमणे तो पर्युषण पर्व छे माटे उपवास कर्यो छे चडप्रद्योतने विचार्युं के आज मने झेर आपवानो विचार राख्यो छे माटे जुदी रसोइ करावे छे एवा भयथी बोल्यो हु पण आजे उपवास करीश, उदायी राजा अमारो साधर्मी भाइ छे, हु पण एज धर्म पालु छु रसोइए उदायी राजाने कह्यु. उदायीराजाए जाण्यु ए धूर्ततार्थी बोल्यो तो पण म्हारो साधर्मी थयो एने खमाव्या विना पडिक्कमण करवु कल्पे नहीं पछी चडप्रद्योतनने बदीखानाथी छोडावी, पोतानी पासे बोलावी, तेना ललाटे सोनानो पट्ट बधावी, खमतखामणा करी अने सत्कार आपीने पाछो अयवती (उज्जैनी) नगरीमां मोकली दीधो एवी रीते भव्यजीवोने पण उदायी राजानी परे खमावयु, खमवु अने क्रोधनो त्याग करवो.

कुभार अने धूर्तोनी कथा—

अपराध करीने खमावे नहीं तो महा अनर्थनी वृद्धि थाय जेम एक गाममां कोइक कुभार मांडानु गाडु भरीने वेचवा आव्यो, त्यां तेनो एक बलद लेवा गामना धूर्त परस्पर बोल्या जूओ ! आ एक बलदनी गाडी चाले छे गाडावाने जाण्यु—आ दुष्ट लोको एक बलद खोसी लेवानो उपाय करे छे माटे ए प्रत्यक्ष चोर छे. केम के बलद तो बे छे अने ए लोको एक कहे छे एम चितवी कुभार पोताना ठामडा वेचवामां तत्पर थयो एक बलदने धूर्त लइ गया कुभार वासण वेची जवा तैयार थयो पण एक बलद

दीठो नहीं. घणी हांको मारी के एक बलद कोण लइ गयो ? लोको बोल्या के अमे तो एकज बलद जोयो हतो. कुंभार घणुं दुःखी थयो अने निराश थइने पोताने स्थानके आव्यो पण क्रोधथी ते धूर्त्तलोकोना सात वर्ष लगण खेत्रखलां बाल्यां, एकदा कोइ यक्षनी यात्रामां गामना लोको एकठा थया, ते वखते पडह वजडाव्यो के जे अमारा धानना खेत्र–खलां बाले छे ते प्रगट थाओ. कुंभार पोतानो वेष बदलीने बोल्यो के जेनी एक बलदनी गाडी तमे दीठी हती ते तमारा धान खलां जलावे छे. पछी कुंभारने बलदीयो आपीने धूर्त्तोए अपराध खमाव्यो. माटे प्रथम बनता सुधी अपराध करवोज नहीं. परंतु कदापि थइ जाय तो तरत खमतखामणा करी अपराधनी क्षमा मागवी के जेथी कोइ अनर्थ थाय नहीं.

क्रोध न छोडे ते ऊपर क्रोधी ब्राह्मणनो दृष्टान्त—

पर्युषणमां क्रोधनो त्याग नहीं करे तेने सडेला पाननी परे संघ बाहेर करी देवुं, जेम एक खेडा गामनो रहेवासी कोइ ब्राह्मण हतो; ते खेतीनो धंधो करतां हल खेडवामां बलद हांकतां तेनो एक बलद गलीयो थइ बेशी गयो, तेने उठाडवानां घणा प्रयत्न कर्या, पाइ मार्या तो पण चाले नहीं, ब्राह्मण रीसे धम धमतो बलदनी ऊपर खेत्रना माटीना ढेफा नाखवा लाग्यो. ढेफाओथी बलद आखो ढंकाइ गयो, बलदनुं श्वास रुंधाइ जवाथी आखिर मरण पाम्यो. ब्राह्मणे आ पापनुं महापुरुषोनी पासे प्रायश्चित्त माग्युं, महापुरुषो बोल्या–तारो क्रोध उतर्यो के नहीं, ब्राह्मण बोल्यो हमणा बलदने देखुं तो मारी नाखुं. महापुरुषोए विचार्युं के आ पापीने शो दंड आपवो ? एनी शुद्धि तो कोइ रीते थइ शकेज नहीं, एवुं कही न्यात बाहेर काढी मूक्यो. एवी रीते जे क्रोधने त्यागे नहीं तेने संघ बाहेर करी देवो.

कृत अपराधनी क्षमा मांगवा ऊपर मृगावतीनो दृष्टान्त—

पोताथी अपराध थयो होय तो मृगावतीनी परे खमाववो. पोतानुं मन शुद्ध करीने मिच्छामि दुकडं देवो. जेम एक दिवसे श्रीमहावीरस्वामी कोशंबी नगरी समोसर्या, त्यां चंद्र अने सूर्य बे मूल विमानथी वांदवा आव्या, चंदनबाला, मृगावती प्रमुख त्यां बेठी हती; तेमां चंदनबाला तो सूर्य अस्त थतो जाणी, उठी पोताने उपासरे आवी अने मृगावती भगवाननी देशनामां मोहित थइने त्यांज बेशी रही, सूर्य चंद्र ज्यारे पोताने स्थानके गया त्यारे अंधकार थयो, मृगावती चंदनाने न देखवाथी भय पामती एकलीज उपासरे आवी. इरियावहि पडिक्कमि पगचंपी करती चंदनबालाने कहेवा लागी के स्वामिनी ! हुं रात्रिमां एकली आवी तेथी अपराधिनी थइ, माटे आप ए आपराधनी मने माफी आपो, चंदना बोली–भद्रे ! तुं उत्तम कुलमां उपनी

छे माटे तारे एम करवु न घटे, मृगावतीए कह्यु-हवे पछी हुं एवी भूल करीश नहीं एम वारवार चदनवालाने पगे लागती, शुद्ध मनथी खमावती, मृगावतीने केवलज्ञान उपजी गयु अने चदनाने तो पगचपी करतां निद्रा आवी गइ ए वखते अधकारमां सर्प आवतो जाणीने मृगावतीए चदनानो हाथ उपाडीने सथारा ऊपर मूक्यो, चदना जागृत थइने कहेवा लागी के म्हारो हाथ कोणे उपाड्यो, मृगावती बोली, सर्पनो सपटो थवाने लीधे म्हे तमारो हाथ ऊचो राख्यो, चदना बोली-एवा अधकारमां सर्प आवतो केवी रीते देखायो ?, मृगावतीए कह्यु आपना प्रतापथी. चदना बोली-शु तने केवलज्ञान उपन्यु छे ?, मृगावती बोली-आपनी कृपाथी 'अरे ! में केवलीनी आशातना करी ' चदना एवु चिंतवीने वारवार खमावती खमावती मिच्छामि दुक्कड देवा लागी अने ते पण केवलज्ञान पामी एवी रीते भव्य जीवोने पण मिच्छामि दुक्कड देवो जोइए परतु कुमार अने चेलानी पेरे नहीं करवु जोइए जेम एक लघुशिष्य कुमारनां मांडा तावडे सूकतां हतां तेने कांकरा मारी फोडवा लाग्यो कुमारे कह्यु ' हांडा म फोडो ' शिष्य बोल्यो " मिच्छामि दुक्कड " कुमारे जाण्यु के हवे फोडशे नहीं. पण शिष्य तो फरी तेवीज रीते कांकराथी मांडा फोडवा लाग्यो अने कुमार हाकों करे त्यारे वारवार मिच्छामि दुक्कड देवा लाग्यो, ते जोइ कुमारे पण एक कांकरो लइ शिष्यना कानमां राखीने कान मसल्यो, शिष्य बोल्यो-अरे ! कान दुःखे छे कुमार बोल्यो ' मिच्छामि दुक्कड ' एम वारवार कान मसले अने मिच्छामि दुक्कड आपे एवी रीते मिच्छामि दुक्कड देवाथी कार्यसिद्धि न थाय, वारवार पाप करवा अने वार-वार मिच्छामि दुक्कड देवो ते काममां न आवे

अलिया गलिया करवा ऊपर सासु जमाईनो दृष्टान्त—

अन्तरग शत्रुता न मटे तो पण व्यवहार शुद्धि राखवा माटे सासु जमाइनी पेरे सर्व अलिया गलिया तो अवश्य करवा एक वृद्ध स्त्री हती तेनी पासे घणु द्रव्य हतु परतु पुत्र न हतो अने पोते विधवा, घणी लोभी अने कजूस हती धननो सग्रह करती. पण पेटमां खाती नहीं तेने एक दीकरी हती ते कोइ कुलवान् छोकराने परणावी पण पोते लोभी हती माटे जमाइने दायजो प्रमुख कांइ दीधु नहीं. तेथी जमाइ नाखुश थयो होली, दीवाली प्रमुख कोइ पर्वे जमवा आव्यो नहीं लोको वृद्धा स्त्रीने कहेवा लाग्या के पापणी ! आ तारो एकज जमाइ छे तेने पण जमाडती नथी ' छोकरो तो छे नहीं तो आ धन कोण खाशे ? अने कोने काम आवशे ? पछी वृद्धाए लौकिक रीती सांचववा माटे जमाइने घणी मनवार करीने बोलाव्यो अने कहेवराव्यु के—तमे एकवार पधारजो थे सांभली जमाइना मित्रो कहेवा लाग्या के आज रहने सासु घणु द्रव्य आपी देशे पछी जमाइ सासुने

घेर एकलो जमवा गयो, सासुए खीर पीरसी, वाटकीमां रूनो पूंमडो नाखीने घृत पीरसवा आवी, वाटकी मांहेथी घृतनुं टीपुं टीपुं थालीमां नाखवा लागी पण वधारे पडवा दीये नहीं. डोसिए विचार्युं के जमाइ हमणा नाकारो करशे. जमाइए जाण्युं के आ तो मने ठगवा आवी छे. तेथी सासुनो हाथ पकडी वाटकीने थालीमां ऊंधावी लीधी अने सासुने कहेवा लाग्यो के जी जी घणुं छे हवे म्हारे नथी खपतुं, वृद्धाए 'वाटकी तो खाली थइ के घी तो बधुं एकला जमाइजी खाइ जशे माटे कांइ युक्ति करूं' एम विचारी जमाइने कह्युं के जमाइजी ! तमारे अमारे जे रूसणुं हतुं ते सर्व आजे भांग्युं. माटे आपणे भेगा बेसी जमीए. एम कही जमाइनी भेगी जमवा बेसी पण जमाइनी तरफ थालीनुं नीचाण होवाथी सर्वे घी जमाइ तरफ हतुं. तेथी सासु ओलंभानुं मिस करीने आंगुलीथी घी पोतानी तरफ खेंचती जाय ने कहेती जाय के तमारामां एटला वांक छे-प्रथम तो तमे होली ऊपर नहीं आव्या, बीजो दीवाली ऊपर नहीं आव्या, त्रीजो आखात्रीज ऊपर नहीं आव्या. एम बोली बोली सर्व घृत पोतानी तरफ खेंची लीधुं. 'सासू तो घणी समजणवाली देखाय छे. घी तो सर्व खेंची लीधुं' एवुं जाणी थालीमां हाथ फेरवीने जमाइ बोल्यो- 'सासुजी ! जे थवानुं हतुं ते थयुं पण हवे तमारुं अने मारुं बन्नेनुं मन एक करी ल्यो. आज पछी सर्व अपराध अलिया गलिया जाणजो' एम कही थाली उपाडीने घी खांड सहित सर्व खीर जमाइ पी गयो अने बोल्यो हवे आपणुं सर्व रूसणुं मटी गयुं माटे तमे खुशीमां रहेजो. एवी रीते धर्मार्थी जीवोने पण कोइ राग द्वेष उपज्यो होय ते सर्व खमाववो पण पर्युषणमां राग द्वेष राखवो नहीं मिच्छामि दुक्कडं दई देवो.

क्रोधपिण्डोपरि घेवरियामुनिनो दृष्टांत—

पर्युषण पर्वमां क्रोध, मान, माया अने लोभ करी आहारादि ग्रहण करवा नहीं. तेम करवाथी चारित्रधर्मनो विनाश थाय छे. क्रोधपिंड आश्रयी घेवरिया मुनिनो दृष्टांत—हस्तिकल्प नामा नगरमां एक साधु मासीतपना पारणे गोचरी करवा माटे ब्राह्मणोमां कोइ मरण पामेलानुं जमण हतुं, त्यां गयो. ब्राह्मणो घेवर खाता हता, साधु घणो वखत ऊभो रह्यो पण कोइए साधुने दीधुं नहीं. साधु क्रोध करीने बोल्यो के आजना जमणमां नहीं आपो तो फरी जमण थाय त्यारे आपजो. एवुं कही चालतो थयो, साधुनुं बोलवुं फ्रुंठुं थाय नहीं. एटलामां बीजा महीने पारणाना दिवसे फरी पण कोइक ब्राह्मण मरण पाम्यो. तेना जमणमां तेज साधु पारणुं करवा माटे फरी गोचरी आव्यो. परंतु कोइए व्होराव्युं नहीं, वली क्रोधथी बोल्यो, त्रीजाना जमणमां व्होरावजो, एवुं कही जतो रह्यो. त्रीजा महीनामां फरी कोइ मरण पाम्यो तेना जमणमां पण व्होराव्युं नहीं. साधु क्रोधथी चोथाना जम-

गामां व्होरावतानु बोल्यो ते शब्द कोइ डोकराना काने पड्यो डोसाए घरना धणीने कह्यु के आ साधुने घेवर आपीने खुशी करो, नहीं तो वली कोइ मरशे एम समजी साधुने बोलावी घेवर व्होराव्या जेम ए साधुए क्रोधथी घेवर व्होर्या तेम बीजा साधुओने कोइ वखते व्होरवो नहीं.

मानपिण्डोपरि सेवैयामुनिनो दृष्टान्त—

मानपिंड ऊपर सेवैया साधुनो दृष्टांत-कोशलदेशमां गिरिपुष्प नामा नगरना विषे सेवोनु पर्व आव्यु त्यारे युवान साधु एकठा मल्या. तेमां एक साधु बोल्यो आज तो सेवैया पर्व छे माटे सेवो लावो तेमां शु नवाइ छे ? परतु प्रभाते खांड घी सहित जे सेवो लावीने साधुओने जमाडे ते लब्धिवान् जाणवो. एक शिष्य अभिमान करीने बोल्यो के हु काले सेवो लइ आवीने सर्व साधुओने जमाडु तोज म्हारु नाम खरु जाणजो ते बीजा दिवसे मोटा मोटा पात्रा झोलीमां लइने गोचरी गयो एक शेठना घेर सेवो देखीने मांगवा लाग्यो पण शेठाणी लोभणी हती माटे बोली, जा जा, तने सेवो नहीं मले, ए प्रमाणे ललकारीने काढाडी मूक्यो चेलो बोल्यो तु जो तो खरी हु जरूर तारा त्यांथीज सेवो कोइ पण रीते अवश्य लइ जइश शेठाणी बोली-जो तु सेवो लइ जाय तो म्हारु नाक गयु जाणजे परतु म्हारु नाक छे त्यांसुधी तो तने सेवो लइ जवा देइश नहीं, साधु त्यांथी निकली आगल जइ कोइने पूछ्यु के आ घर कोनु छे ? ए घरनो मालक क्यां छे ?, कोइए कह्यु, ए देवदत्तनु घर छे, ते हमणा पचायतीमां बेठेल छे, साधु तेना पासे जइ कहेवा लाग्यो के तमारामां देवदत्त कोण छे ? ते बोल्या शु काम छे ?, साधुए कह्यु-तेनी पासे कांइ मागवु छे, पच बोल्या-एतो कृपण छे ? जे कांइ मागवु होय ते अमारी पासे मागो देवदत्त बोल्यो साधुजी ! तमे मांगशो ते हु आपीश, चेलाए कह्यु, देवदत्त ! जेम छ जणा स्त्रीओने वश हता, तेम तु पण स्त्रीने वश न होय तो हु तारी पासे कांइ मागु पच बोल्या-ते छ जणा कोण हता ? तेनी कथा कहो-चेलो बोल्यो, एक कुलपुत्र हतो ते परणीने पछी स्त्रीने वश थयो, प्रभाते भूख लागी स्त्रीना पासे खाना माग्यु, स्त्री ढोलीया ऊपर बेठीज कहेवा लागी के जो तु भूख्यो होय तो चूलामांथी राख काढाडी बाहेर नाख, ईंधन लाव, चूलामां अग्नी बाल, माथे हांडी चडाव, तेमां पाणी नाख, कोठामांथी चावल लावी तेने सोधी साफ करीने, हांडीमां नाखी, पचावीने तैयार कर; तैयार थयां पछी मने हाक मारने, हु उठीने पीरसी आपीश ए वात सांभली कुलपुत्र बोल्यो तु कहे छे ते सत्य छे एम कही पूर्वोक्त सर्व काम नित्य करवा लाग्यो, नित्य चूलानी राख काढाडवाथी तेनी आंगुलीओ धोली पडी गइ, लोकोए तेनु 'श्वेतां-

गुली ' नाम आप्युं. तेम देवदत्त ! तुं पण स्त्रीने वश न होय तो हुं याचना करुं. देवदत्त बोल्यो-हुं स्त्रीने वश नथी.

एक कुलपुत्र हतो ते स्त्रीने वश थयो तेने स्त्री ढोलीया ऊपर बेसीने कहेवा लागी के हुं पाणी लावीश नहीं माटे तुं जइ तलाव ऊपरथी पाणी भरी लाव, रोटला बनावी आपीश. ते पण लोकोनी लाजथी. पाछली एक पहोर रात्री रहे त्यारे नित्य माथे घडो लइ पाणी भरी लाववा लाग्यो. रात्रीमां बगला प्रमुख जनावर बीक पामीने तलाव ऊपरथी उडवा लाग्या तेनो कोलाहल थयो तेथी लोकोए जाण्युं के आ शुं नित्य उपद्रव थाय छे ? बगला केम उडे छे ?, पछी शोध कराव्याथी मालम पड्युं के कुलपुत्र पाणी भरवा जाय छे तेथी बगला प्रमुख उडे छे. पछी लोकोए तेनो नाम ' बगोड्डाही ' पाडी दीधुं. माटे देवदत्त ! तुं पण एवो न होय तो हुं जाचुं. देवदत्ते कह्युं-हुं एवो नथी.

एक कुलपुत्र स्त्री परणीने तेने वश थयो; पछी नित्य प्रभाते उठी हाथ जोडी स्त्रीने कहे के हुं शुं काम करुं ?, स्त्री बोली सर्व रसोइ कर, रसोइ तैयार करी स्त्रीने कहेवा लाग्यो हवे शुं करुं ?, स्त्री बोली गादी बिछावीने पाटलो मूक, ते पण काम करीने पूछ्युं हवे शुं करुं ?, स्त्री बोली मारा बाह पकडीने मने गादी ऊपर बेसाड, तेणे स्त्रीने बाह पकडी गादी ऊपर बेसाडीने पूछ्युं हवे शुं करुं ?, स्त्रीए कह्युं रसोइ पीरस, रसोइ पीरसीने पूछ्युं हवे शुं करुं ?, स्त्री बोली माखीयो उडाड, ते उडाडीने पूछ्युं हवे शुं करुं ?, स्त्री बोली मलमूत्र परठी आव, ते परठीने बोल्यो हवे शुं करुं ?, स्त्री बोली हुं सूइ रहुं छुं तुं मारी पगचंपी कर, त्यारे पगचंपी करवा लाग्यो ते जोइ लोक बोल्या-ए ' स्त्रीकिंकर ' छे. तेम देवदत्त ! तुं पण तेना जेवो होय तो हुं याचना न करुं, देवदत्ते कह्युं-हुं एवो नथी. एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थइने तेना वस्त्रप्रमुख धोवानुं कार्य नित्य करतो हतो तेनुं लोकोए 'तीर्थस्नाता' नाम पाड्युं. तेमज पांचमानुं नाम 'गद्धापरखी' पाड्युं. एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थयो, तेने पुत्र थयो, स्त्री कहे छोकराने हंगावी लाव ते नित्य छोकराने हंगावे, स्नान करावे, ते देखी लोकोए तेनो नाम ' हदनीयो ' पाड्युं. माटे एनी परे तुं जो स्त्रीने वश न होय तो त्हारी पासे याचना करुं. देवदत्त बोल्यो-हुं तेवो नथी तमे सुखे मागो. बीजा पंच हास्यपूर्वक बोल्या-चेलाजी ! स्त्रीने वश थएलाना सर्व दोष एमां छे. देवदत्त बोल्यो-भगवन् ! ए तो म्हारी हांसी करे छे. आपने जे चाहना होय ते सुखे मागो. चेलो बोल्यो-घृत अने खांड सहित सेवो व्होरावो. देवदत्ते कह्युं-चालो हुं आपने व्होरावुं. एवुं कही साधुने साथे लइ घेर आव्यो. रस्तामां साधु बोल्यो के तारी स्त्री तो मारी साथे लडी चुकी छे. देवदत्ते कह्युं. तमे घरनी बाहेर ऊभा रहेजो हुं बोलावुं त्यारे आवजो. साधु बाहेर ऊभो रह्यो, देव-

दत्त घरमां जइने स्त्रीने कहेवा लाग्यो, आन ब्राह्मणोने जमवानु कह्यु छे, ते जमवा आवशे, घरमां कांइ रांधेलु छे ? ते बोली सेवो तैयार छे देवदत्ते स्त्रीने कह्यु के निसरणी ऊपर चढीने डागलेथी घी खांड लइ आव स्त्री घी खांड लेवा नीसरणी ऊपर चडी डागले गइ साधुने अदर बोलाव्यो. साधु बोल्यो, देवदत्त ! आ नीसरणी जरा अलगी लइ ल्यो देवदत्ते नीसरणी दूर करी साधुना पात्र रूडी रीते सेवो अने घी खांडथी भरी दीधा, ऊपर ऊभी ऊभी सेठाणी हांको करवा लागी के एने कां व्होरावो छो आवो मुंडो छे पण कांइ जोर चाल्यु नहीं साधुए पण पात्रा भरीने निकलता नाक ऊपर आंगुली फेरवीने स्त्रीने जणाव्यु के तारु नाक कपाइ गयु पछी उपासरे आवी सर्व साधुओने जमाड्या. एम ए साधुए अभिमान करीने आहार लीधो तेम बीजा साधुओने आहार लेवो नहीं.

मायापिंड ऊपर आषाढभूतिनो दृष्टान्त—

गुरु प्रेरणाथी आषाढभूति मुनि एकदा राजगृहनगरमा कोइ नटना घेर गोचरी माटे गया अने विद्याबलथी रूपपरावर्त्तन करी पांच वार मोदक व्होर्या, ते जोइ नटवे मुनिने पोतानी रूपवती बे कन्याओना मोहजालमां फसाव्या आषाढभूति साधु उपकरण गुरुने सोंपी अने मद्यमांस न वापरे तेना माथेज रहेवु एवी बाधा लइ पाछा नटना घेर आव्या नटवे तेने पोतानी बे कन्या परणावी घरजमाइ कायम कर्यो. मुनि नटकन्याओ साथे विविध विषयसुख भोगववा लाग्या. एज वखते नगरमां कोइ विदेशी नटे आवी उद्घोषणा करावी के ' कोइ पण नटविद्या पारगामी होय ते म्हारा साथे वाद करवा तैयार थाय ' ते उद्घोषणाने रोकी ते नटवे पोताना जमाइ आषाढभूतिने विदेशी नट साथे विवाद करवा राज सभामां मोकल्या आषाढभूतिनी स्त्रियोए पाछलथी मद्य मास भक्षण करवा मांड्यो पोताना विद्याबलथी विदेशी नटने क्षणवारमां परास्त करी आषाढभूति पाछा पोताने घेर आव्या अने कपाटने खड खडाव्या. ' दुर्गंधथी मद्य मांस भक्षण कर्यु जाणशे तो छोडीने चाल्या जशे ' स्त्रियो एम विचारी घरना वाडामां गइ अने वमन करवा लागी आषाढभूति भींत ऊपर चढी वाडामां उतर्यो अने वमनमां मांस जोइ विरक्त थयो. परतु सुसराना कहेवाथी स्त्रियोने खावाखरचनो बदोबस्त करवा सारु राजा पासे जइ आषाढभूतिए भरतनाटक करवा मांड्यु, तेमां भरतचक्रवर्त्तीना पठे सोल सिणगार सजी अने आरीसाभवनमां जइ एकत्व भावना भाववा मांडी. तेथी थोडीवारमां शुभध्यानना प्रभावथी आषाढभूतिने केवलज्ञान उत्पन्न थयु. देवोए साधुवेष आपी स्वर्णकमलनी रचना करी. तेना ऊपर बेसी आषाढभूतिए धर्मदेशना आपी तेने सांभली राजा, राणी अने एक हजार राजकुमारोए दीक्षा लीधी. पछी शिष्यमडल सहित त्यांथी विहार करीने आषाढभूति

पोताना गुरु पासे आव्या गुरु पण भावना भावतां केवलज्ञान पाम्या. जेम आषाढभूति मुनिए रूप परावर्त्तन करी कपटथी मोदक व्होर्या, तेम बीजा साधुओने मायापिंड ग्रहण करवु नहीं.

लोभपिंड ऊपर सिंहकेसरिया साधुनो दृष्टांत—

चंपानगरीमां उत्सवना दिवसे एक साधुए मासखमणना पारणे अभिग्रह लीधो के आजे सिंहकेसरिया मोदकज व्होरवा. पछी घरोघर भम्यो पण सिंहकेसरियामोदक क्यांइ मल्या नहीं. तेथी मुनिनुं मन गाफल थयुं. अर्द्धि रात्री लगण घरोघर धर्मलाभ देतो फर्यो. लोभना वशथी रात्रिनी खबर पण रही नहीं. पछी कोइएक श्रावकने घेर जइ धर्मलाभ दीधो. ते श्रावक महागंभीर अने मातापिता समान हतो तेणे रात्रे धर्मलाभ सांभलीने विचार्युं के कोइ कर्मना वशथी साधुनुं मन डगमग थयुं छे. एवुं जाणी उठ्यो ने मुनिने वंदना करी जोयुं तो साधु महातपस्वी देखायो. श्रावके पूछयुं–महाराज ! आपने शुं जोइए ?, मुनि बोल्या–सिंहकेसरिया मोदक खपे छे. श्रावके कह्युं–अमारे घेर ते घणा छे. एवुं कही सिंहकेसरिया मोदकनो थाल भरी लाव्यो अने मुनिने व्होराव्या. श्रावक बोल्यो–स्वामिन् ! पुरिमार्द्धना पच्चखाणनो वखत आव्यो के नहीं ?, मुनिए आकाशमां जोयुं तो निर्मल तारा अने नक्षत्रनी श्रेणिसहित चंद्रमाने जोयो तेथी मुनिनुं चित्त ठेकाणे आवी गयुं. पछी मुनि 'धिक्कार छे में आ शुं कर्युं ?' हुं रात्रीनो गोचरी करवा निकल्यो ? मारो साधुनो आचार क्यां गयो ? एम पश्चात्ताप करता नगरनी बाहेर आवीने सूत्रोक्तविधि सहित मोदक परठवता विचारे छे के अरे ! कर्मने जीतवुं घणुं मुश्केल छे, में आ खोटुं काम कर्युं, धर्मनी निंदा करावी, एवी रीते मुनि पश्चात्ताप करता अने शुक्लध्यान ध्यावता, क्षपकश्रेणी चढीने केवलज्ञान पाम्या. जेम एणे लोभना वशथी सिंहकेसरिया मोदक व्होर्या तेम बीजा साधुओए लेवा नहीं.

२५ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने जीवादिकनी उत्पत्तिना लीधे चोमासामां त्रण उपासरा राखवा. तेमां जे उपासरामां पोते रहे ते उपासरो प्रतिदिवस त्रणवार पूंजवो अने बीजा बे उपासराने एकवार पूंजवा तेनी पडिलेहण करवी ए प्रमार्जन पडिलेहण करवा संबंधि पच्चीसमी समाचारी जाणवी.

२६ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने पोतानी मरजीमां आवे

त्या जवु होय तो गुरुने पूछीने अने दिशि के स्थान बतावीनेज जाववु कल्पे वगर पूछे जवुं कल्पे नहीं. शिष्य पूछे छे के शा वास्ते ?, गुरु कहे छे–साधु चोमासा विना शेषकालमा तो सामान्य प्रकारना तप करे छे परतु चोमासामां घणा प्रकारना विशेष तप करे छे कोइ तपस्वी दुर्बल होय अने मूर्च्छा खाइ पडी जाय, तो जे दिशामा गयो होय ते दिशामा आचार्य याद राखीने निगाह करावे, शोध करावे के एटलो वखत केम लाग्यो माटे आचार्यने पूछीने बाहेर जवु जोइए ए प्रतिजागरण (पूछीने जवा) सबधि छव्वीसमी समाचारी जाणवी

२७ वर्षाकालमां चोमासे रहेला साधु साध्वीने औषध प्रमुख कामना लीधे वैद्यनी पासे जवु पडे तो चार योजन अथवा पाच योजन पर्यंत पोताना गामथी जे गाम दूर होय ते गामे जवु कल्पे एटले सोल तथा वीस कोश दूर जइने ते गाममाथी औषध लइ, पाछो फरी, आवता जो पोते रहेला गामनी माहे उपासरामा दिवस छतां आवी न शकाय तो तेज गामनी बाहेर आवी रहेवु पण जे गाममा औषधादिक लेवा गया ते गाममा रात्रे रहेवु नहीं अथवा दिवस छता गामनी बाहेर न पहोंची शकाय तो मार्गमा पण रहेवु कल्पे ए औषधादिक लेवा गमनाऽऽगमन सबधि सत्तावीसमी समाचारी जाणवी

२८ इत्यादिक सवत्सरीनो स्थविरकल्प जेवी रीते कल्पसूत्रमा कह्यो छे तेवी विधिथी आराधन करे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो मार्ग जेवी रीते भगवाने कह्यो छे तेम पालन करे, भला प्रकारथी मन, वचन अने कायाएँ करी फरशे, अतिचार रहित पाले, विधि सहित शोभा करी दीपावे, जाव जीव सुधी पाले, काठे पहोचाडे, लोकोमा कीर्त्ति करे, ए समाचारीने आराधीने अने आज्ञा सहित पालीने केटलाएक निर्ग्रंथ तो तेहज भवमा

सीझे. तत्त्वने जाणी, कर्मोथी रहित थइ, अने सर्व संताप रहित थइने सर्व दुःखथी छूटे–मोक्ष जाय. केटलाएक त्रीजे भवे सीझे यावत् मोक्ष जाय, परंतु सात–आठ भव तो ओलंघे नहीं. सातमे आठमे भवे तो अवश्य मोक्ष जाय. ए समाचारी (मर्यादा–पालन) फल संबंधि अट्ठावीशमी समाचारी जाणवी.

ते काल ते समयना विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी राज-गृही नगरीमां गुणशील नामा यक्षायतनना विषे घणा साधुओमां घणी साध्वीओमां, घणा श्रावकोमां, घणी श्राविकाओमां अने घणा देवोमां घणी देवीओमां बेठा (बार परषदामां बेठाज) एवा वचने करीने कहे, ए कल्पने पालवानुं फल बतावे, एवो प्ररूपे, ए पर्युषणकल्प नामा अध्ययन दशाश्रुतस्कंधनो आठमो अध्ययन, ते अर्थ सहित. हेतु सहित, कारण सहित, सूत्र सहित, अर्थ सहित, सूत्रार्थ सहित, दृष्टांत सहित, बारंवार उपदेश करीने देखाडे. 'एम भद्रबाहुए आ सूत्र दशाश्रुतस्कंधमां आठमा अध्ययन तरीके रच्यो छे' पण वाचना सर्व सुधर्मस्वामी अने जंबूस्वामीनीज जाणवी.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक–विजयराजेन्द्रसूरीश्वर–सङ्कलिते–
श्रीकल्पसूत्र–बालावबोधे नवमं व्याख्यानं समाप्तम् ।



अथ प्रशस्ति ।



सर्वेषु सूत्रेषु वरप्रशस्ति-र्यस्यास्ति सर्वेष्वतिमुख्यता च ।
कल्पद्रुकल्प मम कल्पसूत्र, चारित्रकार्ये शुभकृत्सदास्तु ॥ १ ॥
सौधर्मपट्टे सुपरम्पराया, सूरीश्वरा ये च वरा बभूवु. ।
वन्दे सदा तान् वरसूत्रदातॄन्, श्रीरत्नसूरीन् विदुषो मुनीशान् ॥ २ ॥

श्रीमत्क्षमादिगुणराशियश शमाऽऽढ्यो,
जात. क्षमागणधर' प्रवराऽऽम्लकर्त्ता ।
चित्रा लता चरणसेवनतत्पराभूत्,
तामप्यहो ! हृदि गुरु स च नो दधार ॥ ३ ॥
देवेन्द्रविजयो वन्य, तच्छिष्यो बहुकीर्त्तिभाक् ।
कल्याणविजयस्तस्य, प्रमोदश्च प्रमोदयुक् ॥ ४ ॥
सुधर्मस्वामिनो गच्छे, सन्ति राजेन्द्रसूरय ।
तेनेय कल्पसूत्रस्य, वार्त्ता बालावबोधिनी ॥ ५ ॥
कृता सूत्रपदैर्युक्ता, सर्वसाराशसयुता ।
सा योगोद्वहन येन, न कृत तस्य हेतवे ॥ ६ ॥
अब्दे खवेदनन्दैके (१६४०), माधवे च सितेतरे ।
पक्षे दिने द्वितीयाया, मङ्गले लिखिता त्वियम् ॥ ७ ॥

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र—सकलजैनागमपारदृश्व—कलिकालसर्वज्ञकल्प—
जङ्गमयुगप्रधान—परमयोगिराज जगत्पूज्य—गुरुदेव—श्रीम-
द्भट्टारकजैनाचार्य-श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलित
'कल्पसूत्र-बालावबोध' समाप्त. ।

